श्रीभगवत्–पुष्पदन्त–भूतबलिप्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः।

तस्य

पञ्चमखण्डे वर्गणानामधेये

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितं

बन्धनानुयोगद्वारम्

सम्पादकः—

वैशाली-प्राकृत-जैनविद्यापीठस्य प्राचार्यः

एम. ए., एल् एल्. बी., डी. लिट्. इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकौ

पं० फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री * पं० बालचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री

संशोधने सहायकः

डा० नेमिनाथ-तनय-आदिनाथ उपाध्यायः

एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालयः

विदिशा (म० प्र०)

वि० सं० २०१३] वीर-निर्वाण-संवत् २४८३ [ई० सं० १९५७

मूल्यं द्वादशरूप्यकम्

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय

भेलसा (म० प्र०)

मुद्रक—

पं० शिवनारायण उपाध्याय

नया संसार प्रेस,

भदैनी, वाराणसी

THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL. XIV

BANDHANĀNUYOGDVĀRAM.

Edited

with translation, notes and indexes

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt.
Director, Prakrit Jain Institute, Vaishali

Assisted by

Pandit Phoolchandra,
Siddhanta Shastri.

Pandit Balchandra,
Siddhanta Shastri

With the cooperation of

Dr. A. N. Upadhye,
M. A., D. LITT.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharak Fund Karyalaya.
Bhilsa (M. P.)

1957

Price rupees twelve only.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra

Jaina Sahitya Uddharak Fund Karyalava

Bhilsa (M. P)

Printed by

SHIVANARAYAN UPADHAYAYA

Naya Sansar Press,

BHADAINI, VARANASI

प्राक्कथन

षट्खंडागमका यह चौदहवां भाग पाठकोंके हाथ देते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। और वह विशेषतः इस कारण कि इसके शीघ्र अनन्तर ही मैं इस सिद्धान्तके शेष दो भागोंको भी सम्पूर्ण कर पाठकोंके हाथ पहुँचानेकी आशा करता हूँ। प्रस्तुत भागमें आगमका पांचवां खंड वर्गणा समाप्त हो जाता है। आगेके दो भागोंमें निबन्धन आदि शेष अठारह अनुयोगद्वार पूरे हो जावेंगे। पन्द्रहवें भागमें निबन्धनसे लेकर उदय तक चार अनुयोगद्वार और उनकी संतकम्म-पंजिका नामक टीका प्रकाशित करनेका विचार है और सोलहवें भागमें मोक्षसे लेकर अल्पबहुत्व तकके चौदह अनुयोगद्वार। इन दोनों भागोंका मुद्रण कार्य भी प्रायः समाप्त हो गया है।

प्रस्तुत भागमें वर्गणा खंडका बन्धन अनुयोगद्वार वर्णित है। इसमें भगवान् भूतबलि स्वामी प्रणीत ७९८ सूत्रों और उनकी वीरसेन स्वामी कृत धवला टीका द्वारा कर्मबन्धका बड़ा सूक्ष्म विवेचन किया गया है, जिसमें इस खण्डके नामानुसार कर्मोंकी वर्गणाओंका निरूपण अपनी विशेषता रखता है। इसकी रूपरेखा विषय परिचयसे स्पष्ट हो जायगी। किन्तु विषयके पूरे मर्म का रसास्वादन पानेके लिये तो मूल ग्रन्थका ही स्वाध्याय करना योग्य है।

ग्रंथ सम्पादनमें श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी और उनके सुपुत्र बाबू राजेन्द्रकुमार जी का उत्साह तथा पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणासे मुझे व मेरे सहयोगियोंको बड़ा बल मिलता रहा है। मेरे सहसम्पादकोंका सहयोग पूर्ववत् चल रहा है। इस भागके तैयार करनेमें पं० फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका विशेष साहाय्य रहा है। पूर्वानुसार सहारनपुर निवासी श्री रतनचन्द्रजी और नेमिचन्द्रजी इन दोनों बन्धुओंका शुद्धिपत्र बनानेमें महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। उन्होंने एक शुद्धिपत्र आदिसे अन्त तकके भागोंका भी तैयार किया है जिसका पूर्ण उपयोग अन्तिम भागमें किया जायगा। मैं अपने इन सब सहायकोंका बड़ा आभार मानता हूँ।

मुजफ्फरपुर
१४, ३, १९५७

हीरालाल जैन
(डायरेक्टर प्राकृत जैन विद्यापीठ वैशाली)

विषय-परिचय

बन्धनके चार भेद हैं—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान। यहाँ इस अनुयोगद्वारमें बन्धक और बन्धविधानकी सूचनामात्र की है, क्योंकि बन्धकका विशेष विचार खुद्दाबन्धमें और बन्धविधानका विशेष विचार महाबन्धमें किया है। शेष दो प्रकरण अर्थात् बन्ध और बन्धनीयका विचार इस अनुयोगद्वारमें किया है। इस अनुयोगद्वारमें बन्धनीयके प्रसंगसे वर्गणाओंका विशेषरूपसे ऊहापोह किया गया है, इसलिए ही स्पर्शसे लेकर यहां तकके पूरे प्रकरणकी वर्गणाखण्ड संज्ञा पड़ी है। अब संक्षेपमें इस भागमें वर्णित विषयका ऊहापोह करते हैं—

१. बन्ध

बन्धके चार भेद हैं—नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध। इनमेंसे नैगम, संग्रह और व्यवहारनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं। ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता है, शेष को स्वीकार करता है। शब्द नय केवल नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है। कारण स्पष्ट है।

एक जीव एक अजीव नाना जीव और नाना अजीव आदि जिस किसीका बन्ध ऐसा नाम रखना नामबन्ध है। तदाकार और अतदाकार पदार्थोंमें यह बन्ध है ऐसी स्थापना करना स्थापनाबन्ध है। द्रव्यबन्धके दो भेद हैं—आगमद्रव्यबन्ध और नोआगमद्रव्यबन्ध। भावबन्धके भी ये ही दो भेद हैं। बन्धविषयक स्थित आदि नौ प्रकारके आगममें वाचना आदि रूप जो उपयुक्त भाव होता है उसे आगम भावबन्ध कहते हैं। नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है—जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध। जीव भावबन्धके तीन भेद हैं—विपाकज जीवभावबन्ध, अविपाकज जीवभावबन्ध और तदुभयरूप जीवभावबन्ध। जीवविपाकी अपने अपने कर्मके उदयसे जो देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यञ्चभाव, नारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद आदि रूप औदयिक भाव होते हैं वे सब विपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं। अविपाकज जीवभावबन्धके दो भेद हैं—औपशमिक और क्षायिक। उपशान्त क्रोध, उपशान्त मान आदि औपशमिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं और क्षीणमोह, क्षीणमान आदि क्षायिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं। यद्यपि अन्यत्र जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व ये तीन पारिणामिक मानकर इन्हें अविपाकज जीवभावबन्ध कहा है पर ये तीनों भाव भी कर्मके निमित्तसे होते हैं, इसलिए यहां इन्हें अविपाकज जीवभावबन्धमें नहीं गिना है। तथा एकेन्द्रियलब्धि आदि क्षायोपशमिकभाव तदुभयरूप जीवभावबन्ध कहे जाते हैं। अजीवभावबन्ध भी विपाकज, अविपाकज और तदुभयके भेदसे तीन प्रकारका है पुद्गलविपाकी कर्मोंके उदयसे शरीरमें जो वर्णादि उत्पन्न होते हैं वे विपाकज अजीवभावबन्ध कहलाते हैं। तथा पुद्गलके विविध स्कन्धोंमें जो स्वाभाविक वर्णादि होते हैं वे अविपाकज अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और दोनों मिले हुए वर्णादिक तदुभयरूप अजीवभावबन्ध कहलाते हैं।

यह हम पहले ही संकेत कर आये हैं कि द्रव्यबन्ध दो प्रकारका है—आगमद्रव्यबन्ध और नोआगमद्रव्यबन्ध। बन्धविषयक नौ प्रकारके आगममें वाचना आदिरूप जो अनुपयुक्त भाव होता है उसे आगमद्रव्यबन्ध कहते हैं। नोआगम द्रव्यबन्ध दो प्रकारका है-प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध। विस्रसाबन्धके दो भेद हैं—सादिविस्रसाबन्ध और अनादिविस्रसाबन्ध। अलग अलग धर्मास्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ, अधर्मास्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ और आकाशास्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ अनादिकालीन जो बन्ध है वह अनादि विस्रसाबन्ध कहलाता है। तथा स्निग्ध और रूक्षगुणयुक्त पुद्गलोंका जो बन्ध होता है वह सादि विस्रसाबन्ध कहलाता है। सादिविस्रसा-

बन्धके लिए मूल ग्रन्थका विशेषरूपसे अवलोकन करना आवश्यक है। नाना प्रकारके स्कन्ध इसी सादि विस्रसाबन्धके कारण बनते हैं। प्रयोगबन्ध दो प्रकारका है—कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध। नोकर्मबन्धके पाँच भेद हैं—आलापनबन्ध, अल्लीवणबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध। काष्ठ आदि पृथग्भूत द्रव्योंको रस्सी आदिसे बाँधना आलापनबन्ध है। लेपविशेषके कारण विविध द्रव्योंके परस्पर बँधनेको अल्लीवणबन्ध कहते हैं। लाख आदिके कारण दो पदार्थोंका परस्पर बँधना संश्लेषबन्ध कहलाता है। पाँच शरीरोंका यथायोग्य सम्बन्धको प्राप्त होना शरीरबन्ध कहलाता है। इस कारण पाँच शरीरोंके द्विसंयोगी और त्रिसंयोगी पन्द्रह भेद हो जाते है। नामोंका निर्देश मूलमें किया ही है। शरीरिबन्धके दो भेद हैं—सादि शरीरिबन्ध और अनादि शरीरिबन्ध। जीवका औदारिक आदि शरीरोंके साथ होनेवाले बन्धको सादिशरीरिबन्ध कहते है। यद्यपि तैजस और कार्मणशरीरका जीवके साथ अनादिबन्ध है पर यहाँ अनादि सन्तानबन्धकी विवक्षा न होनेसे वह सादिशरीरिबन्धमें ही गर्भित कर लिया गया है। कर्मबन्धका विशेष विचार कर्मप्रकृति अनुयोगद्वारमें पहले ही कर आये हैं।

२. बन्धक

बन्धकका विशेष विचार खुद्दाबन्धमें ग्यारह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर पहले कर आये है, इसलिए यहाँ इस विषयकी सूचनामात्र दी गई है।

३. बन्धनीय

जीवसे पृथग्भूत जो कर्म और नोकर्म स्कन्ध हैं उनकी बन्धनीय संज्ञा है। वे पुद्गल द्रव्य, क्षेत्र काल और भावके अनुसार वेदनयोग्य होते है। ऐसा होते हुए भी वे स्कन्ध पर्यायसे परिणत होकर ही वेदनयोग्य होते हैं ऐसा नियम है। उसमें भी सभी पुद्गलस्कन्ध वेदनयोग्य नहीं होते, किन्तु तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें जो ग्रहणप्रायोग्य वर्गणाएँ हैं उनके कर्म और नोकर्मरूप परिणत होनेपर ही वे वेदनयोग्य होते हैं, अतः यहाँ वर्गणाओंका अनुगम करते हुए उनका इन आठ अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे आठ अनुयोगद्वार ये हैं—वर्गणा, वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, अवहार, यवमध्य, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व।

वर्गणा—वर्गणाके दो भेद हैं—आभ्यन्तर वर्गणा और बाह्य वर्गणा। आभ्यन्तरवर्गणा दो प्रकारकी है—एकश्रेणिवर्गणा और नानाश्रेणिवर्गणा। उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाका सर्व प्रथम सोलह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे सोलह अनुयोगद्वार ये हैं—वर्गणानिक्षेप, वर्गणानयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम।

यहाँ वर्गणानिक्षेपके छह भेद करके उनमेंसे कौन निक्षेप किस नयका विषय है यह बतलाकर इस प्रकरणको समाप्त किया गया है। वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंमेंसे केवल दो का ही विचार कर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका अवतार क्यों किया गया है यह प्रश्न उठाकर वीरसेन स्वामीने उसका यह समाधान किया है कि वर्गणा प्ररूपणा अधिकार केवल वर्गणाओंकी एकश्रेणिका कथन करता है किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी एकश्रेणि और नानाश्रेणिका साङ्गोपाङ्ग विचार करता है, अतः यहाँ वर्गणाके शेष चौदह अधिकारोंका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन प्रारम्भ किया है।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहार इस अनुयोगद्वारके भी चौदह अवान्तर अधिकार हैं जिनके नाम ये हैं—वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओज-

युग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणा अल्पबहुत्व।

वर्गणाप्ररूपणा—इसके द्वारा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका विचार किया है। वे तेईस प्रकारकी वर्गणाएँ ये हैं—एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्य वर्गणा, संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्य वर्गणा, असंख्यात प्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, अनन्तप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, आहारवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, कार्मणद्रव्यवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा।

एक परमाणुकी एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। द्विप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तककी सब वर्गणाओंकी संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। जघन्य असंख्यातप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाओंकी असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। आहारवर्गणासे पूर्वतककी अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी जितनी वर्गणाएँ हैं उनकी यहाँ अनन्तप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा दी है। इन्हीं वर्गणाओंमें परीत और अपरीतप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाएँ भी सम्मिलित हैं। औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणाओंकी आहारवर्गणा संज्ञा है। इसी प्रकार आगे भी अपने अपने कार्यके अनुसार उन उन वर्गणाओंकी संज्ञा जाननी चाहिए। यहाँ जो चार ध्रुवशून्यवर्गणाएँ कही हैं वे वस्तुतः शून्यरूप हैं। केवल पिछली वर्गणा और अगली वर्गणाके मध्यके शून्यरूप अन्तरालका परिज्ञान करानेके लिए यह संज्ञा दी गई है।

यहां अन्तमें आई हुई प्रत्येकशरीरवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा और महास्कन्ध वर्गणा ये चार ऐसी वर्गणाएँ हैं जिनके स्वरूपके विषयमें कुछ अलगसे प्रकाश डालना आवश्यक है, अतः यहां इस विषयमें लिखा जाता है। एक जीवके एक शरीरमें जो कर्म और नोकर्मस्कन्ध सञ्चित होता है उसकी प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। यह प्रत्येकशरीर पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीरी प्रमत्तसंयत और केवली जिनके पाया जाता है। इन आठ प्रकारके जीवोंको छोड़कर शेष जितने संसारी जीव हैं उनका शरीर या तो निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित होनेके कारण सप्रतिष्ठित प्रत्येकरूप है या स्वयं निगोदरूप है। मात्र जो प्रत्येक वनस्पति निगोद रहित होती है वह इसका अपवाद है। यहां यह प्रश्न उठता है कि जब मनुष्योंके शरीर अन्य अवस्थाओंमें निगोदोंसे प्रतिष्ठित होते हैं तब ऐसी अवस्थामें आहारकशरीरी, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीवोंके शरीर निगोदरहित कैसे हो सकते हैं? समाधान यह है कि प्रमत्तसंयत जीवके जो औदारिकशरीर होता है वह तो निगोदोंसे सप्रतिष्ठित ही होता है। वहां जो आहारकशरीर उत्पन्न होता है वह अवश्य ही निगोदराशिसे अप्रतिष्ठित होनेके कारण केवल प्रत्येकरूप होता है। इसी प्रकार जब यह जीव बारहवें गुणस्थानमें पहुँचता है तो वहां उसके शरीरमें जितनी निगोदराशि होती है उसका क्रमसे अभाव होता जाता है और बारहवें गुणस्थानके अन्तिम समयमें निगोदराशि और कृमराशिका पूरीतरहसे अभाव होकर सयोगिकेवली जीवका शरीर केवल प्रत्येकरूप हो जाता है। उसके बाद अयोगिकेवली जीवके यही शरीर रहता है, इसलिए यह भी प्रत्येकरूप होता है। यह जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणा क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए अयोगिकेवली जिनके अन्तिम समयमें होती है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणा महावनके दाहादिके समय एकबन्धनबद्ध अग्निकायिक जीवोंके होती है। यहां यद्यपि महावनके दाहके समय जितने अग्निकायिक जीव होते हैं उनका अपना अपना शरीर अलग अलग ही होता है, पर वे सब जीव और उनके शरीर परस्पर संयुक्त रहते हैं,

इसलिए उन सबकी एक वर्गणा मानी गई है। यहां एक प्रश्न यह होता है कि विग्रहगतिमें स्थित जो बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद जीव होते हैं उन्हें प्रत्येकशरीर मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि वहां उन जीवोंका एक शरीर न होनेसे वे सब अलग अलग ही माने जाने चाहिए। इस शंकाका समाधान यह है कि वहां भी उनके साधारण नामकर्मका उदय रहता है और इसलिए वे अनन्त होते हुए भी एकबन्धनबद्ध ही होते हैं, अतः उन्हें प्रत्येकशरीर नहीं माना जा सकता। यह कहना कि विग्रहगतिमें शरीरनामकर्मका उदय न होनेसे वहां स्थित जीव प्रत्येकशरीर और साधारण, इनमेंसे कोई नहीं माने जा सकते हैं, युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता, क्योंकि विग्रहगतिमें भी सूक्ष्म और बादर कर्मोंके साथ साधारण नामकर्मका उदय देखा जाता है, इसलिए जिनके इन कर्मोंका उदय होता है उन्हें निगोद जीव माननेमें कोई बाधा नहीं आती। तथा इनके अतिरिक्त जो जीव होते हैं, चाहे उन्होंने शरीर ग्रहण किया हो और चाहे शरीर ग्रहण न किया हो, वे सब प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं। इस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा किन किन जीवोंके किस प्रकार होती है इसका विचार किया।

उक्त चार वर्गणाओंमें दूसरी वर्गणा बादरनिगोदवर्गणा है। यह वर्गणा क्षपित कर्मांशविधिसे आये हुए क्षीणकषाय जीवके अन्तिम समयमें होती है, क्योंकि एक तो जो क्षपितकर्मांश विधिसे आया हुआ जीव होता है उसके कर्म और नोकर्मका सञ्चय उत्तरोत्तर न्यून न्यून होता जाता है। दूसरे ऐसा नियम है कि क्षपकश्रेणि पर आरोहण करनेवाले जीवके विशुद्धिवश ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जाती है जिससे उस जीवके क्षीणकषाय गुणस्थानमें पहुँचने पर उसके प्रथम समयमें शरीरस्थित अनन्त बादरनिगोद जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलिपृथक्त्वप्रमाण काल जाने तक उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक बादरनिगोद जीव मरते हैं। उससे आगे क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातभाग अधिक संख्यातभाग अधिक जीव मरते हैं। उससे अगले समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो मरनेवाले निगोद जीव होते हैं उनके विस्रसोपचयसहित कर्म और नोकर्मके समुदायको एक बादर निगोदवर्गणा कहते हैं। चूंकि यह अन्य बादर निगोदवर्गणाओंकी अपेक्षा सबसे जघन्य होती है, अतः क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोदवर्गणा कही गई है।

यहाँ बारहवें गुणस्थानमें उस गुणस्थानवाले जीवके शरीरके सब निगोद जीवोंके मरनेकी बात कही गई है। इसका अभिप्राय यह है कि सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीवका शरीर एकमात्र अपने जीवको छोड़कर अन्य त्रस और स्थावर निगोद जीवोंसे रहित हो जाता है। उनके शरीरकी सात धातु और उपधातु यहाँ तक कि रोम, नख, चमड़ी और रक्त भी एक सयोगिकेवली जीवके शरीरको छोड़कर अन्य किसी जीवका आधार नहीं रहता। यहाँ बारहवें गुणस्थानमें यद्यपि क्रमसे निगोद राशिका अभाव बतलाया गया है, इसलिए यह प्रश्न हो सकता है कि क्षीणकषाय जीवके शरीरसे निगोदराशिका अभाव होता है तो होओ, पर उसके शरीरसे त्रसराशिका भी अभाव हो जाता है यह कैसे माना जा सकता है? उत्तर यह है कि नारकी, देव, आहारकशरीरी और केवली इन चार प्रकारके त्रस जीवोंके शरीरोंको छोड़कर अन्य जितने त्रस जीवोंके शरीर हैं वे सब बादरनिगोद प्रतिष्ठित होते हैं, ऐसा आगमवचन है। अब जब कि केवली जिनके शरीरमें एक भी निगोद जीव नहीं रहता तो वहाँ उनके आधारभूत अन्य कृमिरूप त्रस जीवोंकी सम्भावना ही नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि केवली जिनके शरीरको कृमिरूप त्रस जीवों और बादरनिगोद जीवोंसे रहित बतलाया है।

निगोद जीव क्षीणकषाय जीवके शरीरमेंसे क्यों मरने लगते हैं, इसका समाधान वीरसेन स्वामीने इस प्रकार किया है। उनका कहना है कि ध्यानके बलसे वहाँ उत्तरोत्तर बादर निगोद जीवोंकी उत्पत्तिका

निरोध होता जाता है, इसलिए क्रमसे नये बादर निगोद जीव उत्पन्न नहीं होते हैं और जो पुराने बादर-निगोद जीव होते हैं उनकी आयु पूर्ण हो जानेके कारण वे मर जाते हैं। यद्यपि क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव सर्वथा उत्पन्न ही नहीं होते ऐसी बात नहीं है। प्रारम्भमें तो वे उत्पन्न होते हैं और क्षीणकषायगुणस्थानके कालमें बादरनिगद जीवकी जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहने तक वे उत्पन्न होते हैं। इसके बाद नहीं उत्पन्न होते। यहाँ यह प्रश्न होता है कि जिस प्रकार प्रारम्भमें वे उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक वे क्यों नहीं उत्पन्न होते ? समाधान यह है कि केवली जिनका शरीर प्रतिष्ठित प्रत्येकरूप है ऐसा षट्खण्डागम शास्त्रका अभिप्राय है। अब यदि यह माना जाता है कि क्षीणकषाय जीवके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव उत्पन्न होते हैं तो केवली जिनके शरीरमें भी बादर निगोद जीवोंका सद्भाव मानना पड़ता है। चूँकि केवली जिनके शरीरमें बादर निगोद जीवोंका सद्भाव नहीं बतलाया है, इसलिए यह बात सुतरां सिद्ध हो जाती है कि क्षीणकषायके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव न उत्पन्न होकर जहाँ तक सम्भव है वहीं तक उत्पन्न होते हैं।

साधारणतः अन्य शास्त्रोंमें केवली जिनके शरीरको सात धातु और उपधातुसे रहित परमौदारिक रूप कहा गया है और यह भी बतलाया है कि केवलीके शरीरके नख और केश नहीं बढ़ते। केवली होनेके समय शरीर की जो अवस्था रहती है, आयुके अन्तिम समय तक वही अवस्था बनी रहती है, सो इन सब बातोंका रहस्य इस मान्यतामें छिपा हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि उनके शरीरमेंसे हड्डी आदिका अभाव हो जाता है। जो चीज जैसी होती है वह वैसी ही बनी रहती है। मात्र उसमेंसे बादर निगोद जीव और उनके आधारभूत कृमिका अभाव हो जानेसे वह उस प्रकार पुद्गलका सञ्चयमात्र रह जाता है। उदाहरणके लिए दूध लीजिए। गायके स्तनोंसे दूध निकालनेपर कुछ कालमें उसमें जीवत्पत्ति होने लगती है, पर अग्निपर अच्छी तरहसे तपा लेनेपर उसमें कुछ कालतक जीवत्पत्ति नहीं होती। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह दूध ही नहीं रहता। दूध तो उस अवस्थामें भी बना रहता है। इस प्रकार जो बात दूधके विषयमें है वही बात केवली जिनके शरीरके और उसकी धातुओं और उपधातुओंके विषयमें भी जाननी चाहिए।

इस प्रकार क्षपितकर्मांश विधिसे आए हुए क्षीणकषाय जीवके अन्तिम समयमें प्राप्त शरीरमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है। तथा स्वयम्भूरमणद्वीपके कर्मभूमिसम्बन्धी भागमें मूलीके शरीरमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है। मध्यमें नाना जीवोंका आश्रय लेकर ये बादरनिगोदवर्गणाएँ अनेक विध होती हैं।

तीसरी विचारणीय सूक्ष्मनिगोदवर्गणा है। बादर और सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें अन्तर यह है कि बादरनिगोदवर्गणा दूसरेके आश्रयसे रहती है और सूक्ष्मनिगोदवर्गणा जलमें, स्थलमें व आकाशमें सर्वत्र विना आश्रयके रहती है। क्षपित कर्मांशविधिसे और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए जो सूक्ष्म निगोद जीव होते हैं उनके यह सूक्ष्म निगोद वर्गणा जघन्य होती है। यह तो आगमप्रसिद्ध बात है कि एक निगोद जीव अकेला नहीं रहता। अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है। असंख्यात-लोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती है और आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंका एक स्कन्ध होता है। यहाँ ऐसे सूक्ष्म स्कन्धकी एक जघन्य वर्गणा ली गई है। तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा एक बन्धनबद्ध छह जीवनिकायोंके संघात रूप महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती है। ये अपने जघन्यसे उत्कृष्ट तक निरन्तर क्रमसे पाई जाती हैं। बादर निगोद वर्गणाओंमें जिस प्रकार बीच-बीचमें अन्तर दिखलाई देता है उस प्रकार इनमें नहीं दिखलाई देता।

चौथी विशेष वक्तव्य योग्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा है। यह वर्गणा आठों पृथिवियाँ, भवन और विमान आदि सब स्कन्धोंके संयोगसे बनती है। यद्यपि इन सब पृथिवी आदिमें अन्तर दिखलाई देता है, पर सूक्ष्म स्कन्धों द्वारा उनका परस्पर सम्बन्ध बना हुआ है, इसलिए इन सबको मिलाकर एक महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा मानी गई है।

इसप्रकार ये कुल तेईस वर्गणाएँ हैं। इनमेंसे आहारवर्गणा, तैजसशरीरवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणशरीरवर्गणा ये पाँच वर्गणाएँ जीवद्वारा ग्रहण योग्य हैं, शेष नहीं। इन वर्गणाओंका प्रमाण कितना है, पिछली वर्गणासे अगली वर्गणा किस क्रमसे चालू होती है, अपनी जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट कितनी बड़ी है आदि प्रश्नोंका समाधान मूलको देखकर कर लेना चाहिए।

यहां तक एक श्रेणिवर्गणाओंका विचार करके आगे नानाश्रेणिवर्गणाओंका विचार करते हुए कौन वर्गणा कितनी होती है यह बतलाया गया है। एक श्रेणिवर्गणामें जातिकी अपेक्षा कुल वर्गणाएँ तेईस मानकर उनका विचार किया गया है और नानाश्रेणिवर्गणामें प्रत्येक वर्गणा संख्याकी अपेक्षा कितनी हैं इसप्रकार परिमाण बतलाकर विचार किया गया है।

वर्गणानिरूपणा – तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमेंसे कौन वर्गणा किस प्रकार उत्पन्न होती है क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, इस बातका विचार इस अधिकारमें किया गया है। स्कन्धके टूटनेका नाम भेद है। परमाणुओंके समागमका नाम संघात है और स्कन्धका भेद होकर मिलनेका नाम भेद-संघात है। उदाहरणार्थ—द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे एकप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती हैं। द्विप्रदेशी वर्गणा त्रिप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे, एकप्रदेशी वर्गणाओंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है। इसी प्रकार आगे भी समझ लेना चाहिए। मात्र सान्तर-निरन्तर वर्गणासे लेकर अशून्यरूप जितनी वर्गणाएँ हैं वे सब स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही उत्पन्न होती है। इतनी बात अवश्य है कि किन्हीं सूत्रपोथियोंमें सान्तर-निरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति भी पूर्वकी वर्गणाओंके संघातसे, उपरिम वर्गणाओंके भेदसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे बतलाई है। कारणका विचार मूल टीकामें किया ही है, इसलिए वहाँसे जान लेना चाहिए।

पहले वर्गणाद्रव्यसमुदाहारके चौदह भेद करके सूत्रकारने वर्गणाप्ररूपणा और वर्गणानिरूपणा इन दो का ही विचार किया है। शेष बारहका क्यों नहीं किया है इस बातका विचार करते हुए वीरसेन स्वामी कहते हैं कि सूत्रकार चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके ज्ञाता थे, इसलिए उन अनुयोगद्वारोंके अजानकार होनेके कारण नहीं किया है, यह तो कहा नहीं जा सकता है। वे उनका कथन करना भूल गये इसलिए नहीं किया है यह भी कहना उचित नहीं है, क्योंकि सावधान व्यक्तिसे ऐसी भूल होना सम्भव नहीं है। फिर क्यों नहीं किया है इस बातका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी कहते हैं कि पूर्वाचार्योंके व्याख्यानका जो क्रम रहा है उसका प्ररूपण करनेके लिए ही यहाँ भूतबलि भट्टारकने शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है। इस प्रकार मूल सूत्रोंमें शेष बारह अनुयोगद्वारोंका विचार तो नहीं किया गया है, फिर भी वीरसेनस्वामीने उन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर वर्गणाओंका विस्तारसे विचार किया है, सो यह समस्त विषय मूलसे जान लेना चाहिए।

बाह्य वर्गणा विचार

इस प्रकार यहाँ तक आभ्यन्तर वर्गणाका विचार करके आगे बाह्यवर्गणाका विचार चार अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है। वे चार अनुयोगद्वार ये हैं—शरीरिशरीरप्ररूपणा,

शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा। शरीरी जीवको कहते हैं। इनके प्रत्येक और साधारणके भेदसे दो प्रकारके शरीर होते हैं। इन दोनोंका जिसमें प्रतिपादन किया जाता है उसे शरीरिशरीरप्ररूपणा कहते हैं। औदारिक आदि पाँच प्रकारके शरीरोंका अपनी अवान्तर विशेषताओंके साथ जिसमें प्ररूपण किया जाता है उसे शरीरप्ररूपणा कहते हैं। जिसमें पाँचों शरीरोंके विस्रसोपचयके सम्बन्धके कारणभूत स्निग्ध और रूक्षगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंका कथन किया जाता है उसे शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा कहते हैं। तथा जिसमें जीवमें मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसे विस्रसोपचयप्ररूपणा कहते हैं।

शरीरिशरीरप्ररूपणा—इसमें जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारण शरीर ये दो भेद बतलाकर साधारणशरीर वनस्पतिकायिक ही होते हैं और शेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं यह बतलाया गया है। इसके आगे साधारणका लक्षण करते हुए बतलाया है कि जिनका साधारण आहार है और श्वासोच्छ्वासका ग्रहण साधारण है वे साधारण जीव हैं। इनका शरीर एक होता है। उसे व्याप्त कर अनन्तानन्त निगोद जीव रहते हैं. इसलिए इन्हें साधारण कहते हैं और इसीलिए आहार और श्वासोच्छ्वासका ग्रहण भी साधारण होता है। तात्पर्य यह है कि सर्व प्रथम उत्पन्न हुए जीव जितने कालमें शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होते हैं उतने ही कालमें अनन्तर उसी शरीरमें उत्पन्न हुए जीव भी शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो जाते हैं। यहां अलग अलग जीवोंके योगके तारतम्यमें और आगे पीछे उत्पन्न होनेसे पर्याप्तियोंके पूर्ण करनेमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। यहां तक पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेके समयमें यदि जीव इस शरीरमें उत्पन्न होते है तो वे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही पूर्वमें उत्पन्न हुए जीवों द्वारा ग्रहण किये गये आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिको प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें उसके लिए अलगसे प्रयत्नशील नहीं होना पड़ता। विशेष स्पष्ट कहें तो यह कहा जा सकता है कि पर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए एक जीव द्वारा जो अनुग्रहण अर्थात् परमाणु-पुद्गलोंका ग्रहण है वह उस समय वहाँ रहनेवाले या पीछे उत्पन्न होनेवाले अन्य अनन्तानन्त जीवोंका अनुग्रहण होता है, क्योंकि एक तो उस आहारसे जो शक्ति उत्पन्न होती है वह युगपत् सब जीवोंको मिल जाती है। दूसरे उन परमाणुओंमें जो शरीरके अवयव बनते है वे सबके होते हैं। इसी प्रकार बहुत जीवोंके द्वारा जो अनुग्रहण है वह एक जीवके लिए भी होता है। एक शरीरमें जो प्रथम समयमें जीव उत्पन्न होते हैं और जो द्वितीयादि समयोंमें उत्पन्न होते हे वे सब यहाँपर एक साथ उत्पन्न हुए माने जाते हैं, क्योंकि उन सबका एक शरीरके साथ सम्बन्ध पाया जाता है। यह तो उनके आहारग्रहणकी विधि है। उनके मरण और जन्मके सम्बन्धमें भी यह नियम है कि जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीव उत्पन्न होते हैं और जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीवोंका मरण होता है। तात्पर्य यह है कि वे एक बन्धनबद्ध होकर ही जन्मते हैं और मरते है। वे निगोद जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो प्रकारके होते हैं और ये परस्पर अपने सब अवयवों द्वारा समवेत होकर ही रहते है। उसमें भी बादर निगोद जीव मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके आश्रयसे रहते है और सूक्ष्म निगोद जीव सर्वत्र एक बन्धनबद्ध होकर पाये जाते हैं। एक निगोद जीव अकेला कहीं नहीं रहता। इन निगोद जीवोंके जो आश्रय स्थान हैं उनमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। उनमेंसे एक एक निगोदशरीरमें जितने बादर और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते हैं उनसे दूसरे समयमें उसी शरीरमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं। पुनः एक, दो आदि समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके-असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर देकर पुनः एक, दो आदि समयोंसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्पन्न होते है। इस प्रकार सान्तर निरन्तरक्रमसे जबतक सम्भव है वे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। ये सब उत्पन्न हुए जीव एक साथ एक क्षेत्रावगाही होकर रहते हैं। सूत्रकार कहते हैं कि

ऐसे अनन्त जीव हैं जो अभीतक त्रसपर्यायको नहीं प्राप्त हुए हैं, क्योंकि इनका एकेन्द्रिय जातिमें उत्पत्तिका कारणभूत संक्लेश परिणाम इतना प्रबल है जिससे वे निगोदवास छोड़नेमें असमर्थ हैं। अबतक जितने सिद्ध हुए और जितना काल व्यतीत हुआ उससे भी अनन्तगुणे जीव एक निगोदशरीरमें निवास करते हैं। यहाँपर वीरसेनाचार्य संख्यात आदिकी परिभाषा करते हुए लिखते है कि आय रहित जिन राशियोंका केवल व्ययके द्वारा विनाश सम्भव है वे राशियाँ संख्यात और असंख्यात कही जाती हैं। तथा आय न होनेपर भी जिस राशिका व्ययके द्वारा कभी अभाव नहीं होता वह राशि अनन्त कही जाती है। यद्यपि अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी अनन्त माना जाता है, पर यह उपचार कथन है। और इस उपचारका कारण यह है कि यह अन्य ज्ञानोंका विषय न होकर अनन्त संज्ञावाले सिर्फ केवलज्ञानका विषय है, इसलिए इसमें अनन्तका व्यवहार किया जाता है। निगोदराशि दो प्रकारकी है—चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद। जो चारों गतियोंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदमें चले जाते हैं वे चतुर्गतिनिगोद कहलाते हैं। इतरनिगोद शब्द इसीका वाचक है और जो अबतक निगोदसे नहीं निकले हैं या सर्वदा निगोदमें रहते हैं वे नित्य-निगोद कहे जाते हैं। अतीत कालमें कितने जीव त्रसपर्यायको प्राप्त कर चुके हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी लिखते हैं कि अतीतकालसे असंख्यातगुणे जीव ही अभीतक त्रसपर्यायको प्राप्त हुए हैं।

यह अर्थपद है। इसके अनुसार यहाँ आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। वे ये हैं—सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व। यहाँ इन आठों अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर दो शरीरवाले तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीर रहित जीवोंका ओघ और आदेशसे विचार किया गया है। विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले होते हैं, क्योंकि उनके तैजस और कार्मण ये दो शरीर पाये जाते हैं। औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या वैक्रियिक, तैजस और कार्मण शरीरवाले जीव तीन शरीरवाले होते है। औदारिक वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मणशरीरवाले जीव चार शरीरवाले होते हैं। तथा सिद्ध जीव शरीर रहित होते हैं। यहाँ सत् आदि अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे विशेष व्याख्यान मूलसे जान लेना चाहिए। विशेष बात इतनी है कि सूत्रोंमें केवल सत्प्ररूपणा और अल्पबहुत्व प्ररूपणा ही कही गई हैं। शेष छहका व्याख्यान वीरसेन आचार्यने किया है।

शरीरप्ररूपणा—इसका व्याख्यान छह अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे किया गया है। वे छह अनुयोगद्वार ये हैं—नामनिरुक्ति, प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकप्ररूपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व। नामनिरुक्तिमें पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति की गई है। प्रदेशप्रमाणानुगममें पाँचों शरीरोंके प्रदेश अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह बतलाया गया है। निषेकप्ररूपणाका विचार अवान्तर छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है। उनके नाम ये हैं—समुत्कीर्तना, प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, प्रदेशविरच और अल्पबहुत्व। समुत्कीर्तना द्वारा बतलाया गया है कि जिन औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी वर्गणाओंका प्रथम समयमें ग्रहण होता है उनमेंसे कुछ एक समय तक, कुछ दो समय तक इस प्रकार तीन आदि समयसे लेकर जिसकी जितनी उत्कृष्ट स्थिति होती है कुछ उतने काल तक रहती हैं। आशय यह है कि इन शरीरोंकी स्थितिमें आबाधा काल नहीं होता। इसी प्रकार तैजसशरीरके विषयमें भी जानना चाहिए। मात्र तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति छ्यासठ सागर लेनी चाहिए। कार्मणशरीरके परमाणु ग्रहण करनेके बाद एक आवलि तक नहीं खिरते, इसलिए इसके परमाणु कुछ एक समय अधिक एक आवलि तक और कुछ दो समय अधिक एक आवलि तक इस प्रकार तीन समय अधिक एक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे कार्मस्थितिप्रमाण काल तक रहते हैं। कार्मणशरीरकी स्थितिमें कमसे कम एक आवलिप्रमाण आबाधा काल है, इसलिए यहाँ

आबाधाको ध्यानमें रखकर निर्जराका विचार किया गया है। प्रदेशप्रमाणानुगममें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्रत्येक समयमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्राप्त होते हैं। और यह क्रम अपनी अपनी स्थिति तक जानना चाहिए। अनन्तरोपनिधामें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्राप्त होकर प्रथम समयमें बहुत दिये जाते हैं। तथा द्वितीयादि समयोंमें विशेष हीन विशेष हीन दिए जाते हैं। इस प्रकार अपनी अपनी स्थिति पर्यन्त जानना चाहिए। परम्परोपनिधामें बतलाया है कि प्रारम्भके तीन शरीरोंके प्रदेश प्रथम समयमें जितने दिये जाते हैं, अन्तर्मुहूर्त जाने पर उसके अन्तिम समयमें वे आधे दिये जाते हैं। इसलिए इन शरीरोंकी एक द्विगुणहाणि अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और नाना द्विगुणहानियाँ आदिके दो शरीरोंमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण और आहारक-शरीरमें संख्यात समयप्रमाण होती हैं। तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरके प्रदेश प्रथम समयमें जितने निक्षिप्त होते हैं, पल्यके असंख्यातवें भाग जाकर वे आधे निक्षिप्त होते हैं। इनकी एक द्विगुणहानि पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है और नाना द्विगुणहानियाँ पल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। प्रदेशविरचमें सोलह पदवाला दण्डक कहा गया है जिसमें पर्याप्तानिर्वृत्ति, निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान इनका स्वतन्त्र भावसे और सम्मूर्च्छन, गर्भज व औपपादिक जीवोंके आश्रयसे स्वस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है। उसके बाद इन्हींका परस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है। पुनः इसके आगे प्रदेशविरचके छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश करके उनके आश्रयसे पाँच शरीरोंकी प्ररूपणा की गई है। उनके नाम ये हैं—जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष, अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व। निषेकप्ररूपणाके अन्तिम अनुयोगद्वार अल्पबहुत्वमें पाँच शरीरोंके आश्रयसे एक गुणहानि और नाना गुणहानियोंके अल्पबहुत्वका विचार किया गया है। इस प्रकार अपने अवान्तर अधिकारोंके साथ निषेकप्ररूपणाका कथन करके गुणकार अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके प्रदेश उत्तरोत्तर कितने गुणे हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए गुणकारका कथन किया है। पदमीमांसामें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशोंका स्वामी कौन-कौन जीव है इसका विचार किया गया है। अल्पबहुत्वमें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका विचार कर शरीरप्ररूपणा समाप्त की गई है।

शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा यद्यपि पांच शरीरोंमें स्निग्धादि गुणोंके कारण जो परमाणुपुद्गल सम्बद्ध होकर रहते हैं उनकी विस्रसोपचय संज्ञा है। फिर भी यहाँ पर इन विस्रसोपचयोंके कारणभूत जो स्निग्धादि गुण हैं उन्हें भी कारणमें कार्यका उपचार करके विस्रसोपचय कहा गया है। इस प्रकार यहाँ इन्हीं स्निग्धादि गुणोंका इस अनुयोगद्वारमें अपने छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विचार किया गया है। उनके नाम ये हैं—अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तर-प्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा और अल्पबहुत्व। अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणामें बतलाया है कि औदारिक शरीरके एक एक प्रदेशमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। वर्गणाप्ररूपणामें बतलाया है कि इस प्रकार अविभागप्रतिच्छेदवाले सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी एक वर्गणा होती है और ये सब वर्गणाएँ अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होती हैं। इतनी वर्गणाओंका एक औदारिकशरीरस्थान होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। स्पर्धक प्ररूपणामें बतलाया है कि अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाओंका एक स्पर्धक होता है। तथा सब स्पर्धक मिलकर भी इतने ही होते हैं। अन्तर प्ररूपणामें बतलाया है कि एक स्पर्धकसे दूसरे स्पर्धकके मध्य अन्तर सब जीवोंसे अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेदोंको लेकर होता है। अर्थात् पिछले स्पर्धककी अन्तिम वर्गणामें जितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं उन्हें सब जीवोंसे अनन्तगुणे करने पर जो लब्ध आवे उतने अविभागप्रतिच्छेद उससे अगले स्पर्धककी प्रथम वर्गणामें जानने चाहिए। शरीर-प्ररूपणामें बतलाया है कि ये अनन्त अविभागप्रतिच्छेद शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद

करने पर उत्पन्न होते हैं और फिर यहीं पर प्रसंगसे छेदके दस भेदोंका स्वरूपनिर्देश किया गया है। अल्पबहुत्वमें पांच शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका विचार करके शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त की गई है।

विस्रसोपचयप्ररूपणा—जो पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवने छोड़ दिये हैं और जो औदायिकभावको न छोड़कर सब लोकमें व्याप्त होकर अवस्थित हैं उनकी यहाँ विस्रसोपचय संज्ञा मानकर विस्रसोपचयप्ररूपणा की गई है। एक एक जीवप्रदेश अर्थात् एक एक परमाणु पर सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय उपचित रहते हैं और वे सब लोकमें से आकर विस्रसोपचयरूपसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं। या वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे अलग होकर सब आकाश प्रदेशोंसे सम्बन्धको प्राप्त होकर रहते हैं। इस प्रकार जीवसे अलग होकर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंकी द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि किस प्रकार होती है, आगे यह बतलाया गया है और यह बतलानेके बाद जीवसे अभेदरूप पाँच शरीरपुद्गलोंके विस्रसोपचयका माहात्म्य बतलानेके लिए अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है। तथा मध्यमें प्रसंगसे जीवप्रमाणानुगम, प्रदेशप्रमाणानुगम और इनके अल्पबहुत्वका भी विचार किया गया है। इस प्रकार इतना विचार करने पर बाह्यवर्गणाका विचार समाप्त होता है।

चूलिका

पहले जो अर्थ कह आये हैं उसका विशेषरूपसे कथन करना चूलिका है। पहले 'जत्थेय मरदि जीवो' इत्यादि गाथा कह आये हैं। यहां पर सर्व प्रथम इसी गाथाके उत्तरार्धका विचार किया गया है। ऐसा करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमें एक निगोद जीवके उत्पन्न होने पर उसके साथ अनन्त निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। तथा जिस समय ये जीव उत्पन्न होते हैं उसी समय उनका शरीर और पुलवि भी उत्पन्न होती है। तथा कहीं कहीं पुलविकी उत्पत्ति पहले भी हो जाती है, क्योंकि पुलवि अनेक शरीरोंका आधार है, इसलिए उसकी उत्पत्ति पहले माननेमें कोई बाधा नहीं आती। साधारण नियम यह है कि अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है और असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती हैं। प्रथम समयमें जितने निगोद जीव उत्पन्न होते हैं दूसरे समयमें वहीं पर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते है। तीसरे समयमें उनसे भी असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं। उसके बाद कमसे कम एक समयका और अधिकसे अधिक आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर पड़ जाता है। पुनः अन्तरके बादके समयमें असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं और यह क्रम आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक चालू रहता है। इस प्रकार इन निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और अन्तरका क्रम कहकर अद्धाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्वका विचार किया गया है। अद्धाअल्पबहुत्वमें सान्तरसमयमें और निरन्तरसमयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका अल्पबहुत्व तथा इन कालोंका अल्पबहुत्व विस्तारके साथ बतलाया गया है। जीव अल्पबहुत्वमें कालका आश्रय लेकर जीवोंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। इसके बाद स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलिवियोंमें जो बादर और सूक्ष्म निगोद जीव उत्पन्न होते हैं वे सब पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या मिश्ररूप ही होते हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए प्रतिपादन किया है कि सब बादर निगोद जीव पर्याप्त ही होते हैं, क्योंकि अपर्याप्तकोंकी आयु कम होनेसे वे पहले मर जाते हैं, इसलिए पर्याप्त जीव ही होते हैं। किन्तु इसके बाद वे मिश्ररूप होते हैं, क्योंकि बादमें पर्याप्त और अपर्याप्त बादर निगोद जीवोंके एक साथ रहनेमें कोई बाधा नहीं आती। किन्तु सूक्ष्म निगोद वर्गणामें सभी सूक्ष्म निगोद जीव मिश्ररूप ही होते हैं, क्योंकि इनकी उत्पत्तिके प्रदेश और कालका कोई नियम नहीं है।

इस प्रकार 'जत्थेय मरदि जीवो' इत्यादि गाथाके उत्तरार्धका कथन करके उसके पूर्वार्धका विचार करते हुए बतलाया गया है कि जो बादर निगोद जीव उत्पत्तिके क्रमसे उत्पन्न होते हैं और परस्पर बन्धनके

क्रमसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं उनका मरणके क्रमसे ही निर्गम होता है। इनका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गमन नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गमन होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। मरणका क्रम क्या है इस प्रश्नका समाधान करते हुए बतलाया है कि वह दो प्रकारका है—यवमध्यक्रम और अयवमध्यक्रम। इनमेंसे पहले अयवमध्यक्रमका निर्देश करते हैं—सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिके द्वारा मरनेवाले और सबसे दीर्घकाल द्वारा निर्लेप्यमान होनेवाले जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। यहाँ निगोद शब्द पुलविवाची है। अभिप्राय यह है कि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पूर्वमें मृत हुए जीवोंसे बचे हुए जीवोंकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण होती हैं। क्षीणकषायके अन्तिम समयमें निगोद जीवोंके शरीर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक शरीरमें पूर्वमें मरनेसे बचे हुए अनन्त निगोद जीव होते हैं। तथा उनकी आधारभूत पुलवियाँ उक्त प्रमाण होती हैं। यहाँ क्षीणकषायके कालके भीतर या थूवर आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा चार प्रकारकी है—प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व। प्ररूपणामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक समयमें जीव मरते हैं। प्रमाणमें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक समयमें अनन्त जीव मरते है। श्रेणि दो प्रकारकी है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। अनन्तरोपनिधामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक हैं। दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिपृथक्त्व कालतक प्रत्येक समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं। उसके आगे विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें संख्यात भाग अधिक जीव मरते हैं। उसके बाद क्षीणकषायके संख्यातवें भागप्रमाण कालमेंसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहनेपर इसके भीतर असंख्यातगुणित क्रमसे गुणश्रेणि मरण होता है। परम्परोपनिधामें बतलाया है कि क्षीण-कषायके प्रथम समयमें जितने जीव मरते हैं उससे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल जानेपर मरनेवाले जीव दूने हो जाते हैं। इस प्रकार इतना इतना अवस्थित अध्वान जाकर मरनेवाले जीवोंकी संख्या दूनी दूनी होती जाती है और यह क्रम असंख्यातवें भाग अधिक मरनेवाले जीवोंके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक जानना चाहिए। उसके बाद अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं।

आगे क्षीणकषायके कालमें बादर निगोद जीवके जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते हैं। इस अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। आगे जघन्य और उत्कृष्ट बादर और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी पुलवियोंका परिमाण बतलाकर सब निगोदोंकी उत्पत्तिमें कारण महास्कन्धके अवयव आठ पृथिवी, टङ्क, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक आदि बतलाये गये हैं। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि जब महास्कन्धके स्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट पद होता है और जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्ध-स्थानोंका उत्कृष्ट पद होता है।

आगे मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए संदृष्टियाँ स्थापित करके सब जीवोंमें महादण्डकका कथन किया गया है और संदृष्टियोंमें जो बात दरसाई गई है उसका यहाँ सूत्रोंद्वारा प्रतिपादन किया गया है। यहाँ विशेष जानकारीके लिए मूलका स्वाध्याय अपेक्षित है। इस प्रकार इतने कथन द्वारा 'जत्थेय मरइ जीवो' इस गाथाकी प्ररूपणा समाप्त होती है।

अब पाँच शरीरोंके ग्रहण योग्य कौन वर्गणाएँ हैं और कौन ग्रहण योग्य नहीं हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए ये चार अनुयोगद्वार आये हैं—वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व। वर्गणाप्ररूपणामें पुनः एक प्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणासे लेकर कार्मणद्रव्य वर्गणा तककी सब वर्गणाओंका नामोल्लेख किया गया है। वर्गणानिरूपणामें इन वर्गणाओंमेंसे एक-एक वर्गणाको लेकर यह वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य है या ग्रहणप्रायोग्य नहीं है ऐसी पृच्छा करके जो जो वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं

है उसे अग्रहणप्रायोग्य बतलाकर अन्तमें यही पृच्छा अनन्तानन्त परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणाके विषयमें करके यह बतलाया गया है कि इसमेंसे कुछ वर्गणाएँ ग्रहणप्रायोग्य हैं और कुछ वर्गणाएँ ग्रहणप्रायोग्य नहीं हैं। इसका विशेष खुलासा करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि इस सूत्रमें जघन्य आहारवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्य वर्गणा तक सब वर्गणाओंकी अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। इनमेंसे आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणशरीरवर्गणा ये पाँच वर्गणाएँ ग्रहणप्रायोग्य हैं, शेष नहीं। जो पाँच वर्गणाएँ ग्रहणप्रायोग्य हैं उनमें आहारवर्गणामेंसे औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीन शरीरोंका ग्रहण होता है। तैजस वर्गणामेंसे तैजसशरीरका ग्रहण होता है। भाषावर्गणामेंसे चार प्रकारकी भाषाओंका ग्रहण होता है। मनोवर्गणामेंसे चार प्रकारके मनकी रचना होती है और कार्मणवर्गणामेंसे ज्ञानावरणादि आठ प्रकारके कर्मोंका ग्रहण होता है। इन सूत्रोंकी टीका करते हुए वीरसेन स्वामीने एक बहुत ही महत्त्वकी बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है। उनका कहना है कि यद्यपि आहार वर्गणासे औदारिक आदि तीन शरीरोका निर्माण होता है पर जिन आहारवर्गणाओंसे औदारिकशरीरका निर्माण होता है उनसे वैक्रियिक और आहारक शरीरका निर्माण नहीं होता। जिन आहारवर्गणाओंसे वैक्रियिकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और आहारक-शरीरका निर्माण नहीं होता। तथा जिन आहारवर्गणाओंसे आहारकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और वैक्रियिकशरीरका निर्माण नहीं होता। वस्तुतः औदारिक आदि तीन शरीरोंका निर्माण करनेवाली आहारवर्गणाएँ अलग अलग हैं पर उनके मध्यमें व्यवधान न होनेसे उनकी एक वर्गणा मानी गई है। इसी प्रकार भाषा आदि वर्गणाओंमें चार भाषाओं, चार मन और आठ कर्मोंकी वर्गणाएँ भी अलग अलग जाननी चाहिए। इस प्रकरणके जो सूत्र हैं उन्हींके आधारसे उन्होंने यह अर्थ फलित किया है। प्रदेशार्थतामें सब शरीरोंकी प्रदेशार्थता अनन्तानन्त प्रदेशवाली है यह बतलाकर आदिके तीन शरीरोंमें पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श बतलाये हैं। तथा अन्तके दो शरीरोंमें पाँच वर्ण पाँच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श बतलाये हैं। आहारकशरीरमें धवल वर्ण होता है ऐसी अवस्थामें यहां पाँच वर्ण कैसे बतलाये हैं इसका समाधान करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि आहारकशरीरके विस्रसोपचयकी अपेक्षा उसका धवल वर्ण कहा जाता है, वैसे उसमें पाँचों वर्ण होते हैं। इसी प्रकार इस शरीरमें अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्श अव्यक्त भावसे रहते हैं, या अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणाएँ आहारकशरीररूपसे परिणमन करते समय शुभ रूप हो जाती हैं, इसलिए इसमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श भी बतलाये हैं। तथा तैजस और कार्मणस्कन्धमें प्रतिपक्षरूप स्पर्श नहीं होते, इसलिए चार स्पर्श बतलाये है। अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—प्रदेश अल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व। प्रदेशअल्पबहुत्वमें बतलाया है कि औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। उनसे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजसशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश अनन्तगुणे हैं। उनसे भाषा, मन और कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं। अवगाहना अल्पबहुत्वमें बतलाया है कि कार्मणशरीर द्रव्य-वर्गणाकी अवगाहना सबसे स्तोक है। उससे मनोद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे भाषाद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है और उससे औदारिक शरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है।

बन्धविधान

बन्धके चार भेद हैं—प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध। इन चारोंका विस्तारसे निरूपण भगवान् भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें किया है। उसका यहां पर प्ररूपण करनेपर बन्धविधान समाप्त होता है।

विषय-सूची

बाह्यवर्गणा विचार

शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा

चूलिका

बन्धविधान

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	अज्झत्थवहिरत्थ-	अज्झत्थबहित्थ-
२	२	-विभासा	-विभासा
२	१२	अण्णाणविणासणट्ठं	अण्णाणविणासणट्ठ"
४	३	-जावस्स	जीवस्स
९, ११ १३, १५	शीर्षक	णिबंधणाणियोगद्दारे	बंधणाणियोगद्दारे
१५	२	-दत्तादो । उवसंत-	-दत्तादो । [उवसंतमोहे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अट्ठावीसमोहणीयपयडीणं दव्व-कम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो ।] उवसंत-
१५	१७	है । उपशान्तकषाय	है । उपशान्तमोह जीवके जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह मोहनीयकी अट्ठाईस प्रकृतिरूप द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न हुआ है । उपशान्तकषाय
३५	११	दावानलो	दावाणलो
३६	९	णोककम्मबंधो	णोकम्मबंधो
४१	५	जदणं	जदूणं
४३	८	-सरारबंधो	-सरीरबंधो
४४	९	णामं	णाम
४४	१३	अण्णस्सासंभवादा	अण्णस्सासंभवादो
४८	६	-मस्सि ण	-मस्सिदूण
४८	१२	एयपदे सय-	एयपदेसिय-

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६	१	आणओगद्दाराणि	अणिओगद्दाराणि
६५	८	सगु स्सिया	सगुक्स्सिया
६६	७	एवंविह-	एवंविह-
६८	३	-चयपुजं	-चयपुंजं
८०	१	वैक्रियिक और तैजसशरीरके	तैजस और कार्मणशरीरके
८१	३	देवकदंच्छुआदिसु	देवकदंच्छुपादिसु
८१	२४	आहारकशरीर, प्रमत्त	आहारकशरीरी प्रमत्त
८६	१८	और लता आदि	और आर्द्रक आदि
११०	१, २	लता आदिकमें	आर्द्रक आदिकमें
१२५	६	सघादेण	संघादेण
१२८	पृ० सं०	२८	१२८
१३०	३	-भावेणपरिमाण	-भावेण परिणाम-
१३२	७	दव्ववग णा	दव्ववग्गणा
१४५	८२	लता आदिमें	आर्द्रक आदिमें
१५१	१२	कालादा	कालादो
१५४	८	सगत्तमणियोगद्दारं ।	समत्तमणियोगद्दारं ।
१६६	१४	-मात्मदेसाः	-मात्मदेशाः
२०५	३	णेदु	णेदुं
२१५	१०	-बहुअं	-बहुअं
२२५	६	पत्तयं	पत्तेयं
२४७	५	दसणाणुवादेण	दंसणाणुवादेण
२६१	२०	असंख्यातवें	संख्यातवें
२६४	१८	बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त	बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त
३५७	६	-णिव्वत्तिट्ठाणमेत्तेण	-णिव्वत्तिट्ठाणमेत्तेण
३३६	६	जीयणीयट्ठाणाणि	जीवणीयट्ठाणाणि
३६७	७	उक्कस्समगं	उक्कस्समग्गं
३७४	१	ट्ठिदिए	ट्ठिदीए
३७६	११	एवं	एवं
३७८	२२	असंख्यातगुणा	संख्यातगुणा
४०६	१२	चरिमगोवुच्छं	चरिम-[दुचरिम] गोवुच्छं
४०६	२६	अन्तिम गोपुच्छको	चरम द्विचरम गोपुच्छको

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२०	८	जावदव्वए	जीविदव्वए
४२५	५	-महण्णं	-मजहण्णं
४२६	५	चेव	चेव
४४०	११	चउव्विहाणी—दव्वाणि	चउव्विहा हाणी—दव्वहाणी
४४६	१८	असंख्यातगुणे हीन	असंख्यातवें भाग हीन
४४७	२६	परिमाणिकभावको	पारिणामिक भावको
४४८	६	अठ्ठ	अट्ठ
४८४	१०	संभवत्ति ?	संभवदि ?
४६७	२७	यह आयु यव-	यह आयुबन्ध यव-
५१५	७	बयणं	वयणं
५१८	१५	ओरालियसरारस्स	ओरालियसरीरस्स
५५४	५	पदेसठ्ठा	पदेसठ्ठदा
५५४	१०	पंचरणाओ	पंचवरणाओ

वग्गणाखंडे

बंधणाणुयोगद्दारं

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमे खंडे वग्गणाए

बंधणाणियोगद्दारं

सिद्धे विउद्धसयले अज्झत्थबहिरत्थबंधणुम्मुक्के ।
भत्तीए अहं णमिउं पुणो पुणो बंधणं वोच्छं ॥ १ ॥

बंधणे त्ति चउव्विहा कम्मविभासा[1]– बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति ॥ १ ॥

बंधो बंधणं, तेण बंधो सिद्धो । बध्नातीति बन्धनः । तदो बंधगाणं गहणं । बध्यत इति कर्मसाधने समाश्रीयमाणे बंधणिज्जस्स गहणं । बध्यते अनेनेति करणसाधने

सब पदार्थोंका साक्षात्कार करनेवाले और भीतर तथा बाहरके सब बन्धनोंसे मुक्त हुए सिद्धोंको बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करके मैं (ग्रन्थकर्ता) बन्धननामक अनुयोगद्वारका कथन करता हूं ॥ १ ॥

'बन्धन' इस अनुयोगद्वारमें बन्धनको क्रमसे चार प्रकारकी विभाषा है—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान ॥ १ ॥

बंधना इसका नाम बन्धन है, इससे बन्धकी सिद्धि होती है। जो बाँधता है वह बन्धन है, इससे बन्धकका ग्रहण होता है। 'जो बाँधा जाता है' इस प्रकार कर्मसाधनका आश्रय करने-पर बन्धन शब्दसे बन्धनीयका ग्रहण होता है। 'जिसके द्वारा बाँधा जाता है' इस प्रकार करण

१ ताप्रतौ 'कम्मविभासा' इति पाठः ।

शब्दनिष्पत्तौ सत्यां बन्धविधानोपलब्धिः। तेण बंधणस्स चउव्विहा चेव कम-विभासा[1] होदि।

दव्वस्स दव्वेण दव्व-भावाणं वा जो संजोगो समवाओ वा सो बंधो णाम। बंधस्स दव्व-भावभेदभिण्णस्स जे कत्तारा ते बंधया णाम। बंधपाओग्गपोग्गलदव्वं बंधणिज्जं णाम। पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभेदभिण्णा बंधवियप्पा बंधविहाणं णाम। एदेसु चउसु बंधणेसु ताव बंधपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि।

जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो–णामबंधो ट्ठवणबंधो दव्वबंधो भावबंधो चेदि ॥ २ ॥

बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ॥ ३ ॥

णिक्खेवं काऊण तदट्ठपरूवणं मोत्तूण बंधणयविभासणा किमट्ठं कीरदे? ण एस दोसो, अणवगयणयसरूवस्स भव्वजीवस्स णिक्खेवट्ठपरूवणाए किज्जंतीए अवुत्ततुल्लत्त-प्पसंगादो अण्णाण्णविणासणट्ठं परूवणा कीरदे। जदि सा तं ण कुणइ तो सा किंफला

साधनमें बन्धन शब्दकी सिद्धि करनेपर उससे बन्धविधानका ग्रहण होता है। इसलिये बन्धनका विशेष व्याख्यान क्रमसे चार प्रकारका ही होता है।

विशेषार्थ—यहाँ व्युत्पत्तिपूर्वक 'बन्धन' के चार भेद किये गये हैं— बन्ध, बन्धक, बन्ध-नीय और बन्धविधान। कोई किसीसे बँधता है इससे बन्धकी सिद्धि की गई है। जो बाँधता है वह बन्धक है, और जो बँधता है वह बन्धनीय है। इससे बन्धक और बन्धनीयकी सिद्धि की गई है। जब कोई वस्तु बँधती है तो वह कितने प्रकारसे बँधती है, इसके द्वारा बन्धविधानकी सिद्धि की गई है। इस प्रकार बन्धनके चार भेद ही हो सकते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

द्रव्यका द्रव्यके साथ तथा द्रव्य और भावका क्रमसे जो संयोग और समवाय होता है वह बन्ध कहलाता है। द्रव्य और भावके भेदसे दो प्रकारके बन्धके जो कर्ता हैं वे बन्धक कहलाते हैं। बन्धके योग्य पुद्गल द्रव्य बन्धनीय कहा जाता है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए बन्धके भेदोंको बन्धविधान कहते हैं। इन चार प्रकारके बन्धनोंमेंसे सर्व प्रथम बन्धका कथन करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

बन्धके चार भेद हैं—नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध ॥ २ ॥

बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष विचार करनेपर कौन नय किन बन्धोंको स्वीकार करता है ॥ ३ ॥

शंका— निक्षेपका निर्देश करनेके बाद उसका निरूपण करना था, किन्तु वैसा न करके पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किसलिये किया जाता है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नयके स्वरूपको समझे विना भव्योंको निक्षेप-का कथन करनेपर वह अनुक्तके समान प्राप्त होता है, इसलिये अज्ञानका विनाश करनेके लिए पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किया गया है। यदि वह अज्ञानका विनाश न करे

१ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-ताप्रतिषु 'अण्णोण्णविणासणट्ठं' इति पाठः।

होज्ज । जदि एवं, तो बंधणयविभासणा चेव किण्ण परूविदा ? ण, णिक्खेवे अणुद्दिट्ठे संते तमाधारं काऊण भण्णमाणणयविभासणाणुववत्तीदो । तम्हा णिक्खेवं काऊण पच्छा बंधणयविभासणा कीरदे ।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे ॥ ४ ॥

णेगम-ववहार-संगहणया सव्वे बंधे इच्छंति; तेसिं विसए चदुण्णमेदेसिं संभवादो । सुद्धसंगहणए चदुण्णमेदेसिं णिक्खेवाणं संभवो णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; असुद्धसंगह-मस्सिदूणेदेसिं णिक्खेवाणमुवलंभादो । दव्वट्ठिएसु एदेसु णएसु कधं भावणिक्खेवो लब्भइ ? ण, वंजणपज्जायमस्सिदूण भावबंधोवलंभादो ।

उजुसुदो ट्ठवणबंधं णेच्छदि ॥ ५ ॥

कुदो ? तत्थ भावाणं सरिसत्ताभावादो । ण च संकप्पवसेण भावो भावंतरं पडिवज्जदि; एगत्थंभम्मि संकप्पवसेण तिहुवणप्पवेसप्पसंगादो । ण च एवं, तिहुवण-भावाणुवलंभादो ।

सद्दणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि ॥ ६ ॥

तो उसका और क्या फल हो सकता है ?

शंका—यदि ऐसा है तो पहले बन्धका नयकी अपेक्षा ही विशेष विचार क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि निक्षेपका कथन किये बिना उसे आधार बनाकर नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान करना नहीं बन सकता, इसलिये निक्षेपका निर्देश करनेके बाद ही बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान किया है ।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ॥ ४ ॥

नैगमनय, व्यवहारनय और संग्रहनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं; क्योंकि इनके विषय-रूपसे ये चारों बन्ध सम्भव है । यदि कहा जाय कि शुद्ध संग्रहनयमें ये चारों निक्षेप सम्भव नहीं हैं, सो ऐसा कहना ठीक नहीं है; क्योंकि अशुद्ध संग्रहनयकी अपेक्षा ये सब निक्षेप उसके विषय बन जाते हैं ।

शंका—ये तीनों द्रव्यार्थिक नय हैं, इसलिये इनके विषयरूपसे भावनिक्षेप कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि व्यञ्जनपर्यायकी अपेक्षा भावबन्ध इनका विषय बन जाता है ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता ॥ ५ ॥

क्योंकि, यह नय पदार्थोंकी सदृशताको स्वीकार नहीं करता । यदि कहा जाय कि संकल्प-वश एक पदार्थ दूसरे पदार्थरूप हो जायगा, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक खम्भेमें संकल्पवश तीन लोकके प्रवेशका प्रसंग प्राप्त होता है । और ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें तीन लोकका सद्भाव नहीं पाया जाता ।

शब्दनय नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है ॥ ६ ॥

कधं णामबंधस्स तत्थ संभवो? ण, णामेण विणा इच्छिदत्थपरूवणाए अणुववत्तीदो।

जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति सो सव्वो णामबंधो णाम ॥ ७ ॥

णामस्स पवुत्ती एदेसु अट्ठसु चेव; एदेहिंतो बज्झस्स अण्णस्साणुवलंभादो। एदेसु अट्ठसु पवत्तमाणबंधसद्दो णामबंधो कधं णाम अप्पाणं[1] पयासेदि? ण, सुज्ज-मणि-चंदादिसु स-परप्पयासस्सुवलंभादो।

जो सो ट्ठवणबंधो णाम सो दुविहो– सब्भावट्ठवणबंधो चेव असब्भावट्ठवणबंधो चेव ॥ ८ ॥

सब्भावासब्भावट्ठवणबंधेहिंतो पुधभूदट्ठवणबंधाभावादो दुविहो चेव ट्ठवणबंधो होदि। को ट्ठवणबंधो णाम? अण्णबंधम्मि अण्णबंधस्स सो एसो त्ति बुद्धीए ट्ठवणा

शंका—इन दोनों नयोंमें नामबन्ध कैसे सम्भव है?

समाधान— नहीं, क्योंकि नामके विना इच्छित पदार्थका कथन नहीं किया जा सकता; इस अपेक्षा नामबन्धको इन दोनों नयोंका विषय स्वीकार किया है।

जो यह नामबन्ध है वह इस प्रकार है—एक जीव, एक अजीव, बहुत जीव, बहुत अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और बहुत अजीव, बहुत जीव और एक अजीव तथा बहुत जीव और बहुत अजीव; इनमेंसे जिसका बन्ध यह नाम किया जाता है वह सब नामबन्ध है ॥ ७ ॥

नामकी प्रवृत्ति इन आठोंमें ही होती है, क्योंकि इनके बाहर अन्य पदार्थ नहीं पाया जाता।

शंका— इन आठमें प्रवृत्त हुआ बन्ध शब्द नामबन्ध होता हुआ अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूर्य, मणि और चन्द्र आदिमें स्व और परके प्रकाशनकी योग्यता पाई जाती है। आशय यह है कि जैसे सूर्य आदि स्व-परप्रकाशक होते हैं वैसे नाम शब्द भी स्व-परप्रकाशक है।

स्थापना बन्ध दो प्रकारका है—सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध ॥ ८ ॥

सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्धसे जुदा कोई तीसरा स्थापनाबन्ध नहीं पाया जाता, इसलिये स्थापनाबन्ध दो प्रकारका ही होता है।

शंका—स्थापनाबन्ध किसे कहते हैं?

समाधान—अन्य बन्धमें अन्य बन्धकी 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे स्थापना करना

१ ताप्रतौ 'णामबंधो। कथ णाम अप्पाणं' इति पाठः।

ट्ठवणबंधो णाम। आकृतिमति सद्भावस्थापना, अनाकृतिमति तद्विपरीता।

जो सो सब्भावासब्भावट्ठवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्ण एवमादिया सब्भाव-असब्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सब्भाव-असब्भावट्ठवणबंधो णाम ॥ ९ ॥

सीवणि-खइरसोगकट्ठादिसु चक्कबंध-मुरवबंध-विज्जाहरबंध-णागपासबंध-संसरवासबंधादीणं जहासरूवेण घडियठवणा सब्भावट्ठवणबंधो णाम। अजहासरूवेण एदेसिं बंधाणं तेसु ट्ठवणा असब्भावट्ठवणबंधो णाम। चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहि णिप्फण्णाणि चित्तकम्माणि णाम। वत्थेसु पाण-मालिय-कोसट्टादीहिं जाणि वूणणकिरियाए[1] णिप्पाइदाणि रूवाणि छिंपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम। लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम। पत्थरकट्टएहि[2] जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम। तेहि चेव छिण्णसिलासु घडिदरूवाणि सेलकम्माणि णाम।

स्थापनाबन्ध है। आकृतिवाले पदार्थमें सद्भावस्थापना होती है और आकृतिरहित पदार्थमें असद्भावस्थापना होती है।

जो वह सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—काष्ठकर्मोंमें, चित्रकर्मोंमें, पोतकर्मोंमें, लेप्यकर्मोंमें, लयनकर्मोंमें, शैलकर्मोंमें, गृहकर्मोंमें, भित्तिकर्मोंमें, दन्तकर्मोंमें, भेंडकर्मोंमें; तथा अक्ष या कौड़ी इनको आदि लेकर और दूसरे पदार्थ अभेदस्वरूपसे सद्भावस्थापना तथा असद्भावस्थापनामें 'यह बन्ध है' इस रूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध है ॥ ९ ॥

श्रीपर्णी, खैर और अशोक काष्ठ आदिमें चक्रबन्ध, मुरजबन्ध, विद्याधरबन्ध, नागपाशबन्ध, और संसारवासबन्ध आदिकी तदाकार स्थापना करना सद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है। इन बन्धोंकी उन श्रीपर्णी आदि काष्ठोंमें अतदाकार स्थापना करना असद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है। चित्रकार रंग विशेषोंसे जो चित्र बनाते हैं वे चित्रकर्म कहलाते हैं। वस्त्रोंमें पाण, सालिय और कोसट्ट आदि बुनकरोंके द्वारा बुनने रूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं या छीपा उनपर जो आकार बनाते हैं वे पोतकर्म कहलाते हैं। लेप्यकार लेपन कर जो आकार बनाते हैं वे लेप्यकर्म कहलाते हैं। पत्थरफोड़ा पर्वतोंमें जो आकार घटित करते हैं वे लयनकर्म कहलाते हैं। वे ही छिन्न शिलाओंमें जो आकार घटित करते हैं वे शैलकर्म कहलाते हैं। मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो

१ अप्रतौ '-कोसट्टादीहि जाणि दूणर्णाकिरियाए' काप्रतौ '-कोसट्टादीहि जाणि दूणणकिरियाए' ताप्रतौ '-कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए' इति पाठः। २ अ-आ-काप्रतिषु 'पत्थरट्टएहि', मप्रतौ 'पत्थरउट्टएहि' इति पाठः।

मट्टियपिंडेण पासादेसु[1] घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम। तेण चेव कुड्डेसु घडिद-रूवाणि भित्तिकम्माणि णाम। दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम। भेंडेहि घडिदरूवाणि भेंडकम्माणि णाम। एदाणि दस वि कम्माणि देसामासियाणि। तेण पत्तकम्म–भिंगकम्म–तलवत्तकम्म–तालिवत्तकम्म–भुजवत्तकम्म–सीवणकम्म-मणिवियाण-कम्मादीणि वत्तव्वाणि। एदेसु कम्मेसु जहासरूवेण ट्ठविदबंधो सब्भावट्ठवणबंधो णाम। तव्विवरीयसरूवेण ट्ठवणबंधो असब्भावट्ठवणबंधो णाम। एदेसिं देसामासियत्तं कधं णव्वदे? उवरि भण्णमाण-एवमादिय-वयणादो। अक्खो णाम पासओ, वराडओ णाम कवड्डओ। एदाणि वे वि वयणाणि असब्भावट्ठवणाए ठविदाणि। कुदो एदं णव्वदे? अक्खेसु वा वराडएसु वा त्ति सत्तमीयंतणिद्देसाभावादो। एदेसु एदे वा अमा एयत्तेण ठवणाए बुद्धीए ठविज्जंति बंधो त्ति सो सव्वो ठवणबंधो णाम। ठवणासद्दो बुद्धिवाचओ त्ति कुदो णव्वदे? धरणी धारणा ट्ठवणा कोट्ठा पदिट्ठा त्ति सुत्तादो[2]।

आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म कहलाते हैं। उसीसे दीवालोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे भित्तिकर्म कहलाते हैं। हाथीके दांतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दन्तकर्म कहलाते हैं। भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं। ये दसों ही कर्म देशामर्शक हैं। इससे पत्रकर्म, भृङ्गकर्म, तलवत्त (आभूषण) कर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सीनेका कर्म और मणिविज्ञानकर्म आदिका ग्रहण करना चाहिए। इन कर्मोंमें तदाकारस्वरूपसे बन्धकी स्थापना करना सद्भाव-स्थापनाबन्ध है और अतदाकाररूपसे बन्धकी स्थापना करना असद्भावस्थापनाबन्ध है।

शंका—इनका देशामर्शकपना कैसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रमें आगे कहे जानेवाले 'एवमादिय' वचनसे जाना जाता है। अक्ष पांसेका नाम है और वराटक कौड़ीका नाम है। ये दोनों ही वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रमें 'अक्खेसु वा वराडएसु वा' इस प्रकार सप्तम्यन्त वचनका निर्देश नहीं किया है। इससे जाना जाता है कि ये दोनों वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं।

इनमें या ये 'अमा' अर्थात् अभेदरूपसे, स्थापना अर्थात् बुद्धिसे 'बन्ध' इस प्रकार स्थापित किये जाते हैं इसलिये यह सब स्थापनाबन्ध कहलाता है।

शंका—स्थापना शब्द बुद्धिका वाचक है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—'धरणी, धारणा, स्थापना, कोष्ठा और प्रतिष्ठा ये बुद्धिके नाम हैं' इस सूत्रसे जाना जाता है।

विशेषार्थ— यहां सद्भाव और असद्भावरूप दोनों प्रकारके स्थापनाबन्धकी चर्चा की गई है। स्थापना एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें होती है। जिसमें स्थापना की जाती है यदि वह तदाकार होता है तो वह सद्भावस्थापना कहलाती है और यदि अतदाकार होता है तो वह असद्भावस्थापना कहलाती है। बुद्धिसे 'यह वह ही है' ऐसा एकत्व स्थापित करके स्थापना की जाती है, ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

१ अ-काप्रत्योः 'वट्टइपिंडेण पासादेसु', आप्रतौ 'वट्टइपासादेसु' ता०प्रतौ 'वड्डइपिंडेण पसादेसु' इति पाठः। २ प्रकृति अनुयोगद्वार सू० ४० (पु० १३)।

जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो ॥१०॥

किमट्ठं थप्पो कीरदि ? बहुवण्णणिज्जत्तादो ।

जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो—आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ॥ ११ ॥

एवं दुविहो चेव भावबंधो होदि; आगम-णोआगमेहिंतो वदिरित्तभावाणुवलंभादो ।

जो सो आगमदो भावबंधोणाम तस्स इमो णिद्देसो– ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ॥ १२ ॥

ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससममिदि णवविहो आगमो । कधमेगो आगमो णवविहत्तं पडिवज्जदे ? लक्खणभेदेण । किं तल्लक्खणं ? उच्चदे—अवधृतमात्रं स्थितं नाम । जेण बारह वि अंगाणि अवहारिदाणि सो

द्रव्यबन्ध स्थगित किया जाता है ॥ १० ॥

शंका—किसलिये स्थापित किया जाता है ?

समाधान—क्योंकि आगे उसका बहुत वर्णन करनेवाले हैं ।

भावबन्ध दो प्रकारका है—आगमभावबन्ध और नोआगमभावबन्ध ॥ ११ ॥

इस प्रकार भावबन्ध दो ही प्रकारका होता है, क्योंकि आगमभाव और नोआगमभावसे अतिरिक्त अन्य भाव नहीं पाया जाता ।

जो आगमभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम । इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा, तथा इनसे लेकर जो अन्य उपयोग हैं उनमें भावरूपसे जितने उपयुक्त भाव हैं वे सब आगमभावबन्ध है ॥ १२ ॥

स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; यह नौ प्रकारका आगम है ।

शंका—एक आगमके नौ भेद कैसे हो जाते हैं ?

समाधान—लक्षणके भेदसे एक आगमके नौ भेद हो जाते हैं ।

शंका—वह लक्षण कौन-सा है ?

समाधान—कहते हैं, अवधारणमात्रकी स्थित संज्ञा है । जिसने बारह ही अंगोंको

साहू ट्ठिदसुदणाणं होदि। कधं तस्स ट्ठिदत्तं ? अण्णत्थ संचाराभावादो। तं पि कुदो ? परेसिं करणसत्तीए अभावादो। जो अवगयमत्थं सण्णिससण्णि चिंतिऊण वोत्तुं समत्थो सो जिदं णाम सुदणाणं। जो अवगयबारहअंगो संतो खलणेण विणा अवगयमत्थं वोत्तुं समत्थो सो परिजिदं णाम सुदणाणं होदि। ण च एदे वे वि आगमा परपच्चायणक्खमा; दच्छत्ताभावादो। जो अवगयबारहअंगो संतो परेहिं वक्खाणक्खमो सो आगमो वायणोवगदो णाम। का वाचना ? शिष्याध्यापनं वाचना। सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणाणं सुत्तसमं। अथवा सुत्तं बारहंगसद्दागमो, आइरियोवदेसेण विणा सुत्तादो चेव जं उप्पज्जदि सुदणाणं तं सुत्तसमं। अत्थो गणहरदेवो, आगमसुत्तेण विणा सयलसुदणाणपज्जाएण परिणदत्तादो। तेण समं सुदणाणं अत्थसमं। अधवा अत्थो बीजपदं, तत्तो उप्पण्णं सयलसुदणाणमत्थसमं। आइरियाणमुवएसो गंथो, तेण समं गंथसमं। बारहअंगसद्दागममाइरियपादमूले सोऊण जं उप्पण्णं सुदणाणं तं गंथसममिदि वुत्तं होदि। आइरियपादमूले बारहंगसद्दागमं सोऊण जस्स अहिलप्पत्थविसयं चेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो णामसमं। बारहंगसद्दागमं सुणेंतस्स जस्स सुदपरिबद्धत्थविसयमेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो

अवधारित कर लिया है वह साधु स्थित श्रुतज्ञान है।

शंका—इसकी स्थित संज्ञा क्यों है ?

समाधान—अन्यत्र इसका संचार नहीं होता, इससे उसकी स्थित संज्ञा है।

शंका—ऐसा भी क्यों है ?

समाधान—क्योंकि अन्यके साधकतमरूपसे करण होनेकी शक्ति नहीं पाई जाती।

जो जाने हुए अर्थको धीरे-धीरे विचार कर कहनेके लिये समर्थ होता है वह जित नामका श्रुतज्ञान है। जो बारह अंगोंको जानकर बिना स्खलनके जाने हुए अर्थको कहनेके लिये समर्थ होता है वह परिजित नामका श्रुतज्ञान है। ये दोनों ही आगम अन्यको ज्ञान करानेमें समर्थ नहीं हैं, क्योंकि इनमें दक्षता नहीं पाई जाती। जो बारह अंगोंको जानकर अन्यके लिये उनका व्याख्यान करनेमें समर्थ है वह वाचनोपगत नामका आगम है।

शंका—वाचना किसे कहते हैं ?

समाधान—शिष्योंको पढ़ाना इसका नाम वाचना है।

सूत्रका अर्थ श्रुतकेवली है। उसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अथवा, सूत्रका अर्थ बारह प्रकारका अंगरूप शब्दागम है। आचार्यके उपदेशके बिना सूत्रसे ही जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है। अर्थ गणधरदेवका नाम है, क्योंकि, वे आगमसूत्रके बिना सकल श्रुतज्ञानरूप पर्यायसे परिणत रहते हैं, इनके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है। अथवा अर्थ बीजपदको कहते हैं, इससे जो समस्त श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्योंके उपदेशको ग्रन्थ कहते हैं, इसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जिसके कथन करने योग्य अर्थको विषय करनेवाला ही श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह नामसम श्रुतज्ञान है। बारह अंगरूप शब्दागमको सुननेवाले जिसके सुने हुए अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थको विषय करनेवाला

घोससमं। एवं णवविहं सुदणाणं परूविदं।

संपहि एत्थ उवओगो वायणा-पुच्छण-पडिच्छण-परियट्टण-अणुपेहण-त्थय-थुदि-धम्मकहाभेएण अट्ठविहो। तत्थ परेसिं वक्खाणं वायणा णाम। तत्थ अणिच्छिदट्ठाणं पण्णवावारो पुच्छणं णाम। आइरिएहि कहिज्जमाणत्थाणं सुणणं पडिच्छणं णाम। अवगयत्थस्स हियएण पुणो पुणो परिमलणं परियट्टणं णाम। सुदत्थस्स सुदाणुसारेण चिंतणमणुपेहणं णाम। सव्वसुदणाणविसओ उवजोगो थवो णाम। एगंगविसओ[१] एयपुव्वविसओ वा उवजोगो थुदी णाम। वत्थु-अणियोगादिविसओ भावो धम्मकहा णाम। एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम।

जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो—जीवभावबंधो चेव अजीवभावबंधो चेव ॥ १३ ॥

एवं दुविहो चेव णोआगमभावबंधो होदि; जीवाजीववदिरित्तणोआगमभावबंधाभावादो।

जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो—विवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १४ ॥

श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह घोषसम श्रुतज्ञान है। इस प्रकार नौ प्रकारके श्रुतज्ञानका कथन किया।

इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथाके भेदसे आठ प्रकारका उपयोग होता है। उनमेंसे अन्यके लिये व्याख्यान करना वाचना है। उसमें अनिश्चित अर्थको समझनेके लिये प्रश्न करना पृच्छना है। आचार्य जिन अर्थोंका कथन कर रहे हों उनका सुनना प्रतीच्छना है। जाने हुए अर्थका हृदयमें पुनः पुनः विचार करना परिवर्तना है। सुने हुए अर्थका श्रुतके अनुसार चिन्तन करना अनुप्रेक्षणा है। समस्त श्रुतज्ञानको विषय करनेवाला उपयोग स्तव कहलाता है। एक अंग या एक पूर्वको विषय करनेवाला उपयोग स्तुति कहलाता है। तथा वस्तु और अनुयोगद्वार आदिको विषय करनेवाला उपयोग धर्मकथा कहलाता है। इत्यादि जितने उपयोग हैं उनमें 'यह भाव है' ऐसा समझ कर जितने उपयुक्त भाव होते हैं वह सब आगम भावबन्ध है।

नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है—जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध ॥ १३ ॥

इस तरह दो प्रकारका ही नोआगमभावबन्ध है, क्योंकि, जीव और अजीव इन दो भेदोंके सिवा नोआगमभावबन्ध नहीं पाया जाता।

जीवभावबन्ध तीन प्रकारका है—विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १४ ॥

१ अ-आ-काप्रतिषु 'एवंगयविसओ'; ताप्रतौ 'एयंगयविसओ', इति पाठः।

एवं तिविहो चेव [जीव-] भावबंधो होदि, अण्णस्स चउत्थस्स जीवभावस्स अणुवलंभादो। कम्माणमुदओ उदीरणा वा विवागो णाम, विवागो पच्चओ कारणं जस्स भावस्स सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम। कम्माणमुदय-उदीरणाणमभावो अविवागो णाम। कम्माणमुवसमो खओ वा अविवागो त्ति भणिदं होदि। अविवागो पच्चयो कारणं जस्स भावस्स सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम। कम्म.णमुदय-उदीरणाहिंतो तदुवसमेण च जो उप्पज्जइ भावो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तत्थ इमो णिद्दसो– देवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे

इस प्रकार तीन प्रकारका ही जीवभावबन्ध है, क्योंकि अन्य चौथा जीवभाव नहीं पाया जाता। कर्मोंके उदय और उदीरणाको विपाक कहते हैं, और विपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणाके अभावको अविपाक कहते हैं। कर्मोंके उपशम और क्षयको अविपाक कहते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अविपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं। कर्मोंके उदय और उदीरणासे तथा इनके उपशमसे जो भाव उत्पन्न होता है उसे तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं।

विशेषार्थ— यहाँ जीवभावबन्धके तीन भेदोंके स्वरूपपर प्रकाश डाला गया है। विपाकका अर्थ उदय और उदीरणा है। अविपाकका अर्थ उपशम और क्षय है, तथा तदुभयका अर्थ क्षयोपशम है। इसमें देशघातिस्पर्धकोंका उदय और उदीरणा रहती है तथा सर्वघाति स्पर्धकोंका अनुदय रहता है। क्षयोपशम शब्द द्वारा अनुदय ही कहा गया है। क्षय अर्थात् अनुदय ही उपशम ऐसी उसकी व्युत्पत्ति है। तदुभयमें विपाक और अविपाक दोनोंका ग्रहण हो जाता है, किन्तु क्षयोपशम शब्द द्वारा उदय और उदीरणा अविवक्षित रहते हैं। अभिप्राय दोनोंका एक है।

जो विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यंचभाव, नारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, क्रोधवेद, मानवेद, मायावेद, लोभवेद, रागवेद, दोषवेद, मोहवेद, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, असंयतभाव, अविरतभाव, अज्ञानभाव और मिथ्यादृष्टिभाव; तथा

एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥ १५ ॥

देवगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणं णीदो देवभावो होदि। मणुसगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणवदिरित्तो मणुस्से त्ति भावो होदि। तिरिक्खगइणामकम्मोदएण तिरिक्खे त्ति भावो। णिरयगइणामकम्मोदएण णेरइए त्ति भावो। इत्थिकम्मोदएण इत्थिवेदो त्ति भावो होदि। पुरिसवेदभावो विवागपच्चइयो; पुरिसवेदोदयजणिदत्तादो। णवुंसयवेदभावो विवागपच्चइयो; णवुंसयवेदकम्मोदयजणिदत्तादो। कोध-माण-माया-लोभभावा विवागपच्चइया; कोध-माण-माया-लोभदव्वकम्मविवागजणिदत्तादो। रागो विवागपच्चइयो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। दोसो विवागपच्चइयो; कोह-माण-अरदि सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। पंचविहमिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं च मोहो, सो विवागपच्चइयो; मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। किण्ण-णील-काउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ विवागपच्चइयाओ; अघादिकम्माणं तप्पाओग्गदव्वकम्मोदएण कसाओदएण च छलेस्साणिप्पत्तीदो। असंजदत्तं विवागपच्चइयं; संजमघादिकम्माणमुदएण समुप्पण्णत्तादो।

इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकसे उत्पन्न हुए और जितने भाव हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं ॥ १५ ॥

देवगतिनामकर्मके उदयसे जो अणिमा आदि गुणोंको प्राप्त कराता है वह देवभाव है। मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे अणिमा आदि गुणोंमे रहित मनुष्यभाव होता है। तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे तियचभाव होता है। नरकगति नामकर्मके उदयसे नारकभाव होता है। स्त्रीवेद कर्मके उदयसे स्त्रीवेदरूप भाव होता है। पुरुषवेद भाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह पुरुषवेदके उदयसे उत्पन्न होता है। नपुंसकवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह नपुंसकवेद कर्मके उदयसे उपन्न होता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये भाव भी विपाकप्रत्ययिक होते हैं; क्योंकि, ये भाव क्रोध, मान, माया और लोभरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे उत्पन्न होते हैं। राग भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि इसकी उत्पत्ति माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे होती है। दोष भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि इसकी उत्पत्ति क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मके विपाकसे होती है। पाँच प्रकारका मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व मोह कहलाता है। वह भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धीरूप द्रव्यकर्मके उदयसे होती है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ललेश्या भी विपाकप्रत्ययिक होती हैं, क्योंकि, छह लेश्याओंकी उत्पत्ति अघाति कर्मोंमेंसे तत्प्रायोग्य द्रव्यकर्मके उदयसे और कषायके उदयसे होती है। असंयतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह संयमका घात करने-

अविरदत्तं विवागपच्चइयं; देस-सयलविरइघाइकम्मोदयजणिदत्तादो। संजम-विरईणं को भेदो? ससमिदिमहव्वयाणुव्वयाइं संजमो। समईहि विणा महव्वयाणुव्वया विरई। अण्णाणं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो णाणावरणकम्मोदयजणिदत्तादो वा। मिच्छत्तं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो। जे च अमी अण्णे च एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो— उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १६ ॥

वाले कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है। अविरतभाव भी विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि यह देशविरति और सकल विरतिके घातक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है।

शंका— संयम और विरतिमें क्या भेद है ?

समाधान—समितियोंके साथ महाव्रत और अणुव्रत संयम कहलाते हैं और समितियोंके बिना महाव्रत और अणुव्रत विरति कहलाते हैं। यही इन दोनोंमें भेद है।

अज्ञानभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे अथवा ज्ञानावरणके उदयसे उत्पन्न होता है। मिथ्यात्व भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होता है। इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकनिष्पन्न और जितने भाव होते हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहलाते हैं।

विशेषार्थ— प्रकृतमें प्रत्यय शब्द निमित्तवाची है। यहां देवभाव, मनुष्यभाव आदि जितने भाव गिनाये हैं ये सब विवक्षित कर्मके उदय और उदीरणाके निमित्तसे होते हैं, इसलिये इन्हें विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहा है। यहाँ ये कुल चौबीस भाव गिनाये हैं, जब कि तत्त्वार्थसूत्रमें कुल इक्कीस भाव ही गिनाये हैं। तत्त्वार्थसूत्रमें गिनाये गये भावोंमेंसे असिद्धत्व भाव यहाँ नहीं गिनाया है और यहाँ राग, दोष, मोह और अविरति ये चार भाव अतिरिक्त गिनाये हैं। इनमेंसे यद्यपि अविरति भावका सामान्यतः असंयतभावमें अन्तर्भाव किया जा सकता है, पर शेष तीन भावोंके गिनानेमें विशिष्ट दृष्टिकोणकी प्रतीति होती है। नोकषायोंके नौ भेद हैं, उनमेंसे रति आदिके उदयसे होनेवाले भावोंका तत्त्वार्थसूत्रमें दर्शन नहीं होता, जब कि यहाँ इन भावोंका राग और दोषमें अन्तर्भाव हो जाता है। इसी प्रकार सासादन भाव और सम्यग्मिथ्यात्वभावकी परिगणना भी तत्त्वार्थसूत्रमें नहीं की गई है जब कि यहाँ इनका अन्तर्भाव मोहमें हो जाता है। एक बात अवश्य है कि यहाँ असिद्धत्व भाव नहीं गिनाया है, पर इसके साथ यहाँ इसी प्रकार और दूसरे भावोंके ग्रहण करनेकी सूचना अवश्य की है। इसलिये कोई हानि नहीं है। आशय यह है कि यहाँ औदायिक भावोंका विचार करते समय उस दृष्टिकोणको अपनाया गया है जिससे प्रायः सभी भावोंका ग्रहण हो जाता है।

अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध दो प्रकारका है—औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥१६॥

एवं दुविहो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो होदि । जीव-भव्वाभव्वत्तादिजीव-भावा पारिणामिया वि अत्थि, ते एत्थ किण्ण परूविदा? वुच्चदे—आउआदिपाणाणं धारणं जीवणं । तं च अजोगिचरिमसमयादो उवरि णत्थि, सिद्धेसु पाणणिबंधणट्ठकम्माभावादो । तम्हा सिद्धा ण जीवा जीविदपुव्वा इदि । सिद्धाणं पि जीवत्तं किण्ण इच्छिज्जदे? ण, उवयारस्स सच्चत्ताभावादो । सिद्धेसु पाणाभावण्णहाणुववत्तीदो जीवत्तं ण पारिणामियं, किंतु कम्मविवागजं; यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् । तत्तो जीवभावो ओदइओ त्ति सिद्धं । तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं, किंतु चेदणगुणमवलंबिय तत्थ परूवणा कदा । तेण तं पि ण विरुज्झइ ।

अघाइकम्मचउक्कोदयजणिदमसिद्धत्तं णाम । तं दुविहं— अणादि-अपज्जवसिदं अणादि-सपज्जवसिदं चेदि । तत्थ जेसिमसिद्धत्तमणादि-अपज्जवसिदं ते अभव्वा णाम । जेसिमवरं ते भव्वजीवा । तदो भव्वत्तमभव्वत्तं च विवागपच्चइयं चेव । तच्चत्थे पारिणामियत्तं परूविदं, तेण सह विरोधो कधं ण जायदे? ण, असिद्धत्तस्स अणादि-अपज्जवसिदत्तं

इस तरह दो प्रकारका ही अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध होता है ।

शंका— जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व आदिक जीवभाव पारिणामिक भी हैं, उनका यहां क्यों कथन नहीं किया ।

समाधान— कहते हैं, आयु आदि प्राणोंका धारण करना जीवन है । वह अयोगीके अन्तिम समयसे आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि, सिद्धोंके प्राणोंके कारणभूत आठों कर्मोंका अभाव है । इसलिये सिद्ध जीव नहीं है, अधिकसे अधिक वे जीवितपूर्व कहे जा सकते हैं ।

शंका— सिद्धोंके भी जीवत्व क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सिद्धोंमें जीवत्व उपचारसे है, और उपचारको सत्य मानना ठीक नहीं है ।

सिद्धोंमें प्राणोंका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता, इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है । किन्तु वह कर्मके विपाकसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, 'जो जिसके सद्भाव और असद्भावका अविनाभावी होता है वह उसका है, ऐसा कार्य-कारणभावके ज्ञाता कहते हैं' ऐसा न्याय है । इसलिये जीवभाव औदयिक है, यह सिद्ध होता है । तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्वको जो पारिणामिक कहा है वह प्राणोंको धारण करनेकी अपेक्षासे नहीं कहा है, किन्तु चैतन्य गुणकी अपेक्षासे वहां वैसा कथन किया है, इसलिये वह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

चार अघाति कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ असिद्धभाव है । वह दो प्रकारका है— अनादि-अनन्त और अनादि-सान्त । इनमेंसे जिनके असिद्धभाव अनादि-अनन्त है वे अभव्य जीव हैं और जिनके दूसरे प्रकारका है वे भव्य जीव हैं । इसलिये भव्यत्व और अभव्यत्व ये भी विपाक-प्रत्ययिक ही हैं ।

शंका—तत्त्वार्थसूत्रमें इन्हें पारिणामिक कहा है, इसलिये इस कथनका उसके साथ विरोध कैसे नहीं होगा ?

अणादि-सपज्जवसिदत्तं च णिक्कारणमिदि तत्थ तेसिं पारिणामियत्तब्भुवगमादो ।

जो सो ओवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं, जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥१७॥

उवसंतकोहे अणियट्टिम्मि जो भावो सो उवसमिओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावकोधाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतमाणे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमाणाणमुवसमेण समब्भूदत्तादो । उवसंतमाये जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमायाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतलोभे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावलोहाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतरागे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेददव्वकम्माणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो । उवसंतदोसे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवाग-

समाधान—नहीं, क्योंकि असिद्धत्वका अनादि-अनन्तपना और अनादि-सान्तपना निष्कारण है, यह समझकर उन्हें वहां पारिणामिक स्वीकार किया गया है ।

जो औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है— उपशान्तक्रोध, उपशान्तमान, उपशान्तमाया, उपशान्तलोभ, उपशान्तराग, उपशान्तदोष, उपशान्तमोह, उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र, तथा इनसे लेकर और जितने औपशमिक भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १७ ॥

अनिवृत्तिकरणमें क्रोधके उपशमसे जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह द्रव्यक्रोध और भावक्रोधके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तमान जीवके जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह द्रव्यमान और भावमानके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तमाया जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमाया और भावमायाके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यलोभ और भावलोभके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तराग जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तदोष जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है,

पच्चइयो जीवभाववंधो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतकसायवीयरायछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभाववंधो; पणुवीसकसायाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो। जमुवसमियं सम्मत्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभाववंधो; तिविहदंसणमोहणीयदव्वकम्मुवसमेण समुप्पत्तीए। जं उवसमियं चारित्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभाववंधो; चारित्तमोहणीयस्स देस-सव्वुवसमणाण समुब्भूदत्तादो। जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णे वा वि[1] अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांपराइय-उवसंतकसाएसु समयं पडि जे उप्पज्जमाणा जीवभावा सो सव्वो उवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभाववंधो णाम।

जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभाववंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो— से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खाइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमादिया खइया भावा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभाववंधो णाम ॥ १८ ॥

क्योंकि वह क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तकपाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कपायरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। जो औपशमिक सम्यक्त्व है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह तीन प्रकारके दर्शनमोहनीय द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है। जो औपशमिक चारित्र है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयकी देशोपशमना और सर्वोपशमनासे उत्पन्न होता है। चूंकि ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकपाय गुणस्थानोंमें प्रत्येक समयमें उत्पन्न होनेवाले जो जीवके भाव है वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

जो क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है— क्षीणक्रोध, क्षीणमान, क्षीणमाया, क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणदोष, क्षीणमोह, क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दानलब्धि, क्षायिक लाभलब्धि, क्षायिक भोगलब्धि, क्षायिक परिभोगलब्धि, क्षायिक वीर्यलब्धि, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत्त, सर्वदुःख-अन्तकृत्, इसी प्रकार और भी जो दूसरे क्षायिक भाव होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥१८॥

१ प्रतिषु 'अण्णेया वि' इति पाठः।

खीणकोहे जीवे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावकोहाणं णिरवसेसक्खएण समुप्पण्णत्तादो। खीणमाणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावमाणक्खएण समुप्पत्तीदो[1]। खीणमाए जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहमायक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणलोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहलोहक्खएण समुप्पत्तादो। खीणरागे जीवे जो भावो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माय-लोह-हस्स-रदि-तिवेदाणं दुविहकम्मक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणदोसे जीवे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दुविहकम्म-क्खएण समुप्पत्तीदो। खीणमोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीव-भावबंधो; अट्ठावीसभेदभिण्णमोहक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणकसायवीदरागछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पंचवीसकसायाणं णिस्सेस-क्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं सम्मत्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दंसणमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं चारित्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, चारित्तमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जा खइया दाणलद्धी सो वि अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दाणंतराइयस्स णिम्मूलक्खएण समुप्पत्तीदो।

क्षीणक्रोध जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्य और भाव क्रोधके सर्वथा क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमान जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमाया जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारकी मायाके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दो प्रकारके लोभके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणराग जीवमें जो भाव होता है वह भी अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप कर्मोके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणदोष जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप कर्मोके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमोह जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह अट्ठाईस प्रकारके मोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीव-भावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायोंके निश्शेष क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक सम्यक्त्व है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दर्शनमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक चारित्र है, वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक दानलब्धि है वह भी अवि-पाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दानान्तरायके निर्मूल क्षयसे उत्पन्न होती है।

१ मप्रतिपाठोऽयम् अ-आ-का-ताप्रतिषु 'समुप्पत्तीए' इति पाठः। एवमग्रेऽपि।

अरहंता खीणदाणंतराइया सव्वेसिं जीवाणमिच्छिदत्थे किण्ण देंति ? ण, तेसिं जीवाणं लाहंतराइयभावादो । जा खइया लाहलद्धी सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, लाहंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । अरहंता जदि खीणलाहंतराइया तो तेसिं सव्वत्थोवलंभो किण्ण जायदे ? सच्चं, अत्थि तेसिं सव्वत्थोवलंभो, सगायत्तासेसभुवणत्तादो । जा खइया भोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, भोगंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जा खइया परिभोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, परिभोगंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जदि अरिहंता खीणपरिभोगंतराइया तो किण्ण परिभोगेंति वा ? ण, खीणकसायाणं उवभोग-परिभोगेहि पओजणाभावादो[1] । जा खइया विरियलद्धी सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, विरियंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । केवलणाणं केवलदंसणं च खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, केवलणाण-दंसणावरणक्खएण समुप्पत्तीदो । सिद्धे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो, अट्ठकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो ।

शंका— अरिहन्तोंके दानान्तरायका तो क्षय हो गया है, फिर वे सब जीवोंको इच्छित अथ क्यों नहीं देते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि उन जीवोंके लाभान्तराय कर्मका सद्भाव पाया जाता है।

जो क्षायिक लाभलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि वह लाभान्तराथ कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है।

शंका— अरिहन्तोंके यदि लाभान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थोंकी प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

समाधान— सत्य है, उन्हें सब पदार्थोंकी प्राप्ति होती है, क्योंकि उन्होंने अशेष भुवनको अपने आधीन कर लिया है।

जो क्षायिक भोगलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह भोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है। जो क्षायिक परिभोग लब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह परिभोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है।

शंका— यदि अरिहन्तोंके [भोगान्तराय और] परिभोगान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो वे अन्य पदार्थोंका [उपभोग और] परिभोग क्यों नहीं करते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनका उपभोग-परिभोगसे प्रयोजन नहीं रहता।

जो क्षायिक वीर्यलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह वीर्यान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है। केवलज्ञान और केवलदर्शन क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं, क्योंकि, ये क्रमशः केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण कर्मके क्षयसे उत्पन्न होते हैं। जो सिद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि,

१ प्रतिषु 'उपभोगे परिभोगहि य ओजणाभावादो' इति पाठः।

बुद्धे जो भावा सो वि खइओ [अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो], अंतरंग-बहिरंगावरण-क्खएण समुप्पत्तीदो। परिणिव्वुदे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइओ, असेसकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। सव्वदुक्खाणमंतयडत्तं पि खइयो अविवागपच्चइओ, सव्वदुक्खक्खएण समुप्पत्तीदो। जे च अमो पुव्वुत्ता भावा अण्णे च समयं पडि समुब्भूदा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो— खओवसामयं एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं बीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं चउरिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं सुदअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा खओवसमियं आभिणिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुद-णाणि त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मण-

---

वह आठों कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो बुद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभाव-बन्ध है, क्योंकि, वह अन्तरंग और बहिरंग आवरणके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो परिनिर्वृत भाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह अशेष कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। सब दुःखोंका अन्तकृत्त्व भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह सब दुःखोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी भाव जो प्रतिसमय उत्पन्न होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

विशेषार्थ— यहाँ क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध इक्कीस गिनाये हैं और इनके साथ प्रतिसमय होनेवाले अन्य क्षायिक भावोंकी सूचना की है। तत्त्वार्थसूत्रमें क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शन और पाँच क्षायिक लब्धियाँ; ये कुल नौ भाव गिनाये हैं। यहाँ गिनाये गये भावोंमें कुछ ऐसे भाव अवश्य हैं जिनका अलगसे उल्लेख करना इष्ट है और आवश्यक है। जैसे सिद्धभाव, सर्वदुःख-अन्तकृद्भाव आदि। शेषका कथंचित् अन्तर्भाव हो जाता है। यद्यपि पाँच लब्धियोंका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्ति नहीं है, किन्तु कहीं कहीं उनका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्ति बतलाया गया है, जो उपचार कथन है।

जो तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—क्षायोप-शमिक एकेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक द्वीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक त्रीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक चतुरिन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक पञ्चेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक मत्यज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुताज्ञानी, क्षायोपशमिक विभंगज्ञानी, क्षायोपशमिक आभिनिबोधिक-ज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुतज्ञानी, क्षायोपशमिक अवधिज्ञानी, क्षायोपशमिक मनःपर्यय-

पज्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमियं भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीरियलद्धि त्ति वा खओसमियं से आयारधरे त्ति वा खओवसमियं सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओवसमियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्झेणधरे त्ति वा खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अणुत्तरोववादियदसधरे त्ति वा खओअसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं विवागसुत्तधरे त्ति वा खओवसमियं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं दसपुव्वहरे त्ति वा खओवसमियं चोद्दसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो णाम ॥ १९ ॥

ज्ञानी, क्षायोपशमिक चक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अचक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अवधिदर्शनी, क्षायोपशमिक सम्यग्मिथ्यात्वलब्धि, क्षायोपशमिक सम्यक्त्वलब्धि, क्षायोपशमिक संयमासंयमलब्धि, क्षायोपशमिक संयमलब्धि, क्षायोपशमिक दानलब्धि, क्षायोपशमिक लाभलब्धि, क्षायोपशमिक भोगलब्धि, क्षायोपशमिक परिभोगलब्धि, क्षायोपशमिक वीर्यलब्धि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायोपशमिक सूत्रकृद्धर, क्षायोपशमिक स्थानधर, क्षायोपशमिक समवायधर, क्षायोपशमिक व्याख्याप्रज्ञप्तिधर, क्षायोपशमिक नाथधर्मधर, क्षायोपशमिक उपासकाध्ययनधर, क्षायोपशमिक अन्तकृद्धर, क्षायोपशमिक अनुत्तरौपपादिकदशधर, क्षायोपशमिक प्रश्नव्याकरणधर, क्षायोपशमिक विपाकसूत्रधर, क्षायोपशमिक दृष्टिवादधर, क्षायोपशमिक गणी, क्षायोपशमिक वाचक, क्षायोपशमिक दशपूर्वधर, क्षायोपशमिक चतुर्दश पूर्वधर; ये तथा इसी प्रकारके और भी दूसरे जो क्षायोपशमिक भाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा— एत्थ सव्वे वा-सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा । एइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पासिंदियावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए। वेइंदियलद्धि त्ति एदं पि खओवसमियं, जिब्भा-फासिंदियावरणक्खओवसमेण समुप्पत्तीए । तीइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा-फास-घाणिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए। चउरिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा-फास-घाण-चक्खिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । पंचिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पंचण्णमिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । मदिअण्णाणि त्ति एदं पि खओवसमियं, मदिणाणावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए । कुदो एदं मदिअण्णाणित्तं तदुभयपच्चइयं ? मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण णाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण च मदिअण्णाणित्तुप्पत्तीदो। सुदअण्णाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, सुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्तोदयाणुविद्धेण समुप्पत्तीदो। विहंगणाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, ओहिणाणावरणदेसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्ताणुविद्धेण समुप्पत्तीदो । आभिणिबोहियणाणि त्ति तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण तिविहसम्मत्तसहाएण तदुप्पत्तीदो । आभिणिबोहिय-

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। यथा— इस सूत्रमें सब 'वा' शब्द समुच्चयरूप अर्थमें जानने चाहिये । एकेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह स्पर्शनइन्द्रियावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । द्वीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा और स्पर्शन इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । त्रीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि यह जिह्वा, स्पर्शन और घ्राण इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। चतुरिन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि यह जिह्वा, स्पर्शन, घ्राण और चक्षु इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। पंचेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह पाँचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है। मत्यज्ञानी यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह मतिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होता है ।

शंका— यह मत्यज्ञानित्व तदुभयप्रत्ययिक कैसे है ?

समाधान—मिथ्यात्वके सर्वघाती स्पर्धकोंका उदय होनेसे तथा ज्ञानावरणीयके देशघाति स्पर्धकोंका उदय होनेसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंका उदयक्षय होनेसे मत्यज्ञानित्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक है ।

श्रुताज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, यह मिथ्यात्व कर्मके उदयसे युक्त श्रुतज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न होता है। विभंगज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे युक्त अवधिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है। आभिनिबोधिकज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, तीन प्रकारके सम्यक्त्वसे युक्त मतिज्ञानावरणीय कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है।

णाणस्स उदयपच्चइयत्तं घडदे, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण समुप्पत्तीए। णोवसमियपच्चइयत्तं, उवसमाणुवलंभादो ? ण, णाणावरणीयसव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण आभिणिबोहियणाणुप्पत्तिदंसणादो। एवं सुदणाणि-ओहिणाणि-मणपज्जवणाणि-चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणिआदीणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो। सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मामिच्छत्तोदयजणिदत्तादो। सम्मामिच्छत्तफद्दयाणि सव्वघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं सम्मामिच्छत्तं उभयपच्चइयं होदि ? ण, सम्मामिच्छत्तफद्दयाणमुदयस्स सव्वघादित्ताभावादो। तं कुदो णव्वदे ? तत्थतणसम्मत्तस्सुप्पत्तीए अण्णहाणुववत्तीदो। सम्मामिच्छत्तदेसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण सम्मामिच्छत्तमुप्पज्जदि त्ति तदुभयपच्चइयत्तं। [सम्मत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मत्तोदयजणिदत्तादो। सम्मत्तफद्दयाणि देसघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं सम्मत्तं उभयपच्चइयं होदि ?] ण, सम्मत्त[1]देसघादिफद्दयाण-

शंका— आभिनिबोधिकज्ञानके उदयप्रत्ययिकपना बन जाता है, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है। पर औपशमिकनिमित्तकपना नहीं बनता, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मका उपशम नहीं पाया जाता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि ज्ञानावरणीय कर्मके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे आभिनिबोधिक ज्ञानकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिये इसका औपशमिकनिमित्तकपना भी बन जाता है।

इसी प्रकार श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी आदिका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उपर्युक्त कथनसे इनके कथनमें कोई विशेषता नहीं है।

सम्यग्मिथ्यात्व लब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यग्मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होती है।

शंका— सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धक सर्वघाति ही होते हैं, इसलिये इनके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यग्मिथ्यात्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्वमें सम्यक्त्वरूप अंशकी उत्पत्ति अन्यथा बन नहीं सकती। इससे मालूम पड़ता है कि सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता।

सम्यग्मिथ्यात्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है।

सम्यक्त्वलब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यक् प्रकृतिके उदयसे उत्पन्न होती है।

शंका—सम्यक्प्रकृतिके स्पर्धक देशघाति ही होते हैं। उसके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

---

१. ताप्रतौ 'ण, (सम्मत्तलद्धित्ति तदुभयपच्चइयत्तं), सम्मत्त-' इति पाठः।

मुदएण सम्मत्तुप्पत्तीदो ओदइयं। ओवसमियं पि तं, सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावादो। दंसणमोहणीयभेदसम्मत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणं देसघादित्तणेण उदिण्णाणं कारियं वेदगसम्मत्तमिदि तदुभयपच्चइयत्तं उत्तदि त्ति भणिदं होदि। एसो अत्थो पुव्विल्लेसु उत्तरिल्लेसु पदेसु जोजेयव्वो, पहाणत्तादो। एवं संजमासंजम-संजम-दाण-लाह-भोग-परिभोग-वीरियलद्धीणं पि तदुभयपच्चइयत्तं परूवेयव्वं। आयारधरे त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, आयारसुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणमुदएण आयारसुदुप्पत्तीदो। एवं जाणिदूण वत्तव्वं जाव दिट्ठिवादधरे त्ति वा। एकादशांगविद्गणी। द्वादशांगविद्वाचकः। एवमेदे खओवसमिया भावा अण्णे वि सुहुमीभूदा तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो अजीवभावबंधो णाम सो तिविहो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव ॥ २० ॥

मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहिंतो पुरिसपओगेहि वा जे णिप्पण्णा अजीवभावा

समाधान— नहीं, क्योंकि सम्यक्त्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे सम्यक्त्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये तो वह औदयिक है। और वह औपशमिक भी है, क्योंकि, वहाँ सर्वघाति स्पर्धकोंका उदय नहीं पाया जाता।

सम्यक्प्रकृति दर्शनमोहनीयका एक भेद है। उसके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए और देशघातिरूपसे उदयको प्राप्त हुए स्पर्धकोंका वेदकसम्यक्त्व कार्य है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है; यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस अर्थकी पहलेके और आगेके सब पदोंमें योजना करनी चाहिये, क्योंकि, उभयनिमित्तक भावोंमें इसीकी प्रधानता है।

इसी प्रकार संयमासंयमलब्धि, संयमलब्धि, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, परिभोगलब्धि और वीर्यलब्धिको भी तदुभयप्रत्ययिक कहना चाहिये।

आचारधर तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, आचारश्रुतज्ञानावरणके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए देशघातिस्पर्धकोंके उदयसे आचारश्रुतकी उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार दृष्टिवादधर तकके सब पदोंका जानकर व्याख्यान करना चाहिये।

ग्यारह अंगका ज्ञाता गणी कहलाता है और बारह अंगका ज्ञाता वाचक कहलाता है।

इस प्रकार ये क्षायोपशमिक भाव और अति सूक्ष्म दूसरे भी क्षायोपशमिक भाव तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

विशेषार्थ— यहाँपर क्षायोपशमिकभावके भेद बहुत विस्तारसे किए गए हैं, फिर भी तत्त्वार्थसूत्रमें इस भावके जितने भेद किए गए हैं उनमें इन सब भावोंका अन्तर्भाव हो जाता है।

अजीवभावबन्ध तीन प्रकारका है—विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध ॥ २० ॥

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे या पुरुषके प्रयत्नसे जो अजीवभाव उत्पन्न होते हैं

तेसिं विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे अजीवभावा मिच्छत्तादिकारणेहि विणा समुप्पण्णा तेसिमविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे दोहि वि कारणेहि समुप्पण्णा तेसिं तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । एवं तिविहो चेव अजीव-भावबंधो होदि, अण्णस्स असंभवादो ।

जो सो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा गंधा पओगपरिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदी पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया पओगपरिणदसंजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २१ ॥

वण्णणामकम्मोदएण ओरालियसरीरखंधेसु जादवण्णा पओगपरिणदा णाम,

उनकी विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है। जो अजीवभाव मिथ्यात्व आदि कारणोंके बिना उत्पन्न होते हैं उनकी अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है। और जो दोनों ही कारणोंसे उत्पन्न होते हैं उनकी तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है। इस तरह तीन प्रकारका ही अजीवभावबन्ध होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य अजीवभावबन्ध सम्भव नहीं है।

विशेषार्थ— यहाँ जीवभावबन्धके समान अजीवभावबन्ध भी तीन प्रकारका बतलाया गया है। यहाँ विपाकसे पुरुषका प्रयत्न या उसके मिथ्यात्व आदि भाव लिये गये हैं। इनके निमित्तसे पुद्गलकी जो रूप रसादि पर्यायें या दूसरी अवस्थाएं होती हैं वे विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं। जो पुरुषके प्रयत्नके बिना पुद्गलके बन्धरूप विविध प्रकारके परिणमन होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और तदुभय इन दोनोंरूप होते हैं। यह उक्त कथनका सार है।

जो विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध होता है उसका निर्देश इस प्रकार है— प्रयोगपरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस, प्रयोग-परिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति, प्रयोगपरिणत अवगाहना, प्रयोगपरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर जो दूसरे भी प्रयोगपरिणत संयुक्त भाव होते हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २१ ॥

वर्ण नामकर्मके उदयसे औदारिकशरीरके स्कन्धोंमें उत्पन्न हुए वर्ण प्रयोगपरिणत वर्ण हैं

हलिद्दचुण्णजोगेण पूअफल-पण्णचुण्णसंजोगेण वा जणिदवण्णा वि पओअपरिणदा णाम। संख-वीणा-वंस-भेरी-पटह-झल्लरी-मुइंगसद्दा कंठोट्ठादिजणिदसद्दा च पओअपरिणदा त्ति भण्णंते। गंधजुत्तिसत्थवुत्तविहाणेण जणिदगंधा पओअपरिणदा णाम। सूअसत्थउत्तविहाणेण जणिदरसा पओअपरिणदा रसा णाम रसणामकम्मजणिदरसा वा। फासणामकम्मोदयजणिदट्ठफासा पओअपरिणदा णाम रूवादिपासा[1] वा। कंड-सेल्ल-जंत-गोफण-वत्थरादीणं गई पओअपरिणदा। कट्टिमजिणभवणादीणमोगाहणा पओअपरिणदा। कट्ठ-सिला-थंभ-तुलादीणं कट्टिमाणं संठाणा पओअपरिणदा। घड-पिढर-रंजणादीणं पि कट्टिमाणं खंधा पओअपरिणदा। पओअपरिणदाणं खंधाणमद्धं तिभागो वा पओअपरिणदा[2] खंधदेसा। पओअपरिणदाणं खंधाणं भेदं गदाणं चदुब्भागो पंचमभागो वा पओअपरिणदा खंधपदेसा। जे च अमी अण्णे च एवमादिया पओअपरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।

जो सो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– विस्ससापरिणदा वण्णा विस्ससापरिणदा सद्दा विस्ससापरिणदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससापरिणदा फासा विस्ससा

या हलदीके चूर्णके योगसे अथवा पूगफल और पर्णचूर्णके योगसे उत्पन्न हुए वर्ण भी प्रयोगपरिणत वर्ण हैं। शंख, वीणा, बाँस, भेरी, पटह, झालर और मृदंगके शब्द और कण्ठ, ओष्ठ आदिसे उत्पन्न हुए शब्द भी प्रयोगपरिणत शब्द हैं। गन्ध बनानेकी युक्तिका कथन करनेवाले शास्त्रमें जो विधि कही है उसके अनुसार उत्पन्न किये गये गन्ध प्रयोगपरिणत गन्ध है। भोजनशास्त्रमें कही हुई विधिके अनुसार उत्पन्न किये गये रस प्रयोगपरिणत रस हैं या रस नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए रस प्रयोगपरिणत रस हैं। स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए आठ प्रकारके स्पर्श प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं, अथवा रुई आदिमें संस्कारसे जो आठ प्रकारके स्पर्श उत्पन्न किये जाते हैं वे प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं।

लकड़ी, शैल, यन्त्र, गोफन और पत्थर आदिकी गति प्रयोगपरिणत गति है। कृत्रिम जिन-भवन आदिकी अवगाहना प्रयोगपरिणत अवगाहना है। बनाये गये काष्ठ, शिला, स्तम्भ और तराजू आदिके आकार प्रयोगपरिणत संस्थान हैं। बनाये गये घट, पिढर और रांजन आदिके भी स्कन्ध प्रयोगपरिणत स्कन्ध हैं। प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका अर्ध भाग या तृतीय भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश हैं और भेदको प्राप्त हुए प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या पाँचवाँ भाग प्रयोग-परिणत स्कन्धप्रदेश हैं। ये या इनसे लेकर इसी प्रकारके प्रयोगपरिणत जो दूसरे भी संयुक्त भाव हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीव भावबन्ध है।

जो अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—विस्रसा-परिणत वर्ण, विस्रसापरिणत शब्द, विस्रसापरिणत गन्ध, विस्रसापरिणत रस, विस्रसा-

१ अ-आ-काप्रतिषु 'रूवा कार्पाशः वादिपासा' इति पाठः।

परिणदा गदो विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससापरिणदा संठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २२ ॥

अकट्टिमाणं भवण-विमाण-मेरु-कुलसेलादीणं वण्णो पुढवि-आउ-तेउ-वाऊणमकट्टिमवण्णा च विस्ससापरिणदा णाम। वंसादीणं मुत्तिदव्वाणं संघट्टणेण समुट्ठिदा विस्ससापरिणदा सद्दा। कत्थूरि-कुंकुमागरु-तमालपत्तादीणं जे साभाविया गंधा ते विस्ससापरिणदा गंधा। जंबू-जंबीर-पणसंबादीणं फलाणं पुप्फंकुरादीणं च साभाविया जे रसा ते विस्ससापरिणदा रसा। पउमुप्पलादीणं जे साभाविया फासा ते विस्ससापरिणदा फासा। चंदाइच्च-गह-णक्खत्त-ताराणं वाऊणं च जा गदी सा विस्ससापरिणदा गदी। अकिट्टिमाणं भवण-विमाणाणं जिणहराणं सिद्धखेत्तागासाणं जा ओगाहणा सा विस्ससापरिणदा ओगाहणा णाम। गंध रस-फासा जेसु पुव्वुद्दिट्ठा ते गंध-रस-फासणामकम्मोदयजणिदा त्ति अविवागपच्चइत्तं ण जुज्जदे? जदि एवं तो एदे मोत्तूण पोग्गलाणं जे साभाविया गंध-रस-फासा

परिणत स्पर्श, विस्रसापरिणत गति, विस्रसापरिणत अवगाहना, विस्रसापरिणत संस्थान, विस्रसापरिणत स्कन्ध, विस्रसापरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत जो दूसरे संयुक्त भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २२ ॥

अकृत्रिम भवन, विमान, मेरुपर्वत और कुलपर्वत आदिके वर्ण या पृथिवी, जल, अग्नि और वायुके अकृत्रिम वर्ण विस्रसा परिणत वर्ण हैं। बाँस आदि मूर्त द्रव्योंके संघर्षणसे उत्पन्न हुए शब्द विस्रसापरिणत शब्द हैं। कस्तूरी, कुंकुम, अगरु और तमालपत्र आदिकी जो स्वभाविक गन्ध होती है वह विस्रसापरिणत गन्ध है। जम्बू, जंबीर, पनस और आम्र आदि फलोंके तथा फूल और अंकुर आदिके जो स्वाभाविक रस होते हैं वे विस्रसापरिणत रस हैं। पद्म और उत्पल आदिके जो स्वाभाविक स्पर्श होते हैं वे विस्रसापरिणत स्पर्श हैं। चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओंकी तथा वायुकी जो गति होती है वह विस्रसापरिणत गति है। अकृत्रिम भवन, विमान और जिनघर आदि तथा सिद्धक्षेत्रके आकाशकी जो अवगाहना है वह विस्रसापरिणत अवगाहना है।

शंका— जिन पदार्थोंमें पूर्वनिर्दिष्ट गन्ध, रस और स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक नहीं बन सकते?

समाधान— यदि ऐसा है तो इन्हें छोड़कर पुद्गलोंके जो स्वाभाविक वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे यहाँपर लेने चाहिये।

ते घेत्तव्वा । चंदाइच्च-गह-णक्खत्त-ताराणं भवण-विमाण-कुलसेलादीणंच जे साभाविया संठाणा ते विस्ससापरिणदा संठाणा । तेसिं चेव चंदाइच्चबिंबादीणं जे खंधा ते विस्ससापरिणदा खंधा । मेहादीणं विस्ससापरिणदखंधाणं जाणि खंधाणि ताणि विस्ससापरिणदा खंधदेसा । मेहिंदहणु-विज्जु-चंदक्कादीणं[1] जे अवयवा ते विस्ससापरिणदा खंधपदेसा । जे च इमे पुव्वुद्दिट्ठा अण्णे च एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।

जो सो तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो— पओअपरिणदा वण्णा वण्णा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा फासा फासा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा [पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससापरिणदा] पओअपरिणदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससापरिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २३ ॥

चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारकाओंके तथा भवन, विमान और कुलाचल आदिके जो स्वाभाविक संस्थान होते हैं वे विस्रसापरिणत संस्थान हैं। उन्हीं चन्द्र सूर्यके बिम्ब आदिके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्ध है। स्वभावसे परिणत हुए मेघादिकके स्कन्धोंके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धदेश हैं। मेघ, इन्द्रधनुष, विजली, चन्द्र और सूर्य आदिकके जो अवयव होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश हैं। ये पूर्वोक्त और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत और भी जो संयोगको प्राप्त हुए भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।

जो तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है— प्रयोगपरिणत वर्ण और विस्रसापरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द और विस्रसापरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध और विस्रसापरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस और विस्रसापरिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श और विस्रसापरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति और विस्रसापरिणत गति, [प्रयोगपरिणत अवगाहना और विस्रसापरिणत अवगाहना] प्रयोगपरिणत संस्थान और विस्रसापरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध और विस्रसापरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धदेश, प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर प्रयोग और विस्रसापरिणत जितने भी संयुक्तभाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २३ ॥

१. अ-काप्रत्योः 'विज्जुचंदक्कादीणं', ताप्रतौ 'विज्जुचडक्कादीणं' इति पाठः ।

एदस्स अत्थो वुच्चदे—पओअपरिणदखंधवण्णेहि विस्ससापरिणदखंधवण्णाणं जो संजोगो सो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम। को एत्थ संबंधो घेप्पदे ? संजोगलक्खणो समवायलक्खणो वा। तत्थ संजोगो दुविहो देसपच्चासत्तिकओ गुणपच्चासत्तिकओ चेदि। तत्थ देसपच्चासत्तिकओ णाम दोण्णं दव्वाणमवयवफासं काऊण जमच्छणं सो देसपच्चासत्तिकओ संजोगो। गुणेहि जमण्णोण्णाणुहरणं सो गुणपच्चासत्तिकओ संजोगो। समवायसंजोगो सुगमो। एवं सद्द-गंध-रस-फासोगाहण-संठाण-गदि-खंध-खंधदेस-खंधपदेसाणं च जहासंभवं दुसंजोगपरूवणा कायव्वा। सुगमं।

जो सो थप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो आगमदो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव ॥ २४ ॥

एवं दुविहो चेव दव्वबंधो, अण्णस्सासंभवादो।

जो सो आगमदो[1] दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—ट्ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं। जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया अणुवजोगा दव्वे त्ति

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— प्रयोगपरिणत स्कन्धोंके वर्णोंके साथ विस्रसापरिणत स्कन्धोंके वर्णोंका जो संयोग होता है वह तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है।

शंका— यहाँ कौनसा सम्बन्ध लिया गया है ?

समाधान— संयोगसम्बन्ध और समवायसम्बन्ध दोनों लिये गये हैं।

संयोग दो प्रकारका है— देशप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध और गुणप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध। देशप्रत्यासत्तिकृतका अर्थ है दो द्रव्योंके अवयवोंका सम्बद्ध होकर रहना, यह देशप्रत्यासत्तिकृत संयोग है। गुणोंके द्वारा जो परस्पर एक दूसरेको ग्रहण करना वह गुणप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध है। समवायसम्बन्ध सुगम है।

इसी प्रकार शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, अवगाहना, संस्थान, गति, स्कन्ध, स्कन्धदेश और स्कन्धप्रदेश; इनका यथासम्भव द्विसंयोगी कथन करना चाहिये। यह कथन सुगम है।

जो द्रव्यबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है—आगम द्रव्यबन्ध और नोआगम द्रव्यबन्ध ॥ २४ ॥

इसप्रकार द्रव्यबन्ध दो प्रकारका ही है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है।

जो आगम द्रव्यबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथा तथा इनसे

1. अ० आ० काप्रतिषु 'जो णोआगमदो' इति पाठः।

कट्टु जावदिया अणुवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो णाम ॥ २५ ॥

सुगममेदं, बहुसो परूविदत्तादो ।

जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो– पओअबंधो चेव विस्ससाबंधो चेव ॥ २६ ॥

एवं णोआगमदो बंधो दुविहो चेव; अण्णस्सासंभवादो ।

जो सो पओअबंधो णाम सो थप्पो ॥ २७ ॥

कुदो ? बहुवण्णणिज्जत्तादो ।

जो सो विस्ससाबंधो णाम सो दुविहो– सादियविस्ससाबंधो चेव अणादियविस्ससाबंधो चेव ॥ २८ ॥

एवं साहाविओ बंधो दुविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो ।

जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो ॥ २९ ॥

कुदो ? बहुवण्णणादो ।

लेकर जो अन्य अनुपयोग हैं उनमें द्रव्य निक्षेप रूपसे जितने अनुपयुक्त भाव हैं वह सब आगमद्रव्यबन्ध है ॥ २५ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि इसका अनेक बार कथन कर आये हैं ।

विशेषार्थ— यहाँ आगमके भेद और उनके उपयोगके प्रकार बतलाकर अनुपयुक्त दशामें आगमद्रव्यबन्ध कहा है । आशय यह है कि बन्धविषयक शास्त्रके जितने प्रकारके जानकार हैं और उनके उपयोग हैं वे सब जब अनुपयुक्त दशामें रहते हैं तब उनकी आगमद्रव्यबन्ध संज्ञा होती है ।

जो नोआगमद्रव्यबन्ध है वह दो प्रकारका है— प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ॥ २६ ॥

इस प्रकार नोआगमद्रव्यबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है ।

जो प्रयोगबन्ध है वह स्थगित करते हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि, आगे इसका बहुत वर्णन करना है ।

जो विस्रसाबन्ध है वह दो प्रकारका है— सादिविस्रसाबन्ध और अनादि-विस्रसाबन्ध ॥ २८ ॥

इस प्रकार विस्रसाबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद नहीं पाया जाता ।

जो सादि विस्रसाबन्ध है वह स्थगित करते हैं ॥ २९ ॥

क्योंकि, इसका आगे बहुत वर्णन करना है ।

जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो– धम्मत्थिया अधम्मत्थिया आगासत्थिया चेदि ॥ ३० ॥

जीवत्थिया पोग्गलत्थिया एत्थ किण्ण परूविदा ? ण, तासिं सकिरियाणं सगमणाणं धम्मत्थियादीहि सह अणादियविस्ससाबंधाभावादो । ण तासिं पदेसबंधो वि अणादियो वइससियो अत्थि; पोग्गलत्तण्णहाणुववत्तीदो तप्पदेसाणं पि संजोग-विजोगसिद्धीए। एक्केक्को दव्वबंधो तिविहो होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा आगासत्थियपदेसा एदासिं[1] तिण्णं पि अत्थिआणमण्णोण्णपदेसबंधो होदि ॥ ३१ ॥

जो अनादि विस्रसाबन्ध है वह तीन प्रकारका है—धर्मास्तिकविषयक, अधर्मास्तिकविषयक और आकाशास्तिकविषयक ॥ ३० ॥

शंका— यहाँ जीवास्तिक और पुद्गलास्तिकविषयक अनादि विस्रसाबन्ध क्यों नहीं कहा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि उनकी अपनी गमन आदि क्रियाओंका धर्मास्तिक आदिके साथ अनादिसे स्वाभाविक संयोग नहीं पाया जाता। यदि कहा जाय कि उनका प्रदेशबन्ध तो अनादिसे स्वाभाविक है सो यह बात भी नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा माना जायगा तो पुद्गलोंमें पुद्गलत्व नहीं बनेगा और पुद्गल तथा जीवोंके प्रदेशोंका भी संयोग और वियोग अनुभव सिद्ध है, अतः इनका अनादि विस्रसाबन्ध नहीं कहा है।

विशेषार्थ— यहाँ धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका अनादि विस्रसाबन्ध बतलाया है। प्रश्न यह है कि ऐसा बन्ध पुद्गल और जीवोंका क्यों नहीं कहा। इसका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि एक तो जीव और पुद्गलकी जो गति, स्थिति और अवगाहन क्रिया होती है वह बदलती रहती है। दूसरे पुद्गलके परमाणुओंका परस्पर बन्ध भी अनादिकालीन नहीं बन सकता है। और तीसरे पुद्गलों और जीवोंके प्रदेशोंका संयोग और वियोग भी होता रहता है। न तो इन दोनों द्रव्योंका अन्यसे संयोग अनादि और वैस्रसिक है और न स्वयं अपने प्रदेशोंका संयोग भी ऐसा है, इसलिये इनके सम्बन्धको अनादि विस्रसाबन्धमें सम्मिलित नहीं किया है। माना कि जीवके प्रदेशोंमें विभाग नहीं होता, पर वे सदा धर्मादिक द्रव्योंके समान एक आकारमें स्थिर नहीं रहते, इसलिये इसका भी अनादि विस्रसाबन्ध नहीं माना है।

एक एक द्रव्यबन्ध तीन प्रकारका है, यह ज्ञान करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

धर्मास्तिक, धर्मास्तिकदेश और धर्मास्तिकप्रदेश; अधर्मास्तिक, अधर्मास्तिकदेश और अधर्मास्तिकप्रदेश तथा आकाशास्तिक, आकाशास्तिकदेश और आकाशास्तिकप्रदेश; इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है ॥ ३१ ॥

१. मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु धम्मत्थिया धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियपदेसा एदासिं इति पाठः। ताप्रतौ तु 'धम्मत्थियदेसा' आदीनि कोष्ठकान्तर्गतानि सन्ति।

सव्वावयवसमूहो धम्मत्थिया णाम । एदस्स धम्मत्थियअवयविस्स सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियबंधो णाम । तस्स अद्धप्पहुडि जाव चदुब्भागं ति सो धम्मत्थिय-देसो णाम । तेसिं धम्मत्थियदेसाणं सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियदेसबंधो णाम । तस्सेव चदुब्भागप्पहुडि पदेसा णाम । तेसिमण्णोण्णबंधो धम्मत्थियपदेसबंधो त्ति भण्णदि । एवमधम्मत्थिय-आगासत्थियाणं पि परूवणा कायव्वा । एदासिं तिण्णं पि अत्थियाणमण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियविस्ससाबंधो णाम ।

जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो— वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो ॥ ३२ ॥

मादा णाम सरिसत्तं । विगदा मादा विमादा । [विमादा] णिद्धदा विमादा ल्हुक्खदा च बंधो होदि, बंधकारणं होदि त्ति वुत्तं होदि । कधं कारणस्स कज्जववएसो ? कारणे कज्जुवयारादो । णिद्धदाए विसरिसत्तं ल्हुक्खदं पेक्खिदूण ल्हुक्खदाए विसरिसत्तं णिद्धदं पेक्खिदूण घेत्तव्वं । तेण णिद्धपरमाणूणं ल्हुक्खपरमाणूहि सह बंधो होदि । ल्हुक्खपरमाणूणं पि णिद्धपरमाणूहि सह बंधो होदि, गुणेण सरिसत्ताभावादो ।

समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो ॥ ३३ ॥

धर्मद्रव्यके सब अवयवोंके समूहका नाम धर्मास्तिक है । अवयवीरूप इस धर्मास्तिकका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकबन्ध कहलाता है । इसके आधेसे लेकर चौथे भाग तकके हिस्सेको धर्मास्तिकदेश कहते हैं । इन धर्मास्तिकके देशोंका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकदेशबन्ध कहलाता है । और इसीके चौथे भागसे लेकर आगेके सब अवयव प्रदेश कहलाते हैं । इनका परस्पर जो बन्ध है वह धर्मास्तिकप्रदेशबन्ध कहलाता है । इसी प्रकार अधर्मास्तिक और आकाशास्तिकका भी कथन करना चाहिये । इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्परमें जो प्रदेशबन्ध होता है वह सब अनादि विस्रसाबन्ध है ।

जो सादि विस्रसाबन्ध स्थगित कर आये थे उसका निर्देश इस प्रकार है— विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता बन्ध है ॥ ३२ ॥

मादाका अर्थ सदृशता है । जिसमें सदृशता नहीं होती उसे विमादा कहते हैं । विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता यह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— कारणको कार्य क्यों कहा ?

समाधान— कारणमें कार्यका उपचार होनेसे ऐसा कहा है ।

यहाँ स्निग्धतामें विसदृशता रूक्षताकी अपेक्षा और रूक्षतामें विसदृशता स्निग्धताकी अपेक्षा लेनी चाहिये । इसलिये यह निष्कर्ष निकला कि स्निग्ध परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध होता है और रूक्ष परमाणुओंका भी स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ गुणकी अपेक्षा समानता नहीं पाई जाती ।

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद है ॥ ३३ ॥

समणिद्धदा समल्हुक्खदा च भेदस्स असंजोगस्स कारणं होदि । णिद्धपरमाणूणं णिद्धपरमाणूहि ल्हुक्खपरमाणूणं च ल्हुक्खपरमाणूहि सह बंधो णत्थि त्ति भणिदं होदि । णिद्धपरमाणूहि सह बंधमागदल्हुक्खपरमाणू जदि णिद्धगुणेण परिणदा होंति, णिद्धपरमाणू वा ल्हुक्खगुणेण परिणदा, तो णिच्छएण भेदेण होदव्वमिदि घेत्तव्वं । एदं अत्थं दोहि वि सुत्तेहि परूविदं गाहाए फुडीकरणत्थमुत्तरसुत्तं भणदि—

णिद्धणिद्धा ण बज्झंति ल्हुक्खल्हुक्खा य पोग्गला ।
णिद्धल्हुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला ॥ ३४ ॥

एदिस्से गाहाए पढमद्धेण 'समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो त्ति एदस्स अत्थो परूविदो । णिद्धपरमाणू णिद्धपरमाणूहि ण बज्झंति,[1] णिद्धगुणभावेण समाणत्तादो । ल्हुक्खा पोग्गला ल्हुक्खपोग्गलेहि सह बंधं णागच्छंति, ल्हुक्खगुणभावेण समाणत्तादो । विदियद्धेण पढमसुत्तद्धं परूवेदि । 'णिद्ध-ल्हुक्खा य बज्झंति' णिद्धा पोग्गला ल्हुक्खा पोग्गला च परोप्परं बंधमागच्छंति, विसरिसत्तादो । णिद्धल्हुक्खपोग्गलाणं किं गुणाविभागपडिच्छेदेहि सरिसाणं बंधो[2] होदि आहो विसरिसाणं बंधो होदि त्ति पुच्छिदे 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' त्ति भणिदं । गुणाविभागपडिच्छेदेहि समाणा

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद अर्थात् असंयोगका कारण होता है । स्निग्ध परमाणुओंका स्निग्ध परमाणुओंके साथ और रूक्ष परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध नहीं होता, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्धको प्राप्त हुए रूक्ष परमाणु यदि स्निग्ध गुणरूपसे परिणत होते हैं या स्निग्ध परमाणु रूक्ष गुणरूपसे परिणत होते हैं तो नियमसे उनका भेद हो जाता है, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिये । यह अर्थ दोनों ही सूत्रोंके द्वारा कहा गया है । अब गाथा द्वारा इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिये आगेका गाथासूत्र कहते हैं—

स्निग्ध पुद्गल स्निग्ध पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते, रूक्ष पुद्गल रूक्ष पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते । किन्तु सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल परस्पर बँधते हैं ॥ ३४ ॥

इस गाथाके पूर्वार्ध द्वारा 'समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो' इस सूत्रका अर्थ कहा गया है । स्निग्ध परमाणु दूसरे स्निग्ध परमाणुओंके साथ नहीं बँधते, क्योंकि, स्निग्ध गुणकी अपेक्षा वे समान हैं । रूक्ष पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धको नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, रूक्ष गुणकी अपेक्षा वे समान हैं ।

गाथाके उत्तरार्ध द्वारा प्रथम सूत्रका अर्थ कहते हैं—'णिद्धल्हुक्खा य बज्झंति' अर्थात् स्निग्ध पुद्गल और रूक्ष पुद्गल परस्पर बन्धको प्राप्त होते हैं, क्योंकि, इनमें विसदृशता पाई जाती है । क्या गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है या अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा विसदृश स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है, ऐसा प्रश्न करनेपर 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' यह कहा है । जो स्निग्ध और रूक्ष गुणोंसे युक्त पुद्गल गुणोंके

---

१ अ काप्रत्योः 'माणूणहि' बज्झंति, आप्रतौ 'माणुहि बज्झंति' इति पाठः । २ प्रतिषु 'सरिसाणं णिद्धल्हुक्खपोग्गलाणं बंधो' इति पाठः ।

जे णिद्धल्हुक्खगुणजुत्तपोग्गला ते रूविणो णाम, ते वि बज्झंति । विसरिसा पोग्गला अरूविणो णाम, ते वि बंधमागच्छंति । णिद्ध-ल्हुक्खपोग्गलाणं गुणाविभागपडिच्छेद-संखाए सरिसाणमसरिसाणं च बंधो होदि त्ति भणिदं होदि ।

वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो ॥ ३५ ॥

णिद्धपोग्गलाणं णिद्धपोग्गलेहि ल्हुक्खपोग्गलाणं ल्हुक्खपोग्गलेहि गुणाविभागपडि-च्छेदेहि सरिसाणमसरिसाणं च पुव्विल्लत्थे बंधाभावे संते तेसिं पि बंधो अत्थि त्ति जाणा-वणट्ठं एदस्स सुत्तस्स विदियो अत्थो वुच्चदे । तं जहा— मादा णाम अविभागपडिच्छेदो । किं पमाणं तस्स ? जहण्णगुणवड्डिमेत्तो । द्वे मात्रे यस्यां स्निग्धतायामधिके हीने वा द्विमात्रा[1] स्निग्धता, सो बंधो बंधकारणं होदि । णिद्धपोग्गला वेअविभागपडिच्छेदुत्तर-णिद्धपोग्गलेहि वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि वा बज्झंति[2] । तिण्णिआदिअविभाग-पडिच्छेदुत्तरपोग्गलेहि तिण्णिआदिअविभागपडिच्छेदुत्तरकमेण परिहीणपोग्गलेहि च बंधो णत्थि त्ति घेत्तव्वं । एवं ल्हुक्खपोग्गलाणं पि ल्हुक्खपोग्गलेहि सह बंधो वत्तव्वो ।

अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान होते हैं वे रूपी कहलाते है । वे भी बँधते हैं । और विसदृश पुद्गल अरूपी कहलाते हैं । वे भी बन्धको प्राप्त होते हैं । स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल गुणोंके अविभाग-प्रतिच्छेदोंकी संख्याकी अपेक्षा चाहे समान हों चाहे असमान हों, उनका परस्पर बन्ध होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

द्विमात्रा स्निग्धता और द्विमात्रा रूक्षता (परस्पर) बन्ध है ॥ ३५ ॥

गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रूक्ष पुद्गलोंका रूक्ष पुद्गलोंके साथ पूर्वोक्त अर्थके अनुसार बन्धका अभाव प्राप्त होनेपर उनका भी बन्ध होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये इस सूत्रका दूसरा अर्थ कहते हैं । यथा— मात्राका अर्थ अविभागप्रतिच्छेद है ।

शंका— उसका कितना प्रमाण है ?

समाधान— गुणकी जघन्य वृद्धिमात्र उसका प्रमाण है ।

जिस स्निग्धतामें दो मात्रा अधिक या हीन होती है वह द्विमात्रा स्निग्धता कहलाती है । वह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है । स्निग्ध पुद्गल दो अविभागप्रविच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंके साथ या दो अविभागप्रतिच्छेद कम स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बँधते हैं । इनका तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद अधिक पुद्गलोंके साथ और तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद कम पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिये । इसी प्रकार रूक्ष पुद्गलोंका भी रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धका कथन करना चाहिये । अब इस अर्थका निश्चय उत्पन्न करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१ अ-आ-काप्रतिषु, 'द्विमात्रो' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काताप्रतिषु '-पोग्गलेहि ण बज्झंति' इति पाठः ।

एदस्स अत्थस्स णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण ल्हुक्खस्स ल्हुक्खेण दुराहिएण।
णिद्धस्स ल्हुक्खेण हवेदि बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा॥३६॥

णिद्धस्स पोग्गलस्स अण्णेण णिद्धपोग्गलेण जदि बंधो होदि तो दुराहिएणेव। ल्हुक्खस्स ल्हुक्खेण जदि बंधो होदि तो वि दुराहिएण बंधो होदि। णिद्धस्स सव्व-पोग्गलस्स ल्हुक्खेण सव्वेण पोग्गलेण सह बंधो होदि सो कत्थ होदि त्ति भणिदे 'विसमे समे वा'। गुणाविभागपडिच्छेदेहि ल्हुक्खपोग्गलेण सरिसो णिद्धपोग्गलो समो णाम। असरिसो विसमो णाम। तत्थ णिद्ध-ल्हुक्खेण पोग्गलाणं बंधो होदि [त्ति] सव्वेसिं पोग्गलाणं बंधे संपत्ते 'जहण्णवज्जे' त्ति भणिदं। जहण्णगुणाणं णिद्ध-ल्हुक्खपोग्गलाणं सत्थाणेण परत्थाणेण वा णत्थि बंधो। एवं गुणविसिट्ठाणं पोग्गलाणं बंधो होदि, अण्णारिसाणं पोग्गलाणं पुण भेदेण होदव्वं, बंधे विरुद्धगुणसमण्णिदत्तादो।

स्निग्ध पुद्गलका दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ और रूक्ष पुद्गलका दो गुण अधिक रूक्ष पुद्गलके साथ बन्ध होता है। तथा स्निग्ध पुद्गलका रूक्ष पुद्गलके साथ जघन्य गुणके सिवा विषम अथवा सम गुणके रहनेपर बन्ध होता है॥ ३६॥

स्निग्ध पुद्गलका अन्य स्निग्ध पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ ही होता है। रूक्ष पुद्गलका अन्य रूक्ष पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक रूक्ष पुद्गलके साथ ही होता है।

स्निग्ध सब पुद्गलका रूक्ष सब पुद्गलके साथ जो बन्ध होता है वह किस अवस्थामें होता है, ऐसा पूछनेपर 'विसमे समे वा' यह वचन कहा है। गुणके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा रूक्ष पुद्गलके साथ सदृश स्निग्ध पुद्गल सम कहलाता है और असदृश स्निग्ध पुद्गल विषम कहलाता है। यहाँ स्निग्ध और रूक्ष गुणके द्वारा पुद्गलोंका बन्ध होता है, इस नियमके अनुसार सब पुद्गलोंका बन्ध प्राप्त होनेपर 'जहण्णवज्जे' यह कहा है। जघन्यगुणवाले स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका न तो स्वस्थानकी अपेक्षा बन्ध होता है और न परस्थानकी अपेक्षा ही बन्ध होता है। इस तरह इस प्रकारके गुणविशिष्ट पुद्गलोंका बन्ध होता है और अन्यादृश पुद्गलोंका भेद होता है, क्योंकि बन्धमें विरुद्ध गुणसे युक्त होना आवश्यक है।

विशेषार्थ— पुद्गल परमाणुओंके बन्धके विषयमें दो परम्परायें उपलब्ध होती हैं। प्रथम परम्पराका निर्देश यहाँ किया ही है। इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है।

क्रमाङ्क	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य + जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य + एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर + समजघन्येतर	नहीं	है
४	जघन्येतर + एकाधिकजघन्येतर	नहीं	है
५	जघन्येतर + द्वयधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर + त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	है

से तं बंधणपरिणामं पप्प से अब्भाणं'वा मेहाणं वा संज्झाणं वा विज्जूणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा दिसादाहाणं वा धूमकेदूणं वा इंदाउहाणं वा से खेत्तं पप्प कालं पप्प उडुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं पप्प जे चामण्णे एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि[2] बंधणपरिणामेण परिणमंति सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम ॥ ३७ ॥

से ते जहण्णपोग्गलवदिरित्ता पोग्गला तं बंधणपरिणामं तं बंधकारणणिद्ध-ल्हुक्ख-

दूसरी परम्परा तत्त्वार्थसूत्रकी है । इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है—

क्रमाङ्क	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य + जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य + एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर + समजघन्येतर	नहीं	नहीं
४	जघन्येतर + एकाधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं
५	जघन्येतर + द्वयधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर + त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं

यद्यपि सर्वार्थसिद्धि और तत्त्वार्थवार्तिकमें 'णिद्धस्स णिद्धेण' इत्यादि गाथा उद्धृत की गई है, पर इस गाथाके उत्तरार्द्धके अर्थमें मतभेद है और यह मतभेद तत्त्वार्थवार्तिकसे स्पष्ट हो जाता है । गाथाके उत्तरार्द्धका शब्दार्थ यह है कि स्निग्धगुणवाले परमाणुका रूक्षगुणवाले परमाणुके साथ सम या विषमगुण होनेपर बन्ध होता है । मात्र जघन्यगुणवालेका किसी भी अवस्थामें बन्ध नहीं होता । किन्तु तत्त्वार्थवार्तिकमें 'समे विसमे वा' इस पदमें समका अर्थ तुल्यजातीय और विषमका अर्थ अतुल्यजातीय किया है । तत्त्वार्थवार्तिककारके समक्ष वर्गणाखण्डके ये सूत्र उपस्थित थे, फिर भी उन्होंने यह अर्थ किया है । कारण स्पष्ट है । तत्त्वार्थसूत्रमें 'बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च' यह सूत्र आया है और इस सूत्रसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्त्वार्थसूत्रकारके मतसे तुल्यजातीय और अतुल्यजातीय पुद्गलपरमाणुओंका बन्ध दो अधिक गुणके होनेपर ही होता है । यही कारण है कि तत्त्वार्थवार्तिककारने उक्त गाथांशका उक्त प्रकारसे अर्थ किया है ।

इस प्रकार वे पुद्गल बन्धनपरिणामको प्राप्त होकर विविध प्रकारके अभ्ररूपसे, मेघरूपसे, सन्ध्यारूपसे, बिजलीरूपसे, उल्कारूपसे, कनकरूपसे, दिशादाहरूपसे, धूमकेतुरूपसे व इन्द्रधनुषरूपसे, क्षेत्रके अनुसार, कालके अनुसार, ऋतुके अनुसार, अयनके अनुसार और पुद्गलके अनुसार जो बन्धन परिणामरूपसे परिणत होते हैं तथा इनसे लेकर अन्य जो अंगमलप्रभृति बन्धन परिणामरूपसे परिणत होते हैं वह सब सादिविस्रसाबन्ध है ॥ ३७ ॥

'से ते' अर्थात् जघन्य पुद्गलोंके सिवा वे पुद्गल 'तं बंधणपरिणामं' अर्थात् बन्धके कारण

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अद्दयाणं' इति पाठः । २ ताप्रतौ-'प्पहुडि (डी) णि' इति पाठः ।

गुणपरिणामं पप्प पाविदूण सव्वे णिद्ध-ल्हुक्खपोग्गला बंधमागच्छंति । णवरि णिद्धाणं णिद्धेहि ल्हुक्खाणं ल्हुक्खेहि पोग्गलेहि णत्थि बंधो । किंतु बेअविभागपडिच्छेदाहियाणं णिद्धपोग्गलाणं बेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि अत्थि बंधो । बेअविभागपडिच्छेदा-हियल्हुक्खपोग्गलाणं च बेअविभागपडिच्छेदहीणल्हुक्खपोग्गलेहि य सह अत्थि बंधो । एवं बंधं पाविदूण से अब्भाणं[1] वा अवारिसु वा मेहा अब्भा णाम, तेसिमब्भाणं सरूवेण तेसिं ते परिणमंति । वारिसु वा कसणवण्णा मेहा णाम । उदयत्थवणकाले पुव्वावर-दिसासु दिस्समाणा जासवणकुसुमसंकासा संज्झा णाम । रत्त-धवल-सामवण्णाओ तेज-ब्भहियाओ कुवियभुवंगो[2] व्व चलंतसरीरा मेहेसु उवलब्भमाणाओ विज्जूओ णाम । जलंतग्गि-पिंडो व्व अणेगसंठाणेहि आगासादो णिवदंता उक्का णाम । माणुस-पसु-पक्खिमारणीयो तरु-गिरिसिहर-वियारणीयो असणीयो कणया णाम । उप्पायकाले अग्गिणा विणा दावा-नलो व्व दिसासु उवलब्भमाणो दिसादाहो णाम । उप्पादकाले चेव धूमलट्ठि व्व आगासे उवलब्भमाणा धूमकेदू णाम । पंचवण्णा होदूण धणुवागारेण खुड्डागारेण वा पुव्वावर-दिसासु उवलब्भमाणा इंदाउहा णाम । एदेसिं मेह-संज्झा-विज्जुक्क-कणय-दिसादाह-धूमकेदु-

भूत स्निग्ध और रूक्ष गुणरूप परिणामको प्राप्त होकर सब स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल बन्धको प्राप्त होते हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रूक्ष पुद्गलों-का रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता । किन्तु दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । तथा दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक रूक्ष पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । इस प्रकार बन्धको प्राप्त होकर वे पुद्गल परिणमन करते हैं । यथा—

वर्षाऋतुके सिवा अन्य समयमें जो मेघ होते हैं उन्हें अभ्र कहते हैं। उन अभ्ररूपसे वे परिणत होते हैं । अथवा वर्षाऋतुमें जो कृष्णवर्णके बादल होते हैं वे मेघ कहलाते हैं। सूर्योदयके समय और सूर्यास्तके समय पूर्वापर दिशाओंमें जो जपा कुसुमके सदृश दिखाई देती है वह सन्ध्या कहलाती है । जो रक्त, धवल और श्यामवर्णकी होती है, जिसमें अत्यधिक तेज होता है, जो कुपित हुए भुजंगके समान चञ्चल शरीरवाली होती है, और जो मेघोंमें उपलब्ध होती है वह विद्युत् कहलाती है । जो जलते हुए अग्निपिण्डके समान अनेक आकारवाली होकर आकाशसे गिरती है वह उल्का कहलाती है। जिससे मनुष्य, पशु और पक्षी मर जाते हैं तथा जो वृक्ष और पर्वतोंके शिखरोंका विदारण करती है ऐसी अशनिको कनक कहते हैं। उत्पातकालमें समय अग्निके बिना दावानलके समान जो दशों दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे दिशादाह कहते है। उत्पातकालमें ही धूमयष्टिके समान जो आकाशमें उपलब्ध होता है उसे धूमकेतु कहते हैं। जो पाँच वर्णका होकर धनुषाकार-रूपसे या त्रुटित आकाररूपसे पूर्वापर दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे इन्द्रायुध कहते हैं। इन मेघ, सन्ध्या, बिजली, कनक, दिशादाह, धूमकेतु और इन्द्रायुधके आकाररूपसे वे पुद्गल परिणत

---

१ अ-आ-काप्रतिषु 'अचाणं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'भुवं (जं) गो' इति पाठः ।

इंदाउहाणमागारेण ते परिणमंति । ते कधं परिणमंति त्ति वुत्ते विसिट्ठागासदेसो खेत्तं । सीदुसुण[1]वरिसणेहि उवलक्खियो कालो[2] । सिसिर-वसंत-णिदाह-वासारत्त-सरद-हेमंता उडू । दिणयरस्स दक्खिणुत्तरगमणमयणं । पूरण-गलणसहावा पोग्गला णाम । खेत्तं कालं उडुं[3] अयणं पोग्गलं च तप्पाओग्गं पप्प पाविदूण ते पोग्गला तेसिमागारेण परिणमंति, अण्णहा सव्वत्थ सव्वद्धं तेसिमुप्पत्तिप्पसंगादो। जे च अमी अण्णे च एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि[4] सरीरमलप्पहुडीणि[5] एत्थ प्पहुडिसद्देण[6] सुज्ज-चंदग्गह-णक्खत्तुवराग-परिवेस-गंधव्व णयरादओ[7] घेत्तव्वा । सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम।

जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो– कम्मबंधो चेव णोकम्मबंधो चेव ॥ ३८ ॥

होते हैं। वे किस कारणसे परिणत होते हैं, ऐसा पूछनेपर 'से खेत्तं पप्प' इत्यादि सूत्रवचन कहा है। विशिष्ट आकाशप्रदेशका नाम क्षेत्र है। शीत, उष्ण और वर्षासे उपलक्षित समयका नाम काल है। शिशिर, वसन्त, निदाघ, वर्षा, शरद और हेमन्तका नाम ऋतु है। सूर्यका दक्षिण और उत्तरको गमन करना अयन है। जिनका पूरण और गलन स्वभाव है वे पुद्गल कहलाते हैं। अपने अपने योग्य क्षेत्र, काल, ऋतु, अयन और पुद्गलको प्राप्त होकर वे पुद्गल उन मेघ आदिके आकाररूपसे परिणत होते हैं; अन्यथा सर्वत्र और सर्वदा उनकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है। जो ये और अन्य अंगमल अर्थात् शरीरमल आदि पदार्थ हैं। यहाँ 'प्रभृति' शब्दसे सूर्य, चन्द्र, ग्रह और नक्षत्र इनका उपराग तथा परिवेश और गन्धर्वनगर आदि लेने चाहिए। यह सब सादि विस्रसाबन्ध है।

विशेषार्थ— आगमद्रव्यबन्धके सिवा शेष सब बन्ध नोआगमद्रव्यबन्ध कहलाते हैं। इसके प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ये दो भेद हैं। जिसमें जीवके व्यापारकी अपेक्षा होती है वह प्रयोगबन्ध कहलाता है और जो जीवके व्यापारके विना अपनी योग्यतानुसार होता है वह विस्रसाबन्ध कहलाता है। यहाँ सादिविस्रसाबन्धका विचार किया जा रहा है। यह पुद्गलोंकी अपनी-अपनी योग्यतानुसार होता है। यों तो जितने भी कार्य होते हैं वे सब अपनी अपनी योग्यतानुसार ही होते हैं। किन्तु बाह्य निमित्तको ध्यानमें रखकर बन्धके प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ये भेद किए गए हैं। कर्मबन्ध प्रयोगबन्धमें आता है, पर समयप्राभृतमें इसके विषयमें लिखा है कि रागादिकका निमित्त पाकर कर्मपुद्गल स्वयं कर्मरूपसे परिणत होते हैं और कर्मका निमित्त पाकर जीव रागादिकरूपसे परिणमन करता है। समयप्राभृतके उक्त कथनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बलात् अन्य अन्यका परिणमन करानेवाला नहीं होता, किन्तु एक दूसरेका निमित पाकर प्रत्येक द्रव्य स्वयं परिणमन करता है। शेष कथन सुगम है।

जो प्रयोगबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है— कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध ॥ ३८ ॥

---

१. ता. प्रतौ 'सीदुसण-' इति पाठ. । २. अ. प्रतौ 'काले' इति पाठः । ३. अ. आ. प्रत्योः 'काल उदु' इति पाठ. । ४. ता. प्रतौ '-प्पहुडि (डी) णि' इति पाठः । ५. ता. प्रतौ '-प्पहुडीण (णि)' अ. आ. प्रत्योः '-प्पहुडीण' इति पाठः। ६. अ. आ. प्रत्यो. '-सज्जेण' इति पाठः। ७. अ. आ. प्रत्योः '-गंधव्वणयरादओ-' इति पाठः ।

एवं दुविहो चेव पओअबंधो होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो। को पओगबंधो णाम ? जीववावारेण जो समुप्पण्णो बंधो सो पओअबंधो णाम।

जो सो कम्मबंधो णाम सो थप्पो ॥ ३९ ॥

कुदो ? बहुवण्णणिज्जत्तादो[1]।

जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो– आलावणबंधो अल्लीवणबंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरिबंधो चेदि ॥ ४० ॥

एवं णोकम्मबंधो पंचविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो। तत्थ आलावणबंधो णाम केरिसो त्ति वुत्ते वुच्चदे– रज्जु-वरत्त-कट्ठदव्वादीहि जं पुधभूदाणं बंधणं सो आलावणबंधो णाम। लेवणविसेसेण जडिदाणं[2] दव्वाणं जो बंधो सो अल्लीवणबंधो णाम। रज्जु-वरत्त-कट्ठादीहि विणा अल्लीवण[3]विसेसेहि विणा जो चिक्कण-अचिक्कणदव्वाणं चिक्कणदव्वाणं वा परोप्परेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम। पंचण्णं सरीराणमण्णोण्णेण बंधो सो सरीरबंधो णाम। जीवपदेसाणं जीवपदेसेहि पंचसरीरेहि य जो बंधो सो सरीरिबंधो णाम। संपहि आला-वणबंधसरूवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

इस तरह दो प्रकारका ही प्रयोगबन्ध होता है, क्योंकि, अन्य प्रकारका प्रयोगबन्ध उपलब्ध नहीं होता।

शंका— प्रयोगबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान— जीवके व्यापार द्वारा जो बन्ध समुत्पन्न होता है उसे प्रयोगबन्ध कहते हैं।

जो कर्मबन्ध है उसे स्थगित करते हैं ॥ ३९ ॥

क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करना है।

जो नोकर्मबन्ध है वह पाँच प्रकारका है—आलापनबन्ध, अल्लीवनबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध ॥ ४० ॥

इस प्रकार नोकर्मबन्ध पाँच प्रकारका ही होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य बन्ध उपलब्ध नहीं होता। उनमेंसे आलापनबन्धका क्या स्वरूप है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं— रस्सी, वरत्रा (रस्सी विशेष) और काष्ठद्रव्य आदिकसे जो पृथग्भूत द्रव्य बाँधे जाते हैं वह आलापनबन्ध है।

लेपविशेषसे परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह अल्लीवनबन्ध कहलाता है। रस्सी, वरत्रा और काष्ठ आदिकके विना तथा अल्लीवनविशेषके विना जो चिक्कण और अचिक्कण द्रव्योंका अथवा चिक्कण द्रव्योंका परस्पर बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध कहलाता है। पाँच शरीरोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह शरीरबन्ध कहलाता है। तथा जीवप्रदेशोंका जीवप्रदेशोंके साथ और पाँच शरीरोंके साथ जो बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध कहलाता है। अब आलापनबन्धके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

१. ता. आ. प्रत्योः '-णिज्जित्तादो' इति पाठः। २. ता. प्रतौ 'लोय [लेव] ण विसेसेण जदिदाणं' अ० आ० का० प्रतिषु 'लोयणविसेसेण जदिदाणं' इति पाठः। ३. अ. आ. प्रत्योः 'अल्लियण' इति पाठः।

जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– से सगडाणं[1] वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीणं[2] वा गिल्लीणं वा रहाणं वा संदणाणं वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासादाणं वा गोवुराणं वा तोरणाणं वा से कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वब्भेण वा दब्भेण वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ॥ ४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— लोहेण बद्धणेमि-तुंब-महाचक्का लोहबद्धछुहयपेरंता लोणादीणं[3] गरुअभरुव्वहणक्खमा सयडा णाम । समुद्दमज्झे विविहभंडेहि आवूरिदा संता जे गमणक्खमा वोहित्था[4] ते जाणा णाम । गरुवत्तणेण महल्लत्तणेण[5] य जं तुरय-वेसरादीहि वुब्भदि[6] तं जुगं णाम । दहरदोचक्काओ धण्णादिहलुअ[7] दव्वभरुव्वहणक्खमाओ गड्डीओ णाम । फिरिक्कीओ गिल्लीयो णाम । का फिरिकी णाम? चुंदेण वट्टुलागारेण घडिदणेमि-तुंबाधारसरलट्ठकट्ठा[8] फिरिक्की णाम । जुद्धे अहिरह-महारहाणं[9] चडणजोग्गा रहा णाम ।

जो आलापनबन्ध है उसका यह निर्देश है—जो शकटोंका, यानोंका, युगोंका, गड्डियोंका, गिल्लियोंका, रथोंका, स्यन्दनोंका, शिविकाओंका, गृहोंका, प्रासादोंका, गोपुरोंका और तोरणोंका काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, चमड़ेकी रस्सीसे और दर्भसे जो बन्ध होता है तथा इनसे लेकर अन्य द्रव्योंसे आलापित अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह सब आलापन बन्ध है ॥ ४१ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा—जिनकी धुर, गाड़ीकी नाभि और महाचक्र लोहसे बँधे हुए हैं, जिनके छुहय पर्यन्त लोहसे बँधे हुए हैं और जो नमक आदि भारी भारको ढोनेमें समर्थ हैं वे शकट कहलाते हैं । नाना प्रकारके भाण्डोंसे आपूरित होकर भी समुद्रमें गमन करनेमें समर्थ जो जहाज होते हैं वे यान कहलाते हैं । जो बहुत भारी होनेसे और बहुत बड़े होनेसे घोड़ा और खच्चर आदिके द्वारा ढोया जाता है वह युग कहलाता है । जिनके दो चके छोटे हैं और जो धान्य आदि हलके भारके ढोनेमें समर्थ हैं वे गड्डी कहलाती हैं । फिरिक्कीको गिल्ली कहते हैं ।

शंका— फिरिक्की किसे कहते हैं ?

समाधान— जिसकी नेमि और तुम्बकी आधारभूत आठ लकड़ियाँ वर्तुलाकार चुन्दसे घटित हैं उसे फिरिक्की कहते हैं ।

जो युद्धमें अधिरथी और महारथियोंके चढ़ने योग्य होते हैं वे रथ कहलाते हैं । जो

१. अ. आ. प्रत्योः 'सदाणं' इति पाठः । २. अ. आ. प्रत्योः 'गदीणं' इति पाठः । ३. अ. आ. प्रत्योः 'लोगादीणं' इति पाठ । ४. ता. अ. आ. प्रतिषु 'वोहित्था' इति पाठः । ५. ता. अ. आ. प्रतिषु 'गरुवत्थत्तेण महल्लत्थणेण' इति पाठः । ६. अ. प्रतौ 'वुच्चदि' आ. प्रतौ 'वुज्झदि' इति पाठः । ७. ता. अ. आ. प्रतिषु '-हलुह-' इति पाठः । ८. ता. प्रतौ '-कट्ठा [६]' इति पाठः । ९. ता. प्रतौ अहिरह (राय) महारहा (राया) णं' इति पाठ. ।

चक्कवट्टि-बलदेवाणं चडणजोग्गा सव्वाउहावुण्णा णिमणपवणवेगा अच्छे भंगे वि चक्क-घडणगुणेण अपडिहयगमणा संदणा णाम। माणुसेहि वुब्भमाणा[1] सिविया णाम। कट्ठियाहि बद्धकुड्डा उवरि वंसिकच्छण्णा गिहा णाम। पक्कसइला सइला आवासा पासादा णाम। पायाराणं वारे घडिदगिहा गोवुरं णाम। पुराणं पुराणं पासादाणं वंदणमालबंधणट्ठं पुरदो ट्ठविदरुक्खविसेसा तोरणं णाम। एदेसिं पुव्वुत्ताणं जे बंधा ते आलावणबंधा णाम। केणेसिं बंधो होदि ? कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वब्भेण वा दब्भेण वा। 'वा' सद्देण[2] वक्केण वा सुंबेण[3] वा कट्ठियाए वा इच्चेवमादि घेत्तव्वं। कट्ठादीहि अण्णदव्वेहि अण्णदव्वाणं आलाविदाणं जोइदाणं[4] बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम।

जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– से कडयाणं वा कुड्डाणं वा[5] गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं[6] वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि अल्लीविदाणं बंधो होदि सो सव्वो अल्लीवणबंधो णाम ॥ ४२ ॥

चक्रवर्ती और बलदेवोंके चढ़ने योग्य होते हैं, जो सब आयुधोंसे परिपूर्ण होते हैं, जो पवनके समान वेगवाले होते हैं और धुरके टूट जाने पर भी जिनके चक्रोंकी इस प्रकारकी रचना होती है जिस गुणके कारण जिनके गमनागमनमें बाधा नहीं पड़ती वे स्यन्दन कहलाते हैं। जो मनुष्यों द्वारा उठाकर ले जाई जाती हैं वे शिविका कहलाती हैं। जिनकी भीत लकड़ियोंसे बनाई जाती है और जिनका छप्पर बाँस और तृणसे छाया जाता है वे गृह कहलाते हैं। ईंटों और पत्थरोंके बने हुए पत्थरबहुल आवासोंको प्रासाद कहते हैं। कोटोंके दरवाजोंपर जो घर बने होते हैं वह गोपुर कहलाता है। प्रत्येक पुर और प्रासादोंपर वन्दनमाला बाँधनेके लिए आगे जो वृक्ष-विशेष रखे जाते हैं वह तोरण कहलाता है। इन पूर्वोक्त शकट आदिके जो बन्ध होते है वे आलापनबन्ध कहलाते हैं।

शंका—इनका बन्धन किस पदार्थसे होता है ?

समाधान—काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, वध्रसे और दर्भसे होता है। यहाँ सूत्रमें आये हुए 'वा' शब्दसे वकलेसे, शुम्ब अर्थात् तृणविशेषसे और लकड़ीसे होता है इत्यादि लेना चाहिए।

काष्ठ आदि अन्य द्रव्योंसे जो आलापित अर्थात् परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका बन्ध होता है वह सब आलापनबन्ध है।

जो अल्लीवणबन्ध है उसका यह निर्देश है—कटकोंका, कुड्डोंका, गोवरपीडोंका, प्राकारोंका और शाटिकाओंका तथा इनसे लेकर और जो दूसरे पदार्थ हैं उनका जो बन्ध होता है अर्थात् अन्य द्रव्योंसे सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह सब अल्लीवणबन्ध है ॥ ४२ ॥

---

१. आ. प्रतौ 'वुब्भमाणा' इति पाठः। २. अ. आ. प्रत्योः 'दव्वेण वा सद्देण' इति पाठः। ३. ता. अ. आ. प्रतिषु 'सुंभेण' इति पाठः। ४. प्रतिषु दोहदाण इति पाठः। ५. अ. आ. प्रत्यो. 'कटयाण वा कुटाणं वा इति पाठः। ६. ता. आ. प्रत्योः 'पासादियाणं' अ. प्रतौ 'सादियाण' इति पाठः।

वंसकंबीहि अण्णोण्णजणणाए जे किज्जंति घरावणादिवाराणं ढंकणट्ठं[1] ते कडया[2]णाम। जिणहरघरायदणाणं[3] ठविदओलित्तीओ कुड्डा णाम। कुड्डाणं पोग्गल-बंधो अल्लीवणबंधो णाम, वब्भ दब्भ लोह-कट्ठ रज्जूणं बंधेण विणा अल्लियणमेत्तेणेव बंधुवलंभादो। ण च एस बंधो संसिलेसबंधे पविसदि, ओल्लमट्टियाए चिक्कणगुणा-भावादो। छाणेण लेविदूण जाणि पीडाणि किज्जंति ताणि गोवरपीडाणि[4] णाम। एदेसिं जो बंधो सो वि अल्लीवणबंधो णाम, सगदेहादो पुधभूददब्भादिबंधकारणाभावादो। जिणहरादीणं रक्खट्ठं पासेसु ट्ठविदओलित्तीओ[5] पागारा णाम। पक्किट्टाहि[6] घडिदवरंडा वा पागारा णाम। तत्थ वि इट्टादितो[7] पुधभूदबंधकारणाणुव लंभादो[8]। पुव्वं पासाद-गोवुरादीणं पक्किट्टा[9] विणिम्मियाणमालावणबंधो होदि त्ति परूविदं। संपहि तेसिं चेव अल्लीवणबंधपरूवणं कधं ण विरुज्झदे? ण, पासाद-गोवुर रुक्खाणमइयवडादीणं (?) लोहेण लोह-कट्ठकीलेहि य बंधं दट्ठूण तेसिमालावणबंधपरूवणादो। तत्थ वि कुड्डाणं पुण

बाँसकी कमचियोंके द्वारा परस्पर बुनकर घर और अवन आदिके ढाँकनेके लिए जो बनाई जाती हैं वे कटक अर्थात् चटाई कहलाती हैं। जिनगृह, घर और अवनकी जो भीतें बनाई जाती हैं उन्हें कुड्ड कहते हैं। कुड्डोंका जो पुद्गलबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध कहलाता है, क्योंकि वध्र, दर्भ, लोह, काष्ठ और रस्सीके बन्धके बिना परस्पर मिलाने मात्रसे ही यह बन्ध उपलब्ध होता है। यह बन्ध संश्लेषबन्धमें अन्तर्भूत होता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि गीली मिट्टीमें चिक्कण गुणका अभाव है। गोवरसे लेपकर जो पीड बनाये जाते हैं वे गोवरपीड कहलाते हैं। इनका जो बन्ध होता है वह भी अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि इनके बन्धमें अपनेसे भिन्न दर्भादि बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते। जिनगृह आदिकी रक्षाके लिए पार्श्वमें जो भीतें बनाई जाती हैं वे प्राकार कहलाते हैं। अथवा पकी हुई ईटोंसे जो वरण्डा बनाये जाते हैं वे प्राकार कहलाते हैं। यहाँ पर भी ईटोंसे पृथग्भूत बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

शंका—पहले पकी हुई ईटोंसे बने हुए प्रासाद और गोपुर आदिका आलापनबन्ध होता है ऐसा कह आये हैं और अब यहाँ उनका ही अल्लीवणबन्ध कह रहे हैं सो यह कथन विरोधको कैसे नहीं प्राप्त होता?

समाधान—नहीं, क्योंकि पहले प्रासाद, गोपुर आदिकका लोहसे तथा लोह और काष्ठकी कीलोंसे बन्ध देखकर उनका आलापनबन्ध कहा है। परन्तु उनकी भीतोंका तो अल्लीवणबन्ध ही होता है, इसलिए उक्त कथनमें कोई विरोध नहीं है।

---

१. ता. प्रतौ 'दं (ढं) कणट्ठ-' अ. आ. प्रत्योः 'दंकणट्ठं-' इति पाठः। २. अ. आ. प्रत्योः 'कदया' इति पाठ। ३. ता. प्रतौ 'जिणहरघरायणाणं' अ. प्रतौ 'जिणाहरघरावणाणं' आ. प्रतौ 'जिणहरघरावणाणं' इति पाठः। ४. अ. आ. प्रत्योः 'पीदाणि' इति पाठः। ५. ता. अ. आ. प्रतिषु 'ओलित्तीओ' इति पाठः। ६. ता. प्रतौ 'पक्किट्टाहि' इति पाठः। ७. ता. प्रतौ 'इट्टाहितो' इति पाठः। ८. ता. अ. आ. प्रतिषु कारण-मुव-लंभादो इति पाठः। ९. ता. प्रतौ 'पक्किट्टा' इति पाठः।

अल्लीवणबंधो चेव। बहुलियाहि[1] परियत्तविसए परिहिज्जमाणाओ साडियाओ[2] णाम। तासिं जो तंतुसंताणबंधो सो अल्लीवणबंधो णाम, तंतूहिंतो पुधभूदबंधकारणाणुवलंभादो। अण्णे एवमादिया त्ति वयणेण णेत्तपट्ट-कप्पाससुत्तविसेसेण वुअवत्थाणं गहणं कायव्वं। सेसं सुगमं।

जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—जहा कट्ठ-जदूणं अण्णोण्णसंसिलेसिदाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो णाम ॥ ४३ ॥

जदू णाम लक्खा। लक्खाए कट्ठस्स जो अण्णोण्णसंसिलेसेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम। ण च एस बंधो अल्लीवणबंधे पविसदि, पाणिएण जणिददव्वाभावादो। णालावणबंधे पविसदि; तदो पुधभूददव्वादिबंधकारणाभावादो। जदुग्गहणमेदमुवलक्खणं वज्जलेव-मयणादीणं, तेण तेसिं पि एत्थ गहणं कायव्वं।

जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो— ओरालियसरीरबंधो वेउव्वियसरीरबंधो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरीरबंधो चेदि ॥ ४४ ॥

एवं पंचविहो चेव सरीरबंधो होदि, अण्णस्स एदेहिंतो पुधभूदबंधस्स अणुवलंभादो।

स्त्रियोंके द्वारा देशविशेषमें जो पहिनी जाती हैं वे शाटिका कहलाती हैं। तथा इनका जो तन्तु-सन्तानबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि इनमें तन्तुओंके सिवा अलगसे बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते। 'अण्णे एवमादिया' इस वचनसे नेत्रपट्ट और कपासके सूतसे बुने हुए वस्त्रोंका ग्रहण करना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

जो संश्लेषबन्ध है उसका यह निर्देश है—जैसे परस्पर संश्लेषको प्राप्त हुए काष्ठ और लाखका बन्ध होता है वह सब संश्लेषबन्ध है ॥ ४३ ॥

जतु लाखको कहते हैं। लाख और काष्ठके परस्पर संश्लेषसे जो बन्ध होता है वह संश्लेष-बन्ध है। यह बन्ध अल्लीवणबन्धमें अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि यहाँ पानीसे संयोगको प्राप्त हुए द्रव्यका अभाव है। आलापनबन्धमें भी अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि इनसे पृथग्भूत द्रव्यादि बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

'जतु' पदका ग्रहण यहाँ वज्रलेप और मैन आदि चिक्कण द्रव्योंका उपलक्षण है। इससे इनका भी यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

जो शरीरबन्ध है वह पाँच प्रकारका है—औदारिकशरीरबन्ध, वैक्रियिक-शरीरबन्ध, आहारकशरीरबन्ध तैजसशरीरबन्ध और कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४४ ॥

इस प्रकार पाँच प्रकारका ही शरीरबन्ध होता है, क्योंकि इनसे पृथग्भूत दूसरा शरीरबन्ध

---

१. ता. आ. प्रतिषु 'बुहेलियाहि' इति पाठः। २. अ. आ. प्रत्योः 'सादियाओ' इति पाठः।

संपहि एगादिसंजोगे[1] ओरालियसरीरस्स बंधवियप्पुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो ॥ ४५ ॥

ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधाणमण्णेहि ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधेहि जो बंधो सो ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो । एवमेसो एगसंजोगेण एक्को चेव भंगो होदि १ । संपहि दुसंजोगभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-तेयासरीरबंधो ॥ ४६ ॥

ओरालियसरीरपोग्गलाणं तेयासरीरपोग्गलाणं च एक्कम्हि जीवे जो परोप्परेण बंधो सो ओरालिय-तेयासरीरबंधो णाम १ ।

ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४७ ॥

ओरालियखंधाणं कम्मइयक्खंधाणं च एक्कम्हि जीवे ट्ठिदाणं जो बंधो सो ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो णाम २ । ओरालियखंधाणं वेउव्विय-आहारसरीरेहि सह णत्थि बंधो; ओरालियसरीरेण परिणदजीवे सेसदोण्णं सरीराणमभावादो । होदु णाम वेउव्वियसरीरस्स अभावो, तस्स देव-णेरइएसु चेव अत्थित्तदंसणादो । आहारसरीरं[2] पुण मणुस्सेसु चेव होदि, तेण ओरालियसरीरेण सह आहारसरीरस्स संबंधेण होदव्वमिदि ?

नहीं उपलब्ध होता । अब एकादि संयोगरूप औदारिक शरीरके बन्धविकल्पोंको उत्पन्न करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध ॥ ४५ ॥

औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंका अन्य औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंके साथ जो बन्ध होता है वह औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध है । इस प्रकार यह एकसंयोगसे एक ही भंग होता है १ । अब द्विसंयोग भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ४६ ॥

औदारिकशरीरके पुद्गलोंका और तैजसशरीरके पुद्गलोंका एक जीवमें जो परस्परबन्ध होता है वह औदारिक-तैजसशरीरबन्ध है १ ।

औदारिक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४७ ॥

एक जीवमें स्थित औदारिकस्कन्धोंका और कार्मणस्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-कार्मणशरीरबन्ध है २ । औदारिकस्कन्धोंका वैक्रियिक और आहारकशरीरके साथ बन्ध नहीं होता, क्योंकि, औदारिक-शरीररूपसे परिणत हुए जीवमें शेष दो शरीरोंका अभाव पाया जाता है ।

शंका— इसके वैक्रियिकशरीरका अभाव भले ही रहा आवे; क्योंकि उसका देव और नारकियोंके ही अस्तित्व देखा जाता है । किन्तु आहारकशरीर तो मनुष्योंके ही होता है, इसलिए औदारिकशरीरके साथ आहारकशरीरका सम्बन्ध होना चाहिए ?

१ अ. प्रतौ '-संजोगो' इति पाठः । २ अ. आ. प्रत्योः '-सरीराणं' इति पाठः ।

ण, आहारसरीरेण परिणमंताणं ओरालियसरीरस्स उदयाभावेण तेण संबंधाभावादो। एवं दुसंजोगभंगपरूवणा कदा। संपहि तिसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४८ ॥

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरक्खंधाणं एक्कम्हि जीवे णिविट्ठाणं जो अण्णोण्णेण बंधो सो ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो णाम। एवं तिसंजोगे एक्को चेव भंगो १। संपहि वेउव्वियसरीरस्स एगादिसंजोगभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो ॥ ४९ ॥

वेउव्विय-तेयासरीरबंधो ॥ ५० ॥

वेउव्विय-कम्मइयसरारबंधो ॥ ५१ ॥

वेउव्विय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५२ ॥

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि। आहारसरीरभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

आहार-आहारसरोरबंधो ॥ ५३ ॥

आहार-तेयासरीरबंधो ॥ ५४ ॥

आहार-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५५ ॥

समाधान— नहीं, क्योंकि आहारकशरीररूपसे परिणमन करनेवाले जीवोंके औदारिकशरीरका उदय नहीं होनेसे उसके साथ सम्बन्ध नहीं होता।

इस प्रकार द्विसंयोगी भंगका कथन किया। अब त्रिसंयोगी भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४८ ॥

एक जीवमें निविष्ट हुए औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके स्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध है। इस प्रकार त्रिसंयोगी एक ही भंग होता है। अब वैक्रियिकशरीरके एकादिसंयोगी भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

वैक्रियिक-वैक्रियिकशरीरबन्ध ॥ ४९ ॥

वैक्रियिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५० ॥

वैक्रियिक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५१ ॥

वैक्रियिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५२ ॥

ये चारों ही सूत्र सुगम हैं। अब आहारकशरीरके भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

आहारक-आहारकशरीरबन्ध ॥ ५३ ॥

आहारक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५४ ॥

आहारक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५५ ॥

आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५६ ॥

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि[1] ।

तेया-तेयासरीरबंधो ॥ ५७ ॥

तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५८ ॥

सेसभंगा एत्थ किण्ण परूविदा ? ण, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५९ ॥

एत्थ एक्को चेव भंगो । सेसभंगा संता वि किमट्ठं ण परूविदा ? पुव्वं परूविदत्तादो ।

[2]सो सव्वो सरीरबंधो णामं ॥ ६० ॥

एसो पण्णारसविहो बंधो सरीरबंधो त्ति घेत्तव्वो ।

जो सो सरीरिबंधो णाम सो दुविहो— सादियसरीरिबंधो चेव अणादियसरीरिबंधो चेव ॥ ६१ ॥

एवं दुविहो चेव सरीरिबंधो होदि; अण्णस्सासंभवादो ।

आहारक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५६ ॥

ये चार सूत्र भी सुगम हैं ।

तैजस-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५७ ॥

तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५८ ॥

शंका— शेष भंग यहाँ क्यों नहीं कहे ?

समाधान— नहीं, क्योंकि पुनरुक्त दोषका प्रसंग प्राप्त होता है ।

कार्मण-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५९ ॥

यहाँ एक ही भंग होता है ।

शंका— शेष भंग भी होते हैं, फिर वे किसलिए नहीं कहे ?

समाधान— क्योंकि उनका कथन पहले कर आये है ।

वह सब शरीरबन्ध है ॥ ६० ॥

यह पन्द्रह प्रकारका बन्ध शरीरबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

जो शरीरबन्ध है वह दो प्रकारका है— सादि शरीरिबन्ध और अनादि शरीरिबन्ध ॥ ६१ ॥

इस प्रकार शरीरिबन्ध दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि अन्य प्रकारके शरीरिबन्धका होना असम्भव है ।

---

१ अ० प्रतौ 'एदाणि चत्तारि सुत्ताणि वि सुगमाणि' आ. प्रतौ 'एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि' इति पाठः । २. प्रतिषु धवलान्तर्गतमिदं न सूत्रत्वेनोपलभ्यते ।

जो सो सादियसरीरिबंधो णाम सो जहा सरीरबंधो तहा णेदव्वो ॥ ६२ ॥

सरीरी णाम जीवो। तस्स जो बंधो ओरालियादिसरीरेहि सो सरीरिबंधो णाम। तस्स भंगपरूवणा जहा सरीरबंधस्स परूविदा तहा परूवेदव्वा। तं जहा—ओरालियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। वेउव्वियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। आहारसरीरेण सरीरिस्स बंधो। तेजइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो। कम्मइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो। सरीरिणा सरीरस्स बंधो। कधमेसो छट्ठभंगो जुज्जदे? ण, कम्म-णोकम्माणमणादिसंबंधेण मुत्तत्तमुवगयस्स जीवस्स घणलोगमेत्तपदेसस्स जोगवसेण संघार-विसप्पणधम्मियस्स अवयवाणं परतंतलक्खण-संबंधेण छट्ठभंगुप्पत्तीए विरोहाभावादो। एवमेदे छब्भंगा ६। ओरालिय-तेजासरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीरेहि सरीरिस्स बंधो, एवमोरालियसरीरे णिरुद्धे तिण्णि भंगा ३। वेउव्विय-आहार-सरीराणं एवं चेव तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेदव्वा। तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो १। एवं तेयासरीरे णिरुद्धे[1] एक्को चेव दुसंजोगभंगो। कम्मइयम्मि दुसंजोगभंगो णत्थि। एवमेदे सोलस सरीरिबंधा १६।

जो सादि शरीरिबन्ध है वह शरीरबन्धके समान जानना चाहिए ॥ ६२ ॥

शरीरी जीवको कहते हैं। उसका जो औदारिक आदि शरीरोंके साथ बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध है। इसके भंगोंका कथन, जिस प्रकार शरीरबन्धके भंगोंका कथन किया है, उस प्रकार करना चाहिए। यथा—औदारिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, वैक्रियिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, आहारकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, तैजसशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, कार्मण-शरीरके साथ शरीरीका बन्ध, और शरीरके साथ शरीरीका बन्ध।

शंका—यहाँ छठवाँ भंग कैसे बन सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि जो कर्म और नोकर्मोंका अनादि सम्बन्ध होनेसे मूर्तपनेको प्राप्त हुआ है और जिसके घनलोकप्रमाण जीवप्रदेश योगके वशसे संकोच और विस्तार धर्मवाले हैं ऐसे जीवके अवयवोंके परतन्त्रलक्षण सम्बन्धसे छठे भंगकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

इस प्रकार ये छह भंग हुए ६।

औदारिक-तैजसशरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, औदारिक-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, और औदारिक-तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध; इस प्रकार औदारिकशरीरकी विवक्षा होनेपर तीन भंग होते हैं ३। वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके इसी प्रकार तीन तीन भंग कहने चाहिए। तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, इस प्रकार तैजसशरीरकी विवक्षा होनेपर द्विसंयोगी एक ही भंग होता है १। कार्मणशरीरमें द्विसंयोगी भंग नहीं होता। इस प्रकार ये सोलह शरीरिबन्ध होते हैं १६।

१ ता. आ. प्रत्योः 'तेयासरीरणिरुद्धे' इति पाठः।

जो अणादियसरीरिबंधो णाम यथा अट्ठण्णं जीवमज्झपदेसाणं अण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियसरीरिबंधो णाम ॥ ६३ ॥

जीवमज्झपदेसाणमट्ठण्णं पि जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो होदि[1]। किंतु एसो ण पओअबंधो; साभावियत्तादो त्ति वुत्ते– ण एस दोसो; दिट्ठंतदुवारेण णिद्दिट्ठत्तादो। जहा अट्ठण्णं पि जीवमज्झपदेसाणमणादियो बंधो तहा सरीरिस्स जो पुव्वरहिदबंधो सो अणादियसरीरिबंधो त्ति घेत्तव्वो। को सो बंधो ? सरीरिस्स कम्म-णोकम्मसामण्णेण जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो णाम।

जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मे त्ति तहा णेदव्वं ॥ ६४ ॥

कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणियोगद्दारे परूविदा तहा परूवेदव्वा।
एवं संखेवेण परूविदूण बंधो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

जो अनादिशरीरिबन्ध है। यथा— जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है यह सब अनादि शरीरिबन्ध है ॥ ६३ ॥

शंका— जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका जो बन्ध है वह अनादिशरीरिबन्ध है, यह ठीक है; किन्तु यह प्रयोगबन्ध नहीं है, क्योंकि यह स्वाभाविक होता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि दृष्टान्त द्वारा अनादि शरीरिबन्धका यहाँ निर्देश किया है। जिस प्रकार जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका अनादिबन्ध होता है उसी प्रकार शरीरीका जो पूर्व कालकी मर्यादासे रहित बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका— वह बन्ध क्या है ?

समाधान— शरीरीका कर्म और नोकर्म सामान्यके साथ जो बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है।

जो कर्मबन्ध स्थगित कर आये हैं उसे कर्मअनुयोगद्वारके समान जानना चाहिए ॥ ६४ ॥

कर्मबन्धके चौंसठ भंग जिस प्रकार कर्म अनुयोगद्वारमें कहे हैं उसी प्रकार कहने चाहिए।
इस प्रकार संक्षेपसे कथन करनेपर बन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

१ आ० प्रतौ 'होज्ज' इति पाठः।

बंधगाणियोगद्दारं

जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देसो– गदि इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे[1] लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि आहारे चेदि ॥ ६५ ॥

एदं सुत्तं चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि परूवेदि, अण्णहा बंधगपरूवणाणुववत्तीदो। एदेसिं मग्गणट्ठाणाणं जहा खुद्दाबंधे परूवणा कदा तहा कायव्वा।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया[2] बंधा तिरिक्खा बंधा देवा बंधा मणुसा बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा अबंधा[3]। एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणियोगद्दारं णेयव्वं ॥ ६६ ॥

एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणियोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा, अम्हेहि[4] पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा।

एवं महादंडया णेयव्वा ॥ ६७ ॥

एक्कारसअणियोगद्दाराणं परूवणं काढूण पुणो महादंडयाणं पि परूवणा कायव्वा।

एवं बंधगे त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

जो बन्धक हैं उनका यह निर्देश है— गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार ॥ ६५ ॥

यह सूत्र चौदह मार्गणास्थानोंका प्ररूपण करता है, अन्यथा बन्धकका कथन नहीं बन सकता। इन मार्गणास्थानोंका जिस प्रकार क्षुल्लकबन्धमें कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए।

गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारक जीव बन्धक हैं, तिर्यंच बन्धक हैं, देव बन्धक हैं, मनुष्य बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं, सिद्ध अबन्धक हैं। इस प्रकार यहाँ क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वार जानने चाहिए ॥ ६६ ॥

इस स्थान पर क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करना चाहिए। हमने ग्रन्थके बढ़ जानेके भयसे उनका कथन यहाँ नहीं किया है।

इसी प्रकार महादण्डक जानने चाहिए ॥ ६७ ॥

ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करके अनन्तर महादण्डकोंका भी कथन करना चाहिए।

विशेषार्थ— यहाँ बन्धकका कथन करना है। पहले यह कथन क्षुल्लकबन्धमें कर आये हैं, इसलिये यहाँ उसके अनुसार ही इस कथनके करनेकी सूचना की है। क्षुल्लकबन्धमें सर्व प्रथम 'बन्धक' के कथनकी प्रतिज्ञा की है। अनन्तर चौदह मार्गणाओंका नामनिर्देश करके उनमेंसे प्रत्येक मार्गणामें कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है यह बतलाया है। अनन्तर एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व आदि ग्यारह अनुयोगोंके द्वारा बन्धकका कथन करके अन्तमें महादण्डक दिये हैं। यहाँ भी इसी प्रकार कथन करनेसे बन्धक अनुयोगद्वार समाप्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

इस प्रकार बन्धक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

१. आ० प्रतौ 'दंसणेसु' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'णेरया' इति पाठः। ३. अ० आ० प्रत्योः 'अबंधा ॥ २ ॥' इति पाठः। ४ आ० प्रतौ 'अहेहि' इति पाठः।

बंधणिज्जाणियोगगद्दारं

जं तं बंधणिज्जं णाम तस्स इममणुगमणं कस्सामो— वेदणअप्पा पोग्गला, पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा[1], खंधा वग्गणसमुद्दिट्ठा[1] ॥ ६८ ॥

वेद्यन्त इति वेदनाः। जीवादो पुधभूदा कम्म-णोकम्मबंधपाओग्गखंधा बंधणिज्जा णाम। तेसिं कथं वेदणाभावो जुज्जदे? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि वेदणापाओग्गेसु दव्वट्ठियणयमस्सिदूण वेदणासद्दपवुत्तीए अब्भुवगमादो। वेदनात्वमात्मा स्वरूपं येषां ते वेदनात्मानः[2] पुद्गलाः इह गृहीतव्याः। कुदो? अण्णेसिं बंधणिज्जत्ताभावादो। ते च बंधणिज्जा पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा[1], खंधसरूवाअणंताणंत[3]परमाणुपोग्गलसमुदयसमागमेण बंधपाओग्गपोग्गलसमुप्पत्तीदो[4]। एदेण एयपदेसिय-दुपदेसियादीणं पोग्गलाणं बंधणिज्जत्तपडिसेहो कदो। ते च खंधा वग्गणसमुद्दिट्ठा[1]; वग्गणाहिंतो पुधभूदक्खंधाभावादो। एदेण बंधणिज्जपोग्गलाणं णिव्वियप्पत्तपडिसेहो कदो। तेण बंधणिज्जपरूवणे कीरमाणे वग्गणपरूवणा णिच्छएण कायव्वा; अण्णहा तेवीसवग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा, अण्णाओ[5] बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुववत्तीदो।

जो बन्धनीय है उसका इस प्रकार अनुगमन करते हैं—वेदनस्वरूप पुद्गल हैं, पुद्गल स्कन्धस्वरूप हैं, और स्कन्ध वर्गणास्वरूप हैं ॥ १ ॥

जो वेदे जाते हैं उन्हें वेदन कहते हैं। जीवसे पृथग्भूत बन्धयोग्य कर्म और नोकर्म स्कन्ध बन्धनीय कहलाते हैं।

शंका— वे वेदनरूप कैसे हो सकते हैं?

समाधान— नहीं, क्योंकि जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वेदनायोग्य हैं, उनमें द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा वेदना शब्दकी प्रवृत्ति स्वीकार की गई है।

वेदनपना जिनका आत्मा अर्थात् स्वरूप है वे वेदनात्मा कहलाते हैं। यहाँ इस पदसे पुद्गलोंका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि अन्य कोई पदार्थ बन्धनीय नहीं हो सकते। वे बन्धनीय पुद्गल स्कन्धसमुद्दिष्ट अर्थात् स्कन्धस्वरूप कहे गये हैं, क्योंकि स्कन्धरूप अनन्तानन्त परमाणुपुद्गलोंके समुदायरूप समागमसे बन्धयोग्य पुद्गल होते हैं। इस पदसे एक प्रदेशी और दो प्रदेशी आदि पुद्गलोंके बन्धनीयपनेका निषेध किया है। और वे स्कन्ध वर्गणारूप कहे गये हैं; क्योंकि वर्गणाओंसे पृथग्भूत स्कन्ध नहीं पाये जाते। इस पदसे बन्धनीय पुद्गल निर्विकल्प होते हैं इस बातका निषेध किया है। इसलिए बन्धनीयका कथन करते समय वर्गणाका कथन नियमसे करना चाहिए। अन्यथा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें ये वर्गणा ही बन्धयोग्य हैं, अन्य बन्धयोग्य नहीं हैं, यह ज्ञान नहीं हो सकता।

---

१. अ० प्रतौ '-समुट्ठिदा' इति पाठः। २. ता० अ० आ० प्रतिषु 'वेदनात्मन.' इति पाठ। ३. ता० प्रतौ '[अ] णंता-' इति पाठः। ४ अ० प्रतौ 'बंधपोग्गलपाओग्ग-' इति पाठः। ५. ता० आ० प्रत्योः 'अण्णा जो' इति पाठः।

वग्गणाणमणुगमणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ आणओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति– वग्गणा वग्गणदव्वसमुदाहारो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति ॥६९॥

संपहि एदेसिमट्ठण्णमणियोगद्दाराणमत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा— तत्थ वग्गणपरूवणा किमट्ठं कीरदे ? एगपरमाणुवग्गणप्पहुडि एगेगपरमाणुत्तरकमेण जाव महाक्खंधो त्ति ताव सव्ववग्गणाणमेगसेडिपरूवणट्ठं कीरदे । वग्गणदव्वसमुदाहारो किमट्ठमागदो ? पुव्वुत्तवग्गणाणं किं समाणा पोग्गला अण्णे वि अत्थि आहो णत्थि, काओ वग्गणाओ धुवाओ काओ वा अद्धुवाओ, काओ सांतराओ काओ वा णिरंतराओ त्ति इच्चादिवग्गणविसेसं चोद्दसअणियोगद्दारेहि णाणेगसेडिगयं परूवणट्ठमागदो । अणंतरोवणिधा किमट्ठमागदा ? परमाणुदव्ववग्गणाहिंतो दुपदेसिय[1]दव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि[2] किं सरिसा आहो विसरिसा दुपदेसियदव्ववग्गणादो तिपदेसियदव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि [किं] सरिसा आहो विसरिसा एवमणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमवग्गणाहिंतो अणंतरउवरिम[उवरिम]वग्गणाणं दव्वपदेसट्ठपरूवणट्ठमागदा । परंपरोवणिधा किमट्ठमागदा ? परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो

वर्गणाओंका अनुगमन करते समय ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं– वर्गणा, वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, अवहार, यवमध्य, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व ॥ ६९ ॥

अब इन आठ अनुयोगद्वारोंकी अर्थप्ररूपणा करते हैं । यथा—

शंका— यहाँ वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान— एक परमाणुरूप वर्गणासे लेकर एक एक परमाणुकी वृद्धिक्रमसे महास्कन्ध तक सब वर्गणाओंकी एक श्रेणि है, इस बातका कथन करनेके लिए वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा की है ।

शंका— वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान— पूर्वोक्त वर्गणाओंके पुद्गल क्या समान हैं या अन्य प्रकार हैं या अन्य प्रकार नहीं हैं, कौन वर्गणाएं ध्रुव हैं, कौन वर्गणाएं अध्रुव हैं, कौन वर्गणाएं सान्तर हैं और कौन वर्गणाएं निरन्तर हैं; इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा नानाश्रेणिगत और एकश्रेणिगत वर्गणाविशेषका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका— अनन्तरोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान— परमाणुद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे त्रिप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, इस प्रकार अनन्तर पूर्व पूर्व वर्गणासे अनन्तर उपरिम उपरिम वर्गणाकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका—परम्परोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

---

१. ताप्रतौ 'दुपदेहि (सि) य'-आ. प्रतौ 'दुपदेहिय-' इति पाठः । २. अ. प्रतौ 'दव्वपदेसट्ठदाहि' इति पाठः ।

केद्दूरं गंतूण दुगुणा वा दुगुणहीणा वा होंति त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण होंति त्ति जाणावणट्ठमागदा। अवहारो किमट्ठमागदो? एक्केक्का वग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्ठमागदो। जवमज्झपरूवणा किमट्ठमागदा? विसेसाहियकमेण[1] गच्छमाणाणं वग्गणाणं कम्हि उद्देसे पदेसं पडुच्च जवमज्झं होदि किं वा ण होदि त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण जवमज्झं होदि त्ति जाणावणट्ठमागदा। पदमीमांसा किमट्ठमागदा? सव्ववग्गणाणमुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णाजहण्णादिपदाणं गवेसणट्ठमागदा। अप्पाबहुगपरूवणा किमट्ठमागदा? तेवीसवग्गणदव्वपदेसट्ठदाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमागदो।

वग्गणा त्ति तत्थ इमाणि वग्गणाए सोलस अणिओगद्दाराणि[2]— वग्गणणिक्खेवे वग्गणणयविभासणदाए वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा, वग्गणधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गणओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणु-

समाधान—परमाणुरूप पुद्गलद्रव्यवर्गणासे कितनी दूर जानेपर दूना होता है या द्विगुणाहीन होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान जाकर दूना या आधा होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका—अवहारअनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान—एक एक वर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सब वर्गणाओंका कितनेवाँ भाग है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका—यवमध्यप्ररूपणा किसलिए आई है?

समाधान—विशेषाधिकक्रमसे जाती हुई वर्गणाओंका किस स्थानपर प्रदेशोंकी अपेक्षा यवमध्य होता है अथवा नहीं होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान पर जाकर यवमध्य होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका—पदमीमांसा अनुयोद्वार किसलिए आया है?

समाधान—सब वर्गणाओंके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य आदि पदोंकी गवेषणा करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका—अल्पबहुत्वप्ररूपणा किसलिए आई है?

समाधान—तेईस वर्गणाओंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए यह प्ररूपणा आई है।

वर्गणाका प्रकरण है। उसके विषयमें ये सोलह अनुयोगद्वार होते हैं— वर्गणानिक्षेप, वर्गणनयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम,

१. ता. प्रतौ-'हिया (य) कमेण, अ. आ. प्रत्योः '-हियाकमेण' इति पाठः। २. अ. प्रतौ 'सोलसमणिओगद्दाराणि' इति पाठः।

गमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ॥ ७० ॥

संपहि वग्गणा दुविहा—अब्भंतरवग्गणा बाहिरवग्गणा चेदि । जा सा बाहिरवग्गणा सा पंचण्हं सरीराणं चदुहि अणियोगद्दारेहि उवरि भण्णिहिदि[1] । जा सा अब्भंतरवग्गणा सा दुविहा एगसेडि-णाणासेडिभेएण । तत्थ एगसेडिवग्गणाए इमाणि सोलस अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति । संपहि एदेहि सोलसअणियोगद्दारेहि जहाकमेण वग्गणाणमणुगमं[2] कस्सामो—

वग्गणणिक्खेवे त्ति छव्विहे वग्गणणिक्खेवे— णामवग्गणा ट्ठवणवग्गणा दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा भाववग्गणा चेदि ॥७१॥

निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः । सो किमट्ठं कीरदे ? प्रकृत[3]प्ररूपणार्थम् । उक्तञ्च—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।
संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १ ॥

छच्चेव णिक्खेवा एत्थ किमट्ठं कदा ? ण एस दोसो, छच्चेवे त्ति णियमाभावादो ।

वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७० ॥

वर्गणा दो प्रकारकी है— आभ्यन्तरवर्गणा और बाह्यवर्गणा । जो बाह्यवर्गणा है वह पाँच शरीरों सम्बन्धी चार अनुयोगद्वारोंके द्वारा आगे कहेंगे । जो आभ्यन्तरवर्गणा है वह एकश्रेणि और नानाश्रेणिके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं । अब इन सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यथाक्रमसे वर्गणाओंका विचार करेंगे ।

वर्गणानिक्षेपका प्रकरण है । वर्गणानिक्षेप छह प्रकारका है—नामवर्गणा, स्थापनावर्गणा, द्रव्यवर्गणा, क्षेत्रवर्गणा, कालवर्गणा और भाववर्गणा ॥ ७१ ॥

जो निश्चयमें रखता है वह निक्षेप है ।

शंका— वह निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान— प्रकृतका निरूपण करनेके लिये । कहा भी है— अप्रकृत अर्थका निराकरण करनेके लिये, प्रकृत अर्थका कथन करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

शंका— यहाँ छह ही निक्षेप किसलिये किये गये हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि निक्षेप छह ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है ।

---

१. आ. प्रतौ 'भणिहिदि' इति पाठः । २. अ. आ. प्रत्योः '-मणुगमणं' इति पाठः । ३. ता. अ. आ. प्रतिषु 'प्रकृति-' इति पाठः ।

वग्गणासद्दो णामवग्गणा। सो एसो त्ति बुद्धीए वग्गणासरूवेण संकप्पिदत्थो ट्ठवणवग्गणा। दव्ववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमदव्ववग्गणभेएण। वग्गणपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववग्गणा णाम। णोआगमदव्ववग्गणा तिविहा जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-णोआगमदव्ववग्गणभेएण। जाणुगसरीर-भवियदव्ववग्गणाओ सुगमाओ। तव्वदिरित्त-दव्ववग्गणा दुविहा— कम्मवग्गणा णोकम्मवग्गणा चेदि। तत्थ कम्मवग्गणा णाम अट्ठकम्मक्खंधवियप्पा। सेसएक्कोणवीसवग्गणाओ णोकम्मवग्गणाओ। एगागासोगाहण-प्पहुडि पदेसुत्तरादिकमेण जाव देसूणघणलोगे त्ति ताव एदाओ खेत्तवग्गणाओ। कम्मदव्वं पडुच्च समयाहियावलियप्पहुडि जाव कम्मट्ठिदि[1] त्ति णोकम्मदव्वं पडुच्च एगसमयादि जाव असंखेज्जा लोगा त्ति ताव एदाओ कालवग्गणाओ। भाववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमभाववग्गणाभेएण। वग्गणपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभाव-वग्गणा। ओदइयादिपंचण्णं भावाणं जे भेदा ते णोआगमभाववग्गणा। एवं वग्गण-णिक्खेवे त्ति समत्तमणियोगद्दारं[2]।

वग्गणणयविभासणदाए को णओ काओ वग्गणाओ इच्छदि। णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ ॥ ७२ ॥

कुदो? दव्वट्ठियाणं तिण्णमेदेसिं णयाणं विसए छण्णं णिक्खेवाणमत्थित्तं पडि

वर्गणाशब्द नामवर्गणा है। 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धि द्वारा वर्गणारूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनावर्गणा है। द्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है— आगमद्रव्यवर्गणा और नोआगद्रव्यवर्गणा। वर्गणा-प्राभृतको जाननेवाला किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यवर्गणा है। नोआगम-द्रव्यवर्गणा तीन प्रकारकी है— ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यवर्गणा, भाविनोआगमद्रव्यवर्गणा और तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा। ज्ञायकशरीर और भाविनोआगमद्रव्यवर्गणायें सुगम हैं। तद्व्यति-रिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है—कर्मवर्गणा और नोकर्मवर्गणा। उनमेंसे आठ प्रकारके कर्म-स्कन्धोंके भेद कर्मवर्गणा है, तथा शेष उन्नीस प्रकारकी वर्गणायें नोकर्मवर्गणायें हैं। एक आकाश-प्रदेशप्रमाण अवगाहनासे लेकर प्रदेशोत्तर आदिके क्रमसे कुछ कम घनलोक तक ये सब क्षेत्रवर्गणायें हैं। कर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समय अधिक एक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट कर्मस्थिति तक और नोकर्म-द्रव्यकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोकप्रमाण काल तक ये सब कालवर्गणायें हैं। भाव-वर्गणा दो प्रकारकी है— आगमभाववर्गणा और नोआगमभाववर्गणा। वर्गणाप्राभृतको जानने-वाला और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीव आगमभाववर्गणा है। औदयिक आदि पाँच भावोंके जो भेद हैं वे सब नोआगमभाववर्गणा हैं। इस प्रकार वर्गणानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

वर्गणानयविभाषणताका प्रकरण है—कौन नय किन वर्गणाओंको स्वीकार करता है? नैगम, व्यवहार और संग्रहनय सब वर्गणाओंको स्वीकार करते हैं ॥ ७२ ॥

क्योंकि इन तीनों द्रव्यार्थिक नयोंके छहों निक्षेप विषय है इस बातके स्वीकार करनेमें कोई

---

१. ता. प्रतौ '-प्पहुडि कम्मट्ठिदि' इति पाठः। २. ता. प्रतौ '-द्दारं (१)।' इति पाठः।

विरोहाभावादो ।

उजुसुदो ट्ठवणवग्गणं णेच्छदि ॥ ७३ ॥

अण्णदव्वस्स संकप्पवसेण अण्णदव्वसरूवावत्तिविरोहादो ।

सद्दणओ णामवग्गणं भाववग्गणं च इच्छदि ॥ ७४ ॥

एदस्स णयस्स विसए अण्णेसिं णिक्खेवाणमभावादो । एत्थ केण णिक्खेवेण पयदं ? णोआगमपोग्गलदव्वणिक्खेवेण पयदं, जीव-धम्माधम्म-कालागासदव्व[1]वग्गणाहि एत्थ पओजणाभावादो ।

वग्गणदव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अणियोगद्दाराणि— वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा वग्गणधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतर-णिरंतराणुगमो वग्गणओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गण-फोसणाणुगमो वग्गणकालाणुगमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणु-गमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागा-भागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ॥ ७५ ॥

वग्गणपरूवणं सोलसेहि अणियोगद्दारेहि कहामो त्ति पइज्जं काऊण पुणो तत्थ

विरोध नहीं आता ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनावर्गणाको नहीं स्वीकार करता ॥ ७३ ॥

क्योंकि संकल्पवश अन्य द्रव्यका अन्य द्रव्यरूपसे परिवर्तन होनेमें विरोध आता है ।

शब्दनय नामवर्गणा और भाववर्गणाको स्वीकार करता है ॥ ७४ ॥

क्योंकि इस नयके विषय अन्य निक्षेप नहीं है ।

शंका— यहाँ किस निक्षेपका प्रकरण है ?

समाधान— नोआगमपुद्गलद्रव्यनिक्षेपका प्रकरण है; क्योंकि यहाँपर जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यवर्गणाओंसे प्रयोजन नहीं है ।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका प्रकरण है । उसमें ये चौदह अनुयोगद्वार होते हैं—वर्गणा-प्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तर-निरन्तरानुगम, वर्गणा-ओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणा-अन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणा-भागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७५ ॥

शंका—वर्गणाप्ररूपणा सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करके फिर वहाँ

---

१. अ. प्रतौ '-कालागमदव्व-' इति पाठ. ।

आइल्लाणं दोण्णं चेव अणिओगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसतत्थतणचोद्दसेहि अणिओगद्दारेहि वग्गणपरूवणमकाऊण वग्गणदव्वसमुदाहारो किमिदि[1] वोत्तुमारद्धो ? ण, वग्गणपरूवणा वग्गणाणमेगसेडिं भणदि । वग्गणदव्वसमुदाहारो पुण वग्गणाणं णाणेगसेडीयो भणदि, तेण वग्गणदव्वसमुदाहारपरूवणा वग्गणपरूवणाविणाभाविणि त्ति कट्टु वग्गणदव्वसमुदाहारो वोत्तुमाढत्तो;[2] अण्णहा गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७६ ॥

एत्थ ताव एगसेढिमस्सिदूण वग्गणपरूवणं कस्सामो– एगपदेसियपोग्गलदव्ववग्गणा परमाणुसरूवा; अण्णहा एगपदेसिय त्ति विसेसणाणुववत्तीए । परमाणू च अपच्चक्खो; 'णेव इंदिए गेज्झं'[3] इदि वयणादो । तदो तत्थ इमा इदि पच्चक्खणिद्देसो ण घडदे ? ण, आगमपमाणेण सिद्धपरमाणुविसयबोहे पच्चक्खे संते पच्चक्खणिद्देसोववत्तीए । परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो, एत्थ पुण परमाणू एयपदेसो त्ति भणिदो, कधमेदेसिं सुत्ताणं ण विरोहो ? ण एस दोसो; एगपदेसं मोत्तूण विदियादिपदेसाणं तत्थ पडिसेहकरणादो । न विद्यन्ते द्वितीयादयः प्रदेशाः यस्मिन् सोऽप्रदेशः परमाणु-

प्रारम्भके दो ही अनुयोगद्वारोंका कथन करके और शेष चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा वर्गणाका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन किसलिए किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है, किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी नाना और एक श्रेणियोंका कथन करता है, इसलिए वर्गणाद्रव्यसमुदाहारप्ररूपणा वर्गणाप्ररूपणाकी अविनाभाविनी है ऐसा समझ कर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन आरम्भ किया है । अन्यथा ग्रन्थके बहुत बढ़ जानेका भय था जिससे पुनरुक्त दोपका प्रसंग आता ।

वर्गणाकी प्ररूपणा करनेपर यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥७६॥

यहाँ सर्व प्रथम एक श्रेणिका अवलम्बन लेकर वर्गणाका कथन करते हैं— एकप्रदेशी पुद्गलद्रव्यवर्गणा परमाणुस्वरूप होती है; अन्यथा 'एकप्रदेशी' यह विशेषण नहीं बन सकता ।

शंका— परमाणु अप्रत्यक्ष होता है; क्योंकि 'उसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होता' ऐसा सूत्रवचन है । इसलिये उसके लिये सूत्रमें 'इमा' ऐसा प्रत्यक्षनिर्देश नहीं बन सकता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि आगमप्रमाणसे सिद्ध परमाणुविषयक ज्ञानके प्रत्यक्षरूप होनेपर 'इमा' इस प्रकार प्रत्यक्षनिर्देश बन जाता है ।

शंका— परिकर्ममें परमाणुको अप्रदेशी कहा है परन्तु यहाँपर उसे एकप्रदेशी कहा है, इसलिये इन दोनों सूत्रोंमें विरोध कैसे नहीं होगा ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि परमाणुके एकप्रदेशको छोड़कर द्वितीयादि प्रदेश नहीं होते इस बातका परिकर्ममें निषेध किया है । जिसमें द्वितीयादि प्रदेश नहीं हैं वह

१. ता. आ. प्रत्योः '-हारो त्ति किमिदि' इति पाठः । २. अ. प्रतौ '-माढत्तो' आ. प्रतौ '-माढत्तादो' इति पाठः । ३. ता. प्रतौ 'इंदियगेज्झं' इति पाठः ।

रिति । अन्यथा खरविषाणवत् परमाणोरसत्त्वप्रसङ्गात् । कधं परमाणुस्स पोग्गलत्तं ? अण्णेहि मेलणसत्तिसंभवादो । परमाणूणं परमाणुभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो दव्वभावो ण जुज्जदे ? ण, पोग्गलभावेण उप्पाद-विणासवज्जिएण परमाणूणं पि दव्वत्तसिद्धीदो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७७ ॥

दोण्णं परमाणूणं अजहण्णणिद्ध-लहुक्खगुणाणं समुदयसमागमेण दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि । परमाणूणं समागमो किमेगदेसेण होदि आहो सव्वप्पणा । ण ताव सव्वप्पणा; अणंताणं पि परमाणूणं समागमेण परमाणुमेत्तपरिमाणप्पसंगादो[1] । ण च एवं; सेसासेसवग्गणाणमभावप्पसंगा । ण एगदेसेण समागमो वि; परमाणुस्स सावयवत्तप्पसंगादो । ण तं पि; अणवत्थापसंगादो । णाणवत्था वि; सयलथूलकज्जाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो । ण च एगपदेसाणं दोण्हं परमाणूणं सव्वप्पणा समागमं मोत्तूण एगदेसेण समागमो अत्थि; विदियादिपदेसाभावादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे– दव्वट्ठिय-

अप्रदेश परमाणु है यह उसकी व्युत्पत्ति है । यदि 'अप्रदेश' पदका यह अर्थ न किया जाय तो जिस प्रकार गधेके सींगोंका असत्त्व है उसी प्रकार परमाणुके भी असत्त्वका प्रसंग आता है ।

शंका—परमाणु पुद्गलरूप है यह बात कैसे सिद्ध होती है ?

समाधान—उसमें अन्य पुद्गलोंके साथ मिलनेकी शक्ति सम्भव है, इससे सिद्ध होता है कि परमाणु पुद्गलरूप है ।

शंका—परमाणु सदा काल परमाणुरूपसे अवस्थित नहीं रहते इसलिये उनमें द्रव्यपना नहीं बनता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि परमाणुओंका पुद्गलरूपसे उत्पाद और विनाश नहीं होता इसलिये उनमें भी द्रव्यपना सिद्ध होता है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥ ७७ ॥

अजघन्य स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओंके समुदायसमागमसे द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका—परमाणुओंका समागम क्या एकदेशेन होता है या सर्वात्मना होता है । सर्वात्मना तो हो नहीं सकता है, क्योंकि ऐसा होनेपर अनन्त परमाणुओंका भी यदि समागम हो जाय तो भी परमाणुमात्र परिमाण प्राप्त होता है । पर ऐसा है नहीं, क्योंकि ऐसा होनेपर परमाणुवर्गणाके सिवा शेष सब वर्गणाओंका अभाव प्राप्त होता है । एकदेशेन समागम भी नहीं बनता, क्योंकि ऐसा होनेपर परमाणु सावयव प्राप्त होता है । यदि परमाणुको सावयव माना जाता है तो अनवस्था दोष आता है । अनवस्था रही आवे यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेपर सब स्थूल कार्योंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है । और एकप्रदेशी दो परमाणुओंके सर्वात्मना समागमको छोड़कर एकदेशेन समागम बन नहीं सकता, क्योंकि परमाणुके द्वितीयादि प्रदेश नहीं पाये जाते ?

---

१. अ. प्रतौ 'परिमाणत्तप्पसंगादो' इति पाठः ।

णए अवलंबिज्जमाणे दोण्णं परमाणूणं सिया सव्वप्पणा समागमो; णिरवयवत्तादो। जे जस्स कज्जस्स आरंभया परमाणू ते तस्स अवयवा होंति। तदारद्धकज्जं पि अवयवी होदि। ण च परमाणू अण्णेहिंतो णिप्पज्जदि, तस्स आरंभयाणमण्णेसिमभावादो। भावे वा ण एसो परमाणू; एत्तो सुहुमाणमण्णेसिं संभवादो। ण च एगसंखंकियम्मि परमाणुम्मि बिदियादिसंखा अत्थि; एक्कस्स दुब्भावविरोहादो। किं च जदि परमाणुस्स अवयवो अत्थि तो परमाणुणा अवयविणा होदव्वं। ण च एवं; अवयवविभागेण अवयवसंजोगस्स विणासे संते परमाणुस्स अभावप्पसंगादो। ण च एवं; कारणाभावेण सयलथूलकज्जाणं पि अभावप्पसंगादो। ण च कप्पियसरूवा अवयवा होंति; अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा परमाणुणा णिरवयवेण होदव्वं। तदो सिद्धो सव्वप्पणा परमाणूणं सिया समागमो। ण च णिरवयवपरमाणूहिंतो थूलकज्जस्स अणुप्पत्ती; णिरवयवाणं पि परमाणूणं सव्वप्पणा समागमेण थूलकज्जुप्पत्तीए विरोहासिद्धीदो। पज्जवट्ठियणए[1] अवलंबिज्जमाणे सिया एगदेसेण समागमो। ण च परमाणूणमवयवा णत्थि; उवरिमहेट्ठिम-मज्झिमोवरिमोवरिमभागाणमभावे परमाणुस्स वि अभावप्पसंगादो। ण च एदे भागा

समाधान—यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर दो परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है, क्योंकि परमाणु निरवयव होता है। जो परमाणु जिस कार्यके आरम्भक होते हैं वे उसके अवयव होते हैं और उनके द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अवयवी होता है। परमाणु अन्यसे उत्पन्न होता है यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ नहीं पाये जाते। और यदि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ होते हैं ऐसा माना जाता है तो यह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि इस तरह इससे भी सूक्ष्म अन्य पदार्थोंका सद्भाव सिद्ध होता है। एक संख्यावाले परमाणुमें द्वितीयादि संख्या होती है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि एकको दोरूप माननेमें विरोध आता है। दूसरी बात—यदि परमाणुके अवयव होते हैं ऐसा माना जाय तो परमाणुको अवयवी होना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि अवयवके विभागद्वारा अवयवोंके संयोगका विनाश होनेपर परमाणुका अभाव प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि कारणका अभाव होनेसे सब स्थूल कार्योंका भी अभाव प्राप्त होता है। परमाणुके कल्पितरूप अवयव होते हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि इस तरह माननेपर अव्यवस्था प्राप्त होती है। इसलिये परमाणुको निरवयव होना चाहिये। अतः सिद्ध होता है कि परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है। निरवयव परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति नहीं बनेगी यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि निरवयव परमाणुओंके सर्वात्मना समागमसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर कथंचित् एकदेशेन समागम होता है। परमाणुके अवयव नहीं होते यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि यदि उसके उपरिम, अधस्तन, मध्यम और उपरिमोपरिम भाग न हों तो परमाणुका ही अभाव प्राप्त होता है। ये भाग कल्पितरूप होते हैं यह

१. अ. प्रतौ 'ट्ठियाणए' इति पाठः।

संकप्पियसरूवा; उड्ढाधोमज्झिमभागाणं उवरिमो[1]वरिमभागाणं च कप्पणाए विणा उव-लंभादो। ण च अवयवाणं सव्वत्थ विभागेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, सयलवत्थूणम-भावप्पसंगादो। ण च भिण्णपमाणगेज्झाणं भिण्णदिसाणं च एयत्तमत्थि, विरोहादो। ण च अवयवेहि परमाणू णारद्धो, अवयवसमूहस्सेव परमाणुत्तदंसणादो। ण च अवयवाणं संजोगविणासेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, अणादिसंजोगे तदभावादो। तदो सिद्धा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा। एसा परूवणा उवरि सव्वत्थ[2] परूवेदव्वा।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-परित्तपदेसिय-अपरित्तपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७८ ॥

पुव्वपरूविदएयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा[3] एयवियप्पा। दुपदेसियपर-

कहना ठीक नहीं है, क्योंकि परमाणुमें ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यमभाग तथा उपरिमोपरिम-भाग कल्पनाके बिना भी उपलब्ध होते हैं। तथा परमाणुके अवयव हैं इसलिये उनका सर्वत्र विभाग ही होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि इस तरह माननेपर तो सब वस्तुओंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है। जिनका भिन्न भिन्न प्रमाणोंसे ग्रहण होता है और जो भिन्न भिन्न दिशावाले हैं वे एक हैं यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि ऐसा माननेपर विरोध आता है। अवयवोंसे परमाणु नहीं बना है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि अवयवोंके समूहरूप ही परमाणु दिखाई देता है। तथा अवयवोंके संयोगका विनाश होना चाहिये यह भी कोई नियम नहीं है, क्योंकि अनादि संयोगके होनेपर उसका विनाश नहीं होता। इसलिये द्विप्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणा सिद्ध होती है। यह प्ररूपणा आगे सर्वत्र करनी चाहिये।

विशेषार्थ—यहाँ प्रसंगसे परमाणु सावयव है कि निरवयव इस बातका विचार किया गया है। परमाणु एक और अखण्ड है, इसलिये तो वह निरवयव माना गया है और उसमें ऊर्ध्वादि भाग होते हैं इसलिये वह सावयव माना गया है। द्रव्यार्थिकनय अखण्ड द्रव्यको स्वीकार करता है और पर्यायार्थिकनय उसके भेदोंको स्वीकार करता है। यही कारण है कि द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा परमाणुको निरवयव कहा है और पर्यायार्थिकनयकी अपेक्षा सावयव कहा है। परमाणुका यह विश्लेषण केवल बुद्धिका व्यायाम नहीं है, किन्तु वास्तविक है ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीतप्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७८ ॥

पहले कही गई एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक प्रकारकी होती है। तथा द्विप्रदेशी

१. अ.आ. प्रत्योः '-परिमो' इति पाठः। २. ता. प्रतौ 'उवरिमसव्वत्थ' इति पाठः।
३. ता. प्रतौ '-वग्गणा [ए]' इति पाठः।

माणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव उक्कस्ससंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति ताव एसा संखेज्जपदेसियवग्गणा णाम रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तवियप्पा। एवमेदाओ दोण्णि वग्गणाओ २। उक्कस्ससंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा होदि। पुणो रूवुत्तरकमेण असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा ताव गच्छंति जाव उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति। उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जादो उक्कस्ससंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ चेव असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ। एदाओ संखेज्जपदेसियवग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। एदाओ सव्वाओ वि तदिया असंखेज्जपदेसियवग्गणा होदि ३।

परित्त-अपरित्तवग्गणाओ सुत्तुद्दिट्ठाओ अणंतपदेसियवग्गणासु चेव णिवदंति, अणंत-अणंताणंतेहिंतो वदिरित्तपरित्त-अपरित्ताणमभावादो। तेण [1]तव्विसेसणभावेण परित्तापरित्तणिद्देसो परूवेयव्वो।

उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणमद्धाणं गच्छदि। सगजहण्णादो अणंतपदेसियउक्कस्सवग्गणाणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिम-

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तक यह सब संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा है। इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातभेद होते हैं। इस प्रकार ये दो वर्गणायें हुई। २। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः उत्तरोत्तर एक एकके मिलाने पर असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती है और ये सब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक होती है। उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातमेंसे उत्कृष्ट संख्यातके न्यून करने पर जो शेष रहे उसमें एक मिलाने पर जितना प्रमाण हो उतनी ही असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती है। ये संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंसे असंख्यातगुणी होती है। गुणकार क्या है? असंख्यातलोक गुणकार है। ये सब ही तीसरी असंख्यातप्रदेशी वर्गणा है। ३।

सूत्रमें गही गई परीतवर्गणायें और अपरीतवर्गणायें अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें ही सम्मिलित हैं, क्योंकि अनन्त और अनन्तानन्तसे अतिरिक्त परीत और अपरीत संख्या उपलब्ध नहीं होती। इसलिये अनन्तके विशेषणरूपसे ही परीत और अपरीतके निर्देशका कथन करना चाहिये।

उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य अनन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः क्रमसे एक एककी वृद्धि होते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान आगे जाते हैं। अपने जघन्यसे अनन्तप्रदेशी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी होती है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है।

१. अ. आ. प्रत्योः 'तव्विसेसेण–' इति पाठः।

भाग[1]मेत्तो। परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणसद्दो ति-चदुपदेसियादिसु सव्वत्थ जोजेयव्वो, अंतदीवयत्तादो। एवमेसा अणंतपदेसियदव्ववग्गणा चउत्थी ४। कुदो एदासिमेयत्तं ? अणंतभावेण। एदाओ चत्तारि वि वग्गणाओ अगेज्झाओ।

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरि आहारदव्ववग्गणा णाम ॥ ७९ ॥

उक्कस्सअणंतपदेसियदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया आहारदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण[2]-सिद्धाणमणंतभागमेत्तवियप्पे गंतूण समप्पदि। जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया। विसेसो पुण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो होंतो वि आहारउक्कस्सदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो। कधमेदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्गपोग्गलक्खंधाणं आहारदव्ववग्गणा त्ति सण्णा। एवमेसा पंचमी वग्गणा ५।

आहारदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८० ॥

उक्कस्सआहारदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते पढमअगहणदव्ववग्गणाए

सूत्रमें आया हुआ 'परमाणुपुद्‌गल द्रव्यवर्गणा' शब्द त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदि पदोंमें सर्वत्र जोड़ना चाहिये, क्योंकि वह अन्तदीपक है। इस प्रकार यह अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणा चौथी है। ४। ये सब वर्गणायें एक क्यों है ? क्योंकि ये सब अनन्तरूपसे एक हैं। ये चारों ही वर्गणायें अग्राह्य हैं।

विशेषार्थ—प्रथम परमाणुवर्गणा, दूसरी संख्यातवर्गणा, तीसरी असंख्यातवर्गणा और चौथी अनन्तवर्गणा ये चार प्रकारकी वर्गणायें अग्राह्य हैं। इसका यह आशय है कि जीव द्वारा इनका ग्रहण नहीं होता। शेष कथन सुगम है।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके ऊपर आहारद्रव्यवर्गणा है ॥७९॥

उत्कृष्ट अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य आहार द्रव्यवर्गणा होती है। फिर एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भेदोंके जाने पर अन्तिम आहार द्रव्यवर्गणा होती है। यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। विशेषका प्रमाण अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता हुआ भी उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके योग्य पुद्‌गल स्कन्धोंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। इस प्रकार यह पाँचवीं वर्गणा है। ५।

आहारद्रव्यवर्गणाके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है ॥ ८० ॥

उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर प्रथम अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी

१. अ. आ. प्रत्योः '–मणंतभाग–' इति पाठः। २. अ. प्रतौ '–गुणं' इति पाठः।

सव्वजहण्णवग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया अगहणदव्ववग्गणा होदि। जहण्णादो उक्कस्सिया अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। एवमेसा छट्ठी वग्गणा ६। कधमेदासिं[1] वग्गणाणमेयत्तं ? अगहणभावेण। पंचण्णं सरीराणं भासा-मणाणं च अजोग्गा जे पोग्गलक्खंधा तेसिमगहणवग्गणा त्ति सण्णा।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्वग्गणा णाम ॥ ८१ ॥

उक्कस्सियाए अगहणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया तेजादव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया तेजइयसरीरदव्ववग्गणा होदि। जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। एसा सत्तमी वग्गणा ७। एदिस्से पोग्गलक्खंधा तेजइयसरीरपाओग्गा[2] तेणेसा गहणवग्गणा।

तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८२ ॥

तेजइयसरीरउक्कस्सदव्व[3]वग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते विदियअगहणदव्ववग्गणाए पढमिल्लिया सव्वजहण्णअगहणदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण विदियअगहणदव्ववग्गणाए

सर्वजघन्य वर्गणा होती है। फिर एक एक बढ़ाते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणा होती है। यह जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। इस प्रकार यह छठी वर्गणा है। ६।

शंका—इन वर्गणाओंमें एकत्व कैसे है ?

समाधान—अग्रहणपनेकी अपेक्षा इनमें एकत्व है।

पाँच शरीर तथा भाषा और मनके अयोग्य जो पुद्गलस्कन्ध हैं उनकी अग्रहणवर्गणा संज्ञा है।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाके ऊपर तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ८१ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सबसे जघन्य तैजसशरीर द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा होती है। यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। विशेषका प्रमाण क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। यह सातवीं वर्गणा है। ७। इसके पुद्गलस्कन्ध तैजसशरीरके योग्य होते हैं, इसलिये यह ग्रहणवर्गणा है।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८२ ॥

उत्कृष्ट तैजसशरीर द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी पहली सर्वजघन्य अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है। फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे

१. ता. अ. आ. प्रतिषु '–मेदेसिं' इति पाठः। २. अ. आ. प्रत्योः '–सरीरापाओग्गा' इति पाठः। ३. ता. प्रतौ '–सरीरदव्व–' इति पाठः।

उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णादो सगउक्कस्सवग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा अट्ठमी वग्गणा ८ । पंचण्णं सरीराणं गहण[1]पाओग्गा ण होदि त्ति अगहणवग्गणमणिदा । जहण्णादो उक्कस्सवग्गणा अणंतगुणे त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम ॥ ८३ ॥

अगहणउक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया भासादव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण[2]-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण भासादव्ववग्गणाए[3] उक्कस्सिया दव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगजहण्णवग्गणाए अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा णवमी वग्गणा ९ । भासादव्ववग्गणाए परमाणुपोग्गलक्खंधा चदुण्णं भासाणं पाओग्गा । पटह[4]-भेरी-काहलब्भगज्जणादिसद्दाणं पि एसा चेव वग्गणा पाओग्गा । कधं काहलादिसद्दाणं भासाववएसो ?

अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह आठवीं वर्गणा है । ८ । यह पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं है इसलिये इसकी अग्रहण द्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

शंका—जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषा द्रव्यवर्गणा है ॥ ८३ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा होती है । इससे आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर भाषा द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? अपनी जघन्य वर्गणाका अनन्तवाँ भाग विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवाँ भाग प्रतिभाग है । यह नौवीं वर्गणा है । ९ । भाषा द्रव्यवर्गणाके परमाणुपुद्गलस्कन्ध चारों भाषाओंके योग्य होते हैं तथा ढोल, भेरी, नगारा और मेघका गर्जन आदि शब्दोंके भी योग्य ये ही वर्गणायें होती है ।

शंका—नगारा आदिके शब्दोंकी भाषा संज्ञा कैसे है ?

१. ता. प्रतौ '[अ] गहण-' अ. आ. प्रत्योः 'अगहण-' इति पाठः । २. ता. अ. आ. प्रतिषु '-गुणो' इति पाठः । ३. ता. प्रतौ '-वग्गणा [ए-] इति पाठः । ४. अ. प्रतौ 'पाओग्गपटह-' इति पाठः ।

ण, भासो व्व भासे त्ति उवयारेण काहलादिसद्दाणं पि तव्ववएससिद्धीदो ।

भासादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८४ ॥

उक्कस्सभासादव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियअगहणदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाण-मणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सग-जहण्णादो उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणम-णंतभागो । एसा दसमी वग्गणा १० । एदिस्से वि पोग्गलक्खंधा गहणपाओग्गा ण होंति । कुदो ? अण्णहा अगहणसण्णाणुववत्तीदो ।

अगहणदव्ववग्गणाए उवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८५ ॥

तदियागहणदव्वउक्कस्सवग्गणाए[1] उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया मणदव्व-वग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया मणदव्ववग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्सवग्गणा विसेसा-हिया । विसेसो पुण सव्वजहण्णमणदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो । तस्स को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एसा एक्कारसमो वग्गणा ११ । एदीए वग्गणाए दव्वमणणिव्वत्तणं[2] कीरदे ।

समाधान—नहीं, क्योंकि भाषाके समान होनेसे भाषा है इस प्रकारके उपचारसे नगारा आदिके शब्दोंकी भी भाषा संज्ञा है ।

भाषा द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८४ ॥

उत्कृष्ट भाषा द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है । इसके आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह दसवीं वर्गणा है । १० । इसके भी पुद्गल-स्कन्ध ग्रहणयोग्य नहीं होते हैं, क्योंकि ऐसा नहीं मानने पर इसकी अग्रहण संज्ञा नहीं बन सकती है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा है ॥ ८५ ॥

तीसरी उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्य वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य मनोद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है । तथा विशेषका प्रमाण सबसे जघन्य मनोद्रव्यवर्गणाका अनन्तवाँ भाग है । इसका प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रतिभाग है । यह ग्यारहवीं वर्गणा है । ११ । इस वर्गणासे द्रव्यमनकी रचना करते हैं ।

१. ता. प्रतौ '-दव्ववग्गणाए' इति पाठ । २. अ. प्रतौ '-मणोणिव्वत्तणं' आ. प्रतौ '-मणोणिव्वत्तं णं' इति पाठः ।

मणदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥८६॥

संपहि उक्कस्समणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थीए अगहणदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि । तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण चउत्थअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एसा बारसमी वग्गणा १२ गहणपाओग्गा ण होदि, अप्पाहियपरिमाणत्तादो ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥८७॥

चउत्थीए अगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया कम्मइयसरीरदव्ववग्गणा होदि । तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण कम्मइयदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? जहण्णकम्मइयवग्गणाए अणंतिमभागो । तस्स को पडिभागो । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एसा तेरसमी वग्गणा १३ । एदिस्से वग्गणाए पोग्गलक्खंधा अट्ठकम्मपाओग्गा ।

कम्मइयदव्ववग्गणाणमुवरि [1]धुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम ॥८८॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८६ ॥

उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर चौथी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है । इससे आगे एक एक प्रदेशके अधिक क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह बारहवीं वर्गणा है । १२ । यह ग्रहण योग्य नहीं होती है, क्योंकि यह न्यूनाधिक परिमाणवाली है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८७ ॥

चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणा होती है । आगे एक एक प्रदेश अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर कार्मण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? जघन्य कार्मणवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है । इसका प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण इसका प्रतिभाग है । यह तेरहवीं वर्गणा है । १३ । इस वर्गणाके पुद्गलस्कन्ध आठ कर्मोंके योग्य होते हैं ।

कार्मण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा है ॥ ८८ ॥

---

१. अ. आ. प्रत्योः '–क्खंधादव्व–' इति पाठः ।

एसो धुवक्खंधणिद्देसो अंतदीवओ। तेण हेट्ठिमसव्ववग्गणाओ धुवाओ चेव अंतरविरहिदाओ त्ति घेत्तव्वं। एत्तो प्पहुडि उवरि भण्णमाणसव्ववग्गणासु अगहणभावो णिरंतरमणुवट्टावेदव्वो। संपहि कम्मइयउक्कस्सवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया धुवक्खंधदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण धुवक्खंधदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसा चोद्दसमी वग्गणा १४। आहार-तेजा[1]-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ चेव एत्थ परूवेदव्वाओ, बंधणिज्जत्तादो, ण सेसाओ, तासिं बंधणिज्जत्ताभावादो? ण, सेसवग्गणपरूवणाए विणा बंधणिज्जवग्गणाणं[2] परूवणोवायाभावादो वदिरेगावगमणेण विणा णिच्छिदण्णयपच्चयउत्तीए अभावादो वा।

धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम ॥ ८९ ॥

अंतरेण सह णिरंतरं गच्छदि त्ति सांतरणिरंतरदव्ववग्गणासण्णा एदिस्से अत्थाणुगया। संपहि उक्कस्सधुवक्खंधवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सवग्गणा

यह ध्रुवस्कन्ध पदका निर्देश अन्तदीपक है। इसमें पिछली सब वर्गणायें ध्रुव ही हैं अर्थात् अन्तरसे रहित हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। यहाँसे लेकर आगे कही जानेवाली सब वर्गणाओं-में अग्रहणपनेकी निरन्तर अनुवृत्ति करनी चाहिए।

उत्कृष्ट कार्मण वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है। अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपने जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यह चौदहवीं वर्गणा है। १४।

शंका—यहाँ पर आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ही कहनी चाहिये, क्योंकि वे बन्धनीय हैं। शेष वर्गणायें नहीं कहनी चाहिये, क्योंकि वे बन्धनीय नहीं हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि शेष वर्गणाओंका कथन किये बिना बन्धनीय वर्गणाओंके कथन करनेका कोई मार्ग नहीं है। अथवा व्यतिरेकका ज्ञान हुये बिना निश्चित अन्वयके ज्ञानमें वृत्ति नहीं हो सकती, इसलिये यहाँ बन्धनीय व अबन्धनीय सब वर्गणाओंका निर्देश किया है।

ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणा है ॥ ८९ ॥

जो वर्गणा अन्तरके साथ निरन्तर जाती है उसकी सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है। यह सार्थक संज्ञा है। उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा होती है। आगे एक एक अंकके अधिक क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे

१. ता. आ. प्रत्योः 'तेज-' इति पाठः। २ प्रतिषु 'वि एगबंधणिज्जवग्गणाणं' इति पाठः।

अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसा पण्णारसमी वग्गणा १५ । एसा वि अगहणवग्गणा चेव, आहार-तेजा-भासा-मण-कम्माणमजोगत्तादो ।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णवग्गणा णाम ॥९०॥

अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एदेण सरूवेण परमाणुपोग्गलसंचयाभावादो धुवसुण्ण-दव्ववग्गणा त्ति अत्थाणुगया सण्णा । संपहि उक्कस्ससांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उवरि परमाणुत्तरो परमाणुपोग्गलक्खंधो तिसु वि कालेसु णत्थि । दुपदेसुत्तरो वि णत्थि । एवं तिपदेसुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण पढमधुवसुण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगु स्सिया वग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसा सोलसमी वग्गणा १६ सव्वकालं सुण्णभावेण[1] अवट्ठिदा ।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम ॥९१॥

एक्कस्स जीवस्स एक्कम्हि देहे उवचिदकम्मणोकम्मक्खंधो पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम । संपहि उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा होदि । एसा जहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा कस्स होदि ? जो जीवो सुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ऊणियं कम्मट्ठिदिं

अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यह पन्द्रहवीं वर्गणा है। १५। यह भी अग्रहणवर्गणा ही है; क्योंकि यह आहार, तैजस, भाषा, मन और कर्मके अयोग्य है।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यवर्गणा है ॥ ९० ॥

अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें इस रूपसे परमाणु पुद्गलोंका संचय नहीं होता, इसलिये इसकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा यह सार्थक संज्ञा है। उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणाके ऊपर एक परमाणु अधिक परमाणुपुद्गलस्कन्ध तीनों ही कालोंमें नहीं होता, दो प्रदेश अधिक भी नहीं होता, इस प्रकार तीन प्रदेश अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यह सोलहवीं वर्गणा है ॥ १६ ॥ जो सर्वदा शून्यरूपसे अवस्थित है।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ९१ ॥

एक एक जीवके एक एक शरीरमें उपचित हुए कर्म और नोकर्मस्कन्धोंकी प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है। अब उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है।

शंका—यह जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवार्गणा किसके होती है ?

सामाधान—जो जीव सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें पल्यका असंख्यातवाँ भाग कम कर्मस्थिति

1. अ. आ. प्रत्योः '-कालसुण्णभावेण' इति पाठः ।

खविद[1]कम्मंसियलक्खणेण अच्छिदो। पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि तत्तो विसेसाहियाणि सम्मत्त-अणंताणुबंधिविसंजोयणकंडयाणि अट्ठसंजमकंडयाणि चदुक्खुत्तो कसाय-उवसामणं च कादूण पुणो अपच्छिमे भवग्गहणे पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। तदो गब्भणिक्खमणादिअट्ठवस्संतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण[2] सजोगिजिणो जादो। तदो देसूणपुव्वकोडिं सव्वमोरालिय-तेजइयसरीराणं अधट्ठिदिगलणाए णिज्जरं करिय कम्मइयसरीरस्स गुणसेढिणिज्जरं कादूण चरिमसमयभवसिद्धियो जादो। एवंविहलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए सव्वजहण्णिया पत्तेयसरीरवग्गणा होदि; एदस्स देहे णिगोदजीवाणमभावादो।

संपहि एदिस्से वग्गणाए माहप्पजाणावणट्ठं ट्ठाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा— ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणूणं तिण्णि पुंजे उवरि ट्ठविय तेसिं हेट्ठा तेसिं चेव विस्ससोवचयपुंजे च ट्ठविय पुणो एदेसिं छण्णं जहण्णपुंजाणमुवरि परमाणुवड्ढावणविहाणं वुच्चदे—खविदकम्मंसियलक्खणेणागदस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स ओरालियसरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि एगविस्ससोवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तत्थेव[3] दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्त[4]ट्ठाणं होदि। तिसु[5] परमाणुसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्सासोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु पंचममपुण-

कालतक क्षपित कर्मांशिकरूपसे रहा। पुनः जिसने पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण संयमासंयमकाण्डक, इनसे कुछ अधिक सम्यक्त्वकाण्डक तथा अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनाकाण्डक तथा आठ संयमकाण्डक करते हुए चारबार कषायकी उपशामना की। पुनः अन्तिम भवको ग्रहण करते हुए पूर्वकोटिप्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर गर्भनिष्क्रमण कालसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होनेपर सम्यक्त्व और संयमको एकसाथ प्राप्त करके सयोगी जिन हो गया। अनन्तर कुछकम पूर्वकोटि कालतक औदारिक और तैजसशरीरकी अधःस्थितिगलनाके द्वारा पूरी निर्जरा करके तथा कार्मणशरीरकी गुणश्रेणिनिर्जरा करके अन्तिम समयवर्ती भव्य हो गया। इस प्रकार आकर जो अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें स्थित है उसके सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है, क्योंकि इसके शरीरमें निगोद जीवोंका अभाव है।

अब इस वर्गणाके माहात्म्यका ज्ञान करानेके लिए स्थानप्ररूपणा करते हैं। यथा—औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणुओंके तीन पुञ्ज ऊपर स्थापित करके और उनके पहले उनके ही विस्रसोपचयोंके पुञ्ज स्थापित करके फिर इन जघन्य छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंके बढ़ानेकी विधि कहते हैं। क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर जो अन्तिम समयवर्ती भव्य हुआ है उसके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़नेपर वह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः उसीमें दो परमाणुओंके बढ़नेपर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन परमाणुओंके बढ़नेपर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसोपचय परमाणु

१ अ. प्रतौ 'कम्मट्ठिदिं [बंधिय-] खविद- इति पाठः। २. ता. प्रतौ '-जुगवं घेत्तूण' इति स्थाने 'घेत्तूण जुगवं' इति पाठः। ३. ता. प्रतौ 'तत्थ' इति पाठः। ४. अ. प्रतौ तदियपुणरुत्त' इति पाठः। ५. आ. प्रतौ 'तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु' इति पाठः।

रुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगुत्तरपरमाणुवड्डीए वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरविस्सासोवचय-पुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढाविदे ओरालिय-सरीरविस्सासोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि भवंति । एसा ट्ठाणपरूवणा संभवं पडुच्च कीरदे। को संभवो णाम? इंदो मेरुं पल्लट्टेदुं समत्थो त्ति एसो संभवो णाम । वत्तिसरूवेण एत्तिएसु ट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु को दोसो होदि ? ण, सव्वजीवरासीदो सिद्धाणमणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण चुप्पण्णट्ठाणमेत्ता सिद्धा अत्थि; अदीदकालस्स असंखेज्जदिभागाणं सिद्धाणं ट्ठाणमेत्त[1]पमाणत्तविरोहादो ।

पुणो अण्णे जीवे[2] खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि विस्सासोवचएण सह एगपरमाणुणा ओरालियसरीरमब्भहियं कादूणच्छिदे एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? परमाणुत्तरकमेण पुव्वं वड्ढाविदओरालियसरीरविस्सासो-वचयपुंजेण सह संपहि अहियएगोरालियसरीरपरमाणुदंसणादो । पुव्वुत्तोरालियसरीर-सव्वजहण्णपरमाणुपुंजादो[3] संपहियओरालियसरीरपरमाणुपुंजो परमाणुत्तरो होदि । पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियखवगं घेत्तूण एदस्स ओरालियसरीरविस्सासोवचयपुंजम्मि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरादि[4]कमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तेसु विस्सासोवचयपरमाणु-

पुद्गलोंके बढ़नेपर पाँचवां अपुनरुक्त स्थान होता है । इसप्रकार औदारिकशरीरके विस्रसोपचय-पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होनेतक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुकी वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार वृद्धि करनेपर औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते है। यह स्थानप्ररूपणा सम्भव सत्यकी अपेक्षा की है।

शंका—सम्भवसत्य किसे कहते हैं ?

समाधान—'इन्द्र मेरुको पलटनेमें समर्थ है ।' इसे सम्भव सत्य कहते हैं।

शंका—व्यक्तरूपसे इतने स्थानोंके उत्पन्न होने पर क्या दोष उत्पन्न होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऐसा होनेपर सब जीवोंसे सिद्ध अनन्तगुणे प्राप्त होते हैं। परन्तु यहाँ जितने स्थान उत्पन्न किये गये है उतने सिद्ध हैं नहीं, क्योंकि सिद्ध अतीत कालके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, इसलिए उन्हें उक्तस्थानप्रमाण माननेमें विरोध आता है।

पुनः क्षपित कर्मांशिकविधिसे आकर सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणाके ऊपर विस्रसोप-चयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके अन्य एक जीवके स्थित होनेपर यह भी अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि उत्तरोत्तर एक परमाणुके क्रमसे पहले बढ़ाए हुए औदारिक-शरीर विस्रसोपचय पुंजके साथ इस समय औदारिकशरीरका एक परमाणु अधिक देखा जाता है। पूर्वोक्त औदारिकशरीरके सबसे जघन्य परमाणुपुंजकी अपेक्षा साम्प्रतिक औदारिकशरीर परमाणु-पुंज एक परमाणु अधिक है । पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर और साम्प्रतिक क्षपकको ग्रहणकर इसके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक आदिके क्रमसे

१. ता. प्रतौ 'ट्ठाणमेव (त्त)-' अ.प्रतौ 'ट्ठाणमेव-' इति पाठः । २. ता. प्रतौ 'अण्णो जीवो' इति पाठः । ३. आ. प्रतौ '-जहण्णपुंजादो' इति पाठः । ४. ता. आ. प्रत्योः '-पुंजम्मि परमाणुत्तरादि-' इति पाठः ।

पोग्गलेसु वड्ढिदेसु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णो जीवे खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णेण ओरालियसरीर-पुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासोवचयपुंजं पि दोण्णं परमाणूणं विस्सासुवचय-पुंजेण अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं पुव्वं व जाणिदूण वत्तव्वं । संपहि उप्पण्णट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले[1]वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं दो-तिण्णिआदि जाव सव्व-जीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अणंताणि अपुण-रुत्तट्ठाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णो जीवे खविदकम्मंसियसव्वजहण्णोरालियसरीरं तिपरमाणुत्तरं कादूण सव्वजहण्णोरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजं पि[2] तिण्णं परमाणूणं विस्सासोवचएहि अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एगवारेण वड्ढिदूणागदं संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं । एवमणेण[3] विहाणेण ओरालियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पप्पणो तप्पाओग्गउक्कस्स-दव्वपमाणं पत्ता त्ति । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणि सव्वजहण्णाणि चेव । एदेसिं चदुण्णं वड्ढीए विणा सविस्सासोवचयओरालियसरीरस्सेव कथं वुड्ढी होदि ? ण, तज्जहण्णाविरोहिउक्कस्सवुड्ढीए एत्थ गहणादो ।

सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे ही अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते है ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको दो परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुंजको भी विस्रसोपचय पुंजकी अपेक्षा दो परमाणु अधिक करके अन्य जीवके स्थित होनेपर अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारण पहलेके समान जान कर कहना चाहिए । अब इस समय उत्पन्न हुए स्थानके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़नेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार दो, तीनसे लेकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिक विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अनन्त अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते है ।

अनन्तर क्षपित कर्मांशिकरूपसे प्राप्त सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको तीन परमाणु अधिक करके तथा सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें विस्रसोपचयके तीन परमाणु अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके अनन्तर पिछले स्थानसे एकबार वृद्धि हो कर प्राप्त हुआ साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार इस विधिसे अपने-अपने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणके प्राप्त होने तक औदारिकशरीरके दो पुंज बढ़ाने चाहिए । इतनी विशेषता है कि इन सब स्थानोंमें तैजस और कार्मणशरीर सबसे जघन्य रहते है ।

शंका—इन चारों (तैजस और कार्मणशरीर तथा उनके विस्रसोपचय) की वृद्धि हुए बिना अपने विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरकी ही वृद्धि कैसे होती है ?

---

१. ता० प्रतौ 'एगपरमाणुत्तरपोग्गले' इति पाठः । २. अ० प्रतौ पुंजम्मि' इति पाठः । ३. ता० प्रतौ 'णे (ए) वमणेण' अ० आ० प्रत्योः 'णवमणेण' इति पाठः ।

तदो अण्णो वि जीवो खविदकम्मंसियो विस्सासुवचयेहि सह ओरालियसरीर मुक्कस्सं कादूण पुणो तेजइयसरीरसव्वजहण्णविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले वड्डाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तदो अण्णेण जीवेण तेजइयसरीरविस्सासुवचय-पुंजे दुपरमाणुत्तरे कदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। सविस्सासुवचयमोरालियसरीरं तप्पा-ओग्गुक्कस्सतेजइयसरीरपरमाणुपुंजो जहण्णो। सविस्सासुवचयं कम्मइयसरीरं पि एत्थ जहण्णं चेव।

पुणो अण्णे जीवे तेजइयसरीरविस्सासुवचयपुंजं तिपरमाणुत्तरं कादूणच्छिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं परमाणुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासु-वचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्डिदेसु तदो अण्णम्हि[1] जीवे खविदकम्मंसिये तथा ओघुक्कस्सीकय-विस्सासुवचयमोरालियसरीरे विस्सासुवचएहि सह जहण्णीकदकम्मइयसरीरे सव्वजहण्ण-तेजइयसरीरं परमाणुत्तरं काऊण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं एगपरमाणुविस्सासुवचएहि अब्भहियं कादूणच्छिदे अणंतरट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। कारणं जाणिदूण वत्तव्वं। एवं वड्डावेदव्वं जाव तेजइयसरीरदोपुंजा तप्पाओग्गुक्कस्सा जादा त्ति। किं तप्पाओग्गुक्कस्सत्तं? जोगवड्डीए विणा ओकड्डुक्कड्डणवसेण जत्तियाणं परमाणूणं सविस्सासु-

समाधान—नहीं, क्योंकि इन चारोंके जघन्य रहते हुए उनकी अविरोधी उत्कृष्ट वृद्धि ही यहाँ ग्रहण की गई है।

पुनः अन्य क्षपित कर्मांशिक जीवके विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरको उत्कृष्ट करके अनन्तर तैजसशरीरके सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़ाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। अनन्तर अन्य जीवके द्वारा तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें दो परमाणु अधिक करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। यहाँ पर विस्रसोपचय सहित औदारिक शरीर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट है। तैजसशरीर परमाणु पुंज जघन्य है और विस्रसोपचयसहित कार्मण शरीर भी यहाँ पर जघन्य है।

पुनः अन्य जीवके तैजस शरीरके विस्रसोपचय परमाणु पुंजको तीन परमाणु अधिक करके स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार परमाणु अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयरूप परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अनन्तर जिसने विस्रसो-पचयसहित औदारिकशरीरको ओघ उत्कृष्ट किया है और विस्रसोपचयसहित कार्मणशरीरको जघन्य किया है तथा तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके व उसीके विस्रसोपचयपुंजको विस्रसोपचयके एक परमाणुसे अधिक करके जो क्षपित कर्मांशिक अन्य जीव स्थित है उसके अनन्तर स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। कारणका जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुंज तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट होने तक बढ़ाने चाहिये।

शंका—यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्टसे क्या तात्पर्य है?

समाधान—योगवृद्धिके बिना उत्कर्षण और अपकर्षणके द्वारा विस्रसोपचयसहित जितने

1. ता० प्रतौ 'अण्णेहि' अ० आ० प्रत्योः 'अण्णहि' इति पाठः।

वचयाणं वड्ढी संभवदि तत्तियमेत्तपरमाणूहि अब्भहियत्तं। जोगादो वड्ढी किं ण घेप्पदे ? ण, तिण्णं सरीराणमक्कमेण वुड्ढिप्पसंगादो।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्सासुवचएहि सह ओरालिय-तेजासरीराणि तप्पाओग्गुक्कस्साणि कादूण कम्मइयसरीरविस्सासुवचया परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविद-कम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए अच्छिदो। ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्सासुवचयेहि सह तप्पाओग्गुक्कस्सीकय-ओरालिय-तेजासरीरो[1] कम्मइयसरीरं पडि खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरविस्सासुवचयजहण्णपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण अच्छिदो। ताधे अण्णमपुण-रुत्तट्ठाणं होदि। एवं कम्मइयसरीरविस्सासोवचया परमाणु[2]त्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति।

तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण कम्मइयविस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपरमाणूहि

परमाणुओंकी वृद्धि सम्भव हो मात्र उतने परमाणु अधिक करना यही यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट पदसे तात्पर्य है।

शंका—योगसे परमाणुओंकी वृद्धि क्यों नहीं ली गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि योगसे परमाणुओंकी वृद्धि ग्रहण करने पर तीनों शरीरोंकी युगपत् वृद्धि प्राप्त होती है।

पुनः क्षपित कर्मांशिक अन्य एक जीव लीजिये जो विस्रसोपचय सहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट करके कार्मणशरीरके विस्रसोपचयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक-एक परमाणु बढ़ाता है। तब पहलेके समान क्षपित कर्मांशिक इस अन्य जीवके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है।

पुनः अन्य एक क्षपित कर्मांशिक जीव लीजिये जिसने अपने विस्रसोपचयसहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट किया है तथा जो कार्मणशरीरके प्रति क्षपित कर्मांशिक है उसके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय जघन्य पुंजमें दो परमाणु अधिक करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचयको एक एक परमाणु द्वारा बढ़ाना चाहिये।

पुनः क्षपित कर्मांशिक एक अन्य जीव लीजिये जो अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजको सब

---

१. अ. आ. प्रत्योः—'सरीरा' इति पाठः। २. ता. प्रतौ '—चयपरमाणु—' इति पाठः।

वड्ढाविय ट्ठिदो[1] । ताधे पुव्विल्लट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि ।

पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियक्खवगस्स कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपरमाणुपोग्गलेसु कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजेहि वड्ढिदेसु तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं पुव्वं व परमाणुत्तरं काऊण अच्छिदो । ताधे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव जोगेण विणा ओकड्डुक्कड्डुणाहि[2] चेव जायमाणवुड्ढीए उक्कस्सवुड्ढि त्ति ।

पुणो एदेहि छहि दव्वेहि जोगेणेगवारं छसु वि दव्वेसु वड्ढिददव्वमेत्तं वड्ढिदूण ट्ठिदो सरिसो । एवमसंखेज्जवारं वड्ढावेदव्वं जाव अजोगिचरिमसमयदव्वं[3] सव्वुक्कस्सं जादं[4] त्ति । तत्थ चरिमवियप्पं भणिस्सामो । तं जहा—

गुणिदकम्मंसियो सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि कादूण पुणो कालं करिय दो-तिण्णिभवग्गहणाणि तिरिक्खेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि[5] सजोगिजिणो होदूण देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं काऊण अजोगिचरिमसमए ट्ठिदस्स पत्तेयसरीरवग्गणा

जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके द्वारा बढ़ाकर स्थित है उसके तब पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है ।

पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोड़कर साम्प्रतिक क्षपकके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणुकी वृद्धि करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुपुद्गलोंके बढ़ाने पर उस समय पहलेके समान क्षपित कर्मांशिक जो अन्य जीव अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको पहलेके समान एक परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार योगके बिना अपकर्षण-उत्कर्षणके द्वारा ही जो वृद्धि होती है उससे उत्कृष्ट वृद्धिके होने तक वृद्धि करनी चाहिये ।

पुनः इन छह द्रव्योंके साथ, योगके द्वारा एक बार छहों द्रव्योंमें बढ़ाये हुये द्रव्यके बराबर वृद्धि करके स्थित हुआ जीव समान है । इस प्रकार अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयके द्रव्यके सर्वोत्कृष्ट होने तक असंख्यात बार वृद्धि करनी चाहिये । उसमें अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं । यथा—

कोई एक गुणित कर्मांशिक जीव सातवीं पृथिवीमें तैजस और कार्मण शरीरको उत्कृष्ट करके पुनः मरकर, दो-तीन भवतक तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पुनः गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षका होनेके बाद सयोगी जिन होकर कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयम गुणश्रेणि निर्जरा करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें

१. ता. प्रतौ [वड्ढावि] वड्ढिदो' इति पाठः । २. ता. प्रतौ '–णादि' इति पाठः । ३. ता. प्रतौ '–दव्वे' आ. प्रतौ '–दव्व' इति पाठः । ४. ता. अ. आ. प्रतिषु 'जादे' इति पाठः । ५. ता० प्रतौ '-याण [मु-] वरि' अ० आ० प्रत्योः '-याणवरि' इति पाठः ।

पुव्वुत्तपत्तेयसरीर[1]वग्गणाए सह सरिसी होदि। संपहि एत्थ वड्ढी णत्थि; पत्तसव्वुक्कस्सभावादो।

संपहि अजोगिचरिमसमए लब्भिस्सामो। तं जहा—गुणिदकम्मंसिओ सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीरवग्गणमुक्कस्सं[2] करेमाणो दुचरिमगुणसेडिदव्वेण[3] कम्मइय-तेजोरालियसरीराणं दुचरिमगोपुच्छाहि य ऊणमुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणं कादूण अजोगि-दुचरिमसमए अच्छिदस्स चरिमसमयवग्गणाए सह दुचरिमसमयवग्गणा सरिसी होदि।

पुणो चरिमसमयअजोगिवग्गणं मोत्तूण दुचरिमसमयअजोगिखवगपत्तेयसरीरवग्गणा पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणपमाणं पत्ता त्ति। एवं तिचरिम-चदुचरिमादिसमएसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पुध पुध विस्सासुवचय-परमाणू च वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सजोगिपढमसमओ[4] त्ति। संपहि एत्तो हेट्ठा ओदारेदुं ण सक्कदे; खीणकसायचरिमसमए बादरणिगोदवग्गणाए उवलंभादो। तेण सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयदव्वमस्सिदूण वड्ढिं भणिस्सामो। तं जहा—

गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिमसमए[5] वट्टमाणस्स तेजा-कम्मइयसरीराणं चत्तारिपुंजेहि पढमसमयसजोगिस्स तेजा-कम्मइयसरीराणं चत्तारि पुंजा विसेसहीणा। पढमसमयसजोगिस्सओरालिय[6]सरीरपरमाणुपोग्गलपुंजादो णेरइय-

स्थित हुआ। उसके प्रत्येकशरीरकी वर्गणा पूर्वोक्त प्रत्येकशरीरकी वर्गणाके समान होती है। अब यहाँ पर वृद्धि नहीं है; क्योंकि इसने सर्वोत्कृष्टपनेको प्राप्त कर लिया है।

अब अयोगीके द्विचरम समयका आश्रय करके कथन करते है। यथा—जिस गुणित-कर्मांशिक जीवने सातवीं पृथिवीमें तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी वर्गणाको उत्कृष्ट किया है और जो द्विचरम गुणश्रेणिद्रव्यसे तथा कार्मण, तैजस, और औदारिकशरीरकी द्विचरम गोपुच्छासे न्यून प्रत्येक शरीरकी वर्गणाको उत्कृष्ट करके अयोगीके द्विचरम समयमें स्थित है उसके अन्तिम समयकी वर्गणाके साथ,द्विचरम समयकी वर्गणा समान होती है।

पुनः अयोगीके अन्तिम समयकी वर्गणाको छोड़कर अयोगीके द्विचरम समयकी क्षपक प्रत्येकशरीर वर्गणा अपने उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके प्रमाणको प्राप्त होने तक पूर्वोक्त विधिसे बढ़ानी चाहिये। इस प्रकार त्रिचरम, चतुःचरम आदि समयोंमें औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर तथा उनके पृथक-पृथक् विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाकर उतारते हुये सयोगी गुणस्थानके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये। अब इससे पीछे उतार कर ले जाना सम्भव नहीं है; क्योंकि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें बादर निगोद वर्गणा उपलब्ध होती है, इसलिये सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती नारकीके द्रव्यका आश्रय करके वृद्धिका कथन करते हैं। यथा—

गुणित कर्मांशिक विधिसे आकर सातवीं पृथ्वीमें अन्तिम समयमें विद्यमान नारकीके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जोंकी अपेक्षा प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्ज विशेष हीन होते हैं। प्रथम समयवर्ती सयोगी

१ ता० प्रतौ 'पुव्वुत्तसरीर-' इति पाठः। २ ता० अ० प्रत्योः -'कम्मइयवग्गणमुक्कस्सं' इति पाठः। ३ अ० प्रतौ '-दव्वेणूण' इति पाठः। ४ ता० प्रतौ 'सजोगिचरिमपढम-' इति पाठः। ५ आ० प्रतौ तेण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिम-' इति पाठः। ६ ता० प्रतौ '-सजोगिस्स तेजा-कम्मइय-ओरालिय-' इति पाठः।

चरिमसमए वेउव्वियपरमाणुपोग्गलपुंजो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो। तं कथं परिच्छिज्जदि त्ति वुत्ते बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं वुत्तपदेसप्पाबहुआदो सुत्तादो। तं जहा—सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स पदेसग्गं। वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो। आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो। तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि[1] अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एदे गुणगारा कुदो सिद्धा ? अवरुद्धाइरियवयणादो।

पढमसमयसजोगिस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजादो चरिमसमयणेरइयस्स वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजो असंखेज्जगुणो। कुदो एदं णव्वदे ? बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स भणिदप्पाबहुगसुत्तादो। तं जहा—ओरालियसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो। तस्सेव जहण्णयस्स

जिनके औदारिकशरीर परमाणु पुद्गलपुञ्जसे नारकीके अन्तिम समयमें वैक्रियिक परमाणु-पुद्गलपुञ्ज असंख्यातगुणा होता है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके कहे गए प्रदेश अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है। यथा—औदारिकशरीरके प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं। इनसे वैक्रियिकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इनसे आहारकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इनसे तैजसशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। इनसे कार्मणशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है।

शंका—ये गुणकार किस प्रमाणसे सिद्ध हैं ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्य्योंके वचनसे सिद्ध हैं।

प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जसे अन्तिम समयवर्ती नारकीके वैक्रियिकशरीरका विस्रसोपचय पुञ्ज असंख्यातगुणा है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयके कहे गए अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है—यथा—जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे

१. ता० प्रतौ 'भवसिद्धिएहि' इति पाठः।

उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तेयासरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे[1] उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । गुणगारो सव्वत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एदमप्पाबहुगं मुक्कजीवाणं ण जीवसहियाणं;

स्तोक है। उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य-पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार सर्वत्र सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। यह अल्पबहुत्व जो अन्य जीवोंसे रहित होते हैं उनके होता है। जो अन्य जीवोंसे युक्त होते हैं उन जीवोंके नहीं होता, अन्यथा

१. ता०आ०प्रत्योः 'तेयासरीरस्स जहण्णयस्स उक्कस्सपदे' इति पाठः।

विस्सासुवचयपहाणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो विस्सासुवचयपहाणंजहण्णबादरणिगोद-वग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो।

जीवसहियाणं पुण अप्पाबहुगं उच्चदे—सव्वत्थोवो जहण्णओ ओरालियसरीरस्स विस्सासुवचओ। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो। आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो। को गुणगारो? सेडीए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तेजइयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुणगारो। अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तगुणगारो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुव-चओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कम्मइय-सरीरम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुणगारो? तेजइय-गुणगारो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो। तेण कारणेण पढमसमयजोगिस्स ओरालियादिछप्पुंज-

विस्रसोपचयप्रधान उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणासे विस्रसोपचयप्रधान जघन्य बादर निगोद वर्गणाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग आता है।

जो अन्य जीवोंसे युक्त हैं उनका अल्पबहुत्व आगे कहते हैं—औदारिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। वैक्रियिकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। आहारकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसो-पचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। तैजसशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। कार्मणशरीरके प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? तैजसशरीर गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इस कारणसे प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिक आदि छह पुञ्ज द्रव्यके साथ वैक्रियिक आदि छह पुञ्जका द्रव्य समान है।

१. अ०आ०प्रत्योः '-पहाणं' इति पाठः।

दव्वेण समाणवेउव्वियादिछप्पुंजदव्वं। सत्तमपुढविचरिमसमयणेरइयं घेत्तूण पुणो अप्पणो ऊणीकददव्वमेत्थतणछप्पुंजेसु पुध पुध वड्ढावेदव्वं।

संपहि अण्णेण जीवेण वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजे परमाणुत्तरे कदे सजोगि-पढमसमयउक्कस्सदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। एवमेगेग-परमाणुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वेउव्वियसरीर-विस्सासुवचयपुंजम्मि जाव वड्ढिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचएण अब्भहियं काऊण ट्ठिदो। ताधे पुव्वुप्पण्णट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। कारणं सुगमं। अणेण विहाणेण वेउव्वियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सदव्व-पमाणं पत्ता त्ति।

तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं सगविस्सासोवचएण सह उक्कस्सं करिय पुणो तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजं परमाणुत्तरं कादूणच्छिदो। ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं परमाणुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचय-परमाणू तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो पुव्वणिरुद्ध-तेजासरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासोवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-विस्सासोवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो। ताधे तं ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं

सातवीं पृथ्वीके अन्तिम समयवर्ती नारकीको ग्रहण करके पुनः अपना अपना कम किया गया द्रव्य यहाँके छह पुञ्जोंमें पृथक-पृथक बढ़ाना चाहिए।

अब अन्य जीवके द्वारा वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करनेपर सयोगी जिनके प्रथम समयके उत्कृष्ट द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे वैक्रियिक-शरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु होने तक बढ़ाने चाहिए। अनन्तर वैक्रियिकशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा इसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके उस समय पहले उत्पन्न हुए स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। कारण सुगम है। इस प्रकार उक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणको प्राप्त होने तक वैक्रि-यिकशरीरके दो पुञ्ज बढ़ाने चाहिए।

अनन्तर अपने विस्रसोपचयके साथ वैक्रियिकशरीरके द्रव्यको उत्कृष्ट करके पुनः तैजस-शरीरके विस्रसोपचय पुंजको एक परमाणु अधिक करके स्थित हुए एक अन्य जीवके उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक एक परमाणुकी उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना चाहिए। अनन्तर पूर्वमें विवक्षित हुए तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा इसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए जीवके प्राप्त हुआ यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है। इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुञ्जोंमें तब तक वृद्धि करते जाना

होदि । एवं ताव तेजासरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जाव उक्कस्सा जादा त्ति ।

संपहि अण्णो णेरइओ[1] वेउव्विय-तेजासरीराणि उक्कस्साणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजं पदेसुत्तरं काऊणच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगेगपदेसुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वेहिं[2] जीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो[3] पुव्वणिरुद्धकम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे एदं ट्ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं होदि । पुणो अणेण विहाणेण कम्मइयसरीरदोपुंजा उक्कस्सा कायव्वा जाव गुणिदकम्मंसियणारगचरिमसमयसव्वुक्कस्सदव्वे त्ति । वेउव्वियसरीरविस्सासुवचएहिंतो आहारसरीरस्स विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । तेण पमत्तसंजदम्मि आहार-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे घेत्तूण पत्तेयसरीरवग्गणा एगजीवविसया किण्ण परूविदा ? ण, तेजा-कम्मइयसरीराणं चरिमसमयणेरइयं मोत्तूण अण्णत्थ उक्कस्सदव्वाभावादो । जत्थ तेजा-कम्मइयसरीराणि जहण्णाणि होंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा सव्वजहण्णा होदि । जत्थ एदेसिमुक्कस्सदव्वाणि लब्भंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि । ण च मणुस्सेसु पमत्तसंजदेसु पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि;

चाहिए जब तक ये उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त हो जाते ।

पुनः एक ऐसा नारकी लो जो वैक्रियिकशरीर और तैजसशरीरको उत्कृष्ट करके पुनः कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके स्थित है । तब अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणुकी तब तक वृद्धि करते जाना चाहिए जब तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि नहीं हो जाती । अनन्तर एक ऐसा अन्य जीव लो जो पूर्व निरुद्ध कार्मणशरीरमें एक परमाणु अधिक करके पुनः उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । पुनः इस विधिसे गुणित कर्मांशिक नारकी जीवके अन्तिम समयमें सर्वोत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक कार्मणशरीरके दोनों पुञ्जोंको उत्कृष्ट करना चाहिए ।

शंका—वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचयसे आहारकशरीरका विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है, इसलिए प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्ज ग्रहण करके प्रत्येकशरीर वर्गणा एक जीव सम्बन्धी क्यों नहीं कही ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अन्तिम समयवर्ती नारकीको छोड़कर तैजस और कार्मणशरीरका अन्यत्र उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध नहीं होता । जहां पर तैजस और कार्मणशरीर जघन्य होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणा सबसे जघन्य होती है और जहां पर इनके उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध होते हैं वहाँ पर प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट होती है । परन्तु प्रमत्तसंयत मनुष्योंके

१. ता॰आ॰प्रत्योः 'अण्णोण्णे' ठइओ इति पाठः । २. ता॰अ॰आ॰प्रतिषु 'सव्वएहि' इति पाठः । ३. अ॰आ॰प्रत्योः 'जीव' इति पाठः ।

गुणसेडिणिज्जराए अधट्ठिदिगलणाए[1] च गलिदतेजा-कम्मइयदव्वत्तादो। ण[2] च गलिद-तेजा-कम्मइयदव्वेहिंतो आहारसरीरदव्ववग्गणाए बहुत्तमत्थि; तस्स तदणंतिमभागत्तादो। संपहि एत्थ कम्मट्ठिदिकालसंचिदो अट्ठविहकम्मपदेसकलाओ कम्मइयसरीरं णाम। छावट्ठिसागरोवमसंचिदणोकम्मपदेसकलाओ तेजासरीरं णाम। तेत्तीससागरोवमसंचिद-णोकम्मपदेसकलाओ वेउव्वियसरीरं णाम। खुद्दाभवग्गहणप्पहुडि जाव तिण्णि-पलिदोवमसंचिदपदेसकलाओ ओरालियसरीरं णाम। अंतोमुहुत्तसंचिदपदेसकलाओ आहारसरीरं णाम। तेण णेरइयचरिमसमए चेव उक्कस्ससामित्तं दादव्वं।

प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं होती; क्योंकि उनके गुणश्रेणि निर्जराके द्वारा और अधःस्थिति-गलनाके द्वारा तैजस और कार्मणशरीरका द्रव्य गलित हो जाता है। यदि कहा जाय कि गलित हुए तैजस और कार्मणशरीरके द्रव्यसे आहारकशरीरकी द्रव्यवर्गणाएं बहुत होती हैं सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि यह उनके अनन्तवें भागप्रमाण होता है। अतः प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं कही।

यहाँपर कर्मस्थिति कालके भीतर संचित हुए आठ प्रकारका कर्मप्रदेश समुदायकी कार्मणशरीर संज्ञा है। छयासठ सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी तैजसशरीर संज्ञा है। तेतीस सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी वैक्रियिक-शरीर संज्ञा है। क्षुल्लकभवग्रहण कालसे लेकर तीन पल्य कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी औदारिकशरीर संज्ञा है और अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी आहारकशरीर संज्ञा है, इसलिए नारकी जीवके अन्तिम समयमें ही उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिए।

विशेषार्थ—यहां पर प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणाका विचार करते हुए वह एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट किस जीवके होती है इस बातका विस्तारसे निरूपण किया गया है। जिन शरीरोंका स्वामी एक ही जीव होता है और उनके आश्रयसे अन्य जीव नहीं उपलब्ध होते उन शरीरोंके समुदायका नाम प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणा है। आगममें ऐसे आठ प्रकारके जीव बतलाये हैं जिनके शरीरोंके आश्रयसे अन्य जीव नहीं रहते। वे आठ प्रकारके जीव ये हैं—केवली जिन, देव, नारकी, आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक। यहां सर्व प्रथम यह देखना है कि इन जीवोंमें जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्य-वर्गणाका स्वामी कौन जीव है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका स्वामी कौन जीव है। जीव दो प्रकारके होते हैं—एक क्षपितकर्मांशिक और दूसरे गुणितकर्मांशिक। जो क्षपितकर्मांशिक जीव होते हैं उनके कर्म वर्गणाएं उत्तरोत्तर ह्रस्व होती जाती हैं और अयोगीके अन्तिम समयमें वे सबसे न्यून होती हैं, इसलिए अयोगी जिनके अन्तिम समयमें प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे जघन्य होती है। यहां इस वर्गणासे औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है। गुणितकर्मांशिक जीव वे कहलाते हैं जिनके कर्मवर्गणाएं उत्तरोत्तर महापरिमाणवाली होती जाती हैं और तेतीस सागरकी आयुवाले नारकी जीवके अन्तिम समयमें वे सबसे उत्कृष्ट होती हैं, इसलिये नारकी जीवके अन्तिम समयमें

१. ता०आ०प्रत्योः 'अवट्ठिदिगलणाए' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'च गलिदतेजाकम्मइय-दव्वत्तादो। ण' इति पाठो नोपलभ्यते।

संपहि एगजीवमस्सिदूण णेरइयचरिमसमए वड्ढी णत्थि; पत्तुक्कस्सभावादो। बादरपुढविकाइयपज्जत्तवेजीवे घेत्तूण लभिस्सामो। तं जहा—गुणिदघोलमाणलक्खणेणागदो वेबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णेण संबद्धसरीरा णारगुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए पादेक्कं कदअद्धद्धसंचया चरिमसमयणेरइयस्स वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सह सरिसा। जदि वि वेउव्वियसरीरादो ओरालियसरीरमसंखेज्जगुणहीणं तो वि सरिसत्तं ण विरुज्झदे; तेजा-कम्मइयसरीरेसु वेउव्वियसरीरस्स असंखेज्जदिभाग-

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे उत्कृष्ट होती है। यहां इस वर्गणासे वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है। मध्यमें इस वर्गणाके अनेक विकल्प हैं जिनका निर्देश मूलमें किया ही है। यहां जघन्य वर्गणा, एक परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा, दो परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा इत्यादि क्रमसे वृद्धि करते हुए उत्कृष्ट वर्गणा लानेकी विधि जिस प्रकार मूलमें बतलाई गई है उस प्रकार उसे जान लेना चाहिए। पहले अन्तिम समयवर्ती अयोगी जिनके ही नाना जीवोंका आलम्बन लेकर जघन्य वर्गणामें परमाणुओंकी वृद्धि की गई है। इसके बाद उपान्त्य समयवर्ती अयोगी जिनका आश्रय करके वृद्धि कही गई है और इस प्रकार पीछे लौटकर प्रथम समयवर्ती सयोगी जिन तक आकर वृद्धिका क्रम दिखलाया गया है। इसके बाद देव और देवोंके बाद नारकी जीवोंको स्वीकार करके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा अपने उत्कृष्ट विकल्प तक उत्पन्न की गई है। प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके बाद आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक जीवोंका ग्रहण इसलिए नहीं किया, क्योंकि एक जीवकी अपेक्षा इनके जो प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है उसका ग्रहण मध्यम विकल्पोंमें आ जाता है। यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा लाते समय प्रत्येक स्थल पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा बतलाया गया है सो यह कथन सम्भव सत्यकी अपेक्षासे किया गया जानना चाहिए; क्योंकि प्रत्येक जीवके औदारिकशरीर आदि जघन्य वर्गणासे अपनी औदारिकशरीर आदि उत्कृष्ट वर्गणा व्यक्तरूपसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके समुच्चयरूप नहीं होती। कारण कि औदारिकशरीर आदि अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही बतलाया है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके स्वामीका विचार किया।

अब एक जीवका अवलम्बन लेकर नारकीके अन्तिम समयमें वृद्धि नहीं है, क्योंकि उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो गया है अतः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त दो जीवोंका आलम्बन लेकर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाको प्राप्त करते हैं। यथा—यहां गुणितघोलमान विधिसे आये हुए ऐसे दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव लो जिनके शरीर परस्परमें सम्बद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकके प्रत्येकशरीर वर्गणाका संचय नारकीके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके संचयसे आधा आधा है। अतएव इन दोनों जीवोंके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका संचय अन्तिम समयवर्ती नारकी जीवके वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरके संचयके समान होता है। यद्यपि वैक्रियिकशरीरसे औदारिकशरीर असंख्यातगुणा हीन होता है तो भी इन दोनों संचयोंके सदृश होनेमें कोई विरोध नहीं आता; क्योंकि तैजस और कार्मणशरीरोंके रहते हुए वैक्रियिकशरीरके असंख्यातवें भागमात्र औदारिकशरीरका

१. अ०प्रतौ '-णागद' आ०प्रतौ '-णागदे' इति पाठः। २. अ०आ०प्रत्योः '-णरइय' इति पाठः।

मेत्ततद्दव्वु[1]वलंभादो। संपहि दोसु जीवेसु ट्ठियओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजा पुव्वविहाणेण वड्ढावेयव्वा जाव दोण्णं जीवाणं पाओग्गउक्कस्सदव्वं पत्ता त्ति। पुणो तिण्णिबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णसंबद्धसरीरा दोण्णं बादरपुढविपज्जत्त-जीवाणमुक्कस्सदव्वस्स कयतिभागसंचया एदेहि दोहि वि सरिसा होंति। पुणो ते मोत्तूण इमे घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। पुणो एदेसिं तिण्णं दव्वाणं केसिं दव्वं सरिसं ति वुत्ते वुच्चदे। तं जहा— चदुण्णं बादरपुढविकाइयजीवाणं तिण्णं बादरपुढविकाइयउक्कस्सदव्वस्स चदुब्भाग-संचयाणं एगबंधणबद्धाणं दव्वं सरिसं होदि। एदेसिं पि दव्वं तेणेव कमेण वड्ढा-वेदव्वं जाव चदुण्णं जीवाणमुक्कस्सदव्वं पत्तं त्ति। एवं पंच-छ-सत्तट्ठ-णव-दसप्पहुडि जाव तप्पाओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा त्ति णेदव्वं। पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि कमेण वड्ढाविय पुणो एगबंधण-बद्धबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा दव्वसंचयेण एगबंधणबद्धपलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवेहि सरिसा घेत्तव्वा। पुणो एदे घेत्तूण पुव्वविहाणेण एदेसिमोरालिय--तेजा--कम्मइयसरीराणि परिवाडीए वड्ढाविय पुणो एगेगजीवमहियं

द्रव्य उपलब्ध होता है। अब इन दोनों जीवोंमें स्थित औदारिक, वैक्रियिक और तैजसशरीरके छह पुञ्जोंको पूर्वोक्त विधिसे तब तक बढ़ाना चाहिए जब तक वे दो जीवोंके योग्य उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त होते। पुनः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त तीन ऐसे जीव लो जो परस्परमें शरीरोंसे सम्बद्ध हों और जिनमेंसे प्रत्येकका प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा संचय दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके उत्कृष्ट संचयके तीसरे भागप्रमाण हो। इसलिए इनका संचय उक्त दो जीवोंके संचयके समान होता है। पुनः उन पूर्वोक्त जीवोंको छोड़कर और इनका अवलम्बन लेकर पूर्वोक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक द्रव्यकी वृद्धि करनी चाहिए। पुनः इन तीनोंका द्रव्य किनके द्रव्यके समान होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं। यथा—ऐसे चार बादर पृथिवीकायिक जीव लो जो एक बन्धनबद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकको तीन बादर पृथिवीकायिक जीवोंके उत्कृष्ट संचयके चौथे भागप्रमाण द्रव्यका संचय प्राप्त हुआ है, अतएव इन चारोंका संचय उक्त तीनोंके संचयके तुल्य है। इनके भी द्रव्यको उसी क्रमसे बढ़ाना चाहिए जिससे इन चारों जीवोंका द्रव्य उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो जाय। इस प्रकार पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दससे लेकर तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके होने तक ले जाना चाहिए। पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको क्रमसे बढ़ाकर पुनः एक बन्धनबद्ध इतने बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव लेने चाहिए जो द्रव्यसंचयकी अपेक्षा एक बन्धनबद्ध पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके समान हों। पुनः इनका आश्रय करके पूर्वोक्त विधिसे इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको आनु-पूर्वीसे बढ़ाकर पुनः एक एक जीवको अधिक करते हुए जब तक एक बन्धनबद्ध बादर

१. ता०प्रतौ '-मेत्तदव्व-' आ०प्रतौ '-मित्ततद्दव्व-' इति पाठः।

काऊण णेदव्वं[1] जाव बादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा आवलियवग्गादो असंखेज्जगुणमेत्ता कमेण वड्ढाविय एगबंधणबद्धा जादा त्ति। अथवा तप्पाओग्गअसंखेज्जजीवा एगबंधणबद्धा घेत्तव्वा। कुदो? बादरतेउक्काइयपज्जत्तापज्जत्ताणं देवकदच्छुयादिसु[2] एगागारे एगबंधणबद्धं पडि विरोहाभावादो। ते कत्थ लब्भंति? वल्लरिदाहे वा देवकदच्छुए वा महावणदाहे वा लब्भंति। पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु पत्तेयं वड्ढाविदेसु पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा उक्कस्सा होदि। जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

पुढवि-आउ-तेउ-वाउक्काइया देव-णेरइया आहारसरीरा पमत्तसंजदा सजोगि-अजोगिकेवलिणो च पत्तेयसरीरा वुच्चंति; एदेसिं णिगोदजीवेहिं सह संबंधाभावादो। विग्गहगदीए वट्टमाणा बादर-सुहुमणिगोदजीवा पत्तेयसरीरा ण होंति; णिगोदणामकम्मोदयसहगदत्तेण विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धाणंतजीवसमूहत्तादो। जदि विग्गहगदीए वट्टमाणासेसजीवा[3] पत्तेयसरीरा होंति तो पत्तेयवग्गणाओ अणंताओ होज्ज। ण च एवं, असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति अविरुद्धाइरियवयणेण अवगदत्तादो। विग्गहगदीए

तेजस्कायिक पर्याप्त जीव आवलिवर्गसे असंख्यातगुणे नहीं हो जाते तब तक इनकी संख्या और उसी क्रमसे द्रव्यको बढ़ाते हुए ले जाना चाहिए। अथवा एक बन्धनबद्ध तत्प्रायोग्य असंख्यात जीव लेने चाहिए; क्योंकि देवकृत झाडियोंमें लगी हुई अग्निमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके एक स्थानमें एक बन्धनबद्ध होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका—एक बन्धनबद्ध वे जीव कहां उपलब्ध होते हैं?

समाधान—लताओंका दाह होते समय, देवकृत झाड़ियोंमें या महावनका दाह होते समय एक बन्धनबद्ध उक्त जीव उपलब्ध होते हैं।

पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पृथक् पृथक् बढ़ाने पर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा उत्कृष्ट होती है। यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीर, प्रमत्तसंयत, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये जीव प्रत्येकशरीरवाले होते हैं, क्योंकि इनका निगोद जीवोंके साथ सम्बन्ध नहीं होता। विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव प्रत्येकशरीरवाले नहीं होते हैं, क्योंकि निगोद नामकर्मके उदयके साथ गमन होनेके कारण विग्रहगतिमें भी एक बन्धनबद्ध अनन्त जीवोंका समूह पाया जाता है। यदि विग्रहगतिमें वर्तमान अशेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं ऐसा माना जाय तो प्रत्येक वर्गणाएं अनन्त हो जावें। परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि वे असंख्यात लोक प्रमाण होती हैं ऐसा अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनोंसे

१. ता० प्रतौ 'काऊण पुणो णेदव्वं' इति पाठः। २. ता० प्रतौ '-काइयपज्जत्ताणं व कद-' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ 'वट्टमाणा सेस-' इति पाठः।

सरीरणामकम्मोदयाभावादो ण पत्तेयसरीरत्तं ण साहारणसरीरत्तं। तदो ते पत्तेय-सरीरबादर-सुहुमणिगोदवग्गणासु ण कत्थ वि पदंति त्ति वुत्ते[1] वुच्चदे—ण एस दोसो; विग्गहगदीए बादर-सुहुमणिगोदणामकम्माणमुदयदंसणेण तत्थ वि बादर-सुहुमणिगोद-दव्ववग्गणाणमुवलंभादो। एदेहिंतो वदिरित्ता जीवा गहिदसरीरा अगहिदसरीरा वा पत्तेयसरीरवग्गणा होंति। तदो पत्तेयसरीरा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति सिद्धं। ते च एगबंधणबद्धा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति। कुदो एदं णव्वदि त्ति वुत्ते ईसिप्पब्भाराए[2] पुढवीए बादरपुढविकाइयजीवा असंखेज्जलोगमेत्ता होदूण सव्वत्थोवा। एक्कम्हि उदग-बिंदुम्हि आउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा। एक्कम्हि इंगाले तेउक्काइया जीवा असं-खेज्जगुणा। एक्कम्हि जलबुब्बुदे वाउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे। तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि एगबंधणबद्धेहि उक्कस्सिया एया पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति ण घडदे? ण एस दोसो, ईसिप्पब्भारसिलेग-जलबिंदु-इंगाल-जलबुब्बुदेसु पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तजीवेसु संतेसु वि तत्थ तेउक्काइय-पज्जत्तमेत्ताणं चेव जीवाणमेगबंधणबद्धाणमुवलंभादो। एगबंधणबद्धा एत्तिया चेव

जाना जाता है।

शंका—विग्रहगतिमें शरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहां न तो प्रत्येक-शरीरपना प्राप्त होता है और न साधारणशरीरपना ही प्राप्त होता है। इसलिये वे प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म निगोद वर्गणाओंमेंसे किन्हीमें भी अन्तर्भूत नहीं होती हैं?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि विग्रहगतिमें बादर और सूक्ष्म निगोद नामकर्मों का उदय दिखाई देता है इसलिए वहां पर भी बादर और सूक्ष्म निगोद द्रव्यवर्गणाएं उपलब्ध होती हैं। और इनसे अतिरिक्त जिन्होने शरीरोंको ग्रहण कर लिया है या नहीं ग्रहण किया है वे सब जीव प्रत्येकशरीर वर्गणावाले होते हैं।

इसलिए प्रत्येकशरीर वर्गणाएं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं यह सिद्ध होता है।

शंका—एक बन्धनबद्ध वे जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। यदि कहो कि यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है तो इसका समाधान यह है कि ईषत्प्राग्भार पृथिवीमें बादर पृथिवी-कायिक जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हुए भी सबसे स्तोक होते हैं। इनसे एक जलबिन्दुमें जलकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं। इनसे एक अंगारेमें अग्निकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं। इनसे एक जलके बुलबुलेमें वायुकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं। इस प्रकार इस अल्पबहुत्व सूत्रसे यह बात जानी जाती है। इसलिए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एक बन्धनबद्ध जीवोंके अवलम्बनसे एक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणा होती है यह बात घटित नहीं होती?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि ईषत्प्राग्भार शिलामें, एक जलबिन्दुमें, एक अंगारेमें और जलके एक बुलबुलेमें अलग अलग असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके होने पर भी वहां मात्र तेजस्कायिक पर्याप्त जीव ही एक बन्धनबद्ध उपलब्ध होते हैं।

१. ता० प्रतौ '[त्ति-] वुत्ते' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'इसिप्पभाराए' इति पाठः।

होंति अहिया ण होंति त्ति कथं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । ते च तेउक्काइएसु चेव बहुआ लब्भंति ण अण्णत्थ । तेण वल्लरिदाहादिसु एगिंगालो चेव पहाणीकओ । तत्थ गुणिदकम्मंसिया सुट्टु जदि बहुआ होंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव, अवसेसा सव्वे अगुणिदकम्मंसिया । एसा सत्तारसमी[1] वग्गणा १७ अगेज्झा सभेयणत्तादो ।

पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाएमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम ॥ ९२ ॥

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते विदियधुवसुण्णदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण परिवाडीए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तधुवसुण्णदव्ववग्गणासु गदासु उक्कस्सिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा उप्पज्जदि ।

शंका—एक बन्धनबद्ध इतने ही जीव उपलब्ध होते हैं अधिक नहीं होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनोंसे जाना जाता है ।

और वे तेजस्कायिकोंमें ही बहुत उपलब्ध होते है अन्यत्र नहीं उपलब्ध होते, इसलिए लता दाह आदिमें एक अंगारा ही प्रधान किया है । वहां गुणितकर्मांशिक जीव यदि बहुत होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । बाकीके सब गुणितकर्मांशिक नहीं होते ।

यह सत्रहवीं वर्गणा है ।

विशेषार्थ—पहले एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा कह आये हैं । यहां एक बन्धनबद्ध नाना जीवोंकी अपेक्षा यह वर्गणा बतलाई गई है । जिनका शरीर पृथक् पृथक् अर्थात् प्रत्येक होकर भी परस्पर जुड़ा हुआ होता है वे एक बन्धनबद्ध जीव माने गये हैं । ऐसे पृथिवीकायिक जीव पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हो सकते हैं और अग्निकायिक जीव इनसे भी अधिक हो सकते हैं जो एक पिण्डमें बद्धनबद्ध रहते हैं और इससे इन सबकी मिलकर एक प्रत्येकवर्गणा बनती है । साधारण शरीरसे इन प्रत्येक शरीरमें बहुत अन्तर होता है । वहां शरीर एक ही होता है किन्तु यहां सबके अलग अलग शरीर होते हैं । मात्र प्रत्येकशरीर एक दूसरेसे सम्बद्ध रहते हैं और इसीसे इन्हें एक बन्धनबद्ध मानकर इनकी एक वर्गणा मानी गई है । एक तेजस्कायिक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचयोंका जितना उत्कृष्ट संचय हो सकता हो उसे असंख्यातगुणित आवलिवर्गसे गुणित करने पर या तत्प्रायोग्य असंख्यातसे गुणित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका प्रमाण आता है । यहां अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट संचयसे आगे की प्रक्रिया द्वारा इसी वर्गणाके उत्पन्न करनेकी विधि कही गई है । यह नाना प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणारूप होकर भी एक बन्धनबद्ध होनेसे एक प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा मानी गई है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्य वर्गणा है ॥ ९२ ॥

उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी ध्रुवशून्य वर्गणा सम्बन्धी सबसे जघन्य ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे आनुपूर्वीसे सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवशून्य वर्गणाओंके जाने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणा उत्पन्न होती है ।

---

१. अ॰आ॰प्रत्योः 'सत्तरसमी' इति पाठः ।

सा च जहण्णादो अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागो। तं जहा—सव्वजीवरासिं असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेहि ओवट्टिय आवलियाए असंखेज्जदि-भागेण असंखेज्जलोगेहि एगजीवोरालिय--तेजा--कम्मइयदव्वेण च गुणिय रूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि। पुणो इममुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए रूवाहियाए अवहिरिदे सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति पुव्वभणिदगुणगारो चेव होदि त्ति घेत्तव्वं। एसा अट्ठारसमी वग्गणा १८ एयंतवाइदिट्ठिस्स व्व सव्वकालं सुण्णभावेणवट्ठिदा।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम॥९३॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया बादरणिगोद-दव्ववग्गणा होदि। सा कत्थ दिस्सदि? खीणकसायचरिमसमए। किंविहे खीणकसाए होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे—जो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। तदो गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण पुणो कम्मस्स उक्कस्सगुणसेडिणिज्जरं देसूणपुव्वकोडिं कादूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झिदव्वए त्ति खवगसेढिमारूढो। तदो खवगसेडिम्मि सव्वुक्कस्स-

वह जघन्य वर्गणासे अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? सब जीवोंका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है। यथा—सब जीवराशिको असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे भाजित कर पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे, असंख्यात लोकोंसे और एक जीवके औदारिक, तैजस व कार्मणशरीरके द्रव्यसे गुणित कर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः इसे एक अधिक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणासे भाजित करने पर सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग आता है। इसलिए पहले कहा गया गुणकार ही होता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। यह अठारवीं वर्गणा है १८। एकान्तवादी दृष्टिके समान यह सदा काल शून्यरूपसे अवस्थित है।

ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर बादरनिगोद द्रव्यवर्गणा है॥ ९३॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा होती है।

शंका—वह कहां दिखाई देती है?

समाधान—क्षीणकषायके अन्तिम समयमें।

किस प्रकारके क्षीणकषायमें होती है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं—जो जीव क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर गर्भसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होने पर सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करके पुनः कुछ कम पूर्वकोटि काल तक कर्मकी उत्कृष्ट गुणश्रेणि निर्जरा करके सिद्ध होनेके लिए अन्तर्मुहूर्त काल अवशेष रहने पर क्षपकश्रेणि पर आरोहण किया। अनन्तर क्षपकश्रेणिमें सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिके

१. अ०का०प्रत्योः '–सेव्व' इति पाठः।

विसोहीए कम्मणिज्जरं करेमाणस्स खीणकसायस्स पढमसमए अणंता बादरणिगोद-जीवा मरंति। विदियसमए विसेसाहिया जीवा मरंति। केत्तियमेत्तेण विसेसाहिया? पढमसमए मदजीवपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तेण। एवं तदियसमयादिसु विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए पढम-समयप्पहुडि आवलियपुधत्तं गदं त्ति। तेण परं संखेज्जदिभागब्भहिया संखेज्जदिभाग-ब्भहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति। तदो उवरिमाणंतरसमए असंखेज्जगुणा मरंति। एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। गुणगारो पुण सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो। विसेसाहियमरणचरिमसमए मदजीवे तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण गुणिदे गुणसेडिमरणपढमसमए मदजीवपमाणं होदि त्ति घेत्तव्वं। एवमुवरिं पि जाणिदूण वत्तव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। एसो गुणगारो समयं पडि मरंत-जीवाणमेव परूवेदव्वो, ण पुलवियाणं। तं कथं णव्वदे? खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं त्ति उवरि भण्णमाणचूलियासुत्तादो। के णिगोदा णाम? पुलवियाओ णिगोदा त्ति भणंति।

द्वारा कर्मनिर्जरा करके क्षीणकषाय हुए इस जीवके प्रथम समयमें अनन्त बादर निगोद जीव मरते हैं। दूसरे समयमें विशेष अधिक जीव मरते हैं। कितने विशेष अधिक जीव मरते हैं? प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंके प्रमाणमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक जीव मरते हैं। इसी प्रकार तीसरे आदि समयोंमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं। यह क्रम क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलि-पृथक्त्व काल तक चालू रहता है। इसके आगे संख्यात भाग अधिक संख्यात भाग अधिक जीव मरते हैं। और यह क्रम क्षीणकषायके कालमें आवलिका संख्यातवां भाग काल शेष रहने तक चालू रहता है। इसके आगेके लगे हुए समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीण-कषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणे जीव मरते हैं। गुणकार सर्वत्र पल्योपमके असंख्या-तवें भागप्रमाण है। विशेषाधिक मरनेके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीवोंके प्रमाणको तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर गुणश्रेणि क्रमसे मरनेके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार आगे भी क्षीण-कषायके अन्तिम समय तक जानकर कथन करना चाहिए। यह गुणकार प्रत्येक समयमें मरने वाले जीवोंका ही कहना चाहिए, पुलवी जीवोंका नहीं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—आगे कहे जानेवाले चूलिकाके 'खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं' इस सूत्रसे जाना जाता है।

शंका—निगोद किन्हें कहते हैं?

समाधान—पुलवियोंको निगोद कहते हैं।

संपहि पुलवियाणं एत्थ सरूवपरूवणं कस्सामो। तं जहा—खंधो अंडरं आवासो पुलविया णिगोदसरीरमिदि पंच होंति। तत्थ बादरणिगोदाणमासयभूदो[1] बहुएहि वक्खारएहि सहियो वलंजंतवाणियकच्छउडसमाणो मूलय-थूहल्लयादिववएसहरो खंधो णाम। ते च खंधा असंखेज्जलोगमेत्ता; बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमसंखेज्जलोगमेत्त-संखुवलंभादो। तेसिं खंधाणं ववएसहरो तेसिं[2] भवाणमवयवा वलंजुअकच्छउडपुव्वावर-भागसमाणा अंडरं णाम। अंडरस्स अंतोट्ठियो कच्छउडंडरंतोट्ठियवक्खारसमाणो आवासो णाम। अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि। एक्केक्कम्हि अंडरे असंखेज्जलोगमेत्ता आवासा होंति। आवासब्भंतरे संट्ठिदाओ कच्छउडंडरवक्खारंतोट्ठियपिसिवियाहि समाणाओ पुलवियाओ णाम। एक्केक्कम्हि आवासे ताओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ होंति। एक्केक्कम्हि एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि ओरालिय-तेजा-कम्मइयपोग्गलोवायाणकारणाणि कच्छउडंडरवक्खारपुलवियाए अंतोट्ठिददव्व-समाणाणि पुध पुध अणंताणंतेहि णिगोदजीवेहि आउण्णाणि होंति। तिलोग-भरह-जणवय-गाम-पुरसमाणाणि खंधंडरावासपुलविसरीराणि त्ति वा घेत्तव्वं।

पुणो एत्थ खीणकसायसरीरं खंधो णाम; असंखेज्जलोगमेत्तअंडराणमाधार-भावादो। तत्थ अंडरंतोट्ठियअणंताणंतजीवेसु सुक्कज्झाणेण पडिसमयमसंखेज्जगुणाए

अब यहाँ पर पुलवियोंके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा—स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवी और निगोदशरीर ये पाँच होते हैं। उनमेंसे जो बादर निगोदोंका आश्रयभूत है, बहुत वक्खारोंसे युक्त है तथा वलंजंतवाणिय कच्छउड समान है ऐसे मूली, थूअर और लता आदि संज्ञाको धारण करनेवाला स्कन्ध कहलाता है। वे स्कन्ध असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, क्योंकि बादर निगोद प्रतिष्ठित जीव असंख्यात लोकप्रमाण पाये जाते हैं। जो उन स्कन्धोंके अवयव हैं और जो वलंजुअकच्छउडके पूर्वापर भागके समान हैं उन्हें अण्डर कहते हैं। जो अण्डरके भीतर स्थित हैं तथा कच्छउडअण्डरके भीतर स्थित वक्खारके समान हैं उन्हें आवास कहते हैं। अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा एक एक अण्डरमें असंख्यात लोकप्रमाण आवास होते हैं। जो आवासके भीतर स्थित हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारके भीतर स्थित पिशवियोंके समान हैं उन्हें पुलवि कहते हैं। एक एक आवासमें वे असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। तथा एक एक आवासकी अलग अलग एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं जो कि औदारिक, तैजस और कार्मण पुद्गलोंके उपादान कारण होते हैं और जो कच्छउडअंडरवक्खारपुलविके भीतर स्थित द्रव्योंके समान अलग अलग अनन्तानन्त निगोद जीवोंसे आपूर्ण होते हैं। अथवा तीन लोक, भरत, जनपद, ग्राम और पुरके समान स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवि और शरीर होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

पुनः यहाँ पर क्षीणकषाय जीवके शरीरकी स्कन्ध संज्ञा है; क्योंकि वह असंख्यात लोक-प्रमाण अण्डरोंका आधारभूत है। वहाँ अण्डरोंके भीतर स्थित हुए अनन्तानन्त जीवोंमेंसे शुक्ल-

१. ता०प्रतौ '–मास [म] यभूदो' अ०आ०प्रत्योः '–मासमयभूदो' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '–लोगमेत्तववएसहरा तेसिं' इति पाठः।

सेडीए मदेसु खीणकसायचरिमसमए मरमाणजीवा अणंता होंति। होंता वि हेट्ठा दुचरिमसमएसु मदजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। खीणकसायचरिमसमयपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति सुत्ते भणिदं। जदि पुव्वुत्तगुणगारो पुलवियाणं होदि तो एदं ण घडदे; दुचरिमसमए मदजीवपुलवियासु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदासु खीणकसायचरिमसमए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीणमुवलभादो। एक्केक्कम्हि खंधे अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि। तत्थ एक्केक्कम्हि अंडरे आवासा असंखेज्जलोगमेत्ता। तत्थ एक्केक्कम्हि आवासे पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ त्ति पुव्वं परूविदं। तेण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ अत्थि त्ति ण घडदे। ण च तत्थतणपुलवियाणमसंखेज्जा भागा खीणकसायद्धाए णट्ठा त्ति वोत्तुं जुत्तं; सगसरीरट्ठियणिगोदजीवे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडम्मि णट्ठे पुलवियाणमसंखेज्जाणं भागाणं विणासविरोहादो। ण च चरिमसमए मदजीवा दुचरिमादिसमएसु मदजीवाणमसंखेज्जदिभागो; गुणसेडिमरणपरूवणाए सह विरोहादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—खीणकसायसरीरे उक्कस्सेण जहण्णेण वि[1] पुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव

ध्यानके द्वारा प्रति समय असंख्यातगुणे श्रेणि रूपसे जीवोंके मरने पर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होते हैं। इतने होते हुए भी पहले द्विचरम समयमें मरनेवाले जीव से असंख्यातगुणे होते हैं। गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

शंका—क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा सूत्रमें कहा गया है। यदि पूर्वोक्त गुणकार पुलवियोंका होता है तो यह कथन घटित नहीं होता, क्योंकि द्विचरम समयमें मृत जीवोंकी आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध होती हैं। एक एक स्कन्धमें अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा एक एक अण्डरमें आवास असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक आवासमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र होती हैं इस प्रकार पहले कह आये हैं। इसलिए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ हैं यह वचन घटित नहीं होता है। वहाँकी पुलवियोंका असंख्यात बहुभाग क्षीणकषाय गुणस्थानमें नष्ट हो गया है यह कहना युक्त नहीं है। क्योंकि अपने शरीरमें स्थित निगोद जीवोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित कर वहाँ लब्ध एक भागके नष्ट होनेपर पुलवियोंके असंख्यात बहुभागका विनाश माननेमें विरोध आता है। अन्तिम समयमें मरे हुए जीव द्विचरम आदि समयोंमें मरे हुए जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि इस कथनका गुणश्रेणि क्रमसे मरण प्ररूपणाके साथ विरोध आता है।

समाधान—यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं। क्षीणकषाय जीवके शरीरमें उत्कृष्ट

१. ता०प्रतौ 'उक्कस्सेण जहण्णा [ण] वि' अ० प्रतौ 'उक्कस्साण जहण्णाण वि' आ० प्रतौ 'उक्कस्सेण जहण्णाणं वि' इति पाठः।

होंति। एगबंधणबद्धाओ[1] असंखेज्जलोगमेत्ताओ कत्थ वि णत्थि। जहण्णाहियारादो आवलियाए असंज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ होंति त्ति घेत्तव्वं। ण च पुव्वुत्त-वयणेण सह विरोहो, खीणकसायं मोत्तूण अण्णखंधे अवलंबिय तत्थ परूविदत्तादो। ण च सव्वखंधेसु पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव अत्थि त्ति णियमो; णियमा य सुत्तवक्खाणस्सणुवलंभादो[2]।

संपहि पुलवियाओ अस्सिदूण केहि वि आइरिएहि णिगोदाणं मरणकमो परूविदो, तं वत्तइस्सामो। तं जहा—खीणकसायपढमसमए मरंतपुलवियाओ थोवाओ। विदियसमए मरंतपुलवियाओ विसेसाहियाओ। तदियसमए विसेसाहियाओ। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलिपुधत्तं त्ति। विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागो। तेण परं संखेज्जभागब्भहियाओ जाव विसेसाहियमरणचरिम-समओ त्ति। तदो गुणसेडिमरणपढमसमए संखेज्जगुणाओ मरंति। एवं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायकालस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति। तेण परमसंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। गुणगारेण पुण असंखेज्जगुणमरणम्हि सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागेण

और जघन्य पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही होती हैं। एक बन्धनबद्ध पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र कहीं भी नहीं होतीं। यहाँ जघन्यका अधिकार होनेसे आवलिके असं-ख्यातवें भागमात्र ही पुलवियाँ होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। पूर्वोक्त वचनके साथ विरोध आता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि क्षीणकषायको छोड़कर अन्य स्कन्धका अवलम्बन लेकर वहाँ कथन किया है। और सब स्कन्धोंमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र ही होती हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि इस प्रकारके नियमका करनेवाले सूत्रका व्याख्यान उपलब्ध नहीं होता।

अब पुलवियोंका अवलम्बन लेकर कितने ही आचार्य निगोद जीवोंके मरण क्रमका कथन करते हैं उसे बतलाते हैं। यथा—क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाली पुलवियाँ स्तोक हैं। दूसरे समयमें मरनेवाली पुलवियाँ विशेष अधिक हैं। तीसरे समयमें विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलि पृथक्त्व काल जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभाग स्वरूप है। इससे आगे विशेषाधिकके क्रमसे मरण करनेके अन्तिम समय तक संख्यातवें भाग अधिक हैं। अनन्तर गुणश्रेणि रूपसे मरण करनेके प्रथम समयमें संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातगुणी संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इससे आगे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। जहाँ असंख्यातगुणी पुलवियोंका मरण कहा है वहाँ गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग

१. ता०आ०प्रत्योः 'एत्थ बंधणबद्धाओ' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'णियमो, [णियमाय] सुत्तवक्खा [णा-] णमणुवलंभादो' अ०आ०प्रत्योः 'णियमो, णियमा य सुत्तवक्खाणमणुवलंभादो' इति पाठः।

होदव्वं; अण्णहा खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाण-मणुववत्तीदो। अणेण विहाणेण गंतूण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तपुलवियाओ मदावसिट्ठाओ; हेट्ठा दुचरिमादिसमएसु णट्ठपुलवियाहिंतो असंखेज्जगुणाओ उव्वरंति; गुणसेडिमरणण्णहाणुववत्तीदो। एसो पुलवियाणमावलि-याए असंखेज्जदिभागो गुणगारो जो पढिदो[1] सो ण घडदे; खीणकसायचरिमसमए णट्ठपुलवियाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तप्पसंगादो। कुदो? जहण्णपरित्ता-संखेज्जं विरलिय अवलियाए असंखेज्जदिभागं रूवं पडि दादूण अण्णोण्णेण गुणिदे वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणुप्पत्तीदो।

किमट्ठमेदे एत्थ मरंति? ज्झाणेण णिगोदजीवुप्पत्तिट्ठिदिकारणणिरोहादो। ज्झाणेण अणंताणंतजीवरासिणिहंताणं कथं णिव्वुई? अप्पमादादो। को अप्पमादो? पंच महव्वयाणि पंच समदीयो तिण्णि गुत्तीओ णिस्सेसकसायाभावो च अप्पमादो णाम। हिंसा णाम पाण-पाणिवियोगो। तं करेंताणं कथमहिंसालक्खणपंचमहव्वय-

होना चाहिए, अन्यथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध नहीं होतीं। इस विधिसे जाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ मरनेसे अवशिष्ट रहती हैं वे पीछे द्विचरम आदि समयोंमें नष्ट हुई पुलवियोंसे असंख्यातगुणी शेष रहती हैं। अन्यथा गुणश्रेणि मरण नहीं बन सकता। किन्तु यहाँ यह जो पुलवियोंका आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कहा है वह घटित नहीं होता, क्योंकि इस कथनसे क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नष्ट हुई पुलवियाँ पल्योपमके असं-ख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। कारण कि जघन्य परीतासंख्यातका विरलन कर और आवलिके असंख्यातवें भागका विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देकर परस्पर गुणा करने पर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाणकी उत्पत्ति होती है।

शंका—ये निगोद जीव यहाँ क्यों मरणको प्राप्त होते हैं?

समाधान—क्योंकि ध्यानसे निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और उनकी स्थितिके कारणका निरोध हो जाता है।

शंका—ध्यानके द्वारा अनन्तानन्त जीवराशिका हनन करनेवाले जीवोंको निवृत्ति कैसे मिल सकती है?

समाधान—अप्रमाद होनेसे।

शंका—अप्रमाद किसे कहते हैं?

समाधान—पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति और समस्त कषायोंके अभावका नाम अप्रमाद है।

शंका—प्राण और प्राणियोंके वियोगका नाम हिंसा है। उसे करनेवाले जीवोंके अहिंसा लक्षण पाँच महाव्रत कैसे हो सकते हैं?

१. प्रतिषु पदिदो इति पाठः।

संभवो ? ण, बहिरंगहिंसाए आसवत्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे ? तदभावे वि अंतरंग-हिंसादो चेव सित्थमच्छस्स बंधुवलंभादो । जेण विणा जं ण होदि चेव तं तस्स कारणं । तम्हा अंतरंगहिंसा चेव सुद्धणएण हिंसा ण बहिरंगा त्ति सिद्धं । ण च अंतरंगहिंसा एत्थ अत्थि; कसायासंजमाणमभावादो । उत्तं च—

जियदु मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छओ बंधो ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदीहि ॥ २ ॥

सरवासे दु पदंते जह दढकवचो ण भिज्जहि सरेहि ।
तह समिदीहि ण लिप्पइ साहू काएसु इरियंतो[1] ॥ ३ ॥

जत्थेव चरइ बालो परिहारण्हू वि चरइ तत्थेव ।
वज्झइ सो पुण बालो परिहारण्णू वि मुंचइ सो[2] ॥ ४ ॥

स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव हिंसनं न तत्पराधीनमिह द्वयं भवेत् ।
प्रमादहीनोऽत्र भवत्यहिंसकः प्रमादयुक्तस्तु सदैव हिंसकः ॥ ५ ॥

वियोजयति चासुभिर्न च वधेन संयुज्यते शिवं च न परोपमर्दपरुषस्मृतेर्विद्यते ।
वधोपनयमभ्युपैति च परानन्निघ्नन्नपि त्वयायमतिदुर्गमः प्रशमहेतुरुद्योतितः ॥ ६ ॥

समाधान - नहीं; क्योंकि बहिरंग हिंसा आस्रवरूप नहीं होती ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि बहिरंग हिंसाका अभाव होनेपर भी केवल अन्तरङ्ग हिंसासे सिक्थ मत्स्यके बन्धकी उपलब्धि होती है ।

जिसके विना जो नहीं होता है वह उसका कारण है, इसलिए शुद्धनयसे अन्तरंग हिंसा ही हिंसा है, बहिरंग नहीं; यह बात सिद्ध होती है । यहाँ अन्तरंग हिंसा नहीं है; क्योंकि कषाय और असंयमका अभाव है । कहा भी है—

चाहे जीव जिओ चाहे मरो, अयत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले जीवके नियमसे बन्ध होता है, किन्तु जो जीव समितिपूर्वक प्रवृत्ति करता है उसके हिंसा हो जाने मात्रसे बन्ध नहीं होता ॥ २ ॥

सरोंकी वर्षा होने पर जिस प्रकार दृढ़ कवचवाला व्यक्ति सरोंसे नहीं भिदता है उसी प्रकार षट्कायिक जीवोंके मध्यमें समितिपूर्वक गमन करनेवाला साधु पापसे लिप्त नहीं होता है ॥ ३ ॥

जहाँ पर अज्ञानी भ्रमण करता है वहीं पर हिंसाके परिहारकी विधिको जाननेवाला भी भ्रमण करता है, परन्तु वह अज्ञानी पापसे बँधता है और परिहार विधिका जानकर उससे मुक्त होता है ॥ ४ ॥

अहिंसा स्वयं होती है और हिंसा भी स्वयं ही होती है । यहाँ ये दोनों पराधीन नहीं हैं । जो प्रमादहीन है वह अहिंसक है किन्तु जो प्रमादयुक्त है वह सदैव हिंसक है ॥ ५ ॥

कोई प्राणी दूसरेको प्राणोंसे वियुक्त करता है फिर भी वह बंधसे संयुक्त नहीं होता ।

१. मूलाचा० ५,१३१ । २. मूलाचा० ५,१३२ ।

संपहि खीणकसायपढमसमयप्पहुडि ताव बादरणिगोदजीवा उप्पज्जंति जाव तेसिं चेव जहण्णाउवकालो सेसो त्ति। तेण परं ण उप्पज्जंति। कुदो? उप्पण्णाणं जीवणीयकालाभावादो[1]। तेण कारणेण बादरणिगोदजीवा एत्तो प्पहुडि जाव खीण-कसायचरिमसमओ त्ति ताव सुद्धा[2] मरंति चेव।

संपहि खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु[3] पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेहि आउण्णासु ट्ठिदअणंताणंतजीवाणं अणंताणंत-विस्सासुवचयसहियकम्म-णोकम्मसंघाओ[4] सव्वजहण्णिया बादरणिगोददव्ववग्गणा होदि।

संपहि एदिस्से बादरणिगोददव्ववग्गणाए ट्ठाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा— एत्थ ताव अणंताणंतजीवाणं ओरालियसरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह पुध ट्ठविय पुणो तेसिं चेव सव्वेसिं[5] जीवाणं [सविस्सासुवचय-] तेजासरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह कम्मइयसरीरपरमाणुपुंजं च पुध ट्ठविय[6] एदेसिं छण्णं पुंजाणमुवरि परमाणू वड्ढाविय ट्ठाणुप्पत्ती वुच्चदे—

तथा परोपघातसे जिसकी स्मृति कठोर हो गई है, अर्थात् जो परोपघातका विचार करता है उसका कल्याण नहीं होता। तथा कोई दूसरे जीवोंको नहीं मारता हुआ भी हिंसकपनेको प्राप्त होता है। इस प्रकार हे जिन! तुमने यह अतिगहन प्रशमका हेतु प्रकाशित किया है, अर्थात् शान्तिका मार्ग बतलाया है॥ ६॥

क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद जीव तब तक उत्पन्न होते हैं जब तक क्षीणकषायके कालमें उनका जघन्य आयुका काल शेष रहता है। इसके बाद नहीं उत्पन्न होते; क्योंकि उत्पन्न होने पर उनके जीवित रहनेका काल नहीं रहता, इसलिए बादर निगोद जीव यहांसे लेकर क्षीणकषायके अन्तिम समय तक केवल मरते ही हैं।

यहां क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविएं हैं जो कि पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंसे आपूर्ण हैं उनमें स्थित अनन्तानन्त निगोद जीवोंके जो अनन्तानन्त विस्रसोपचयसे युक्त कर्म और नोकर्म संघात है वह सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा है।

अब इस बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके स्थानोंका कथन करते हैं। यथा—यहां अनन्तानन्त जीवोंके अपने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणुपुंजको पृथक् स्थापित करके पुनः उन्हीं सब जीवोंके अपने विस्रसोपचय सहित तैजसशरीर परमाणु-पुञ्जको और अपने विस्रसोपचय सहित कार्मणशरीर परमाणुपुञ्जको पृथक् स्थापित कर इन छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंकी वृद्धि कर स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं—

१. ता० प्रतौ 'जीवणियमकालाभावादो' इति पाठः। २. प्रतिषु 'सुद्धा' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ 'असंखे०भागमेत्ता पुलवियासु' इति पाठः। ४. अ० का० प्रत्योः '-ट्ठिदा कम्मणोकम्मसंघाओ' इति पाठः। ५. प्रतिषु 'सव्वेहि' इति पाठः। ६. ता० प्रतौ 'ठाविय' इति पाठः।

अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण एगविस्सासुवचएण ओरालियसरीरपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो। एदमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो। पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खीणकसायचरिमसमए दोहि विस्सासुवचयपरमाणूहि ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊणच्छिदो तदो तमण्णं तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तीहि विस्सासुवचयपरमाणूहि ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो चदुहि विस्सासुवचएहि परमाणूहि ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊण अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयम्हि ट्ठिदो ताधे पंचममपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण ताव ट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव खीणकसायचरिमसमयम्हि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति[1]।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण जहण्णदव्वस्सुवरि एगोरालियपरमाणुमोरालियसरीरपुंजम्हि[2] वड्ढाविय पुणो ओरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुपमाणविस्सासुवचयं वड्ढाविय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्त-

एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर एक विस्रसोपचय परमाणुसे औदारिकशरीरके पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तो इसके यह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि अनन्तर पूर्वके स्थानसे यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है। पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें दो विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके स्थित है तब उसके यह अन्य तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक अन्य जीव तीन विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब चौथा अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। पुनः चार विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके जो अन्य जीव क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब पाँचवां अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढ़ाते हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक स्थान उत्पन्न करने चाहिए।

पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर जघन्य द्रव्यके ऊपर औदारिकशरीर पुञ्जमें एक औदारिकशरीर परमाणुको बढ़ाकर पुनः औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुप्रमाण विस्रसोपचय पुञ्जको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर

१. ता० प्रतौ 'सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता। ओरालियविस्सासुवचयपरमाणुमोरालियसरीरपुंजम्हि' इति पाठः। २. अ० प्रतौ 'पुणो ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजम्हि पुव्ववड्ढाविदो ओरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुपमाणविस्सासुवचयपुंजम्मि वड्ढाविय' आ० का० प्रत्योः 'पुणो ओरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुपमाणविस्सासुवचयपुंजम्मि पुव्वं वड्ढाविदो ओरालिय० वड्ढाविय' इति पाठः।

ट्ठाणं होदि । कुदो ? अणंतरहेट्ठिमट्ठाणोरालियविस्सासुवचयपुंजादो एदस्स ट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजो सरिसो होदूण एत्थतणओरालियसरीरपुंजस्स परमाणुत्तरत्तुवलंभादो ।

पुणो एदस्सुवरि एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु विस्सासुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्सासुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरवड्ढीए ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो ओघजहण्णदव्वदोओरालियपरमाणूहि दोवारं वड्ढिदविस्सासुवचयेहि य अब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेदेण कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियसरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेसिं विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढंता वि केवडिया इदि पुच्छिदे एयबादरणिगोदजीवम्मि जत्तियविस्सासुवचयसहियओरालियसरीरपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता ।

कथमेगो जीवो दोण्णं जीवाणं सविस्सासोरालियसरीरपुंजस्स आहारो होज्ज ? ण, एक्कम्हि वि जीवे असंखेज्जाणं खविदकम्मंसियजीवाणमोरालियसरीरदव्वुवलंभादो ।[1]

अनन्तर पूर्वके स्थानके औदारिक विस्रसोपचय पुञ्जके साथ इस स्थानका औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्ज समान होकर यहांके औदारिकशरीर पुञ्जमें एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है ।

पुनः इसके ऊपर एक औदारिक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढ़ाते जाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर अनन्तर एक अन्य जीव लो जो ओघ जघन्य द्रव्यको दो औदारिक परमाणुओंसे और दो बार बढ़ाए हुए विस्रसोपचयोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार इस क्रमसे तब तक बढ़ाते जाना चाहिए जब जाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिकशरीर परमाणुओंकी और सब जीवोंसे अनन्तगुणे उन्हींके विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो जाती है । बढ़ाते हुए भी कितनी बार बढ़ावे ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके जितने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणु हैं उतनी बार बढ़ावे ।

शंका—एक जीव दो जीवोंके विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीर पुञ्जका आधार कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक ही जीवमें असंख्यात क्षपित कर्मांशिक जीवोंका औदारिकशरीर द्रव्य उपलब्ध होता है ।

१. ता०प्रतौ 'जीवे असंखेजगुणं खविद–' इति पाठः ।

जदि एक्कम्हि जीवे असंखेज्जाणं जीवाणं दव्वं संभवदि तो बादरणिगोदजहण्णवग्गणाए अणंतजीवाणं ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवओरालियसरीरदोपुंजा णिच्छएण संभवंति त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण। पुणो अण्णो जीवो पुव्वं वड्ढिददव्वेण ओरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो तेजइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणं पेक्खिय एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो। पुणो पुव्विल्लट्ठाणम्हि वेतेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु तेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगादिएगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेजइयसरीरविस्सासुवचयपरमाणुवड्ढि त्ति।

तदो अण्णो जीवो ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवोरालियसरीरदोपुंजे वड्ढाविय तेजासरीरमेगतेजापरमाणुणा अब्भहियं काऊण एगतेजासरीरपरमाणुणा संबंधपाओग्गअणंतपरमाणू पुव्वं व वड्ढाविदमेत्ते तेजइयविस्सासुवचएसु वड्ढाविय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं। तदो अण्णो जीवो तेजासरीरमेगविस्सासुवचयपरमाणुणा अब्भहियं कादूणच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्त-

शंका—यदि एक जीवमें असंख्यात जीवोंका द्रव्य सम्भव है तो बादर निगोद जघन्य वर्गणा सम्बन्धी अनन्त जीवोंके औदारिकशरीर सम्बन्धी दो पुञ्जोंमें एक जीव सम्बन्धी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज निश्चयसे सम्भव हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं ग्रहण करते।

पुनः एक अन्य जीव लो जो पहले बढ़ाए हुए द्रव्यके साथ औदारिकशरीरको अधिक करके पुनः तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणुको बढ़ाकर स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि अनन्तर पूर्वके स्थानको देखते हुए यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है। पुनः पूर्वोक्त स्थानमें दो तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक एक परमाणु तब तक बढ़ाना चाहिए जब जाकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो लेती है।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो औदारिकशरीरके दो पुञ्जोंमें एक जीव सम्बन्धी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज बढ़ाकर, तैजसशरीरको एक तैजस परमाणुसे अधिक करके तथा एक तैजसशरीरके परमाणुसे सम्बन्ध रखने योग्य और पहलेके समान बढ़ाये हुए अनन्त परमाणुप्रमाण तैजसशरीर विस्रसोपचयोंको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। कारण सुगम है। अनन्तर एक अन्य जीव लो जो तैजसशरीरको एक विस्रसोपचय परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है।

ट्ठाणं होदि। पुणो वेविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्डिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्डिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तर-कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणा एगतेजइयपरमाणुसंबंधपाओग्ग-मेत्ता वड्डिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो वेहि तेजापरमाणूहि तेजासरीरमब्भहियं काऊण दोण्णितेजासरीरपरमाणुपाओग्गविस्सासुवचयेहि तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एदेण कमेण णेदव्वं जाव तेजासरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजासरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्डिदा त्ति। वड्ढंता वि हु केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदस्स तेजइयसरीरम्मि जत्तिया परमाणू विस्सासुवचयसहिया अत्थि तत्तियमेत्ता।

पुणो अण्णो जीवो एवं वड्डिदोरालियतेजासरीरो कम्मइयविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुमहियं काऊण चरिमसमयखीणकसाई जादो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्डिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्डिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वं। एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मइय-

पुन: दो विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक तैजसशरीर परमाणुसे सम्बन्ध योग्य सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणु बढ़ाना चाहिए। अनन्तर एक अन्य जीव लो जो दो तैजस परमाणुओंसे तैजसशरीरको अधिक करके दो तैजसशरीर परमाणुओंके योग्य विस्रसोपचय परमाणुओंसे तैजसशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस क्रमसे तैजसशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। वृद्धि होते हुए भी कितने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें विस्रसोपचयसहित जितने परमाणु होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

पुन: एक अन्य जीव लो जिसने इस प्रकार औदारिकशरीर और तैजसशरीरकी वृद्धि की है तथा जो कार्मणशरीर विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायी हुआ है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुन: दो कार्मण विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एकोत्तरके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे कार्मण विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार जानकर कार्मणशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कार्मणशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे

परमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। होंता वि केत्तिया त्ति भणिदे एगजीवम्मि जत्तिया कम्मपरमाणू कम्मइयविस्सासुवचय-परमाणुपोग्गला च अत्थि तत्तियमेत्ता।

तदो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेण आगंतूण खीणकसायचरिमसमए जहण्णबादर-णिगोदवग्गणाए उवरि एगजीवमहियं काऊणच्छिदो। संपहि एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि; पुव्विल्लअणंतरहेट्ठिमट्ठाणस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं पुंजेहिंतो एत्थतण तेसिं छपुंजाणं सरिसत्तुवलंभादो। पुव्विल्लजीवेहिंतो संपहियवग्गणाए एगो जीवो अहियो त्ति ट्ठाणमिदम-पुणरुत्तमिदि किण्ण वुच्चदे? ण; जीवस्स बंधणिज्जववएसाभावादो। पोग्गलो हि[1] बंधणिज्जं णाम। ण च जीवो पोग्गलो; अमुत्तस्स मुत्तभावविरोहादो।

पुणो अण्णो जीवो संपहियबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगमोरालियसरीर-विस्सासुवचयपरमाणुं वड्ढाविय[2] खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे अण्णमपुण-रुत्तट्ठाणं होदि। विदियपरमाणुम्हि वड्ढिदे विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुव-चयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्सासुवचयपरमाणु-पोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि

अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। वृद्धिको प्राप्त होते हुए कितने वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते कहते हैं कि एक जीवमें जितने कर्म-परमाणु और कार्मणशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गल होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो पूर्व विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक जीवको अधिक करके स्थित है। तब यह स्थान पुनरुक्त है, क्योंकि पहलेके अनन्तर पिछले स्थानके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पुञ्जसे यहांके उनके छह पुञ्ज सदृश उपलब्ध होते हैं।

शंका—पहलेके जीवोंसे सांप्रतिक वर्गणा सम्बन्धी एक जीव अधिक है इसलिए इस स्थानको अपुनरुक्त क्यों नहीं कहते?

समाधान—नहीं, क्योंकि जीवकी बन्धनीय संज्ञा नहीं है। पुद्गलोंकी ही बन्धनीय संज्ञा है। परन्तु जीव पुद्गल नहीं हो सकता, क्योंकि अमूर्तको मूर्तरूप होनेमें विरोध आता है।

पुन: एक अन्य जीव लो जो साम्प्रतिक बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक औदारिक-शरीर विस्रसोपचय परमाणुको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दूसरे परमाणुकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसो-पचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब

१. अ०आ०का०प्रतिषु 'पोग्गले हि' इति पाठः। २. अ०आ०प्रत्योः 'परमाणुं हि वड्ढाविय' का० प्रतौ 'परमाणुम्हिवड्ढाविय' इति पाठः।

अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला वड्ढिदा त्ति। होंता वि ते केत्तिय-मेत्ता त्ति वुत्ते एगोरालियपरमाणुविस्सासुवचयमेत्ता। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदट्ठाणादो एग-ओरालियपरमाणुस्स विस्सासुवचयं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयखीकसायट्ठाणमपुणरुत्त-ट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं। एवमणेण विहाणेण ओरालियसरीरवेपुंजा ताव वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। होंता वि ते केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरीरम्हि जत्तिया ओरालियपरमाणू तेसिं विस्सासुवचयपरमाणू च अत्थि तत्तियमेत्ता। एवं तेजासरीरपुंजो कम्मइयसरीरपुंजो च सविस्सासुवचओ परिवाडीए[1] वड्ढावेदव्वो जावेगबादरणिगोदजीवेण संचिदतेजा-कम्मइयसरीराणं चदुपुंजपमाणं पत्तं त्ति। एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च पुणो अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवग्गणं बेहि बादरणिगोदजीवेहि अब्भहियं कादूण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो च सरिसो; पुव्विल्ल[2]ट्ठाणम्मि कमेण वड्ढिदूण ट्ठिददव्वस्स एत्थतणदोजीवेसु उवलंभादो।

पुव्विल्लजीवं मोत्तूण इमं घेत्तूण एदस्सुवरि पुव्वं व अण्णेगो जीवो वड्ढावेदव्वो।

विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक औदारिकशरीर परमाणुके विस्रसोपचयमात्र होते हैं। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुए स्थानसे एक औदारिक परमाणुके विस्रसोपचयको बढ़ाकर स्थित हुआ अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय स्थान अपुनरुक्त स्थान होता है। कारण सुगम है। इस प्रकार इस विधिसे औदारिकशरीरके दो पुञ्ज तब तक बढ़ाने चाहिए जब तक सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु तथा अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर सम्बन्धी परमाणु वृद्धिको नहीं प्राप्त हो जाते। ऐसा होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिक-शरीरके परमाणु और उसके विस्रसोपचय परमाणु होते हैं तन्मात्र होते हैं। इसी प्रकार एक बादर निगोद जीवके द्वारा संचित हुए तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जप्रमाण द्रव्यके प्राप्त होने तक अपने अपने विस्रसोपचयके साथ तैजसशरीर पुञ्जको और कार्मणशरीर पुञ्जको आनुपूर्वी क्रमसे बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुआ जीव तथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद वर्गणाको दो बादर निगोद जीवोंसे अधिक करके क्षीण-कषायके अन्तिम समयमें स्थित हुआ अन्य जीव समान है, क्योंकि पूर्वोक्त स्थानमें क्रमसे बढ़ाकर स्थित हुआ द्रव्य यहाँके दो जीवोंमें उपलब्ध होता है।

पहलेके जीवको छोड़कर तथा इसे ग्रहण कर इसके ऊपर पहलेके समान एक अन्य जीव बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार स्थान और शास्त्रके अविरोधसे उत्तरोत्तर एक एक जीवको बढ़ाते

१. ता० प्रतौ 'च विस्सासुवचओ परिवाडीए' आ०प्रतौ 'च विस्सासुवचयउवरि वादीए' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'ट्ठिदो चरिमस० (च सरिसो), पुव्विल्ल-' आ० प्रतौ 'ट्ठिदो चरिमसाहि पुव्विल्ल-' आ० का० प्रत्योः 'ट्ठिदो चरिम० पुव्विल्ल-' इति पाठः।

एवमेगेगुत्तरकमेण हाणसमयाविरोहेण अणंताणंतकम्म-णोकम्मपरमाणुपोग्गलेहि जडिद-सव्वजीवपदेसा[1] जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढाविय पुणो एत्थतणअणंतजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छ पुंजा कमेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो सव्वुक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। एदिस्से चरिमसमयखीणकसायस्स उक्कस्स-बादरणिगोदवग्गणाए को सामी ? जीवो गुणिदकम्मंसियो सव्वुक्कस्ससरीरोगाहणाए वट्टमाणो चरिमसमयखीणकसाओ सामी। एत्थ उक्कस्सवग्गणाए वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ। असंखेज्जलोगमेत्ताओ णत्थि। कुदो ? साभावियादो। कत्थ पुण[2] असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ ? मूलय--महामच्छ--थूह-ल्लयादिसु। एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि[3] णिगोदसरीराणि एक्केक्कणिगोद-सरीरे अणंताणंता णिगोदजीवा अत्थि। पुणो तेसु जीवेसु आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसिया। अवसेसा पुण सव्वे गुणिदघोलमाणा चेव। एवं वड्ढिदूणच्छिदे[4] खीणकसायचरिमसमए वड्ढी णत्थि। कुदो ? तत्थतणजीवाणं तेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं च सव्वुक्कस्सभावुवलंभादो।

एसा खीणकसायस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा खीण-

हुए अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म परमाणु पुद्गलोंसे व्याप्त सब जीव प्रदेश हैं जिनके ऐसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार बढ़ाकर पुनः यहांके अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके क्रमसे छह पुञ्ज अपने सर्वोत्कृष्ट प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाने चाहिए।

शंका—अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीवके यह जो उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा होती है इसका स्वामी कौन जीव है ?

समाधान—जो गुणित कर्मांशिक है और सबसे उत्कृष्ट शरीर अवगाहनासे युक्त है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव उक्त उत्कृष्ट वर्गणाका स्वामी है।

यहाँ पर उत्कृष्ट वर्गणाकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं, असंख्यात लोकप्रमाण नहीं होतीं; क्योंकि ऐसा स्वभाव है।

शंका—असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियाँ कहाँ पर होतीं हैं ?

समाधान—मूली, महामत्स्य, थूह्र और लतादिकमें होती हैं।

एक एक पुलवीमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त निगोद जीव होते हैं। परन्तु उन जीवोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव गुणितकर्मांशिक होते हैं तथा बाकीके सब जीव गुणितघोलमान होते हैं।

इस प्रकार बढ़ाकर स्थित हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें और वृद्धि नहीं होती; क्योंकि वहाँ स्थित हुए जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर सर्वोत्कृष्ट भावको प्राप्त हो गये हैं।

यह अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायके उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके साथ

१. ता०प्रतौ 'जणिदसव्वजीवपदेसा' इति पाठः। २. अ०आ०का० प्रतिषु 'कथं पुण' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'एक्केक्कपुलवियासु संखेज्जलोगमेत्ताणि' इति पाठः। ४. ता० का० प्रत्योः 'वड्ढिदूण छिद--' इति पाठः।

कसाएण सह घेत्तव्वा; एगबंधणबद्धत्तादो। खीणकसाओ अणिगोदो कथं बादरणिगोदो होदि ? ण, पाधण्णपदेण तस्स वि बादरणिगोदवग्गणाभावेण विरोहाभावादो। एदमेगं फद्दयं होदि।

संपहि विदियफद्दयपरूवणं कस्सामो। तं जहा—अण्णो जीवो सव्वपयत्तेण खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण सव्वजहण्णोरालियसरीरोगाहणाए खीणकसायदुचरिमसमए अच्छिदो। एवमच्छिदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि होंति। एत्थ संपहि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अत्थि। अवसेसा पुण सव्वे खविदघोलमाणा चेव। कुदो ? खविदकिरियाए एक्कम्हि समए सुट्टु जदि जीवा बहुआ होंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति णियमुवलंभादो। एदेसिमणंताणं जीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गले तेसिमणंताणंतविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले च घेत्तूण विदियफद्दयस्स आदी होदि। कुदो ? पढमफद्दयं पेक्खिदूण अणंताणि ट्ठाणाणि अंतरिदूणुप्पण्णत्तादो।

एत्थ दोण्णं फद्दयाणमंतरपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा—खीणकसायचरिमसमयसव्वजहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो तस्सेव चरिमसमयउक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि अब्भहिया। कुदो एदं णव्वदे ?

ग्रहण करनी चाहिए, क्योंकि वह एक बन्धनबद्ध है।

शंका—क्षीणकषाय जीव निगोदपर्यायरूप नहीं है, इसलिए वह बादर निगोद कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्राधान्यपदकी अपेक्षा उसे भी बादर निगोद वर्गणा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

यह एक स्पर्धक है।

अब दूसरे स्पर्धकका कथन करते हैं यथा—अन्य जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे क्षपित कर्मांशिक विधिको करके सबसे जघन्य औदारिक शरीरकी अवगाहना द्वारा क्षीणकषायके द्विचरम समयमें स्थित हुआ। इस प्रकार स्थित हुए इस जीवके आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र पुलवियाँ होती हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं। यहाँ क्षपित कर्मांशिक विधिसे आए हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं, बाकीके सब जीव क्षपित घोलमान ही होते हैं; क्योंकि एक समयमें क्षपित क्रिया करनेवाले यदि बहुत जीव होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही होते हैं, इस प्रकारका नियम पाया जाता है। इन अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलोंको तथा उनके अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण करके दूसरे स्पर्धकका प्रारम्भ होता है; क्योंकि प्रथम स्पर्धकको देखते हुए अनन्त स्थानोंके अन्तरालसे इसकी उत्पत्ति हुई है।

यहाँ दोनों स्पर्धकोंके अन्तरप्रमाणका कथन करते हैं यथा—क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सबसे जघन्य बादर निगोद वर्गणाके जीवोंसे उसीके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक होते हैं।

अविरुद्धाइरियवयणादो। पुणो एदे जीवे अणंताणंतकम्म-णोकम्मपोग्गलेहि उवचिये अवणिय पुध ट्ठविदे अवणिदसेसो जहण्णबादरणिगोदवग्गणपमाणं होदि। पुणो खीण-कसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोददव्ववग्गणजीवेहिंतो तस्सेव दुचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? खीणकसायचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवेसु अणंताणंतेसु पलिदोमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेसु एय-खंडमेत्तेण। तम्मि एगखंडे विदियफड्डयादो अवणिदे उभयत्थ सेसजीवपमाणं सरिसं[1] होदि। संपहि चरिमसमए अवणिदजीवेहिंतो दुचरिमसमए अवणिदजीवा अणंतगुणा। कुदो ? चरिमवग्गणजीवाणमसंखेज्जदिभागे दुचरिमविसेसे सव्वजीवरासिस्स अणंत-पढमवग्गमूलुवलंभादो। जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवसहिदचरिमविसे-सादो दुचरिमसमयत्थखीणकसायविसेसो अणंतगुणो तेण तत्थ विसेसे असंखेज्जलोग-मेत्तसरीराणि। एक्केक्कम्हि सरीरे ट्ठिदअणंताणंतजीवा अत्थि। एदेसु चरिमविसेस-जीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तमणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि होदि। एत्तिय-मंतरिय उप्पण्णत्तादो विदियं फड्डयं जादं। जदि अंतरं णत्थि तो एगं चेव[2] फड्डयं होज्ज; कमवड्ढिदंसणादो। एवं फड्डयंतरं जीवाणं चेव ण बादरणिगोदट्ठाणाणं; तेसिं

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

पुनः अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म पुद्गलोंसे उपचित हुए इन जीवोंको अलग करके पृथक् स्थापित करनेपर अलग करनेसे जो शेष बचता है वह जघन्य बादर निगोद वर्गणाका प्रमाण होता है।

पुनः क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद द्रव्यवर्गणाके जीवोसे उसीके द्विचरम समयमें जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके जीव विशेष अधिक होते हैं। कितने विशेष अधिक होते हैं ? क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके अनन्तानन्त-जीवोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक होते हैं। इस एक भागको दूसरे स्पर्धकमेंसे घटा देनेपर उभयत्र शेष जीवोंका प्रमाण समान होता है। यहाँ चरम समयमें घटाए हुए जीवोंसे द्विचरम समयमें घटाये हुए जीव अनन्तगुणे होते हैं; क्योंकि चरम वर्गणाके जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विचरम विशेष होनेपर सब जीव राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल उपलब्ध होते हैं। यतः पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे युक्त अन्तिम विशेषसे द्विचरमसमय सम्बन्धी क्षीणकषायका विशेष अनन्तगुणा होता है, इसलिए उस विशेषमें असंख्यात लोकमात्र शरीर होते हैं। तथा एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव स्थित होते हैं। इन चरमविशेष जीवोंके घटा देनेपर जो शेष रहता है वह सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण होता है। इतने अन्तरसे उत्पन्न होनेके कारण द्वितीय स्पर्धक हुआ है। यदि अन्तर नहीं मानें तो एक ही स्पर्धक होवे, क्योंकि क्रमवृद्धि देखी जाती है। यह स्पर्द्धकों का अन्तर जीवोंका ही होता है, बादर निगोद स्थानोंका नहीं, क्योंकि जघन्य स्थानसे लेकर

१. अ०आ०का० प्रतिषु 'पमाणसरिसं' इति पाठः। २. ता०अ०प्रत्योः 'एवं चेव' इति पाठः।

भावादो। भावे वा धुवसुण्णवग्गणाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ बहुवीयो वा[1] होंति। ण च एदं; तहाणुवलंभादो। तम्हा दुचरिमजहण्णवग्गणा चरिमुक्कस्स-वग्गणादो अणंतगुणहीणा[2] त्ति तत्थ चेवेदिस्से अंतब्भावो[3] वत्तव्वो।

संपहि खीणकसायचरिमखवगं मोत्तूण इमं खीणकसायदुचरिमसमयखवगं घेत्तूण पुणो एत्थतणसव्वजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे पुध पुध ट्ठविय ट्ठाण-परूवणं सेचीयवक्खाणाइरियपरूविदं वत्तइस्सामो। तं जहा—अण्णो जीवो खविद-कम्मंसियलक्खणेण आगंतूण खीणकसायदुचरिमसमए एगेगोरालियसरीरविस्सासुवचय-परमाणुणा अब्भहियं कादूण अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। बेविस्सासुव-चयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचय-परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्सासुवचयपरमाणु-पोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं पढमफद्दयम्हि वड्ढाविदकममव-हारिय वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजहण्णोरालियसरीरपरमाणू अप्पणो उक्कस्सविस्सासुवचय-पमाणं पत्ता त्ति। पुणो सव्वजहण्णतेजासरीरपरमाणूणं विस्सासुवचया एवं चेव वड्ढावेदव्वा जाव अप्पणो उक्कस्सविस्सासुवचयपमाणं पत्ता त्ति। पुणो जहण्णकम्मइय-

उत्कृष्ट स्थान तक निरन्तर वृद्धिको प्राप्त हुए उनका एक स्पर्धकको छोड़कर स्पर्द्धकान्तर नहीं होता। यदि दूसरे स्पर्धकका सद्भाव माना जाय तो ध्रुवशून्यवर्गणाऐं आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण या बहुत प्राप्त होती हैं। परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि इस प्रकारकी उपलब्धि नहीं होती। इसलिए द्विचरम जघन्य वर्गणा अन्तिम उत्कृष्ट वर्गणासे अनन्तगुणी हीन होती है, अतः उसीमें इसका अन्तर्भाव कहना चाहिए।

अब क्षीणकषायके अन्तिम समयवर्ती क्षपकको छोड़कर क्षीणकषायके द्विचरम समयवर्ती इस क्षपकको ग्रहण करके पुनः यहां रहनेवाले सब जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण-शरीरोंके छह पुञ्जोंको पृथक् पृथक् स्थापित करके सेचीय व्याख्यानाचार्यके द्वारा कही गई स्थान प्ररूपणाको बतलाते हैं यथा—

कोई एक अन्य जीव क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें एक एक औदारिकशरीरके विस्रसोपचय परमाणुसे अधिक करके स्थित हुआ तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार प्रथम स्पर्धकमें बढ़ाते हुए क्रमको ध्यानमें रखकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर परमाणुओं-के अपने उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिए। पुनः सबसे जघन्य तैजसशरीर परमाणुओंके विस्रसोपचय अपने उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक इसी प्रकार बढ़ाने चाहिए। पुनः जघन्य कार्मणशरीर परमाणुओंके जघन्य विस्रसोपचय अपने

१. अ० प्रतौ 'बहुविहो वा' इति पाठः। २. अ०आ०का० प्रतिषु 'असंखेज्जगुणहीणा' इति पाठः।
३. अ० प्रतौ 'चेवेदिस्से दु अंतब्भावो' इति पाठः।

सरीरपरमाणूणं जहण्णविस्सासुवचया एवं चेव वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्स-विस्सासुवचयपमाणं पत्ता त्ति। एवं वड्ढाविदे खीणकसायदुचरिमसमयखविदकम्मंसिय-खविदघोलमाणलक्खणेणागदसव्वजीवाणं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि विस्सासुव-चएहि उक्कस्सभावं गदाणि।

पुणो विस्सासुवचएसु वड्ढी णत्थि त्ति अण्णो जीवो विस्सासुवचयसहिदेगोरालिय-परमाणुणा पुव्वुत्तोरालियसरीरमब्भहियं काऊण अच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूणेदं ट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति एग-परमाणुविस्सासुवचयपमाणेण पुव्वुत्तोरालियसरीरपुंजादो परिहीणेण पुव्विल्लविस्सा-सुवचयसहिदएगपरमाणुणा वड्ढाविदे[1] णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चरिम-फड्डयसमुप्पण्णट्ठाणाणि पेक्खिदूण पुण पुणरुत्तं। पुणो एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं वड्ढावेदव्वं जाव अप्पप्पणो पुव्वमूणीकदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू ओरालियसरीरविस्सासुवचएसु वड्ढिदा त्ति। पुणो पच्छा वड्ढिदपरमाणू विस्सासुवचएहि उक्कस्सो कायव्वो। एवं कदे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्त-ट्ठाणाणि लद्धाणि होंति। पुणो एदेण कमेण विस्सासुवचयसहिदमेगेगमोरालिय-परमाणुं पवेसिय० २ वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरपुंजम्मि उक्कस्सविस्सासु-वचयसहिया अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति।

उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार बढ़ाने पर क्षीण-कषायके द्विचरम समय सम्बन्धी क्षपित कर्मांशिक और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए सब जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर अपने विस्रसोपचय रूपसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

पुनः विस्रसोपचयोंमें वृद्धि नहीं होती, इसलिए एक अन्य जीव लो जो विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीरके एक परमाणुसे पूर्वोक्त औदारिकशरीरको अधिक करके स्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर यह स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर स्थान लाना चाहते हैं इसलिए पूर्वोक्त औदारिकशरीर पुञ्जमेंसे एक परमाणु विस्रसोपचय प्रमाणसे हीन पूर्वोक्त विस्रसोपचय सहित एक परमाणुकी वृद्धि करने पर निरन्तर रूपसे अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। किन्तु अन्तिम स्पर्धकमें उत्पन्न हुए स्थानोंको देखते हुए वह पुनरुक्त होता है। पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो परमाणुओंकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार अपने अपने पहले कम किए गए सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंके औदारिकशरीर विस्रसोप-चयोंमें बढ़ने तक बढ़ाते जाना चाहिए। पुनः पीछे बढ़ाए हुए परमाणुओंको विस्रसोपचयोंसे उत्कृष्ट करना चाहिए। ऐसा करने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं। पुनः इस क्रमसे औदारिकशरीर पुञ्जमें उत्कृष्ट विस्रसोपचयके साथ अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र परमाणुओंकी वृद्धि होने तक विस्रसोपचयसहित एक एक औदारिकशरीर

१. ता० प्रतौ 'एगपरमाणुणा वड्ढिदट्ठ वड्ढविदे' इति पाठः।

एवं जाणिदूण छप्पि पुंजा परिवाडीए वड्ढावेदव्वा जाव चरिमफद्दयजीवाणमुक्कस्सट्ठाणपमाणं दुचरिमफद्दयजीवाणं छप्पुंजा पत्ता त्ति। पुणो एदस्स परमाणुत्तरकमेण ओरालियसरीरपुंजस्सुवरि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता परमाणू सगविस्सासुवचयसहिदा अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिणिमित्ता वड्ढावेदव्वा। वड्ढंता वि केत्तिया इदि वुत्ते एगबादरणिगोदजीवस्स जत्तिया विस्सासुवचयसहिदोरालियपरमाणू संभवंति तत्तियमेत्ता।

तदो अण्णो जीवो पुव्वुत्तोरालियसरीरदव्वमेत्तेगोरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो विस्सासुवचयसहिदेगपरमाणुणा तेजासरीरमब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इममागदपरमाणुं पण्णाए पुध ट्ठविय पुणो एदस्स जत्तिया विस्सासुवचयपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्तविस्सासुवचएहि ऊणतेजइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदपरमाणुम्हि वड्ढिदे णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णेगमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु विस्सासुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होंति। पुणो एवं वड्ढावेदव्वं जाव

परमाणुको प्रवेश कराकर बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार जानकर छहों पुञ्ज अन्तिम समयवर्ती स्पर्धक जीवोंके उत्कृष्ट स्थान प्रमाणको द्विचरम समय सम्बन्धी स्पर्धक जीवोंके छह पुञ्ज प्राप्त होने तक आनुपूर्वी क्रमसे बढ़ाना चाहिए। पुनः इस औदारिकशरीरके पुञ्जके ऊपर एक परमाणु अधिकके क्रमसे अपने विस्रसोपचयसहित अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न करनेके लिए अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण परमाणु बढ़ाने चाहिए। बढ़ाते हुए कितने बढ़ाने चाहिए ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके विस्रसोपचयसहित जितने औदारिक परमाणु सम्भव हैं उतने बढ़ाने चाहिए।

अनन्तर एक अन्य जीव लीजिए जो पूर्वोक्त औदारिक शरीरके द्रव्यमात्र एक औदारिकशरीरको अधिक करके तथा विस्रसोपचय सहित एक परमाणुके द्वारा तैजसशरीरको अधिक करके अवस्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये हुए परमाणुको बुद्धिके द्वारा पृथक् स्थापित करके पुनः इसके जितने विस्रसोपचय परमाणु हैं उतने विस्रसोपचयोंसे रहित तैजसशरीरके पुञ्जमें पहले अलग किये गये परमाणुके बढ़ाने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य एक अपुनरुक्त स्थान होता है। दो विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं।

१. म० प्रतौ 'चरिमसमयफद्दय-' इति पाठः। २. ता० प्रतौ '-परमाणुतेजासरीर-' इति पाठः।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेजाविस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढंता वि केत्तिया त्ति वुत्ते एगबादरणिगोदस्स जीवस्स तेजासरीरम्हि जत्तिया विस्सासुवचयसंजुत्ता परमाणू अत्थि तेत्तियमेत्ता ।

पुणो अण्णो जीवो पुव्वंविहाणेणागंतूण खीणकसायदुचरिमसमए ओरालिय-तेजासरीराणि पुव्वुत्तवड्ढिदव्वेण अहियाणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरं विस्सासुवचयसंजुत्तेगकम्मपरमाणुणा अब्भहियं कादूणच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूण अण्णट्ठाणमुप्पज्जदि । पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इममागदविस्सासुवचयसहिदपरमाणुं पण्णाए पुध ट्ठविय एगपरमाणुविस्सासुवचयपमाणेण परिहीणकम्मइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदंपरमाणुम्हि पक्खित्ते परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो एगकम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । ताधे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होंति । पुणो एवमेगेग-

पुनः इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण तैजसशरीरके परमाणु और सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीरके विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक बढ़ाते जाने चाहिए। इसप्रकार बढ़ाते हुए वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें जितने विस्रसोपचय सहित परमाणु हैं वे उतने हैं।

पुनः एक अन्य जीव लीजिए जो पूर्वोक्त विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें औदारिक और तैजसशरीरको पूर्वोक्त बढ़े हुए द्रव्यसे अधिक करके तथा कार्मणशरीरको विस्रसोपचय सहित एक कर्मपरमाणुसे अधिक करके स्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर अन्य स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये हुए विस्रसोपचय सहित एक परमाणुको बुद्धिसे अलग स्थापित करके एक परमाणु विस्रसोपचयके प्रमाणसे हीन कार्मणशरीरके पुञ्जमें पहले निकाले हुए परमाणुके मिलाने पर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक कार्मण विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो कार्मण विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। तब इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं। पुनः इस प्रकार एक एक विस्रसोपचयसहित कर्मपरमाणुका पुनः पुनः प्रवेश

१. ता० प्रतौ 'जीवो वि पुव्व-' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'अप्पट्ठाण-' इति पाठः। ३. ता०आ०का० प्रतिषु 'पुव्ववणिद-' इति पाठः। ४. ता० प्रतौ 'परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु' इति पाठः।

विस्सासुवचयसहिदकम्मपरमाणुं पवेसिय प०२ णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू विस्सासुवचयसहिदा वड्ढिदा त्ति। पुणो एदे वड्ढिदपरमाणू केत्तिया ? एगबादरणिगोदजीवस्स कम्मइय-सरीरम्मि जत्तिया विस्सासुवचयसहियकम्मपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता। एवं वड्ढिदूण-च्छिदे पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेण आगंतूण खीणकसायदुचरिम-समए बादरणिगोदजीवेण अब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे पुणरुत्तट्ठाणं होदि; पुव्वं-कमेण[1] वड्ढाविदपरमाणूणमेत्थ एगजीवम्मि उवलंभादो। पुणो एदस्सुवरि एगपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं पुव्वं व वड्ढावेदव्वं जाव अण्णेगजीवस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणू सविस्सासुवचया पविट्ठा त्ति। तदो पुव्वविहाणेण विदियो जीवो पवेसियव्वो। एवमेदेण कमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा परिवाडीए पवेसियव्वा। णवरि खीणकसायचरिमसमए पविट्ठजीवेहिंतो दुचरिमसमए पविट्ठजीवा विसेसाहिया होंति। कुदो ? चरिम-दुचरिमजीवविसेसाणमेत्थ दंसणादो। केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमसमयविसेसस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो। एदेसु जीवेसु परमाणुत्तरकमेण अण्णाणि वि अपुणरुत्तट्ठाणाणि छप्पुंजे अस्सिदूण उप्पादेदव्वाणि जावप्पणो उक्कस्सत्तं पत्ताणि त्ति। एवं चिराणजीवपरमाणुपोग्गलेसु संपहि पविट्ठजीवपरमाणुपोग्गलेसु च वड्ढिदेसु दुचरिमसमयबादरणिगोदवग्गणा उक्कस्सा होदि। पुणो एत्थ आवलियाए

कराकर कार्मणशरीरके पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र विस्रसोप-चयसहित कार्मपरमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। पुनः ये बढ़े हुए परमाणु कितने हैं ? एक बादर निगोद जीवके कार्मणशरीरमें जितने विस्रसोपचयसहित कर्मपरमाणु हैं उतने हैं। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर पुनः अन्य जीव क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर क्षीण-कषायके द्विचरम समयमें बादर निगोद जीवसे अधिक कर स्थित है तब पुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि पूर्व क्रमसे बढ़ाये हुए परमाणु यहां एक जीवमें उपलब्ध होते हैं। पुनः इसके ऊपर एक परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार अन्य एक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु अपने विस्रसोपचयसहित प्रविष्ट होने तक पहलेके समान बढ़ाना चाहिए। अनन्तर पूर्व विधिसे दूसरा जीव प्रविष्ट कराना चाहिए। इस प्रकार इस क्रमसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव क्रमसे प्रविष्ट कराने चाहिए। इतनी विशेषता है कि क्षीण-कषायके अन्तिम समयमें प्रविष्ट हुए जीवोंसे द्विचरम समयमें प्रविष्ट हुए जीव विशेष अधिक होते हैं, क्योंकि चरम और द्विचरम सम्बन्धी जीवोंका विशेष यहां दिखाई देता है। विशेषका प्रमाण क्या है ? अन्तिम समयमें जितना विशेष होता है उसका असंख्यातवां भाग यहां विशेषका प्रमाण है। इन जीवोंमें एक परमाणु अधिकके क्रमसे अपने उत्कृष्ट स्थानके प्राप्त होने तक छह पुञ्जोंका आश्रय लेकर अन्य भी अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न करने चाहिए। इस प्रकार जीवके पुराने परमाणु पुद्गलोंमें तत्काल प्रविष्ट हुए जीव परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर द्विचरम

[1] ता०प्रतौ 'पुव्वकमेण' इति पाठः।

छ. १४-१४

असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । एक्केकिस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तबादर-णिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्हि सरीरे अणंताणंतजीवा च संभवंति । पुणो एदेसिं जीवाणं मज्झे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसियजीवा । अवसेसा अणंता सव्वे जीवा गुणिदघोलमाणा । एत्थ खविदकम्मंसिओ खविदघोलमाणो[1] वा एगो वि णत्थि; उक्कस्सदव्वम्हि तेसिमत्थित्तविरोहादो । एवमेत्तियमेत्तदव्वं घेत्तूण विदियं जीव-फड्डयमुक्कस्सं होदि ।

संपहि तदियं फड्डयं वुच्चदे । तं जहा—एगो जीवो सव्वपयत्तेण ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण खीणकसायतिचरिमसमए अच्छिदो ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णस्स तदियजीवफड्डयस्स आदी होदि । संपहि एत्थंतरपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा—दुचरिमसमयखीणकसायजहण्णबादर-णिगोदवग्गणादो तस्सेव उक्कस्सदव्ववग्गणा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागपमाणजीवमेत्तो । पुणो एत्थ अधियजीवमेत्ते अवणिय पुध ट्ठविदे जं सेसं तं दुचरिमजहण्णवग्गणपमाणं होदि । पुणो एदम्हादो खीणकसाय-तिचरिमसमयवग्गणाए जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? दुचरिमजहण्णवग्गणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडम्मि जत्तिया जीवा अत्थि

समयकी बादरनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट होती है। पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोद शरीर हैं और एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव सम्भव हैं। पुनः इन जीवोंमें गुणितकर्मांशिक जीव आवलिके असं-ख्यातवें भागप्रमाण ही हैं। बाकीके अनन्त सब जीव गुणितघोलमान हैं। यहाँ क्षपितकर्मांशिक और क्षपितघोलमान एक भी जीव नहीं है, क्योंकि उत्कृष्ट द्रव्यमें उनका अस्तित्व होनेमें विरोध है। इस प्रकार मात्र इतने द्रव्यको ग्रहण कर दूसरा जीव स्पर्धक उत्कृष्ट होता है।

अब तीसरे स्पर्धकका कथन करते हैं। यथा—एक जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरको क्षपितकर्मांशिकरूप करके क्षीणकषायके त्रिचरम समयमें अवस्थित है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य तृतीय जीव स्पर्धककी आदि होती है। अब यहां अन्तरके प्रमाणका कथन करते हैं। यथा—द्विचरम समयमें क्षीणकषायकी जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उसकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा विशेष अधिक होती है। विशेषका प्रमाण क्या है ? पल्यके असं-ख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी जितनी संख्या है वह विशेषका प्रमाण है। पुनः यहां अधिक जीवोंके प्रमाणको निकाल कर पृथक् स्थापित कर जो शेष रहे वह द्विचरम समयकी जघन्य वर्गणाका प्रमाण होता है। पुनः इससे क्षीणकषायकी त्रिचरम समयकी वर्गणामें जीव विशेष अधिक होते हैं। कितने अधिक होते हैं ? द्विचरम समयकी जघन्य वर्गणाको पल्यके असंख्यातवें भागसे खण्डित करने पर वहां एक खण्डमें जितने जीव होते हैं, उतने अधिक होते हैं। वहां

१. ता०प्रतौ 'सव्वे जीवा, गुणिदघोलमाणो' आ०प्रतौ 'सव्वे जीवा गुणिदघोलमाणो' इति पाठः ।

तत्तियमेत्तेण। केत्तिया पुण तत्थ जीवा अत्थि? अणंता। कुदो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अणंतेसु जीवेसु भागे हिदेसु तत्थ अणंताणं चेव जीवाणमुवलंभादो। एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेसु दुचरिमवग्गणउक्कस्सविसेसजीवेसु अवणिदेसु सेसअणंतजीवा फद्दयंतरं होदि। असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि। एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा चउत्थअंतरे अत्थि। एत्तियमंतरिदूण तदियफद्दयस्स आदी होदि। पुणो एत्थ पुव्वविहाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गला अणंताणंतविस्सासुवचयेहि सह वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढिदे तदियफद्दयमुक्कस्संतरं होदि। एवं चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठम-णवम-दसमादिफद्दयाणमंतरपमाणं विस्सासुवचयपरमाणूणं जीवाणं च पवेसणविहाणं जाणिदूण ओदारेदव्वं जाव असंखेज्जगुणसेडिमरणपढमसमयो त्ति। एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो खविदकम्मसियलक्खणेणागंतूण विसेसाहियमरणचरिमसमए अच्छिदो। ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णं फद्दयमुप्पज्जदि। पुणो एत्थ अंतरपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा—गुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफद्दयादो तस्सेव उक्कस्सफद्दयं विसेसाहियं। विसेसो पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तफद्दएसु वड्ढिदसव्वे जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति कुदो णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो। तेणेत्थ विसेसे एगणिगोद-

कितने जीव हैं? अनन्त जीव हैं, क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागका अनन्त जीवोंमें भाग देने पर वहां अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं। यहां पर पल्यके असंख्यातवें भागमात्र द्विचरम वर्गणाके उत्कृष्ट विशेष जीवोंके निकाल देने पर शेष अनन्त जीव प्रमाण स्पर्धकका अन्तर होता है। निगोद शरीर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त जीव चौथे अन्तरमें होते हैं। इतना अन्तर देकर तीसरे स्पर्धककी आदि होती है। पुनः यहां पूर्व विधिके अनुसार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु पुद्गल अनन्तानत विस्रसोपचयोंके साथ बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार बढ़ाने पर तीसरे स्पर्धकका उत्कृष्ट अन्तर होता है। इस प्रकार चौथे, पाँचवें, छठे, सातवें, आठवें, नौवें और दसवें आदि स्पर्धकोंके अन्तर प्रमाणको तथा विस्रसोपचयसहित परमाणु और जीवोंकी प्रवेश विधिको जानकर असंख्यात गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर तब अन्य जीव क्षपितकर्मांशिक विधिसे आकर विशेषाधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य स्पर्धक उत्पन्न होता है। पुनः यहां अन्तर प्रमाणका कथन करते हैं। यथा—गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे उसीका उत्कृष्ट स्पर्धक विशेष अधिक है। विशेष पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीव प्रमाण है।

शंका—आवलिके असंख्यातवें भागमात्र स्पर्धकोंमें बढ़े हुए सब जीव पल्यके असंख्यातवें भागमात्र ही होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

इसलिए यहां पर विशेषमें एक निगोद शरीर भी नहीं है। इस अधिक द्रव्यको अलग

सरीरं पि णत्थि। एदमधियदव्वमवणिय पुध ट्ठवेयव्वं। असंखेज्जगुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफद्दयादो विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफद्दयं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? गुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफद्दयं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडमेत्तेण। एदम्हादो पुव्विल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तं फद्दयंतरं होदि। तत्थ अंतरे असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीराणि। एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा च अत्थि। पुणो एत्तियमेत्तमंतरिदूण विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफद्दयस्स आदी होदि।

पुणो एत्थतणछप्पुंजा पुव्विल्लछप्पुंजेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा त्ति कट्टु परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव गुणसेडिमरणपढमसमए फद्दयस्स उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। पुणो एदस्सुवरि एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेयव्वं जाव खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवेणेगपरमाणुस्स[1] विस्सासुवचयपुंजस्स पमाणं वड्ढिदे त्ति। एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेणागंतूण विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुणा ओरालियसरीरमब्भहियं काऊण विसेसाहियमरणचरिमसमए अच्छिदो ताधे सांतरट्ठाणमण्णमुप्पज्जदि। पुणो णिरंतरद्धाणे इच्छिज्जमाणे

करके पृथक् स्थापित करना चाहिए। असंख्यात गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका जघन्य स्पर्धक विशेष अधिक है। कितना अधिक है? गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकको पल्यके असंख्यातवें भागसे खण्डित करने पर जो एक खण्ड लब्ध आवे उतना अधिक है। इसमेंसे पहलेके पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीवोंके अलग कर देने पर जो शेष रहता है वह स्पर्धकका अन्तर होता है। उस अन्तरमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव होते हैं। पुनः इतना मात्र अन्तर देकर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयके जघन्य स्पर्धककी आदि होती है।

पुनः यहांके छह पुञ्ज पहलेके छह पुञ्जोंसे असंख्यातगुणे हीन होते हैं ऐसा समझ कर गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयमें उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक एक परमाणु अधिकके क्रमसे बढ़ाना चाहिए। पुनः इसके ऊपर एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार क्षपित कर्मांशिक विधिसे आये हुए जीवके एक परमाणुके विस्रसोपचय पुञ्जके प्रमाण तक वृद्धि होने तक एक अधिकके क्रमसे बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर तब अन्य जीव पूव विधिसे आकर विस्रसोपचयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य सान्तर स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर अध्वान इच्छित होने पर एक परमाणु विस्रसोपचय प्रमाणसे न्यून अवस्थामें

१. ता०प्रतौ '-जीवेगपरमाणुस्स' इति पाठः।

एगपरमाणुविस्सासुवचयपमाणेणूणावत्थाए विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुम्हि वड्ढिदे णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो अण्णेगोरालियविस्सासुवचय- परमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढिदे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि सेचीयादो लद्धाणि होंति। एवमणेण विहाणेण विस्सासुवचयसहियएगेगपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालिय- सरीरम्हि जत्तिया ओरालियसरीरविस्सासुवचयसहियपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढिदे पुणो तेजा-कम्मइयपरमाणू विस्सासुवचयसहिया वड्ढावेदव्वा। पुणो पुव्वविहाणेणेगो जीवो पवेसियव्वो। एवं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा वड्ढावेदव्वा। पुणो सव्वेसिं जीवाणं परमाणुपोग्गलेसु विस्सासुवचय० वड्ढिदेसु विसेसाहियमरणचरिमसमयउक्कस्सफद्दयं। पुणो एत्थ आवलियाए असंखेज्जदि- भागमेत्तपुलवियाओ। एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीराणि। एक्के- क्कम्मि णिगोदसरीरे अणंताणंतजीवा। एक्केक्कस्स जीवस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइय- सरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता अत्थि। एत्तियमेत्तदव्वं घेत्तूण विसेसाहिय- मरणचरिमसमयफद्दयं होदि। एवमोदारिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तफद्दयाणि लद्धाणि होंति। संपहि एत्तो हेट्ठा ओदारिज्जमाणे एगं चेव फद्दयं होदि। कुदो ? विसेसाहियमरणचरिमफद्दएण सह सयंभूरमणदीवस्स सयंपहणगिंदस्स

विस्रसोपचयसंयुक्त एक परमाणुकी वृद्धि होने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः अन्य एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वृद्धि होने पर सेचीयरूपसे इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं। इस प्रकार एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिकशरीरके विस्रसोपचयसहित परमाणु हैं उतने मात्र वृद्धि होने तक विस्रसोपचयसहित एक एक परमाणु बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वृद्धि होने पर पुनः तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणु विस्रसोपचयसहित बढ़ाने चाहिए। पुनः पूर्व विधिसे एक जीवका प्रवेश कराना चाहिए। इस प्रकार पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीव बढ़ाने चाहिए। पुनः सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंके विस्रसोपचयसहित बढ़ने पर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्पर्धक होता है। पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर हैं। एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव हैं और एक एक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं। इतने मात्र द्रव्यको ग्रहण कर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका स्पर्धक होता है। इस प्रकार उतारने पर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्पर्धक लब्ध होते हैं। अब इससे नीचे उतारने पर एक ही स्पर्धक होता है, क्योंकि विशेष अधिक मरणके अन्तिम स्पर्धकके साथ स्वयंभूरमण द्वीपके स्वयंप्रभ नगेन्द्रकी बाह्य दिशामें कर्मभूमिके प्रतिभागमें मूल, थूवर और

बाहिरदिसाए कम्मभूमिपडिभागम्मि मूलयथूहल्लयादिसु सरिसबादरणिगोदवग्गणाए हीणाए अहियाए च उवलंभादो। पुणो एदीए सरिसवग्गणं घेत्तूण तत्थ मूलयथूहल्लयादिसु एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु वड्ढिदेसु विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमणंताणंतेसु विस्सासुवचयपरमाणुपुग्गलेसु वड्ढिदेसु पुव्वविहाणेण तदो एगोरालियपरमाणू सविस्सासुवचय० वड्ढावेदव्वो। एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव विस्सासुवचयसहिदा ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता त्ति। पुणो एदेणेव कमेण अणंताणंतविस्सासुवचयसहिदा अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू[1] वड्ढावेदव्वा। पुणो पुव्वविहाणेण कम्मइयसरीरपुंजम्हि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयसहिया अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू वड्ढावेदव्वा। पुणो पुव्वविहाणेण एगो जीवो पवेसियव्वो। पुणो तस्सेव ओरालिय-तेजा कम्मइयसरीराणि वड्ढावेदव्वाणि। एवं वड्ढाविज्जमाणे अणंताणंतबादरणिगोदजीवेसु पविट्ठेसु एगणिगोदसाधारणसरीरं पविसदि। असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेसु पविट्ठेसु एगा पुलविया पविसदि। पुणो विस्सासुवचयसहियअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एगो जीवो पविसदि। एवमणंताणंतजीवेसु पविट्ठेसु एगं साधारणसरीरं पविसदि। एवमसंखेज्जलोगणिगोदसरीरेसु

लता आदिकमें सदृश बादरनिगोदवर्गणा हीन और अधिक उपलब्ध होती है। पुनः इसके सदृश वर्गणाको ग्रहण कर वहां मूल, थूवर और लता आदिकमें एक औदारिक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो परमाणुओंके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर पूर्व विधिसे अनन्तर एक औदारिक परमाणु विस्रसोपचयसहित बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीर परमाणु अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र होने तक बढ़ाने चाहिए। पुनः इसी क्रमसे अनन्तानन्त विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणु बढ़ाने चाहिए। पुनः पूर्व विधिसे कार्मणशरीर पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कर्मपरमाणु बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार पूर्व विधिसे एक जीव प्रविष्ट कराना चाहिए। पुनः उसीके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार बढ़ाने पर अनन्तानन्त बादर निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक निगोद साधारणशरीर प्रविष्ट होता है। असंख्यात लोकमात्र शरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी प्रविष्ट होती है। पुनः विस्रसोपचय सहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर एक जीव प्रविष्ट होता है। इस प्रकार अनन्तानन्त जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक साधारणशरीर प्रविष्ट होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोद

१. *अ० का० प्रत्योः 'ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू' इति पाठः।*

पविट्ठेसु विदिया पुलविया पविसदि। एवं तदिय-चउत्थ-पंचमादि जाव जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु कम्मभूमिपडिभागसयंभुरमणदीवस्स मूलयसरीरे जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एगबंधणबद्धाओ घेत्तूण उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा होदि। जहण्णादो पुण उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुणागारो? जगसेडीए असंखेज्जदिभागो। के वि आइरिया गुणगारो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागो होदि त्ति भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदेण चूलियासुत्तेण सह विरोहादो। ण च सुत्तविरुद्धमाइरियवयणं पमाणं होदि; अइप्पसंगादो। णिगोदसद्दो पुलवियाणं वाचओ त्ति घेत्तूण एसा परूवणा परूविदा। संपहि बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदस्स चूलियासुत्तस्स के वि आइरिया वक्खाणमेवं कुणंति। जहा—णिगोदाणमिदि वुत्ते णिगोदजीवा घेप्पंति ण पुलवियाओ। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो एवं वुत्ते घणावलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेत्तव्वो। पत्तेयसरीरउक्कस्सवग्गणं घणावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति भणिदं होदि? एदं वक्खाणं ण घडदे; सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं इदि एत्थ वि घणावलियाए असंखेज्जदिभागेण उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए गुणिदाए जहण्णसुहुमणिगोदवग्ग-

शरीरोंके प्रविष्ट होने पर दूसरी पुलवी प्रविष्ट होती है। इस प्रकार तीसरी, चौथी और पाँचवीं आदिसे लेकर जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर कर्मभूमि प्रतिभाग स्वयंभूरमण द्वीपके मूलीके शरीरमें एक बन्धनबद्ध जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियों को ग्रहण कर उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है। अपनी जघन्यसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। कितने ही आचार्य गुणकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ऐसा कहते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें निगोद जीवोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र है इस चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है। और सूत्रविरुद्ध आचार्योंका वचन प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होने पर अतिप्रसंग दोष आता है। निगोद शब्द पुलवियोंका वाचक है ऐसा ग्रहण करके यह प्ररूपणा की गई है। अब 'बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस चूलिकासूत्रका कितने ही आचार्य इस प्रकार व्याख्यान करते हैं। यथा—'णिगोदाणं' ऐसा कहने पर उसका अर्थ 'निगोद जीव' लेते हैं, पुलवियां नहीं। 'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो' ऐसा कहने पर घनावलिके असंख्यातवे भागप्रमाण गुणकार होता है ऐसा ग्रहण करते हैं। प्रत्येकशरीर उत्कृष्ट वर्गणाको घनावलिके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। किन्तु यह व्याख्यान घटित नहीं होता, क्योंकि 'सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' यहां भी घनावलिके असंख्यातवें भागसे उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके गुणित करने पर जघन्य

णुप्पत्तिप्पसंगादो। ण च एवं; अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति आइरिय-परंपरागदुवदेसबलेण सिद्धत्तादो। अथवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं इदि एत्थतणणिगोदसद्दो अंडराणमावासयाणं वा वाचओ त्ति घेत्तव्वो; उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ एगबंधणबद्धाओ अत्थि त्ति वक्खाणण्णहाणुववत्तीदो। ण च रस-रुहिर-मांससरूवंडराणं खंधावयवाणं तत्तो पुधभावेण अवट्ठाणमत्थि जेणेगक्खंधे अणेगबंधणबद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाणं संभवो होज्ज तेणेसो चेवत्थो पहाणो त्ति घेत्तव्वो। एदम्मि अत्थे घेप्पमाणे कसाय-गुणसेडिमरणद्धाए वुत्तगुणगारो ण विरुज्झदे; असंखेज्जगुणक्कमेण मदावसिट्ठ[1]-आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदेसु वि असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाणमुवलंभादो। एवमेसा एगूणवीसदिमा वग्गणा परूविदा १९।

बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णामं[2] ॥९४॥

उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियाए धुवसुण्णवग्गणाए सव्वजहण्णिया धुवसुण्णवग्गणा होदि। पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरकमेण सव्व-जीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वुक्कस्सवग्गणा होदि।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा आचार्य परम्परासे आये हुए उपदेशके बलसे सिद्ध है। अथवा 'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता णिगोदाणं' इस प्रकार यहां पर निगोद शब्द अण्डरों और आवासकोंका वाचक लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा ग्रहण किये बिना उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें एक बन्धनबद्ध असंख्यात लोकमात्र पुलवियाँ पाई जाती हैं यह व्याख्यान नहीं बन सकता है। और स्कन्धोके अवयवस्वरूप रस, रुधिर तथा मांसरूप अण्डरोंका उससे पृथक् रूपसे अवस्थान पाया नहीं जाता जिससे एक स्कन्धमें अनेक बन्धनवद्ध असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंकी सम्भावना होवे; इसलिए यही अर्थ प्रधान है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस अर्थके ग्रहण करने पर कपाय गुणश्रेणि मरण कालका उक्त गुणकार विरोधको नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि असं-ख्यात गुणित क्रमसे मृत जीवोंसे अवशिष्ट रहे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निगोदोंमें भी असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियां उपलब्ध होती हैं। इस प्रकार यह उन्नीसवीं वर्गणा कही गई है।

बादरनिगोदवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥९४॥

उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे जघन्य ध्रुवशून्यवर्गणा होती है। पुनः इसके ऊपर प्रदेश अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्त-गुणे स्थान जाकर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे उत्कृष्ट वर्गणा होती है। अपनी जघन्यसे

१. ता० प्रतौ 'मधा (दा) व सिद्द' अ०आ०प्रत्योः मधावसिट्ठ' इति पाठः। २. ता० प्रतौ '-वग्गणा [णमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा] णाम' अ० का०प्रत्योः '-वग्गणाणमुवरि धुवसुण्ण णाम' आ० प्रतौ '-वग्गणाणमुवरि धुवसुण्णवग्गणा णाम' इति पाठः।

सगजहण्णादो सगुक्कस्सवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदि-भागो । उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ । जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । तदो उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो हेट्ठा[1] सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणाए अंतरेण विणा होदव्व-मिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे—बादरणिगोदउक्कस्सवग्गणाए सेडीए असंखेज्जदि-भागमेत्तपुलवियासु ट्ठिदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तपुलवियासु ट्ठिदजीवा असंखेज्जगुणा । कुदो ? बादरणिगोदवग्गणासरीरेहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणासरीराणमंगुलस्स[2] असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारुवलंभादो तत्थतण-जीवेहिंतो एत्थतणजीवाणं गुणगारस्स अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तुवलंभादो वा । ण च एत्थ बाहयमत्थि साहयं त पुण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारस्स अण्ण-हाणुववत्तीदो । एवमेसा वीसदिमा वग्गणा २० परूविदा ।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवग्गणा णाम ॥९५॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया सुहुम-णिगोददव्ववग्गणा णाम होदि । सा पुण जले वा थले वा आगासे वा दिस्सदि;

उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका—उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं । जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं । इसलिए उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे नीचे सूक्ष्मनिगोद जघन्य वर्गणा अन्तरके बिना होनी चाहिए ?

समाधान—यहां उक्त शंकाका परिहार करते हैं—बादर निगोद उत्कृष्ट वर्गणाकी जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीवोंसे सूक्ष्म निगोद जघन्य वर्गणाकी आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते हैं, क्योंकि बादर निगोदवर्गणाके शरीरोंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके शरीरोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भाग-प्रमाण पाया जाता है । अथवा वहां रहनेवाले जीवोंसे यहां रहनेवाले जीवोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है । और यहां इसका कोई बाधक भी नहीं है, किन्तु साधक ही है, अन्यथा अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार नहीं बन सकता है । इस प्रकार यह बीसवीं वर्गणा कही ।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है ॥९५॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा होती है । वह जलमें, स्थलमें और आकाशमें सर्वत्र दिखलाई देती है, क्योंकि बादरनिगोदवर्गणाके समान

१. अ०प्रतौ 'अंगुलस्स असंखेजदिभागो । उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो हेट्ठा' इति पाठः ।
२. अ०प्रतौ 'सेडीए असंखेजदिभागमेत्तपुलवियासु हुदजीवेहितो सुहुमणिगोदवग्गणासरीराणमंगुलस्स' इति पाठः ।

बादरणिगोदवग्गणाए व एदिस्से देसणियमाभावादो। णवरि एसा सव्वजहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा खविदकम्मंसियलक्खणेण खविदघोलमाणलक्खणेण च आगदाणं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं होदि ण अण्णेसिं; तत्थ दव्वस्स जहण्णत्तविरोहादो। एत्थ वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ। एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्ज-लोगमेत्तणिगोदसरीराणि। एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंतजीवा अत्थि। तेसु जीवेसु खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव। अवसेसा सव्वे खविदघोलमाणा। एदेसिमणंताणंतजीवाणमोरालिय--तेजा--कम्मइयसरीराणं कम्म-णोकम्मविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले घेत्तूण सव्वजहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा होदि।

संपहि एदिस्से परूवणं कस्सामो। तं जहा—ओरालियसरीरम्हि एगविस्सा-सुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे विदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगविस्सासुवचय-परमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि लद्धूण सव्वजीवाण-मोरालियसरीराणि विस्सासुवचयेण उक्कस्साणि जादाणि त्ति। पुणो तेसिं चेव जीवाणं तेजासरीराणमुवरि एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि लद्धूण विस्सासुवचएण तेसिं जीवाणं तेजासरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति। पुणो तेसिं चेव जीवाणं कम्मइयसरीरेसु एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि लद्धूण विस्सासुवचएण तेसिं कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति। तदो अण्णस्स जीवस्स एदेसिमोरालिय-सरीराणमुवरि विस्सासुवचएण सह वड्ढिदेगपरमाणुस्स सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-

इसका देशनियम नहीं है। इतनी विशेषता है कि यह सबसे जघन्य सूक्ष्म निगोदवर्गणा क्षपित कर्मांशिकविधिसे और क्षपितघोलमानविधिसे आये हुए सूक्ष्म निगोद जीवोंके ही होती है, अन्यके नहीं, क्योंकि वहां जघन्य द्रव्यके होनेमें विरोध है। यहां भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव होते हैं। उन जीवोंमें क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं। शेष सब जीव क्षपितघोलमान होते हैं। इन अनन्तानन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके कर्म, नोकर्म और विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण कर सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है।

अब इसका कथन करते हैं। यथा—औदारिकशरीरमें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर सब जीवोंके औदारिकशरीर विस्रसोपचयके द्वारा उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। पुनः उन्हीं जीवोंके तैजसशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्रसोपचयके द्वारा उन जीवोंके तैजसशरीर उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्र-सोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। पुनः उन्हीं जीवोंके कार्मणशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्रसोपचयके द्वारा उनके कार्मणशरीरोंके उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। अनन्तर इन औदारिकशरीरोंके ऊपर विस्रसोपचयके

ट्ठाणाणि अंतरिदूणेदमण्णं ट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इमं विस्सासुवचयसहिदएगोरालियपरमाणुं पण्णाए पुध ट्ठविय पुणो एगपरमाणुविस्सासुवचयमेत्तेण परिहीणपुव्विल्लोरालियसरीरपुंजम्हि पुव्वमवणिदपरमाणुम्हि पक्खित्ते एगपरमाणुत्तरं[2] होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। विदियविस्सा० विदियमपुण०। तदियविस्सासु० तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति। एवं बादरणिगोदवग्गणवड्ढावणविहाणेण ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु विस्सासुवचयसहिदअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एगो सुहुमणिगोदजीवो पवेसियव्वो। एवं बादरणिगोदवग्गणवड्ढाविदविहाणेण अणंताणंतसुहुमणिगोदजीवेसु पविट्ठेसु एगं साहारण[3]णिगोदसरीरं पविसदि। एवमसंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेसु पविट्ठेसु एगा पुलविया पविसदि। एवं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु जले थले वा[4] सुहुमणिगोदवग्गणा सत्थाणुक्कस्सा होदि। पुणो एदीए सुहुमणिगोदवग्गणाए सह महामच्छसरीरे सुहुमणिगोदवग्गणा सरिसा लब्भदि। पुणो पुव्विल्लसुहुमणिगोदवग्गणं मोत्तूण एदीए सरिसमहामच्छसरीरसुहुम-

साथ बढ़े हुए एक परमाणुसे युक्त अन्य जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर यह अन्य स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर स्थान इच्छित हैं इसलिए इस विस्रसोपचयसहित एक औदारिक परमाणुको बुद्धिके द्वारा पृथक् स्थापित करके पुनः एक परमाणु विस्रसोपचयमात्रसे हीन पहलेके औदारिकशरीर पुञ्जमें पहले निकाले हुए परमाणुके मिला देने पर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दूसरे विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीसरे विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान होते हैं। इस प्रकार बादर निगोद वर्गणाकी बढ़ानेकी विधिके अनुसार औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर एक सूक्ष्म निगोद जीवको प्रविष्ट करना चाहिए। इस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाके बढ़ानेकी विधिके अनुसार अनन्तानन्त सूक्ष्म निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक साधारण निगोदशरीर प्रविष्ट होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी प्रविष्ट होती है। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बढ़ने पर जलमें व स्थलमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा स्वस्थान उत्कृष्ट होती है। पुनः इस सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके साथ महामत्स्यके शरीरमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा समान लब्ध होती है। पुनः पहलेकी सूक्ष्मनिगोद

१. ता०प्रतौ '-मण्णट्ठा ट्ठाण-' इति पाठः। २. ता०आ०का०प्रतिषु 'पक्खित्ते परमाणुत्तरं इति पाठः। ३. ता०प्रतौ एवं (गं) साहारण-' अ०का०प्रत्योः 'एवं साहारण-' इति पाठः। ४. ता०आ०का० प्रतिषु 'जले वा' इति पाठः।

णिगोदवग्गणं घेत्तूण पुणो एदिस्से उवरि पुव्वविहाणेण आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तपुलवियासु वड्डिदासु महामच्छसरीरे छण्णं जीवणिकायाणमेगबंधणबद्धाणं संघादे उक्कसिया सुहुमणिगोदवग्गणा दिस्सदि । संपहि एत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-पुलवियाओ। एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरे अणंताणंतजीवा च अत्थि । संपहि एत्थ गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ता चेव होंति । सेससव्वजीवा गुणिदघोलमाणा । कुदो साभावियादो । संपहि जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणे त्ति ताव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तणिरंतरट्ठाणाणि लद्धूण एगं चेव फद्दयं होदि; अंतराभावादो । संपहि एत्थतणासेसजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरकम्मणोकम्मविस्सासुवचयसहिदसव्व-परमाणु घेत्तूण सुहुमणिगोदउक्कस्सवग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एवमेसा एक्कवीसदिमा वग्गणा परूविदा ।

सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम ॥९६॥

उक्कस्ससुहुमणिगोददव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थीए धुवसुण्ण-वग्गणाए सव्वजहण्णवग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तद्धाणं

वर्गणाको छोड़कर इसके समान महामत्स्यके शरीरकी सूक्ष्मनिगोदवर्गणाको ग्रहण कर पुनः इसके ऊपर पूर्व विधिके अनुसार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर महामत्स्यके शरीरमें एक बन्धनबद्ध छह जीव निकायोंके संघातमें उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा दिखलाई देती है। यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं और एक एक पुलविके असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंमें अनन्तानन्त जीव हैं। यहां गुणित कर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं। शेष सब जीव गुणित घोलमान होते हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। अब जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा पर्यन्त सब जीवोंसे अनन्तगुणे निरन्तर स्थान प्राप्त होकर एक ही स्पर्धक होता है, क्योंकि मध्यमें कोई अन्तर नहीं है। अब यहांके समस्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके कर्म और नोकर्म विस्रसोपचयसहित सब परमाणुओंको ग्रहण करके उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है। यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इस प्रकार यह इक्कीसवीं वर्गणा कही।

सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥९६॥

उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे जघन्य वर्गणा होती है। अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान

१. ता० '-सरीरणोकम्म-' इति पाठः ।

गंतूण धुवसुण्णदव्ववग्गणा उक्कस्सा होदि। जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ जगसेडीओ। एवमेसा बावीसदिमा २२ वग्गणा परूविदा।

धुवसुण्णवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम ॥९७॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया महाखंधदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया महाखंधदव्ववग्गणा होदि। जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? सव्वजहण्णमहाखंधवग्गणाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अवहिरिदाए जं भागं लद्धं तत्तियमेत्तो विसेसो। एत्थुववुज्जंतीओ गाहाओ। तं जहा—

अणुसंखासंखेज्जा तधणंता वग्गणा अगेज्झाओ[1]।
आहार–तेज–भासा–मण–कम्मइय–धुवक्खधा ॥ ७॥
सांतरणिरंतरेदरसुण्णा पत्तेयदेह धुवसुण्णा।
बादरणिगोद सुण्णा सुहुमा सुण्णा महाखंधा ॥ ८॥
अणु संखा संखगुणा परित्तवग्गणमसंखलोगगुणं।
गुणगारो पंचण्णं अग्गहणाणं अभव्वणंतगुणो[2] ॥ ९॥
आहारतेजभासा मणेण कम्मेण वग्गणाण भवे।
उक्कस्सस्स विसेसो अभव्वजीवेहि अधियो दु ॥ १०॥

जाकर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है। यह जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो कि असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण है। इस प्रकार यह बाईसवीं वर्गणा कही।

ध्रुवशून्यवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ॥९७॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर सबसे जघन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है। अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है। यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। विशेषका प्रमाण कितना है? सबसे जघन्य महास्कन्ध वर्गणामें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना विशेषका प्रमाण है। यहां उपयोगी पड़नेवाली गाथाएं। यथा—

अणुवर्गणा, संख्याताणुवर्गणा, असंख्याताणुवर्गणा, अनन्ताणुवर्गणा, आहारवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, तैजसवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, भाषावर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, मनोवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, कार्मणवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा, शून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा ॥ ७–८ ॥ इनमें अणुवर्गणा एक है। संख्याताणुवर्गणा संख्यातगुणी है। असंख्याताणुवर्गणा असंख्यातलोकगुणी है। अनन्ताणुवर्गणासहित पाँच अग्राह्यवर्गणाओंका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा है ॥ ९ ॥ आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणामें अभव्य जीवोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना जघन्यसे उत्कृष्ट

१. अ०प्रतौ 'वग्गणा असंखेज्जा' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'अग्गहणाणमभव्वमणंतगुणो' इति पाठः।

धुवखंधसांतराणं धुवसुण्णस्स य हवेज्ज गुणगारो ।
जीवेहि अणंतगुणा जहण्णियादो दु उक्कस्से ॥ ११ ॥
पल्लासंखेज्जदिमो भागो पत्तेयदेहगुणगारो ।
सुण्णे अणंता लोगा थूलणिगोदे पुणो वोच्छं ॥ १२ ॥
सेडिअसंखेज्जदिमो भागो सुण्णस्स अंगुलस्सेव ।
पलिदोवमस्स सुहुमे पदरस्स गुणो दु सुण्णस्स ॥ १३ ॥
एदेसिं गुणगारो जहण्णियादो दु जाण उक्कस्से ।
साहिअमिह महखंधेऽसंखेज्जदिमो दु पल्लस्स ॥ १४ ॥

एसा एगसेडिवग्गणपरूवणा कदा ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा—परमाणुपोग्गलवग्गण-प्पहुडि जाव सांतरणिरंतरवग्गणाए उक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणं सरिस-धणियवग्गणाओ अणंतपोग्गलवग्गमूलमेत्तीओ होंति । पुणो पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाओ जहण्णियाओ खविदकम्मंसियलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए वट्टमाणकाले चत्तारि होंति । उक्कस्सियाओ गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए दोण्णि होंति । मज्झिमाओ अट्ठ लब्भंति । सव्वुक्कस्सियाओ पुण पत्तेयसरीरवग्गणाओ वल्लरिदाहे महावणदाहे देवकदच्छुए वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लब्भंति । वट्टमाण-काले अजहण्णअणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीओ लब्भंति । बादर-

लानेके लिए विशेषका प्रमाण है ॥१०॥ ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवगणा और प्रथम ध्रुव-शून्यवर्गणामे अपने जघन्यसे उत्कृष्टका प्रमाण लानेके लिए गुणकारका प्रमाण सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ॥११॥ प्रत्येकशरीरवर्गणाका गुणकार पल्यका असंख्यातवां भाग है। दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणामें गुणकार अनन्त लोक है। स्थूलनिगोद वर्गणाका गुणकार आगे कहते हैं ॥१२॥ इसका गुणकार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग है। तीसरी शून्यवर्गणाका गुणकार अङ्गुलका असंख्यातवां भाग है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें गुणकार पल्यका असंख्यातवां भाग है। चौथी शून्यवर्गणाका गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है ॥१३॥ इन सब वर्गणाओंके ये गुणकार अपने जघन्यसे उत्कृष्ट भेद लानेके लिए जानने चाहिए। तथा महास्कन्धमें अपने जघन्यसे अपना उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवां भाग अधिक है ॥१४॥

इस प्रकार यह एकश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा की ।

अब नानाश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—परमाणु पुद्गल वर्गणासे लेकर सान्तर निरन्तरवर्गणाकी उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंकी सदृशधनवाली वर्गणाऐं अनन्त पुद्गल वर्गमूलमात्र होती हैं। पुनः जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें वर्तमान कालमें चार होती हैं। तथा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाऐं गुणितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें दो होती हैं। मध्यम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं आठ प्राप्त होती हैं। सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाऐं बल्लरीदाहके समय, महावनदाहके समय या देवकृत झाड़ीमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। वर्तमान कालमें अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाऐं असंख्यात लोकप्रमाण

णिगोदवग्गणाओ खीणकसायचरिमसमए जहण्णियाओ चत्तारि उक्कस्सियाओ दोण्णि मज्झिमाओ अट्ठ लब्भंति। ओघुक्कस्सियाओ पुण मूलयथूहल्लयादिसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लब्भंति। सव्वुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ सरिसधणियाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो। बादरणिगोदवग्गणाओ सव्वुक्कस्सियाओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति जं भणिदं तमुवरि भण्णमाणजवमज्झ-परूवणाए सह विरुज्झदे, तत्थ पत्तेयबादरसुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसधणियाओ जहण्णेण उक्कस्सेण य आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव सव्वत्थ होंति त्ति परूविदत्तादो। एत्थ उवदेसं लद्धूण णिण्णओ कायव्वो।

महामच्छा सयंभूरमणसमुद्दे वट्टमाणकाले जेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता दीसंति तेणुक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ पदरस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताओ होंति त्ति? ण, सव्वमहामच्छेसु उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति णियमाभावादो पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणिदकम्मंसियाणमभावादो च। गुणिद-कम्मंसिया एगसमयम्हि उक्कस्सेण जेणावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव तेण सरिसधणियवग्गणाओ उक्कस्सट्ठाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव त्ति घेत्तव्वं। अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णट्ठाणे वि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा

प्राप्त होती हैं। बादरनिगोदवर्गणाऐं क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य चार, उत्कृष्ट दो और मध्यम आठ प्राप्त होती हैं। ओघ उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाऐं मूलक, थूवर और लता आदिकमें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। सदृश धनवाली सबसे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाऐं पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। सबसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाऐं जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा जो कहा है वह आगे कही जानेवाली यव-मध्यप्ररूपणाके साथ विरोधको प्राप्त होता है, क्योंकि वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणाऐं, बादरनिगोद-वर्गणाऐं और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाऐं सर्वत्र जघन्य और उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं ऐसा कथन किया है सो इस विषयमें उपदेशको प्राप्त करके निर्णय करना चाहिए।

शंका—स्वयंभूरमण समुद्रमें वर्तमान कालमें यत: जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण महामत्स्य दिखलाई देते हैं. अत: उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणाऐं जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि सब महामत्स्योंमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है ऐसा नियम नहीं है तथा जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणितकर्मांशिक जीवोंका अभाव है, इसलिए भी जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाऐं नहीं हो सकतीं। यत: एक समयमें गुणितकर्मांशिक जीव उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं अत: उत्कृष्ट सदृश धनवाली वर्गणाऐं आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए।

अभव्यप्रायोग्य जघन्य स्थानमें भी क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव । तदो जवमज्झपरूवणाए भणिदुवदेसो पहाणो त्ति घेत्तव्वो । अजहण्णमणुक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्ताओ लब्भंति । सव्वजहण्णसुहुमणिगोदसरिसधणियवग्गणाओ जले थले आगासे वा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति । उक्कस्सियाओ पुण सरिसधणियसुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंतीओ[1] महामच्छसरीरेसु दिस्संति । अजहण्णमणुक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तीयो होंति । महाखंधदव्ववग्गणा पुण वट्टमाणकाले एया चेव महाखंधो णाम। भवणविमाणट्ठपुढविमेरुकुलसेलादीणमेगीभावो महाखंधो । असंखेज्जजोयणाणि अंतरिदूण ट्ठिदाणं कथमेयत्तं ? ण, एयबंधणबद्धसुहुमेहि पोग्गलक्खंधेहि समवेदाणमंतराभावादो । एसा णाणासेडीए परूवणा कदा । एवं वग्गणपरूवणा समत्ता (१) ।

वग्गणणिरूवणिदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥९८॥

एदं पुच्छासुत्तं । एत्थ ण[2] परमाणुग्गहणं कायव्वं; परमसुहुमत्ताविणाभाविएयपदेसियगहणेणेव तस्स सिद्धीदो ? ण एस दोसो; जेण सव्वाओ वग्गणाओ

असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं। इसलिए यवमध्यप्ररूपणामें कहा गया उपदेश प्रधान है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण उपलब्ध होती हैं । सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोद सदृश धनवाली वर्गणाएँ जल, स्थल और आकाशमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं। परन्तु उत्कृष्ट सदृश धनवाली सूक्ष्मनिगदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हुई महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती है। अजघन्य अनुत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । परन्तु महास्कन्ध वर्गणा वर्तमान कालमें एक ही महास्कन्ध नामवाली होती है।

शंका—असंख्यात योजनोंका अन्तर देकर स्थित हुए पुद्गलोंका एकत्व कैसे हो सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि एकबन्धनबद्ध सूक्ष्म पुद्गलस्कन्धोंसे समवेत पुद्गलोंका अन्तर नहीं पाया जाता।

यह नानाश्रेणिकी अपेक्षा प्ररूपणा की।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा समाप्त हुई।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥९८॥

यह पृच्छासूत्र है।

शंका—यहाँ परमाणु पदका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि परम सूक्ष्मत्वके अविनाभावी एकप्रदेशी पदके ग्रहणसे ही उसकी सिद्धि हो जाती है ?

१. ता०प्रतौ 'होंति (ती) अ०आ०का०प्रतिषु: 'होंति' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'एत्थतण (एत्थ ताव ण) परमाणु-' अ०आ०का० प्रतिषु 'एत्थतण परमाणु-' इति पाठः ।

परमाणुपोग्गलेहिंतो चेवुप्पण्णाओ तेण सव्वासिं वग्गणाणं परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा त्ति सण्णा । तिस्से वग्गणाए एयादिपदेसा जेण विसेसणं तेण दोण्णं पि गहणं कायव्व-मिदि । खंधाणं विहडणं भेदो णाम । परमाणुपोग्गलसमुदयसमागमो संघादो णाम । भेदं गंतूण पुणो समागमो भेदसंघादो णाम । संपहि एसा एयपदेसियपरमाणुपोग्गल दव्ववग्गणा किं भेदेण उप्पज्जदि आहो संघादेण किं वा भेदसंघादेणे त्ति पुच्छा कदा होदि । तण्णिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण ॥९९॥

दुपदेसियादिउपरिमवग्गणाणं भेदेणेव एयपदेसिया वग्गणा होदि; सुहुमस्स थूलभेदादो चेव उप्पत्तिदंसणादो। संघादेण भेदसंघादेण वा एयपदेसियपरमाणुपोग्गल-दव्ववग्गणा ण होदि; एदम्हादो हेट्ठा वग्गणाणमभावादो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१००॥

सुगमं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥१०१॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यतः सब वर्गणाऐं परमाणु पुद्गलोंसे ही उत्पन्न हुई हैं, अतः सब वर्गणाओं की परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा यह संज्ञा है। तथा उस वर्गणाके एकादि प्रदेश यतः विशेषण हैं, अतः एकप्रदेशी और परमाणुपुद्गल इन दोनों पदोंका ग्रहण करना चाहिए।

स्कन्धोंका विभाग होना भेद है। परमाणुपुद्गलोंका समुदाय समागम होना संघात है। भेदको प्राप्त होकर पुनः समागम होना भेदसंघात है। यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है या क्या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गई है। अब उसका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे उत्पन्न होती है ॥९९॥

द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे ही एकप्रदेशी वर्गणा होती है, क्योंकि सूक्ष्म-की स्थूलके भेदसे ही उत्पत्ति देखी जाती है। संघातसे और भेद-संघातसे एकप्रदेशी परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा नहीं होती है, क्योंकि इससे नीचे अन्य वर्गणाओंका अभाव है।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१००॥

सुगम है।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे और नीचेके द्रव्योंके संघातसे तथा स्वस्थानमें भेद-संघातसे होती है ॥१०१॥

जेण एयपदेसियपरमाणुपोग्गलाणं दोण्हं समुदयसमागमेण दुपदेसियवग्गणा होदि तेणेसा हेट्ठिल्लीणं संघादेण होदि। उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि। तं जहा— तिपदेसियवग्गणाए एगपरमाणुपोग्गले विरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदे दुपदेसियदव्ववग्गणा होदि। चदुपदेसियखंधादो दोसु परमाणुपोग्गलेसु निरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदेसु दुपदेसियवग्गणा होदि। पंचपदेसियखंधादो तिसु परमाणुपोग्गलेसु भेदं गदेसु दुपदेसियवग्गणा होदि। एवमुवरिमसव्ववग्गणाणं भेदेण दुपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती वत्तव्वा। तिपदेसियादिवग्गणाणं भेदेण दुपदेसियवग्गणा उप्पज्जदि त्ति कट्टु उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेणे त्ति भणिदं। एयपदेसियवग्गणाणं दोण्णं समुदयसमागमेणेव दुपदेसियवग्गणा समुप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेणे त्ति भणिदं। दुपदेसियवेखंधा भेदं गंतूण जदा पुव्वसंबद्धपरमाणुणा अण्णेण वा समागममागदा होंति तदा दुपदेसियवग्गणा सत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पण्णे त्ति भण्णदि। दुपदेसियवग्गणा भेदं गदा संती एयपदेसियवग्गणा होदि। पुणो ताणं दोण्णं परमाणूणं समुदयसमागमेण उप्पण्णा दुपदेसियवग्गणा हेट्ठिलीणं दव्वाणं संघादेण समुप्पण्णे त्ति सत्थाणेण भेदसंघादेण दुपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती होदि त्ति जं भणिदं तण्ण घडदे? एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा—अवयवविभागो उप्पण्णो संतो अवयवसंजोगविणासं कुणदि णाणुप्पण्णो, णिरहेउअस्स कज्जस्स उप्पत्तिविरोहादो। तदो अवयवविभा-

यतः दो एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलोंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशी वर्गणा होती है, इसलिए यह नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे होती है। ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी होती है। यथा—त्रिप्रदेशी वर्गणामें एक परमाणु पुद्गलके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होने पर द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा उत्पन्न होती है। चार प्रदेशी स्कन्धसे दो परमाणु पुद्गलोंके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है। पञ्चप्रदेशी स्कन्ध से तीन परमाणु पुद्गलोंके भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है। इस प्रकार उपरिम सब वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति कहनी चाहिए। त्रिप्रदेशी आदि वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है ऐसा समझ कर 'ऊपरके द्रव्योंके भेदसे' यह वचन कहा है। एकप्रदेशी दो वर्गणाओंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है इसलिए 'नीचेके द्रव्योंके संघातसे' यह वचन कहा है। द्विप्रदेशी दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होकर जब पूर्व सम्बद्ध परमाणुके साथ या अन्य परमाणुके साथ समागमको प्राप्त होते हैं तब द्विप्रदेशी वर्गणा स्वस्थानमें भेद-संघातसे उत्पन्न होती है ऐसा कहा है।

शंका—द्विप्रदेशी वर्गणा भेदको प्राप्त होकर एकप्रदेशी वर्गणा होती है। पुनः उन दो परमाणुओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई द्विप्रदेशी वर्गणा नीचेके द्रव्योंके संघातसे उत्पन्न हुई है इसलिए स्वस्थानमें भेद-संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है ऐसा जो कहा है वह नहीं बनता है?

समाधान—यहां इस शंकाका परिहार करते हैं। यथा—अवयवोंका विभाग उत्पन्न होकर वह अवयवोंके संयोगका विनाश करता है, अनुत्पन्न होकर नहीं, क्योंकि अहेतुक

गुप्पण्णसमए चेव संजोगविणासेण होदव्वं; विरोहिगुणुप्पत्तीए[1] संतीए संजोगस्स अवट्ठाणविरोहादो। ण च अवयवसंजोगविणासकाले एयपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती अत्थि; विणासुप्पत्तीणमेगदव्वविसयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो। अविरोहे वा जो विणासो सा चेव वुप्पत्ती, जा वुप्पत्ती सो चेव विणासो त्ति विणासुववत्तिववहाराणं संकरो होज्ज। ण च एवं; असंकिण्णववहारुवलंभादो। तदो विभागसमए परमाणुवग्गणाए ण उप्पादो दुपदेसियवग्गणाए भेदो चेवे त्ति सिद्धो। पुणो एदेसिं भेदाणं संघादेण समागदेण दुपदेसियवग्गणा उप्पज्जदि त्ति सत्थाणेण भेदसंघादेण जा दुपदेसियवग्गणाए समुप्पत्ती सा पुव्विल्लभंगेसु णांतब्भावं[2] गच्छदि त्ति सिद्धं[3]। अथवा दुपदेसियवग्गणाए दोसु खंधेसु भेदं गच्छंतसमए चेव अण्णोण्णेण समागमं गंतूण कमेण दुपदेसियवग्गणाओ उप्पज्जंति त्ति भेदसंघादेणुप्पत्ती वत्तव्वा। एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं।

तिपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा चदु० पंच० छ० सत्त० अट्ठ० णव० दस० संखेज्ज० असंखेज्ज० परित्त० अपरित्त०

कार्यकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है, इसलिए अवयवोंके विभागके उत्पन्न होनेके समय ही संयोग का विनाश होना चाहिए, क्योंकि विरोधी गुणकी उत्पत्ति होने पर संयोगका अवस्थान होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि अवयवोंके संयोगके विनाशके समय ही एकप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि एक द्रव्यको विषय करनेवाले विनाश और उत्पत्तिकी युगपत् वृत्ति होनेमे विरोध है। यदि विरोध नहीं माना जाता है तो जो विनाश है वही उत्पत्ति हो जायगी और जो उत्पत्ति है वही विनाश हो जायगा, इसलिए विनाश और उत्पत्तिके व्यवहारमें संकर हो जायगा। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि इन दोनोंका सांकर्य दोषसे रहित होकर व्यवहार उपलब्ध होता है, इसलिए विभागके समयमें परमाणु वर्गणाकी उत्पत्ति नहीं होती, उस समय द्विप्रदेशी वर्गणाका भेद ही होता है यह बात सिद्ध हुई। पुनः इन भेदोंके प्राप्त हुए संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है, इसलिए स्वस्थानमें भेदसंघातसे जो द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति हुई है वह पहलेके भङ्गोंमें अन्तर्भावको नहीं प्राप्त होती है यह सिद्ध हुआ। अथवा द्विप्रदेशी वर्गणाके दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होनेके समयमें ही परस्परमें समागमको प्राप्त होकर क्रमसे द्विप्रदेशी वर्गणाएँ उत्पन्न होती हैं, इसलिए भेद-संघातसे उत्पत्ति कहनी चाहिए। यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए।

त्रिप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, चारप्रदेशी, पाँचप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीत-

१. ता०प्रतौ '-गुणुप्पत्तीए संजोगस्स' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'अव[यव]द्वाण-' अ०आ०का० प्रतिषु 'अवयवट्ठाण-' इति पाठः। ३. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'णांतयब्भावं' इति पाठः।

अणंत० अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१०२॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥१०३॥

एदं पि सुत्तं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो। हेट्ठिल्लुवरिल्लवग्गणाणं भेदसंघादेण अप्पिदवग्गणाणमुप्पत्ती किण्ण वुच्चदे; भेदकाले विणासं मोत्तूण उप्पत्तीए अभावं पडि विसेसाभावादो ? ण; तत्थ एवंविधणयाभावादो । अथवा भेदसंघादस्स एवमत्थो वत्तव्वो । तं जहा—भेदसंघादाणं दोण्णं संजोगो सत्थाणं णाम; तम्हि णिरुद्धे उवरिल्लीणं हेट्ठिल्लीणं अप्पिदाणं च दव्वाणं भेदपुरंगमसंघादेण[1] अप्पिदवग्गणुप्पत्ति-दंसणादो । सत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पत्ती वुच्चदे । सव्वो वि परमाणुसंघादो भेदपुरंगमो चेवे त्ति सव्वासिं वग्गणाणं भेदसंघादेणेव उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण एस दोसो; भेदाणंतरं जो संघादो सो भेदसंघादो णाम ण अंतरिदो; अव्ववत्था-

प्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१०२॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥१०३॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि पहले व्याख्यान कर आये हैं ।

शंका—नीचे की और ऊपरकी वर्गणाओंके भेद-संघातसे विवक्षित वर्गणाओंकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते, क्योंकि भेदके समय विनाशको छोड़कर उत्पत्तिके अभावके प्रति कोई विशेषता नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहां पर इस प्रकारके नयका अभाव है । अथवा भेद-संघातका इस प्रकारका अर्थ कहना चाहिए । यथा—भेद और संघात दोनोंका संयोग स्वस्थान कहलाता है । उसके विवक्षित होने पर ऊपरके, नीचेके और विवक्षित द्रव्योंके भेदपूर्वक संघातसे विवक्षित वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है । इसे स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पत्ति कहते हैं ।

शंका—सभी परमाणुसंघात भेदपूर्वक ही होता है, इसलिए सभी वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे ही क्यों नहीं कहते ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि भेदके अनन्तर जो संघात होता है उसे भेद-संघात कहते हैं । जो अन्तरसे होता है उसकी यह संज्ञा नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेपर

१. ता०प्रतौ 'भेदपुरंगमत्तादो संघादेण' इति पाठः ।

प्पसंगादो[1]। तम्हा ण सव्ववग्गणाणं भेदसंघादेणुप्पत्ती।

आहार० अगहण० तेया० अगहण० भासा० अगहण० मण० अगहण० कम्मइय० धुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१०४॥

सुगमं।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥१०५॥

सुगमं।

धुवखंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१०६॥

सुगमं।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥१०७॥

तं जहा—ण पत्तेयबादरसुहुमणिगोदवग्गणा भेदेणं[2] होदि; सचित्तवग्गणाण-

अव्यवस्थाका प्रसंग आता है। इसलिए सब वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे नहीं होती।

आहारद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, तैजसद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, कार्मणद्रव्यवर्गणा और ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१०४॥

सुगम है।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥१०५॥

सुगम है।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१०६॥

सुगम है।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥१०७॥

यथा—प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं

१. ता०प्रतौ 'अव्वत्थाप्पसंगादो' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-णिगोदवग्गणा [णं] भेदेण' अ०प्रतौ 'णिगोदवग्गणाणं भेदेण' आ०प्रतौ 'णिगोदाणं वग्गणाणं भेदेण इति पाठः।

मचित्तवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो। ण च सचित्तवग्गणाए कम्म-णोकम्मक्खंधेसु तत्तो विप्फट्टिय सांतरणिरंतरवग्गणाणमायारेण परिणदेसु तब्भेदेणेदिस्से समुप्पत्ती; तत्तो विप्फट्टसमए चेव ताहिंतो पुधभूदक्खधाणं सचित्तवग्गणभावविरोहादो। ण महाखंधभेदेणेदिस्से समुप्पत्ती; महाखंधादो विप्फट्टखंधाणं महाखंधभेदेहिंतो पुधभूदाणं महाखंधववएसाभावेण तेसिं तब्भेदत्ताणुववत्तीदो। एदम्मि णए अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण ण होदि त्ति परूविदं। दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि। धुवक्खंधादीणं संघादेण सांतरणिरंतरवग्गणा ण होदि; दव्वट्ठियणयावलंबणादो। सांतरणिरंतरवग्गणा एक्का चेव; तिस्से आयारेण धुवखंधवग्गणादीणमणंतरं चेव परिणामाभावादो। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे हेट्ठिल्लीणं संघादेण वि होदि; उक्कस्सधुवक्खंधवग्गणाए एगादिपरमाणुसमागमे सांतरणिरंतरवग्गणाए समुप्पत्तिं पडि विरोहाभावादो। ण विवरीयकप्पणा; सचित्तवग्गणट्ठाणाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। सांतरणिरंतरवग्गणाए परिणामंतरावत्ती णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; धुवसुण्णवग्गणाणमाणंतियप्पसंगादो। ण सत्थाणे चेव परिणामो वि; जहण्णवग्गणादो परमाणुत्तरवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो सांतरणिरंतरवग्गणाए अभाव-

होती, क्योंकि सचित्तवर्गणाओंका अचित्तवर्गणारूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि सचित्तवर्गणाके कर्म और नोकर्मस्कन्धोंके उससे अलग होकर सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे परिणत होनेपर उनके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि उनसे अलग होनेके समय ही उनसे अलग हुए स्कन्धोंको सचित्त वर्गणा होनेमें विरोध आता है। महास्कन्धके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि महास्कन्धसे अलग हुए स्कन्ध यतः महास्कन्धके भेदसे अलग हुए हैं, अतः उनकी महास्कन्ध संज्ञा नहीं हो सकती और इसलिए उनका उससे भेद नहीं बन सकता। इस नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं होती है यह कहा गया है। परन्तु द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी यह वर्गणा होती है। ध्रुवस्कन्ध आदिकके संघात से सान्तरनिरन्तर वर्गणा नहीं होती है, क्योंकि यहां द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। सान्तरनिरन्तर वर्गणा एक ही है, उस रूपसे ध्रुवस्कन्ध वर्गणा आदिका अनन्तर ही परिणामका अभाव है। परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेने पर नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे भी यह वर्गणा होती है, क्योंकि उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धवर्गणामें एक आदि परमाणुका समागम होनेपर सान्तरनिरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यह विपरीत कल्पना भी नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने पर सचित्तवर्गणास्थानोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है। सान्तरनिरन्तरवर्गणाका दूसरे प्रकारसे परिणमन नहीं होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है। केवल स्वस्थानमें ही परिणमन होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि जघन्य वर्गणासे एक परमाणुअधिक वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध आता है, दूसरे

१. ता०आ०का० प्रतिषु '-क्खंधादीणं सांतर-' इति पाठः।

प्पसंगादो च। तम्हा सत्थाणेण भेदसंघादेणेव होदि त्ति घेत्तव्वं। अथवा उवरिम-वग्गणाओ विप्फट्टाओ धुवखंदादिसरूवेणेव णिवदंति; साहावियादो। धुवखंदादि-हेट्ठिमवग्गणाओ सत्थाणे चेव समागमंति उवरिमवग्गणाहि वा; साहावियादो। सांतर-णिरंतरवग्गणा पुण सत्थाणे चेव भेदेण संघादेण तदुभयेण वा परिणमदि त्ति जाणा-वणट्ठं भेदसंघादेणे त्ति परूविदं।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥१०८॥

केसु वि सुत्तपोत्थएसु[1] एसो पाठो। एदस्स सुत्तस्स जहा धुवखंधवग्गणाए तिहि पयारेहि उप्पत्ती परूविदा तहा एत्थ वि परूवेदव्वा; विसेसाभावादो। कथं सचित्तवग्गणा महाखंधवग्गणा वा सांतरणिरंतरवग्गणसरूवेण परिणमइ ? ण, तब्भेदेण आगदक्खंधाणं सांतरणिरंतरवग्गणायारेण परिणामुवलंभादो।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१०९॥

सान्तरनिरन्तर वर्गणाका अभाव भी प्राप्त होता है, इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही यह वर्गणा होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। अथवा ऊपरकी वर्गणाएं टूट कर ध्रुवस्कन्ध आदि रूपसे ही उनका पतन होता है, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। तथा ध्रुवस्कन्ध आदि नीचेकी वर्गणाएं स्वस्थानमें ही समागमको प्राप्त होती हैं, अथवा ऊपरकी वर्गणाओंके साथ समागमको प्राप्त होती हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। परन्तु सान्तरनिरन्तरवर्गणा स्वस्थानमें ही भेदसे, संघातसे या तदुभयसे परिणमन करती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'भेद-संघातसे' ऐसा कहा है।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघात से होती है ॥१०८॥

कितनी ही सूत्र पोथियोंमें यह पाठ है। इस सूत्रकी व्याख्या करते समय जिस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी तीन प्रकारसे उत्पत्ति कही है उसी प्रकार यहाँ भी कहनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

शंका– सचित्तवर्गणा या महास्कन्धवर्गणा सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे कैसे परिणमन करती है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि उनके भेद द्वारा आये हुए स्कन्धोंका सान्तरनिरन्तरवर्गणा-रूपसे परिणमन पाया जाता है।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१०९॥

१. ता०प्रतौ 'सुत्तपोत्त (त्थ) एसु' अ०आ०का० प्रतिषु 'सुत्तपोत्तएसु' इति पाठः।

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥११०॥

परमाणुवग्गणमादिं कादूण जाव सांतरणिरंतरउक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणं समुदयसमागमेण पत्तेयसरीरवग्गणा ण समुप्पज्जदि[1] । कुदो ? उक्कस्ससांतर-णिरंतरवग्गणाण सरूवं मोत्तूण रूवाहियादिउवरिमवग्गणसरूवेण परिणमणसत्तीए अभावादो । आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलक्खंधेसु[2] जोगकसायवसेण पत्तेय-वग्गणाए बंधमागदेसु अण्णपत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लाणं दव्वाणं संघादेण पत्तेयसरीरवग्गणाए[3] उप्पत्ती किण्ण भण्णदे ? ण, पत्तेयसरीरवग्गणसमागमेण विणा हेट्ठिमवग्गणाणं चेव समुदयसमागमेण समुप्पज्जमाणपत्तेयसरीरवग्गणाणुवलंभादो । किं च जोगवसेण एगबंधणबद्धओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलक्खंधा अणंताणंत-विस्सासुवचएहि उवचिदा । ण ते सव्वे सांतरणिरंतरादिहेट्ठिमवग्गणासु कत्थ वि सरिसधणिया होंति; पत्तेयवग्गणाए असंखेज्जदिभागत्तादो । ण ते पत्तेयसरीरजहण्ण-वग्गणाए सह सरिसा होंति; तदसंखे०भागत्तादो । ण ते पुध वग्गणसण्णं लहंति; जीवादो पुधभूदकाले तेसिमेगबंधाभावादो । तम्हा हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण ण

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥११०॥

परमाणुवर्गणासे लेकर सान्तरनिरन्तर उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंके समुदय-समागमसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंका अपने स्वरूपको छोड़कर एक अधिक आदि उपरिम वर्गणारूपसे परिणमन करनेकी शक्तिका अभाव है।

शंका—आहारद्रव्यवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाके पुद्गलस्कन्धोंके योग और कपायके वशसे प्रत्येकवर्गणारूपसे बन्धको प्राप्त होनेपर उनसे अन्य प्रत्येक शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, अतः नीचेके द्रव्योंके संघातसे प्रत्येक शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कही जाती ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रत्येकशरीरवर्गणाके समागमके बिना केवल नीचेकी वर्गणाओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न होनेवाली प्रत्येकशरीरवर्गणाएं नहीं उपलब्ध होतीं । दूसरे, योगके वशसे एकबन्धनबद्ध औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलस्कन्ध अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित होते हैं । परन्तु वे सब सान्तरनिरन्तर आदि नीचेकी वर्गणाओंमें कहीं भी सदृशधनवाले नहीं होते, क्योंकि वे प्रत्येकवर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे प्रत्येक-शरीर जघन्य वर्गणाके सदृश भी नहीं होते, क्योंकि वे उसके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे अलग रूपसे वर्गणासंज्ञाको भी नहीं प्राप्त होते, क्योंकि जीवसे अलग होनेके कालमें उनका

१. ता०प्रतौ 'ण [स–] मुप्पज्जदि' अ०आ०का० प्रतिषु 'ण मुप्पज्जदि' इति पाठः । २. ता०प्रतौ '–कम्मइयपोग्गल' इति पाठः । ३. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'बंधमागदेसु अण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए' इति पाठः ।

पत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति सिद्धं । उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण विणा पत्तेयसरीर-वग्गणा उप्पज्जदि, बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयवग्गणक्खंधेसु अध-ट्ठिदिगलणाए गलिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणं वोलेदूण हेट्ठा सांतरणिरंतरादिवग्गणसरूवेण सरिसधणियभावेण अवट्ठाणुवलंभादो । कथमेदं णव्वदे ? सत्थाणेण भेदसंघादेणेव पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । भेदं गदविदियसमए पत्तेयवग्गण-सरूवेण तेसिं परिणामो अत्थि त्ति उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरवग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण, उवरिमवग्गणादो आगदपरमाणुपोग्गलेहि चेव पत्तेयसरीर-वग्गणणिप्पत्तीए अभावादो । बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो एगजीवपत्तेयसरीरेसुप्पण्णे संते उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण, उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदो णाम विणासो । ण च बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणं मज्झे एया वग्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवग्गणासरूवेण परिणमदि; पत्तेयवग्गणाए आणंतिय-प्पसंगादो । ण च असंखेज्जलोगमेत्तजीवेहि एगा बादरणिगोदवग्गणा सुहुमणिगोद-वग्गणा वा णिप्पज्जदि; तव्वग्गणाणमाणंतियप्पसंगादो विप्फट्टेगजीवस्स बादर-सुहुम-

एक बन्धन नहीं होता । इसलिए नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदके बिना प्रत्येकशरीरवर्गणा उत्पन्न होती है, क्योंकि बादरनिगोद-वर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके औदारिक, तैजस और कार्मणवर्गणास्कन्धोंके अधःस्थिति-गलनाके द्वारा गलित होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाको उल्लंघन कर उनका नीचे सदृशधनरूप सान्तरनिरन्तर आदि वर्गणारूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जता है ।

शंका—भेदको प्राप्त होनेके दूसरे समयमें प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे उनका परिणमन होता है, इसलिए उपरिम द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उपरिम वर्गणासे आये हुए परमाणु पुद्गलोंसे ही प्रत्येकशरीर-वर्गणाकी निष्पत्तिका अभाव है ।

शंका—बादरनिगोदवर्गणासे और सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक जीवके प्रत्येकशरीरवालोंमें उत्पन्न होने पर ऊपरके द्रव्याके भेदसे प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऊपरकी वर्गणाओंके भेदका नाम ही विनाश है और बादरनिगोद-वर्गणा तथा सूक्ष्मनिगोदवर्गणामेंसे एक वर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे नहीं परिणमती, क्योकि ऐसा होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ अनन्त हो जाँयगी । यदि कहा जाय कि असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा या सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि इस प्रकार उन वर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है । तथा अलग हुए एक जीवके बादरनिगोदवर्गणाके और सूक्ष्मनिगोद-

णिगोदवग्गणाणमणंतिमभागदव्वस्स तब्भेदत्ताणुववत्तीदो वा। ण च महाखंधवग्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवग्गणसरूवेण परिणमदि; तिस्से सव्वकालं विणासाभावादो पत्तेय-सरीरवग्गणाए आणंतियप्पसंगादो णिच्चेयणस्स सचेयणभावेणपरिणामविरोहादो वा। तदो पत्तेयसरीरवग्गणा उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण संघादेण वा ण होदि त्ति सिद्धं। किंतु सत्थाणेण भेदसंघादेण होदि; पत्तेयवग्गणभेदाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण असमागमेण वा वग्गणुप्पत्तिदंसणादो।

पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥१११॥

सुगमं।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥११२॥

हेट्ठिल्लीणं ताव संघादेण बादरणिगोदवग्गणा ण होदि; णिच्चेयणाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण सचित्तवग्गणुप्पत्तिविरोहादो असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणं समुदयसमागमेण अणंतजीवगब्भेगबादरणिगोदवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो। ण च उवरिमसचित्तवग्गणाए भेदेण होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवाणमक्कमेण सव्वेसिं पि

वर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण द्रव्यका उस रूपसे भेद भी नहीं बन सकता है। यदि कहा जाय कि महास्कन्धवर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे परिणमन करती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि एक तो उसका सर्वकाल विनाश नहीं होता, दूसरे ऐसा माननेपर प्रत्येक-शरीरवर्गणाके अनन्त होनेका प्रसंग आता है और तीसरे अचेतनका सचेतनरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणा उपरिम वर्गणाओंके भेद या संघातसे नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ। किन्तु स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, क्योंकि प्रत्येक वर्गणाके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके समुदयसमागम या असमागमसे वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है।

प्रत्येकशरीरवर्गणाके ऊपर बादरनिगोदवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥१११॥

यह सूत्र सुगम है।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥११२॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे तो बादरनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती नहीं, क्योंकि अचेतन वर्गणाओंके समुदयसमागमसे सचेतन वर्गणाओंकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। तथा असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके समुदयसमागमसे अनन्तजीवगर्भ एक बादरनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। यह कहना उपरिम सचित्तवर्गणाके भेदसे यह वर्गणा होती है, ठीक नहीं है, क्योंकि एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके सब जीवोंका युगपत् बादरनिगोदवर्गणारूपसे

बादरणिगोदवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो सुहुमणिगोदेहिंतो आगंतूण बादरणिगोदेसु उप्पण्णेहि चेव जीवेहि आरद्धबादरणिगोदवग्गणाए अभावादो वा। कुदो एदं णव्वदे ? उवरिल्लीणं भेदेण णत्थि त्ति वयणादो। महाखंधदव्ववग्गणाए भेदेण बादरणिगोदवग्गणा [ण] उप्पज्जदि; तिस्से विणासाभावादो अचित्तस्स सचित्तभावेण परिणामविरोहादो च। सत्थाणेण भेदसंघादेणेव बादरणिगोदवग्गणा होदि। सुहुमणिगोदेहिंतो पत्तेयसरीरेहिंतो चेव आगदेहिं[1] जीवेहि बादरणिगोदजीवेहिं च एगेगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि। बादरणिगोदेहिंतो जेण सुहुमणिगोदा असंखेज्जलोगगुणा तेण एगबादरणिगोदवग्गणा सुद्धेहि सुहुमणिगोदेहि चेव आरद्धे त्ति भणिदे को दोसो ? ण, एगसुहुमणिगोदवग्गणट्ठियजीवाणमणंतिमभागाणं चेव बादरणिगोदेसु संचारुवलंभादो।

बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥११३॥

सुगमं।

परिणमन होनेमें विरोध है। तथा जो जीव सूक्ष्म निगोदोंमेंसे आकर बादरनिगोदोंमें उत्पन्न होते हैं उनके द्वारा आरम्भ की गई बादरनिगोदवर्गणाका अभाव है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके भेदसे बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि एक तो उसका विनाश नहीं होता। दूसरे अचित्तका सचित्तरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही बादरनिगोदवर्गणा होती है। सूक्ष्म निगोदमेंसे या प्रत्येकशरीरमेंसे आये हुए जीवोंके द्वारा और बादर निगोद जीवोंके द्वारा एक एक बादरनिगोदवर्गणा निष्पन्न की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यत: बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यात लोकगुणे हैं, अत: एक बादरनिगोद वर्गणा सुद्ध सूक्ष्म निगोदों से आरम्भ होती है यदि ऐसा कहा जाय तो क्या दोष है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें स्थित जीवोंके अनन्तवें भागमात्र जीवोंका ही बादर निगोदोंमें संचार देखा जाता है, अत: एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक बादर निगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं हो सकता।

बादरनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥११३॥

यह सूत्र सुगम है।

१. ता०का०प्रत्योः 'च आगदेहि' इति पाठः।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥११४॥

ण बादरणिगोदवग्गणाणं संघादेण एगसुहुमणिगोददव्ववग्गणा होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवमेत्तबादरणिगोदजीवेहि चेव आरद्धसुहुमणिगोदवग्गणाभावादो[1]। तं पि कुदो णव्वदे ? हेट्ठिल्लीणं संघादेण ण उप्पज्जदि त्ति वयणादो। बादरणिगोदाणं सुहुमणिगोदभावविरोहादो वा बादरणिगोदेहि सुहुमणिगोदवग्गणा णारब्भदि। जदि सुहुमो ण बादरो अह बादरो ण सुहुमो त्ति तेण सुहुमणिगोदेहि चेव सुहुमणिगोददव्ववग्गणा आरब्भदि त्ति भणिदं होदि। ण च बादरणिगोदाणं पत्तेयसरीराणं वा सुहुमणिगोदेसुप्पण्णाणं बादरणिगोदत्तं पत्तेयसरीरत्तं वा अत्थि; विरुद्धपरिणामाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो। एसत्थो पहाणो पत्तेय-बादरणिगोदवग्गणासु वि वत्तव्वो। महाखंधभेदेण वि सुहुमणिगोदवग्गणा ण होदि; पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो। किंतु भेदसंघादेण होदि। सुहुमणिगोदवियप्पवग्गणाणं भेदसंघादेण सुहुमणिगोदवग्गणा उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि। एक्किस्से सुहुमणिगोदवग्गणाए एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णा वग्गणा होदि; एगपरमाणुणा अहियत्तुवलंभादो। एवमणिच्छिज्जमाणे पुव्वं परूविदट्ठाणाणमभावो होज्ज। ण च एवं, तम्हा हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं दव्वाणं समुदय-

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥११४॥

बादरनिगोदवर्गणाओंके संघातसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि एक सूक्ष्म निगोदवर्गणामें जितने जीव हैं उतने बादर निगोद जीवोंके द्वारा आरम्भ की गई सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका अभाव है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है।

अथवा बादर निगोदोंका सूक्ष्म निगोदरूपसे होनेमें विरोध है, इसलिए बादर निगोद सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं करते। जब कि सूक्ष्म बादर नहीं है और बादर सूक्ष्म नहीं है, इसलिए सूक्ष्म निगोदोंके द्वारा ही सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा आरम्भ की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। बादर निगोद और प्रत्येकशरीर जीवोंके मर कर सूक्ष्म निगोदोंमें उत्पन्न होने पर उनका बादर निगोदपन और प्रत्येकशरीरपन नहीं रहता, क्योंकि विरुद्ध परिणामोंकी युगपत् वृत्ति होनेमें विरोध है। यहां यह अर्थ प्रधान है। इसे प्रत्येकशरीरवर्गणा और बादरनिगोदवर्गणा में भी कहना चाहिए। महास्कन्धके भेदसे भी सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि पूर्वोक्त दोषों का प्रसंग आता है। किन्तु भेद-संघातसे होती है। सूक्ष्मनिगोदके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके भेद-संघातसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य वर्गणा होती है, क्योंकि वहां एक परमाणु अधिक देखा जाता है। ऐसा नहीं मानने पर पहले कहे गये स्थानोंका अभाव होता है। परन्तु ऐसा है नहीं, इसलिए नीचेकी स्थितिवाले द्रव्योंके समुदय-

१. ता॰प्रतौ '-वग्गणाभावादो' इति पाठः।

समागमेण सुहुमणिगोदवग्गणाए होदव्वमिदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे—जुत्तमेदं जदि पज्जवट्ठियणओ अवलंबिदो होदि । ट्ठाणपरूवणाए पुण ण दोसो; पज्जवट्ठियणयावलंबणादो । एत्थ पुण दव्वट्ठियणओ अवलंबिदो त्ति परमाणुवड्ढीए हाणीए वा ण वग्गणाए अण्णत्तं किंतु जीवाणं समागमेण भेदेण च सचित्तवग्गणुप्पत्ती होदि । तेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं समागमेण सचित्तवग्गणाओ ण उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि ।

सुहुमणिगोदवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥११५॥

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥११६॥

हेट्ठिमाणं संघादेण विदियमहाखंधवग्गणा ण उप्पज्जदि; तिस्से सव्वद्धमेगं-वग्गणत्तादो । ण च एगादिपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णा वग्गणा होदि; एगवग्गण मोत्तूण तत्थ विदियवग्गणाणुवलंभादो । किंतु भेदसंघादेण होदि;पज्जवट्ठियणयावलंबणादो। तं जहा—एगादिअणंतपरमाणुपोग्गलेसु महाखंधादो[2] फट्टियगदेसु भेदेण अण्णा महाखंध-

समागमसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनी चाहिए ?

समाधान—इस शंकाका समाधान करते हैं—पर्यायार्थिक नयका यदि अवलम्बन लिया जाय तो यह कहना युक्त है । फिर भी स्थानप्ररूपणामें कोई दोष नहीं है, क्योंकि वहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। परन्तु यहाँ पर द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, इसलिए परमाणुकी वृद्धि और हानिसे वर्गणामें अन्यपना नहीं आता, किन्तु जीवोंके समागम और भेदसे सचित्तवर्गणाकी उत्पत्ति होती है. इसलिए नीचेके द्रव्योंके समागमसे सचित्त-वर्गणाऐं नहीं उत्पन्न होतीं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥११५॥

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥११६॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे दूसरी महास्कन्धवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि वह सर्वत्र एक वर्गणारूप है । एक आदि परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अन्य वर्गणा होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि एक वर्गणाको छोड़कर वहाँ दूसरी वर्गणा नहीं पाई जाती । किन्तु वह भेद-संघातसे होती है, क्योकि यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है । यथा—महास्कन्धसे एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके विलग होकर चले जानेपर भेदसे

१. ता० प्रतौ सव्वत्थ एग-' इति पाठः । २. आ० प्रतौ '–अणंतपोग्गलेसु परमाणुसु महाखंधादो' इति पाठः ।

दव्ववग्गणा होदि। तत्थेव एगादिअणंतेसु समागदेसु संघादेण अण्णा महाखंधदव्ववग्गणा होदि। अक्कमेण उवचयावचयेहि वि भेदसंघादेण महाखंधदव्ववग्गणा होदि। एवं तीहि पयारेहि सव्वत्थ भेदसंघादस्स अत्थपरूवणा[1] कायव्वा। उवरिमाणं भेदेण हेट्ठा अपुव्ववग्गणुप्पत्ती भेदजणिदा णाम। हेट्ठिमाणं वग्गणाणं समागमेण सरिसधणिय-सरूवेण अण्णवग्गणुप्पत्ती संघादजा णाम। ण च एदाओ दो वि एत्थ अत्थि, वग्गणबहुत्ताभावादो। एवमेगसेडिवग्गणणिरूवणा समत्ता।

संपहि णाणासेडिवग्गणणिरूवणा एवं चेव कायव्वा। का णाणासेडी णाम? सरिसधणियाणं मुत्ताहल्लोलिसमाणपंतीयो णाणासेडी णाम।

एवं वग्गणणिरूवणे त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

चोद्दससु अणियोगद्दारेसु दोण्णमणियोगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसबारसण्ण-मणियोगद्दाराणं सुत्तकारेण[2] किमट्ठं परूवणा ण कदा। ण ताव अजाणंतेण ण कदा; चउवीसअणियोगद्दारसरूवमहाकम्मपयडिपाहुडपारयस्स भूदबलिभयवंतस्स तद-परिण्णाणविरोहादो। ण विस्सरणालुएण होंतेण ण कदा; अप्पमत्तस्स तदसंभवादो

अन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है। उसीमें एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके आ जानेपर संघातसे अन्य महास्कन्ध वर्गणा होती है। तथा एकसाथ उपचय और अपचय होनेसे भेद-संघातसे महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है। इस प्रकार सर्वत्र तीन प्रकारसे भेद-संघातकी अर्थ-प्ररूपणा करनी चाहिए। उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नीचे अपूर्व वर्गणाकी उत्पत्ति भेदजनित कही जाती है और नीचेकी वर्गणाओंके समागमसे सदृशधनरूपसे अन्य वर्गणाकी उत्पत्ति संघातज कही जाती है। परन्तु ये दोनों यहाँ पर नहीं हैं, क्योंकि यहाँ पर बहुत वर्गणाओंका अभाव है।

इस प्रकार एकश्रेणिवर्गणानिरूपणा समाप्त हुई।

नानाश्रेणिवर्गणानिरूपणा इसी प्रकार करनी चाहिए।

शंका—नानाश्रेणि किसे कहते हैं ?

समाधान—सदृश धनवालोंकी मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान पंक्तिको नानाश्रेणि कहते हैं।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

शंका—सूत्रकारने चौदह अनुयोगद्वारोंमेंसे दो अनुयोगद्वारोंका कथन करके शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन किस लिए नहीं किया है। अजानकार होनेसे नहीं किया है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्मप्रकृति प्राभृतके पारगामी भगवान् भूतबलिको उनका अजानकार माननेमें विरोध है। विस्मरणशील होनेसे नहीं किया है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि अप्रमत्तका विस्मरणशील होना सम्भव नहीं है।

१. आ० प्रतौ 'सव्वत्थ भेदपरूवणा' इति पाठः। २. आ० प्रतौ 'दोण्णमणियोगद्दाराणं सुत्तकारेण' इति पाठः।

त्ति ? ण एस दोसो; पुव्वाइरियवक्खाणकमजाणावणट्ठं[1] तप्परूवणाकरणादो। किमट्ठमणियोगद्दारा णाम तम्हि चेव[2] तत्थतणसयलत्थपरूवणं संखित्तवयणकलावेण कुणंति ? वचिजोगासवदुवारेण ढुक्कमाणकम्मणिरोहट्ठं।

तम्हा दोण्णमणियोगद्दाराणं पुव्विल्लाणं परूवणा देसामासिय त्ति काऊण सेसबारसण्णमणियोगद्दाराणं[3] कस्सामो। तं जहा—एगसेडिवग्गणाधुवाधुवाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किं धुवा किमद्धुवा ? धुवा, अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एयपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणविणासाभावादो। एवं संते एगपरमाणुस्स परमाणुभावेण सव्वद्धमवट्ठाणं पावदि त्ति भणिदे ण एस दोसो; एक्कम्हि परमाणुम्हि विणट्ठे वि अण्णेसिं तज्जादीणं परमाणूणं संभवेण एयपदेसियवग्गणाए धुवत्ताविरोहादो। एगसेडिपरूवणाए णाणासेडिपरमाणूणं कथं गहणं कीरदे ? ण एस दोसो; एदेणेव परमाणुणा एगसेडी[4] घेप्पदि त्ति णियमाभावादो। दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं धुवाओ किमद्धुवाओ ? एत्थ पुव्वं व परूवणा कायव्वा; धुवत्तं पडि भेदाभावादो। सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाओ जाओ

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि पूर्व आचार्योंके व्याख्यानके क्रमका ज्ञान करानेके लिए शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है।

शंका—अनुयोगद्वार वहींपर उसके सकल अर्थका कथन संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा किसलिए करते हैं ?

समाधान—वचनयोगरूप आस्रवके द्वारा प्राप्त होनेवाले कर्मोंका निरोध करनेके लिए अनुयोगद्वार सकल अर्थका संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा कथन करते हैं।

इसलिए पूर्वोक्त दो अनुयोगद्वारोंका कथन देशामर्षक है ऐसा जान कर शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं। यथा—एकश्रेणीवर्गणा ध्रुवाध्रुवानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है ? ध्रुव है, क्योंकि अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलवर्गणाका विनाश नहीं होता।

शंका—ऐसा होने पर एक परमाणुका परमाणुरूपसे सर्वदा अवस्थान प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि एक परमाणुके नष्ट होनेपर भी तज्जातीय अन्य परमाणुओंके सम्भव होनेसे एकप्रदेशी वर्गणाके ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका—एकश्रेणिकी प्ररूपणामें नानाश्रेणिरूप परमाणुओंका ग्रहण कैसे करते हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि इसी परमाणुसे एकश्रेणिका ग्रहण होता है ऐसा कोई नियम नहीं है।

द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धवर्गणा तक ये वर्गणाएं क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? यहां पहलेके समान कथन करना चाहिए, क्योंकि ध्रुवत्वके प्रति कोई भेद नहीं है। जो

१. ता० प्रतौ '-वक्खाणकमेजाणावणट्ठं' इति पाठः। २. आ०प्रतौ 'णामंहि चेव' इति पाठः। ३. प्रतिषु 'सेसबादरसण्णिमणियोग-' इति पाठः। ४. ता० प्रतौ 'एगएगसेडी' इति पाठः।

असुण्णाओ ताओ असुण्णत्तणेण किं धुवाओ किमद्धुवाओ ? अद्धुवाओ। कुदो ? असुण्ण-भावेण सव्वकालं तासिमवट्ठाणाभावादो। एत्थ सरिसधणियक्खंधेसु सव्वेसु विणट्ठेसु वग्गणाभावो। एक्कम्हि वि खंधे संते वग्गणा अत्थि चेवे त्ति घेत्तव्वं। सुण्णाओ सुण्णत्तणेण किं धुवाओ किद्धमधुवाओ ? अद्धुवाओ। कुदो? सुण्णाओ णाम परमाणु-विरहिदवग्गणाओ; तासिं सुण्णभावेण अवट्ठाणाभावादो। हेट्ठिमवग्गणाओ संघादेण उवरिमवग्गणाओ भेदेण जं तेण कालेण सुण्णवग्गणमसुण्णं कुणंति त्ति भणिदं होदि। सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि वग्गणाओ वग्गणादेसेण धुवाओ। को वग्गणादेसो णाम ? वग्गणाणं संभवसामण्णं वग्गणादेसो णाम। तेण वग्गणादेसेण सव्वाओ सव्वकालमत्थि त्ति धुवाओ। पत्तेयसरीरवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि। कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसजोगिअजोगिपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु वट्टमाणकाले संखेज्जाणं चेव जीवाणमुवलंभादो। ण च संखेज्जेहि जीवेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-पत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो। एत्थ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सव्वकालमेदीए वग्गणाए सुण्णाए चेव होदव्वमिदि णियमाभावादो। जाओ असुण्णाओ ताओ वि असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; तासिमेग-सरूवेण अवट्ठाणाभावादो।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाएँ अशून्यरूप हैं वे अशून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? अध्रुव हैं, क्योंकि अशून्यरूपसे उनका सदा काल अवस्थान नहीं रहता। सदृश धनवाले सब स्कन्धोंके विनष्ट होनेपर वर्गणाका अभाव होता है। तथा एक भी स्कन्धके रहनेपर वर्गणा है ही ऐसा अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए। शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? अध्रुव हैं, क्योंकि शून्यका अर्थ है परमाणुओंसे रहित वर्गणाएँ, किन्तु उनका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं रहता। नीचेकी वर्गणाएँ संघातसे और ऊपरकी वर्गणाएं भेदसे उस कालमें शून्यवर्गणाको अशून्यरूप करती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। शून्य वर्गणाएँ और अशून्य वर्गणाएँ भी वर्गणादेशकी अपेक्षा ध्रुव हैं।

शंका—वर्गणादेश किसे कहते हैं ?

समाधान—वर्गणाओंके सम्भव सामान्यको वर्गणादेश कहते हैं।

उस वर्गणादेशकी अपेक्षा सब वर्गणाएँ सर्वदा हैं, इसलिए ध्रुव हैं। जो भव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ सयोगी और अयोगी जीवोंके प्राप्त होती हैं वे शून्यरूप भी हैं और अशून्यरूप भी हैं, क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणे सयोगी-अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीर वर्गणा-स्थानोंमेंसे वर्तमान कालमें संख्यात जीव ही उपलब्ध होते हैं। यह कहना कि संख्यात जीव वर्तमान कालमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंको भर देंगे, ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है। यहां जो वर्गणाएँ शून्य हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि सर्वदा इस वर्गणाको शून्यरूप ही होनी चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है। जो वर्गणाएँ अशून्यस्वरूप हैं वे अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि उन वर्गणाओंका एकरूपसे अवस्थान नहीं रहता।

एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सजोगि-अजोगिपाओग्ग-पत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु अणंताहि वग्गणाहि सुण्णभावेण अवट्ठिदाहि होदव्वं; तिसु वि कालेसु सजोगि-अजोगीहि अच्छुत्ताणंतट्ठाणसंभवादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पत्तेयसरीरवग्गणाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं पि वग्गणाणं उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण पच्छा असुण्णत्तुवलंभादो । एदं पि संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण णिहालिज्जमाणे सुण्णाओ[1] सुण्णत्तणेण अवट्ठिदाओ अत्थि; पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएहि देव-णेरइय-सजोगि-अजोगिजीवेहि असंखेज्जलोग-मेत्तेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणमावूरणे संभवाभावादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; पत्तेयसरीवग्गणदव्वाणं वड्ढिहाणीहि विणा सव्वत्थमवट्ठाणाभावादो । वग्गणादेसेण पुण पत्तेयसरीरवग्गणाओ सव्वाओ धुवाओ होंति; सांतरणिरंतरवग्गणाणं व सव्वेसिं पत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणं कम्हि वि काले सुण्णत्ताणुवलंभादो ।

बादरणिगोदवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायम्मि लब्भ-माणाओ ताओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं सुण्णभावेण सव्वकाल-मवट्ठाणाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ अत्थि; संखेज्जाणं खीणकसायाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तखीण-

यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर सयोगी और अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंमेंसे अनन्त वर्गणाएँ शून्यरूपसे अवस्थित होनी चाहिए, क्योंकि तीनों ही कालोंमें सयोगी और अयोगी जीवोंके द्वारा नहीं छुए गये अनन्त स्थान सम्भव हैं। तथा अभव्योंके योग्य जो प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ शून्यरूप हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि शून्यरूप वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे बादमें अशून्यरूपसे सद्भाव पाया जाता है। यह भी सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा देखने पर शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे अवस्थित हैं, क्योंकि पृथिवीकायिक, जल-कायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, सयोगी और अयोगी इन असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवोंके द्वारा अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका व्याप्त करना सम्भव नहीं है। अशून्य वर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि प्रत्येकशरीरवर्गणाद्रव्योंका वृद्धि और हानिके विना सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता है। परन्तु वर्गणादेशकी अपेक्षा सब प्रत्येकशरीर वर्गणाएँ ध्रुव हैं, क्योंकि सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंके समान सब प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका किसी भी कालमें शून्यपना नहीं पाया जाता।

बादरनिगोदवर्गणाएँ जो कि भव्योंके योग्य क्षीणकषाय गुणस्थानमें उपलब्ध होती हैं वे शून्यरूप होकर शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि शून्य वर्गणाओंका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता। यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे ध्रुव हैं, क्योंकि संख्यात क्षीणकषाय जीवोंका सब जीवोंसे अनन्तगुणे

१. ता०प्रतौ 'णिहालिज्जमाणेण सुण्णाओ' इति पाठः ।

कसायपाओग्गबादरणिगोदट्ठाणेसु तिसु वि कालेसु वुत्तिविरोहादो। सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि अत्थि; सुण्णाणं ट्ठाणाणं केसिं पि कम्हि वि काले असुण्णत्तुवलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; खीणकसायपाओग्गबादरणिगोदवग्गणाणं सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। भावे वा ण कस्स वि णिव्वुई होज्ज; खीणकसायम्मि बादरणिगोदवग्गणाए संतीए केवलणाणुप्पत्तिविरोहादो। अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो? सुण्णाणं पि उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो। एदं संभवं पडुच्च परूविदं। वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणेसु अदीदकाले वि वुत्तिविरोहादो। तं जहा—एक्कम्हि अदीदसमए जदि असंखेज्जलोगमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्विस्से अदीदद्धाए किं लभामो त्ति फलगुणिदिच्छाए पमाणेणोवट्टिदाए अदीदकालादो असंखेज्जलोगगुणमेत्ताणि चेव बादरणिगोदवग्गणासु असुण्णट्ठाणाणि होंति। अण्णाणि सव्वट्ठाणाणि सुण्णाणि चेव। तेण सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ। विग्गहगदीए वट्टमाणा बादरणिगोदजीवा किं बादरणिगोदवग्गणासु पदंति आहो पत्तेयसरीरवग्गणासु त्ति? ण ताव पत्तेयसरीरवग्गणासु पदंति; णिगोदजीवाणं पत्तेयसरीरजीवत्तविरोहादो पत्तेयसरीरवग्गणाए असंखेज्जलोगपमाणत्तं

क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदस्थानोंमें तीनों ही कालोंमें वृत्ति माननेमें विरोध आता है। तथा शून्यवर्गणाएं शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि कोई भी शून्य स्थान किसी भी समय अशून्यरूप होकर उपलब्ध होते हैं। अशून्य वर्गणाएं अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता। यदि उनका अवस्थान होता है तो किसी भी जीवको मोक्ष नहीं हो सकता है, क्योंकि क्षीणकषायमें बादरनिगोदवर्गणाके रहते हुए केवलज्ञानकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। अभव्योंके योग्य जो शून्य वर्गणाएं हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि शून्य वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे कालान्तरमें अशून्यपना पाया जाता है। यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएं ध्रुव भी हैं, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणे सचीयस्थानोंमें अतीत कालमें भी वृत्ति होनेमें विरोध है। खुलासा इस प्रकार है—एक अतीत समयमें यदि असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोदस्थान पाये जाते हैं तो सब अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फलसे गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करनेपर अतीत कालसे असंख्यात लोकगुणे बादर निगोदवर्गणाओंमें अशून्यस्थान प्राप्त होते हैं। अन्य सब स्थान शून्य ही हैं। इसलिए शून्य वर्गणाएं शून्यरूपसे ध्रुव हैं।

शंका—विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव क्या बादरनिगोदवर्गणाओंमें गर्भित हैं या प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें गर्भित हैं? प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें तो गर्भित हो नहीं सकते, क्योंकि एक तो निगोद जीवोंको प्रत्येकशरीर जीव होनेमें विरोध है, दूसरे प्रत्येक

मोत्तूण आणंतियप्पसंगादो च । तदो बादरणिगोदवग्गणाए वट्टमाणकाले अणंताए होदव्वमिदि ? ण एस दोसो; विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धअणंताणंतबादरणिगोदजीवेहि एगबादरणिगोदवग्गणुप्पत्तीदो । वट्टमाणकाले बादरणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं । सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि, उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाणं पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? वग्गणाणमेगसरूवेण सव्वद्धमवट्ठाणाभावादो । वग्गणादेसेण पुण सव्वाओ धुवाओ; अणंताणंतवग्गणाणं सव्वद्धमुवलंभादो ।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णवग्गणाहि सव्वकालं सुण्णत्तणेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ वि अत्थि; वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवग्गणाहि अदीदकालेण वि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणावूरणं पडि संभवाभावादो । कारणं बादरणिगोदाणं व वत्तव्वं । अद्धुवाओ वि; उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाणं पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ सुहुमणिगोदवग्गणाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? सुहुमणिगोदवग्गणाणमवट्ठिदसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

शरीरवर्गणाएँ असंख्यात लोकमात्र प्रमाणको छोड़कर अनन्त हो जायँगी । इसलिए बादर निगोदवर्गणा वर्तमान कालमें अनन्त होनी चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि विग्रहगतिमें भी एक बन्धनमें बँधे हुए अनन्तानन्त बादरनिगोद जीवोंकी एक बादरनिगोदवर्गणा बन जाती है । इसलिए वर्तमान कालमें बादरनिगोदवर्गणाएँ असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य वर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि वर्गणाओंका एकरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता । वर्गणादेशकी अपेक्षा तो सब वर्गणाएं ध्रुव हैं, क्योंकि अनन्तानन्त वर्गणाएँ सर्वदा उपलब्ध होती हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि शून्य वर्गणाओंको सर्वदा शून्यरूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे ध्रुव भी हैं, क्योंकि वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके द्वारा पूरे अतीत कालमें भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है । कारण बादर निगोद जीवोंके समान कहना चाहिए । वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका अवस्थितरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता ।

महाखंधदव्ववग्गणाओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाहि सुण्ण-भावेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो। एसो संभवणिद्देसो। वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि; अदीदकाले समयं पडि एक्केक्के महाखंधट्ठाणे समुप्पण्णे वि सव्वम्हि अदीदकाले अदीदकालमेत्ताणि चेव असुण्णट्ठाणाणि लद्धूण सेससव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधसेचीयट्ठाणाणि; सुण्णभावेण अवट्ठाणुवलंभादो। अद्धुवाओ वि अत्थि; भेदसंघादेण केण वि कालेण सुण्णाणं पि असुण्णत्तुवलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो ? महाखंधवग्गणाणमेगसरूवेण सव्व-कालमवट्ठाणाभावादो। एवं चेव णाणासेडिधुवाधुवाणुगमो वि वत्तव्वो; विसेसाभावादो। एवं धुवाधुवाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणसांतरणिरंतराणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव धुव-खंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतर-णिरंतराओ ? [णिरंतराओ] कुदो ? अणंतरेण विणा मुत्ताहलोलि व्व अवट्ठाणादो। अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतरणिरंतराओ? सांतरणिरंतराओ[1], कत्थ वि णिरंतरेण कत्थ वि सांतरेण वग्गणाणमवट्ठाणुवलंभादो। पुणो तिस्से सांतरणिरंतरवग्गणाए आइरियाणमविरुद्धुवदेसबलेण इमा परूवणा

शून्यरूप महास्कन्धद्रव्यवर्गणाएं शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि शून्य वर्गणाओंको शून्य-रूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है। यह सम्भवकी अपेक्षा निर्देश किया है परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएं ध्रुव भी हैं, क्योंकि अतीत कालके प्रत्येक समय में एक एक महास्कन्धस्थानके उत्पन्न होनेपर भी सब अतीत कालमें अतीत कालमात्र ही अशून्य-स्थान प्राप्त होकर शेष सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्ध सेचीयस्थान होते हैं, क्योंकि उनका शून्यरूपसे अवस्थान पाया जाता है। वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि भेद संघातके द्वारा किसी भी कालमें शून्य वर्गणाएं भी अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं। अशून्य वर्गणाएं अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि महास्कन्धवर्गणाओंका सर्वदा एकरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता। इसी प्रकार नानाश्रेणिध्रुवाध्रुवानुगमका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणासान्तरनिरन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक क्या सान्तर हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं ? निरन्तर हैं, क्योंकि अन्तरके बिना मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान वे अवस्थित हैं। अचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाएं क्या सान्तर हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं ? सान्तर-निरन्तर हैं, क्योंकि कहीं पर निरन्तररूपसे और कहीं पर सान्तररूपसे वे वर्गणाएं उपलब्ध होती हैं। पुनः उस सान्तरनिरन्तरवर्गणाकी आचार्योंके विरोधरहित उपदेशके

१. ता०प्रतौ 'सांतरणिरंतराओ [किं सांतरणिरंतर] सांतरणिरंतराओ' आ०प्रतौ 'सांतर-णिरंतराओ सांतरणिरंतर सांतरणिरंतराओ' इति पाठः।

कीरदे। तं जहा—तत्थ जासिं[1] वग्गणाणं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ मज्झे एक्का चेव वग्गणा असुण्णा तासिं ट्ठविदसलागाओ थोवाओ। जासिं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं दोद्दो[2] असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ। जासिं दोसु[3] वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं तिण्णि तिण्णि असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ। एवं चत्तारि चत्तारि पंच पंच छ छ सत्त सत्त अट्ठ अट्ठ णव णव दस दस संखेज्जाओ संखेज्जाओ असंखेज्जाओ असंखेज्जाओ णिरंतरवग्गणाओ। एदासिमच्चिणिदूण ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमसलागाहिंतो पुध पुध अणंतगुणाओ। तदो उभयपासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे जाओ णिरंतरमणंताओ वग्गणाओ तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ। एवमणंताणंतवग्गणाणं ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो अणंतगुणक्कमेण अणंतरमद्धाणं गच्छंति। तदो उवरिमअणंताणं वग्गणाणं उभयदिसासु सुण्णाणं ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो असंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ होदूण गच्छंति जाव अणंतमद्धाणं गदं ति। तदो उवरिं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ होदूण ट्ठविदसलागाओ णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं[4] गदं ति। तेण परं संखेज्जभागब्भहियाओ

बलसे यह प्ररूपणा करते हैं। यथा—उनमें जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्व भागोंमें शून्य वर्गणाऐं हैं और मध्यमें एक ही वर्गणा अशून्यरूप है उनकी स्थापित की गईं शलाकाऐं स्तोक हैं। जिन वर्गणाओंके दोनों पार्श्व भागोंमें शून्य वर्गणाऐं हैं और मध्यमें निरन्तर दो दो अशून्य वर्गणाऐं हैं उनकी स्थापित की गई शलाकाऐं अनन्तगुणी हैं। जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणाऐं है और मध्यमें निरन्तर तीन तीन अशून्य वर्गणाऐं हैं उनकी स्थापित की गई शलाकाऐं अनन्तगुणी हैं। इस प्रकार चार चार, पाँच पाँच, छह छह, सात सात, आठ आठ, नौ नौ, दस दस, संख्यात संख्यात और असंख्यात असंख्यात जो निरन्तर वर्गणाऐं हैं उनकी अलग अलग स्थापित की गई शलाकाऐं अनन्तर अधस्तन शलाकाओं से पृथक् पृथक् अनन्तगुणी हैं। अनन्तर दोनो पार्श्व भागोंमें शून्य वर्गणाएँ होकर मध्यमें जो निरन्तर अनन्त वर्गणाऐं हैं उनकी स्थापित की गई शलाकाऐं अनन्तगुणी हैं। इसीप्रकार अनन्तानन्त वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलाकाऐं अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे अनन्तगुणित क्रमसे अनन्तर स्थानको जाती हैं। तदनन्तर उपरिम अनन्त वर्गणाओंकी दोनों दिशाओंमें शून्य वर्गणाओंकी स्थापित की गईं शलाकाऐं अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी होकर अनन्त स्थानोंके व्यतीत होनेतक जाती है। तदनन्तर आगे स्थापित की गईं शलाकाऐं संख्यातगुणी संख्यातगुणी होकर अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने

१. ता०प्रतौ 'तत्थ ता (जा) सिं' अ०का०प्रत्योः 'तत्थ जासिं' इति पाठः। २. म० प्रतिपाठोऽयम्। अ०का०प्रत्योः 'णिरंतरं सांतरणिरंतरं दोद्दो—' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'अणु तगुणाओ ता (जा) सिं दोसु अ०का०प्रत्योः 'अणंतगुणाओ तासिं दोसु' इति पाठः। ४. ता०प्रतौ 'जाव अणंतअद्धाणं' इति पाठः।

संखेज्जभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं[1] गदं ति। तेण परमसंखेज्जभागब्भहियाओ असंखेज्जभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमणंतभागब्भहियाओ अणंतभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव एदाओ अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमणंतभागहीणाओ अणंतभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमसंखेज्जभागहीणाओ असंखेज्जभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति[2] जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परं संखेज्जभागहीणाओ संखेज्जभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परं संखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं[1] गदं ति। तेण परमसंखेज्जगुणहीणाओ असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। एवमसुण्णवग्गणाणमेगादिएगुत्तराणं उभयपासमुण्णाणं जाओ ट्ठविदसलागाओ ताओ छव्विहाए वड्ढीए छव्विहाए हाणीए च अवट्ठाणं कुणंति त्ति घेत्तव्वं। पत्तेयसरीरक्खंधदव्ववग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सांतराओ चेव। कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणेसु केवलिपाओग्गेसु संखेज्जाणं केवलीणं णिरंतरमवट्ठाणविरोहादो। तम्हा वट्टमाणकाले अप्पिदट्ठाणाणि सांतराणि चेव। अदीद-

तक जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक संख्यातभाग अधिक संख्यातभाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएं जाती हैं। उससे आगे अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक असंख्यातवें भाग अधिक असंख्यातवें अधिक होकर निरन्तर शलाकाएं जाती हैं। उससे आगे अनन्त स्थानोंके जाने तक अनन्तवें भाग अधिक अनन्तवें भाग अधिक होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक अनन्तवें भाग हीन अनन्तवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक असंख्यातवें भाग हीन असंख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातवें भाग हीन संख्यातवे भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक असंख्यातगुणी हीन असंख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं। इस प्रकार एकादि एकोत्तर अशून्य वर्गणाओंके उभय पार्श्वमें शून्य वर्गणाओंकी जो स्थापित की गई शलाकाएं हैं वे छह प्रकार की वृद्धि और छह प्रकारकी हानिके द्वारा अवस्थान करती हैं ऐसा अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए। भव्योंके योग्य जो प्रत्येक शरीरस्कन्धद्रव्यवर्गणाएं सयोगी और अयोगी गुणस्थानमें लभ्यमान हैं वे सान्तर ही हैं, क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलिप्रायोग्य स्थानोंमें संख्यात केवलियोंके निरन्तर रहनेमें विरोध है। इसलिए वर्तमान कालमें विवक्षित स्थान सान्तर ही हैं। अतीत कालमें भी केवलियोंके द्वारा

१. ता०प्रतौ जाव अणंत (मणंत) मद्धाणं इति पाठः। २. आ०प्रतौ 'जाव अणंतमद्धाणं' इति पाठः।

काले वि केवलीहि फोसिदपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव। कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तकेवलिपाओग्गपत्तेयसरीरट्ठाणेसु सिद्धेहिंतो असंखेज्जगुणमेत्ताणमेव ट्ठाणाणं[1] फासुवलंभादो। तं जहा—एक्कस्स सिद्धस्स जदि देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि[2] चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्वेसिं सिद्धाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सिद्धेहिंतो असंखेज्जगुणमेत्ताणि चेव जीवफोसिदट्ठाणाणि लब्भंति। एदं पि च णत्थि; सव्वेसिं पुव्वकोडिमेत्ताउअभावादो सव्वेसिमपुणरुत्तट्ठाणाणि चेव होंति त्ति णियमाभावादो च।

पस्समाणे वि सांतराओ। को पस्समाणकालो णाम? एस कालो। कथं तत्थ सांतराओ वुच्चदे? सव्वकालमदीदद्धा सव्वजीवरासीए अणंतिमभागो; अण्णहा संसारिजीवाणमभावप्पसंगादो। सव्वकालमदीदकालस्स सिद्धा असंखेज्जदिभागो चेव; छम्मासमंतरिय णिव्वुइगमणणियमादो। एक्केक्कस्स सिद्धस्स देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि उक्कस्सेण लब्भंति; केवलिविहारकालस्स देसूणपुव्वकोडिमेत्तस्सेव उवलंभादो। तम्हा पस्समाणेहि सांतराओ चेव त्ति घेत्तव्वं। सेचीयाए पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि। एदं चेव ट्ठाणं जीवसहिदं होदि एदाणि ण होंति चेवे त्ति णियमा-

स्पर्श किये गये प्रत्येकशरीरवर्गणास्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलिप्रायोग्य प्रत्येकशरीरस्थानोंमें मात्र सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थानोंका स्पर्श उपलब्ध होता है। यथा—एक सिद्धके यदि पूर्वकोटिमात्र प्रत्येकशरीरस्थान उपलब्ध होते हैं तो सब सिद्धोंके कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फल गुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देने पर सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थान ही जीवोंके द्वारा स्पर्श किये गये पाये जाते हैं। पर यह भी नहीं है, क्योंकि एक तो सबके एक पूर्वकोटिप्रमाण आयु नहीं पाई जाती, दूसरे सब जीवों के अपुनरुक्त स्थान ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है।

पश्यमान कालमें भी सान्तर हैं।

शंका—पश्यमान काल किसे कहते हैं।

समाधान—यह अर्थात् वर्तमान कालको पश्यमान काल कहते हैं।

शंका—इसमें वर्गणाएं सान्तर कैसे कही जाती हैं?

समाधान—सर्वदा अतीत काल सब जीव राशिके अनन्तवें भागप्रमाण रहता है, अन्यथा सब जीवोंके अभाव होनेका प्रसंग आता है।

सिद्ध जीव सर्वदा अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, क्योंकि छह महीनेके अन्तरसे मोक्ष जानेका नियम है। तथा एक एक सिद्ध जीवके उत्कृष्टसे कुछ कम एक एक पूर्वकोटि कालमात्र प्रत्येकशरीरस्थान प्राप्त होते हैं, क्योंकि केवलीका विहार काल कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र ही उपलब्ध होता है। इसलिए पश्यमान कालमें वर्गणाएं सान्तर ही होती हैं, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर होते हैं, क्योंकि यह स्थान ही जीवसहित होता है और ये स्थान जीवसहित नहीं होते हैं ऐसा कोई

१. ता० प्रतौ '-मेत्ताणमवट्ठाणाणं' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'जदि पुव्वकोडिमेत्ताणि' इति पाठः।

भावादो। अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पुढवियादिचत्तारिकाएसु लब्भमाणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ। कुदो? वट्टमाणकाले पत्तेयसरीरवग्गणाओ उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्तीओ चेव होंति त्ति णियमादो। विग्गहगदीए वट्टमाणा अणंता जीवा पत्तेयसरीरवग्गणाए अंतो णिवदंति त्ति पत्तेयसरीरवग्गणा अणंता त्ति किण्ण घेप्पदे? ण; णिगोदणामकम्मोदएण बादरणिगोदत्तं सुहुमणिगोदत्तं च पत्ताणं पत्तेयसरीर-वग्गणत्तविरोहादो। विग्गहगदीए वट्टमाणाणं अणुदिण्णपत्तेयसरीरणामकम्माणं कथं पत्तेयसरीरत्तमिदि चे? ण एस दोसो; पत्तेयसरीरोदयस्स तंतत्ताभावादो। भावे वा खीणकसाओ वि पत्तेयसरीरवग्गणं होज्ज; तदुदयसंतं पडि विसेसाभावादो। तदो बादर-सुहुमणिगोदेहि असंबद्धजीवा पत्तेयसरीरवग्गणा त्ति घेत्तव्वा। ण च बादर-सुहुमणिगोदाणं विग्गहगदीए वि विच्छिण्णेगजीवो उवलब्भदे; तत्थ वि एगबंधणबद्ध-अणंतजीवोलंभादो। तत्थ एगजीवे संते को दोसो चे? ण; बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाण-माणंतियप्पसंगादो। एदं पि णत्थि; असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव होंति त्ति गुरूवदेसादो।

नियम नहीं है। अभव्योंके योग्य जो पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर कायिकोंमें प्राप्त होनेवाली वर्गणाएं हैं वे वर्तमानकालमें सान्तर हैं, क्योंकि वर्तमानकालमें प्रत्येकशरीरवर्गणाएं उत्कृष्टरूपसे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा नियम है।

शंका—विग्रहगतिमें विद्यमान अनन्त जीव प्रत्येकशरीरवर्गणाके भीतर गर्भित होते हैं, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणाएं अनन्त होती हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते?

समाधान—नहीं, क्योंकि निगोद नामकर्मके उदयसे बादर निगोद और सूक्ष्म निगोदपनेको प्राप्त हुए जीवोंके प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके होनेमें विरोध है।

शंका—विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके प्रत्येक शरीर नामकर्म का उदय न होने पर वे प्रत्येकशरीर कैसे हो सकते हैं?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि प्रत्येकशरीरके उदयकी अधीनताका अभाव है। यदि उदयकी अधीनता मानी जाय तो क्षीणकषाय भी प्रत्येकशरीरवर्गणा हो जावे, क्योंकि उसके उदय और सत्त्वके प्रति वहां कोई विशेषता नहीं है। इस लिए बादर निगोद और सूक्ष्म-निगोदोंसे असम्बद्ध जीव प्रत्येकशरीरवर्गणा होते हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। यदि कहा जाय कि विग्रहगतिमें भी बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदका स्वतंत्ररूपसे एक जीव पाया जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्यों कि वहां पर भी एक बन्धनमें बँधे हुए अनन्त जीव पाये जाते हैं।

शंका—वहां एक जीवके रहनेमें क्या दोष है?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऐसा मानने पर बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंको अनन्तपनेका प्रसङ्ग आता है। किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि वे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है।

१. ता॰प्रतौ 'जीवा पत्तेयसरीरवग्गणा' इति पाठः। २. अ॰प्रतौ 'पत्तेयसरीरवग्गण होज्ज' इति पाठः।

ण च असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो। अदीदकाले वि सांतराणि चेव; अदीदकालादो असंखेज्जगुणेहि अदीदकालुप्पण्णपत्तेयसरीरट्ठाणेहि जीवेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। पस्समाणाए वि ण णिरंतराओ; सव्वदा अदीदकालस्स सव्वजीवरासीदो अणंतगुण-हीणत्तुवलंभादो। सेचीयादो पुण सव्ववग्गणाओ णिरंतराओ; एसा चेव संभवदि त्ति णियमाभावादो।

बादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ खीणकसायकालम्हि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ; सव्वजीवेहि[1] अणंतगुणमेत्तबादर-णिगोदवग्गणाणं खीणकसायपाओग्गाणं संखेज्जेहि जीवेहि आवूरणविरोहादो। अदीद-काले फुसणेण सांतराओ; अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासिमेत्तट्ठाणाणं चेव तीदे काले फोसणुलंभादो। एवं पस्समाणफोसणं पि वत्तव्वं; विसेसाभावादो। सेचीयादो पुण णिरंतराओ। अभवसिद्धियपाओग्गाओ[2] जाओ मूलयथूहल्लयादिविसयाओ बादर-णिगोदवग्गणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादर-णिगोदवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसव्वट्ठाणावूरणसंभवाभावादो। अदीदे

यह कहना कि असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंको वर्तमानकालमें पूरा करती हैं, ठीक नहीं है, क्यों कि ऐसा होनेमें विरोध आता है। वे अतीत कालमें भी सान्तर ही हैं, क्यों कि अतीत कालसे असंख्यातगुणे अतीत कालमें उत्पन्न हुए प्रत्येकशरीरस्थानरूप जीवोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा होनेमें विरोध है। पश्यमान कालमें भी वे निरन्तर हैं, क्योंकि सर्वदा अतीत काल सब जीवराशिसे अनन्तगुणा हीन पाया जाता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब वर्गणाएं निरन्तर हैं, क्योंकि इस अपेक्षासे यही सम्भव है ऐसा कोई नियम नहीं है। अर्थात् सेचीयकी अपेक्षा कोई भी वर्गणा सदा सम्भव हो सकती है, इसलिए सब वर्गणाओंको निरन्तर कहा है।

भव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणाएं क्षीणकषायके कालमें लभ्यमान हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणी क्षीणकषायके योग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका संख्यात जीवोंके द्वारा पूरा करनेमें विरोध है। अतीतकालमें स्पर्शनकी अपेक्षा सान्तर हैं, क्योंकि अन्तर्मुहूर्तगुणित सिद्धराशिप्रमाण स्थानोंका ही अतीत कालमें स्पर्शन उपलब्ध होता है। इसी प्रकार पश्यमान स्पर्शन भी कहना चाहिए, क्योंकि उसमें कोई विशेषता नहीं है। सेचीयकी अपेक्षा तो निरन्तर हैं। मूली, थूवर और लता आदिमें रहनेवाली अभव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणाएं हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सब स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है। अतीत कालमें भी बादर

१. ता० प्रतौ 'सांतराओ. [सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओ-ग्गाओ खीणकसायकालम्मि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ] सव्वजीवेहि। २. अ०का० प्रत्योः 'अभवसिद्धियपाओग्गाओ' इति पाठः।

वि काले बादरणिगोदवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव । कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिद-अदीदकालमेत्ताणं चेव ट्ठाणाणं तत्थ जीवसहिदाणमुवलंभादो । ण च एवं; सरिसधणियाणं पि वग्गणाणं संभवादो । जदि वि अदीदकालेण गुणिदसव्वजीवरासिमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि अदीदकाले उप्पण्णाणि होंति तो सव्वट्ठाणाणि आवूरिज्जंति[1]; अदीदकालादो वि सव्वजीवरासीदो वि विस्सासुवचयाणमेगपरमाणुविसयाणमणंतगुणत्तादो । पस्समाणाए वि सांतराओ; अदीदकालं मोत्तूण एत्थ सांतरणिरंतरपरूवणाए भविस्सकाले वि संववहाराभावादो । भावे वा तस्स अदीदकाले अंतब्भावो होज्ज; अण्णहा जीवसहिदत्ताणुववत्तीदो । ण च एगजीवेण एगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि जेण सव्वबादरणिगोदेहि सव्वट्ठाणाणि तीदाणागदकालेसु आवूरिज्जंति; जहण्णियाए बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो हेट्ठा पादप्पसंगादो । सेचीयादो पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि ।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले सांतराओ; असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणावूरणसत्तीए अभावादो । अदीदकाले वि सेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तसुहुमणिगोदट्ठाणेहि अदीदकालुप्पण्णेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो । भविस्सकाले वि सांतराणि

निगोदवर्गणास्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान ही अतीत कालमें जीवों सहित उपलब्ध होते हैं । परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि सदृश धनवाली भी वर्गणाएं सम्भव हैं । यद्यपि अतीत कालसे गुणित सब जीवराशिप्रमाण बादरनिगोद स्थान अतीत कालमें उत्पन्न होते हैं तो भी सब स्थान व्याप्त कर लिये जाते हैं, क्योंकि अतीत कालसे भी और सब जीवराशिसे भी एक परमाणुविषयक विस्रसोपचय अनन्तगुणे होते हैं । पश्यमान कालमें भी सान्तर हैं, क्योंकि अतीत कालको छोड़कर यहां पर सान्तरनिरन्तर प्ररूपणाका भविष्य कालमें भी व्यवहार नहीं होता । यदि होता है तो उसका अतीत कालमें अन्तर्भाव हो जाता है, अन्यथा वे स्थान जीव सहित नहीं बन सकते । और एक जीवके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है जिससे सब बादर निगोदोंके द्वारा सब स्थान अतीत और अनागत कालमें व्याप्त किये जावें, क्योंकि ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे होनेका प्रसंग आता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीयस्थानोंके पूरा करनेकी शक्तिका अभाव है । अतीत कालमें भी सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि अतीत कालमें उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीतकालप्रमाण सूक्ष्मनिगोदस्थानोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा करनेमें विरोध है । बादरनिगोदवर्गणाके प्रसंगसे जो क्रम कह आये हैं उसी क्रमसे ये भविष्य कालमें भी सान्तर

१. आ०प्रतौ 'सव्वट्ठाणाणमावूरिज्जंति' इति पाठः ।

बादरणिगोदवग्गणाए भणिदकमेण । अथवा भविस्सकाले ण तेसिं जीवसहिदत्तमत्थि । भावे वा ण सो[1] भविस्सकालो; वट्टमाणादीदकालेसु तस्संतब्भावादो । सेचीयादो पुण णिरंतराणि ।

महाखंधदव्ववग्गणा सांतरा; वट्टमाणकाले एयत्तादो । ण च सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधट्ठाणाणि एक्कवग्गणाए आवूरिज्जंति; विरोहादो । अदीदे वि काले महाखंधसेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; अदीदकालमेत्ताणमुक्कस्सेण भूदकाल-समुप्पण्णट्ठाणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणावूरणसत्तीए अभावादो । भविस्सकाले वि सांतराणि चेव । सेचीयादो पुण णिरंतराणि । णाणासेडीए वि एवं चेव सांतरणिरंतरपरूवणा कायव्वा; विसेसाहियाभावादो । एवं सांतरणिरंतरा-णुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणाए ओजजुम्माणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा—ओजो दुविहो—कलि-ओजो तेजोजो चेदि । जुम्मं दुविहं—कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि । जं चदुहि अवहिरिज्ज-माणमेगं एदि सो कलिओजो[2] । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जत्थ तिण्णि एंति सो तेजोजो । जत्थ चत्तारि एंति तं कदजुम्मं । जत्थ दो एंति तं बादरजुम्मं । एदेण अट्ठपदेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा कलिओजो, एगत्तादो । संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा

हैं । अथवा भविष्यकालमें जीवसहित नहीं हैं । यदि भविष्यकालमें भी उन्हें जीव सहित माना जाता है तो वह भविष्यकाल नहीं है, क्योंकि उसका वर्तमान और अतीतकालमें अन्तर्भाव हो जाता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणा सान्तर है, क्योंकि वर्तमानकालमें वह एक है । एक वर्गणाके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्धस्थान पूरे जाते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है । अतीतकालमें भी महास्कन्ध सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि उत्कृष्टसे भूतकालमें उत्पन्न हुए अतीत काल मात्र स्थानोंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीय स्थानोंके पूरे करनेकी शक्तिका अभाव है । भविष्यकालमें भी सान्तर ही हैं । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं । नानाश्रेणिकी अपेक्षा भी इसी प्रकार सान्तरनिरन्तरप्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार सान्तर-निरन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब एकश्रेणिवर्गणाकी अपेक्षा ओज-युग्मानुगमको बतलाते हैं । यथा—ओज दो प्रकारका है—कलि ओज और तेजोज । युग्म दो प्रकारका है– कृतयुग्म और बादरयुग्म । चारका भाग देने पर जिसमें एक शेष रहता है वह कलिओज है । चारका भाग देने पर जहां तीन शेष रहते हैं वह तेजोज है । जहां चार आते हैं वह कृतयुग्म है और जहां दो आते हैं वह बादर-युग्म है । इस अर्थपदके अनुसार परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कलिओज है, क्योंकि इस वर्गणाका प्रमाण एक है । जघन्य संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा बादरयुग्म है, क्योंकि इस वर्गणाका

१. ता० प्रतौ 'णत्थि सो' इति पाठः । २. ता० प्रतौ '–मेगं एदिस्से काले (एदि सो कलि) ओजो' अ०प्रतौ '–मेगं एदि सो कलिओजो' इति पाठः ।

जहण्णिया बादरजुम्मं; दुसंखत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणसलागाओ बादरजुम्मं; दुरूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ जहण्णिया कदजुम्मं जहण्णपरित्तासंखेज्जपमाणत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। असंखेज्जपदेसियवग्गणसलागाओ कदजुम्मं; जहण्णपरित्तासंखेज्जेण ऊणजहण्णपरित्ताणंतपमाणत्तादो। वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। एवं सव्वाओ वग्गणाओ णेदव्वाओ। णवरि महाखंधदव्ववग्गणा जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। महाखंधवग्गणसलागाओ कलिओजो। वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ।

णाणासेडिओजजुम्माणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमोजा किं जुम्मं? जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। कुदो एदं णव्वदे? आइरियपरंपरागदसुत्ताविरुद्धगुरूवदेसादो। अजहण्णअणुक्कस्सियाए चत्तारि वियप्पा। एवं णेयव्वं जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति। उवरिमसेसवग्गणासु जहण्णिया कलिओजो; एगत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजा। मज्झिमाए चत्तारि वियप्पा। णवरि महाखंधदव्ववग्गणाए णाणासेडी णत्थि; सव्वकालं सरिसधणियबहुवग्गणाभावादो। एवं ओजजुम्माणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

प्रमाण दो है। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाशलाकाएं बादरयुग्म हैं, क्योंकि वे दो कम कृतयुग्मप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणाएं चतुःस्थानपतित हैं। जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है, क्योंकि वह जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण है। उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाशलाकाएं कृतयुग्म हैं, क्योंकि वे जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणाएं चतुःस्थानपतित हैं। इसी प्रकार सब वर्गणाओंके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है तथा उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा भी कृतयुग्म है। महास्कन्धवर्गणाशलाकाएं कलिओजरूप हैं। परन्तु वर्गणाएं चतुःस्थानपतित हैं।

नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ओजरूप है या क्या युग्मरूप है? जघन्य कृतयुग्मरूप है तथा उत्कृष्ट भी कृतयुग्मरूप है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—आचार्य परम्परासे आये हुए सूत्राविरुद्ध गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाके चार भेद हैं। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए। उपरिम शेष वर्गणाओंमें जघन्य वर्गणा कलिओजरूप है, क्योंकि वह एक है। उत्कृष्ट वर्गणा तेजोजरूप है और मध्यकी वर्गणाएं चारों प्रकारकी हैं। इतनी विशेषता है कि महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी नानाश्रेणि नहीं है, क्योंकि सर्वदा सदृश धनवाली बहुत वर्गणाओंका अभाव है।

इसप्रकार ओजयुग्मानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एगसेडिवग्गणखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ च केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणमेया सेडी केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे। जले वा थले वा आगासे वा सुहुमणिगोदवग्गणादिसव्ववग्गणाओ संभवंति त्ति तेसिं सव्वलोगो होदु णाम ण पत्तेयसरीरबादरणिगोदवग्गणाणं; तेसिं अट्ठ पुढवीयो भवणविमाणाणि च अस्सिदूण चेव अवट्ठाणादो ? ण, सुहुमपुढविआउतेउवाउकाइयाणं पत्तेयसरीराणं सव्वलोगम्हि अवट्ठाणं पडि विरोहाभावादो मारणंतियपदेण उववादेण सव्वलोगमेत्तखेत्तुवलंभादो च। महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते ? लोगे देसूणे।

णाणासेडिखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे। कुदो ? आणंतियादो। एवं णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरवग्गणे त्ति। पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमवग्गणाओ केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे; असंखेज्जलोगपमाणत्तादो। महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते ? लोगे देसूणे। एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

एगसेडिवग्गणफोसणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए संखेज्जपदेसियदव्व-

एकश्रेणिवर्गणाक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाओंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्र है। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कितना क्षेत्र है ? सब लोक क्षेत्र है।

शंका—जलमें, स्थलमें और आकाशमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा आदि सब वर्गणाएं सम्भव हैं इसलिए उनका सब लोकप्रमाण क्षेत्र होओ, परन्तु प्रत्येकशरीरबादरनिगोदवर्गणाओंका सब लोकप्रमाण क्षेत्र नहीं हो सकता, क्योंकि वे आठ पृथिवियों और भवनविमानोंका आश्रय लेकर ही अवस्थित हैं ?

समाधान – नहीं, क्योंकि एक तो प्रत्येकशरीरवाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका सब लोकमें अवस्थान होनेमें कोई विरोध नहीं आता। दूसरे प्रत्येकशरीरवाले जीवोंका मारणान्तिकपद और उपपादपदकी अपेक्षा सब लोकप्रमाण क्षेत्र पाया जाता है।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है ? कुछ कम सब लोक क्षेत्र है।

नानाश्रेणिक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि उसका प्रमाण अनन्त है। इसीप्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणा तक ले जाना चाहिए। प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म वर्गणाओंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि वे असंख्यात लोकप्रमाण है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है ? कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्र है।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणास्पर्शनानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी

वग्गणाहिं च केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणमेगसेडीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो। महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगो देसूणो। अदीदेण सव्वलोगो। एवं णाणासेडिफोसणं परूवेयव्वं। णवरि परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदाहि वग्गणाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो। महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगो देसूणो सव्वलोगो वा। एवं पोसणाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

एगसेडिकालाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि ? वग्गणादेसेण सव्वद्धा। दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव पत्तेयं पत्तेयं एवं चेव सव्वत्थ वत्तव्वा। अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवं णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति। पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलेहि तेसिं विस्सासुवचयपोग्गलेहि य भेदसंघादं

द्रव्यवर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है। लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोद द्रव्यवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी एक श्रेणिने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार नानाश्रेणिका स्पर्शन कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और सब लोकका स्पर्शन किया है।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? वर्गणादेशकी अपेक्षा सब काल है। द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका सर्वत्र इसी प्रकार काल कहना चाहिए। अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए। प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंके औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरोंके पुद्गलों द्वारा तथा उनके विस्रसोपचयों

१. अ०का०प्रत्योः 'महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं, अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं वट्टमाणेण' इति पाठः।

गच्छमाणजीवेहि य पडिसमयमुवचयावचयभावं गच्छमाणाणं सरिसधणियाणं वग्गणाण-मावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणमसंखेज्जलोगपोग्गलपरियट्टमेत्तकालावट्ठाणं ण जुज्जदे। ण च असंखेज्जलोगमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ अत्थि; जवमज्झपरूवणाए सह विरोहादो त्ति। तम्हा एदेसिमेगसेडिवग्गणाणं कालो जाणिय वत्तव्वो। एत्तिय-कालो त्ति ण वयं वोत्तुं समत्था; अलद्धुवदेसत्तादो। लद्धुवदेसे वि वा धुवलंभादो। अथवा णेसो ट्ठाणणिबंधणवग्गणाणमुक्कस्सकालो किंतु जीवणिबंधणाणं। ण च एदासिं सेचीयभावेण अणंतकाले परूविज्जमाणे विरोहो अत्थि; तण्णिबंधणाणुव-लंभादो। अहवा आगमो अतक्कगोयरो त्ति पुव्विल्लकालो चेव घेत्तव्वो। एवं णाणासेडिकालाणुगमो वि वत्तव्वो। णवरि परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव वग्गणादेसेण सव्वद्धा। एवं कालाणुगमो त्ति समत्त-मणियोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणअंतराणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए अंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णत्थि अंतरं णिरंतरं। एवं दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवक्खंधदव्ववग्गणे त्ति ताव णत्थि अंतरमिदि पत्तेयं पत्तेयं परूवेदव्वं। अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाण-मंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमयं; उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा

द्वारा भेद-संघातको प्राप्त होनेवाले जीवोंके द्वारा प्रत्येक समयमें उपचय और अपचयभावको प्राप्त होनेवाली और सदृश धनवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणाओंका असंख्यात लोक पुद्गलपरिवर्तन काल तक अवस्थान नहीं बन सकता है। असंख्यात लोकप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणाएं हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि इस कथनका यवमध्यप्ररूपणाके साथ विरोध आता है। इसलिए इन एकश्रेणिवर्गणाओंका काल जानकर कहना चाहिए। इतना काल है यह बात हम कहनेके लिए समर्थ नहीं हैं, क्योंकि इस विषयका कोई उपदेश नहीं पाया जाता। उपदेशके प्राप्त होनेपर भी ध्रुव प्राप्ति है। अथवा यह स्थाननिबन्धन वर्गणाओंका उत्कृष्ट काल नहीं है किन्तु जीवनिबन्धन वर्गणाओंका उत्कृष्ट काल है। इनका सेचीयरूपसे अनन्त काल कहनेपर विरोध आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्यों उसका कोई कारण उपलब्ध नहीं होता। अथवा आगम तर्कका विषय नहीं है, इसलिये पहलेका ही काल ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार नानाश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि परमाणु-पुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक वर्गणादेशकी अपेक्षा सर्वदा काल है।

इस प्रकार कालानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है ? अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। इसी प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका अन्तर नहीं है ऐसा प्रत्येकवर्गणाकी अपेक्षा कथन करना चाहिए। अचित्तअध्रुव-स्कन्ध द्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है ? जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

पोग्गलपरियट्टा। पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवग्गणाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेणेगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एदं सेचीयं पडुच्च परूविदं। अत्थदो पुण केसिंचि सचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणट्ठाणाणमंतराभावेण होदव्वं; अण्णहा अदीदकाले सव्वट्ठाणेसु जीवसंभवप्पसंगादो। ण च एवं; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तट्ठाणाणं पगरिसेणुप्पण्णाणं सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। एवं महाखंधदव्ववग्गणाए वि वत्तव्वं। णाणासेडिवग्गणंतराणुगमो एवं चेव वत्तव्वो। णवरि अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाणं णत्थि अंतरं णिरंतरं। सचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणाणं पि णत्थि अंतरं; सेचीयत्तणेण सव्वासिमत्थित्तुवलंभादो। एवं महाखंधदव्ववग्गणाए वि वत्तव्वं। एवमंतराणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणभावाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए को भावो ? ओदइओ पारिणामिओ वा। जेण जीवेण कदाचि वि परिणमिदा परिणामिदा वि संता जे विणट्ठोदइयभावा तेसिं भावो पारिणामिओ। जे पुण अविणट्ठोदइयभावा परमाणू तेसिमोदइओ भावो चेव। एवं दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति वत्तव्वं। एसा परूवणा एगपरमाणुं पडुच्च परूविदा। खंधं पडुच्च भण्णमाणे दुपदेसियादिवग्गणाणं ओदइयो पारिणामिओ ओदइयपारिणामिओ च तिविहो भावो होदि।

अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है। प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंका अन्तरकाल कितना है ? जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है। यह सेचीयकी अपेक्षा कथन किया है। वास्तवमें तो किन्हीं सचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानोंको अन्तरसे रहित होना चाहिए, अन्यथा अतीत कालमें सब स्थानोंमें जीवोंकी सम्भावना प्राप्त होती है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि उत्कृष्टरूपसे उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान सब स्थानोंको पूरा करते हैं ऐसा होनेमें विरोध है। इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए। नानाश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा इसी प्रकार कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका अन्तरकाल नहीं है वे निरन्तर हैं। सचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका भी अन्तरकाल नहीं है, क्योंकि सेचीयपनेकी अपेक्षा सबका अस्तित्व पाया जाता है। इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए।

इस प्रकार अन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाभावानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका क्या भाव है ? औदयिक व पारिणामिक भाव है। जिस जीवके द्वारा कभी भी परिणमन किये गये और परिणमाये गये भी जो औदयिक भावके नाशको प्राप्त हुए हैं उनका पारिणामिक भाव है। परन्तु जिन परमाणुओंका औदयिक भाव नष्ट नहीं हुआ है उनका औदयिक भाव ही है। इस प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक कहना चाहिए। यह प्ररूपणा एक परमाणुकी अपेक्षासे की है। स्कन्धकी अपेक्षा कथन करनेपर द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका औदयिक भाव,

सचित्तवग्गणाणं पुण भावो मिस्सो चेव; तत्थ सुद्धेगभावाणुवलंभादो। णाणासेढि-वग्गणभावो एवं चेव भाणिदव्वो। ओदइयभावेण पोग्गलाणमवट्ठाणं पुण उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्तकालपमाणं होदि। एवं भावाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणउवणयणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा एया चेव[1]। संखेज्ज-पदेसियदव्ववग्गणाओ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ असंखेज्जाओ। जहण्णपरित्ताणंतादो जहण्णपरित्तासंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेस-मेत्ताओ त्ति भणिदं होदि। आहारवग्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियअगहणवग्गणा अणंताओ। जहण्णआहारवग्गणादो जहण्णपरित्ताणंते सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्ताओ त्ति घेत्तव्वं। अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंत-भागमेत्ताओ त्ति भणिदं होदि। एवं णेयव्वं जाव कम्मइयवग्गणे त्ति। धुवखंध-दव्ववग्गणाओ अणंताओ। जहण्णधुवक्खंधवग्गणाए जहण्णसांतरणिरंतरवग्गणाए सोहिदाए जं सेसं तत्तियमेत्ताओ त्ति घेत्तव्वं। एवमप्पिदजहण्णवग्गणमुवरिमवग्गण-जहण्णवग्गणाए सोहिय सुद्धसेसेण वग्गणउवणयो परूवेदव्वो जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति। एवं णाणासेडिवग्गणाउवणयणाणुगमो वत्तव्वो; विसेसाभावादो। एव वग्गणु-वणयणस्स अत्थं के वि आइरिया भणंति। एसो अत्थो ण घडदे। कुदो? वग्गण-

पारिणामिक भाव और औदयिक-पारिणामिक भाव इस प्रकार तीन प्रकारका भाव होता है। परन्तु सचित्तवर्गणाओंका भाव मिश्र ही होता है, क्योंकि उनमें शुद्ध एक भाव नहीं उपलब्ध होता। नानाश्रेणिवर्गणाओंका भाव इसी प्रकार कहना चाहिए। परन्तु औदयिकभावके साथ पुद्गलोंका अवस्थान उत्कृष्टसे असंख्यात लोककालप्रमाण होता है।

इस प्रकार भावानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाउपनयनानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है। संख्यात-प्रदेशी द्रव्यवर्गणाऐं एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण हैं। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाऐं असंख्यात हैं। जघन्य परीतानन्तमेंसे जघन्य परीतासंख्यातके कम करने पर जितना शेष रहे उतनी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। आहारवर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी अग्रहणवर्गणाऐं अनन्त हैं। जघन्य आहारवर्गणामेंसे जघन्य परीतानन्तके कम कर देनेपर शेषमें जो संख्या प्राप्त हो उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। वे अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार कार्मणवर्गणा तक जानना चाहिए। ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाऐं अनन्त हैं। जघन्य सान्तर निरन्तरवर्गणामेंसे जघन्य ध्रुवस्कन्ध-वर्गणाके घटा देने पर जो शेष रहे उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार विवक्षित जघन्य वर्गणाको आगेकी वर्गणाकी जघन्य वर्गणामेंसे घटा देने पर जो शेष रहे उतना वर्गणाका उपनय कहना चाहिए और यह कथन महास्कन्धवर्गणातक करना चाहिए। इसी प्रकार नाना श्रेणिवर्गणा उपनयनानुगमका कथन करना चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार कितने ही आचार्य वर्गणा उपनयनका अर्थ कहते हैं, परन्तु यह अर्थ घटित नहीं होता,

१. म०प्रतौ 'वग्गणाए चेव' का०प्रतौ 'वग्गणाए एया चेव' इति पाठः।

परिमाणाणुगमे[1] भणिस्समाणत्तादो । ण च एक्को चेव अत्थो दो वारं उच्चदे; पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । तम्हा[2] वग्गणुवणयपरूवणा एवं कायव्वा । तं जहा—उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणं घेत्तूण पुणो उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणप्पहुडि तत्थतणएगेगरूवे वग्गणं पडि हेट्ठा दिज्जमाणे जाव परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणं ताव गंतूण समप्पदि । एवं महाखंधुवरिमवग्गणप्पहुडि सेसहेट्ठिमवग्गणाणं पदेसे घेत्तूण पत्तेयं पत्तेयं वग्गणुवणयणं वत्तव्वं जाव परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणे त्ति । किंफलो उवणयणाणुगमो ? सव्ववग्गणाओ णिरंतरं रूवाहियकमेण गदाओ त्ति जाणावणफलो । एवं वग्गणउवणयणाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणपरिमाणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा एया चेव । संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ असंखेज्जाओ होंताओ वि जहण्णपरित्तासंखेज्जेणूणजहण्णपरित्ताणंतमेत्ताओ । आहारवग्गणाए हेट्ठिमअणंतपदेसियदव्ववग्गणाओ अणंताओ होंताओ वि जहण्णपरित्ताणंतेणूणजहण्णाहारदव्ववग्गणमेत्ताओ । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ त्ति भणिदं होदि । एवं णेयव्वं जाव कम्मइयवग्गणे त्ति । पुणो धुवखंधदव्ववग्गणप्पहुडि अप्पिदजहण्णवग्गणमुवरिमाणंतरजहण्णवग्गणाए सोहिय सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ वग्गणाओ होंति त्ति पत्तेयं पत्तेयं वग्गण-

क्योंकि वर्गणापरिमाणानुगममें इसका कथन करेंगे। एक ही अर्थ दो बार कहा जा सकता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होने पर पुनरुक्तदोषका प्रसंग आता है। इसलिए वर्गणा उपनयन प्ररूपणा इस प्रकार करनी चाहिए। यथा—उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाको ग्रहण कर पुनः उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर उसमेंसे एक एक अंकको प्रत्येकवर्गणाके प्रति नीचे देने पर परमाणुपुदगलद्रव्यवर्गणा तक जाकर वह समाप्त हो जाती है। इसीप्रकार महास्कन्ध उपरिम वर्गणासे लेकर नीचेकी शेष वर्गणाओंके प्रदेशोंको ग्रहणकर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका उपनयन कहना चाहिए। उपनयनानुगमका क्या फल है। सब वर्गणाएँ निरन्तर एक अधिकके क्रमसे गई हैं यह जताना इसका फल है।

इस प्रकार वर्गणाउपनयनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एक श्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है। संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाएँ एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण हैं। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाएँ असंख्यात होकर भी जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण हैं। आहारवर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणाएँ अनन्त होती हुई भी जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य आहारद्रव्यवर्गणाप्रमाण हैं। ये अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इसी प्रकार कार्मणवर्गणा तक जानना चाहिए। पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर विवक्षित जघन्य वर्गणाको आगेकी अनन्तर जघन्य वर्गणामेंसे घटाकर शेषमें जितनी संख्या हो उतनी वर्गणाएँ होती हैं। इस प्रकार महास्कन्धद्रव्य-

१ अ०प्रतौ '–परिणामाणुगमे' इति पाठः। २. प्रतिषु 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः।

पमाणपरूवणा कायव्वा जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति । णवरि धुवक्खंधदव्ववग्गण-प्पहुडि उवरि सव्वत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ एगसेडिवग्गणाओ होंति[1] ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरिमाणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा सरिस-धणियवग्गणाहि जहण्णपदे वि उक्कस्सपदे वि केवडिया? अणंता। णाणासेडिजहण्णपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणादो सरिसधणिएहि उक्कस्सपरमाणु[2]पोग्गलदव्ववग्गणा विसेसाहिया । विसेसो पुणो अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । दुपदेसियदव्ववग्गणा सरिसधणिएहि जहण्णिया उक्कस्सिया वि अणंता । जहण्णादो पुण उक्कस्सिया विसेसाहिया[3] । केत्तियमेत्तो विसेसो ? अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । एवं तिपदेसियवग्गणप्पहुडि एक्केक्कवग्गणं घेत्तूण णेयव्वं जाव उक्कस्सधुवक्खंधदव्ववग्गणे त्ति । पुणो तिस्से उवरि पढमिल्लियाए अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्का वा दो वा तिण्णि वा एवं जाव उक्कस्सेण अणंताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । एवं विदियसांतरणिरंतरवग्गण-प्पहुडि पत्तेयं पत्तेयं भणेदूण णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरउक्कस्सदव्ववग्गणे त्ति । जहण्णादो पुण उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

वर्गणाके प्राप्त होने तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाके प्रमाणका कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर आगे सर्वत्र एकश्रेणिवर्गणाएं सब जीवोंसे अनन्तगुणी होती हैं ।

अब नानाश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सदृश धनवाली वर्गणारूपसे जघन्यपदकी अपेक्षा भी और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा भी कितनी हैं ? अनन्त हैं। नानाश्रेणि जघन्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे सदृश धनवाली उत्कृष्ट परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाएं विशेष अधिक हैं । विशेष पुद्गल परमाणुओंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । द्विप्रदेशीद्रव्य वर्गणा सदृश धनकी अपेक्षा जघन्य भी और उत्कृष्ट भी अनन्त है। परन्तु जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक हैं । विशेषका प्रमाण कितना है ? पुद्गलोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इस प्रकार त्रिप्रदेशी वर्गणासे लेकर एक एक वर्गणाको ग्रहण कर उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ले जाना चाहिए । पुनः उसके ऊपर प्रथम अचित्तअध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणाएं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली वर्गणाएं अनन्त हैं । इसप्रकार दूसरी सान्तर-निरन्तरवर्गणासे लेकर अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका कथन कर उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा तक लेजाना चाहिए। परन्तु वहां जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

१. ता०प्रतौ '-वग्गणाए (ओ) होंति' अ०का०प्रत्योः '-वग्गणाए होंति' इति पाठः । २. ता०प्रतौ '-धणिएहि परमाणु-' इति पाठः । ३. ता०प्रतौ 'जहण्णादो उक्कस्सिया पुण विसेसाहिया' इति पाठः ।

चदुसु धुवसुण्णदव्ववग्गणासु पोग्गला णत्थि। कुदो? साभावियादो। पुणो अजोगिचरिमसमए पढमिल्लियाए पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए दव्वं सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण खविदकम्मंसियलक्खणेणागदा चत्तारि होंति। विदियाए वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण चत्तारि होंति। एवमेदेण विहाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दव्वाणि सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण पंच सरिसधणियजीवा होंति। एवमेदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया छजीवा लब्भंति। पुणो एदेण कमेण एदाओ अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया सत्त जीवा लब्भंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण अट्ठ सरिसधणियजीवा होंति। पुणो एदेणेव कमेण अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा

चार ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें पुद्गल नहीं हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। पुनः अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें प्राप्त होनेवाली प्रथम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाका द्रव्य कदाचित् है और कदाचित् नहीं है। यदि है तो एक है, दो हैं और तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए चार होते हैं। दूसरी वर्गणाकी वर्गणाएँ कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे चार हैं। इसप्रकार इस विधिसे अनन्त वर्गणाओंके जानेपर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव होते हैं। इस प्रकार ये भी अनन्त वर्गणाएँ व्यतीत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी वर्गणाएँ कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाले छह जीव प्राप्त होते हैं। पुनः इस क्रमसे ये अनन्त वर्गणाएँ गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाएँ कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार सदृश धनवाले सात जीव प्राप्त होते हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाएँ गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाएँ कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आठ सदृश धनवाले जीव प्राप्त होते हैं। पुनः इसी क्रमसे अनन्त वर्गणाएँ गत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है, उस वर्गणाकी वर्गणाएँ कदाचित् हैं और

उक्कस्सेण सत्त सरिसधणिया जीवा होंति। एवमेदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण छ जीवा सरिसधणिया होंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कसेण पंच सरिसधणिया जीवा होंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कसेण चत्तारि सरिसधणियजीवा होंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कसेण तिण्णिसरिसधणियजीवा लब्भंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दव्वाणि सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो उक्कस्सेण सरिसधणिया दो जीवा होंति। तदो परदो जाओ अणंताओ वग्गणाओ तासिमेसेव कमो वत्तव्वो जाव भवसिद्धियपाओग्गवग्गणाणं दुचरिमवग्गणे त्ति। पुणो भवसिद्धियचरिमवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो जहण्णेण एक्को उक्कस्सेण दो सरिसधणिय-

कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले सात जीव हैं। इसप्रकार ये भी अनन्त वर्गणाऐं गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाऐं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले छह जीव हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाऐं गत हो जाती हैं। तदनन्तर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणाऐं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो है, तीन है, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाऐं गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणाऐं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले जीव चार हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाऐं गत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणाऐं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार सदृश धनवाले तीन जीव प्राप्त होते हैं। पुनः ये भी अनन्तर वर्गणाऐं गत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले दो जीव होते हैं। उससे आगे जो अनन्त वर्गणाऐं हैं उनका भव्योंके योग्य वर्गणाओंका द्विचरम वर्गणाके प्राप्त होने तक यही क्रम कहना चाहिए। पुनः भव्योंके योग्य अन्तिम वर्गणाकी वर्गणाऐं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो जघन्यसे एक है और उत्कृष्ट रूपसे सदृश

जीवा होंति। एवमेसा जवमज्झपरूवणा भवसिद्धियट्ठाणेसु सेचीयआइरियउवदेसेण परूविदा।

तदो जा अणंतरा अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति। एवमेदेण पमाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति। णवरि पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसाहियाओ एगवग्गणाए। पुणो एदेण विहाणेण अणंताओ वग्गणाओ गच्छंति। पुणो जा अणंतरउवरिमवग्गणा सा हेट्ठिमवग्गणादो विसेसाहियाओ एगवग्गणाए। एवं भवसिद्धियवग्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति। पुणो जवमज्झवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाओ होदूण पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसहीणाओ त्ति। पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ। तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाओ

धनवाले दो जीव हैं। इस प्रकार भव्यप्रायोग्य स्थानोंमें यह यवमध्यप्ररूपणा सेचीय आचार्यके उपदेशसे कही है।

इसके बाद जो अनन्तर अभव्यप्रायोग्य वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित है और कदाचित नहीं हैं। यदि है तो एक है, दो हैं इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाली वर्गणाएं आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणाओंके जाने पर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित् हैं और कदाचित नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण वर्गणाएं हैं। इतनी विशेषता है कि एक वर्गणामें पूर्ववर्गणासे विशेष अधिक हैं। पुनः इस विधिसे अनन्त वर्गणाएं जाती हैं। पुनः जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वह अधस्तन वर्गणासे एक वर्गणा में विशेष अधिक हैं। इसी प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक भव्यप्रायोग्य वर्गणाओंको उक्त विधिसे ले जाना चाहिए। पुनः यवमध्यवर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाएं गत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित् हैं और कदाचित नहीं है। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी पूर्वकी वर्गणासे विशेष हीन हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणाएं गत हो जाती है। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी आवलिके असंख्यातवें

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होदूण पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसहीणाओ। एवं णेयव्वं जा उक्कस्सपत्तेयसरीरदव्ववग्गणे त्ति । उक्कस्सपत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण वल्लरिदाहादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ वट्टमाणकाले लब्भंति । अदीदकाले वि एक्केक्किस्से वग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ एत्तियाओ चेव होंति; एत्तो अहियाणमेत्थ संभवाभावादो । जधा पत्तेयसरीरवग्गणा परूविदा तधा बादरणिगोदवग्गणा वि परूवेदव्वा । जल-थल-आगासादिसु सव्वजहण्णियाए सुहुमणिगोदवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियसुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले होंति । एवमभवसिद्धियपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति। पुणो जवमज्झे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ होंति । पुणो पत्तेयसरीरवग्गणाविहाणेण उवरि णेयव्वं जाव उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमणिगोदवग्गणासु वड्ढिहाणीणं पमाणमेगा चेव वग्गणा; वड्ढीए अभावसंभवे एगवग्गणवड्ढीए विरोहाभावादो । अदीदकाले पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसधणियाओ अणंताओ किण्ण लब्भंति ? ण, एक्कम्हि काले

भागप्रमाण वर्गणाएं होकर भी पूर्ववर्गणासे विशेष हीन हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे बल्लरी दाह आदिमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणाएं वर्तमान कालमें प्राप्त होती हैं। अतीत कालमें भी एक एक वर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणाएं इतनी ही होती हैं. क्योंकि इनसे अधिक यहां पर सम्भव नहीं हैं। जिस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणाका कथन किया है उस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाका भी कथन करना चाहिए। जल, स्थल और आकाश आदिकमें सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी वर्गणाएं कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं वर्तमान कालमें हैं। इस प्रकार अभव्यप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंको उक्तविधिसे यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। पुनः यवमध्यमें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणाएं हैं। पुनः प्रत्येकशरीरवर्गणाकी विधिसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोद वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंमें वृद्धि और हानिका प्रमाण एक ही वर्गणा है. क्योंकि वृद्धिका अभाव सम्भव होने पर एक वर्गणाकी वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका— अतीत कालमें प्रत्येकशरीर. बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाएँ सदृश धनवाली अनन्त क्यों नहीं प्राप्त होती हैं ?

समाणभावेण अच्छिदाओ वग्गणाओ सरिसधणियाओ णाम। ण च एक्कम्हि काले एक्किस्सेव वग्गणाए अणंताणं सरिसधणियाणं संभवो अत्थि; अवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव संभवंति त्ति परमगुरूवदेसादो। सव्वजहण्णियाए महाखंधदव्ववग्गणाए सरिसधणियवग्गणा णियमा अत्थि; अदीदाणागदवट्टमाण-कालेसु एक्कम्हि समए एगा चेव महाखंधदव्ववग्गणा होदि त्ति णियमादो[1]। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणे त्ति। एवं वग्गणपरिमाणाणुगमो त्ति समत्त-मणियोगद्दारं।

एगसेडिभागाभागाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? अणंतिमभागो। त जहा—परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम एगो परमाणू। तेण सव्ववग्गणदव्वे भागे हिदे जं भागलद्धं[2] तं विरलेदूण सव्ववग्गणदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स परमाणुपमाणं चेट्ठदि। तत्थ एगरूवधरिदं परमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणा णाम। तदो सिद्धं सा सव्ववग्गणाणमणंतिमभागो त्ति। संखेज्ज-पदेसियवग्गणप्पहुडि जाव पत्तेयसरीरवग्गणे त्ति ताव एदासिं एगसेडिवग्गणसलागाओ-सव्ववग्गणसलागाणमणंतिमभागो त्ति एवं चेव वत्तव्वं। तदो पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो।

समाधान—नहीं, क्योंकि एक कालमें समान भावसे अवस्थित वर्गणाएं ही सदृश धन-वाली कहलाती हैं। परन्तु एक कालमें एक ही वर्गणाकी अनन्त सदृश धनवाली वर्गणाएं सम्भव नहीं हैं, क्योंकि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणाएं होती हैं ऐसा परमगुरुका उपदेश है।

सबसे जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणा नियमसे है, क्योंकि अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एक समयमें एक ही महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ऐसा नियम है। इस प्रकार उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

इस प्रकार वर्गणापरिमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिभागाभागानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? अनन्तवें भागप्रमाण हैं। यथा—परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक परमाणुरूप होती है। उसका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन कर और सब वर्गणाओंके द्रव्यके समान खण्ड करके प्रत्येक विरलनके प्रति देने पर एक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है। इसलिए सिद्ध है कि वह सब वर्गणाओंके अनन्तवें भागप्रमाण है। संख्यातप्रदेशी वर्गणासे लेकर प्रत्येकशरीरवर्गणा तक इनकी एकश्रेणिवर्गणाशलाकाएं सब वर्गणाशलाकाओंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ऐसा यहां कहना चाहिए। अनन्तर प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यवर्गणाएं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। यथा—ध्रुवशून्य वर्गणाकी

१. ता॰प्रतौ 'णियमाभावादो। एवं' इति पाठः। २. ता॰प्रतौ 'भागं लद्धं' इति पाठः।

तं जहा—धुवसुण्णवग्गणाए चरिमवग्गणं सेडीए असंखेज्जदिभागेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण च गुणिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय जं लद्धं तत्थेव पक्खित्ते सव्ववग्गणपमाणं होदि। पुणो धुवसुण्णवग्गणाए वग्गणसलागाहि भागे हिदे जं भागं लद्धं तस्स पमाणमसंखेज्जाणि जगपदराणि। एदेण सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे धुवसुण्णवग्गणपमाणं होदि। तदो धुवसुण्णवग्गणाओ सव्ववग्गणाणमसंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धं। बादरणिगोदवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। कुदो? बादरणिगोदवग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण च गुणिदजगपदरासंखेज्जदिभागस्स सादिरेयस्स उवलंभादो। बादरणिगोदवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णवग्गणाओ सव्वेगसेडिवग्गणाणं केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो। कुदो? धुवसुण्णवग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदजगपदरस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। सुहुमणिगोदवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो। असंखेज्जदिभागो। कुदो? सुहुमणिगोदवग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। सुहुमणिगोदवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णदव्ववग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। कुदो? सेसवग्गणाहि

अन्तिम वर्गणाको जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे, अंगुलके असंख्यातवें भागसे, पल्यके असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करके और पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर सब वर्गणाओंका प्रमाण होता है। पुनः ध्रुवशून्यवर्गणाकी वर्गणाशलाकाओंका भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका प्रमाण असंख्यात जगप्रतर होता है। इसका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है। इसलिए ध्रुवशून्यवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं यह सिद्ध होता है। बादरनिगोदवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि बादरनिगोदवर्गणाओंका सब वर्गणाओंमें भाग देने पर अंगुलके असंख्यातवें भागसे और पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित साधिक जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। बादरनिगोदवर्गणासे आगेकी ध्रुवशून्यवर्गणाऐं सब एकश्रेणिवर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि ध्रुवशून्यवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे आगेकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि शेष वर्गणाओंका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर

सव्ववग्गणदव्वे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। महाखंधदव्व-वग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? महाखंध-दव्ववग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। चउत्थधुवसुण्णवग्गणाए चरिमवग्गणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्ताओ महाखंधएगसेडिवग्गणाओ होंति त्ति गुरूवएसादो वा।

णाणासेडिवग्गणभागाभागाणुगमेण महाखंधणाणासेडिवग्गणाओ णाणासेडिसव्व-वग्गणाणं[1] केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो। कुदो ? महाखंधदव्ववग्गणाए एगत्तादो। सुहुमणिगोदणाणासेडिवग्गणाओ सव्वणाणासेडिवग्गणाणं केवडियो भागो ? अणंतिम-भागो। कुदो ? वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तणाणासेडिसुहुमणिगोदवग्गणाहि णाणासेडि-सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे अणंतरूवुवलंभादो। एवं बादरणिगोदवग्गणाणं पत्तेयसरीर-वग्गणाणं पि वत्तव्वं; असंखेज्जलोगमेत्तवग्गणाणमत्थित्तणेण भेदाभावादो। सांतरणिरंतर-णाणासेडिवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो ? अणंतिमभागो। एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियवग्गणे त्ति। असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जा भागा। संखेज्जपदेसियवग्गणाओ एयपदेसियवग्गणा च सव्व-वग्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? एकपदेसियवग्गणायामादो

पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि महास्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। अथवा चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाकी अन्तिम वर्गणाको पल्यके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर वहां एक खण्डमें जितने अंक उपलब्ध होते हैं उतनी महास्कन्धएकश्रेणिवर्गणाऐं होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है।

नानाश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगमकी अपेक्षा महास्कन्धनानाश्रेणिवर्गणाऐं नानाश्रेणि सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि महास्कन्धद्रव्यवर्गणा एक है। सूक्ष्मनिगोदनानाश्रेणिवर्गणाऐं सब नानाश्रेणिवर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण नानाश्रेणिसूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका नानाश्रेणि सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार बादरनिगोदवर्गणाओं और प्रत्येकशरीरवर्गणाओंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण वर्गणाओंके अस्तित्वकी अपेक्षा इनमें पूर्व वर्गणाओंसे कोई भेद नहीं है। सान्तर-निरन्तरनानाश्रेणिवर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? अनन्तवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्राप्त होने तक कथन करना चाहिए। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाऐं सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं। संख्यातप्रदेशी वर्गणाऐं और एकप्रदेशी वर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं ? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं,

१. म०प्रतौ 'महाखंधणाणासेडिसव्ववग्गणाणं' इति पाठः।

दुपदेसियवग्गणायामो विसेसहीणो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। एदेण कमेण भागहारस्स अद्धमेत्तं गंतूण दुगुणहाणी होदि त्ति गुरूवदेसादो। एवं वग्गणा-भागाभागाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणअप्पाबहुगाणुगमेण सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा। कुदो? एगरूवत्तादो। संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? रूवूणुक्कस्स-संखेज्जयं। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? सग-रासिस्स संखेज्जदिभागभूदअसंखेज्जा लोगा। को पडिभागो? संखेज्जपदेसियवग्गणाओ। आहारदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ। अथवा गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो। तेजादव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो? सगरासिस्स अणंतिमभागो। तस्स को पडिभागो? आहारदव्ववग्गणाओ। भासा-दव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। मणदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। कम्मइयदव्व-वग्गणाओ अणंतगुणाओ। सव्वत्थ अप्पप्पणो हेट्ठिमएगसेडिसव्ववग्गणाहि[1] उवरिम-एगसेडिसव्ववग्गणासु अवहिरिदासु गुणगाररासी आगच्छदि। असंखेज्जपदेसियदव्व-वग्गणाए उवरि आहारवग्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। कुदो?

क्योंकि एकप्रदेशी वर्गणाके आयामसे द्विप्रदेशी वर्गणाका आयाम विशेष हीन है। उसका प्रतिभाग क्या है? असख्यात लोक उसका प्रतिभाग है। इस क्रमसे भागहारके अर्धभाग तक जाकर द्विगुणी हानि होती है ऐसा गुरुका उपदेश है।

इस प्रकार वर्गणाभागाभानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सबसे स्तोक है, क्योंकि उसका प्रमाण एक है। उससे संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। उससे असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाऐं असंख्यात-गुणी हैं। गुणकार क्या है? अपनी राशिके संख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? संख्यातप्रदेशी वर्गणाऐं प्रतिभाग है। उससे आहारद्रव्यवर्गणाऐं अनन्त-गुणी हैं। गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाऐं प्रतिभाग है। अथवा गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। उससे तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाऐं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है? अपनी राशिका अनन्तवां भाग गुणकार है। उसका प्रतिभाग क्या है? आहारद्रव्य-वर्गणाऐं प्रतिभाग है। उससे भाषाद्रव्यवर्गणाऐं अनन्तगुणी हैं। उससे मनोद्रव्यवर्गणाऐं अनन्तगुणी हैं। उससे कार्मणद्रव्यवर्गणाऐं अनन्तगुणी हैं। सर्वत्र अपनी अपनी पिछली एक-श्रेणिद्रव्यवर्गणाओंका आगेकी एकश्रेणि सब वर्गणाओंमें भाग देने पर गुणकारराशि उत्पन्न होती है। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके आगे और आहारशरीरद्रव्यवर्गणाके पूर्व अनन्तप्रदेशी

१. म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु '-सेडिदव्ववग्गणाहि' इति पाठः।

उवरि ट्ठविदचत्तारिगुणगारेहिंतो हेट्ठा ट्ठविदभागहारस्स अणंतगुणस्स आहारहेट्ठिम-अगहणदव्ववग्गणायामुप्पायणट्ठं जहण्णपरित्ताणंतस्स ट्ठविदगुणगारादो अणंतगुणहीण-त्तुवलंभादो। कुदो एदं णव्वदे ? गुरूवदेसादो। तेजइयस्स हेट्ठा आहारदव्ववग्गणाए उवरि विदियअगहणदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। तेजइयस्स उवरि भासावग्गणाए हेट्ठा तदियअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। भासावग्गणाए उवरि मणस्स हेट्ठा चउत्थअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। मणस्स उवरि कम्मइयस्स हेट्ठा पंचमअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। गुणगारो सव्वत्थ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणंतभागमेत्तो। पुणो धुवखंधदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्स को पडिभागो ? पंचमअगहणवग्गणाओ। अचित्त-अद्धुवखंधदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो। सांतरणिरंतरवग्गणाए उवरि पत्तेयसरीरवग्गणाए हेट्ठा पढमधुव-सुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पत्तेयसरीरवग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्स को पडिभागो ? पढमधुव-

द्रव्यवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं, क्योंकि आगे स्थापित किये गये चार गुणकारोंसे पूर्वमें स्थापित किया गया अनन्तगुणा भागहार आहारवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाके आयामके उत्पन्न करनेके लिए जघन्य परीतानन्तके स्थापित किये गये गुणगारसे अनन्तगुणा हीन उपलब्ध होता है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

तैजसशरीरसे पूर्व और आहारद्रव्यवर्गणाके आगे दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणाएं अनन्त-गुणी हैं। तैजसशरीरसे आगे और भाषावर्गणाके पूर्व तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। भाषावर्गणासे आगे और मनोवर्गणासे पूर्व चौथी अग्रहण-द्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणाके आगे और कार्मणवर्गणाके पूर्व पांचवीं अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिद्रव्यवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार सर्वत्र अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उसका प्रतिभाग क्या है ? पांचवीं अग्रहणवर्गणाएं प्रतिभाग है। अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्य-वर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। सान्तर-निरन्तरवर्गणाके आगे और प्रत्येकशरीरवर्गणाके पूर्व प्रथम ध्रुवशून्य-वर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। प्रत्येकशरीरवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उसका प्रतिभाग क्या है ? प्रथम

सुण्णवग्गणाओ। पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोदवग्गणाए हेट्ठा विदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो ? अणंता लोगा। तं जहा—एगबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवं ठविय पुणो एदस्स अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगसगविस्सासुवचएहि गुणिय एगट्ठं कादूण गुणगारे ठविदे एगजीवस्स दव्वपमाणं होदि। पुणो एदस्स जीवस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे ठविदे उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणा होदि। पुणो एगं बादरणिगोदजीवं ठविय एदस्स पस्से अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगविस्सासुवचएहि गुणिदे एगट्ठीकदे गुणगारभावेण ठविदे एगजीवदव्वं होदि। पुणो एरिसा बादरणिगोदजीवा एगणिगोदसरीरम्हि सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता अत्थि त्ति काऊण असंखेज्जलोगोवट्टिदसव्वजीवरासिणा[1] पुव्विल्लएगजीवदव्वे गुणिदे एगणिगोदसरीरदव्वं होदि। पुणो तम्मि असंखेज्जलोगेहि एगबादरणिगोदवग्गणसरीरेहि गुणिदे एगपुलवियाए दव्वं होदि। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियसलागाहि गुणिदे सव्वजहण्णबादरणिगोदवग्गणा होदि। पुणो एत्थ एगरूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुण्णवग्गणपमाणं होदि। पुणो एदम्हि

ध्रुवशून्यवर्गणाएं प्रतिभाग है। प्रत्येकशरीरवर्गणाके आगे और बादरनिगोदवर्गणाके पूर्व दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणि आकाशप्रदेशवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अनन्त लोक गुणकार है यथा—एक बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवको स्थापित कर पुनः इसके अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने अपने विस्रसोपचयोंसे गुणित कर और एकत्र कर गुणकाररूपसे स्थापित करने पर एक जीवका द्रव्यप्रमाण होता है। पुनः इसका पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार स्थापित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है। पुनः एक बादरनिगोद जीवको स्थापित कर इसके पार्श्वमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने विस्रसोपचयोंसे गुणित कर और एकत्र कर गुणकाररूपसे स्थापित करने पर एक जीवका द्रव्य होता है। पुन इस प्रकार बादरनिगोद जीव एक निगोदशरीरमें सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा समझ कर असंख्यात लोक से भाजित सब जीवराशिसे पहलेके एक जीवद्रव्यके गुणित करने पर एक निगोदशरीरका द्रव्य होता है। पुनः उसे असंख्यात लोकप्रमाण एक बादरनिगोदवर्गणाशरीरोंसे गुणित करने पर एक पुलविका द्रव्य होता है। पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविशलाकाओंसे गुणित करने पर सबसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है। पुनः इसमेंसे एक अंकके कम कर देनेपर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है। पुनः इसमें उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भाग देनेपर

१. ता०प्रतौ '-लोगे वट्टिदे सव्व-' अ०का०प्रत्योः '-लोगोवट्टिदे सव्व-' इति पाठः।

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए भागे हिदे कम्मणोकम्मविस्सासुवचयसहियउवरिल्लपोग्गल-पुंजादो हेट्टिमपोग्गलपुंजो सरिसो त्ति अवणिय उवरिल्लआवलियाए असंखेज्जदि-भागेण गुणिदअसंखेज्जलोगेहि हेट्टिल्लअसंखेज्जलोगेसु ओवट्टिदेसु असंखेज्जा लोगा लब्भंति। पुणो एदे असंखेज्जे लोगे पुव्विल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिय एदेहि सव्व-जीवरासिम्हि भागे हिदे अणंता लोगा आगच्छंति[1]। पुणो एदेहि सव्वुक्कस्सपत्तेय-सरीरवग्गणाए गुणिदाए उक्कस्सधुवसुण्णवग्गणादो हेट्टिमसव्वधुवसुण्णवग्गणाओ होंति।

एत्थ के वि आइरिया उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो उवरिमधुवसुण्णएगसेडी असंखेज्जगुणा। गुणगारो वि घणावलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति भणंति तण्ण घडदे। कुदो? संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा जीवेहि जहण्णबादरणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि विणा जहण्णबादरणिगोदवग्गणा ण उप्पज्जदि; बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता णिगोदाणं त्ति सुत्तणिद्देसादो। एक्केक्किस्से पुलवियाए सरीरपमाणमसंखेज्जा लोगा। एक्केक्कम्हि सरीरे अणंता णिगोदजीवा अणंताणंतकम्मणोकम्मपोग्गलभारवहिणो अत्थि, 'प्रत्येक-मात्मदेसाः कर्मावयवैरनन्तकैर्बद्धाः' इति वचनात्। तम्हा अणंता लोगा गुणगारो त्ति एदं चेव घेत्तव्वं। उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए विस्सासुवचयगुणगारो जेण अणंतो

कर्म और नोकर्मके विस्रसोपचय सहित उपरिम पुद्गल पुञ्जमेंसे अधस्तन पुद्गलपुञ्ज सदृश है इसलिए निकाल कर उपरिम आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित असंख्यात लोकोंसे अधस्तन असंख्यात लोकोंके भाजित करने पर असंख्यात लोक लब्ध आते हैं। पुनः इन असं-ख्यात लोकोंको पहलेके पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित कर इनका सब जीवराशिमें भाग देने पर अनन्त लोक आते हैं। पुनः इनसे सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके गुणित करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणासे अधस्तन सब ध्रुवशून्यवर्गणाएँ होती हैं।

यहां पर कितने ही आचार्य उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यएकश्रेणि असंख्यातगुणी है और गुणकार भी घनावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि संख्यात या असंख्यात जीवोंसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बिना जघन्य बादरनिगोद-वर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि 'बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ता णिगोदाणं' ऐसा सूत्रका निर्देश है। एक एक पुलविमें शरीरोंके प्रमाण असंख्यात लोक हैं। एक एक शरीरमें अनन्तानन्त कर्म-नोकर्मपुद्गलभारसे युक्त अनन्त निगोद जीव हैं, क्योंकि आत्माका प्रत्येक देश अनन्त कर्मपरमाणुओंसे बद्ध है ऐसा वचन है, इसलिए अनन्त लोक गुणकार है यह वचन ही ग्रहण करना चाहिए।

शंका—उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके विस्रसोपचयका गुणकार चूंकि अनन्त है और

[1] अ०का०प्रत्योः 'आगच्छदि' इति पाठः।

जहण्णबादरणिगोदवग्गणा च विस्सासुवचएण जहण्णा तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो गुणगारो त्ति ण घडदे[1] ? ण; जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सपत्तेय-सरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ण च एवं, गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो चेव होदि त्ति गुरुवदेसेण अवगदत्तादो । जहण्णादो उक्कस्से विस्सासुवचए गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति कुदो णव्वदे ? पुव्वुत्तविस्सासुवचयअप्पाबहुगादो । तं जहा—सव्वत्थोवो ओरालियसरीरस्स सव्वपदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तदो वेउव्विय-सरीरस्स सव्वपदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदि-भागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलि-दोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजासरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुव-चओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

जघन्य बादरनिगोदवर्गणा विस्रसोपचयसे जघन्य है, अतः गुणकार पल्यके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है यह घटित हो जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इस प्रकार जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण ही है ऐसा गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

शंका—जघन्यसे उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्राप्त होनेमें गुणकार पल्यके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त विस्रसोपचय अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। यथा—औदारिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे थोड़ा है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यात-गुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे वैक्रियिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे आहारकशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे तैजसशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणगार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण

१. म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'त्ति घडदे' इति पाठः ।

तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कम्मइयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति । बादरणिगोदवग्गणाए सव्वेगसेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । कथमेदं णव्वदे ? बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति चूलियासुत्तादो णव्वदे । के वि आइरिया[1] असंखेज्जपदरावलियाओ गुणगारो त्ति भणंति तण्ण घडदे; चूलियासुत्तेण सह विरोहादो । विस्सासुवचयगुणगारं पडुच्च गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि । ण च एसो पहाणो; सेडीए असंखेज्जदिभागस्स पुलवियाणं[2] गुणगारस्स पहाणत्तुवलंभादो । बादरणिगोदवग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवग्गणाए हेट्ठा तदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए जीवेहिंतो जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणजीवाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागगुणगारुवलंभादो । कुदो एदमवगम्मदे ?

गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे कार्मणशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

बादरनिगोदवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—'बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस चूलिकासूत्रसे जाना जाता है।

कितने ही आचार्य असंख्यात प्रतरावलिप्रमाण गुणकार है ऐसा कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है। यद्यपि विस्रसोपचयगुणकारकी अपेक्षा गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, परन्तु यह प्रधान नहीं है, क्योंकि जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके गुणकारकी प्रधानता उपलब्ध होती है।

बादरनिगोदवर्गणाओंसे आगे और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके पूर्व तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके जीवोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है।

१ आ०प्रतौ 'केत्तिआ आइरिया' इति पाठः। २ म०प्रति पाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'पुद (ल) वीयाणं' अ०का०प्रत्योः 'पुढवियाणं' इति पाठः।

अविरुद्धाइरियवयणादो। सुहुमणिगोदवग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ असंखेज्ज-गुणाओ। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंज्जदिभागो। महाखंधवग्गणाए सव्वएग-सेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? पदरस्स असंखेज्जदिभागो। तं जहा—सव्वएगसेडिसुहुमणिगोदवग्गणाओ ठविय पदरस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिस्से चेव उवरिमधुवसुण्णएगसेडिवग्गणासव्ववग्गणपमाणं होदि। पुणो तस्स हेट्ठा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारे ठविदे महाखंधसव्वएगसेडिवग्गणपमाणं होदि। पुणो एत्थ सुहुमणिगोदसव्वएगसेडिवग्गणाहि भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदि-भागो गुणगारो आगच्छदि त्ति घेत्तव्वं। सुहुमणिगोदवग्गणाए उवरि महाखंधदव्व-वग्गणाए हेट्ठा चउत्थधुवसुण्णसव्वएगसेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं सुगमं। एवमेगसेडिवग्गणअप्पाबहुअं भणिदं।

संपहि णाणासेडिवग्गणप्पाबहुअं भणिस्सामो। तं जहा—सव्वत्थोवा महा-खंधदव्ववग्गणाए दव्वा। कुदो? एगत्तादो। बादरणिगोदवग्गणाए दव्वा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तं जहा—बादरणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले अभवसिद्धियपाओग्गमव्वजहण्णवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तीयो सरिसधणियाओ लब्भंति। पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसाहियकमेण गंतूण जवमज्झट्ठाणे वि अवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—आचार्योंके विरोध रहित वचनसे जाना जाता है।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है। महास्कन्धवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? जगप्रतरका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है। यथा—सब एकश्रेणिसूक्ष्म-निगोदवर्गणाओंको स्थापित कर जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उसकी आगेकी ध्रुवशून्यएकश्रेणिवर्गणाकी सब वर्गणाओंका प्रमाण होता है। पुनः उसके नीचे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहारके स्थापित करने पर महास्कन्ध सब एकश्रेणिवर्गणाओंका प्रमाण होता है। पुनः यहां सूक्ष्मनिगोद सब एकश्रेणिवर्गणाओंसे भाजित करने पर जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार आता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे आगे और महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे पूर्व चौथी ध्रुवशून्य सब एकश्रेणि वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। कारण सुगम है। इसप्रकार एकश्रेणि-वर्गणा अल्पबहुत्व कहा।

अब नानाश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वको कहेंगे। यथा—महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके द्रव्य सबसे स्तोक हैं, क्योंकि वह एक है। उनसे बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। यथा—बादरनिगोदवर्गणाएं वर्तमान कालमें अभव्यप्रायोग्य सर्व जघन्य वर्गणाके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली प्राप्त होती हैं। पुनः ऊपर आगमाविरुद्ध विशेष अधिक क्रमसे जाती हुई यवमध्यमें भी सदृश धनवाली

लब्भंति। पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसहीणक्कमेण गंतूण उक्कस्सबादरणिगोद-वग्गणाओ वि सरिसधणियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति लब्भंति। पुणो एत्थ विसेसाहियकमेण ट्ठिदाओ चेव घेत्तूण अवराओ मोत्तूण जवमज्झपमाणेण हेट्ठिमउवरिमदव्वे कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झं होदि। एत्थ एगवग्गणं ट्ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जवमज्झपमाणं होदि। पुणो एदम्मि तीहि गुणहाणीहि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताहि गुणिदे सव्वदव्वं होदि। पुणो महाखंधदव्ववग्गणसलागाए ओवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो आगच्छदि। एसो गुणगारो सेचीयट्ठाणेसु वग्गणावट्ठाणक्कमजाणावणट्ठं परूविदो। एत्थ परमत्थदो पुण गुणगारो असंखेज्जलोगमेत्तो होदि। तं जहा—वट्टमाणकाले बादरणिगोदाणं सयलपुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्त-सरीरेहि आवूरिदाओ अत्थि। कुदो एदं णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो सुत्तसमाणादो। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणि-दिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ लब्भंति। तेण महाखंधदव्ववग्गणादो बादरणिगोदवग्गणाणं गुणगारो असंखेज्जलोगमेत्तो त्ति सिद्धं।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। पुनः ऊपर समयके अविरोधसे विशेष हीन क्रमसे जाती हुई सदृश धनवाली उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाएं भी आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण प्राप्त होती हैं। पुनः यहां पर विशेष अधिकके क्रमसे स्थित वर्गणाओंको ही ग्रहण कर और दूसरी वर्गणाओंको छोड़कर अधस्तन व उपरिम द्रव्यके यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है। यहां एक वर्गणाको स्थापित कर आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर यवमध्यका प्रमाण होता है। पुनः इसे आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण तीन गुणहानियोंसे गुणित करने पर सब द्रव्य होता है। पुनः महास्कन्धद्रव्यवर्गणाशलाकासे भाजित करनेपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार आता है। यह गुणकार सेचीय-स्थानोंमें वर्गणाओंके अवस्थानक्रमका ज्ञान करानेके लिए कहा है। परन्तु यहां पर परमार्थसे गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण होता है। यथा—वर्तमान कालमें बादरनिगोदकी सब पुलवियां असंख्यात लोकप्रमाण होकर प्रत्येक असंख्यात लोकप्रमाणशरीरोंसे आपूरित हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—सूत्रके समान अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है।

पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाएं प्राप्त होती हैं। इसलिए महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे बादरनिगोदवर्गणाओंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह सिद्ध होता है।

सुहुमणिगोदवग्गणाए णाणासेडिसव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? अवलियाए असंखेज्जदिभागो। बादरणिगोदवग्गणाओ जवमज्झवग्गणपमाणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्ताओ होंति। सुहुमणिगोदवग्गणाओ वि जवमज्झपमाणेण कदे तिण्णि चेव गुणहाणीयो होंति। तम्हा बादरणिगोदवग्गणाहि सह सुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसाओ त्ति वत्तव्वं। बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति ण घडदे? एत्थ परिहारो उच्चदे—सरिसाओ ण होंति; बादरणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाणं तिण्णिगुणहाणीहिंतो एत्थतणतिण्णं गुणहाणीणं च असंखेज्जगुणत्तदंसणादो। कुदो एदं णव्वदे? असंखेज्जगुणत्तण्णहाणुववत्तीदो। सामण्णप्पणाए पुण गुणगारो असंखेज्जा लोगा। कुदो? बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवा असंखेज्जगुणा। एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा। तेण कारणेण बादरणिगोदपुलवियाहिंतो सुहुमणिगोदपुलवियाओ असंखेज्जगुणाओ। एत्थ वि गुणगारो असंखेज्जा लोगा। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियाहि जदि एगा सुहुमणिगोदवग्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ता सुहुमणिगोदवग्गणाओ बादरणिगोदवग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ लब्भंति। तेण कारणेण बादरणिगोदवग्गणाहिंतो

सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें नानाश्रेणी सब वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? आवलिका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है।

. शंका—बादरनिगोदवर्गणाएँ यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण होती हैं। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ भी यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन ही गुणहानियां होती हैं। इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ बादरनिगोदवर्गणाओंके समान हैं ऐसा कहना चाहिए। बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ असंख्यातगुणी हैं यह घटित नहीं होता?

समाधान—यहाँ इस शंकाका परिहार करते हैं। ये दोनों वर्गणाएँ समान नहीं होतीं, क्योंकि बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाएँ और तीन गुणहानियोंसे यहाँ की तीन गुणहानियां असंख्यातगुणी देखी जाती हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—अन्यथा असंख्यातगुणत्व नहीं बन सकता, इससे जाना जाता है।

सामान्यकी विवक्षामें तो गुणकार असंख्यात लोक है, क्योंकि बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्म निगोद जीव असंख्यातगुणे हैं। यहाँ पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है। इसलिए बादरनिगोद पुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोद पुलवियां असंख्यातगुणी हैं। यहाँ पर भी गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है। आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंसे यदि एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फल गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ प्राप्त होती हैं। इसलिए बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद-

सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सिद्धं ।

किं च उक्कस्सिया बादरणिगोदवग्गणा सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि णिप्पज्जदि । सुहुमणिगोदवग्गणा पुण उक्कस्सिया वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि चेव णिप्पज्जदि । एदम्हादो च णव्वदे जहा बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति । बादरणिगोदउक्कस्सवग्गणजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति जेण भणिदं तेण सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो बादरणिगोदवग्गणाणं बहुत्तं किण्ण जायदे ? ण एस दोसो; बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणं गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेण जदि एक्कम्हि सुहुमणिगोदसरीरे अच्छमाणजीवाणं गुणगारो एयघणलोगमेत्तो होज्ज तो वि बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ चेव; जीवगुणगारमाहप्पुवलंभादो । तेण लद्धासंखेज्जलोगेहि बादरणिगोदवग्गणासु गुणिदासु सुहुमणिगोदवग्गणपमाणं होदि ।

पत्तेयसरीरदव्ववग्गणासु णाणासेडिदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं जहा—अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाए अवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरसरिसधणियवग्गणाओ लब्भंति । अभवसिद्धियपाओग्गजवमज्झे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिस-

वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं यह सिद्ध हुआ ।

दूसरे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे निष्पन्न होती है परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियों से निष्पन्न होती है, इससे भी जाना जाता है कि बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं ।

शंका—बादरनिगोद उत्कृष्ट वर्गणाके जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जघन्य वर्गणाके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, चूंकि इसप्रकार कहा है इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे बादरनिगोदवर्गणाएं बहुत क्यों नहीं हो जातीं ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीवोंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, अतः यदि एक सूक्ष्मनिगोद शरीरमें रहनेवाले जीवोंका गुणकार एक घनलोकप्रमाण होवे तो भी बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं असंख्यातगुणी ही हैं, क्योंकि जीवोंके गुणकारकी विपुलता उपलब्ध होती है । इसलिए लब्ध असंख्यात लोकोंसे बादरनिगोदवर्गणाओंके गुणित करने पर सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका प्रमाण होता है ।

प्रत्येक शरीरद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणिद्रव्यवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यथा—अभव्यप्रायोग्य सबसे जघन्य वर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येकशरीर सदृश धनवाली वर्गणाएं प्राप्त होती हैं । अभव्य-

धणियवग्गणाओ लब्भंति। उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए वि आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ लब्भंति। पुणो जवमज्झस्स हेट्ठोवरि विसेसाहियहीण-वग्गणाओ[1] घेत्तूण जवमज्झवग्गणपमाणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झं होदि। णवरि सुहुमणिगोदसरिसधणियजवमज्झवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीरसरिसधणियजवमज्झ-वग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तेण कारणेण सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सिद्धं। अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा। बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाण-मसंखेज्जगुणत्तं होदु णाम; बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणमसंखेज्जगुणत्तुव-लंभादो। किंतु एदं ण जुज्जदे सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्ज-गुणाओ त्ति । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाण-मणंतगुणत्तदंसणादो । ण एस दोसो; अणंताणंतजीवेहि सव्वजीवरासीए असंखेज्जदि-भागमेत्तेहि एगसुहुमणिगोदवग्गणणिप्पत्तीदो । एग-दो-तिण्णिआदि जा उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि चेव जीवेहि पत्तेयसरीराणमेगवग्गणुप्पत्तिदंसणादो ? असंखेज्जगुणत्तं ण विरुज्झदे। सव्वमेदं कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो।

प्रायोग्य यवमध्यमें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणाएं प्राप्त होती हैं। उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणामें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणाएं प्राप्त होती हैं। पुनः यवमध्यके नीचे और ऊपर क्रमसे विशेष अधिक और विशेष हीन वर्गणाओंको ग्रहण कर यवमध्य वर्गणाके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है। इतनी विशेषता है कि सूक्ष्मनिगोद सदृश धनवाली यवमध्यवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीर सदृश धनवाली यवमध्य वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। यहाँ पर गुणकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। इस कारणसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं यह सिद्ध हुआ। अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

शंका—बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं असंख्यातगुणी होवें, क्योंकि बादर निगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं। किन्तु सूक्ष्मनिगोद-वर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं यह बात नहीं बनती, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव अनन्तगुणे देखे जाते हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि सब जीवराशिसे असंख्यातवें भागप्रमाण अनन्तानन्त जीवोंसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होती है। तथा एक, दो और तीनसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे प्रत्येकशरीर एक वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके असंख्यात-गुणे होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका—यह सब किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्योंके विरोध रहित वचनोंसे जाना जाता है।

१. ता०प्रतौ 'विसेसाहियऊणवग्गणाओ' इति पाठः।

अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? पत्तेयसरीरवग्गणा-दव्वपडिभागो । एसो गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो एदं णव्वदे ? सांतर-णिरंतरवग्गणणाणागुणहाणिसलागाणं पि सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तुवलंभादो । एदं पि कुदो णव्वदे ? सव्वजीवेहि अणंतगुणद्धुवक्खंधदव्ववग्गणद्धाणादो सव्वजीवेहि अणंत-गुणद्धुवसांतरणिरंतरवग्गणट्ठाणे अद्धाणमेत्तणाणाणंतगुणहाणिसलागाणमुवलंभादो[1] गुणहाणिसलागासु सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणासु संतीसु एदासिं अण्णोण्णब्भत्थरासीए णिच्छएण गुणहाणिसलागाहिंतो अणंतगुणत्तसिद्धीए । किं च जदि वि सांतरणिरंतर-वग्गणासु चरिमवग्गणा सरिसधणिएहि पत्तुक्कस्सभावा उवलब्भदि तो वि पत्तेयसरीर-वग्गणाहिंतो सांतरणिरंतरवग्गणाओ अणंतगुणाओ, चरिमाए वि वग्गणाए उक्कस्सेण अणंताणंताणं सरिसधणियाणं वग्गणाणं संभवादो ।

धुवक्खंधदव्ववग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसगणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी। तं जहा—सांतरणिरंतरसव्ववग्गणाओ सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणीयो सादिरेय-

अचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? प्रत्येकशरीरवर्गणाका द्रव्य प्रतिभाग है । यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंकी नानागुणहानिशलाकाएं भी सब जीवोंमें अनन्तगुणी पाई जाती हैं । इससे जाना जाता है कि यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणे ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके अध्वानसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे ध्रुवसान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके स्थानमें अध्वानप्रमाण नाना अनन्त गुणहानिशलाकाएं पाई जाती हैं । तथा गुणहानिशलाकाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणी होने पर इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि नियमसे गुणहानिशलाकाओंसे अनन्तगुणी सिद्ध होती है ।

दूसरे यद्यपि सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंमें अन्तिम वर्गणा सदृश धनरूपसे उत्कृष्ट भावको प्राप्त होकर उपलब्ध होती है तो भी प्रत्येकशरीरवर्गणाओंसे सान्तर-निरन्तरवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं, क्योंकि अन्तिम वर्गणामें भी उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली अनन्तानन्त वर्गणाएं सम्भव हैं ।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणी डेढ़ गुणहानिगुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । यथा—सान्तर-निरन्तर सब वर्गणाएं अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने

१. अ०प्रतौ 'सव्वजीवेहि सांतरणिरंतरवग्गणट्ठाणे अणंतगुणअद्धाण–' इति पाठः ।

पढमवग्गणमेत्तीयो, वग्गणं पडि अणंतगुणहीणकमेण गदत्तादो। एदं पुध ट्ठविय पुणो सांतरणिरंतरपढमवग्गणाए धुवक्खंधगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिदाए धुवक्खंधपढमवग्गणा होदि। पुणो तिस्से पमाणेण धुवखंधसव्ववग्गणासु कदासु दिवड्ढ-गुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ होंति। पुणो सांतरणिरंतरवग्गणाए धुवखंधवग्गणाए दिवड्ढ-गुणमेत्तपढमवग्गणासु ओवट्टिज्जमाणासु[1] दिवड्ढगुणहाणिगुणिदअण्णोण्णब्भत्थरासी आगच्छदि। एसो सव्वजीवेहि अणंतगुणो त्ति कथं णव्वदे? धुवक्खंधवग्गणद्धाणम्मि[2] सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तगुणहाणिसलागुवलंभादो। तं जहा—असंखेज्जलोगमेत्त-द्धाणम्मि जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तधुवक्खंध-वग्गणद्धाणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ लब्भंति। एदासिमण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेण सांतरणिरंतरवग्गणाए गुणिदाए धुवक्खंधदव्ववग्गणाओ होंति।

कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुणगारो? अब्भव-सिद्धिएहि अणंतगुणो कम्मइयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी। एत्थ गुणगारुप्पायणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं।

कम्मइयसरीरस्स हेट्ठा अगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा।

पर साधिक प्रथम वर्गणाप्रमाण होती हैं, क्योंकि वे प्रत्येक वर्गणाके प्रति अनन्तगुणे हीनक्रमसे गई हैं। इसे पृथक् स्थापित कर पुनः सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके प्रमाणमें ध्रुवस्कन्धकी नाना-गुणहानि शलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणा होती है। पुन: इसके प्रमाणसे ध्रुवस्कन्धकी सब वर्गणाओंके करनेपर डेढ़ गुणहानिप्रमाण प्रथम वर्गणाएं होती हैं। पुनः सान्तर-निरन्तरवर्गणाके द्वारा ध्रुवस्कन्धवर्गणाकी डेढ़ गुणहानिप्रमाण प्रथम वर्गणाओंके भाजित करनेपर डेढ़ गुणहानिगुणित अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है।

शंका – यह सब जीवराशिसे अनन्तगुणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—क्योंकि ध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानमें सब जीवोंसे अनन्तगुणी गुणहानिशलाकाएं उपलब्ध होती हैं। यथा—असंख्यात लोकप्रमाण अध्वानमें यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो सब जीवोंसे अनन्तगुणे ध्रुवस्कन्धवर्गणाअध्वानमें कितना प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणी नानागुणहानिशलाकाएं प्राप्त होती हैं। डेढ़ गुणहानिगुणित इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे सान्तर निरन्तरवर्गणाके गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाएं होती हैं।

कार्मणशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणी कार्मणवर्गणाओंके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। यहाँ पर गुणकारके उत्पन्न करनेकी विधि पहलेके समान कहनी चाहिए।

कार्मणशरीरसे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं।

१. अ॰प्रतौ 'उवट्टिज्जमाणासु' इति पाठः। २. ता॰प्रतौ '-वग्गणट्ठाणम्मि' इति पाठः।

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सगअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । कुदो ? एदिस्से अगहणदव्ववग्गणाए अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तणाणा-गुणहाणिसलागुवलंभादो । एदासिमण्णोण्णब्भत्थरासी सिद्धेहिंतो किमणंतगुणो किं वा अणंतगुणहीणो होदि त्ति ण णव्वदे, विसिट्ठुवदेसाभावादो ।

मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? मणदव्व-गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी ।

मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणगुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

भासादव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण०? भासावग्गणा-गुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

भासावग्गणाए हेट्ठा तदणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंत-गुणा । को गुणगारो ? सगगुणहाणिसलागण्णोण्णब्भरासी ।

तेजइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजावग्गण-गुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

तेजइयस्स हेट्ठिमतदणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अगहणवग्गणगुणहाणिसलागाणमण्णोणब्भत्थरासी ।

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणी अपनी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है, क्योंकि इस अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण नाना गुणहानिशलाकाएं पाई जाती हैं । इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशि सिद्धोंसे क्या अनन्तगुणी है या अनन्तगुणी हीन है यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्य-वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

मनोद्रव्यवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहण गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भाषा-वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

भाषावर्गणासे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

तैजसशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

तैजसशरीरसे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

१. ता० प्रतौ 'गुणगारो ? आहार (अगहण) वग्गण' इति पाठः ।

आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवग्गण-गुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणाए हेट्ठा तदणंतरअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अगहणवग्गणगुणहाणिसलागण्णो-ण्णब्भत्थरासी । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? जहण्णपरित्ताणंतादो अणंतगुणो । एदस्स कारणं वुच्चदे । तं जहा— परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण तदित्थवग्गणमद्धं होदि । पुणो वि एत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण तदित्थवग्गणा चदुब्भागा होदि । पुणो अणेण विहाणेण असंखेज्जपदेसियवग्गणाए अब्भंतरे जहण्णपरित्ताणंतच्छेदणयमेत्त-गुणहाणीसु गदासु परमाणुवग्गणादो तदित्थवग्गणा जहण्णपरित्ताणंतगुणहीणा होदि ।

संपहि असंखेज्जपदेसियवग्गणाए उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जमेत्तद्धाणस्स असंखेज्जदिभागम्मि ट्ठिदवग्गणादो जदि परमाणुवग्गणा अणंतगुणा होदि तो असंखेज्जपदेसियवग्गणाए उवरिमम्मि ट्ठिदवग्गणं पेक्खिदूण परमाणुवग्गणा णिच्छएण अणंतगुणा होदि त्ति सद्दहेयव्वं । एवं होदि त्ति कादूण जहण्णपरित्ताणंतवग्गण-पमाणेण उवरिमअगहणसव्ववग्गणासु दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताओ होंति । पुणो असंखेज्ज-पदेसियवग्गणगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णगुणिदरासिणा अणंत-पदेसियपढमवग्गणाए गुणिदाए परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि । पुणो एदाए अणंत-

आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आहार-वर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है। आहारवर्गणासे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है । परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जघन्य परीतानन्तसे अनन्तगुणा गुणकार है। इसका कारण कहते हैं। यथा—परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे ऊपर असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर वहाँकी वर्गणा अर्धभागप्रमाण होती है। फिर भी इतना ही स्थान जाकर वहांकी वर्गणा चतुर्थभागप्रमाण होती है। पुनः इस विधिसे असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके भीतर जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदप्रमाण गुणहानियोंके जाने पर परमाणुवर्गणासे वहांकी वर्गणा जघन्य परीतानन्तगुणी हीन होती है।

अब असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रमाण स्थानके असंख्यातवें भागमें स्थित वर्गणासे यदि परमाणुवर्गणा अनन्तगुणी होती है तो असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके ऊपर स्थित वर्गणाको देखते हुए परमाणुवर्गणा निश्चयसे अनन्तगुणी होती है ऐसा श्रद्धान करना चाहिए। इस प्रकार होती है ऐसा समझ कर जघन्य परीतानन्त वर्गणाके प्रमाणसे उपरिम अग्रहण सब वर्गणाओंके करने पर वे डेढ़ गुणहानिप्रमाण होती हैं। पुनः असंख्यात-प्रदेशी वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और द्विगुणित कर जो अन्योन्यगुणित राशि उत्पन्न हो उससे अनन्तप्रदेशी प्रथम वर्गणाके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्य-

पदेसियदव्ववग्गणाए ओवट्टिदाए दिवड्ढगुणहाणिणोवट्टियअण्णोण्णब्भत्थरासी आगच्छदि। एदेण अणंतपदेसियअप्पिदवग्गणासु गुणिदासु परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? उक्कस्ससंखेज्जयं दुरूवूणं। पुणो एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च[1] गुणगारो होदि। तं जहा—परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए उक्कस्ससंखेज्जेण गुणिदाए एगपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए तिस्से असंखे०भागेण च अहियं संखेज्जपदेसियवग्गणाओ होंति। पुणो गुणागारम्मि एगरूवे अवणिदे रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाओ होंति। पुणो रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए अवणिदाए अहियगोवुच्छविसेसा होंति। संपहि दोगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगपरमाणुवग्गणा लब्भदि तो रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परमाणुवग्गणाए असंखे०भागो आगच्छदि। पुणो एदं रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तगुणगारम्मि अवणियसेसं परमाणुवग्गणाए गुणगारे ट्ठविदे संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणाओ होंति। परमाणुवग्गणाए एदासु ओवट्टिदासु एकरूवस्स असंखे०भागेणूणयं रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं लद्धं होदि। एदमेत्थ गुणगारो। असंखेज्जपदेसियणाणासेडिसव्ववग्गणदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणउक्कस्ससंखेज्जेहि परिहीणदिवड्ढगुणहाणीणं संखे०भागो। को पडिभागो?

वर्गणा होती है। पुनः इससे अनन्तप्रदेशी द्रव्य वर्गणाके भाजित करने पर डेढ़ गुणहानिसे भाजित अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है। इससे अनन्तप्रदेशी विवक्षित वर्गणाओंके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है। संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे होते हैं। गुणकार क्या है? दो कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। पुनः एक रूपका असंख्यातवां भाग गुणकार है। यथा- परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाके उत्कृष्ट संख्यातसे गुणित करने पर एक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा और उसका असंख्यातवां भाग अधिक संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाएं होती हैं। पुनः गुणकारमें से एक अंकके कम करने पर एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाएं होती हैं। पुनः एक कम उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनाके घटा देने पर अधिक गोपुच्छविशेष होते हैं। अब दो गुणहानिमात्र गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक परमाणुवर्गणा लब्ध होती है तो एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनमात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर परमाणुवर्गणाका असंख्यातवां भाग आता है। पुनः इसे एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकारमें से घटाकर शेष रहे द्रव्यका परमाणुवर्गणाका गुणकार स्थापित करने पर संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाएं होती हैं। परमाणुवर्गणासे इनके भाजित करने पर एकका असंख्यातवां भाग कम एक कम उत्कृष्ट संख्यात लब्ध होता है। यह यहां पर गुणकार है। असंख्यातप्रदेशी नानाश्रेणि सब वर्गणाद्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? एकका असंख्यातवां भाग कम उत्कृष्ट संख्यात हीन डेढ़ गुणहानियोंका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? एकका

१. ता०का०प्रत्योः 'असंखेज्जभागा च' इति पाठः।

रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं एगरूवस्स असंखे०भागेण ऊणयं। एत्थ कारणं सुगमं। एवं वग्गणप्पाबहुगं समत्तं। एवं चोद्दसेहि अणियोगद्दारेहि वग्गणाए सह वग्गणदव्व-समुदाहारो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

संपहि अणंतरोवणिधा णाम जमणियोगद्दारं तस्स परूवणं कस्सामो। तं जहा—अणंतरोवणिहा दुविहा—दव्वट्ठदा पदेसट्ठदा चेदि। दव्वट्ठदाए अणंतरोवणिधा वग्गणदव्वसमुदाहारे चेव परूविदा त्ति णेह परूवेदव्वा? ण, तत्थ अणुसंगेण सूचिदत्तादो। एत्थ पुण ताए चेव अहियारो त्ति तिस्से विसेसिदूण परूवणा कीरदे। परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो दुपदेसियदव्ववग्गणा विसेसहीणा। विसेसो पुण असंखे०-भागो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। तं जहा—असंखेज्जलोगे विरलेदूण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणे समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स वग्गणविसेस-पमाणं पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदं परमाणुवग्गणादो सोहिदे सेसं दुपदेसिय-वग्गणादव्वं होदि। बेरूवधरिदेसु अवणिदेसु तिपदेसियवग्गणादव्वं होदि। तिण्णि-रूवधरिदेसु परमाणुवग्गणदव्वादो अवणिदेसु चदुपदेसियवग्गणादव्वं होदि। एवं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव भागहारस्स अद्धमेत्तवग्गणाओ उवरि चडिदाओ त्ति। ताधे तदित्थवग्गणा दव्वट्ठदाए दुगुणहीणा होदि। पुणो एदाए

असंख्यातवां भाग कम एक कम उत्कृष्ट संख्यात प्रतिभाग है। यहां पर कारण सुगम है। इस प्रकार वर्गणाअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारों और वर्गणाके साथ वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अब अनन्तरोपनिधा नामका जो अनुयोगद्वार है उसका कथन करते हैं। यथा—अनन्त-रोपनिधा दो प्रकारकी है–द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता।

शंका—द्रव्यार्थताकी अपेक्षा अनन्तरोपनिधाका वर्गणासमुदाहारमें कथन किया है, इसलिए यहां कथन नहीं करना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहां पर अनुसंगसे उसका सूचन किया है। परन्तु यहां पर उसका ही अधिकार है, इसलिए उसका विशेषरूपसे कथन करते हैं।

परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा विशेष हीन है। विशेषका प्रमाण असंख्यातवां भाग है। उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोक प्रतिभाग है। यथा—असंख्यात लोकोंका विरलन करके उसपर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति वर्गणाविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहाँ एक अंकके प्रति प्राप्तद्रव्यको परमाणु वर्गणा द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष द्विप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है। दो अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको घटा देनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है। तीन विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको परमाणुवर्गणा-द्रव्यमें से घटा देनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है। इस प्रकार भागहारके अर्धभाग-प्रमाण वर्गणाओंके उत्तरोत्तर प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं। तब वहांकी वर्गणा द्रव्यार्थताकी अपेक्षा द्विगुणी हीन होती है। पुनः इस द्विगुण हीन वर्गणाका

दुगुणहीणवग्गणाए[1] पुव्वविरलणाए समखंडं कादूण दिण्णाए रूवं पडि एगेगवग्गणविसेसो पावदि। णवरि पुव्विल्लवग्गणविसेसादो संपहियवग्गणविसेसो दुगुणहीणो। पुणो एत्थ एगवग्गणविसेसे अवणिदे तदणंतरवग्गणादव्वं होदि। एवं विसेसहीणक्कमं जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। तदो तिस्से असंखेज्जभागहीणवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा संखेज्जभागहीणा। तिस्से को पडिभागो? जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणयाणं संखेज्जदिभागो। तं जहा— जहण्णपरित्तासंखेज्जद्धच्छेदणयाणं संखेज्जदिभागं विरलेदूण असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमदुगुणहीणवग्गणं समखंडं[2] कादूण दिण्णे रूवं पडि एगेगवग्गणविसेसो पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदं तत्थ अवणिदे तदणंतरउवरिमवग्गणादव्वपमाणं होदि। एवं संखेज्जभागहीणा होदूण गच्छंति जाव धुवखंधवग्गणाए अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। तदो तिस्से संखे०भागहीणचरिमवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा संखेज्जगुणहीणा। तस्स को पडिभागो? जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाणं संखेज्जदिभागो। तं जहा—जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाणं संखे०भागं विरलेदूण संखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमदुगुणहीणवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि। एवं णिरंतरक्कमेण संखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ

पूर्व विरलनके प्रति सम खण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है। इतनी विशेषता है कि पहलेके वर्गणाविशेषसे साम्प्रतिक वर्गणाविशेष द्विगुण हीन होता है। पुनः यहां पर एक वर्गणाविशेषके घटा देनेपर तदनन्तरवर्ती वर्गणाद्रव्य होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक विशेषहीन क्रमको जानकर ले जाना चाहिए। अनन्तर उस असंख्यात भागहीन वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यात भागहीन है। उसका प्रतिभाग क्या है ? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभाग है। यथा—जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके असंख्यात भागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुणहीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है। पुनः यहां विरलनमेंसे एक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको उस वर्गणामें से घटा देने पर उसकी अनन्तरवर्ती उपरिम वर्गणा द्रव्यका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणाएं संख्यात भागहीन होकर जाती हैं। अनन्तर उस संख्यातभागहीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यातगुणहीन है। उसका प्रतिभाग क्या है ? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है। यथा–जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके संख्यातभागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुण हीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त

१. ता०प्रतौ 'एदा दुगुणहीणा वग्गणाए' आ०प्रतौ 'एदा दुगुणहीणवग्गणाए' इति पाठः।
२. ता०का०प्रत्योः '–वग्गणस्स समखंडं' इति पाठः।

होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अण्णाओ अणंताओ वग्गणा [ओ] गदाओ त्ति । तिस्से संखेज्जगुणहीणचरिमवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा असंखे०गुणहीणा होदि । तस्स को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । तं जहा—असंखेज्जलोगे विरलेदूण पुणो संखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणदव्वं होदि । एवं णिरंतरकमेण असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । तिस्से उवरि जाओ अणंतरवग्गणाओ ताओ अणंतगुणहीणाओ होंति । तं जहा—अभवसिद्धिएहि अणंत-गुण-[सिद्धाणमणंतिमभाग] रासिं विरलेदूण पुणो असंखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तदित्थएगरूवधरिदं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । पुणो तस्सुवरिममणंतगुणहीणाओ चेव होंति । णवरि विसेसो अत्थि भागहारगओ[1] । तं जहा—अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतिमभाग-भागहारं[2] विरलेदूण पुणो पढमअणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि । एवं पुणो वि अणंतगुण-हीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ

वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणाएँ निरन्तर क्रमसे संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर जाती है। पुनः उस संख्यातगुणहीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह असंख्यातगुणी हीन होती है। उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है। यथा—असंख्यात लोकोंका विरलन करके पुनः संख्यातगुणहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाका समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहाँ एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका द्रव्य होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणाएँ निरन्तर क्रमसे असंख्यातगुणी हीन होकर जाती हैं। पुनः उसके ऊपर जो अनन्तर वर्गणाएँ है वे अनन्तगुणहीन होती है। यथा—अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंसे अनन्तवें भागप्रमाण राशिका विरलन करके पुनः असंख्यातगुणी हीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणाएँ अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं। पुनः इसके आगे सब वर्गणाएँ अनन्तगुणी हीन ही होती हैं। मात्र भागहारगत कुछ विशेषता है। यथा—अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भागहारका विरलन करके पुनः प्रथम अनन्तगुणहीन वर्गणाओंमें से अन्तिम वर्गणाका समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर आगेकी वर्गणाका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये सब वर्गणाएँ फिर भी अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं।

१ ता०अ०प्रत्योः 'भागहारं गओ' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-मणंतिमभागहारं' अ०प्रतौ '-मणंतिमभागे भागहारं' इति पाठः।

गदाओ त्ति। पुणो तत्तो उवरि अणंतगुणहीणाओ चेव होंति। णवरि विसेसो भागहारगओ अत्थि। तं जहा—सव्वजीवेहि अणंतगुणहीणं सिद्धाणमणंतगुणं भागहारं विरलेदूण विदियवारं अणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगखंडं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि। एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुण-हीणाओ होदूण गच्छंति जाव सांतरणिरंतरवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति। पदेसट्ठदा ताव थप्पा।

परंपरोवणिधा दुविहा—दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेव। दव्वट्ठदाए परमाणु-दव्ववग्गणादो असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। असंखेज्जलोगमेत्तभागहारस्स अद्धं गंतूण दुगुणहाणी होदि त्ति भणिदं होदि। तस्सुवरि संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि। एवं णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धच्छेदणाणं संखेज्जभागमेत्तद्धाणं गंतूण एत्थ दुगुणहाणी होदि त्ति भणिदं होदि। पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि वग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति। एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि—परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि। परूवणदाए अत्थि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ। एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं पि अत्थि। पमाण-मसंखेज्जभागहीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जा लोगा। संखेज्जभाग-

पुनः उससे ऊपर वर्गणाएं अनन्तगुणी हीन ही होती हैं। मात्र यहाँ पर भागहारगत कुछ विशेषता है। यथा—सब जीवोंसे अनन्तगुणे हीन और सिद्धोंसे अनन्तगुणे भागहारका विरलन करके दूसरी बारमें अनन्तगुणहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके समान खण्ड करके देयरूपमें वहां पर देनेपर जो एक खण्ड प्राप्त होता है वह तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है। इस प्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके समाप्त होने तक ये सब वर्गणाएं अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं। यहां प्रदेशार्थता स्थगित करते हैं।

परम्परोपनिधा दो प्रकारकी है—द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता। द्रव्यार्थताकी अपेक्षा परमाणु द्रव्यवर्गणासे असख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणहीन द्विगुणहीन वर्गणाएं होती हैं जो ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक जाननी चाहिए। असंख्यात लोकप्रमाण भागहारके अर्धभागप्रमाण स्थान जाने पर द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इससे आगे संख्यात वर्गणाएं जाकर द्विगुणी हानि होती है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ले जाना चाहिए। जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर यहाँ द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। पुनः इससे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें सब वर्गणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए। यहाँ पर तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। प्ररूपणाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तरशलाकाएं हैं। एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर भी है। प्रमाण—असंख्यात भागहीन वर्गणाओंका एकप्रदेशगुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण है। संख्यातभागहीन वर्गणाओंका

हीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जाओ वग्गणाओ। णाणापदेसगुणहाणि-सलागाओ उभयत्थ पुण अणंताओ। अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं। णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ अणंतगुणाओ।

संपहि पदेसट्ठदाए अणंतरोवणिधा वुच्चदे। तं जहा—परमाणुपोग्गलवग्गण-पदेसादो दुपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया। किंचूणदुगुणा त्ति भणिदं होदि। तिपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया। किंचूणदुभागेण अहिया त्ति भणिदं होदि। चदुप्पदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? किंचूणतिभागेण। पंचपदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया। के० मेत्तेण ? किंचूणचदुब्भागेण। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव असंखेज्जा लोगा त्ति। विसेसो पुण संखेज्जपदेसियासु वग्गणासु संखेज्जदिभागो। असंखेज्जपदेसियासु वग्गणासु अणंतरहेट्ठिमवग्गणपदेसाणमसंखे०भागो। असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण पदेसजवमज्झं होदि। पुणो जवमज्झस्सुवरि[1] विसेसहीणाओ होदूण वग्गणाओ गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। विसेसो पुण असंखे० भागो। तस्स को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा। तस्सुवरि संखेज्जभागहीणा होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। उवरि जाणिदूण णेदव्वं जाव धुवखंधवग्गणाओ समत्ताओ त्ति।

एकप्रदेशगुणहानि अध्वान संख्यात वर्गणाप्रमाण है। परन्तु दोनों जगह नानाप्रदेशगुणहानि-शलाकाएँ अनन्त हैं। अल्पबहुत्व—एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है। इससे नाना-प्रदेशगुणहानिशलाकाएँ अनन्तगुणी हैं।

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं। यथा—परमाणु पुद्गल वर्गणाप्रदेशसे द्विप्रदेशी वर्गणाप्रदेश विशेष अधिक हैं। कुछ कम दूने हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इनसे त्रिप्रदेशी वर्गणाप्रदेश विशेष अधिक हैं। कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं। इनसे चतु प्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? कुछ कम त्रिभाग अधिक हैं। इनसे पञ्चप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? कुछ कम चतुर्थभाग अधिक हैं। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। किन्तु विशेषका प्रमाण संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें संख्यातवें भागप्रमाण है। असंख्यात-प्रदेशी वर्गणाओंमें अनन्तर अधस्तन वर्गणाप्रदेशोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है। असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर प्रदेशयवमध्य होता है। पुनः प्रदेशयवमध्यके ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक वर्गणाएँ विशेष हीन होकर जाती हैं। मात्र विशेष असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है। इसके ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणाएँ संख्यातभागहीन होकर जाती हैं। आगे ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए।

१. ता०प्रतौ 'गंतूण पदेसजवमज्झस्सुवरि' इति पाठः।

संपहि अणंतरोवणिधाए दव्वट्ठिदसंदिट्ठिविधिं वत्तइस्सामो । तं जहा— परमाणुदव्ववग्गणा संदिट्ठीए वेसदछप्पण्णपमाणा त्ति २५६ घेतव्वा। पुणो विसेस-हीणकमेण णेयव्वं जाव धुवक्खंधम्मि असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणे त्ति। सा वि संदिट्ठीए णव इदि गेण्हियव्वा । सेसं वेयणदव्वविहाणेण भणिदविहाणं संभलिदूण वत्तव्वं । णवरि एत्थ गुणहाणिअद्धाणं णिसेगभागहारपमाणं च असंखेज्जा लोगा । संपहि पदेसट्ठदाए भण्णमाणाए पुव्वुत्तसंदिट्ठिं ठविय तत्थतणपरमाणुपोग्गल-दव्ववग्गणाए एगपरमाणुणा गुणिदाए तिस्से पदेसपमाणं होदि । दुपदेसियदव्ववग्गणाए दोहि गुणिदाए दुपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । तिपदेसियदव्ववग्गणाए तीहि गुणिदाए तिपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । चदुपदेसियदव्ववग्गणाए चदुहि गुणिदाए चदुपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । एवं पंचगुणादिकमेण णेयव्वाओ जाव धुवक्खंधवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । एवं गुणणविहाणे कदे दव्वट्ठदाए जं गुणहाणि-अद्धाणं भणिदं परमाणुवग्गणप्पहुडि तमुवरि सगलं गंतूण पुणो विदियगुणहाणीए सयलद्धम्मि उवरि चडिदे तम्हि पदेसे[2] दोसु वग्गणट्ठाणेसु एगलद्धाणि वेजवमज्झाणि होंति । तेसिमेसा संदिट्ठी—

अब अनन्तरोपनिधामें द्रव्यार्थताकी संदृष्टिविधिको बतलाते हैं । यथा—संदृष्टिमें परमाणु द्रव्यवर्गणा दोसौ छप्पन २५६ लेनी चाहिए । पुनः ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक विशेष हीनक्रमसे ले जाना चाहिए। वह भी संदृष्टिमें नौ ९ लेनी चाहिए। शेष वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा कही गई विधिका स्मरण करके कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ पर गुणहानिअध्वान और निषेकभागहारका प्रमाण असंख्यात लोक है । अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा कथन करने पर पूर्वोक्त संदृष्टिको स्थापित करके वहाँकी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाको एक परमाणुसे गुणित करनेपर उसके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाको दोसे गुणित करने पर द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। त्रिप्रदेशी वर्गणाको तीनसे गुणित करनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। चतुःप्रदेशी द्रव्यवर्गणाको चारसे गुणित करनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंके समाप्त होनेतक पाँचगुणे आदिके क्रमसे ले जाना चाहिए। इस प्रकार गुणनविधिके करने पर द्रव्यार्थताकी अपेक्षा जो परमाणु वर्गणासे लेकर गुणहानिअध्वान कहा है वह ऊपर सब जाकर पुनः दूसरी गुणहानिका सकलार्ध ऊपर जानेपर उस स्थानमें दो वर्गणास्थानोंमें एक साथ लब्ध हुए दो यवमध्य होते हैं। उनकी यह संदृष्टि है (संदृष्टि मूलमें दी है)।

विशेषार्थ—द्रव्यार्थताकी अपेक्षा संदृष्टि—परमाणुद्रव्यवर्गणा २५६ और अन्तिम वर्गणा ९ बतलाई है। इसकी रचना वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा इस प्रकार है—

१, ता० का० प्रत्योः 'दव्वट्ठद-' इति पाठः । २. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'तंपि पदेसे' इति पाठः ।

११५२	११५२
११२०	१२००
१०५६	१२३२
९६०	१२४८
८३२	१२४८[1]
६७२	१२३२
४८०	१२००
२५६	११५२[2]

संपहि एत्थ पढमगुणहाणिचरिमवग्गण-विदियगुणहाणिपढमवग्गणाओ संदिट्ठी । अत्थदो च दो वि सरिसाओ । तदुवरिमवग्गणाओ जाव जवमज्झं ताव विसेसाहियाओ त्ति घेतव्वं। पुणो जवमज्झस्सुवरि विसेसहीणकमेण णेयव्वं जाव धुवक्खंधवग्गणाए असंखेज्जभागहीण-संखेज्जभागहीणदव्ववग्गणे त्ति । एवं कदे जवमज्झस्स हेट्ठा असंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीयो उपज्जंति त्ति । संपहि जवमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो दव्वट्ठदाए दिवड्ढगुणहाणीणमद्धच्छेदणयमेत्ताओ । तं जहा—जवमज्झस्स हेट्ठिमपढमगुणहाणिअद्धाणादो तदणंतरहेट्ठिमगुणहाणिअद्धाणमद्धं होदि । [3]विदियगुणहाणिअद्धाणादो तदणंतरहेट्ठिम-

प्रथम गु० हा०	द्वि० गु० हा०	त्रि० गु०	च० गु०	पं० गु०
१४४	१२८	३६	३२	९
अन्तिम वर्गणा	प्रथम वर्गणा	अन्तिम	प्रथम	अन्तिम
१६०	१२०	४०	३०	१०
१७६	११२	४४	२८	११
१९२	१०४	४८	२६	१२
२०८	९६	५२	२४	१३
२२४	८८	५६	२२	१४
२४०	८०	६०	२०	१५
२५६	७२	६४	१८	१६

इस संदृष्टिमें २५६ परमाणुवर्गणाकी द्रव्यार्थता है, २४० द्विप्रदेशी, २२४ त्रिप्रदेशी, २०८, चतुःप्रदेशी, १९२ पंचप्रदेशी वर्गणाकी द्रव्यार्थता है। इसीप्रकार आगे भी जानना चाहिये। प्रदेशार्थताका प्रमाण जाननेके लिए २५६ को एक से, २४० को दो से, २२४ को तीनसे, २०८ को चारसे गुणा करनेपर २५६, ४८०, ६७२ और ८३२ प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है। इसीप्रकार आगे भी जानकर गुणा करनेसे प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है। संदृष्टि मूलमें दी ही है। इसमें १२४८ की यवमध्य संज्ञा है।

यहाँ पर प्रथम गुणहानिकी अन्तिम वर्गणा और द्वितीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणाकी संदृष्टि है। वास्तवमें ये दोनों वर्गणाऐं समान हैं। इनसे ऊपरकी वर्गणाऐं यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। पुनः यवमध्यके उपर ध्रुवस्कन्धवर्गणाकी असंख्यातभागहीन और संख्यातभागहीन द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक विशेषहीन क्रमसे ले जाना चाहिए। ऐसा करनेपर यवमध्यके पूर्व असंख्यात द्विगुणवृद्धियाँ उत्पन्न होती हैं। यवमध्यके पूर्व ये गुणहानियाँ द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढ़ गुणहानिके अर्धच्छेदप्रमाण होती हैं। यथा—यवमध्यके पूर्व प्रथम गुणहानिअध्वानसे तदनन्तर पूर्वका गुणहानिअध्वान अर्धभागप्रमाण होता

१. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु '१२४०' इति पाठः । २. अ०का०प्रत्योः '११५६' इति पाठः । ३. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'विदियगुणहाणि–' इत्यादि वाक्यं नोपलभ्यते ।

तदियगुणहाणिअद्धाणमद्धं होदि । एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव परमाणुवग्गणपढमगुण-हाणि त्ति । अणुलोमेण पुण पढमगुणवड्ढिअद्धाणादो विदियगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणं होदि । पुणो एवं दुगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणदुगुणकमेण गच्छदि जाव जवमज्झं ति । जदि वि एत्थ जवमज्झादो हेट्ठा गुणहाणिमेत्तोदिण्णसव्ववग्गणपदेसा दुगुणहीणा ण होंति तो वि बुद्धीए दुगुणहीणा त्ति घेत्तूण परूवणा कदा बालजणपबोहणट्ठं । जवमज्झादो उवरि वि एवं चेव बुद्धीए दुगुणहीणत्तं संकप्पिय वत्तव्वं । णवरि उवरिमगुणहाणिअद्धाणं सव्वत्थ असंखेज्जा लोगा संखेज्जरूवाणि च। उवरिमगुणहाणि-अद्धाणाणि सव्वत्थ सरिसाणि ण होंति, जवमज्झादो उवरि चडिदद्धाणसंकलणदुगुण-मेत्तपक्खेवाणं सव्वत्थ धुवसरूवेण परिहाणिदंसणादो ।

है । इस प्रकार परमाणुवर्गणाकी प्रथम गुणहानिके प्राप्त होने तक प्रतिलोम विधिसे ले जाना चाहिए । अनुलोमविधिसे तो प्रथम गुणवृद्धिअध्वानसे दूसरा गुणवृद्धिअध्वान दूना होता है । इस प्रकार द्विगुणवृद्धि अध्वान यवमध्यके प्राप्त होने तक दूना दूना होकर गया है । यद्यपि यहाँ पर यवमध्यसे पूर्व गुणहानिमें प्राप्त हुए सब वर्गणाप्रदेश द्विगुणहीन नहीं होते हैं तो भी बालजनोंको बोध करानेके लिए बुद्धिसे वे द्विगुणहीन होते हैं ऐसा ग्रहण करके उनकी प्ररूपणा की है । यवमध्यके ऊपर भी इसी प्रकार बुद्धिसे द्विगुणहीनपनेका संकल्प करके कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सर्वत्र उपरिम गुणहानि अध्वान असंख्यात लोक और संख्यात अंक प्रमाण है । उपरिमगुणहानिअध्वान सर्वत्र समान नहीं होते हैं, क्योंकि यवमध्यसे जितने स्थान आगे जाते हैं उनके संकलनसे दूने प्रक्षेपोंकी सर्वत्र ध्रुवरूपसे हानि देखी जाती है ।

विशेषार्थ—यहाँ पर गुणहानिका प्रमाण ८ है, अतः डेढ़ गुणहानि (८×१½) = १२ स्थान जाने पर १२४८ यवमध्य प्राप्त होता है ।

प्रथम गुणहानि	द्वितीय गुणहानि	त्रि० गु० हा०	चतु० गु० हा०	पंच० गु० हा०
१४४×८=११५२ अन्तिम वर्गणा	१२८× ९=११५२ प्रथम वर्गणा	३६×२४=८६४ अन्तिम वर्गणा	३२×२५=८०० प्रथम वर्गणा	९×४०=३६० अन्तिम वर्गणा
१६०×७=११२०	१२०×१०=१२००	४०×२३=९२०	३०×२६=७८०	१०×३९=३९०
१७६×६=१०५६	११२×११=१२३२	४४×२२=९६८	२८×२७=७५६	११×३८=४१८
१९२×५=९६०	१०४×१२=१२४८ प्रथम यवमध्य	४८×२१=१००८	२६×२८=७२८	१२×३७=४४४
२०८×४=८३२	९६×१३=१२४८ द्वितीय यवमध्य	५२×२०=१०४०	२४×२९=६९६	१३×३६=४६८
२२४×३=६७२	८८×१४=१२३२	५६×१९=१०६४	२२×३०=६६०	१४×३५=४९०
२४०×२=४८०	८०×१५=१२००	६०×१८=१०८०	२०×३१=६२०	१५×३४=५१०
२५६×१=२५६	७२×१६=११५२	६४×१७=१०८८	१८×३२=५७६	१६×३३=५२८

प्रथम यवमध्यसे पूर्व १२३२, १२००, ११५२, ११५२, ११२०, १०५६, ९६०, ८३२ व ६७२

जवमज्झादो उवरिमपक्खेवावणयस्स किं पि अत्थपरूवणं[1] कस्सामो। तं जहा—जवमज्झदव्वे सरूवदिवड्ढगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झपदेसग्गं होदि। पुणो जवमज्झदव्वं ठविय दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झदव्वट्ठदाए समहिय-पदेसग्गं होदि। पुणो जवमज्झदव्वट्ठदादो उवरिमदव्वट्ठदाए एगो पक्खेवो हीणो त्ति दिवड्ढगुणहाणिणा जवमज्झदव्वट्ठदाए ओवट्टिदाए एगो पक्खेवो होदि। पुणो तम्मि दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिणा गुणिदे रिणपदेसग्गं होदि। तत्थ दोदव्वट्ठदपक्खेवे घेत्तूण पुध ठविय सेसगुणगार-भागहारा सरिसा त्ति अवणिदे जवमज्झदव्वट्ठदा होदि। एदं पदेसग्गं पुव्विल्लपदेसग्गम्मि अवणिदे जवमज्झपदेसग्गादो सरिसं पदेसग्गं होदि। पुणो तत्थ पुध ठविददव्वट्ठदाए दोपक्खेवमेत्तपदेसेसु अवणिदेसु जवमज्झादो अणंतर-उवरिमवग्गणपदेसग्गं होदि। पुणो जवमज्झादो उवरि तदियाए वग्गणाए पदेसग्गं जवमज्झपदेसेहिंतो छहि दव्वट्ठदापक्खेवमेत्तपदेसेहि ऊणं होदि। चउत्थवग्गणाए पदेसग्गं बारसेहि ऊणं होदि। एवं चडिदद्धाणसंकलणं दुगुणमेत्तदव्वट्ठदपक्खेवेहि ऊणं होदूण वग्गणाणं पदेसग्गमुवरि गच्छदि। णवरि जत्थ दव्वट्ठदे[2]पक्खेवा सरिसा

ये ९ स्थान जाकर यवमध्य (निकटतम) आधा ६७२ आता है। द्वितीय यवमध्यसे उत्तर १२३२. १२००, ११५२, १०८८, १०८०, १०६१, १०४०. १००८. ९६८. ९२०, ८६४, ८००, ७८०, ७५६, ७२८, ६९६, ६६० व ६२० ये १८ स्थान जाकर ६२० यवमध्य का (निकटतम) आधा ६२० आता है। इस प्रकार इस संदृष्टिके अनुसार प्रदेशार्थतामें यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानिमें ९ स्थान हैं और उत्तरकी गुणहानिमें (९×२)=१८ स्थान हैं।

अब यवमध्यसे उपरिम प्रक्षेपोंके निकालनेकी विधिका कुछ कथन करते हैं। यथा—यव-मध्यके द्रव्यको एक अधिक डेढ़ गुणहानिसे गुणित करनेपर यवमध्य प्रदेशाग्र होता है। पुनः यवमध्यके द्रव्यको स्थापित कर दो अधिक डेढ़ गुणहानिसे गुणित करने पर यवमध्यद्रव्यार्थताकी अपेक्षा एक अधिक प्रदेशाग्र होता है। पुनः यवमध्यद्रव्यार्थतासे उपरिम द्रव्यार्थतामें एक प्रक्षेप हीन है, इसलिए डेढ़ गुणहानिसे यवमध्यद्रव्यार्थताके भाजित करने पर एक प्रक्षेप होता है। पुनः उसेदो अधिक डेढ़गुणहानिसे गुणित करने पर ऋणस्वरूप प्रदेशाग्र होता है। वहाँ द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेप लेकर पृथक् स्थापित करके शेष गुणकार और भागहार समान है, इसलिए अलग कर देने पर यवमध्यकी द्रव्यार्थता होती है। इस प्रदेशाग्रको पहलेके प्रदेशाग्रमेंसे कम कर देनेपर यवमध्यके प्रदेशाग्रके समान प्रदेशाग्र होता है। पुनः वहाँ पृथक् स्थापित हुई द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंके अलग करने पर यवमध्यसे अनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रदेशाग्र होता है। पुनः यवमध्यसे ऊपर तीसरी वर्गणाका प्रदेशाग्र यवमध्यके प्रदेशोंसे द्रव्यार्थताके छह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है। चतुर्थ वर्गणाका प्रदेशाग्र बारह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है। इस प्रकार जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनसे गुणित दूने द्रव्यार्थतारूप प्रक्षेपोंसे हीन होता हुआ वर्गणाओंका प्रदेशाग्र ऊपर जाता है। इतनी विशेषता है कि जहाँ पर द्रव्यार्थताके प्रक्षेप समान

१. अ०का०प्रत्योः 'अद्धपरूवणं' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'दव्वाट्ठद–' इति पाठः।

ण होंति तत्थ पुध तेसिं संकलणं कादूण सिस्साणं पडिबोहो कायव्वो। एवं जवमज्झस्स उवरि सव्वगुणहाणीणमद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तं चेव पुध पुध होदि। होंताओ वि विसेसहीणाओ चेव होंति, सरिसाओ ण होंति, दव्वट्टद[1]पक्खेवाणं जवमज्झं पेक्खिदूण अवट्ठिदकमेण हाणीए अणुवलंभादो। एदस्स भावत्थो— दव्वट्टदापक्खेवेसु[2] अणवट्ठिदरूवेण एगेगगुणहाणिम्हि सगसगसरूवेण हीयमाणेसु गुणगारेसु च सव्वत्थ रूवाहियकमेण गच्छमाणेसु गुणहाणिअद्धाणं सरिसभावस्स कारणं णत्थि। तेण विसरिसं चेव तदद्धाणमिदि भणिदं होदि। एवमणंतरोवणिधा समत्ता।

संपहि पदेसमस्सिदूण परंपरोवणिधा जवमज्झादो हेट्ठा वुच्चदे। तं जहा—

नहीं होते हैं वहां उनकी अलगसे संकलना करके शिष्योंको ज्ञान कराना चाहिए। इस प्रकार यवमध्यके ऊपर सब गुणहानियोंका अध्वान पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण होता है। ऐसा होता हुआ भी विशेष हीन ही होता है सदृश नहीं होता, क्योंकि यवमध्यको देखते हुए द्रव्यार्थताके प्रक्षेपोंमें अवस्थित क्रमसे हानि उपलब्ध नहीं होती है। इसका आशय यह है कि द्रव्यार्थताके प्रक्षेपोंके अवस्थितरूपसे एक एक गुणहानिमें अपने अपने स्वरूपसे घटने पर और गुणकारोंके सर्वत्र एक अधिकके क्रमसे जाने पर गुणहानिअध्वानोंके सदृशरूप होनेका कारण नहीं है। इससे गुणहानियोंका अध्वान विसदृश ही होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

विशेषार्थ संदृष्टिमें द्वितीय गुणहानिमें द्रव्यार्थताका प्रक्षेप ८ है। इसका दुगणा १६ है। यवमध्य (१२४८) के पश्चात् प्रथम प्रदेशार्थता १२३२ है जो यवमध्यसे एक दुगुणा प्रक्षेप (८+२) कम है (१२४८–१२३२=१६)। दूसरी प्रदेशार्थता १२०० है जो यवमध्य १२४८ से (१+२=३) तीन दुगुणे प्रक्षेपों (३×८×२=४८) से हीन है। तीसरी प्रदेशार्थता ११५२ है जो यवमध्यसे (१+२+३=६) छह दुगुणे प्रक्षेपों (६×८×२=९६) अर्थात (१२४८ – ११५२=९६) कम है। चौथी प्रदेशार्थता १०८८ है जो यवमध्यसे (१+२+३+४=१०) दस दुगुणे प्रक्षेप (१०×१६=१६०) अर्थात् (१२४८ – १०८८=१६०) कम है। १०८८ तृतीय गुणहानिकी प्रथम प्रदेशार्थता है और पंचम प्रदेशार्थता १०८० तीसरी गुणहानिकी द्वितिय प्रदेशार्थता है। तसरी गुणहानिमें द्रव्यार्थताका दुगुणा प्रक्षेप (२×४)= ८ है। तीसरी गुणहानिके प्रथम प्रदेशार्थतासे एक स्थान आगे जाने पर १०८० प्रदेशार्थता प्राप्त होती है जो (१०८८ – १०८०=८) एक दुगुणा प्रक्षेप (८) कम है। तीसरी गुणहानिमें प्रथम प्रदेशार्थतासे दो स्थान आगे जाकर १०६४ प्रदेशार्थता है जो प्रथम प्रदेशार्थता १०८८ से (१+२=३) तीन दुगुणे प्रक्षेप (३×२×४=२४) अर्थात (१०८८ – १०६४= २४) कम है। इसी प्रकार आगे भी संकलन करके द्रव्यार्थताके प्रक्षेपसे गुणा करके हानिका प्रमाण जान लेना चाहिये।

अब प्रदेशोंका आश्रय लेकर यवमध्यसे नीचे परम्परोपनिधाका कथन करते हैं। यथा—

१. ता०प्रतौ 'दव्वट्ठिद-' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'भावो दव्वट्ठदाओ पक्खेवेसु' इति पाठः।

परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो दुपदेसियवग्गणा पदेसग्गेण दुगुणा किंचूणा। केत्तियमेत्तेण? दुगुणदव्वट्ठदापक्खेवमेत्तेण। तमजोइय दुगुणा चेव त्ति घेतव्वं। दुपदेसियवग्गणादो चदुपदेसियवग्गणा किंचूणदुगुणा। केत्तियमेत्तेणूणा? अट्ठपक्खेवमेत्तेण। चदुपदेसियवग्गणादो अट्ठपदेसियवग्गणा दुगुणा किंचूणा। केत्तियमेत्तेण? बत्तीसपक्खेवमेत्तेण। एवमुवरिं जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्झं ति। णवरि परमाणुवग्गणप्पहुडि जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जपदेसियवग्गणं पावदि[1] ताव संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढीओ होंति। तेण संखेज्जपदेसियवग्गणासु संखेज्जाओ चेव[2] दुगुणवड्ढीओ उप्पज्जंति। तस्सुवरि असंखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी उप्पज्जदि। एवमसंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीओ उवरि गंतूण जवमज्झमुप्पज्जदि। जवमज्झादो उवरि गुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जा लोगा जाव धुवक्खंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। तस्सुवरि संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी। एवमेदाओ गुणहाणीयो गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। उवरि जाणिदूण वत्तव्वं।

एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि—परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि। परूवणदाए अत्थि एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं। णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ वि अत्थि। पमाणं—

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा प्रदेशाग्रकी अपेक्षा कुछ कम दूनी है। कितनी न्यून है? द्रव्यार्थताके दूने प्रक्षेपमात्रसे न्यून है। यहां कुछ कमकी विवक्षा न कर दूनी ही है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। द्विप्रदेशी वर्गणासे चतुःप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है। कितनी न्यून है? आठ प्रक्षेपमात्र न्यून है। चतुःप्रदेशी वर्गणासे आठप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है। कितनी न्यून है? बत्तीस प्रक्षेपमात्र न्यून है। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक आगे भी जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि परमाणुवर्गणासे लेकर जघन्य परीतासंख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्राप्त होने तक जो संख्यात वर्गणाएं हैं उतनी वर्गणाएं जाकर द्विगुणवृद्धियाँ होती हैं। इसलिए संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें संख्यात ही द्विगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं। उसके ऊपर असंख्यात वर्गणाएं जाकर द्विगुणवृद्धि उत्पन्न होती है। इस प्रकार असंख्यात द्विगुणवृद्धियाँ ऊपर जाकर यवमध्य उत्पन्न होता है। यवमध्यसे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाएं जाने तक गुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण होता है। उसके ऊपर संख्यात वर्गणाएं जाकर द्विगुणहानि होती है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये गुणहानियाँ जाती हैं। इसके आगे जानकर कथन करना चाहिए।

उदाहरण:—अंकसंदृष्टिमें परमाणुद्रव्यवर्गणाके प्रदेशाग्र २५६, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्रदेशाग्र ४८० है, प्रक्षेप १६, $२५६ \times २ = ५१२$, $५१२ - (१६ \times २) = ४८०$। चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र ८३२ हैं, $४८० \times २ = ९६०$, $९६० - (१६ \times ८) = ८३२$। आठप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र ११५२ हैं, $८३२ \times २ = १६६४$, $१६६४ - (१६ \times ३२) = ११५२$।

यहाँ तीन अनुयोगद्वार होते हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। प्ररूपणाकी अपेक्षा एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है तथा नानाप्रदेशगुणहानिशलाकाएं भी हैं। प्रमाण—एकप्रदेश-

१. ता० प्रतौ '-वग्गणा पावदि' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'संखेज्जासु चेव' इति पाठः।

एगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जाहि वग्गणाहि असंखेज्जवग्गणाहि वा होदि । णाणागुणहाणिसलागाओ जवमज्झस्स हेट्ठा असंखेज्जाओ, उवरि अणंताओ होंति । अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ अणंतगुणाओ । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

अवहारो दुविहो—दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए । तत्थ दव्वट्ठदाए परमाणुवग्गणपमाणेण सव्ववग्गणदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? असंखेज्जलोगमेत्तदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा—पढमगुणहाणिपमाणेण विदियादिसव्वगुणहाणीसु कदासु पढमगुणहाणिपमाणाओ होंति । पुणो पढमगुणहाणिदव्वे परमाणुवग्गणपमाणेण कदे परमाणुवग्गणतिण्णिचदुब्भागविक्खंभं एगगुणहाणिआयामक्खेत्तं होदि । पुणो विदियादिगुणहाणिदव्वे वि परमाणुवग्गणपमाणेण कदे एदं पि पुव्विल्लक्खेत्तसमाणं होदि । पुणो एत्थ एगचदुब्भागविक्खंभगुणहाणिआयामखेत्तं होदि । तं घेत्तूणं[1] पुव्विल्लक्खेत्तम्मि संधिदे गुणहाणिमेत्ताओ परमाणुवग्गणाओ उप्पज्जंति । पुणो सेसखेत्तं मज्झम्हि पाडिय पासे संधिदे एत्थ वि गुणहाणिअद्धमेत्तपरमाणुवग्गणाओ उप्पज्जंति । एवं दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपरमाणुवग्गणाओ होंति त्ति दिवड्ढगुणहाणीए परमाणुवग्गणाए गुणिदाए संदिट्ठीए सव्वदव्वपमाणमेत्तियं होदि ३०७२ ।

गुणहानिअध्वान संख्यात वर्गणाओं और असंख्यात वर्गणाओंका होता है तथा नानागुणहानिशलाकाएं यवमध्यके नीचे असंख्यात हैं और ऊपर अनन्त है । अल्पबहुत्व—एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है । इससे नानाप्रदेशगुणहानिशलाकाएं अनन्तगुणी है । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

अवहार दो प्रकारका है—द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंका द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? असंख्यात लोकमात्र डेढ़ गुणहानि स्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा—द्वितीयादि सब गुणहानियोंको प्रथम गुणहानिके प्रमाणसे करने पर वे सब प्रथम गुणहानिप्रमाण होती हैं । पुनः प्रथम गुणहानिके द्रव्यको परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर परमाणुवर्गणाका तीन बटे चार भागप्रमाण विस्तारवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयामवाला क्षेत्र होता है । पुनः द्वितीय आदि गुणहानियोंके द्रव्यको भी परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर यह भी पहलेके क्षेत्रके समान होता है । पुनः यहां एक बटे चार भागप्रमाण विष्कम्भवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयामवाला क्षेत्र है उसे ग्रहण कर पहलेके क्षेत्रमें जोड़ देने पर गुणहानिप्रमाण परमाणुवर्गणाएं उत्पन्न होती हैं । पुनः शेष क्षेत्रको बीचमें से फाड़कर पार्श्वभागमें जोड़ने पर यहां भी गुणहानिके अर्धभागप्रमाण परमाणुवर्गणाएं उत्पन्न होती हैं । इस प्रकार डेढ़ गुणहानिप्रमाण परमाणुवर्गणाएं होती हैं, इसलिए डेढ़ गुणहानिसे परमाणुवर्गणाके गुणित करने पर संदृष्टिकी अपेक्षा सब द्रव्यका प्रमाण इतना ३०७२ होता है । पुनः यहां डेढ़ गुणहानि १२ से सब द्रव्यके भाजित

१. ता०का०प्रत्योः 'आयामखेत्तं घेत्तूण' इति पाठः ।

पुणो एत्थ दिवड्ढगुणहाणिणा १२ सव्वदव्वे भागे हिदे परमाणुवग्गणा आगच्छदि २५६। पुणो दुपदेसियवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। एवमुवरि जाणिदूण णेयव्वं। णवरि दिवड्ढगुणहाणिच्छेदणएहि उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदणएसु भागे हिदेसु जं भागलद्धं तं विरलेदूण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदणएसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स दिवड्ढगुणहाणिच्छेदणयपमाणं पावदि। पुणो[1] एत्थ रूवूणविरलण-मेत्तरूवधरिददिवड्ढगुणहाणिच्छेदणयमेत्तगुणहाणीओ जाव चडंति ताव असंखेज्जलोगमेत्त-कालेण अवहिरिज्जदि। तदुवरि अणंतेण कालेण अवहिरिज्जदि। एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणे त्ति।

तदो संखेज्जभागहीणवग्गणाणं पढमवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? अणंतेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा—संखेज्जभागहीणवग्गणाणं पढमवग्गणाए सव्ववग्गणदव्वे[2] भागे हिदे जं भागलद्धं तं सलागभूदं ट्ठवेदूण पुणो तव्वग्गणपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सलागमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति[3]।

करने पर परमाणुवर्गणा २५६ आती है। पुनः द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणके सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? साधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है। इसी प्रकार ऊपर भी जानकर ले जाना चाहिए। इतनी विशेषता है कि डेढ़गुणहानिके अर्धच्छेदोंसे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशि पर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर एक एक विरलन अङ्कके प्रति डेढ़ गुणहानिके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहां पर एक कम विरलनप्रमाण अङ्कोंके प्रति प्राप्त डेढ़ गुणहानिके अर्धच्छेदप्रमाण गुणहानियोंके आगे जाने तक वह असंख्यात लोकप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है। उसके आगे अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है। इस प्रकार असंख्यातभागहीन वर्गणाओंमें अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये।

उसके बाद संख्यातभागहीन वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है। यथा—संख्यातभागहीन वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके पुनः उस वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्यके भाजित करने पर शलाकाप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है। इस प्रकार जानकर महास्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक कथन करना चाहिये।

१. ता० प्रतौ '-पमाण होदि। पुणो' इति पाठः। २. ता०प्रतौ पढमवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अ० ? सव्ववग्गणदव्वे इति पाठः। ३. अ०का०प्रत्योः 'महाखंधवग्गणे त्ति' इति पाठः।

संपहि पदेसहृदमस्सिदूण अवहारकाले भण्णमाणे तात्र सव्वं जवमज्झपमाणेण कस्सामो। तं जहा—एगपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणिगुणिदरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिगुणिदे जवमज्झपमाणं होदि [१ ८ ३/२ ८ ३/२][1]। पुणो एदम्मि गुणहाणिअद्धेण गुणिदे एत्तियं होदि— [१ ८ ३/२ ८ ३/२ ८][2]। एत्थ अधियपक्खेवाणमवणयणं कस्सामो। तं जहा—गुणहाणि-अद्धगच्छदुगुणसंकलणासंकलणमेत्तपक्खेवा एत्थाहिया। कुदो? जवमज्झादो हेट्ठा पक्खेवगुणगारस्स एगुत्तरवड्ढिदंसणादो अद्धाणगुणगारस्स एगुत्तरहाणिदंसणादो। ण च गच्छे रूवाहियगच्छेण गुणिदे दुगुणसंकलणं मोत्तूण अण्णस्स आगमो अत्थि, विप्पडिसेहादो।

अब प्रदेशाग्रताकी अपेक्षा अवहार कालका कथन करने पर सब द्रव्यको यवमध्यके प्रमाणसे करते हैं। यथा—एक प्रक्षेपको डेढ़ गुणहानिसे गुणित एक अधिक डेढ़ गुणहानिसे गुणित करनेपर यवमध्यका प्रमाण होता है— [१ ८ ३/२ ८ ३/२] (१+८ × ३/२)×(८× ३/२)= १३ × १२ = १५६; द्विप्रक्षेप ८×२=१६; १५६×१६=२४९६; दो यवमध्य १२४८+१२४८= २४९६]। पुनः इसे गुणहानिके अर्धभागसे गुणित करनेपर इतना होताहै — [१ ८ ३/२ ८ ३/२ ८/२]

[गुणहानि (८) का अर्धभाग (८/२)=४ है। इस ४ से दो यवमध्य २४९६ को गुणा करनेसे ९९८४ आता है जो द्वितीयगुणहानिका कुल प्रदेशाग्र है; किन्तु इसमें यवमध्यसे पूर्वके व बादके तीन तीन निषेकोंके प्रदेशाग्र जो प्रक्षेप यवमध्यकी अपेक्षा हीन हैं वे प्रक्षेप द्वितीय गुणहानिके सर्वप्रदेशाग्रसे अधिक हैं।

यहाँ अधिक प्रक्षेपोंका अपनयन करते हैं। यथा—गुणहानिके अर्धभागप्रमाण गच्छके दूने संकलनासंकलनप्रमाण प्रक्षेप यहाँ अधिक हैं; क्योंकि यवमध्यमें पूर्व प्रक्षेपगुणकारकी एकोत्तर वृद्धि देखी जाती है और अध्वानगुणकारकी एकोत्तरहानि देखी जाती है और गच्छको एक अधिक गच्छसे गुणित करनेपर द्विगुणे संकलनको छोड़कर अन्यका आगम सम्भव नहीं है, क्योंकि उसका निषेध है।

[एक गुणहानि ८ उसका आधा ८/२ =४ है। यहाँपर यह ४ गच्छ है। ४ का संकलन (१+२+३+४)=१० है। इसका दूना १०×२=२० है। अथवा गच्छ ४ को एक अधिक गच्छ (४+१)=५ से गुणा करनेपर २० आता है। पर पृ० १८५ की संदृष्टिके देखनेसे ज्ञात होगा कि यवमध्य १२४८ से दूसरा निषेक १२३२ दो प्रक्षेपहीन है, क्योंकि वहाँपर द्रव्यप्रक्षेपका प्रमाण ८ है। तीसरे निषेकका प्रदेशाग्र १२०० है जो यवमध्यसे ६ प्रक्षेप (६+८)=४८ कम है। चौथे निषेकका प्रदेशाग्र ११५२ है जो यवमध्य १२४८ से १२ प्रक्षेप (१२×८)=९६ कम है।

१. अ० का प्रत्योः [० ८ ३/२ ८ ३/२] इति पाठः। २. म० प्रतिपाठोऽयम्। ता० प्रतौ [०८ ३/२ ८/३ ८/२] अ० का० प्रत्योः [०८ ३/२ ८ ३/२] इति पाठः।

एत्थ धण-रिणरासीयो आणिय रिणदो धणमवणिय सेसेण हाणी परूवेदव्वा । सा वि संकलणासंकलणसुत्तेण एत्तिया होदि [०८८८ / २४] । एदेसु पक्खेवेसु जवमज्झपमाणेण कदेसु एत्तियाणि जवमज्झाणि [८ / ५४] । एदेसु अद्धगुणहाणि-मेत्तजवमज्झेसु अवणिदेसु एत्तियं होदि [८ १३ / २७] ।

संपहि पढमगुणहाणिदव्वाणयणं वुच्चदे । तं जहा—रूवाहियगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु गुणहाणीए वग्गेण गुणिदेसु थोरुच्चएण पढमगुणहाणीए दव्वं होदि [०१८८८][1] ।

इस प्रकार २+६+१२=२० प्रक्षेप आते हैं। ये २० प्रक्षेप ऊपर व नीचे दोनों स्थानोंमें हीन हैं, अत: २० ये प्रक्षेप हुए। इन २० द्विगुण प्रक्षेपों (२०×८×२=३२०) को ९९८४ में से कम करनेपर (९९८४ − ३२०)=९६६४ द्वितीय गुणहानिके प्रदेशाग्रका प्रमाण होता है।]

यहाँपर धनराशि और ऋणराशिको लाकर तथा ऋणमेंसे धनको कम करके शेपका अवलम्बन लेकर हानिका कथन करना चाहिए। वह भी संकलनासंकलनसूत्रके अनुसार इतनी होती है— [०८ ८ ८ / २ ४] । [यह २० की सहनानी है] । इन प्रक्षेपोंको यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतने यवमध्य होते हैं— [८ / ५४] [यह २०/१५६ की सहनानी है ।] उक्त प्रमाणको अर्धगुणहानिप्रमाण यवमध्योंमेंसे कम करनेपर इतना होता है [८ १३ / २७] । [द्वितीय गुणहानिके प्रदेशाग्र १५६×४=६२४; ६२४-२०=६०४=१३×४६ ६/१३ द्विगुणप्रक्षेप] ।

अब प्रथम गुणहानिके द्रव्यको लानेकी विधि कहते हैं। यथा—एक अधिक गुणहानिमात्र प्रक्षेपोंको गुणहानिके वर्गसे गुणित करनेपर स्तोक मानसे प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है— [१ | ८ | ८ | ८]

[प्रथम गुणहानिका प्रदेशाग्र=गुणहानि ८ से एक अधिक (८+१)=९ को गुणहानिका वर्ग (८×८)=६४ से गुणा करनेपर ५७६ आता है। प्रक्षेपका प्रमाण १६ है। ५७६×१६=९२१६। अथवा १६×९×८×८=११५२×८ अर्थात् प्रथम गुणहानिके अन्तिम आठ प्रदेश (११५२)×८। किन्तु अन्य ७ निषकोंके प्रदेशाग्र अन्तिम प्रदेशाग्रसे प्रक्षेपहीन हैं, अतः प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे ११५२×८ में कुछ प्रक्षेप बढ़े हुए हैं।]

१. म० प्रतिपाठोऽ । ता० प्रतौ ०८८८, अ०का० प्रत्योः [०८८८०२८८८] इति पाठः ।

संपहि एत्थ वड्ढिदपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि [०२८८८ / ३][1], [रूवूण] गुणहाणिगच्छदुगुण-संकलणासंकलणपमाणत्तादो। एदम्मि किंचूणत्तमजोइय पुव्विल्लदव्वादो अवणिदे सेसमेत्तियं होदि [०९८८२ / ३] । पुणो एदम्मि जवमज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि [८ १६ / २७] । पुणो एदम्मि पढमगुणहाणिदव्वे अद्धगुणहाणिदव्वम्मि[2] पक्खित्ते एत्तियं होदि [८ २९ / २७] । जवमज्झादो उवरि अद्धगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि [०८ १३ / २७] । एदं हेट्ठिमदव्वम्मि-पक्खित्ते एत्तियं होदि [८ ४२ / २७] ।

अब यहाँपर बढ़े हुए प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना होता है — [०२ ८ ८ ८ / ३] [पत्र १८६ के विशेषार्थमें देखो—प्रथम गुणहानिके द्विचरम निषेकका प्रदेशाग्र ११२० जो चरम निषेकके प्रदेशाग्र ११५२ से दो प्रक्षेप (१६×२=३२) हीन है। त्रिचरम निषेकका प्रदेशाग्र १०५६ है जो चरम निषेकके प्रदेशाग्रसे ६ प्रक्षेप (१६×६=९६) हीन है। इसी प्रकार अन्य पाँच निषेकोंके प्रदेशाग्र क्रमसे १२, २०, ३०, ४२ व ५६ प्रक्षेपहीन हैं। इनका जोड़ २+६+१२+२०+३०+४२+५६=१६८ है। अथवा एक कम गुणहानिप्रमाणका संकलनासंकलन = १+(१+२=३)+(१+२+३=६)+(१+२+३+४=१०)+(१+२+३+४+५=१५)+(१+२+३+४+५+६=२१)+(१+२+३+४+५+६+७=२८)=८४ होता है। इसका दूना ८४×२=१६८ होता है। इस प्रकार १६८ बढ़े हुए प्रक्षेप हैं। पूर्वोक्त ५७६ प्रक्षेपोंमें १६८ प्रक्षेप घटानेसे ४०८ प्रक्षेप (४०८×१६=६५२८) प्रथम गुणहानिके प्रदेशोंका प्रमाण होता है।], क्योंकि वह (एक कम) गुणहानिप्रमाण गच्छके दूने संकलनासंकलन प्रमाण है। इसमें कुछ कम की गणना न करके पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इतना होता है — [०९ ८ ८ २ / ३] । पुनः इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है— [८ १६ / २७] । पुनः इस प्रथम गुणहानिके द्रव्यमें अर्धगुणहानिका द्रव्य मिलाने पर इतना होता है— [८ २९ / २७] । यवमध्यसे ऊपर अर्धगुणहानिका द्रव्य इतना होता है— [०८ १३ / २७] । इसे अधस्तन द्रव्यमें मिला देनेपर इतना होता है— [८ ४२ / २७]

१. म० प्रति पाठोऽयम्। ता० प्रतौ [० ८७८ / ३] अ० प्रतौ [०१ ८८२ / ३] का० प्रतौ [२ ८८८ / ० ३] इति पाठः। २. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'पठमगुणहाणिअद्ध-' इति पाठः।

संपहि तदियगुणहाणिदव्वाणयणं कस्सामो। तं जहा—वेगुणहाणिमेत्ततदियगुणहाणिपक्खेवेसु रूवाहियदोगुणहाणीहि गुणिदगुणहाणीए गुणिदेसु थोरुच्चएण तदियगुणहाणिदव्वं होदि [०८ २ ८ । २ ८ / २]। एत्थ ऊणपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि [०८८८ / २ ३]। एदेसु पुव्वदव्वादो अवणिदेसु एत्तियं होदि [०८८८ । ११ / २ ३]। एदम्मि जवमज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि [८ २२ / २७]।

संपहि चउत्थगुणहाणिदव्वाणयणं वुच्चदे। तं जहा—जवमज्झपक्खेवचउत्थभागे छग्गुणगुणहाणिघणगुणिदे थोरुच्चएण चउत्थगुणहाणिसव्वदव्वं होदि [०८८८ ६ / ४]। एगगुणहाणिआदिउत्तरगुणहाणिगच्छसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा च एगादिएगुत्तरहाणिगच्छसंकलणासंकलणदुगुणमेत्तगोवुच्छ-

अब तृतीय गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं। यथा—दो गुणहानिमात्र तृतीय गुणहानिके प्रक्षेपोंको एक अधिक दो गुणहानियोंसे गुणित गुणहानिसे गुणित करने पर मौटे तौरपर तृतीय गुणहानिका द्रव्य होता है— [०८ । २ । ८ । २ । ८ / २] [दोगुणहानि (१६) × प्रक्षेप (४) × एक अधिक दो गुणहानि (१६ + १ = १७) × गुणहानि (८) = ८७०४। अर्थात् तृतीय गुणहानि प्रथम निषेक प्रदेशाग्र (१०८८) गुणित गुणहानि ८ (१०८८ × ८ = ८७०४)।] यहां पर न्यून प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना है [०८८८ / २ ३]। [पूर्वोक्त विधिके अनुसार न्यून प्रक्षेपोंका प्रमाण १६८ है। यहां पर प्रक्षेप (४) है]। इन्हें पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देने पर इतना होता है— [०८८८ । ११ / २ ३] इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है— [८ । २२ / २७]।

अब चतुर्थ गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं। यथा—यवमध्यके प्रक्षेपोंके चतुर्थ भागका छहगुणी गुणहानिके घनसे गुणित करने पर मौटे तौरसे चौथी गुणहानिका सब द्रव्य होता है— [०८८८ । ६ / ४]। [यवमध्यका प्रक्षेप (८) का चतुर्थ भाग (८/४ = २) को ६ गुणाहानिका घन (६ × ८ × ८ × ८) से गुणा करनेसे (२ × ६ × ८ × ८ × ८) = ६१४४ मोटे रूपसे चतुर्थ गुणहानिका प्रदेशाग्र है। अंक सदृष्टिमें इसका प्रमाण ५१६६ है। ६१४४ – ५६१६ = ५२८ अर्थात् २६४ प्रक्षेप (२) के लानेका विधान कहते हैं] यहां एक गुणहानि आदि उत्तर गुणहानि गच्छ संकलनमात्र गोपुच्छविशेष और एकादि एकोत्तर

विसेसा च एत्थ फिट्टंति। तासिं पमाणमेदं [०८८८ ०८८८ / ४ २ ४ ३]। एदे पक्खेवे पुव्व-रासिम्मि पाडिय[1] सेसे जवमज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि [८ ३१ / ३५४]। उवरिमगुण-हाणीसु एत्थतणसंकलणरासी रूवादिरूवुत्तरगुणगारेण गुणिज्जमाणा गच्छदि। विदिया पुण अवट्ठिदा। सव्वत्थ एदेण अत्थपदेण पंचमगुणदव्वे अवणिदे एत्तियं होदि [८ ४० / १०८]। छट्ठगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि [८ ४९ / २१६]। सत्तमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि [८ ५८ / ४३२]। अट्ठमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि [८ ६७ / ८६४] एवं गुणहाणिं पडि गुणहाणिं पडि अंसा णउत्तरकमेण छेदादिदुगुणकमेण गुणहाणीए गुणगारा होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि असंखेज्जभागहाणीए चरिमगुणहाणि त्ति। तदो एदासिं मेलावणविहाणं भण्णमाणे यव-मध्यादूर्ध्वं पदिति विकल्प्य दो सुत्तगाहाओ। तं जहा—

> इच्छं विरलिय [दु] गुणिय अण्णोण्णगुणं पुणो दुपडिरासिं।
> काऊण एक्करासिं उत्तरजुदआदिणा गुणिय ॥ १५ ॥

हानिगच्छ संकलनासंकलनद्विगुणमात्र गोपुच्छविशेष फिट जाते हैं। उनका प्रमाण यह है— [०८८८ ०८८८ / ४ २ ४ ३]। इन प्रक्षेपोंको पूर्व राशिमें से अलग करके शेषको यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतना होता है- [८ ३१ / ३५४] उपरिम गुणहानियोंमें यहाँकी संकलनराशि एकादि एकोत्तर गुणकारसे गुणित होकर जाती है। परन्तु दूसरी राशि अवस्थित रहती है। सर्वत्र इस अर्थपदके अनुसार पञ्चम गुणहानिके द्रव्यके निकाल देने पर इतना होता है- [८ ४० / १०८] छटवीं गुणहानिका द्रव्य इतना है— [८ ४९ / २१६] सातवीं गुणहानिका द्रव्य इतना है— [८ ५८ / ४३२]। आठवीं गुणहानिका द्रव्य इतना है— [८ ६७ / ८६४]। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहानिकी अन्तिम गुणहानिके प्राप्त होने तक गुणहानि गुणहानिके प्रति अंश नवोत्तरक्रमसे और छेदादिद्विगुणक्रमसे गुणहानिके गुणकार होकर जाते हैं। अनन्तर इनके मिलानेकी विधिका कथन करनेपर यवमध्यके ऊपर प्राप्त होता है ऐसा विकल्प करके दो सूत्रगाथाएं देते हैं। यथा —

इच्छित गच्छका विरलन कर और उस विरलनराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करनेसे जो उत्पन्न हो उसकी दो प्रतिराशियाँ स्थापित कर उनमेंसे एक राशिको उत्तरसहित

१. अ० प्रतौ [८ ५५ / ४३२] इति पाठः।

उत्तरगुणिदं इच्छं उत्तरआदीए संजुदं अवणे ।
सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेण ॥ १६ ॥

एदासिं गाहाणमत्थो उच्चदे—इच्छिदगच्छं विरलेदूण विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिं दुप्पडिरासिं करिय एत्थ उत्तरं णव आदी बावीस, एदे मेलिदे एक्कत्तीस भवंति । एदेहि एक्करासिं गुणिय उत्तरगुणिदं इच्छं ति भणिदे इच्छं णवहि गुणिऊण उत्तरआदीय संजुदं अवणे त्ति भणिदे उत्तरं आदिं च तत्थ मेलाविय पुव्वरासिम्हि अवणेऊण सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेणे त्ति भणिदे अवसेसं ट्ठविदपडिरासिं सत्तावीसण्हं अद्धेण गुणिय भागे हिदे इच्छिदसंकलणा आगच्छदि ।

तदो एदेण अत्थपदेण दुरूवूणगुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे एत्तियं होदि | ९ / ४ | । एदं [दु] पडिरासिं ट्ठविय एक्करासिं इगितीसरूवेहि गुणिदे एत्तियं होदि | ९ ३१ / ४ |[1]। पुणो एदम्हि दुरूवूणगुणहाणिसलागाओ णवगुणाओ आदिउत्तरइगितीसरूवब्भहियाओ अवणिय पुणो पडिट्ठविदरासिं सत्तावीसण्हं

आदि राशिसे गुणित कर इसमेंसे उत्तर गुणित और उत्तर आदि संयुक्त इच्छाराशिको घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें आदिम छेदके अर्धभागसे गुणित प्रतिराशिका भाग देनेपर इच्छित संकलनाका प्रमाण आता है ॥१५-१६॥

अब इन गाथाओंका अर्थ कहते हैं—इच्छित गच्छका विरलन कर और उसे दूना कर परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसकी दो प्रतिराशियाँ स्थापित करे। यहाँ उत्तर नौ और आदि बाईस को मिलानेपर इकतीस होते है. इनसे एक राशिको गुणित करे। पुनः 'उत्तरगुणिदं इच्छं' ऐसा कहनेपर इच्छाराशिको नौसे गुणित करके और इसमें 'उत्तर आदीय संजुदं अवणे' ऐसा कहनेपर उत्तर और आदिको मिलाकर पूर्वराशिमेंसे घटा कर 'सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेण' ऐसा कहनेपर जो शेष रहे उसमें पहले स्थापित की गई प्रतिराशिको सत्ताईसके आधेसे गुणित कर भाग देनेपर इच्छितसंकलना आती है।

अनन्तर इस अर्थपदके अनुसार दो कम गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और दूना कर परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है | ९ / ४ | । इसकी दो प्रति राशियाँ स्थापित कर एक राशिके इकतीससे गुणित करनेपर इतना होता है— | ९ ३१ / ४ १ | । पुनः इसमें से नौगुणित तथा आदि-उत्तर इकतीस सहित दो कम गुणहानिशलाकाओंको घटा कर

१. ता०प्रतौ | ८ ५८ / ४३२ | इति पाठः ।

अद्धेण गुणिय [६ २७ / ४ २] पुव्वरासिम्हि भागे हिदे किंचूणत्तमजोएदूण गुणगारभागहारमवणिदे एत्तियं होदि [६२ / २७]। पुणो एदेण गुणहाणिं गुणिदे एत्तियं होदि [८ ६२ / २७]। पुणो हेट्ठिमदोगुणहाणिदव्वे पक्खित्ते एत्तियं होदि [८ १०४ / २७]। भागे हिदे एत्तियं होदि [८ ३ / २३ / २७]। चत्तारिसत्तावीसभागहीणचत्तारिगुणहाणीयो किंचूणत्तमजोएदूण जवमज्झपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। परमाणुपोग्गलदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? गुणहाणिवग्गेण सचउब्भागदोरूवगुणिदेण। कुदो? परमाणुपदेसट्ठदाए सव्वदव्वे भागे हिदे सचउब्भागदोरूवगुणिदगुणहाणिवग्गुवलंभादो। दुपदेसियवग्गणपदेसट्ठदाए पमाणेण सव्वदव्वं केवचिरं कालेण अवहिरिज्जदि? पुव्वभागहारादो अद्ध'सादिरेयमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा—परमाणुवग्गणभागहारस्सद्धं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दुगुणपरमाणुवग्गणपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठा दोगुणहाणीयो

पुनः पहले स्थापित की गई प्रतिराशिको सत्ताईसके अर्धभागसे गुणित कर [६ २७ / ४ २] और इसका पूर्व राशिमें भाग देने पर कुछ कमकी विवक्षा न कर भागहार और गुणकारका परस्पर अपनयन करने पर इतना होता है—[६२ / २७]। पुनः इससे गुणहानिके गुणित करनेपर इतना होता है—[८ ६२ / २७] पुनः अधस्तन दो गुणहानियों का द्रव्य मिलाने पर इतना होता है—[८ १०४ / १ २७]। भाग देने पर इतना होता है। [८ ३ / २३ / २७] चार बटे सत्ताईस भागहीन चार गुणहानियोंमें कुछ कमकी विवक्षा न करयवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत होनेपर चार गुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है। परमाणुपुद्गलद्रव्यप्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? चतुर्थभागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिके वर्गरूप कालके द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि परमाणु प्रदेशार्थतासे सब द्रव्यके भाजित करने पर चतुर्थभागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिका वर्ग उपलब्ध होता है। [३३४४८ ÷ २५६ = १३० अर्थात ८×८×२+२] द्विप्रदेशीवर्गणा प्रदेशार्थताके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? पूर्वभागहारसे साधिक अर्धभागमात्र कालके द्वारा अपहृत होता है। यथा—परमाणुवर्गणाके अर्धभागके अर्धभागका विरलनकर सब द्रव्यको समान खण्डकर देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति द्विगुणपरमाणुवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः

१. ता० प्रतौ 'पुव्वभागहार दा अद्ध-' इति पाठः।

विरलिय एगरूवधरिदमेत्तगोवुच्छविसेसेसु[1] समखंडं करिय दिण्णेसु दोदोगोवुच्छ-विसेसा रूवं पडि पावेंति, चडिदद्धाणसंकलणदुगुणमेत्तगोवुच्छविसेसुवलंभादो। लद्धं उवरिमरूवधरिदेसु अवणेदूण तप्पमाणेण कीरमाणे पक्खेवरूवाणं पमाणाणुगमं कस्सामो। तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्तदुगुणगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्भइ तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए णवण्हं गुणहाणीणं सोलसमो भागो आगच्छदि। तम्मि पुव्विल्लविरलणाए पक्खित्ते दुपदेसिय-दव्वभागहारो होदि। तिपदेसियवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अव-हिरिज्जदि? परमाणुवग्गणभागहारस्स तिभागेण सादिरेगेण। तं जहा—परमाणु-वग्गणभागहारस्स तिभागं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिगुण-परमाणुवग्गणदव्वपमाणं पावदि। पुणो चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा वड्ढिदा त्ति तदवणयणट्ठं किरियं कस्सामो। तं जहा—दोगुणहाणीणमद्धं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवा पावेंति। तेसु उवरिमरूवधरिदेसु रूवं पडि अवणिदेसु सेसमिच्छिदपमाणं होदि।

नीचे दो गुणहानियोंका विरलनकर एक विरलनके प्रति प्राप्त गोपुच्छ विशेषोंके समान खण्ड कर देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति दो दो गोपुच्छ विशेष प्राप्त होते हैं, क्योंकि यहाँपर जितने स्थान आगे गये हैं उतने संकलनके द्विगुणे गोपुच्छ विशेष उपलब्ध होते हैं। जो लब्ध आवे उसे उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे कमकर उसके प्रमाणसे करनेपर जो प्रक्षेप अंक आते हैं उनके प्रमाणका अनुगम करते हैं। यथा—अधस्तन विरलनमेंसे एक कम द्विगुण गोपुच्छ विशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप लब्ध होता है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे भाजित करनेपर नौ गुणहानियोंका सोलहवाँ भाग आता है। उसे पूर्व विरलनमें मिला देनेपर द्विप्रदेशी द्रव्यका भागहार होता है [३३४४८ ÷ ४८० = ६९$\frac{१}{२}$ = ६५ + $\frac{९ \times ८}{१६}$ = ६५ + $\frac{९}{२}$]

त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है। परमाणु वर्गणाके भागहारके साधिक त्रिभागप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है? यथा—परमाणु-वर्गणाके भागहारके तीसरे भागका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान भाग करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति तिगुणे परमाणुवर्गणाद्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः जितने स्थान आगे गये हैं उतने द्विगुणसंकलनमात्र गोपुच्छविशेष बढ़े हैं, इसलिए उनकी अपनयन क्रिया करते हैं। यथा—दो गुणहानियोंके अर्धभागका विरलनकर उपरिम एक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एकके प्रति जितने स्थान आगे गये हैं उतने द्विगुणसंकलनमात्र प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उन्हें उपरिम विरलनके प्रत्येक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है। एक कम अधस्तन विरलन जाकर

१. ता० प्रतौ 'गोवुच्छविसेसेसु' अतोऽग्रे 'जदि' पर्यन्तः पाठस्त्रुटितः।

हेट्ठिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए तिण्णं गुणहाणीणं चउब्भागो लब्भदि । तम्हि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिदव्वभागहारो होदि ।

चउप्पदेसियदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? परमाणुवग्गणभागहारस्स चउब्भागेण सादिरेगेण । तं जहा—परमाणुवग्गणभागहारस्स चउब्भागं विरलेदूण सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि परमाणुवग्गणदव्वं चउग्गुणं पावदि । पुणो चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं अवणयणं कस्सामो । तं जहा—दोगुणहाणितिभागं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारह बारह पक्खेवा पावेंति । तेसु उवरिमरूवधरिदेसु अवणिदेसु सेसमिच्छिदपमाणं होदि । हेट्ठिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सत्तावीसगुणहाणीणं बत्तीसदिमभागो आगच्छदि । तम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि । एवं णेयव्वं जाव जवमज्झं ति ।

जवमज्झस्सुवरि अणंतरपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि

यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर तीन गुणहानियोंका चतुर्थ भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है [$३३४४८ \div ६७२ = ४९\frac{१}{३} = \frac{१३०}{३} + \frac{३ \times ८}{४} = ४३\frac{१}{३} + ६ = ४९\frac{१}{३}$]।

चतुःप्रदेशी द्रव्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? परमाणुवर्गणा भागहारके साधिक चतुर्थ भाग द्वारा अपहृत होता है। यथा—परमाणुवर्गणा भागहारके चतुर्थ भागका विरलन करके उस विरलित राशिपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति परमाणुवर्गणाका द्रव्य चौगुना प्राप्त होता है। पुनः जितने स्थान आगे गये हैं उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका अपनयन करते हैं। यथा—दो गुणहानियोंके त्रिभागका विरलन करके ऊपर एक विरलन अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अंकके प्रति बारह बारह प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उन्हें उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है। एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर सत्ताईस गुणहानियोंका बत्तीसवां भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छितद्रव्यका भागहार होता है। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए [$३३४४८ \div ८३२ = ४० = \frac{१३०}{४} + \frac{२७ \times ८}{३२} = ३२\frac{१}{२} + ६\frac{३}{४} = ३९\frac{१}{४}$]।

यवमध्यके ऊपर अनन्तर प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? साधिक

जवमज्झभागहारेण सादिरेयेण, चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं तत्थाभावादो[1]। तं जहा—जवमज्झभागहारं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठा गुणहाणिवग्गं सचउब्भागं दोरूवेहि गुणिदं विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे एगेगो पक्खेवो पावदि। पुणो चडिदद्धाण-संकलणाए दुगुणाए ओवट्टिय विरलिय पुव्वं व जवमज्झे दिण्णे रूवं पडि अहिय-पक्खेवा होंति। तेसु उवरिमविरलणरूवधरिदेसु अवणिदेसु इच्छिदपमाणं होदि। हेट्ठिम-विरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखे० भागो आगच्छदि। एदम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवक्खंधदव्वं ति। संपहि सांतरणिरंतरवग्गणाणमवहारो ण सक्कदे णेदुं। कुदो? तव्वग्गणाणं णिरंतरमवट्ठाणाभावादो। एवमवहारो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

जवमज्झपरूवणा दुविहा—दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेदि। तत्थ दव्वट्ठदाए पत्तेयसरीरवग्गणदाए जवमज्झपमाणाए कीरमाणाए परूवणादिछअणियोगद्दाराणि होंति। परूवणाए अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणासु जहण्णियाए वग्गणाए अत्थि वग्गणाओ। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेगसरीरवग्गणे त्ति। पमाणं अभवसिद्धिय-

यवमध्य भागहारप्रमाण काल द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि जितने स्थान आगे गये हैं उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका वहां पर अभाव है। यथा—यवमध्यके भागहारका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः नीचे (पूर्व) दोसे गुणित चतुर्थ भागसहित गुणहानिके वर्गका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है। पुनः जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनके दूनेसे भाजित कर जो लब्ध आवे उस पर पहलेके समान यवमध्यके देने पर प्रत्येक एकके प्रति अधिक प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उन्हें उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देने पर इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है। एक कम अधस्तन विरलन मात्र जाकर यदि एक प्रक्षेप शलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर एक अङ्कका असंख्यातवां भाग आता है। इसे उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। अब सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंका भागहार लाना शक्य नहीं है, क्योंकि उन वर्गणाओंका अन्तरालके विना अवस्थान नहीं पाया जाता। इस प्रकार अवहार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

यवमध्यप्ररूपणा दो प्रकार की है—द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता। उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा प्रत्येकशरीरवर्गणाको यवमध्यके प्रमाणसे करने पर प्ररूपणा आदि छह अनुयोगद्वार होते हैं—प्ररूपणा की अपेक्षा अभव्योंके योग्य वर्गणाओंमेंसे जघन्य वर्गणाकी वर्गणाएं हैं।

1. अ०का० प्रत्योः 'लद्धाभावादो' इति पाठः।

पाओग्गसव्वजहण्णवग्गणट्ठाणे सरिसधणियवग्गणाओ आवलियाए असंखे० भाग-मेत्ताओ। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयरीरवग्गणे त्ति।

सेडिपरूवणा दुविहा—अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि। अणंतरोवणिधाए अभवसिद्धियपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणाणं सव्वजहण्णियाए वग्गणाए आवलियाए असंखे० भागमेत्तओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति। एवमणंताओ सरिसधणिय-वग्गणाओ तत्तियाओ तत्तियाओ चेव होदूण उवरि गच्छंति। एवं गंतूण तदो एया पत्तेयसरीरवग्गणा अहिया होदि। तं जहा—अवट्ठिदमावलियाए असंखे० भागमेत्त-भागहारं विरलेदूण सव्वजहण्णवग्गणासु आवलियाए असंखे० भागमेत्तासु समखंडं कादूण दिण्णासु एक्केक्कस्स एगेगपत्तेयसरीरवग्गणपमाणं पावदि। पुणो एत्थ एगरूव-धरिदवग्गणं घेत्तूण पुव्वुत्तावलियाए असंखे० भागमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणमुवरि पक्खित्ते तदणंतरउवरिमविसेसाहियवग्गणपमाणं होदि। पुणो पुणो अणेण पमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरि गंतूण तदो एया वग्गणा अहिया होदि त्ति अवट्ठिद-विरलणाए विदियरूवधरिदं घेत्तूण हेट्ठिमवग्गणाए पक्खित्ते उवरिमवग्गणा होदि। एवमणंताओ वग्गणाओ तत्तियाओ उवरि गंतूण पुणो एया वग्गणा अहिया होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढी उप्पण्णे त्ति। सा पुण अवट्ठिदविरलण-

इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। प्रमाण—अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणास्थानमें सदृश धनवाली वर्गणाएं आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमेंसे सबसे जघन्य वर्गणामें सदृश धनवाली वर्गणाएं आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार अनन्त सदृश धनवाली वर्गणाएं उतनी ही होकर आगे जाती हैं। इस प्रकार जाकर अनन्तर एक प्रत्येकशरीरवर्गणा अधिक होती है। यथा—आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अवस्थित भागहारका विरलन कर उस पर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सबसे जघन्य वर्गणाओंको समान खण्ड करके देनेपर एक एक विरलनके प्रति एक एक प्रत्येकशरीरवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त वर्गणाको ग्रहण कर उसे पूर्वोक्त आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येकशरीर वर्गणाओंके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर तदनन्तर उपरिम विशेष अधिक वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएं ऊपर जाकर अनन्तर एक वर्गणा अधिक होती है, इसलिए अवस्थित विरलनके दूसरे विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उसे अधस्तन वर्गणामें मिलाने पर उपरिम वर्गणा होता है। इस प्रकार अनन्त वर्गणाएं उतनी ही ऊपर जा कर पुनः एक वर्गणा अधिक होती है। इस प्रकार प्रथम द्विगुणवृद्धिके उत्पन्न होने तक जान

१. ता० प्रतौ 'सेडिपरूवणा तहा (दुविहा) अणंतरोपणिधा' अ०का० प्रत्योः 'सेडिपरूवणा तहा अणंतरोवणिधा' इति पाठः। २. ता० प्रतौ '-वग्गणा [ए]' अ०का० प्रत्योः '-वग्गणाए' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ '-भागमेत्तेसु पत्तेयसरीरवग्गणाणमुवरि पक्खित्ते [सु-] तदणंतर-' इति पाठः।

सव्वरूवधरिदेसु परिवाडीए पविट्ठेसु उप्पज्जदि। पुणो पढमदुगुणवड्ढिवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरिं गंतूण तदो एगवारेण वेवग्गणाओ अहियाओ होंति। तं जहा—पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए पढमदुगुणवड्ढिं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स वे वे पत्तेयसरीरवग्गणाओ पावेंति। पुणो एत्थ एगरूवधरिदे पढमदुगुणवड्ढीए पक्खित्ते विसेसाहियउवरिमवग्गणपमाणं होदि। एवमणंताओ वग्गणाओ समाणाओ होदूण उवरिं गच्छंति। तदो जा उवरिमअणंतरवग्गणा तिस्से वे वग्गणाओ अहिया होंति। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव विदियदुगुणवड्ढि त्ति। पुणो विदियदुगुणवड्ढिपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो जा अणंतरउवरिमवग्गणा तत्थ एगवारेण चत्तारि वग्गणाओ अहियाओ होंति। तं जहा—पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए विदियदुगुणवड्ढिं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स चत्तारि वग्गणाओ पावेंति। पुणो एत्थ एगरूवधरिदं घेत्तूण पक्खित्ते तदणंतरवग्गणपमाणं होदि। पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति। पुणो जवमज्झपमाणेण उवरि अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो [जा] उवरिमअणंतरवग्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वग्गणाओ ज्झीयंति। तं जहा—जवमज्झस्स हेट्ठिमभागहारं दुगुणं विरलेदूण जवमज्झं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स पक्खेवपमाणं पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदमेत्तं जवमज्झम्मि अवणिदे विसेसहीणवग्गणपमाणं होदि। पुणो अणेण पमाणेण अणंताओ वग्गणाओ

कर ले जाना चाहिए। परन्तु वह अवस्थित विरलनके सब विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें क्रमसे प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होती है। पुनः प्रथम द्विगुणवृद्धि वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएं ऊपर जा कर अनन्तर एक बारमें दो वर्गणाएं अधिक होती हैं। यथा–पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके ऊपर प्रथम द्विगुणवृद्धिके समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति दो दो प्रत्येक शरीरवर्गणाएं प्राप्त होती हैं। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको प्रथम द्विगुण वृद्धिमें मिलाने पर विशेष अधिक उपरिम वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। इस प्रकार अनन्त वर्गणाएं समान हो कर ऊपर जाती हैं। अनन्तर जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है उसकी दो वर्गणाएं अधिक होती हैं। इस प्रकार दूसरी द्विगुणवृद्धिके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चहिए। पुनः दूसरी द्विगुणवृद्धिके प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएं जा कर जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वहां एक साथ चार वर्गणाएं अधिक होती हैं। यथा—पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके प्रति द्वितीय द्विगुणवृद्धिका समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति चार वर्गणाएं प्राप्त होती हैं। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहणकर मिलाने पर तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः ऊपर यवमध्यके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए। पुनः यवमध्यके प्रमाणसे ऊपर अनन्त वर्गणाएं जाकर उसके बाद जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है वहां असख्यात वर्गणाएं गल जाती हैं। यथा—यवमध्यके दूने अधस्तन भागहारका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको यवमध्यमसे घटा देने पर विशेष हीन वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएं जा कर जो अनन्तर

गंतूण जा अणंतरवग्गणा तत्थ विदियपक्खेवो ज्झीयदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणहीणवग्गणे त्ति। पुणो पढमदुगुणहीणवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरिं गंतूण तदो जा उवरिमवग्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वग्गणाओ ज्झीयंति। उवरि जाणिदूण णेयव्वं। णवरि आवलियाए असंखे०भागमेत्तदुगुणहीणाओ[1] उवरि गंतूण सव्वजहण्णवग्गणपमाणवग्गणा[2] होदि। पुणो सव्वजहण्णवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरिं गंतूग तदो जा अणंतरवग्गणा तत्थ एगा वग्गणा ज्झीयदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव दुगुणजहण्णवग्गणे त्ति। एतो उवरि जधा अणुभागट्ठाणेसु एगजीवपरिहाणी कदा तधा एत्थ वि काऊण णेयव्वं जावुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

परंपरोवणिधाए अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाहिंतो अणंताओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी होदि। एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा होदूण गच्छंति जाव जवमज्झं ति। तेण परमणंताओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि। एवं दुगुणहीणाओ दुगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति। एत्थ परूवणादितिण्णिअणियोगद्दाराणि होंति। परूवणदाए अत्थि एगवग्गण-गुणहाणिट्ठाणंतरं णाणागुणहाणिसलागाओ च। पमाणं—एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं सव्वजीवेहि अणंतगुणं। णाणागुणहाणिसलागाओ जवमज्झादो हेट्ठा उवरिं च आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ होंति। अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवाओ णाणागुणहाणि-

वर्गणा है उसमेंसे द्वितीय प्रक्षेप गलित होता है। इस प्रकार प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्राप्त होने तक जान कर ले आना चाहिए। पुनः प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएँ ऊपर जा कर अनन्तर जो उपरिम वर्गणा है वहां असंख्यात वर्गणाएँ गलित होती हैं। ऊपर जान कर ले जाना चाहिए। इतनी विशेषता है कि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणहीन वर्गणाएँ ऊपर जा कर सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणवाली वर्गणा होती है। पुनः सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणाएं ऊपर जाकर उसके बाद जो अनन्तर वर्गणा है वहाँ एक वर्गणा गलित होती है। इस प्रकार द्विगुणहीन जघन्य वर्गणाके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए। इससे आगे जिस प्रकार अनुभागस्थानोंमें एक जीवपरिहानि की है उसी प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक यहां भी करके ले जाना चाहिए।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणासे लेकर अनन्त वर्गणाएँ जा कर द्विगुणवृद्धि होती है। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक दूनी दूनी वृद्धि होती जाती है। इसके बाद अनन्त वर्गणाएँ जा कर द्विगुणहानि होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक दूनी हानि दूनी हानि हो कर जाती है। यहां पर प्ररूपणा आदि तीन अनुयोगद्वार होते हैं। प्ररूपणाकी अपेक्षा एकवर्गणागुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिशलाकाएँ हैं। प्रमाण—एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। नानागुणहानिशलाकाएँ यवमध्यके नीचे और ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अल्पबहुत्व - नानागुणहानि

१. प्रतिषु '-दुगुणहाणीओ' इति पाठः। २. अ.का०प्रत्योः '-पमाणं वग्गणा' इति पाठः।

सलागाओ। एगवग्गणदुगुणहाणिट्ठाणंतरमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

अवहारो ण सक्कदे णेदु। कुदो? णिरंतरवड्ढीए हाणीए वा वग्गणाणं गमणाणुवलंभादो। अथवा सरिसधणियवग्गणाओ छंडेदूण विसेसाहियवग्गणाओ चेव घेत्तूण भण्णमाणे अवहारो सक्कदे वोत्तुं। तं जहा—जवमज्झस्सुवरिमअसंखेज्जगुणहाणिदव्वे जवमज्झपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताणि जवमज्झाणि होंति। हेट्ठिमअसंखेज्जगुणहाणिदव्वे वि जवमज्झपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। पुणो दोसु वि दव्वेसु एगट्ठमेलिदेसु तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। संपहि जवमज्झपमाणेण सव्वदव्वं[3] केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण आवलिए असंखे०भागपमाणेण कालेण अवहिरिज्जदि। संपहि अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा—जवमज्झादो हेट्ठा आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होंति। पुणो एदाओ विरलिय विगुणिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे उप्पणरासिपमाणं पि आवलियाए असंखे०भागमेत्तं चेव होदि। कुदो? जवमज्झे जहण्णट्ठाणे वि अवलियाए असंखे०भागमेत्ताणं

शलाकाएँ सबसे स्तोक हैं। इनसे एकवर्गणाद्विगुणहानिस्थानान्तर अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

अवहार ले जाना शक्य नहीं है, क्योंकि निरन्तर वृद्धि और निरन्तर हानिरूपसे वर्गणाओंका सिलसिला नहीं उपलब्ध होता है। अथवा सदृश धनवाली वर्गणाओंको छोड़ कर विशेषाधिक वर्गणाओंको ही ग्रहण करके कथन करने पर अवहारका कथन करना शक्य है। यथा—यवमध्यसे उपरिम असंख्यातगुणहानिके द्रव्यको यवमध्यके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। अधस्तन असंख्यातगुणहानिके द्रव्योंको भी यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। पुनः दो द्रव्योंको भी इकट्ठा मिलाने पर तीन गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। अब यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है? तीन गुणहानिस्थानान्तररूप आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल द्वारा अपहृत होता है। अब अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? तीन गुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है। यथा—यवमध्यके नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण नानागुणहानिशलाकाएँ होती हैं। पुनः इनका विरलन कर और द्विगुणित कर परस्पर गुणा करने पर उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है, क्योंकि यवमध्य रूप जघन्य स्थानमें भी आवलिके

१. प्रतिषु 'एवं वग्गण-' इति पाठः। २. म० प्रतिपाठोऽयम्। ता०अ०प्रत्योः 'वोत्तुं जुत्त' जहा' का० प्रतौ वोत्तुं उत्त जहा' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ 'जवमज्झपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणि-मेत्तजवमज्झाणि होंति। पुणो सव्वदव्वं' इति पाठः। ४. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'अवहिरिज्जदि? असंखेज्ज तिण्णि' इति पाठः।

चेव वग्गणाणमुवलंभादो। पुणो एदेण तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु अभवसिद्धियपाओग्ग-सव्वजहण्णभागहारो होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

संपहि उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए भागहारो वुच्चदे। तं जहा—जवमज्झादो उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ आवलि० असंखे०भागमेत्ताओ होंति। पुणो एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णगुणिदरासिपमाणं पि आवलि० असंखे०भागमेत्तं होदि। पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु उक्कस्सपत्तेयसरीर-वग्गणभागहारो होदि।

भागाभागं—अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाओ सव्वदव्वस्स केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो अणंतिमभागो वा। कुदो? सयलद्धाणवग्गणग्गहणादो। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवा उक्कस्सट्ठाणे पत्तेयसरीरवग्गणाओ। जहण्णट्ठाणे पत्तेय-सरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ[1]। को गुणगारो? आवलि० असंखे०भागो। जवमज्झट्ठाणे पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? आवलि० असंखे०भागो। जवमज्झादो हेट्ठा पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुण०? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो। जवमज्झस्सुवरिमवग्गणाओ विसेसाहियाओ। केत्तियमेत्तेण? जवमज्झस्सुवरिमजहण्णपत्तेयसरीरसरिसवग्गणाणमुवरिमवग्गणमेत्तेण।

असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणाओंकी उपलब्धि होती है पुनः इनके द्वारा तीन गुणहानियोंके गुणित करने पर अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य भागहार होता है इस प्रकार जान कर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

अब उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार कहते हैं। यथा—यवमध्यके ऊपर नाना गुणहानिशलाकाएँ आवलिके असंख्यातवें भामप्रमाण होती हैं। पुनः इनका विरलन करके और दूनी करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। पुनः इस अन्योन्याभ्यस्तराशिसे तीन गुणहानियोंके गुणित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर-वर्गणाका भागहार होता है।

भागाभाग—अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणाएँ सब द्रव्यके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण या अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि समस्त अध्वानकी वर्गणाओंको ग्रहण किया है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

अल्पबहुत्व—उत्कृष्ट स्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ सबसे स्तोक हैं। इनसे जघन्य स्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यस्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यके नीचे प्रत्येकशरीर-वर्गणाएँ असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? कुछ कम डेढ़गुणहानिप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यसे उपरिम वर्गणाएँ विशेष अधिक हैं। कितनी अधिक हैं? यवमध्यसे उपरिम जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके समान उपरिम वर्गणामात्र अधिक हैं। इनसे सब स्थानोंमें

१. ता०प्रतौ '–वग्गणाओ [जहण्णट्ठाणे] असंखेज्जगुणो' इति पाठः।

सव्वेसु द्वाणेसु वग्गणाओ विसेसाहियाओ। के०मेत्तेण ? जवमज्झहेट्ठिमट्ठाणवग्गण-मेत्तेण। एवं बादरसुहुमणिगोदवग्गणाणं जवमज्झपरूवणाए छअणियोगद्दाराणि परूवेदव्वाणि।

पदेसट्ठदाए जवमज्झं वुच्चदे। तं जहा—परमाणुवग्गणपदेसेहिंतो दुपदेसिय-वग्गणपदेसा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव दव्वट्ठदाए दिवड्ढ-गुणहाणिट्ठाणंतरमेत्तमद्धाणं गंतूण दोसु ट्ठाणेसु जवमज्झं होदि। तत्तो उवरि विसेस-हीणा जाव विसेसहीणवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति। एवं जवमज्झे त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

पदमीमांसाए परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमुक्कस्सा अणुक्कस्सा जहण्णा अजहण्णा? उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा। एवं णेयव्वं जाव धुवक्खंध-दव्ववग्गणे त्ति। अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा। एवं पत्तेयसरीर-बादरणिगोदसुहुमणिगोदमहाखंधवग्गणाणं पि वत्तव्वं। णवरि महाखंधवग्गणाए एयसमयम्मि सरिसधणियवग्गणाओ णत्थि, साभावियादो। परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए जहण्णादो उक्कसिया विसेसाहिया। विसेसो पुणो[2] अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि।

वर्गणाएँ विशेष अधिक हैं। कितनी अधिक हैं ? यवमध्यसे अधस्तन स्थानकी वर्गणामात्र अधिक हैं। इसी प्रकार बादर निगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके यवमध्यका प्ररूपण करते समय छह अनुयोगद्वारका कथन करना चाहिए।

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा यवमध्यका कथन करते हैं। यथा—परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंसे द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। इस प्रकार द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढ़गुणहानि स्थानान्तरमात्र अध्वान जाकर दो स्थानोंमें यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जानना चाहिए। इसके आगे विशेष हीन वर्गणाओंके समाप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जानना चाहिए। इस प्रकार यवमध्य अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

पदमीमांसाकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है, जघन्य होती है या अजघन्य होती है ? उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है, जघन्य होती है और अजघन्य होती है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। अचित्त अध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाएँ कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं ? यदि हैं तो उत्कृष्ट होती हैं, अनुत्कृष्ट होती हैं, जघन्य होती हैं और अजघन्य होती हैं। इसी प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा, बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणाओंके विषयमें भी कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि महास्कन्धवर्गणाकी अपेक्षा एक समयमें सदृश धनवाली वर्गणाएँ नहीं हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाकी अपेक्षा जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। तथा विशेष पुद्गलके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है। उनका प्रतिभाग क्या

१. ता०प्रतौ 'उक्कस्सा वा जहण्णा वा' इति पाठः। २. म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'विसेसाहिया विसेसाहिया। पुणो' अ०प्रतौ 'विसेसाहिया विसे० २। पुणो' का०प्रतौ विसेसाहिया विसेसाहिया पुणो' इति पाठः।

तेसिं को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । एवं णेयव्वं जाव धुवक्खंधवग्गणे त्ति । एवं पदमीमांसे त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

अप्पाबहुगं तिविहं—णाणासेडिदव्वट्ठदा णाणासेडिपदेसट्ठदा एगसेडिणाणासेडिदव्वट्ठपदेसट्ठदा चेदि । संपहि णाणासेडिदव्वट्ठदप्पाबहुगं वुच्चदे । तं जहा—सव्वत्थोवा महाखंधदव्ववग्गणाए दव्वा । कुदो ? एयत्तादो । बादरणिगोदवग्गणाए दव्वा असंखेज्जगुणा[1] । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे० भागो । कुदो ? समाणवग्गणाओ मोत्तूण विसेसाहियवग्गणाणं चेव गहणादो । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? वट्टमाणकालबादरणिगोदवग्गणाणं गहणादो । बादरणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीयो होंति त्ति कुदो णव्वदे । अविरुद्धाइरियवयणादो जुत्तीए च । तं जहा—एक्किस्से वग्गणाए जहण्णेण आवलि० असंखे० भागमेत्तपुलवियाओ होंति, उक्कस्सेण सेडीए असंखे० भागमेत्ताओ । एदाओ च ण पउरं लब्भंति । तेण आवलियाए असंखे० भागमेत्तपुलवियाहि वग्गणाणयणं कस्सामो—आवलि० असंखे० भागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु केत्तियाओ बादरणिगोदवग्गणाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ

है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार पदमीमांसा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है—नानाश्रेणिद्रव्यार्थता, नानाश्रेणिप्रदेशार्थता और एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता । अब नानाश्रेणिद्रव्यार्थता अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा—महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका द्रव्य सबसे स्तोक है, क्योंकि वह एक है । बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि समान वर्गणाओंको छोड़कर विशेष अधिक वर्गणाओंका ही यहाँ पर ग्रहण किया है । अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । क्योंकि वर्तमान कालकी बादरनिगोदवर्गणाओंका ग्रहण किया है ।

शंका—बादरनिगोदवर्गणाएँ असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे और युक्तिसे जाना जाता है । यथा—एक वर्गणामें जघन्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं और उत्कृष्टसे जगश्रेणिके असख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । किन्तु ये प्रचुरमात्रामें उपलब्ध नहीं होती हैं, इसलिए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके द्वारा वर्गणाओंको लाते हैं—आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके आलम्बनसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें कितनी बादरनिगोदवर्गणाएँ प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाएँ प्राप्त होती

१. ता०का०प्रत्योः '–खंधदव्ववग्गणाए दव्वा असंखेजगुणा' इति पाठः ।

लब्भंति। तेण असंखेज्जा लोगा गुणगारो त्ति सिद्धं। सुहुमणिगोदवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? आवलि० असंखे०भागो। कुदो? विसेसाहियवग्गणपमाणादो। उभयत्थ तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु संतेसु कथं बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे? ण, बादरणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। को गुण०? आवलि० असंखे०भागो। कुदो एदं णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो। अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा। कुदो? वट्टमाणकालसयलवग्गणग्गहणादो, बादरणिगोदपुलवियाहिंतो सुहुमणिगोदपुलवियाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। एदाहि पुलवियाहिंतो वग्गणपमाणं पुव्वं व आणेयव्वं। पत्तेयसरीरवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुण०? आवलि० असंखे०भागो। कुदो? विसेसाहियवग्गणप्पणाए[1]। उभयत्थ तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु संतेसु कथं पत्तेयसरीरवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं? ण, सुहुमणिगोदगुणहाणीदो पत्तेयसरीरगुणहाणीए असंखेज्ज-

हैं। इसलिए गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह बात सिद्ध होती है।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यात गुणे हैं? गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि विशेष अधिक वर्गणाओंका प्रमाण लिया गया है।

शंका—उभयत्र तीनगुणहानिमात्र यवमध्योंके रहने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएं असख्यातगुणी कैसे बन सकती हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाएं असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं।

गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी सब वर्गणाओंका ग्रहण किया है। तथा बादरनिगोदपुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोदपुलवियां असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। इन पुलवियोंके आलम्बनसे वर्गणाओंका प्रमाण पहलेके समान लाना चाहिए। प्रत्येकशरीरवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है! आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि विशेष अधिक वर्गणाओंकी मुख्यता है।

शंका—उभयत्र तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्योंके रहने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाएं असंख्यातगुणी कैसे हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूक्ष्मनिगोदकी गुणहानिसे प्रत्येकशरीरकी गुणहानि असख्यात-

१ ता प्रतौ '-वग्गणप्पमाणाए' इति पाठः।

गुणत्तादो, सरिसधणियवग्गणाणं तव्वग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणत्तादो वा। अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा। कुदो? वट्टमाणासेसवग्गणप्पणादो। सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो कथं पत्तेयसरीरवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे? ण, एगजीवेण वि पत्तेयसरीरवग्गणाणिप्पत्तीदो, अणंतेहि जीवेहि विणा सुहुमणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो। सांतरणिरंतरवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। कुदो? तत्थतणजहण्णवग्गणाए वि उक्कस्सेण अणंतसरिसधणियवग्गणुवलंभादो। धुवक्खंधवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसगणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासि त्ति भणिदं होदि। कम्मइयवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? कम्मइयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णेण गुणिदरासी गुणगारो। कुदो? धुवक्खंधदव्वे सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ होंति। पुणो कम्मइयदव्वे वि सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति। एत्थतणएगपढमवग्गणाए कम्मइयअण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ताओ धुवक्खंधपढमवग्गणाओ होंति त्ति अण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिदे एत्तियाओ कम्मइयवग्गणाओ धुवक्खंधपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति। संपहिय-

गुणी है। अथवा उन वर्गणाओंसे सदृश धनवाली वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं।

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी समस्त वर्गणाओंकी मुख्यता है।

शंका—सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाएं असंख्यातगुणी कैसे बन सकती हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक जीवके द्वारा भी प्रत्येकशरीवर्गणाकी निष्पत्ति होती है और अनन्त जीवों के बिना सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति नहीं हो सकती।

सान्तरनिरन्तरवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि वहां की जघन्य वर्गणामें भी उत्कृष्टसे अनन्त सदृश धनवाली वर्गणाएं उपलब्ध होती हैं। ध्रुवस्कन्धवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। डेढ़ गुणहानिसे गुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। कार्मणवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? कार्मणवर्गणाके भीतर नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर व दूना कर परस्पर गुणित करनेसे उत्पन्न हुई राशि गुणकार है, क्योंकि ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणाएं होती हैं। पुनः कार्मणद्रव्यके भी अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणाएं उत्पन्न होती हैं। यहांकी एक प्रथम वर्गणामें कार्मण अन्योन्याभ्यस्त राशिमात्र ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणाएं होती हैं इसलिए अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करने पर इतनी कार्मणवर्गणाएं ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणाएं उत्पन्न होती हैं। अब डेढ़ गुणहानिमात्र ध्रुवस्कन्ध

दिवड्ढमेत्तधुवक्खंधपढमवग्गणाहि कम्मइयवग्गणासु ओवट्टिदासु अण्णोण्णब्भत्थरासी जेण आगच्छदि तेण पुव्वुत्तगुणगारो सिद्धो। एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं। कम्मइयवग्गणाए हेट्ठा अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणवग्गणब्भंतरे अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ गुणहाणिसलागाओ अत्थि। एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोणब्भत्थरासी गुणगारो। मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदवा अणंतगुणा। को गुण० ? मणदव्ववग्गणब्भंतर-अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। मणस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडि-सव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। भासा-वग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? भासावग्गणअण्णोण्ण-ब्भत्थरासी गुणगारो। भासाए हेट्ठा अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। तेजावग्गणासु णाणासेडि-सव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? तेजावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। तेजइयस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहण-अण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? आहारवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणाए हेट्ठिमअणंतपदेसिय-अगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहण-अण्णोण्णब्भत्थरासी। परमाणुवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को

प्रथम वर्गणाओंसे कार्मणवर्गणाओंके भाजित करने पर यतः अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है अतः पूर्वोक्त गुणकार सिद्ध होता है। यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए। कार्मणवर्गणासे नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें ननाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाके भीतर अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणहानिशलाकाएं हैं। इनका विरलन करके और दूना करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशि गुणकार है। मनोद्रव्य-वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? मनोद्रव्यवर्गणाके भीतर स्थित अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। मनोवर्गणासे नीचेकी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाकी अन्या-न्याभ्यस्त राशि गुणकार है। भाषावर्गणासे नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसद्रव्य वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसवर्गणाके नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आहारवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणासे नीचे अनन्तप्रदेशी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। परमाणु-

गुण० ? दिवड्ढोवट्टिदअसंखेज्जपदेसियवग्गणाणं अण्णोण्णब्भत्थरासी। अणंते त्ति कधं णव्वदे ? जुत्तीदो। तं जहा—एगगुणहाणीए जहण्णपरित्ताणंते भागे हिदे असंखेज्जपदेसियवग्गणाणं गुणहाणिसलागाओ उप्पज्जंति। एदाओ च जहण्ण-परित्ताणंतयस्स अद्धच्छेदणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ। एदासिमसंखेज्जगुणत्तं कुदो णव्वदे ? गुरूवदेसादो। तेणेदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स सिद्धमणंतत्तं। संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा। को गुण-गारो ? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं। कुदो ? परमाणुवग्गणादो एगादिएगुत्तरकमेण परिहीणएत्थतणगोवुच्छाविसेसेहि एगपरमाणुवग्गणाए असंखे०-भागुप्पत्तीदो। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा[1] असंखेज्जगुणा। को गुण० ? एगरूवस्स असंखे०भागेणूणउक्कस्ससंखेज्जेण परिहीणदिवड्ढगुणहाणीए एगरूवस्स असंखे०भागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जेण ओवट्टिदाए जं लद्धं सो गुणगारो। एवं दव्वट्ठदप्पाबहुगं समत्तं।

संपहि णाणासेडिपदेसट्ठदप्पाबहुअं उच्चदे। तं जहा—सव्वत्थोवा पत्तेयसरीर-

वर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? डेढ़से भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है।

शंका—वह अनन्तप्रमाण है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—युक्तिसे जाना जाता है। यथा—एक गुणहानिका जघन्य परीतानन्तमें भाग देने पर असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। और ये जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातगुणी हैं।

शंका—ये असंख्यातगुणी हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—गुरुके उपदेशसे।

इसलिए इनका विरलनकर और दूना कर परस्पर गुणा करने से उत्पन्न हुई राशि अनन्त-प्रमाण है यह सिद्ध होता है।

संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है, क्योंकि परमाणु-वर्गणाकी अपेक्षा एकादि एकोत्तर क्रमसे हीन यहाँके गोपुच्छविशेषोंसे एक परमाणुवर्गणाकी उत्पत्ति असंख्यातवें भागप्रमाण होती है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून उत्कृष्ट संख्यातको डेढ़गुणहानिमेंसे कम करने पर जो लब्ध आवे उसमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे वह गुणकार है। इस प्रकार द्रव्यार्थता अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब नानाश्रेणि प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा—प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्रदेश

१. अ०का०प्रत्योः '-वग्गणाणाणासेडिसव्वदव्वा' इति पाठः।

वग्गणाए पदेसा । कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तएगजीवस्स कम्म-णोकम्मपदेसे ट्ठविय असंखेज्जेहि लोगेहि तेसु गुणिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणाणं सव्वपदेसुप्पत्तीए। महाखंधवग्गणाए सव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अणंता लोगा । कुदो ? उक्कस्स-पत्तेयसरीवग्गणं ट्ठविय अणंतेहि लोगेहि सेडीए असंखे०भागेण अंगुलस्स असंखे०-भागेण पलिदो० असंखे०भागेण जगपदरस्स असंखे०भागेण च गुणिदे महाखंध-पदेसपमाणं होदि । पुणो एदम्हि पत्तेयसरीरवग्गणपदेसेहि ओवट्टिदे जं लद्धं तत्थ अणंतलोगाणमुवलंभादो । बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । तं जहा—एगजीवकम्म-णोकम्मपदेसे सव्वजीवेहि अणंतगुणे ट्ठविय सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जेहि लोगेहि च गुणिदे बादरणिगोदवग्गणाए पदेसग्गं होदि । पुणो तम्हि महाखंधवग्गणपदेसग्गेण भागे घेप्पमाणे हेट्ठिमएगजीवपदेसेहि सव्वजीवरासिस्स असंखे०भागेण च उवरिम-एगजीवपदेसा सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जभागो च सरिसो त्ति अवणिय सेसहेट्ठिमरासिणा सेसुवरिमरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तगुणगारो लब्भदि तेण असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं । सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा[1] । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । कुदो बादरणिगोदेहिंतो

सबसे स्तोक हैं, क्योंकि एक जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे कर्म और नोकर्मके प्रदेशोंको स्थापित कर उन्हें असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके सब प्रदेशोंकी उत्पत्ति होती है। महास्कन्धवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अनन्त लोक गुणकार है, क्योंकि उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाको स्थापित करके अनन्त लोकोंसे, जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे, अङ्गुलके असंख्यातवें भागसे, पल्यके असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर महास्कन्धके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। पुनः इसमें प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्रदेशोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसमें अनन्त लोक उपलब्ध होते हैं। बादरनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। यथा – सब जीवोंसे अनन्तगुणे एक जीवके कर्म और नोकर्मप्रदेशोंको स्थापित करके सब जीव-राशिके असंख्यातवें भागसे और असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर बादर निगोदवर्गणाके प्रदेशाग्र होते हैं। पुनः उसमें महास्कन्धवर्गणाके प्रदेशोंका भाग ग्रहण करने पर अधस्तन एक जीवके प्रदेशोंके साथ और सब जीवराशिके असंख्यातवें भागके साथ उपरिम एक जीवके प्रदेश और सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग समान है, इसलिए घटा कर शेष अधस्तन राशिका शेष उपरिम राशिमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार लब्ध होता है, इसलिए असंख्यातगुणे हैं ऐसा कहा है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है, क्योंकि बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणे हैं।

१. ता०प्रतौ '—सव्वपदेसा [अ-] संखेज्जगुणा' अ०का०प्रत्योः '—सव्वपदेसासंखेज्जगुणा' इति पाठः।

सुहुमणिगोदा असंखेज्जगुणा ? [को गुण० ?] असंखेज्जा लोगा त्ति जीवट्ठाणसुत्ते परूविदत्तादो, उभयत्थ एगजीवपदेसग्गगुणगारस्स समाणत्तादो च। सांतर-णिरंतर-वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। धुवक्खंधवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो। तं जहा—धुवक्खंधचरिमवग्गणाए पदेसेहिंतो सांतरणिरंतर-वग्गणाए सव्वपदेसाणमणंतगुणहीणत्तुवलंभादो। कुदो ? जेण धुवक्खंधचरिम-वग्गणादव्वट्ठदादो सांतरणिरंतरवग्गणाए पढमादिसव्ववग्गणदव्वट्ठदाओ अणंतगुण-हीणाओ तेण तासिं पदेसग्गं पि अणंतगुणहीणं चेव। जदि धुवक्खंधचरिमवग्गणा एक्का चेव पदेसग्गेण अणंतगुणा[1] होदि तो धुवक्खंधसव्ववग्गणाओ णिच्छयेण अणंतगुणाओ होंति त्ति अणुत्तसिद्धं। कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंत-गुणा। को गुण० ? कम्मइयवग्गणाणं अण्णोण्णब्भत्थरासी। कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिम-अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थ-रासी। मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सग-अण्णोण्णब्भत्थरासी। मणदो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंत-गुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। भासादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ऐसा जीवस्थानसूत्रमें कथन किया है ? तथा दोनों जगह एक जीवके प्रदेशोंका गुणकार समान है। सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंमें नानश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यथा—ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके प्रदेशोंसे सान्तरनिरन्तरवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे हीन उपलब्ध होते हैं, क्योंकि यतः ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाकी द्रव्यार्थतासे सान्तरनिरन्तरवर्गणाकी प्रथमादि सब वर्गणाओंकी द्रव्यार्थताएं अनन्तगुणी हीन हैं, इसलिए उनके प्रदेशाग्र भी अनन्तगुणे हीन ही हैं। यदि ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अकेली ही प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी है तो ध्रुवस्कन्ध सब वर्गणाएं निश्चयसे अनन्तगुणी है यह अनुक्तसिद्ध है। कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? कार्मणवर्गणाओं-की अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। कार्मणवर्गणासे नीचेकी अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्या-भ्यस्त राशि गुणकार है। मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार

१. प्रतिषु 'अणंतगुणहीणा' इति पाठः।

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । तेजावग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । परमाणुवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । सुगमं । संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । एवं णाणासेडिसव्वपदेसट्ठदप्पाबहुअं समत्तं ।

एगसेडि-णाणासेडिदव्वट्ठ-पदेसट्ठदप्पाबहुअं उच्चदे । तं जहा—दव्वट्ठदाए एगसेडिपरमाणुवग्गणा णाणासेडिमहाखंधवग्गणा च दो वि तुल्लाओ थोवाओ । कुदो ? एगसंखत्तादो । संखेज्जपदेसियवग्गणासु एगसेडिवग्गणाओ संखेज्जगुणाओ । को गुण० ? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं । बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । पत्तेयसरीरवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । असंखेज्जपदेसियवग्गणासु

है । भाषावर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ? आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । कारणका कथन सुगम है । संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार नानाश्रेणि सर्व प्रदेशार्थता अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा—द्रव्यार्थताकी अपेक्षा एकश्रेणि परमाणुवर्गणा और नानाश्रेणि महास्कन्ध वर्गणा दोनों ही तुल्य हो कर सबसे स्तोक हैं, क्योंकि ये एक संख्याप्रमाण हैं । संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं संख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकार है । बादर निगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें

एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। आहारवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? आहारेगसेडिवग्गणाए[1] असंखे०भागो, अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। को पडिभागो ? असंखेज्जपदेसिय-वग्गणपडिभागो। आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। पुव्व-माहारवग्गणादो उवरि तेजा-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाणमेगसेडिवग्गणाओ जहाकमेण अणंतगुणाओ भणिदूण पच्छा आहारवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणाए एगसेडि-वग्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं। एण्हिं पुण आहारएगसेडिवग्गणादो हेट्ठिमअगहण-वग्गणाए एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं। तेण एदासिं दोण्णमप्पाबहुगाणं परोप्परविरुद्धाणं एत्थ संभवो ण होदि, किंतु दोण्णमेक्केणेव होदव्वमिदि ? सच्चमेदमेक्केणेव होदव्वमिदि, किंतु अणेणेव होदव्वमिदि ण वट्टमाणकाले णिच्छओ कादुं सक्किज्जदे, जिण--गणहर--पत्तेयबुद्ध--पण्णसमण--सुदकेवलिआदीणमभावादो। कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमआहारवग्गणादो उवरिमअगहणवग्गणमद्धाणगुणगारेहिंतो आहारादिवग्गणाणं अद्धाणुप्पायणट्ठं ट्ठविदभागहारो अणंतगुणो त्ति के वि आइरिया

एकश्रेणि वर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? आहार एकश्रेणि वर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है जो अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? असंख्यातप्रदेशी वर्गणा प्रतिभाग है। आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका—पहले आहारवर्गणासे ऊपरकी तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणाएं क्रमसे अनन्तगुणी कहकर पश्चात् आहारवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है। परन्तु इस समय आहार एकश्रेणिवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है, इसलिए परस्पर विरुद्ध ये दोनों अल्पबहुत्व यहां पर सम्भव नहीं हैं। किन्तु इन दोनोंमें से कोई एक होना चाहिए ?

समाधान—यह सत्य है कि इन दोनोंमें से कोई एक अल्पबहुत्व होना चाहिए, किन्तु यही अल्पबहुत्व होना चाहिए इसका वर्तमानकालमें निश्चय करना शक्य नहीं है, क्योंकि इस समय जिन, गणधर, प्रत्येकबुद्ध, प्रज्ञाश्रमण और श्रुतकेवली आदिका अभाव है। कार्मणवर्गणासे अधस्तन आहार वर्गणासे उपरिम अग्रहणवर्गणाके अध्वानके गुणकारसे आहारादिवर्गणाओंके अध्वानको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित भागहार अनन्तगुणा है ऐसा कितने ही आचार्य चाहते

१. ता० प्रतौ 'आहारदव्ववग्गणाए' इति पाठः।

इच्छंति तेसिमहिप्पाएण पुव्विल्लमप्पाबहुगं परूविदं। भागहारेहिंतो गुणगारा अणंतगुणा त्ति के वि आइरिया भणंति[1]। तेसिमहिप्पाएण एदमप्पाबहुगं परूविज्जदे, तेणेसो ण दोसो। तेजइयवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसो गुणगारो उवरि कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिम-अगहणवग्गणा त्ति परूवेदव्वो। तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। भासावग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। भासादो हेट्ठिमअगहण-वग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। मणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। मणवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। कम्मइयवग्गणासु एग-सेडिवग्गणा अणंतगुणा। कम्मइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। धुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। अचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पढमिल्लियासु धुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पत्तेयसरीरवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो। तासु चेव वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुण० ? असंखेज्जा लोगा। विदियधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा।

है, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार पहले का अल्पबहुत्व कहा है। तथा भागहारोंसे गुणकार अनन्तगुणे हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार यह अल्पबहुत्व कहा जा रहा है इसलिए यह कोई दोष नहीं है।

तैजसवर्गणाओंमें एक श्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अभव्य से अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। यह गुणकार ऊपर कार्मणवर्गणासे लेकर नीचे अग्रहणवर्गणा तक कहना चाहिए। तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। भाषावर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। भाषा-वर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। कार्मणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। कार्मणवर्गणाओंसे नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एक-श्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। अचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। पहली ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। प्रत्येक-शरीरवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें

१. अ०का०प्रत्योः 'के वि भणंति' इति पाठः।

को गुण० ? अणंता लोगा । बादरणिगोदवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण०? सेडीए असंखे०भागो पलिदोवमस्स असंखे०भागेण गुणिदो । तदियधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण०? अंगुलस्स असंखे०भागो । सुहुमणिगोदवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुण०? पलिदो० असंखे० भागो आवलियाए असंखे०भागेण गुणिदो । महाखंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखे०- गुणा । को गुण० ? जगपदरस्स असंखे०भागे पलिदो[1]० असंखे०भागेण खंडिदे तत्थ एगखंडं गुणगारो । चउत्थधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखे०गुणा । को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो । महाखंधवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? चउत्थधुवसुण्ण० पलिदो० असंखे०भागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तेण । बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा । सांतरणिरंतरवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । धुवक्खंधवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । तं जहा—सांतरणिरंतरवग्गणाए दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए च पढमवग्गणा चेव पहाणा, सेसवग्गणसव्वपदेसाणं तदणंतिम-

एकश्रेणिवर्गणाऐं अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? अनन्त लोकप्रमाण गुणकार है । बादरनिगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाऐं असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाऐं असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाऐं असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । महास्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाऐं असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है । जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे वह गुणकार है । चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणाऐं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। महास्कन्धवर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? चौथी ध्रुवशून्यवर्गणामें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतने अधिक हैं । बादरनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । इन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यथा—सान्तरनिरन्तरवर्गणामें द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थतकी

१. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'असंखे०भागो पलिदो०' इति पाठः ।

भागत्तादो। धुवक्खंधपढमवग्गणपमाणेण सगसव्वदव्वे कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्त-पढमवग्गणाओ होंति, समयाविरोहेणुप्पण्णगुणहाणिसलागाओ विरलिय समयाविरुद्ध-गुणगारेण गुणिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूणुप्पाइदरासिणा धुवक्खंधचरिमवग्गणाए गुणिदाए पढमवग्गणा होदि त्ति दिवड्ढगुणहाणिगुणियअण्णोण्णब्भत्थरासिणा धुव-क्खंधचरिमवग्गणाए गुणिदाए धुवक्खंधसव्वदव्वं होदि। सांतरणिरंतरपढमवग्गणादो धुवक्खंधचरिमवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। सांतर-णिरंतरपढमवग्गणपदेसुप्पायणट्ठं ठविदसादिरेयहेट्ठिमअद्धाणमेत्तगुणगारो। धुवक्खंधब्भंतरअण्णोण्णब्भत्थरासी अणंतगुणो, तेण सांतरणिरंतरवग्गणपदेसग्गादो धुवक्खंधवग्गणदव्वमणंतगुणमिदि सिद्धं। तस्सुवरि धुवक्खंधवग्गणाए पदेसग्ग-मणंतगुणं। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागमेत्तो। तं जहा—धुवक्खंधपढमवग्गणं ठविय दिवड्ढगुणहाणिणा गुणिदे दव्ववग्ग होदि। पुणो तं चेव पडिरासिय हेट्ठिमअद्धाणेण अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणेण सिद्धाण-मणंतिमभागेण गुणिदे धुवक्खंधपदेसग्गं होदि। धुवक्खंधवग्गणाए एगसेडिअद्धाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणं ति सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणो गुणगारो किण्ण दिज्जदि ? ण, पढमगुणहाणिपदेसग्गस्सेव पहाणत्तदंसणादो बिदियगुणहाणिसव्वपदेसग्गस्स पढम-

अपेक्षा प्रथम वर्गणा ही प्रधान है, क्योंकि शेष वर्गणाओंके सब प्रदेश उसके अनन्तवें भाग-प्रमाण हैं। ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे अपने सब द्रव्यके करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणाएं होती हैं। अतः आगमानुसार उत्पन्न हुई गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और आगमानुसार गुणकारसे गुणित कर तथा परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे ध्रुव-स्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करने पर प्रथम वर्गणा होती है इसलिए डेढ़ गुणहानिसे गुणित अन्योन्याभ्यस्त राशिके द्वारा ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धका सब द्रव्य होता है। सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणासे ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके प्रदेशोंको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित साधिक अधस्तन अध्वानमात्र गुणकार है। ध्रुवस्कन्धके भीतर अन्योन्याभ्यस्त राशि अनन्तगुणी है, इसलिए सान्तरनिरन्तरवर्गणाके प्रदेशाग्रसे ध्रुवस्कन्धवर्गणाका द्रव्य अनन्तगुणा है यह सिद्ध होता है। इसके ऊपर ध्रुवस्कन्ध वर्गणाके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-प्रमाण गुणकार है। यथा—ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणाको स्थापित कर डेढ़ गुणहानिसे गुणित करनेपर द्रव्यका वर्ग होता है। पुनः उसे ही प्रतिराशि बनाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अधस्तन अध्वानसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धके प्रदेशाग्र होते हैं।

शंका—ध्रुवस्कन्धवर्गणाका एकश्रेणि अध्वान सब जीवोंसे अनन्तगुणा है, इसलिए सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रकी ही प्रधानता देखी जाती है। तथा

गुणहाणिपदेसग्गेण समाणत्तुवलंभादो। ण च हेट्ठिमअद्धाणस्सुवरि एगदोगुणहाणीयो पक्खित्ते गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो, गुणहाणिणा गुणिदे वि तदणंतगुणत्ताभावादो। तेण सिद्धं गुणगारो[1] अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो त्ति। कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? रूवाहियधुवक्खंधादो हेट्ठिमसयलद्धाणेणोवट्टिदकम्मइयदव्वट्ठदअण्णोण्णब्भत्थरासी। कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतिमभागमेत्तकम्मइयवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? कम्मइयवग्गणरूवाहियहेट्ठिमद्दाणेणोवट्टिदकम्मइयहेट्ठिमअगहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। तासु चेव पदेसग्गमणंतगुणं। को गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। तदो मणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदमणदव्ववग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी। मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रूवाहियं। मणस्स हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? मणस्स हेट्ठिमसयलद्धाणेणोवट्टिदअगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो।

द्वितीय गुणहानिका सब प्रदेशाग्र प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रके समान पाया जाता है। यदि कहा जाय कि अधस्तन अध्वानके ऊपर एक दो गुणहानियोंको प्रक्षिप्त करनेपर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा पाया जायगा सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि गुणहानिसे गुणित करनेपर भी उसके अनन्तगुणे होनेका अभाव है, इसलिए गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है।

कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अधिक ध्रुवस्कन्धके नीचेके सकल अध्वानमें भाजित कार्मणद्रव्यार्थताकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण कार्मणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहण वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? कार्मणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन स्थानसे भाजित कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। उससे मनोवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित मनोद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? मनोद्रव्यवर्गणाका एक अधिक सकल अध्वान गुणकार है। मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? मनोवर्गणाके अधस्तन सकल अध्वानसे

१. ता०प्रतौ 'सिद्धो गुणगारो' इति पाठः।

तासु चेव अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहण-वग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रूवाहियं गुणगारो । भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदभासा-वग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? भासावग्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणं रूवाहियं । भासावग्गणाए हेट्ठिमअगहण-वग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? भासावग्गणाए हेट्ठिम-अद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदअप्पिदागहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अप्पिदअगहणवग्गणाए हेट्ठिम-अद्धाणं रूवाहियं । तेजावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? उवरिमअगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदतेजावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजावग्गणाहेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं । तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण०? तेजइयपदेसगुणगारेणोवट्टिदअप्पिदागहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी । तासु चेव वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण०? अप्पिदअगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं । आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण०? उवरिमअगहणवग्गणपदेसगुणगारेणोवट्टिदआहारवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी । तासु चेव

भाजित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं अग्रहण वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन सकल अध्वान गुणकार है। भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित भाषावर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाका एक अधिक अधस्तन सकल अध्वान गुणकार है। भाषावर्गणाके नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाके एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? उपरिम अग्रहण वर्गणाके एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित तैजस-वर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? तैजस प्रदेश गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? उपरिम अग्रहणवर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित आहारवर्गणाकी

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवग्गणहेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं । आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवग्गणपदेसगुणगारेणोवट्टिदअप्पिदअगहणवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी । तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं । परमाणुवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा पदेसा च दो वि सरिसा अणंतगुणा । को गुण०? अणंतपदेसियवग्गणाणं पदेसगुणगारेण दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेणोवट्टिदअसंखेज्ज-पदेसियवग्गणाणमण्णोण्णब्भत्थरासी । संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा । को गुण०? एगरूवस्स असंखे०भागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं । तेसिं चेव पदेसा संखेज्जगुणा । को गुण० ? संखेज्जरूवाणि । तं जहा—पदेसग्गेण सव्व-वग्गणाओ एगगुणदुगुणतिगुणादिकमेण गदाओ त्ति संकप्पिय परमाणुवग्गणपदेसे ट्ठविय उक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए गुणिदे सव्ववग्गणाणं पदेसग्गमागच्छदि । पुणो गुणगारम्हि एगरूवे अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणपदेसग्गं होदि । पुणो पदेसग्गेण एदाओ सरिसाओ ण होंति । विसेसहीणाओ त्ति हीणपदेसपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा—रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणासंकलणमाणिय दुगुणिदे हीणपदेसपमाणं पावदि । पुणो दोहि गुणहाणीहि असंखेज्जलोगपमाणेहि ओवट्टिदे एगरूवस्स असंखे०-भागो आगच्छदि । एदम्मि पुव्विल्लसंकलणाए अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणादव्वं

अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आहारवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। आहारवर्गणासे नीचे अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आहार-वर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य और प्रदेश दोनों ही समान होकर अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? डेढ़ गुणहानि गुणित अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंके प्रदेशगुणकारसे भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। उन्हींके प्रदेश संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात अंक गुणकार है। यथा—प्रदेशाग्रकी अपेक्षा सब वर्गणाएं एकगुणी, द्विगुणी और त्रिगुणी आदि क्रमसे गई हैं ऐसा संकल्प करके परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंको स्थापित कर उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनासे गुणित करने पर सब वर्गणाओंके प्रदेशाग्र आते हैं। पुनः गुणकारमेंसे एक अंकके कम कर देने पर संख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र होते हैं। पुनः प्रदेशाग्रकी अपेक्षा ये समान नहीं होती हैं किन्तु विशेष हीन होती हैं इसलिए हीन प्रदेशोंके प्रमाणका कथन करते हैं। यथा—एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनासंकलनको लाकर दूना करने पर हीन प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः असंख्यात लोकप्रमाण दो गुणहानियोंका भाग देने पर एक अंकका असंख्यातवां भाग आता है। इसे पहले की संकलनामेंसे घटा देने पर संख्यातप्रदेशी

होदि। एदम्मि दव्वट्ठदाए भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। तेण गुणगारो संखेज्जे त्ति सिद्धं। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखे०गुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। तेसु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा असंखे०गुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। एवमप्पाबहुगपरूवणा गदा। अट्ठहि अणियोगद्दारेहि तेवीस-वग्गणासु परूविदासु अब्भंतरवग्गणा समत्ता होदि।

तत्थ इमाए बाहिरियाए वग्गणाए अण्णा परूवणा[1] कायव्वा भवदि ॥११७॥

ओरालियादिपंचण्हं सरीराणं कथं बाहिरिया वग्गणा त्ति सण्णा। ण ताव इंदिय-णोइंदिएहि अगेज्झाणं पोग्गलाणं बाहिरसण्णा, परमाणुआदिवग्गणाणं पि तदविसेसेण बाहिरवग्गणत्तप्पसंगादो। ण ताव जीवपदेसेहि पुधभूदाणि त्ति पंचण्हं सरीराणं बाहिरववएसो, दुद्धोदयाणं व अण्णोण्णाणुगयाणं जीवसरीराणं अब्भंतर[2]-बाहिरभावाणुववत्तीदो। अणंताणंताणं विस्सासुवचयपरमाणूणं मज्झे पंचण्हं सरीराणं परमाणू चेट्ठिदा त्ति ण तेसिं बाहिरसण्णा, विस्सासुवचयक्खंधाणमंतोट्ठिदाणं बाहिर-ववएसविरोहादो। तम्हा[3] बाहिरवग्गणववएसो ण घडदे? एत्थ परिहारो उच्चदे। तं

वर्गणाओंका द्रव्य होता है। इसमें द्रव्यार्थताका भाग देने पर संख्यात अंक लब्ध आते हैं। इसलिए गुणकार संख्यात है यह सिद्ध होता है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। इस प्रकार अल्पबहुत्व प्ररूपणा समाप्त हुई। तथा आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर तेईस वर्गणाओंकी प्ररूपणा करने पर आभ्यन्तर वर्गणा समाप्त होती है।

अब वहां इस बाह्य वर्गणाकी अन्य प्ररूपणा कर्तव्य है ॥११७॥

शंका—औदारिक आदि पांच शरीरोंकी बाह्य वर्गणा संज्ञा कैसे है? इन्द्रिय और नोइन्द्रियसे अग्राह्य पुद्गलोंकी बाह्य संज्ञा तो हो नहीं सकती, क्योंकि परमाणु आदि वर्गणाओंमें भी उनसे कोई विशेषता नहीं पाई जाती है, इसलिए उन्हें भी बाह्य वर्गणापनेका प्रसंग प्राप्त होता है। वे जीवप्रदेशोंसे पृथग्भूत हैं, इसलिए पाँच शरीरोंकी बाह्य संज्ञा है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि दूध और जलके समान परस्परमें एक दूसरेमें प्रविष्ट हुए जीव और शरीरोंका आभ्यन्तरभाव और बाह्यभाव नहीं बन सकता है। अनन्तानन्त विस्रसोपचयरूप परमाणुओंके मध्यमें पाँचों शरीरोंके परमाणु अवस्थित हैं इसलिए उनकी बाह्य संज्ञा है सो ऐसा कथन करना भी ठीक नहीं है, क्यों कि भीतर स्थित विस्रसोपचय स्कन्धोंकी बाह्य संज्ञा होनेमें विरोध आता है। इसलिए बाह्यवर्गणा यह संज्ञा नहीं बनती है?

समाधान—यहां अब इस शंकाका परिहार करते हैं। यथा—पूर्वोक्त तेईस वर्गणाओंसे

१. आ०प्रतौ 'अण्ण परूवणा' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'जीवसरीराणमब्भंतर–' इति पाठः। ३. प्रतिषु 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः।

जहा—पुव्वुत्ततेवीसवग्गणाहिंतो पंचसरीराणि पुधभूदाणि त्ति तेसिं बाहिरववएसो। तं जहा—ण ताव पंचसरीराणि अचित्तवग्गणासु णिवदंति, सचित्ताणमचित्तभावविरोहादो। ण च सचित्तवग्गणासु णिवदंति, विस्सासुवचएहि विणा पंचण्हं सरीराणं परमाणूणं चेव गहणादो। तम्हा पंचण्हं सरीराणं बाहिरवग्गणा त्ति सिद्धा सण्णा। तत्थ इमा परूवणा कायव्वा भवदि—

तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति— सरीरिसरीरपरूवणा सरीरपरूवणा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा विस्सासुवचयपरूवणा चेदि ॥११८॥

सरीरी णाम जीवा। तेसिं सरीराणं पत्तेयसाहारणभेयाणं परूवयत्तादो सरीरिसरीराणं च पत्तेयसाहारणलक्खणाणं परूवणत्तादो वा सरीरिसरीरपरूवणा णाम। पंचण्हं सरीराणं पदेसपमाणं तेसिं पदेसणिसेयकमं पदेसथोवबहुत्तं च परूवेदि त्ति सरीरपरूवणा णाम। पंचण्हं सरीराणं विस्सासुवचयसंबंधकारणणिद्धल्हुक्खगुणाणमोरालिय[1]-वेउव्विय---आहार--तेजा--कम्मइयपरमाणुविसयाणमविभागपडिच्छेदपरूवणा जत्थ कीरदि सा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा णाम। तेसिं[2] चेव परमाणूणं जीवादो मुक्काणं[3] विस्सासुवचयस्स परूवणा जत्थ कीरदि सा विस्सासुवचयपरूवणदा णाम।

पाँच शरीर पृथग्भूत हैं, इसलिए इनकी बाह्य संज्ञा है। यथा—पाँच शरीर अचित्त वर्गणाओंमें तो सम्मिलित किये नहीं जा सकते, क्योंकि सचित्तोंको अचित्त माननेमें विरोध आता है। उनका सचित्त वर्गणाओंमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि विस्रसोपचयोंके बिना पाँच शरीरोंके परमाणुओंका ही सचित्त वर्गणाओंमें ग्रहण किया है। इसलिए पाँचों शरीरोंकी बाह्य वर्गणा यह संज्ञा सिद्ध होती है। इसमें यह प्ररूपणा करने योग्य है—

वहां ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—शरीरिशरीरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा ॥११८॥

शरीरी जीवोंको कहते हैं। उनके प्रत्येक और साधारण भेदवाले शरीरों का प्ररूपण करनेवाला होनेसे अथवा प्रत्येक और साधारण लक्षणवाले शरीरी और शरीरोंका प्ररूपणकरनेवाला होनेसे शरीरिशरीरप्ररूपणा संज्ञा है। पाँचों शरीरोके प्रदेशोंके प्रमाणका, उनके प्रदेशोके निषेक क्रमका और प्रदेशोके अल्पबहुत्वका कथन करता है, इसलिए शरीरप्ररूपणा संज्ञा है। जिसमें औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण परमाणुओं को विषय करनेवाले पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयके सम्बन्धके कारण स्निग्ध और रूक्षगुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी प्ररूपणा की जाती है उसकी शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है। तथा जिसमें जीवसे मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसकी विस्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है।

१. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु '–गुणियमोरालिय–' इति पाठः। २. म०प्रतौ 'तेसिं चेव परमाणूणं' इत्यादि वाक्यं पुनरपि निबद्धमस्ति। ३. म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'मुक्कमारणं' इति पाठः।

एदेसिं चदुण्हमणियोगद्दाराणं कमेणेत्थ परूवणा कीरदे—

सरीरिसरीरपरूवणदाए अत्थि जीवा पत्तेय-साधारण-सरीरा ॥११९॥

एक्कस्सेव जीवस्स जं सरीरं तं पत्तेयसरीरं। तं सरीरं जीवाणं अत्थि ते पत्तेय-सरीरा णाम। बहूणं जीवाणं जमेगं सरीरं तं साहारणसरीरं णाम। तत्थ जे वसंति जीवा ते साहारणसरीरा। अथवा पत्तेयं पुधभूदं सरीरं जेसिं ते पत्तेयसरीरा। साहारणं सामण्णं सरीरं जेसिं जीवाणं ते साहारणसरीरा। एवं सरीराणि सरीरिणो च दुविहा[1] चेव होंति, तदियस्स अणुवलंभादो।

तत्थ जे ते साहारणसरीरा ते णियमा वणप्फदिकाइया। अवसेसा पत्तेयसरीरा ॥१२०॥

साहारणसरीरा जीवा वणप्फदिकाइया चेव त्ति वयणेण साहारणसरीरं वणप्फदि-काइएसु णियमिदं। वणप्फदिकाइया पुण अणियदा "यत एवकारकरणं[2] ततोऽन्य-त्रावधारणमिति' वचनात्। तेण वणप्फदिकाइया पत्तेयसरीरा वि अत्थि त्ति घेत्तव्वं। अवसेसा पुण जीवा पत्तेयसरीरा चेव।

अब इन चार अनुभागद्वारोंका क्रमसे यहां पर कथन करते हैं—

शरीरिशरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा जीव प्रत्येक शरीरवाले और साधारण शरीर-वाले हैं ॥११९॥

एक ही जीवका जो शरीर है उसकी प्रत्येकशरीर संज्ञा है। वह शरीर जिन जीवोंके है वे प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं। बहुत जीवोंका जो एक शरीर है वह साधारणशरीर कहलाता है। उनमें जो जीव निवास करते हैं वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं। अथवा प्रत्येक अर्थात् पृथग्भूत शरीर जिन जीवोंका है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं। तथा साधारण अर्थात् सामान्य शरीर जिन जीवोंका है वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं। इसप्रकार शरीर और शरीरी दो प्रकारके ही होते हैं, क्योंकि तीसरा प्रकार उपलब्ध नहीं होता।

उनमेंसे जो साधारणशरीर जीव हैं वे नियमसे वनस्पतिकायिक होते हैं। अवशेष जीव प्रत्येकशरीर हैं ॥१२०॥

साधारणशरीर जीव वनस्पतिकायिक ही होते हैं इस वचनसे साधारणशरीर वनस्पति-कायिकोंमें नियमित किया गया है। परन्तु वनस्पतिकायिक अनियत हैं, क्योंकि जहां एवकार किया जाता है उससे अन्यत्र अवधारण होता है ऐसा वचन है, इसलिए वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर भी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। परन्तु अवशेष जीव प्रत्येकशरीर ही हैं।

१. अ०का०प्रत्योः 'दुविहो' इति पाठः। २. म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'एवकारणं' इति पाठः।

तत्थ इमं[1] साहारणलक्खणं भणिदं ॥१२१॥

किमट्ठं लक्खणपरूवणा कीरदे ? ण, लक्खणभेदेण विणा सरीरिसरीराणं भेदो णत्थि त्ति तब्भेदपरूवणट्ठं तदुत्तीदो। पत्तेयसरीरस्स किण्ण लक्खणं भणिदं ? ण, साहारणसरीरस्स लक्खणे कहिदे संते तव्विवरीयलक्खणं पत्तेयसरीरमिदि उवदेसेण विणा तल्लक्खणावगमादो[2]।

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥१२२॥

एदाए सुत्तगाहाए सरीरि-सरीणाणं[3] दोण्हं पि लक्खणं परूविदं, एगलक्खणावगमेण इयरस्स वि लक्खणावगमादो। सरीरपाओग्गपोग्गलक्खंधगहणमाहारो। सो साहारणं सामण्णं होदि। साहारणमिदि णवुंसयलिंगणिद्देसो कथं कदो ? किरियाविसेसेण भावेण। एगजीवे आहारिदे सव्वजीवा आहारिदा त्ति भणिदं होदि, अण्णहा साहारणत्ताणुववत्तीदो। आणो उस्सासो, अवाणो[4] णिस्सासो। तेसिमाणावाणाणं

वहाँ साधारणका यह लक्षण कहा है ॥१२१॥

शंका—लक्षणका कथन किसलिए किया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि लक्षणके भेदके विना शरीरी और शरीरका भेद नहीं हो सकता, इसलिए उनके भेदोंका कथन करनेके लिए लक्षणके भेदका कथन किया है।

शंका—प्रत्येकशरीरका लक्षण क्यों नहीं कहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि साधारणशरीरका लक्षण कह देने पर उससे विपरीत लक्षणवाला प्रत्येकशरीर है इस प्रकार उपदेशके बिना उसके लक्षणका ज्ञान हो जाता है।

साधारण आहार और साधारण उच्छ्वास-निःश्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा गया है ॥१२२॥

इस सूत्रगाथा द्वारा शरीरी और शरीर दोनोंका ही लक्षण कहा गया है, क्योंकि एकके लक्षणका ज्ञान होने पर दूसरेके लक्षणका भी ज्ञान हो जाता है। शरीरके योग्य पुद्गलस्कन्धोंका ग्रहण करना आहार कहलाता है। वह साधारण अर्थात् सामान्य होता है।

शंका—सूत्रगाथामें 'साहारणं' इस प्रकार नपुंसकलिंगका निर्देश किसलिए किया है ?

समाधान—क्रिया विशेषरूप भावके दिखलानेके लिए नपुंसकलिंगका निर्देश किया है। एक जीवके आहार करने पर सब जीवोंका आहार हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, अन्यथा उसका साधारणपना नहीं बन सकता है।

'आण' शब्दका अर्थ उच्छ्वास है और 'अपाण' शब्दका अर्थ निःश्वास है। उन आना-

१. ता०प्रतौ तण्ण (त्थ) इमं अ० प्रतौ 'तण्ण इमं' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'तल्लक्खेणा वगमादो' इति पाठः। ३. आ० प्रतौ 'सुत्तगाहाए सरीराणं का०प्रतौ 'सुत्तगाहाए सरीरसरीराणं' इति पाठः। ४. ता०का० प्रत्योः 'अपाणो' इति पाठः।

गहणमुवादाणं सव्वजीवाणं साहारणं सामण्णं। केसिं जीवाणं सामण्णं ति भणिदे साहारणजीवाणं। के साहारणजीवा? एगसरीरणिवासिणो। अण्णसरीरणिवासिणं अण्णसरीरट्ठिएहि साहारणत्तं णत्थि, एगसरीरावासजणिदपच्चासत्तीए अभावादो। एदस्स भावत्थो—सव्वजहण्णेण पज्जत्तिकालेण जदि पुव्वुप्पण्णणिगोदजीवा सरीरपज्जत्ति-इंदियपज्जत्ति-आहार-आणापाणपज्जत्तीहि पज्जत्तयदा होंति। तम्हि सरीरे तेहि समुप्पण्णमंदजोगिणिगोदजीवा वि तेणेव कालेण एदाओ पज्जत्तीओ समाणेंति, अण्णहा आहारगहणादीणं[2] साहारणत्ताणुववत्तीदो। जदि दीहकालेण पढममुप्पण्णजीवा चत्तारि पज्जत्तीओ समाणेंति तो तम्हि सरीरे पच्छा उप्पण्णजीवा तेणेव कालेण ताओ पज्जत्तीओ समाणेंति त्ति भणिदं होदि। कथमेगेण जीवेण गहिदो आहारो तक्काले तत्थ अणंताणं जीवाणं जायदे? ण, तेणाहारेण जणिदसत्तीए पच्छा उप्पण्णजीवाणं उप्पण्णपढमसमए चेव उवलंभादो। जदि एवं तो आहारो साहारणो होदि आहारजणिदसत्ती साहारणे त्ति वत्तव्वं? ण एस दोसो, कज्जे कारणोवयारेण आहारजणिदसत्तीए वि आहारववएससिद्धीदो। सरीरिंदियपज्जत्तीणं साहारणत्तं

पानका ग्रहण अर्थात् उपादान सब जीवोंके साधारण है अर्थात् सामान्य है। किन जीवोंके साधारण है ऐसा पूछने पर गाथासूत्रमें 'साधारण जीवोंके' ऐसा कहा है।

शंका—साधारण जीव कौन हैं।

समाधान—एक शरीरमें निवास करनेवाले जीव साधारण हैं।

अन्य शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके उनसे भिन्न शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके साथ साधारणपना नहीं है, क्योंकि उनमें एक शरीरके आवाससे उत्पन्न हुई प्रत्यासत्तिका अभाव है। इसका अभिप्राय यह है—सबसे जघन्य पर्याप्ति कालके द्वारा यदि पहले उत्पन्न हुए निगोद जीव शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आहारपर्याप्ति और उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्तिसे पर्याप्त होते हैं तो उसी शरीरमें उनके साथ उत्पन्न हुए मन्द योगवाले निगोद जीव भी उसी कालके द्वारा इन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं, अन्यथा आहारग्रहण आदिका साधारणपना नहीं बन सकता है। यदि दीर्घ कालके द्वारा पहले उत्पन्न हुए जीव चारों पर्याप्तियोंको प्राप्त करते हैं तो उसी शरीरमें पीछेसे उत्पन्न हुए जीव उसी कालके द्वारा उन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—एक जीवके द्वारा ग्रहण किया गया आहार उस कालमें वहाँ अनन्त जीवोंका कैसे हो सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिका बादमें उत्पन्न हुए जीवोंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही ग्रहण हो जाता है।

शंका—यदि ऐसा है तो 'आहार साधारण है' इसके स्थानमें 'आहारजनित शक्ति साधारण है' ऐसा कहना चाहिए?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि कार्यमें कारणका उपचार कर लेनेसे आहारजनित शक्तिके भी आहार संज्ञा सिद्ध होती है।

१. म० प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'सामण्णेत्ति' अ०का०प्रत्योः 'सामण्णा त्ति' इति पाठः।
२. आ० प्रतौ 'अण्णहारगहण्णादीणं' इति पाठः।

किण्ण परूविदं ? ण, आहाराणावाणणिद्देसो देसामासियो त्ति तेसिं पि एत्थेव अंतब्भावादो । एवमेदं साहारणलक्खणं भणिदं । संपहि एदीए गाहाए भणिदत्थस्सेव दढीकरणट्ठं उत्तरगाहा भणदि—

एयस्स अणुग्गहणं बहूण साहारणाणमेयस्स ।
एयस्स जं बहूणं समासदो तं पि होदि एयस्स ॥१२३॥

एयस्स णिगोदस्स अणुग्गहण पज्जत्तिणिप्पायणट्ठं जं परमाणुपोग्गलग्गहणं णिप्पण्णसरीरस्स जं परमाणुपोग्गलग्गहणं वा तं बहूणं साहारणाणं बहूणं साहारण-जीवाणं तत्र शरीरे तस्मिन् काले सतामसतां च भवति । कुदो ? तेणाहारेण जणिद-सत्तीए तत्थतणसव्वजीवेसु अक्कमेणुवलंभादो, तेहि परमाणूहि णिप्फण्णसरीरावयव-फलस्स सव्वजीवेसु उवलंभादो वा । जदि एगजीवम्हि जोगेणागदपरमाणुपोग्गला तस्सरीरमहिट्ठिदाणं अण्णजीवाणं चेव होंति तो तस्स जोगिल्लजीवस्स तमणुग्गहणं ण होदि, अण्णसंबंधित्तादो[1] त्ति भणिदे परिहारं भणदि—एयस्स एदस्स वि जीवस्स जोगवंतस्स तमणुग्गहणं होदि । कुदो ? तप्फलस्स एत्थ वि उवलंभादो । कथमेगेण

शंका—शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्ति ये सबके साधारण हैं ऐसा क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि गाथासूत्रमें 'आहार' और 'आनापान' पदका ग्रहण देशा-मर्षक है, इसलिए उनका भी इन्हींमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

इस प्रकार यह साधारण लक्षण कहा है । अब इस गाथा द्वारा कहे गये अर्थ को ही दृढ़ करनेके लिए आगेकी गाथा कहते हैं—

एक जीवका जो अनुग्रहण अर्थात् उपकार है वह बहुत साधारण जीवोंका है और इसका भी है । तथा बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिलकर इस विवक्षित जीवका भी है ॥१२३॥

एक निगोद जीवका अनुग्रहण अर्थात पर्याप्तियोंको उत्पन्न करनेके लिए जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है या निष्पन्न हुए शरीरके जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है वह 'बहूणं साहा-रणाणं' अर्थात् उस शरीरमें उस कालमें रहनेवाले और नहीं रहनेवाले बहुत साधारण जीवोंका होता है, क्योंकि उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्ति वहाँके सब जीवोंमें युगपत् उपलब्ध होती है । अथवा उन परमाणुओंसे निष्पन्न हुए शरीरके अवयवोंका फल सब जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

शंका—यदि एक जीवमें योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल उस शरीरमें रहनेवाले अन्य जीवों के ही होते हैं तो योगवाले उस जीवका वह अनुग्रहण नहीं हो सकता, क्योंकि उसका सम्बन्ध अन्य जीवों के साथ पाया जाता है ?

समाधान—अब इस शंका का परिहार करते हैं—इस एक योगवाले जीवका भी वह अनुग्रहण होता है, क्योंकि उसका फल इस जीव में भी उपलब्ध होता है ।

१. म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'अण्णसंबंधत्तादो' इति पाठः ।

वि दत्ताणं पोग्गलाणं फलमण्णे भुंजंति ? ण एस दोसो, एक्केण वि दत्तधणधण्णाईणं अविहत्तधणभाउआणं[1] धूउपिउपुत्तणत्तुअंताणं[2] च भोत्तुभावदंसणादो। तत्थेव सरीरे णिवसंतजीवाणं जोगेणागदपरमाणुपोग्गला किमेदस्स अप्पिदजीवस्स होंति आहो ण होंति त्ति भणिदे भणदि—बहूणं जमणुग्गहणं तं समासदो पिंडभावेण एयस्स एदस्स वि अप्पिदणिगोदजीवस्स होदि, एगसरीरावासिदअणंतजीवजोगेणागदपरमाणुपोग्गल-कलावजणिदसत्तीए एत्थ उवलंभादो। जदि एवं तो एदेसिं बहूणं जीवाणं तमणुग्गहणं ण होदि[3], तप्फलस्स अण्णत्थ चेव एगम्हि जीवे उवलंभादो त्ति भणिदे भणदि— 'एयस्स' एप एकशब्दोऽन्तर्भावितवीप्सार्थः, तेनैकैकस्यापि जीवस्य तदनुग्रहणं भवति, तेभ्योऽन्यजीवेषु शक्त्युत्पत्तिकाल एव स्वस्मिन्नपि तदुत्पत्तेः।

समगं वक्कंताणं समगं तेसिं सरीरणिप्पत्ती।
समगं च अणुग्गहणं समगं उस्सासणिस्सासो ॥१२४॥

एक्कम्हि सरीरे जे पढमं चेव उप्पण्णा[4] अणंता जीवा जे च पच्छा उप्पण्णा ते सव्वे समगं वक्कंता णाम[5]। कथं भिण्णकालुप्पण्णाणं जीवाणं समगत्तं जुज्जदे ? ण,

शंका—एक जीव के द्वारा दिये गये पुद्गलोंका फल अन्य जीव कैसे भोगते हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि एक के द्वारा भी दिये गये धन धान्यादिक को अविभक्त धनवाले भाई, लड़की, पिता, पुत्र और नाती तक के जीव भोगते हुए देखे जाते हैं।

उसी शरीरमें निवास करनेवाले जीवोंके योगसे आये हुए परमाणुपुद्गल क्या एक विवक्षित जीवके होते हैं या नहीं होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं—बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिल कर एक का अर्थात् विवक्षित निगोद जीवका भी होता है, क्योंकि एक शरीरमें निवास करनेवाले अनन्त जीवोंके योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल कलापसे उत्पन्न हुई शक्ति इस जीव मे पाई जाती है। यदि ऐसा है तो इन बहुत जीवोंका वह अनुग्रहण नहीं होता है, क्योंकि उसका फल अन्यत्र ही एक जीव मे उपलब्ध होता है, ऐसा कहने पर कहते हैं— 'एयस्स' यह 'एक' शब्द अन्तर्गर्भित वीप्सारूप अर्थको लिए हुए है, इसलिए यह फलित हुआ कि एक एक जीव का भी वह अनुग्रहण है, क्योंकि उन पुद्गलों से अन्य जीवों मे शक्ति के उत्पन्न होने के काल मे ही अपने में भी उसकी उत्पत्ति होती है।

एक साथ उत्पन्न होनेवालोंके उनके शरीरकी निष्पत्ति एक साथ होती है, एक साथ अनुग्रहण होता है और एक साथ उच्छ्वास-निःश्वास होता है ॥१२४॥

एक शरीरमें जो पहले उत्पन्न हुए अनन्त जीव हैं और जो बादमें उत्पन्न हुए अनन्त जीव है वे सब एक साथ उत्पन्न हुए कहे जाते हैं।

शंका—भिन्न कालमें उत्पन्न हुए जीवोंका एक साथपना कैसे बन सकता है ?

१. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतीषु '-धणभाउवावाणं' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'धुउपिउ धत्तण्णसुवण्णंताणं' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'तमणुग्गहं ण होदि' अ०का०प्रत्योः 'तमणुग्गहणं होदि' इति पाठः। ४. ता०प्रतौ 'पढमं उप्पण्णा' का०प्रतौ 'पढमं चे उप्पण्णा' इति पाठः। ५. अ०प्रतौ 'धक्कंता णाम' का०प्रतौ 'धक्कंताणं णाम' इति पाठः।

एगसरीरसंबंधेण तेसिं सव्वेसिं पि समगत्तं पडि विरोहाभावादो। अथवा समए वक्कंताणं ति सुत्तं वत्तव्वं। एक्कम्हि समए एक्कसरीरे उप्पण्णसव्वजीवा समए वक्कंता णाम। एक्कम्हि सरीरे पच्छा उप्पज्जमाणा जीवा अत्थि, कथं तेसिं पढमसमए चेव उप्पत्ती होदि ? ण, पढमसमए उप्पण्णाणं जीवाणमणुग्गहणफलस्स पच्छा उप्पण्ण-जीवेसु वि उवलंभादो। तम्हा एगणिगोदसरीरे उप्पज्जमाणसव्वजीवाणं पढमसमए चेव उप्पत्ती एदेण णाएण जुज्जदे। एवं दोहि पयारेहि समगं वक्कंताणं जीवाणं तेसिं सरीरणिप्पत्ती समगं अक्कमेण चेव होदि। समगं च अणुग्गहणं, समणुग्गहणादो। जेण कारणेण सव्वेसिं जीवाणं परमाणुपोग्गलग्गहणं समगं अक्कमेण होदि तेण आहार-सरीरिंदियणिप्पत्ती उस्सासणिस्सासणिप्पत्ती च समगं अक्कमेण होदि, अण्णहा अणुग्गहणस्स साहारणत्तविरोहादो। एगसरीरे उप्पण्णाणंतजीवाणं चत्तारिपज्जत्तीयो अप्पप्पणो द्वाणे समगं समप्पंति। अणुग्गहणस्स साहारणभावादो त्ति भणिदं होदि।

जत्थेउ मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थणंताणं ॥१२५॥

समाधान---नहीं, क्योंकि एक शरीरके सम्बन्धसे उन जीवोंके भी एकसाथपना होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

अथवा 'समए वक्कंताणं' ऐसा सूत्र कहना चाहिये। एक समयमें एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब जीव 'समए वक्कंता' कहे जाते हैं।

शंका---एक शरीरमें बादमें उत्पन्न हुए जीव हैं ऐसी अवस्थामें उनकी प्रथम समयमें ही उत्पत्ति कैसे हो सकती है ?

समाधान---नहीं, क्योंकि प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंके अनुग्रहणका फल बादमें उत्पन्न हुए जीवोंमें भी उपलब्ध होता है, इसलिए एक निगोदशरीरमें उत्पन्न होनेवाले सब जीवोंकी प्रथम समयमें ही उत्पत्ति इस न्यायके अनुसार बन जाती है।

इस प्रकार दोनों प्रकारोंसे एकसाथ उत्पन्न हुए जीवोंके उनकी शरीरकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रम से ही होती है। तथा एकसाथ अनुग्रहण होता है, क्योंकि उनका अनुग्रहण समान है। जिस कारणसे सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण समगं अर्थात् अक्रमसे होता है, इसलिए आहार, शरीर और इन्द्रियोंकी निष्पत्ति और उच्छ्वास-निःश्वासकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रमसे होती है। अन्यथा अनुग्रहणके साधारण होनेमें विरोध आता है। एक शरीरमें उत्पन्न हुए अनन्त जीवोंकी चार पर्याप्तियां अपने अपने स्थानमें एकसाथ समाप्त होती हैं, क्योंकि अनुग्रहण साधारणरूप है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहां अनन्त जीवोंका मरण होता है। और जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहां अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है ॥१२५॥

जत्थ सरीरे एगो जीवो मरदि तत्थ अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं मरणं होदि। अवहारणं कुदो लब्भदे? दु सद्दस्स अवहारणट्ठस्स संबंधादो। संखेज्जा असंखेज्जा वा एक्को वा ण मरंति, णिच्छएण एगसरीरे णिगोदरासिणो अणंता चेव मरंति त्ति भणिदं होदि। जत्थ णिगोदसरीरे एगो जीवो वक्कमदि उप्पज्जदि तत्थ सरीरे अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं वक्कमणं उप्पत्ती होदि। एगो वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा एक्कम्हि णिगोदसरीरे एक्कम्हि समए ण उप्पज्जंति किंतु अणंता चेव उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि। ते च एगबंधणबद्धा चेव होदूण उप्पज्जंति, अण्णहा पत्तेयसरीरवग्गणाए बादरसुहुमणिगोदवग्गणाए वा आणंतियप्पसंगादो। ण च एवं, तहाणुवलंभादो। बादरसुहुमणिगोदाणमवट्ठाणकमपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

बादरसुहुमणिगोदा बद्धा पुट्ठा य एयमेएण।
ते हु अणंता जीवा मूलयथूहल्लयादीहि ॥१२६॥

एयसरीरट्ठिदणिगोदा तत्थट्ठिदअण्णेहि बादरणिगोदेहि एगसरीरट्ठिदसुहुमणिगोदा अण्णेहि तत्थ ट्ठिदसुहुमणिगोदेहि बद्धा समवेदा संता अच्छंति। सो च

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहां नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका मरण होता है।

शंका—इस स्थलपर अवधारण कहांसे प्राप्त होता है?

समाधान—गाथा सूत्रमें आये हुए 'दु' शब्दका अवधारण रूप अर्थके साथ सम्बन्ध है।

संख्यात, असंख्यात या एक जीव नहीं मरते हैं, किन्तु निश्चयसे एक शरीरमें निगोद राशिके अनन्त जीव ही मरते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। तथा जिस निगोद शरीरमें एक जीव वक्कमदि अर्थात् उत्पन्न होता है उस शरीरमें नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका 'वक्कमणं' अर्थात् उत्पत्ति होती है। एक, संख्यात और असंख्यात जीव एक निगोदशरीरमें एक समयमें नहीं उत्पन्न होते हैं किन्तु अनन्त जीव ही उत्पन्न होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। वे एक बन्धनबद्ध होकर ही उत्पन्न होते हैं, अन्यथा प्रत्येक शरीरवर्गणा और बादर व सूक्ष्मनिगोदवर्गणा अनन्त प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि वैसी वे पाई नहीं जातीं। अब बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदके अवस्थानके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

बादरनिगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव ये परस्परमें बद्ध और स्पृष्ट होकर रहते हैं। तथा वे अनन्त जीव हैं जो मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके निमित्तसे होते हैं ॥१२६॥

एक शरीरमें स्थित निगोद जीव वहां स्थित अन्य बादर निगोद जीवोंके साथ तथा एक शरीरमें स्थित सूक्ष्म निगोद जीव वहां स्थित अन्य सूक्ष्म निगोद जीवोंके साथ बद्ध अर्थात्

१. अ० प्रतौ 'हुदाद्दस्स' का० प्रतौ 'हुदाहस्स इति पाठः।

समवाओ देससव्वसमवायभेएण दुविहो। तत्थ देससमवायपडिसेहट्ठं भणदि—'पुट्ठा य एयमेएण' एक्कमेक्केण सव्वावयवेहि पुट्ठा संता चेव ते अच्छंति। णो अबद्धा णो अपुट्ठा च अच्छंति। अवहारणं कुदो लब्भदे? अवहारणट्ठहुसद्दसंबंधादो[1]। ते केत्तिए त्ति भणिदे संखेज्जा असंखेज्जा वा ण होंति किं तु ते जीवा अणंता चेव होंति। ते केणं[2] कारणेण होंति त्ति भणिदे 'मूलयथूहल्लयादीहि' मूलयथूहल्लयादि कारणेहिं[3] होंति। एत्थ आदिसद्देण अण्णे वि वणप्फदिभेदा घेत्तव्वा। एदेण बादर-णिगोदाणं जोणी परूविदा ण सुहुमणिगोदाणं जलथलआगासेसु सव्वत्थ तेसिं जोणि-दंसणादो। भावत्थो—मूलयथूहल्लयादीणं सरीराणिं[4] बादरणिगोदाणं जोणी होंति। तेण तेसिं मूलयथूहल्लयादीणं पत्तेयसरीरजीवाणं बादरणिगोदपदिट्ठिदा त्ति सण्णा। वुत्तं च—

> बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा।
> जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥ १७ ॥

तेण तत्थ मूलयथूहल्लयादीणं मणुसादिसरीरेसु असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोद-सरीराणि होंति। तत्थ एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता बादरसुहुमणिगोदजीवा

समवेत होकर रहते हैं। वह समवाय देशसमवाय और सर्वसमवायके भेदसे दो प्रकारका है। उनमेंसे देशसमवायका प्रतिषेध करनेके लिए कहते हैं—'पुट्ठा य एयमेएण' परस्पर सब अवयवों से स्पृष्ट होकर ही वे रहते हैं। अबद्ध और अस्पृष्ट होकर वे नहीं रहते।

शंका—अवधारण कैसे प्राप्त होता है?

समाधान—अवधारणवाची हु शब्दके सम्बन्धसे प्राप्त होता है।

वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं—वे संख्यात और असंख्यात नहीं होते हैं किन्तु वे जीव अनन्त ही होते हैं। वे किस कारणसे होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि 'मूलयथूहल्ल-यादीहि' अर्थात् मूली, थूवर और आर्द्रक आदि कारणसे होते हैं। यहाँपर आये हुए 'आदि' शब्दसे वनस्पतिके अन्य भेद भी ग्रहण करने चाहिए। इसके द्वारा बादर निगोदोंकी योनि कही गई है, सूक्ष्म निगोदोंकी नहीं, क्योंकि जल, थल और आकाशमें सर्वत्र उनकी योनि देखी जाती है। भावार्थ यह है—मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके शरीर बादर निगोदोंकी योनि होते हैं, इसलिए मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके प्रत्येकशरीर जीवोंकी बादरनिगोदप्रतिष्ठित संज्ञा है। कहा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है या अन्य जीव उत्पन्न होता है। और जो मूली आदि हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक हैं ॥ १७ ॥

इसलिए वहां मूली, थूवर और आर्द्रक आदिक तथा मनुष्यों आदिके शरीरोंमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। वहां एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त बादर-

१. अ०का० प्रत्योः 'अवहारणट्ठसद्दसंबधादो' इति पाठः। २. ता० प्रतौ होंति। केण' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ 'भणिदे मूलयथूहल्लयादीहि कारणेहि' इति पाठः। ४. ता० प्रतौ '–दीणं (णि) सरीराणि' इति पाठः।

पढमसमए उप्पज्जंति। तत्थ चेव विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा उप्पज्जंति। एव-मसंखेज्जगुणहीणाए सेडीए ताव णिरंतरमुप्पज्जंति जाव आवलियाए असंखे०भागमेत्त-कालो त्ति। पुणो एक्कदोतिण्णिसमए आदिं कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखे०-भागमेत्तमंतरिदूण पुणो एगवेतिण्णिसमए आदिं कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखे०भागमेत्तकालं णिरंतरं उप्पज्जंति। एवं सांतरणिरंतरकमेण ताव उप्पज्जंति जाव उप्पत्तीए संभवो अत्थि। एवमेदेण कमेणुप्पण्णबादरसुहुमणिगोदजीवा एक्कम्हि सरीरे बद्धा पुट्ठा च होदूण अच्छंति त्ति भणिदं होदि। जीवरासी आयवज्जिदो सव्वओ, तत्तो णिव्वुइमुवगच्छंतजीवाणमुवलंभादो। तदो संसारिजीवाणमभावो होदि त्ति भणिदे ण होदि। अलद्धतसभावणिगोदजीवाणमणंताणं संभवो होदि त्ति जाणावणट्ठ-मुत्तरसुत्तं भणदि—

अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो।
भावकलंकअपउरा[1] णिगोदवासं ण मुंचंति॥१२७॥

जेहि अदीदकाले कदाचि वि तसपरिणामो ण पत्तो ते तारिसा अणंता जीवा णियमा अत्थि, अण्णहा संसारे भव्वजीवाणमभावावत्तीदो। ण चाभावो, तदभावे

निगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते हैं। वहीं पर द्वितीय समयमें असंख्यातगुणे हीन उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल व्यतीत होने तक असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निरन्तर जीव उत्पन्न होते हैं। पुनः एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर देकर पुनः एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार सान्तर-निरन्तरक्रमसे तब तक जीव उत्पन्न होते हैं जब तक उत्पत्ति सम्भव है। इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए बादरनिगोद जीव और सूक्ष्म-निगोद जीव एक शरीरमें बद्ध और स्पृष्ट होकर रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। जीवराशि आयसे रहित है और व्ययसहित है, क्योंकि उसमेंसे मोक्षको जानेवाले जीव उपलब्ध होते हैं। इसलिए संसारी जीवोंका अभाव प्राप्त होता है ऐसा कहने पर उत्तर देते हैं कि नहीं होता है, क्योंकि त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त निगोद जीव सम्भव हैं, अतः इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जिन्होंने अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त किया है ऐसे अनन्त जीव हैं, क्योंकि वे भावकलंकप्रचुर होते हैं, इसलिए निगोदवासको नहीं त्यागते॥१२७॥

जिन्होंने अतीत कालमें कदाचित् भी त्रसपरिणाम नहीं प्राप्त किया है वे वैसे अनन्त जीव नियमसे हैं, अन्यथा संसारमें भव्य जीवोंका अभाव प्राप्त होता है। और उनका अभाव है

१. ता०प्रतौ 'भावकलंकअ (ल) पउरा णिगोदजीवा (वासं) ण' इति पाठः।

अभव्वजीवाणं पि अभावावत्तीदो। ण च तं पि, संसारीणमभावापत्तीदो। ण चेदं पि, तदभावे असंसारीणं पि अभावप्पसंगादो। संसारीणमभावे संते कथं असंसारीणमभावो? वुच्चदे, तं जहा—संसारीणमभावे संते असंसारिणो वि णत्थि, सव्वस्स सप्पडिवक्खस्स उवलंभण्णहाणुववत्तीदो। तदो सिद्धं अदीदकाले अपत्ततसभावा अणंता जीवा अत्थि त्ति। एत्थ उवउज्जंती गाहा—

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।
भंगुप्पायधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवइ एक्का॥ १८॥

किमट्ठं ते तसपरिणामं[2] ण लहंति? 'भावकलंकअपउरा' भावकलंकः संक्लेशः, तं लाति आदत्त इति भावकलंकलः[3]। एकेन्द्रियजातावुत्पत्तेर्हेतुरिति यावत्। तस्य प्राचुर्यात् एत्थतणजीवा णिगोदवासं ण मुंचंति ण छंडंति त्ति भणिदं होदि।

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा।
सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण॥१२८॥

नहीं, क्योंकि उनका अभाव होने पर अभव्य जीवोंका भी अभाव प्राप्त होता है। और वह भी नहीं है, क्योंकि उनका अभाव होने पर संसारी जीवोंका भी अभाव प्राप्त होता है। और यह भी नहीं है, क्योंकि संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीवोंके भी अभावका प्रसंग आता है।

शंका—संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीवोंका अभाव कैसे सम्भव है?

समाधान—अब इस शंकाका समाधान करते हैं। यथा—संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीव भी नहीं हो सकते, क्योंकि सब सप्रतिपक्ष पदार्थोंकी उपलब्धि अन्यथा नहीं बन सकती।

इसलिए सिद्ध होता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त जीव हैं। यहां पर उपयुक्त पड़नेवाली गाथा कहते हैं—

सत्ता सब पदार्थोंमें स्थित है, सविश्वरूप है, अनन्त पर्यायवाली है, व्यय, उत्पाद और ध्रुवत्वसे युक्त है, सप्रतिपक्षरूप है और एक है॥१८॥

वे त्रसपरिणामको क्यों नहीं प्राप्त करते हैं, इसके समाधानमें सूत्रगाथाके उत्तरार्धमें कहते हैं—'भावकलंकअपउरा' भावकलङ्क अर्थात् संक्लेश। उसे 'लाति' अर्थात् ग्रहण करता है वह भावकलंकल कहलाता है। एकेन्द्रियजातिमें उत्पत्तिका हेतु यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उसकी प्रचुरता होनेसे यहांके जीव निगोदवासको नहीं त्यागते हैं अर्थात् नहीं छोड़ते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

एक निगोदशरीरमें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा देखे गये जीव सब अतीत कालके द्वारा सिद्ध हुए जीवोंसे भी अनन्तगुणे हैं॥१२८॥

१. म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'वि अ (ण) त्थि' अ०का०प्रत्योः 'वि अत्थि' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'तसपरिणामाणं' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'भावकलंकः (कलः) अ०का०प्रत्योः भावकलंकः' इति पाठः।

संसारिजीवाणमवोच्छेदे एगं हेउं[1] परूविय विदियहेउपरूवणट्ठमेदं गाहासुत्तमागदं। एक्कम्हि णिगोदसरीरे दव्वप्पमाणदो अणंता जीवा अत्थि त्ति णिद्दिट्ठा। जुत्तीए होंता वि[2] केत्तिया त्ति भणिदे अदीदकाले जे सिद्धा तेहिंतो अणंतगुणा एक्कम्हि णिगोदसरीरे होंति। का सा जुत्ती, जाए एगणिगोदसरीरे अणंता जीवा उवलद्धा? सव्वजीवरासीए आणंतियं। जासिं संखाणं आयविरहियाणं वये संते वोच्छेदो[3] होदि ताओ संखाओ संखेज्जासंखेज्जसण्णिदाओ। जासिं संखाणं आयविरहियाणं संखेज्जासंखेज्जेहि वइज्जमाणाणं पि वोच्छेदो ण होदि तासिमणंतमिदि सण्णा। सव्वजीवरासी वाणंतो तेण सो ण वोच्छिज्जदि, अण्णहा आणंतियविरोहादो। ण च अद्धपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, तस्स केवलणाणस्स अणंतसण्णिदस्स विसयभावेण अणंतत्तसिद्धीदो। ण च मेए माणसण्णा असिद्धा, पत्थेण मिदजवेसु वि पत्थसण्णुवलंभादो। सव्वेण अदीदकालेण जे सिद्धा तेहिंतो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं कुदो णव्वदे? जुत्तीदो चेव। तं जहा—असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेसु जदि सव्वजीवरासी लब्भदि तो एगणिगोदसरीरम्हि[4] किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगणिगोदसरीरजीवाणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखे०भागमेत्तं होदि। सिद्धा पुण

संसारी जीवोंकी व्युच्छित्ति कभी नहीं होती इस विषयमें एक हेतुका कथन करके दूसरे हेतुका कथन करनेके लिए यह गाथासूत्र आया है। एक निगोदशरीरमें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त जीव हैं यह पहले दिखला आये हैं। युक्तिसे होते हुए भी वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं—अतीत कालमें जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरमें अनन्तगुणे होते हैं।

शंका—वह कौनसी युक्ति है जिससे एक निगोदशरीरमें अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं?

समाधान—सब जीव राशिका अनन्त होना यही युक्ति है।

आयरहित जिन संख्याओंका व्यय होनेपर सत्त्वका विच्छेद होता है वे संख्याएं संख्यात और असंख्यात संज्ञावाली होती है। आयसे रहित जिन संख्याओंका संख्यात और असंख्यातरूपसे व्यय होने पर भी विच्छेद नहीं होता है उनकी अनन्त संज्ञा है और सब जीवराशि अनन्त है, इसलिए वह विच्छेदको नहीं प्राप्त होती। अन्यथा उसके अनन्त होनेमें विरोध आता है। अर्धपुद्गलपरिवर्तनके साथ व्यभिचार आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि अनन्त संज्ञावाले केवलज्ञानका विषय होनेसे उसकी अनन्तरूपसे सिद्धि है। मेयमें मानकी संज्ञा असिद्ध है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि प्रस्थसे मापे गये यवोंमें प्रस्थ संज्ञाकी उपलब्धि होती है।

शंका—सब अतीत कालके द्वारा जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरके जीव अनन्तगुणे हैं यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—युक्तिसे ही जाना जाता है। यथा—असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीरोंमें यदि सब जीवराशि उपलब्ध होती है तो एक निगोद शरीरमें कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर एक निगोदशरीरके जीवोंका प्रमाण

१. अ०का०प्रत्योः 'एगहेउं' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'होतो वि' इति पाठः। ३. ता० प्रतौ 'संत वोच्छेदो' इति पाठः। ४. ता०प्रतौ 'एकणिगोदजीवसरीरम्हि' इति पाठः।

अदीदकाले समयं पडि जदि वि असंखेज्जलोगमेत्ता सिज्झंति तो वि अदीदकालादो असंखेज्जगुणा चेव। ण च एवं, अदीदकालादो सिद्धाणमसंखे०भागत्तुवलंभादो। अदीदकालादो च सव्वजीवरासी अणंतगुणो कुदो[1] णव्वदे? सोलसवदियअप्पाबहुगादो। तेण सिद्धं सिद्धेहिंतो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं। तदो सव्वेण अदीदकालेण एगणिगोदसरीरजीवा वि ण सिज्झंति त्ति घेतव्वं। तत्थ णिगोदेसु जे ट्ठिदा जीवा ते दुविहा—चउग्गइणिगोदा णिच्चणिगोदा चेदि। तत्थ चउग्गइणिगोदा णाम जे देव-णेरइय-तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जियूण पुणो णिगोदेसु पविसिय अच्छंति ते चदुगइणिगोदा भण्णंति। तत्थ णिच्चणिगोदा णाम जे सव्वकालं णिगोदेसु चेव अच्छंति ते णिच्चणिगोदा णाम। अदीदकाले तसत्तं पत्तजीवा सुट्ठु जदि बहुआ होंति तो अदीदकालादो असंखेज्जगुणं चेव। तं जहा—अंतोमुहुत्तकालेण जदि पदरस्स असंखे०भागमेत्तजीवा तसेसु उप्पज्जमाणा लब्भंति तो अदीदकालम्हि केवडिए लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए अदीदकालादो असंखेज्जगुणो तसरासी[2] होदि। तेण जाणिज्जदि अदीदकाले तसभावमपत्तजीवाणमत्थित्तं सिज्झंतेसु जीवेसु संसारिजीवाणं वोच्छेदो च णत्थि त्ति।

सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। परन्तु सिद्ध जीव अतीत कालके प्रत्येक समय में यदि असंख्यात लोकप्रमाण सिद्ध होवें तो भी अतीत कालसे असंख्यातगुणे ही होंगे। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि सिद्ध जीव अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्ध होते हैं।

शंका—सब जीवराशि अतीत कालसे अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—सोलहपदिक अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

इसलिए सिद्ध हुआ कि सिद्धोंसे एक निगोद शरीरके जीव अनन्तगुणे हैं। अतएव सभी अतीत कालके द्वारा एक निगोदशरीरके जीव भी सिद्ध नहीं होते हैं यह ग्रहण करना चाहिए। उन निगोदोंमें जो जीव स्थित हैं वे दो प्रकारके हैं—चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद। उनमेंसे पहले चतुर्गतिनिगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं—जो देव, नारकी, तिर्यञ्च और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदोंमें प्रवेश करके रहते हैं वे चतुर्गतिनिगोद जीव कहे जाते हैं। अब नित्यनिगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं—जो सदा निगोदोंमें ही रहते हैं वे नित्यनिगोद जीव हैं। अतीत कालमें त्रसपनेको प्राप्त हुए जीव यदि बहुत अधिक होते हैं तो अतीत कालसे असंख्यातगुणे ही होते हैं। यथा—अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा यदि प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं तो अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर अतीत कालसे असंख्यातगुणी त्रसराशि होती है। इससे जाना जाता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए जीवोंका अस्तित्व है और जीवोंके सिद्ध होने पर भी संसारी जीवोंका विच्छेद नहीं होता।

१. अ०का०प्रत्योः 'अणंतगुणा कुदो' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'गुणा तसरासी' इति पाठः।

एदेण अट्ठपदेण तत्थ इमाणि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति—संतपरूवणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥१२९॥

सरीरिसरीरपरूवणदाए एदाणि अट्ठ अणिओगद्दाराणि होंति । अणियोगद्दारेहि विणा सरीरिसरीरपरूवणा किण्ण कीरदे ? ण, तेहि विणा सुहेण अत्थावगमाणुववत्तीदो ।

संतपरूवणदाए दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण ॥१३०॥

एवं दुविहो चेव णिद्देसो होदि, दव्वट्ठियपज्जवट्ठियभेदेण दुविहाणं चेव सोदाराणमुवलंभादो । तत्थ दव्वट्ठियजणाणुग्गहट्ठमोघेण पज्जवट्ठियजणाणुग्गहट्ठमादेसेण परूवणा कीरदे । तत्थ संखित्तवयणकलावो ओघो णाम । असंखित्तवयणकलावो आदेसो ।

ओघेण अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा असरीरा ॥१३१॥

विग्गहगदीए वट्टमाणा जीवा चदुगदिया विसरीरा णाम, तेसिं तत्थ तेजा-कम्मइय-

इस अर्थपदके अनुसार यहां ये अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—सत्प्ररूपणा, द्रव्यप्रमाणानुगम, क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम, कालानुगम, अन्तरानुगम, भावानुगम और अल्पबहुत्वानुगम ॥१२९॥

शरीरिशरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा ये आठ अनुयोगद्वार होते हैं ।

शंका—अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरिशरीरप्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उनके बिना सुखपूर्वक अर्थका ज्ञान नहीं हो सकता है ।

सत्प्ररूपणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश ॥१३०॥

इस प्रकार दो प्रकारका ही निर्देश है, क्योंकि द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकके भेदसे श्रोता दो ही प्रकारके उपलब्ध होते हैं । उनमेंसे द्रव्यार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए ओघसे और पर्यायार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए आदेशसे प्ररूपणा करते हैं । उन दोनोंमेंसे संक्षिप्त वचन कलापका नाम ओघ है और असंक्षिप्त वचन कलापका नाम आदेश है ।

ओघसे दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीररहित जीव हैं ॥१३१॥

विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले हैं, क्योंकि उनके वहां तैजसशरीर

सरीराणं दोण्हं चेव उवलंभादो । तिण्णि सरीराणि जेसिं जीवाणं ते तिसरीरा णाम । के ते ? ओरालिय--तेजा--कम्मइयसरीरेहि वेउव्विय--तेजा--कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा । चत्तारि सरीराणि जेसिं ते चदुसरीरा । के ते ? ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि ओरालिय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा। जेसिं सरीरं णत्थि ते असरीरा । के ते ? परिणिव्वुआ ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३२॥

विग्गहगदीए णेरइया विसरीरा चेव होंति, तत्थ वेउव्वियसरीरस्स उदयाभावेण तेजा-कम्मइयसरीराणं दोण्हं चेव उदयदंसणादो । पुणो तिसरीरा होंति, तत्थ वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं तिण्हं पि उदयदंसणादो ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥१३३॥

सत्तसु पुढवीसु जे णेरइया तेसिं णिरओघभंगो । विसरीर-तिसरीरत्तणेण भेदाभावादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु ओघं ॥१३४॥

और कार्मणशरीर ये दो ही शरीर उपलब्ध होते हैं । जिन जीवोंके तीन शरीर होते हैं वे तीन शरीरवाले जीव कहलाते हैं । वे कौन हैं ? औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ अथवा वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर, और कार्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव तीन शरीरवाले हैं । चार शरीर जिनके होते हैं वे चार शरीरवाले जीव हैं । वे कौन हैं ? औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ अथवा औदारिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव चार शरीरवाले होते हैं। जिनके शरीर नहीं हैं वे अशरीरी जीव हैं । वे कौन हैं ? परिनिर्वृत्तिको प्राप्त हुए जीव अशरीरी होते हैं ।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीर-वाले और तीन शरीरवाले जीव हैं ॥१३२॥

विग्रहगतिमें नारकी दो शरीरवाले ही होते हैं, क्यों कि वहां पर वैक्रियिकशरीरका उदय नहीं होनेसे तैजसशरीर और कार्मणशरीर इन दो शरीरोंका ही उदय देखा जाता है । अनन्तर तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि वहां वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर इन तीनों शरीरोंका ही उदय देखा जाता है ।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकियोंके जानना चाहिए ॥१३३॥

सातों पृथिवियोंमें जो नारकी हैं उनमें सामान्य नारकियोंके समान भङ्ग है, क्योंकि दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चपर्याप्त और

मूलोघे असरीरा अत्थि, एत्थ ते णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे ? असरीराण-मभावस्स उवदेसेण विणा अवगम्ममाणत्तादो । अट्ठकम्मकवचादो णिग्गया असरीरा णाम । असेसकम्मुदयाविणाभावितिरिक्खगइणामकम्मोदइल्ला तिरिक्खा णाम । तेणुवदेसाभावे तिरिक्खेसु असरीराभावो सिद्धो त्ति ओघणिद्देसो कदो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३५॥

विग्गहगदीए विसरीरा चेव, तत्थ ओरालियसरीरस्स उदयाभावादो, तेजा-कम्मइयसरीराणं संसारे सव्वत्थ उदयवोच्छेदाभावादो । सरीरगहिदपढमसमयप्पहुडि तिसरीरा चेव, तत्थ ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं उदयदंसणादो । चदुसरीरा पुण णत्थि, सेसतिरिक्खाणं व विउव्वणसत्तीए अभावादो मणुस्सेसु व तिरिक्खेसु आहार-सरीराभावादो च ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं ॥१३६॥

एत्थ असरीराणमभावो तिरिक्खेसु व परूवेदव्वो[1] । सेसं सुगमं ।

पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१३४॥

शंका—मूलोघमें अशरीरी जीव हैं ऐसा कहा है, परन्तु यहां पर वे नहीं हैं, इसलिए ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान—यहां पर अशरीरी जीवोंका अभाव उपदेशके बिना अवगम्यमान है । आठ कर्मरूपी कवचसे निकले हुए जीव अशरीरी होते हैं और समस्त कर्मोंके उदयके अविनाभावी तिर्यञ्चगति नामकर्मके उदयसे युक्त जीव तिर्यञ्च कहलाते हैं, इसलिए उपदेशके बिना भी तिर्य-ञ्चोंमें अशरीरी जीवोंका अभाव सिद्ध होता है, इसलिए वे ओघके समान हैं ऐसा निर्देश किया है ।

पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३५॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले ही होते हैं, क्योंकि वहां पर औदारिक शरीरका उदय नहीं होता तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी संसारमें सर्वत्र उदयव्युच्छित्ति नहीं है । ये शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर तीन शरीरवाले ही होते हैं, क्योंकि वहां पर औदारिकशरीर, तैजस-शरीर और कार्मणशरीरका उदय देखा जाता है । परन्तु चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि शेष तिर्यञ्चोंमें जैसी विक्रिया करनेकी शक्ति है वैसी इनमें नहीं है । तथा मनुष्योंमें जैसे आहारकशरीर होता है वैसे तिर्यञ्चोंमें नहीं होता ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१३६॥

यहां अशरीरी जीवोंका अभाव तिर्यञ्चोंके समान कहना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

१. ता० प्र तौ 'तिरिक्खेसु [व-] परूवेदव्वो' इति पाठः ।

मणुसअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३७॥

एदस्स अत्थो सुगमो, तिरिक्खअपज्जत्तएसु परूविदत्तादो ।

देवगदीए देवा अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३८॥

विग्गहदीए विसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा । चदुसरीरा णत्थि, देवेसु ओरालिय-आहारसरीराणमुदयाभावादो । मणुस्सेसु पंचसरीरा किण्ण परूविदा ? ण, पत्त-विउव्वणाणमिसीणंमाहारलद्धीए अभावादो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धियविमाण-वासियदेवा ॥१३९॥

कुदो ? विसरीरत्तणेण तिसरीरत्तणेण च भेदाभावादो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदिया तेसिं पज्जत्ता पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता ओघं ॥१४०॥

मनुष्यअपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३७॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके कथनके समय इसका कथन कर आये हैं ।

देवगतिकी अपेक्षा देव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३८॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं । चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि देवोंमें औदारिकशरीर और आहारकशरीरका उदय नहीं होता ।

शंका—मनुष्योंमें पाँच शरीरवाले जीव क्यों नहीं कहे ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वैक्रियिकऋद्धिको प्राप्त हुए ऋषियोंके आहारकलब्धिका अभाव है ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी तकके देवोंमें जानना चाहिये ॥१३९॥

क्योंकि वहाँ दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त जीवोंका भङ्ग तथा पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भङ्ग ओघके समान है ।१४०।

१. ता०प्रतौ 'पत्तविउव्वमिसीण-' इति पाठः । २. ता०प्रतौ पज्जत्ता [पज्जत्ता] 'पंचिंदिय-' अ०का०प्रत्योः 'पज्जत्तापज्जत्ता पंचिंदिय-' इति पाठः ।

एत्थ असरीराणमभावो पुव्वं व वत्तव्वो। ओघम्मि आहारसरीरुदओ अत्थि, एत्थ तं णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे ? ण, ओरालियसरीरुदएण सह उदयमागच्छमाणवेउव्वियसरीरोदयं पडुच्च एदेसिं चदुसरीरत्तणिद्देसो। तत्थ दोहि पयारेहि चदुसरीरत्तं संभवदि, एत्थ ण संभवदि, तदो ओघेण सह अत्थि भेदो त्ति भणिदे ण, जेण केण वि पयारेण संभवमाणचदुसरीरत्तावेक्खाए भेदाभावादो।

बादरएइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ता णेरइयभंगो ॥१४१॥

णेरइयाणं व विसरीरा तिसरीरा अत्थि त्ति भणिदं होदि। चदुसरीरा णत्थि, एदेसु विउव्वणसरीराभावादो आहारसरीराभावादो च।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा तेसिं बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइयअपज्जत्ता बादर-

यहां पर अशरीरी जीवोंका अभाव पहलेके समान कहना चाहिए।

शंका—ओघमें आहारशरीरका उदय है और यहां वह नहीं है, इसलिए यहां ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाले वैक्रियिकशरीरके उदयकी अपेक्षा इनके चार शरीरपनेका निर्देश किया है।

शंका—वहां दोनों प्रकारसे चार शरीरपना सम्भव है पर यहां सम्भव नहीं है, इसलिए ओघसे यहां भेद है ही ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिस किसी भी प्रकारसे सम्भव चार शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है, इसलिए यहां ओघपना बन जाता है।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंमें समान भङ्ग है ॥१४१॥

नारकियोंके समान दो शरीरवाले और तीनशरीरवाले होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि इनमें विक्रिया करनेवाले शरीरका अभाव है और आहारकशरीरका अभाव है।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद जीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर

वाउकाइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपजत्ता तसकाइयअपज्जत्ता अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१४२॥

विग्गहगदीए विसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा। कुदो ? एदेसु वेउव्विय-आहार-सरीराणमभावादो।

तेउकाइया वाउकाइया बादरतेउकाइया[1] बादरवाउकाइया तेसिं पज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता ओघं ॥१४३॥

एत्थ विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो। कथमेदेसु चदुसरीरसंभवो ? ण, एत्थ विउव्वमाणजीवाणमुवलंभादो।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी ओरालियकायजोगी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥१४४॥

विसरीरा णत्थि, विग्गहगईए मण-वचि-ओरालियकायजोगीणमभावादो। उत्तर-सरीरं विउव्विदाणं कथमोरालियकायजोगो ? ण, उत्तरसरीरस्स वि ओरालिय-

वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त और त्रसकायिक अपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीर-वाले होते हैं ॥१४२॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि इनमें वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका अभाव है।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक, उनके पर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१४३॥

इन जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं।

शंका—इनमें चार शरीर कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इनमें विक्रिया करनेवाले जीव पाये जाते हैं, इसलिए उस समय चार शरीर सम्भव हैं।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी और औदारिक-काययोगी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥१४४॥

इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिमें मनोयोगी, वचनयोगी और औदारिककाययोगी जीवोंका अभाव है।

शंका—उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवोंके औकारिककाययोग कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उत्तर शरीर भी औदारिककाय है। यदि कहा जाय कि

१. अ०प्रतौ 'तेउकाइया बादरतेउकाइया' इति पाठः।

कायत्तादो । ण च ओरालियसरीरणामकम्मोदयजणिदस्स विक्किरियसरूवस्स ओरालियसरीरत्तं फिट्टदि, विरोहादो ।

कायजोगी ओघं ॥१४५॥

कुदो ? तत्थ विग्गहगदीए विसरीराणं विउव्विदेसु उट्ठाविदआहारसरीरेसु[1] च चदुसरीराणमण्णत्थ तिसरीराणमुवलंभादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि--वेउव्वियमिस्स-कायजोगीसु अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१४६॥

एदेसु विसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो । चदुसरीरा वि णत्थि, आहारसरीरस्स उदयाभावादो, अपज्जत्तकाले विउव्वणसत्तीए अभावादो च । विउव्वमाणदेव-णेरइएसु वि ण चत्तारि सरीराणि, ओरालियसरीरस्सेव वेउव्वियसरीरस्स विउव्वणाविउव्वणभेदेण दुविहभावाणुवलंभादो । पारिसेसेण तिसरीरा चेव ।

औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे पैदा हुए विक्रियास्वरूप शरीरका औदारिकपना नहीं रहता सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ—मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण अथवा औदारिक, अहारक, तैजस और कार्मण इस तरह दो प्रकार से चार शरीर संभव हैं किन्तु औदारिककायकोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर ही संभव हैं, क्योंकि आहारकशरीरके समय औदारिककाययोग नहीं होता, किन्तु मनोयोग व वचनयोग संभव है ।

काययोगी जीवोंका भंग ओघके समान है ॥१४५॥

क्योंकि वहां विग्रहगतिमें दो शरीर, विक्रिया करने पर और आहारकशरीरके उत्पन्न करने पर चार शरीर तथा अन्यत्र तीन शरीर उपलब्ध होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीव होते हैं ॥१४६॥

इनमें दो शरीर नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिका अभाव है। चार शरीर भी नहीं होते, क्योंकि आहारकशरीरका उदय नहीं है, तथा अपर्याप्त कालमें विक्रिया करनेकी शक्तिका अभाव है। विक्रिया करनेवाले देव और नारकियोंमें भी चार शरीर नहीं होते, क्योंकि जिस प्रकार औदारिक-शरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधपना उपलब्ध होता है उस प्रकार वैक्रियिक शरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधपना उपलब्ध नहीं होता। पारिशेषन्याय से ये तीन शरीरवाले ही होते हैं ।

१. ता०प्रतौ 'उट्ठाविद [जा] आहारसरीरेसु' अ०प्रतौ 'उट्ठाविदजा आहारसरीरेसु' इति पाठः ।

आहारकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी अत्थि जीवा चदुसरीरा ॥१४७॥

तत्थ विसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो। ण तिसरीरा वि, ओरालिय-आहार-तेजा-कम्मइयाणं चदुण्हं सरीराणं तत्थुवलंभादो। ण च ओरालियसरीरस्स उदओ णत्थि त्ति तत्थाभावो वोत्तुं सक्किज्जदे, तत्थ तदुदयसत्तीए संभवादो।

कम्मइयकायजोगी णेरइयाणं भंगो ॥१४८॥

होदि णाम एदेसिं विसरीरत्तं, विग्गहगदीए तेजा-कम्मइयसरीराणमुदयदंसणादो, कथं पुण तिसरीरत्तं? ण, पदर-लोगपूरणं गदकेवलिम्हि तेजा-कम्मइयएहि सह ओरालियसरीरस्स उवलंभादो।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा ओघं ॥१४९॥

तत्थ विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो। इत्थि-णवुंसयवेदेसु आहार-

आहारक काययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले होते हैं ॥१४७॥

इन में दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि यहाँ विग्रहगतिका अभाव है। तीन शरीरवाले भी नहीं होते, क्योंकि औदारिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर ये चार शरीर इनमें पाये जाते हैं। यदि कहा जाय कि औदारिकशरीरका उदय नहीं होता, इसलिए वहाँ इसका अभाव कहना शक्य है सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि वहाँ उसके उदय होने की शक्ति सम्भव है।

विशेषार्थ—जिस समय प्रमत्तसंयत जीव आहारक शरीरका प्रारम्भ करता है उस समय से लेकर आहारक शरीरकी क्रिया समाप्त होने तक उसके औदारिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहाँ औदारिकशरीर का अभाव नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि एक तो उसके औदारिकशरीरके पुनः उदय होने की शक्ति विद्यमान है। दूसरे उसके औदारिकशरीरके उदय का फल औदारिकशरीर पूर्ववत् विद्यमान रहता है, इसलिए आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीव के चार शरीर कहे हैं।

कार्मणकाययोगी जीवोंमें नारकियोंके समान भङ्ग है ॥१४८॥

शंका—इनके दो शरीर होवें, क्योंकि विग्रहगति में तैजसशरीर और कार्मणशरीरका उदय देखा जाता है। तीन शरीर कैसे हो सकते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त हुए केवली जिनके तैजस-शरीर और कार्मणशरीर के साथ औदारिकशरीर भी उपलब्ध होता है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१४९॥

क्योंकि इन जीवोमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं।

सरीरुदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? ण, तत्थ वि विउव्विदुत्तरसरीरेसु चदुसरीरत्तुवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ॥१५०॥

सुगममेदं, विसरीर-तिसरीराणं दोपयारेहि चदुसरीराणं च उवलंभादो ।

अवगदवेदा अकसाई अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१५१॥

काणि तिण्णि सरीराणि ? ओरालिय-तेजा--कम्मइयसरीराणि । विसरीरा णत्थि, तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । चदुसरीरा वि णत्थि, विउव्वणाहारसरीरुट्ठावणवावाराणं तत्थाभावादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी ओघं ॥१५२॥

कथमेत्थ असरीरत्तं, ण आहारत्तं, ण चदुसरीरत्तं ? ण, विउव्वणमस्सिदूण तदुवलंभादो ।

शंका– स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार शरीर नहीं होते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उनमें भी उत्तर शरीरकी विक्रिया करने पर चार शरीर उपलब्ध होते हैं ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१५०॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और दो प्रकारसे चार शरीरवाले जीव यहाँ उपलब्ध होते हैं ।

अपगतवेदी और अकषायवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१५१॥

शंका—तीन शरीर कौन हैं ?

समाधान—औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर हैं ।

दो शरीरवाले जीव नहीं होते क्योंकि इनमें अपर्याप्त कालका अभाव है । चार शरीरवाले भी नहीं होते, क्योंकि विक्रियारूप और आहारकशरीरके उपस्थापनरूप व्यापारका वहाँ अभाव है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१५२॥

शंका—यहां अशरीरपना कैसे सम्भव है, आहारकशरीरपना भी नहीं है और चार शरीरपना भी नहीं हैं, इसलिए ओघके समान भङ्ग कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विक्रियाका आश्रय लेकर चार शरीरपनेकी उपलब्धि हो जाती है ।

विभंगणाणी मणपज्जवणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥१५३॥

मणपज्जवणाणीसु आहारसरीरस्स उदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? ण, विउव्वणमस्सिदूण दोसु णाणेसु चदुसरीरत्तुवलंभादो । णत्थि विसरीरा, अपज्जत्तकाले एदेसिं णाणाणमभावादो ।

आभिणि-सुद-ओहिणाणी ओघं ॥१५४॥

विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरभावेण तत्तो भेदाभावादो ।

केवलणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१५५॥

सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा संजदासंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥१५६॥

विसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अणुव्वय-महव्वयाणमभावादो ।

परिहारविसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१५७॥

विभङ्गज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥१५३॥

शंका—मनःपर्ययज्ञानवाले जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार शरीरपना नहीं बनता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विक्रियाका आश्रय लेकर उक्त दो ज्ञानोंमें चार शरीरपनेकी उपलब्धि होती है ।

मात्र इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं हैं, क्योंकि अपर्याप्त कालमें इन ज्ञानोंका अभाव है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१५४॥

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

केवलज्ञानी जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१५५॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापनाशुद्धि-संयत और संयतासंयत जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥१५६॥

दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिमें अणुव्रतों और महाव्रतों का अभाव है ।

परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत, और यथाख्यातविहारशुद्धि-संयत जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१५७॥

परिहारसुद्धिसंजदेसु कुदो णत्थि चदुसरीरा ? परिहारसुद्धिसंजदस्स विउव्वण-रिद्धी [ए] आहाररिद्धीए च सह विरोहादो। सेसं सुगमं।

असंजदा ओघं ॥१५८॥

सुगमं।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी ओघं ॥१५९॥

सुगमं।

केवलदंसणी अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१६०॥

सुगमं।

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिया तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्सिया ओघं ॥१६१॥

सुगमं।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं ॥१६२॥

सुगमं।

शंका—परिहारशुद्धिसंयत जीवोंमें चार शरीरवाले क्यों नहीं होते ?

समाधान—परिहारशुद्धिसंयत जीवके विक्रियाऋद्धि और आहारकऋद्धिके साथ इस संयमके होनेका विरोध है।

शेष कथन सुगम है।

असंयत जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१५८॥

यह सूत्र सुगम है।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१५९॥

यह सूत्र सुगम है।

केवलदर्शनवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१६०॥

यह सूत्र सुगम है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१६१॥

यह सूत्र सुगम है।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य अभव्य जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१६२॥

यह सूत्र सुगम है।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी ओघं ॥१६३॥

विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरत्तणेण भेदाभावादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो ॥१६४॥

अपज्जत्तकाल सम्मामिच्छत्ताभावादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी ओघं ॥१६५॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा मणजोगिभंगो ॥१६६॥

सुगमं ।

अणाहारा कम्मइयभंगो ॥१६७॥

एदं पि सुगमं ।

एवं संतपरूवणा समत्ता ।

एदमणियोगद्दारं सेसछण्णमणियोगद्दाराणं जेण आसेयं तेण[1] तेसिमेत्थ परूवणा

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१६३॥

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान भङ्ग है ॥१६४॥

क्योंकि अपर्याप्त कालमें सम्यग्मिथ्यात्वका अभाव है ।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१६५॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान भंग है ॥१६६॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥१६७॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार सत्प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यतः यह अनुयोगद्वार शेष छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय है, इसलिए उनकी यहाँ पर

१. म० प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'असेयं (आसियं) तेण' अ०प्रतौ 'आसियं तेण' इति पाठः ।

कायव्वा । तं जहा—दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे० भागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, तासिं सेडीणं विक्खंभसूची पलिदो० असंखे० भागमेत्तघणंगुलाणि ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयेसु विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? पदरस्स असंखे० भागो । एवं सत्तसु पुढवीसु । णवरि विदियादि जाव सत्तमि त्ति सेडीए असंखे० भागो वत्तव्वो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं । पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे० भागो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियाणं तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्त-पुढवि०-आउ०-बादर-पुढवि०-सुहुमपुढवि०-बादर-सुहुमआउ०-पुढवि०-आउ०-बादर-सुहुम-पज्जत्तअपज्जत्ताणं

प्ररूपणा करनी चाहिए । यथा—द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं अर्थात् प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण या असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण हैं । उन जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची पल्यके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुलप्रमाण है ।

विशेषार्थ—कार्मणकाययोगी जीवोंका प्रमाण अनन्त होनेसे यहाँ दो शरीरवाले जीव अनन्त कहे हैं । तीन शरीरवाले जीव अनन्त हैं यह तो स्पष्ट ही है । रह गये चार शरीरवाले जीव सो पर्याप्त अग्निकायिक और वायुकायिक तथा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ही चार शरीरवाले जीव सम्भव हैं, अतः इनका प्रमाण असंख्यात कहा है । यहां असंख्यातसे क्या लेना चाहिए इस बातका खुलासा क्षेत्रकी अपेक्षा किया है ।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दूसरीसे लेकर सातवीं तककी पृथिवियोंमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहने चाहिए ।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भङ्ग है । पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं अर्थात् जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चअपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, पृथिवीकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, पृथिवीकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक

बादरतेउ०-बादरवाउ०अपज्जत्ताणं सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०पज्जत्त-अपज्जत्ताणं बादर-वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अपज्जत्ताणं विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। [तेउ०-वाउ०-] बादरतेउ०-बादरवाउ० तेसिं पज्जत्ताणं विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा।

मणुसगदीए मणुस्सेसु विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा, सेडीए असंखे०भागो। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा।

देवगदीए देवेसु जाव सहस्सारे त्ति ताव णेरइयभंगो। आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु त्ति विसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा। तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो। सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदियपज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा, पलिदो० असंखे०-

व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, सूक्ष्म वायुकायिक व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं। असंख्यात हैं जो जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। चार शरीरवाले द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं। मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं।

देवगतिकी अपेक्षा सामान्य देवोंसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें नारकियोंके समान भङ्ग है। आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमानवासी देवों तक दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं। तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं। असंख्यात हैं जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं।

विशेषार्थ—यहां सहस्रारकल्प तकके देवों का भङ्ग नारकियोंके समान कहा है सो यह सामान्य कथन है। विशेषरूपसे सौधर्म ऐशान कल्पतकके देव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और सानत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देव जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानने चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय व बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं। चार शरीरवाले

भागो । बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा तेसिं पज्जत्तापज्जत्ता विसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता तस-तसपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खभंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजोगि-विभंगणाणीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि । कायजोगि-णवुंसयवेद-कोध-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील-काउलेस्सिय-भव-सिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि त्ति ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा दव्व-पमाणेण केवडिया ? अणंता । चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । कम्मइय-कायजोगीसु विसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ।

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इनके पर्याप्त व अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । वनस्पतिकायिक और निगोद जीव तथा बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । पञ्चेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और विभङ्गज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिक-मिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले नहीं होते । काययोगी, नपुंसकवेदवाले, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य और मिथ्यादृष्टि जीवोंका भङ्ग ओघके समान है । औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । चार शरीरवाले द्रव्य माणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । औदारिक-मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । आहारक-काययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं । संख्यात हैं । कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं । अनन्त हैं । तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ।

विशेषार्थ—यहां काययोगी आदि जितनी मार्गणाओंमें ओघके समान भङ्ग कहा है सो ये सब मार्गणाएं अनन्त संख्यावाली हैं । अतः इनमें ओघके समान दो शरीरवाले, तीन

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-सम्माइट्ठि-वेदगसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीणं तसकाइयभंगो ।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि - परिहार०-सुहुमसांपराइय०- जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । मणपज्जवणाणि-संजद-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा । संजदासंजद-सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । सुक्कलेस्सिय-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठीसु विसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । तिसरीरा चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा । असण्णीसु विसरीरा तिसरीरा दव्वप० के० ? अणंता । चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा ।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसरीरा दव्वप० के० ? अणंता । चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा[1] । अणाहारएसु कम्मइयभंगो ।

एवं दव्वपमाणपरूवणा समत्ता ।

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंकी संख्या बन जानेसे इनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है । शेष कथन सुगम है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेद और पुरुषवेदवाले तथा आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंका भङ्ग त्रसकायिक जीवोंके समान है ।

विशेषार्थ—इन मार्गणाओंमें एक तो त्रसकायिक जीवोंके समान दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव होते हैं, दूसरे इनकी संख्या असंख्यात है, इसलिए इनकी प्ररूपणा त्रसकायिक जीवोंके समान जानने की सूचना की है ।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, यथाख्यात-विहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले कितने हैं ? असंख्यात हैं । शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं । चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ।

विशेषार्थ—शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीव विग्रहगतिमें संख्यात ही होते हैं, इसलिए इनमें दो शरीरवालोंका प्रमाण संख्यात कहा है । तथा चार शरीरवाले ओघसे ही असंख्यात बतलाये हैं, इसलिए असंज्ञियोंमें चार शरीरवालोंका प्रमाण असंख्यात कहा है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने

१. अ० प्रतौ 'संखेज्जा' इति पाठः ।

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण विसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते[1] ? सव्वलोगे। चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु विसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। एवं सत्तसु पुढवीसु णेयव्वं। तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-कायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि—असंजद-अचक्खु-दंसणि--किण्ण--णील-काउलेस्सिय--भवसिद्धिय--अभवसिद्धिय--मिच्छाइट्ठि--असण्णीसु ओघं। पंचिंदियतिरिक्खतिग-इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि--सुद--ओहिणाणि--चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-वेदग-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीसु विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केविडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-

हैं ? अनन्त हैं ! चारशरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं। अनाहारकों में कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भङ्ग है।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ—दो शरीरवाले कार्मणकाययोगी होते हैं और तीन शरीरवाले प्रायः आहारक होते हैं। इनका क्षेत्र सर्वलोकप्रमाण होनेसे यहाँ दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका *सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र कहा है। तथा चार शरीरवाले वे ही होते हैं जो औदारिकशरीरसे या तो* विक्रिया कर रहे हैं या आहारक ऋद्धिके उपस्थापक हैं। ऐसे जीव लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें ही पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे चार शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। यद्यपि बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कहा है परन्तु उनमें विक्रिया करनेवाले जीव स्वल्प होनेसे उनका वर्तमान क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही प्राप्त होता है। आगे भी इन्हीं विशेषताओंको ध्यानमें रखकर और अपना अपना क्षेत्र जानकर वह ले आना चाहिए। यदि कहीं कोई विशेषता होगी तो उसका हम अलगसे निर्देश करेंगे।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चत्रिक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें

१. अ० प्रतौ 'तिसरीरा दव्व० प० के० खेत्ते' इति पाठः।

मणुसअपज्जत्त--सव्वदेव--वेइंदिय तेइंदिय--चउरिंदिय--तप्पज्जत्तापज्जत्त[1]--पंचिंदिय-तस-अपज्जत्ताणं णेरइयभंगो। मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणि-पंचिंदिय-पंचिंदिय-पज्जत्त-तस-तसपज्जत्त-सुक्कलेस्सिय-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठीसु विसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा।

इंदियाणुवादेण [एइंदिय-] बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु ओघं। बादरेइंदियअपज्जत्त०-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्त--पुढवि०--आउ०--बादरपुढवि०--बादरआउ०-तदपज्जत्त-सुहुमपुढवि०--सुहुमआउ०--तप्पज्जत्तापज्जत्त-तेउ०--बादरतेउ०-अपज्ज०--सुहुमतेउ०--सुहुमवाउ०--तप्पज्जत्तापज्जत्त--वणप्फदिकाइय -णिगोदजीव -बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तएसु विसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे। बादरपुढवि०--बादरआउ०--बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु विसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। बादरतेउ०पज्जत्तएसु

भागप्रमाण क्षेत्र है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्यअपर्याप्त, सब देव, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंके समान भङ्ग है। मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त, मनुष्यिनी तथा पञ्चेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रसपर्याप्त, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ – यहाँ मनुष्य आदि मार्गणाओंमें केवलिसमुद्घात सम्भव है इसलिए इस अपेक्षा से तीन शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण भी बतलाया है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय व पर्याप्त और अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, अग्निकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकअपर्याप्त, वायुकायिक, बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, वनस्पतिकायिक, निगोदजीव तथा इनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवों में दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। बादर

१. अ०का०प्रत्योः 'चउरिंदियतसपज्जत्त–' इति पाठः।

विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। बादरवाउ-काइयपज्जत्ता चदुसरीरा केवडिं खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। विसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स संखे०भागे[1]।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि--पंचवचि०--वेउव्विय०कायजोगि--वेउव्वियमिस्स--कायजोगि-विभंगणाणि-मणपज्जवणाणि--सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजम-संजमासंजम-सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि। ओरालिय०जोगीसु आहाराणुवादस्स आहारीसु च तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोए। चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे। आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे। अणाहार[2]-कम्मइय०जोगीसु विसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे। तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। णवरि कम्मइय० लोगस्स असंखेभागो णत्थि।

अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ—बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण होनेसे इनमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका यह क्षेत्र बन जाता है। शेष कथन सुगम है।

योग मार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी तथा विभङ्गज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापना-शुद्धिसंयत, संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीर-वाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले नहीं हैं। औदारिक-काययोगी और आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। आहारककाययोगी और आहारमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीर-वाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। अनाहारकों और कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है। इतनी विशेषता है कि कार्मणकाययोगी जीवोंमें

१. प्रतिषु 'लोगस्स असंखे०भागे' इति पाठः। २. ता० प्रतौ 'आ (अणा) हार–' अ०का०प्रत्योः 'आहार–' इति पाठः।

अवगदवेद--अकसाइ--केवलणाणि--जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद--केवलदंसणीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। एवं सजदाणं। णवरि चदुसरीरा लोग० असंखे०भागे। परिहार०सुहुमसांपराय-सुद्धिसंजदेसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे।

एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

फोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण विसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो अदीदेण सव्वलोगो।

आदेसेण णिरयगईए णेरइएसु विसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। पढमाए

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र नहीं है।

विशेषार्थ—अनाहारक अवस्था अयोगिकेवलियोंके भी होती है। वहाँ तीन शरीरोंका सद्भाव बन जाता है; इसलिए तीन शरीरवालोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण भी कहा है। परन्तु यह क्षेत्र कार्मणकाययोगी जीवोंमें घटित न होने से उनमें इसका निषेध किया है।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। इसी प्रकार संयतोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें चार शरीरवालोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। परिहारशुद्धि-संयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है। चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान की अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीतकालकी अपेक्षा सब लोकका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ—औदारिकशरीरसे विक्रिया करते समय मारणान्तिक समुद्घात सम्भव है, इसलिए चार शरीरवालोंका अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है। आगे भी यह स्पर्शन इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

आदेशसे नरकगतिमें नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी

पुढवीए खेत्तभंगो। विदियादि जाव समत्तपुढवि त्ति बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण एक्क-बे-तिण्णि-चत्तारि-पंच-छचोद्दसभागा देसूणा ?

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सामण्णतिरिक्ख-कायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोभकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि--किण्ण-णील--काउलेस्सिय-भवसिद्धि-अभवसिद्धि-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघभंगो । पंचिंदियतिरिक्ख पंचिंदिय-तिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-वेइंदिय--तेइंदिय--चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्त--पंचिंदियअपज्जत्त-तसअपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसररिएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीर-चदुसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि

अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भङ्ग है। दूसरीसे लेकर सातवीं तक की पृथिवियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा क्रमसे त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम एक भाग, कुछ कम दो भाग, कुछ कम तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम पाँच भाग और कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें सामान्य तिर्यञ्च तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोध-कषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पशन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके

केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ।

देवगदीए देवेसु विसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा । भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु विसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखे०भागो । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०-भागो, अदीदेण अद्धुट्ठ अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा । सोहम्मीसाणकप्पवासिय-देवेसु विसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण दिवड्ढ चोद्दसभागा देसूणा । तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा । सणक्कुमारप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु विसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग०

असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ—मनुष्यगतिमें मारणान्तिक समुद्घात और उपपादपदकी अपेक्षा सब लोक-प्रमाण स्पर्शन सम्भव है, इसलिए यहां तीन प्रकारके मनुष्योंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अतीतकालीन स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है । मात्र उपपादपदके समय चार शरीरवाले नहीं होते इतना विशेष जानना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम डेढ़ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे०भागो, अदीदेण तिण्णि अद्धुट्ठ चत्तारि[1] अद्धपंचम पंच चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। आणद-पाणद-आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवेसु विसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। णवगेवेज्जविमाणवासियदेवप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु विसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु विसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरेइंदियअपज्जत्त-

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे क्रमसे कुछ कम तीन भाग, कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम साढ़े चार भाग और कुछ कम पाँच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। नौ ग्रैवेयक विमानवासी देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवों तक इनमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ—सब देवोंमें जिसका जो उपपाद पदकी अपेक्षा स्पर्शन बतलाया है वह यहाँ दो शरीरवालोंका स्पर्शन जानना चाहिए और शेष स्पर्शन तीन शरीरवालोंका जानना चाहिए। यहाँ आनत-प्राणत कल्पोंमें दो शरीरवालोंका भी स्पर्शन त्रसनालीके कुछकम छह बटे चौदह भाग-प्रमाण कहा है सो यह सामान्य कथन प्रतीत होता है, क्योंकि कुछकम साढ़े पाँच भाग राजुका अन्तर्भाव कुछ कम छह बटे चौदह भागमें हो जाता है। वास्तवमें इनमें उपपाद-पदकी अपेक्षा स्पर्शन कुछ कम साढ़े पाँच भागप्रमाण बतलाया है, अतः यहाँ दो शरीर-वालोंका स्पर्शन भी इतना ही प्राप्त होगा। आगे भी सब स्पर्शन इन विशेषताओंको ध्यानमें रखकर घटित कर लेना चाहिए।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय बादर एकेन्द्रिय, और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त तथा सूक्ष्म

१. अ०प्रतौ० 'तिण्णि चत्तारि' इति पाठः।

सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु विसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्ट-माणे० सव्वलोगो। पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु विसरीर-चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि केव० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो असंखेज्जा भागा[1] सव्वलोगो वा, अदीणेण अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा।

कायाणुवादेण पुढवि०--आउ०--बादरपुढवि०--बादरआउ०[2]--बादरवणप्फदि-पत्तेयसरीरअपज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०--तप्पज्जत्तापज्जत्तएसु विसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादर-वणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु विसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तेउ०-वाउ-बादरतेउ०-बादरवाउकाइएसु विसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहि के० खेत्त फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीणेण सव्वलोगो। बादर-

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालो और चार शरीरवालोने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असख्यात बहुभाग प्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा इन तीनोंके अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवी-कायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमे दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोंमे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

१. ता० प्रतौ 'असंखेज्जा भागा। इति पाठो नास्ति। २. म०प्रतिपाठो यम्। अ०का०प्रत्योः चदुसरीरेहि के० खेत्तं फो० ? वट्टमाणेण लोग० संखे०भागो। असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा' इति पाठः।
'३. अ०प्रतौ 'आउ० बादरआउ०' इति पाठः।

तेउक्काइयपज्जत्तएसु विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरवाउ०पज्जत्तएसु चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। विसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० संखे०भागो,[1] अदीदेण सव्वलोगो। बादरतेउक्काइय-बादरवाउअपज्जत्त-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्ताणं विसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। एवं वणप्फदि-णिगोद-जीवाणं तेसिं चेव बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं। तस-तसपज्जत्ताणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो।

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों, तीन शरीरवालों और चार शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त तथा सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालों जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार वनस्पतिकायिक और निगोद तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके कहना चाहिए। त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोक-प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार

१. प्रतिषु 'लोग० असंखे०भागो' इति पाठः।

चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो । वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो । कम्मइयकायजोगीसु विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो । तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागा, सव्वलोगो वा[1] ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखेभागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ।

शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वैक्रियिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछकम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण

१. प्रतिषु 'असखे०भागो सव्वलोगो वा' इति पाठः ।

अवगद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहार०केवलदंसणीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा।

णाणाणुवादेण विभंगणाणीसु तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुहि सरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु चदुसरीर-विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। मणपज्जवणाणीसु तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा। चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो। सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं

क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहार विशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे विभङ्गज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ आठ बटे चौदह भाग, कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालों ने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानी

मणपज्जवभंगो। परिहार-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो। संजदासंजदाणं तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु विसरीरा लद्धिं पडुच्च अत्थि णिव्वत्तिं पडुच्च णत्थि। जदि अत्थि तो एदेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो।

लेस्साणुवादेण तेउलेस्सिएसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण दिवड्ढ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा। पम्मलेस्सिएसु चदुसरीरेहि विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग०

जीवोंके समान भङ्ग है। परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवालोने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंमें दो शरीरवाले लब्धिकी अपेक्षासे हैं, हैं, निर्वृत्तिकी अपेक्षासे नहीं हैं। यदि हैं तो उन्होंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवाले जीवोंमें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अवधिदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग अवधिज्ञानवाले जीवोंके समान है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पद्मलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे०भागो, अदीदेण पंच चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सुक्कलेस्सिएसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग असंखे०-भागो, असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। केवलिभंगो वा।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु विसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगो वा। खइयसम्माइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगो वा। विसरीर-चदुसरीरेहि के खेत्तं फोसिदं?

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम पाँच बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभाग प्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन है और केवलज्ञानीका जो स्पर्शन बतला आये वह भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां स्पर्शन जानना चाहिए।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके जो स्पर्शन बतलाया है वह स्पर्शन भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां जानना चाहिए। क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके समान भङ्ग है। दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने

अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो। वेदगसम्माइट्ठीणमोहिणाणिभंगो। उवसमसम्माइट्ठीसु बिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०-भागो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सासणसम्माइट्ठीसु बिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण बारह चोद्दसभागा वा देसूणा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग असंखेभागो, अदीदेण सत्त चोद्दसभागा देसूणा। सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोगस्स असंखे०भागो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं चक्खुदंसणिभंगो। आहाराणुवादेण आहारीणं ओरालियकायजोगिभंगो। अणाहारीणं बिसरीराणं कम्मइयभंगो। तिसरीराणं

कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंका भङ्ग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है। उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान और अतीत कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें चार शरीरवालोंका नीचे कुछ कम पांच राजु स्पर्शन नहीं उपलब्ध होता, क्योंकि एक तो सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च और मनुष्य नारकियोंमें तथा मेरुके नीचे एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते। दूसरे नारकी तिर्यञ्चों और मनुष्योंमें मारणान्तिक समुद्घात करते हुए भी चार शरीरवाले नहीं होते। इसलिए सासादनोंमें चार शरीरवालोंका स्पर्शन कुछ कम सात बटे चौदह राजुप्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भङ्ग चक्षुदर्शनवाले जीवोंके समान है। आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंका भङ्ग औदारिककाययोगी जीवोंके समान है। अनाहारकोंमें

केवलिभंगो । एवं फोसणाणुगमो समत्तो ।

कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य । ओघेण विसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु विसरीरा केवचिरं कालादो

दो शरीरवालोंका भङ्ग कार्मणकाययोगी जीवोंके समान है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग केवलज्ञानियोंके समान है ।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम समाप्त हुआ ।

कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ।

विशेषार्थ - कार्मणकाययोगका नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल होनेसे यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सर्वदा काल कहा है । इसी प्रकार तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा इनका सर्वदा काल कहा है । तथा एक जीवकी अपेक्षा कार्मणकाययोगका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय होने से दो शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय कहा है । जो औदारिक शरीरके साथ विक्रिया कर रहा है वह एक समय के लिए तीन शरीरवाला होकर यदि द्वितीय समयमें मर कर दो शरीरवाला हो जाता है तो उसके तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय प्राप्त होता है । यह देखकर एक जीव की अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है । तथा आहारक अवस्थाका उत्कृष्ट काल अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है । किसी जीवने औदारिक शरीरसे विक्रिया प्रारम्भ की और दूसरे समयमें मर कर वह दो शरीरवाला हो गया । यह देख कर एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालों का जघन्य काल एक समय कहा है । तथा एक जीवके विक्रियाका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है । आगे गति आदि मार्गणाओंमें इसी प्रकार कालका विचार कर वह घटित कर लेना चाहिए ।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका

होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। पढमपुढविप्पहुडि जाव सत्तमपुढविणेरइएसु विसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं संपुण्णं । जह० सागरोवमं समऊणं, उक्क० तिण्णि सागरोवमाणि संपुण्णाणि । जह० तिण्णि सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्त सागरोवमाणि संपुण्णाणि । जह० सत्त सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० दस सागरोवमाणि संपुण्णाणि । जह[1]० दससागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्तारस सागरोवमाणि संपुण्णाणि । जह० सत्तारस सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० बावीस सागरो० संपुण्णाणि । जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि ।

कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है। पहली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण एक सागर है। दूसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम एक सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तीन सागर है। तीसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम तीन सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सात सागर है। चौथी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सात सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण दस सागर है। पाँचवीं पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम दस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सत्रह सागर है। छठी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सत्रह सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण बाईस सागर है। सातवीं पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है।

विशेषार्थ—नरकमें नाना जीव विग्रह गतिसे यदि निरन्तर उत्पन्न हों तो कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही उत्पन्न होते हैं। सामान्यसे और प्रत्येक पृथिवीमें यही नियम है, इसलिए यहां सर्वत्र नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

१. अ०प्रतौ 'उक्क० दससागरोवमाणि समऊणाणि । जह०' इति पाठः ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदिय-[तिरिक्ख]-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण-ब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो।

भागप्रमाण कहा है। तथा एक जीव यहां सर्वत्र यदि विग्रहसे उत्पन्न हो तो कमसे कम एक विग्रह और अधिकसे अधिक दो विग्रह लेकर उत्पन्न होता है, इसलिए यहां एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कहा है। विग्रहके इन दो समयोंको अपनी जघन्य स्थितिमेंसे कम कर देने पर सर्वत्र एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालों का जघन्य काल होता है और उत्कृष्ट काल अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है यह स्पष्ट ही है। तथा नरकगति निरन्तर मार्गणा है, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका काल सर्वदा है यह भी स्पष्ट है।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी कालप्रमाण है। चार शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च योनिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्व-कोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्यप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना-जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग-

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं काला० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा।

प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है। नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है।

विशेषार्थ—पहले ओघसे कालका स्पष्टीकरण कर आए हैं। सामान्य तिर्यञ्चोंमें उसी प्रकार स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च आदिमें भी उसी प्रकार अपनी अपनी विशेषता जानकर कालका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जिस मार्गणामें एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका जघन्य और उत्कृष्ट जो काल हो वह वहाँ दो शरीरवालोंका काल जानना चाहिए। तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंका काल लाते समय कई बातोंका ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। यथा—मार्गणाका द्रव्यप्रमाण कितना है और मार्गणा सान्तर है या निरन्तर आदि। ओघसे कालका स्पष्टीकरण करते समय कुछ विशेषताओंका निर्देश किया ही है उन्हें ध्यानमें रखकर यहाँ और आगे कालका स्पष्टीकरण लेना चाहिए।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नानाजीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेण-ऽब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसअपज्जत्तेसु विसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

देवगदीए देवेसु विसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एग-समओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। भवणवासियप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु विसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे०भागो। एग-

जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

विशेषार्थ—मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है। इसमें निरन्तर यदि जीव पाये जाते हैं तो वे कमसे कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण काल तक और अधिक से अधिक पल्यके असंख्यावें भागप्रमाण काल तक रहते हैं। उसके बाद नियमसे अन्तर पड़ जाता है। इसी विशेषताको ध्यानमें रखकर यहां तीन शरीरवालोंका काल कहा है। शेष कालका स्पष्टीकरण पूर्वमें कही गई विशेषताओंको ध्यानमें रखकर कर लेना चाहिए।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है। भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्पवासी देवों तक दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

जीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा- जीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं सादिरेयं। जह० दसवस्ससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमस्स अट्ठमभागो विसमऊणो, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमं सादिरेयं, उक्क० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि। जह० बेसागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सत्त सागरो० सादिरेयाणि। जह० सत्त साग० सादिरेयाणि, उक्क० दस सागरो० सादिरेयाणि। जह० दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० चोद्दस सागरोव० सादिरेयाणि। जह० चोद्दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सोलस सागरो० सादिरेयाणि। जह० सोलस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि। आणद--पाणदप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासिय- देवेसु विसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अट्ठारस सारोवमाणि सादिरेगाणि, उक्क० वीसं सागरोवमाणि। जह० वीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बावीसं सागररोवमाणि। जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि,

भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवों की अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा भवनवासियोंमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक सागर है। व्यन्तरोंमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पल्यप्रमाण है। ज्योतिषियोंमें जघन्य काल दो समय कम पल्यका आठवां भागप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पल्यप्रमाण है। सौधर्म-ऐशान कल्प में जघन्य काल साधिक एक पल्य प्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है। सानत्कुमार माहेन्द्रमें जघन्य काल साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सात सागर है। ब्रह्म- ब्रह्मोत्तरमें जघन्य काल साधिक सात सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक दस सागर है। लान्तव-कापिष्ठमें जघन्य काल साधिक दस सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक चौदह सागर है। शुक्र महाशुक्रमें जघन्य काल साधिक चौदह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सौलह सागर है। शतार-सहस्रारमें जघन्य काल साधिक सोलह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक अठारह सागर है। आनत-प्राणतसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तकके देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा आनत-प्राणतमें जघन्य काल साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट काल बीस सागर है। आरण-अच्युतमें जघन्य काल एक समय कम बीस सागर है और उत्कृष्ट काल बाईस

उक्क० तेवीसं सागरोवमाणि। जह० तेवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० चदुवीसं सागरोवमाणि। जह० चउवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० पणुवीसं सागरोवमाणि। जह० पणुवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० छब्बीसं सागरोवमाणि। जह० छब्बीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० सत्तावीसं सागरोवमाणि। जह० सत्तावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० अट्ठावीसं सागरोवमाणि। जह० अट्ठावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एगुणतीसं सागरोवमाणि। जह० एगुणतीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तीसं सागरोवमाणि। जह० तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि। जह० एक्कत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बत्तीसं सागरोवमाणि। जह० बत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि। सव्वट्ठे जह० तेत्तीसं सागरो० विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसंसागरोवमाणि संपुण्णाणि।

इंदियाणुवादेण एइंदिएसु विसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एवजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं।

सागर है। प्रथम ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल तेईस सागर है। द्वितीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तेईस सागर है और उत्कृष्ट काल चौबीस सागर है। तृतीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम चौबीस सागर है और उत्कृष्ट काल पच्चीस सागर है। चतुर्थ ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम पच्चीस सागर है और उत्कृष्ट काल छब्बीस सागर है। पाँचवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम छब्बीस सागर है और उत्कृष्ट काल सत्ताईस सागर है। छठे ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम सत्ताईस सागर है और उत्कृष्ट काल अट्ठाईस सागर है। सातवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम अट्ठाईस सागर है और उत्कृष्ट काल उनतीस सागर है। आठवें ग्रैवेयक में जघन्य काल एक समय कम उनतीस सागर है और उत्कृष्ट काल तीस सागर है। नौवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तीस सागर है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागर है। नौ अनुदिशोंमें जघन्य काल एक समय कम इकतीस सागर है और उत्कृष्ट काल बत्तीस सागर है। चार अनुत्तरविमानोंमें जघन्य काल एक समय कम बत्तीस सागर है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है। सर्वार्थसिद्धिमें जघन्य काल दो समय कम तेतीस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय

बादरेइंदिएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण एइंदियभंगो । चदुसरीराणं पि एइंदियभंगो । बादरेइंदियपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरेइंदियअपज्जत्ता बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदिया बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । सुहुमेइंदियपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा ।

है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। बादर एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका भङ्ग एकेन्द्रियोंके समान है। चार शरीरवालोंके कालका भङ्ग भी एकेन्द्रियोंके समान है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। चार शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका काल ओघके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहण मात्र है और उत्कृष्ट काल अङ्गुलके असख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका काल ओघके समान है।

एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय० विसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि[1] वस्ससहस्साणि। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ताणं पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो। णवरि तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणा० प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ता विसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखे०भागो। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्क० बेसमयं[2]। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त० विसरीराणं बेइंदियभंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं सागरोवमसदपुधत्तं। चदुसरीरा ओघं। पंचिंदियअपज्जत्ताणं बेइंदियअपज्जत्ताणं भंगो।

तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंमें दो शरीरवालोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। द्वीन्द्रिय पर्याप्त त्रीन्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है। इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका द्वीन्द्रियोंके समान भङ्ग है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागरप्रमाण और सौ सागरपृथक्त्वप्रमाण है। चार शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है। पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है।

१. प्रतिषु 'उक्क० असखेजाणि' इति पाठः। २. अ०का० प्रत्योः 'णाणाजीवं प० जह० एग-समओ, उक्क० वेसमया' इति पाठः।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० विसरीरा तिसरीरा ओघं। णवरि तिसरीराणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरा विसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एग-समओ, उक्क० वेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एग-जीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्क० कम्मट्ठिदी। बादरपुढवि-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्त० विसरीराणं वेइंदियपज्जत्ताणं भंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बादरपुढवि-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-अपज्जत्ता० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-सुहुमतेउ० सुहुमवाउ० विसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो। तेउकाइय-वाउका० विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। बादरतेउकाइय-बादरवाउ० विसरीर-चदुसरीराणं बादरेइंदियभंगो। तिसरीराणं बादरपुढविभंगो [णवरि एगजीवं प० जह० एग-समओ]। बादरतेउ०-बादरवाउ०पज्जत्त० विसरीराणं बादरपुढविपज्जत्तभंगो।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवालोंका जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल कर्मस्थितिप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका भङ्ग द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जल-कायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है। अग्निकायिक और वायुकायिकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिकोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रियोंके समान है। तीन शरीरवालोंका भङ्ग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है। इतनी विशेषता है कि एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त और बादर वायुकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंके

तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरतेउकाइय-बादरवाउ०अपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । वणप्फदिकाइय० विसरीर-तिसरीरा ओघं । बादरवणप्फदिकाइय० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो । णवरि एदेसु तिसु वि विसरीराणमेगसमओ णत्थि । बादरवणप्फदि०अपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं [बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदि० विसरीर-तिसरीराणं] सुहुमेइंदियभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं सुहुमेइंदियअपज्जत्तभंगो । तसकाइय--तसकाइयपज्जत्त० विसरीर तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो । णवरि विसेसो सगट्ठिदी भणिदव्वा । तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमण०-पंचवचि० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । कायजोगीसु विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा

समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है ? एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकों के समान है । वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है । बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । इतनी विशेषता है कि इन तीनों ही वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवालोंका एक समय काल नहीं है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है । त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । इतनी विशेषता है कि अपनी स्थिति कहनी चाहिए । त्रस अपर्याप्तकोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । काययोगी जीवोंमें

केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बावीसं वस्ससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीराणं मणजोगिभंगो। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं। तं पुण सव्वट्ठे उप्पण्णस्स होदि। उक्क० अंतोमुहुत्तं। तं पुण सत्तमाए पुढवीए उप्पण्णस्स होदि। आहारकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एगजीवं प० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं। कम्मइयकायजोगीसु विसरीरा ओघं। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० असंखेज्जा समया। एगजीवं प० जहण्णुक्क० तिण्णि समया।

दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। औदारिककाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। वैक्रियिककाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग मनोयोगी जीवोंके समान है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है जो सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न होनेवालेके होता है ? तथा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है जो सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवालेके होता है। आहारककाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। आहारकमिश्रकाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल तीन समय है।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदे विसरीराणं पंचिंदियपज्जत्तभंगो। तिसरीराणं केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं। चदुसरीरा ओघं। एवं पुरिसवेदाणं। उक्कस्सेण सागरोवमसद-पुधत्तं। णवुंसयवेदा ओघं। अवगदवेदा तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा।

कसायाणुवादेण कोध-माण-माया--लोभकसाइसु विसरीरा चदुसरीरा ओघं। तिसरीराणं मणजोगिभंगो[1]। अकसाईणमवगदवेदभंगो।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणीसु विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। विहंगणाणी० तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि। चदुसरीरा ओघं। आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु विसरीराणं पुरिसवेदभंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा-जीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। तं जहा—एगो मिच्छाइट्ठी दव्वलिंगी अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठारस-

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल सौ पल्यपृथक्त्वप्रमाण है। चार शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है। इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल सौ सागरपृथक्त्वप्रमाण है। नपुंसकवेदी जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका कितना काल है। नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभ-कषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग मनोयोगी जीवोंके समान है। अकषायी जीवोंका भङ्ग अपगतवेदवाले जीवोंके समान है।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीर-वाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। विभंगज्ञानियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य-काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागर है। चार शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरीर-वाले जीवोंके कालका भङ्ग पुरुषवेदी जीवोंके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल साधिक छ्यासठ सागर है। यथा – एक मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी अन्तर्मुहूर्त अधिक

१. अ०का० प्रत्योः 'मणपज्जवभंगो' इति पाठः।

सागरोवमाणि देवाउअं बंधिदूण आणद--पाणदकप्पवासियदेवेसु उववण्णो, छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण अट्ठारससागरोवमाणं बहिं तिण्णिं वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं घेत्तूण वेदगं पडिवण्णो। पुणो अट्ठारससागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेदूण अविणट्ठेहि तीहि णाणेहि कालं कादूण पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो तिणाणी चेव होदूण पुव्वकोडीए ऊणवीससागरोवमट्ठिदीओ देवो जादो। तत्तो चुदो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो दोपुव्वकोडीहि ऊणअट्ठावीससागरोवमट्ठिदीओ देवो होदूण पुणो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो तेत्तीसाउअं बंधिदूण अंतोमुहुत्तावसेसे खइयसम्माइट्ठी होदूण सव्वट्ठे उववण्णो। तदो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झिदव्वए त्ति केवलणाणी जादो। एवमुवसमसम्मत्तंतोमुहुत्तेण पुव्वकोडिअब्भहियतेत्तीससागरोवमेहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि। चदुसरीरा ओघं। मणपज्जवणाणीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुसरीरा ओघं। केवलणाणी० अवगदवेदभंगो। णवरि एगसमओ णत्थि।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीराणमवगदवेदभंगो। चदुसरीरा ओघं। सामाइय-

अठारह सागर प्रमाण देवायुका बन्ध करके आनत-प्राणत कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होकर अठारह सागरके बाहर तीनों ही करणोंको करके उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। पुनः अठारह सागर काल तक सम्यक्त्वका अनुपालन करके विनाशको नहीं प्राप्त हुए तीन ज्ञानोंके साथ मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः तीनों ही ज्ञानवाला होकर पूर्वकोटिसे न्यून बीस सागरकी स्थितिवाला देव हुआ। वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः दो पूर्वकोटि कम अट्ठाईस सागरकी आयुवाला देव होकर पुनः पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः तेतीस सागरप्रमाण आयुका बन्ध करके अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहने पर क्षायिक सम्यग्दृष्टि होकर सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य होकर अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर सिद्ध होनेवाला है इसलिए केवलज्ञानी हो गया। इस प्रकार उपशमसम्यक्त्वके अन्तर्मुहूर्त और साधिक पूर्वकोटि तेतीस सागर अधिक छ्यासठ सागरकाल प्राप्त होता है। चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। चार शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। केवलज्ञानी जीवोंमें अपगतवेदवाले जीवोंके समान भङ्ग है। इतनी विशेषता है कि एक समय काल नहीं है।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवालोंमें अपगत वेदवाले जीवोंके समान भङ्ग है। चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। सामायिकसंयत और छेदो-

१. अ०प्रतौ '–सागरोवमाण ब्भहियं तिण्णि' इति पाठः।

छेदोवट्ठावणसंजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । परिहारसंजदेसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० अंतोमुत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । सुहुमसांपराइय० तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । जहाक्खाद० अवगदवेदभंगो । संजदासंजदा तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । सा वि तिरिक्खेसु तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा कादूण घेतव्वा । चदुसरीरा ओघं । असंजदाणं मदिअण्णाणिभंगो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी० ओघं । ओहिदंसणीणमोहिणाणी० भंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणी[1] ० भंगो ।

लेस्साणुवादेण किण्ह-णील-काउलेस्सिएसु विसरीरा चदुसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि, सत्तरससागरो० सादिरे० सत्तसागरो० सादिरे० ।

पस्थापनासंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके समान है । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना-जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । सूक्ष्मसाम्परायसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । यथाख्यातसंयतोंमें अपगत-वेदवाले जीवोंके समान भङ्ग है । संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है । वह भी तिर्यञ्चोंमें तीन अन्तर्मुहूर्त कम करके ग्रहण करना चाहिए । चार शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । असंयतोंमें मत्यज्ञानी जीवोंके समान भङ्ग है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग त्रसपर्याप्त जीवोंके समान है । अचक्षुदर्शनवाले जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है । तथा केवलदर्शनवाले जीवोंमें केवलज्ञानी जीवोंके समान भङ्ग है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कृष्णलेश्यामें साधिक तेतीस सागर, नीललेश्यामें साधिक सत्रह सागर तथा कापोत लेश्यामें साधिक सात सागर है । यहाँ साधिकका प्रमाण दो अन्तर्मुहूर्त

१. म० प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'केवलदंसणीए (सु) केवलणाणी०' अ०का०प्रत्योः 'केवलदंसणीए केवलणाणी०' इति पाठः ।

अदिरेगस्स पमाणं वे अंतोमुहुत्ताणि। तेउ-पम्मलेस्सिएसु विसरीराणं णारगभंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसागरोवमाणि सादिरेयाणि, अट्ठारससागरो० सादिरेयाणि। चदुसरीरा ओघं। सुक्कलेस्सिएसु विसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। चदुसरीरा ओघं।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमोघो। सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी० विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमाभिणि०भंगो। खइयसम्माइट्ठी० विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं सुक्कलेस्सियभंगो। वेदगसम्माइट्ठी० विसरीर-चदुसरीराणं सम्माइट्ठिभंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं० प० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि। उवसमसम्माइट्ठी० विसरीराणं सुक्कलेस्सियभंगो। तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

है। पीतलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग नारकियोंके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पीतलेश्यामें साधिक दो सागर तथा पद्मलेश्यामें साधिक अठारह सागर है। चार शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है। चार शरीरवालोंका काल ओघके समान है।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यों और अभव्योंका भङ्ग ओघके समान है। सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग आभिनिबोधिकज्ञानी जीवोंके समान है। क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है। वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग सम्यग्दृष्टि जीवोंके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छयासठ सागर है। उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है। तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी

सासणसम्माइट्ठी० विसरीराणं सम्माइट्ठिभंगो। तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छ आवलियाओ। सम्मामिच्छाइट्ठी० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० दोण्हं पि पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणं कथमेगसमओ? सम्मामिच्छत्तद्धाए एगसमयावसेसाए विउव्विदाणमेगसमओ। मिच्छाइट्ठी० विसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिंदियपज्जत्तभंगो। असण्णी० विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमोघं। णेवसण्णि-णेवअसण्णीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं,

अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग सम्यग्दृष्टियोंके समान है। तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह आवलिप्रमाण है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दोनोंका पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

शंका—चार शरीरवालोंका एक समय काल कैसे है?

समाधान—सम्यग्मिथ्यात्वके कालमें एक समय शेष रहने पर विक्रिया करनेवालोंके एक समय काल प्राप्त होता है।

मिथ्यादृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है।

विशेषार्थ—उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है यह तो स्पष्ट ही है, *क्योंकि जो उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त करता है वह अन्तर्मुहूर्त काल तक उसके साथ नियमसे* रहता है। यहाँ उपशमश्रेणिसे नीचे उपशमसम्यक्त्वके साथ मरण नहीं होता इसलिए तथा जो इसके कालमें विक्रिया करके चार शरीरवाला होता है उसके अन्तर्मुहूर्त कालके पहले उपशम-सम्यक्त्वसे पतन नहीं होता, इसलिए उपशमसम्यक्त्वमें चार शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है। असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। न संज्ञी और न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका काल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा

उक्क० पुव्वकोडी देसूणा।

आहाराणुवादेण आहारी० तिसरीर-चदुसरीरा ओघं। अणाहारी० विसरीरा ओघं। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एगजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एवं कालाणियोगद्दारं समत्तं।

अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० अंतोमुहूत्तं, उक्क०[1] अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्व-कोटिप्रमाण है।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। अनाहारक जीवोंमें दो शरीरवालोंके कालका भङ्ग ओघके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

इस प्रकार कालानुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है। नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है।

विशेषार्थ—दो शरीरवाले अनाहारक होते हैं और अनाहारक जीवोंका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवाले जीवोंके अन्तरका निषेध किया है। एक

१. ता० प्रतौ चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं पडुच्च ज० एगसमओ उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० इति पाठः।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता। एगजीवं प० णत्थि अंतरं। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणेगजीवं प० णत्थि अंतरं। पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति ताव विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवे प० जह० सव्वासिं पुढवीणमेगसमओ, उक्क० अडदालीसं मुहुत्ता पक्खो मासो वेमासा चत्तारिमासा छम्मासा बारसमासा। एगजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। तिसरीराणमुभयदो वि

जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण प्राप्त होता है, क्योंकि अपर्याप्त जीवकी जघन्य भवस्थितिमेंसे अनाहारकके तीन समय कम कर देने पर शेष काल आहारक अवस्थाका बच रहता है। इसके बाद वह जीव पुनः अनाहारक हो सकता है। तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि यदि कोई जीव निरन्तर आहारक रहता है तो इतने काल तक ही वह आहारक रहता है। इसके पूर्व और बादमें वह नियमसे अनाहारक होता है। तीन शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे नाना जीवोंकी अपेक्षा इनके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त पहले बतला आये हैं। वही यहाँ एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य और उत्कृष्ट अन्तरकाल जानना चाहिए। यदि तीन शरीरवाला एक समयके लिए दो शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीरवाला हो जाता है तो जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त होता है और तीन शरीरवाला अन्तर्मुहूर्तके लिए चार शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीरवाला हो जाता है तो उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है। यह उक्त कथनका तात्पर्य है। चार शरीरवाले नाना जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा चार शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा विक्रिया करके उसका उपसंहार करनेके बाद या आहारक शरीरको उत्पन्न करनेके बाद पुनः विक्रिया या आहारक शरीरकी उत्पत्ति अन्तर्मुहूर्त कालका अन्तर पड़े बिना नहीं हो सकती, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है। और जो जीव अग्निकायिक पर्याप्त और वायुकायिक पर्याप्त अवस्थाको छोड़कर अनन्त काल तक निरन्तर एकेन्द्रियोंमें परिभ्रमण करता रहता है उसके इतने काल तक चार शरीरकी उत्पत्ति नहीं होती, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त कालप्रमाण कहा है।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। पहली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सब पृथिवियोंमें जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पहली पृथिवीमें अड़तालीस मुहूर्त, दूसरी पृथिवीमें एक पक्ष, तीसरी पृथिवीमें एक मास, चौथी पृथिवीमें दो मास, पाँचवीं पृथिवीमें चार मास, छटी पृथिवीमें छह मास और सातवीं पृथिवीमें बारह मास है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है निरन्तर है। तीन शरीरवालोंका नाना और एक जीव

१. प्रतिषु 'णिरंतरं। विसरीराण-' इति पाठः।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु विसरीर--तिसरीर-चदुसरीराणमोघं । पंचिंदिय-तिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० जह० तिण्णं पि एगसमओ, उक्क० पढमाणमंतोमुहुत्तं, विदिय--तदीयाणं चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० अपज्जत्तअंतोमुहुत्तब्भहियपुव्वकोडिपुधत्तं विदिय-तदिय-तिरिक्खाणं संपुण्णं पुव्वकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणा-जीवे पडुच्च णत्थि अंतरं णिरतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एग-जीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

दोनों प्रकारसे भी अन्तर नहीं हैं, निरन्तर है ।

विशेषार्थ—नरकमें यदि विग्रहगतिसे उत्पन्न होता है तो प्रारम्भके एक या दो समय तक जीव दो शरीरवाला रहता है और उसके बाद तीन शरीरवाला हो जाता है। जो अपनी पर्यायके अन्त तक तीन शरीरवाला ही रहता है। तथा नरकसे निकलकर पुन: नरकमें जीव नहीं उत्पन्न होता, इसलिए तो यहाँ एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंके अन्तर कालका निषेध किया है। तथा नरकगतिका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है। परन्तु यह सम्भव है कि नरकमें या प्रथमादि नरकोंमें कोई जीव कमसे कम एक समय तक न उत्पन्न हो, इसलिए सर्वत्र दो शरीर-वालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय कहा है और सामान्यसे नरकमें अधिकसे अधिक चौबीस मुहूर्त तक कोई जीव नहीं उत्पन्न होता। तथा प्रथमादि नरकोंमें अधिकसे अधिक क्रमसे अड़तालीस मुहूर्त, एक पक्ष, एक माह, दो माह, चार माह, छह माह और एक वर्ष तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सामान्यसे नरकमें और प्रथमादि नरकोंमें उत्कृष्ट अन्तर उक्त कालप्रमाण कहा है।

तिर्यञ्चगतिमें तिर्यञ्चोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रथमका अन्तर्मुहूर्त है तथा द्वितीय और तृतीयका चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दोमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें अपर्याप्तकोंका अन्तर्मुहूर्त मिलाकर पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण तथा दूसरे और तीसरे प्रकारके तिर्यञ्चोंमें सम्पूर्ण पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्यप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्कस्सेण पण्णारस अंतोमुहुत्ताणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु मणुस--मणुसपज्जत्त--मणुसिणीसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० तिण्णं पि एगसमओ, उक्क० चदुवीस मुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं । केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । मणुसअपज्जत्त०

तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है ।

विशेषार्थ—सामान्य तिर्यञ्चोंका भङ्ग ओघके समान है यह स्पष्ट ही है । पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च आदिमें दो शरीरवाले आदिका अन्तर घटित करते समय तिर्यञ्च तिर्यञ्चोंमें उत्पन्न होते हैं इस बातको ध्यानमें रखकर अन्तरको घटित करना चाहिए । यहाँ जो विशेष बात कहनी है वह यह कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनी और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त जीवोंमें लगातार यदि कोई जीव उत्पन्न न हो तो अधिकसे अधिक प्रथममें अन्तर्मुहूर्त काल तक, दूसरे-तीसरे भेदमें चौबीस मुहूर्त तक और अन्तके भेदमें अन्तर्मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता । इन सबमें नहीं उत्पन्न होनेका काल कमसे कम एक समय है यह स्पष्ट ही है । यही कारण है कि इनमें नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अपने अपने अनुत्पत्तिके काल प्रमाण कहा है । इसी प्रकार आगे भी अपनी अपनी विशेषताका विचार कर अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रथममें दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दोमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर-काल नहीं है । निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-

विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० सत्त अंतोमुहुत्ताणि। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ उक्क० वेसमया।

देवगदीए देवेसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसं मुहुत्तं। एगजीवं प० णत्थि अंतरं। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं। भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धि-विमाणवासियदेवा त्ति विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवे प० जह० सव्वेसिमेगसमओ, उक्क० भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणदेवाणं अडदालीस मुहुत्ता सणक्कुमार-माहिंदे पक्खो बम्ह--बम्हुत्तर--लांतव--काविट्ठदेवेसु मासो सुक्क-महासुक्क-सदर--सहस्सारकप्पवासियदेवेसु वे मासा आणद--पाणददेवेसु चत्तारि मासा

पृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर सात अन्तर्मुहूर्त है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है।

विशेषार्थ—पहले अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त कह आये हैं और यहाँ सात अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही कहा है। सो इसका कारण यह है कि तिर्यञ्च संज्ञी और असंज्ञी दो प्रकारके होते हैं, इसलिए वहाँ संज्ञीके आठ असंज्ञीके आठ इस प्रकार सोलह भवोंका ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त किया गया है। पर मनुष्योंमें संज्ञी ही होते हैं, इसलिए संज्ञियोंके आठ भवोंका ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर लाया गया है। यहाँ दोनों स्थलों पर भवग्रहणके प्रारम्भमें और अन्तिम भवके ग्रहण करनेके प्रारम्भमें दो शरीरवाला उत्पन्न कराकर यह अन्तरकाल लाना चाहिए।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तकके देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सबका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म-ऐशानकल्पके देवोंमें अड़तालिस मुहूर्त, सनत्कुमार-माहेन्द्रमें एक पक्ष, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव और कापिष्ठमें एक माह, शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंमें दो माह, आनत और प्राणतके देवोंमें

आरणच्चुददेवेसु छम्मासा णवगेवज्जदेवेसु बारसमासा णवअणुदिस-चत्तारिअणुत्तर-विमाणवासियदेवेसु वासपुधत्तं सव्वट्ठे पलिदोवमस्स संखे०भागो[1]। एगजीवं प० णत्थि अंतरं। तिसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं णिरंतरं।

इंदियाणुवादेण एइंदिया ओघं। णवरि चदुसरीराणं एगजीवं पडुच्च उक्कस्सेण पलिदो० असंखे०भागो, वेउव्वियसंतकम्मियाणं चेव उत्तरसरीरविउव्वणणियम-दंसणादो। बादरेइंदिय० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। तिसरीरा ओघं। चदुसरीराण-

चार माह, आरण और अच्युतके देवोंमें छह माह, नौ ग्रैवेयकके देवोंमें बारह माह, नौ अनुदिश और चार अनुत्तरविमानवासी देवोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है।

विशेषार्थ—षट्खण्डागम कृतिअनुयोगद्वारमें अन्तरप्ररूपणाके समय भी देवों और उनके अवान्तर भेदोंमें इस अन्तरकालका निर्देश किया है पर वहाँ भवनत्रिकके अड़तालीस मुहूर्त, सौधर्मादिकमें एक पक्ष, सनत्कुमारद्विकमें एक माह, ब्रह्मोत्तर आदि चारमें दो महीना, शुक्र आदि चारमें चार महीना, आनत आदि चारमें छह महीना, नौ ग्रैवेयकोंमें बारह महीना अनुदिशों और अनुत्तरविमानोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर कहा है। यहाँ कहे गये अन्तरसे उसमें कहीं कहीं फरक आता है सो जानकर इसका निर्णय करना चाहिए। यह सम्भव है कि इस विषयमें दो उपदेश मिलते हों और उनमेंसे एकका संकलन वहां किया हो और दूसरेका यहां। जो भी हो, हमें यहां सब प्रतियोंमें यह पाठ मिला है, इसलिए उसे वैसा ही रखा है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंका भङ्ग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि वैक्रियिकसत्कर्मवालोंके ही उत्तर शरीरकी विक्रियाका नियम देखा जाता है। बादर एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है। चार शरीरवालोंका अन्तर-

१. उक्कस्सेण भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियाणं पादेक्कं अडदालीस मुहुत्ता। सोहम्मीसाणे पक्खो। सणक्कुमार-माहिंदे मासो। बम्ह-बम्होत्तर-लांतव-काविट्ठे बेमासा। सुक्क-महासुक्क-सदार-सहस्सारम्मि चत्तारिमासा। आणद-पाणद-आरणच्चुदेसु छम्मासा। णवगेवज्जेसु बारसमासा। अणुदिसादि जाव अवराइद त्ति वासपुधत्तं। सव्वट्ठे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। ष० खं, पु० ९, पृ० ४०८।

मंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्क०[1] पलिदो० असंखे०भागो । बादरेइंदियपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरेइंदियअपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । सुहुमेइंदिय० विसरीरा ओघं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । सुहुमेइंदियपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदियअपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर तीन समय है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । उक्त दोनों

१. ता०का०प्रत्योः 'जह० अंतोमुहुत्तं उक्क०' इति पाठः ।

दोण्णं पि तिसरीराणं अंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । बेइंदिय--तेइंदिय-चउरिंदिएसु तेसिं पज्जत्तेसु च बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० सव्वेसिमेगसमओ, उक्क० आदिमतियम्हि अंतोमुहुत्तं तिण्हं पज्जत्ताणं चदुवीस-मुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क[1]० सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहिय-सागरोवमसदपुधत्तं । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं सागरोवमसदपुधत्तं । पंचिंदियअपज्जत्ताणं पंचिंदियतिरिक्ख-

ही जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर तीन समय है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सभीका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें अन्तर्मुहूर्त तथा तीनों पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और अन्तके तीनोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमे दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्त और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है । तथा उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । और उत्कृष्ट अन्तरकाल पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण

१. ता०प्रतौ 'खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं उक्क०' इति पाठः ।

अपज्जत्तभंगो ।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० विसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो । बादर-पुढवि०--बादरआउ०--बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं विसमऊणं, उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदि०पत्तेयसरीरपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीराणं वेइंदियपज्जत्तभंगो । बादरपुढवि०-बादरआउ०--बादरवणप्फदि०पत्तेयसरीरअपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं

है । पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है ।

विशेषार्थ—एकेन्द्रियोंमें चार शरीरोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण क्यों है इस बातके समर्थनमें वीरसेन स्वामीका कहना है कि जिनके वैक्रियिकशरीर आदि चार प्रकृतियोंकी सत्ता है वे ही विक्रिया करते हैं, अन्य नहीं। सामान्य नियम यह है कि जिन एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके देवगतिद्विक, नरकगतिद्विक और वैक्रियिक-चतुष्ककी सत्ता होती है वे इनकी नियमसे उद्वेलना करते हैं और उद्वेलनामें जघन्य और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण लगता है । इसका मतलब यह हुआ कि एकेन्द्रियोंमें वैक्रियिकशरीर आदि की सत्ता अधिकसे अधिक पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही हो सकती है । और जब यह नियम मान लिया गया कि वैक्रियिकशरीरके सत्त्वके रहते हुए ही मनुष्य और तिर्यञ्च विक्रिया करते हैं तब उक्त कालके प्रारम्भमें और अन्तमें विक्रिया कराके ही यह अन्तर लाया जा सकता है । यही कारण है कि यहाँ एकेन्द्रियोंमें उनकी कायस्थिति अधिक होने पर भी एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भाग-प्रमाण कहा है ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है । बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर कर्मस्थिति प्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग द्वीन्द्रियपर्याप्तकों के समान है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जल-कायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और

बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । तेउ०-वाउ० विसरीर--तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । णवरि विसेसो जत्थ चदुसरीराणमणंतकालो तत्थ पलिदो० असंखे०भागो वत्तव्वो । बादर-तेउ०-बादरवाउ० विसरीराणं बादरपुढविभंगो । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । बादरतेउक्काइयपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-सरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमु०, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरवाउकाइयपज्जत्त० विसरीराण-मंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-सरीराणमंतरं के० का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरतेउ०--बादरवाउ०अपज्जत्ताणं बादरपुढवि०अपज्जत्तभंगो । सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-पज्जत्ता-

तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । अग्निकायिक और वायु-कायिक जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है । इतना विशेष है कि जहाँ पर चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल कहा है वहां पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण कहना चाहिए । बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीवालोंका भङ्ग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है । तथा तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओधके समान है । चार शरीवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दोशरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके सामन है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवोंमें बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवोंके समान भङ्ग है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म

पज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो। वणप्फदिकाइय० विसरीरा तिसरीरा ओघं। बादरवणप्फदिकाइय० विसरीर-तिरीराणं बादरेइंदियभंगो। बादरवणप्फदिकाइय-पज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो। बादरवणप्फदिअपज्जत्ताणं बादरे-इंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमवणप्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो। णिगोदजीवा विसरीरा तिसरीरा ओघं। बादरणिगोदजीव० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो। बादरणिगोदजीवपज्जत्त० विसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो। बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो। तस०-तस०पज्जत्ताणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो। णवरि विसेसो सगट्ठिदी भाणियव्वा। तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो।

जोगाणुवादेण पंचमण०-पंचवचि० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो णत्थि। कायजोगि० विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं। णवरि चदुसरीर० एयजीवस्स उक्क० पलिदो० असंखे०भागो। ओरालियकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० पडुच्च णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है। वनस्पतिकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके सामन है। बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान भंग है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है। निगोद जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। बादर निगोद जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रियोंके समान है। बादर निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका भङ्ग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकों के समान है। सूक्ष्म-निगोद तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भङ्ग सूक्ष्म एकेद्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके समान है। त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्त जीवोंके समान है। इतना विशेष है कि अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए। त्रस अपर्याप्तकोंका भङ्ग पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है।

योग मार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमे तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे नहीं है। काययोगी जीवोंमे दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तर-काल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और

अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि वाससहस्साणि देसूणाणि। ओरालियमिस्सकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजी० प० णत्थि अंतरं। वेउव्वियकायजोगि० तिसरीराणं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं। वेउव्वियमिस्स० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० बारसमुहुत्ता। एगजीवं प० उभयदो णत्थि अंतरं। आहारदुगस्स चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। एगजीवं प० णत्थि अंतरं। कम्मइयकायजोगि० विसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं। तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। एगजीवं प० णत्थि अंतरं।

उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालों का अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन हजार वर्षप्रमाण है। औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तर काल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। वैक्रियिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीव की अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है। आहारकद्विकमें चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर काल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व-प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है।

विशेषार्थ—पहले ओघसे चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल कह आये हैं सो वहाँ किसी एक योग और एक इन्द्रियकी प्रधानता न होने से वह अन्तर बन जाता है। किन्तु यहाँ काययोगमें वह घटित नहीं होता, क्योंकि काययोगका अधिक काल तक सद्भाव एकेन्द्रियोंके होता है और एकेन्द्रियोंमें चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पहले घटित करके बतला आये है, इसलिए यहाँ भी वह उतना ही कहा है। तथा औदारिककाययोगके रहते हुए चार शरीरोंकी प्राप्ति यदि हो तो वह जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक नियम से होती है, इसलिए इसमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है। यद्यपि नरक में और देवोंमें अधिकसे अधिक काल तक कोई जीव उत्पन्न न हो तो चौबीस मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता पर सम्मिलित रूपसे विचार करने पर अधिकसे अधिक काल तक कोई नरकगति या देवगतिमें उत्पन्न न हो तो बारह मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए वैक्रियिकमिश्रकाययोगमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त कहा है। कार्मण-

वेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं। एवं पुरिसवेदस्स। णवरि जत्थ पलिदोवमसदपुधत्तं तत्थ सागरोवमसदपुधत्तं वत्तव्वं। णवुंसयवेदेसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। अवगदवेद० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं।

कसायाणुवादेण कोध--माण--माया--लोभकसाई० बिसरीर--चदुसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अकसाईणमवगदवेदभंगो।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणि० बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं।

काययोगियोंमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा से बतलाया है। तात्पर्य यह है कि केवली जीव एक समयके अन्तरसे भी केवलिसमुद्घात कर सकते हैं और अधिकसे अधिक काल तक यदि कोई जीव केवलिसमुद्घातको न प्राप्त हो तो वर्ष पृथक्त्व काल तक नहीं प्राप्त होता। शेष कथन स्पष्ट ही है।

वेदमार्गणाके अनुवाद से स्त्रीवेदवालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण है। इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि जहां सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहा है वहां सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहना चाहिए। नपुंसकवेदी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभ-कषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। अकषायी जीवोंमें अपगतवेदी जीवोंके समान भङ्ग है।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन

विभंगणाणी० तिसरीर-चदुसरीराणं णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं । आभिणि-सुद-ओहिणाणी० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० [मासपुधत्तं । ओहिणाणीसु] वासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० वासपुधत्तं, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मणपज्जवणाणी० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराण-मंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । केवलणाणीणमवगदवेदभंगो ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजद० तिसरीर-चदुसरीराणं पि एवं चेव वत्तव्वं । परिहारसुद्धि-संजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजी० प० उभयदो वि णत्थि अंतरं । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी०[1]

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है ? विभङ्गज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रारम्भके दो ज्ञानोंमें मासपृथक्त्व तथा अवधिज्ञानमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक छ्यासठ सागर है । तीन शरीर-वालोंका भङ्ग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक छ्यासठ सागर है । मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । केवलज्ञानियोंका भङ्ग अपगतवेदी जीवोंके समान है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग इसी प्रकार कहना चाहिए । परिहारविशुद्धि-संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

१. ता०प्रतौ 'होदि ? णाणाजीवं' इति पाठः ।

प० जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा। एगजीवं प० णत्थि अंतरं। जहक्खाद-सुद्धिसंजद० तिसरीराणं केवलणाणी० भंगो। संजदासंजदाणं मणपज्जवणाणी० भंगो। असंजदा ओघं।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो। अचक्खुदंसणी० ओघं। ओहिदंसणीणमोहिणाणी० भंगो। केवलदंसणीणं केवलणाणी० भंगो।

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० सत्तरससागरोवमाणि बिसमऊणाणि सत्तसागरो० बिसमऊणाणि दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक० तेत्तीस-सागरोवमाणि समऊणाणि सत्तरससागरो० समऊणाणि सत्तसागरो० समऊणाणि। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एग-जीवं प० जह० एगसमओ, उक० अंतोमु०। चदुसरीराणमुभयदो णत्थि अंतरं। तेउलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक० अडदालीसमुहुत्ता। एगजीवं प० जह० पलिदोवमं सादिरेयं, उक० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का०

छह महीना है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। यथाख्यातशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीर-वालोंका भङ्ग केवलज्ञानियोंके समान है। संयतासंयतोंका भङ्ग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है। असंयतोंका भङ्ग ओघके समान है।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग त्रसपर्याप्तकोंके समान है। अचक्षु-दर्शनवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। अवधिदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग अवधिज्ञानियोंके समान है। केवलदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग केवलज्ञानियोंके समान है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर कृष्णलेश्यामें दो समय कम सत्रह सागर, नीललेश्यामें दो समय कम सात सागर और कापोतलेश्यामें दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है। तथा उत्कृष्ट अन्तर कृष्णलेश्यामें एक समय कम तेतीस सागर, नीललेश्यामें एक समय कम सत्रह सागर और कापोतलेश्यामें एक समय कम सात सागर है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका उभयतः अन्तरकाल नहीं है। पीतलेश्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अड़तालीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक एक पल्य है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक दो सागर है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना

होदि ? णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं। पम्मलेस्सिएसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पक्खो । एगजीवं प० जह० वेसागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारससागरो० सादिरेयाणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि । सुक्कलेस्सिएसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी प० जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि मासा । एगजीवं प० जह० अट्ठारससागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि । तिसरीर-चदुसरीराणं तेउलेस्सियभंगो । भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणमोहिणाणी० भंगो । खइयसम्माइट्ठी० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० चदुरासीदिवस्ससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरो० समऊणाणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं[1] केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । वेदगसम्माइट्ठी० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प०

है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । पद्मलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर एक पक्ष है । एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारह सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः नहीं है । शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चार महीना है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तेतीस सागर है । तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग पीतलेश्यावाले जीवोंके समान है । भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्योंमें और अभव्योंमें ओघके समान भङ्ग है ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंका भङ्ग अवधिज्ञानियोंके समान है । क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम चौरासी हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तेतीस सागर है । तीन शरीरवालोंका भङ्ग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागर है । वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल

१. अ०का०प्रत्योः 'ओघं तिसरीराणमंतरं' इति पाठः ।

जह० एगसमओ, उक्क० मासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० वासपुधत्तं, उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि देसूणाणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदु-सरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । उवसमसम्माइट्ठी० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० सत्तरादिंदियाणि । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० सत्तरादिंदियाणि । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । सासण-सम्माइट्ठी० विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । सम्मा-मिच्छाइट्ठी० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । मिच्छा-इट्ठी० ओघं ।

कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर मासपृथक्त्व-प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छयासठ सागर है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्त-र्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छयासठ सागर है। उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर सात रात्रिदिन है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर सात रातदिन है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीव की अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। मिथ्यादृष्टियोंका भङ्ग ओघके समान है।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं पुरिसवेदभंगो। असण्णी० ओघं। णेवसण्णि-असण्णि० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं।

आहाराणुवादेण आहारिणो तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। णवरि चदुसरीराणं उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो। अणाहाराणं कम्मइयभंगो। णवरि जम्हि वास-पुधत्तमंतरं तम्हि छम्मासा।

एवमंतराणियोगद्दारं समत्तं।

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो—ओघेण आदेसेण य। ओघेण विसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं को भावो? ओदइओ भावो। एवं णेयव्वं जाव अणा-हारए त्ति।

एवं भावाणियोगद्दारं समत्तं।

अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ॥१६८॥

कुदो? दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियभेदेण दुविहाणं चेव सिस्साणमुवलंभादो।

ओघेण सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥१६९॥

कुदो? पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भङ्ग पुरुषवेदी जीवोंके समान है। असंज्ञियोंका भङ्ग ओघके समान है। न संज्ञी न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अनाहारकोंका भङ्ग कार्मणकाययोगियोंके समान है। इतनी विशेषता है कि जहां वर्षपृथक्त्व अन्तर है वहां छह महीना अन्तर कहना चाहिए।

विशेषार्थ—अयोगकेवलीका उत्कृष्ट अन्तर छह माह है, इसलिए अनाहारकोंमें तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर छह महीना कहा है।

इस प्रकार अन्तरानुयोगद्वार समाप्त हुआ।

भावानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कौन भाव है? औदयिक भाव है। इस प्रकार अनाहारक मार्गणा तक ले जाना चाहिए।

इस प्रकार भावानुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है—ओघ और आदेश ॥१६८॥

क्योंकि द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकके भेदसे दो प्रकारके ही शिष्य उपलब्ध होते हैं।

ओघसे चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥१६९॥

क्योंकि ये पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे गुणित जगश्रेणिप्रमाण होते हैं।

असरीरा अणंतगुणा ॥१७०॥

को गुणगारो ? सिद्धाणमसंखे०भागो । को पडिभागो ? चदुसरीरजीवा पडिभागो[1] ।

विसरीरा अणंतगुणा ॥१७१॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तेण खंडिदसव्वजीवरासिपमाणत्तादो । को गुण० ? सव्वजीव-रासिस्स अणंतिमभागो । को पडि० ? अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासी ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७२॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१७३॥

कुदो ? णेरइयरासिं आवलियाए असंखे०भागेण खंडिदएयखंडपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७४॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो । असंखेज्जवासाउएसु पलिदो० असंखे०भागो ।

उनसे अशरीरी जीव अनन्तगुणे हैं ॥१७०॥

गुणकार क्या है ? सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है ।

उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं ॥१७१॥

क्योंकि सब जीव राशिमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना इनका प्रमाण है । गुणकार क्या है ? सब जीवराशिका अनन्तवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अन्तर्मुहूर्तसे गुणित सिद्धराशि प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७२॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है ।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥१७३॥

क्योंकि नारकराशिमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण वहाँ दो शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७४॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तथा असंख्यात वर्षकी आयुवालोंमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

१. प्रतिषु 'चदुसरीरजीवपडिभागो' इति पाठः ।

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ॥१७५॥

सत्तसु[1] पुढवीसु पत्तेयं पत्तेयं अप्पाबहुअपरूवणे कीरमाणे जहा णिरओघम्हि वुत्तं तहा वत्तव्वं।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं ॥१७६॥

जहा मूलोघम्हि अप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा तिरिक्खेसु कायव्वा। णवरि असरीरा णत्थि। तं जहा—सव्वत्थोवा चदुसरीरा। विसरीरा अणंतगुणा। को गुणगारो? विसरीराणमसंखे०भागो। को पडि०? चदुसरीररासी। तिसरीरा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जावलियाओ।

पंचिंदियतिरिक्ख[2]-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥१७७॥

कुदो? पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो।

विसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७८॥

को गुण०? सेडिए असंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? चदुसरीरविक्खंभ-

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए ॥१७५॥

अलग अलग प्रत्येक पृथिवीमें अल्पबहुत्वका कथन करने पर जिस प्रकार सामान्य नारकियोंमें कहा है उस प्रकार कहना चाहिए।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥१७६॥

जिस प्रकार मूलोघमें अल्पबहुत्वप्ररूपणा की है उस प्रकार तिर्यञ्चोंमें करनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ अशरीरी जीव नहीं है। यथा—चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? दो शरीरवालोंके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? चार शरीरवालोंकी राशि प्रतिभाग है। उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात आवलियाँ गुणकार है।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥१७७॥

क्योंकि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उतना यहाँ चार शरीरवालोंका प्रमाण है।

उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७८॥

गुणकार क्या है? जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसका प्रतिभाग

१. ता०प्रतौ सूत्रानतरं 'सत्तसु पुढवीसु' इति पाठो नास्ति। २. अ०प्रतौ 'पंचिंदियतिरिक्ख-' इति पाठो नास्ति।

सूचीए गुणिदसगसगअवहारकालो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७९॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । कुदो ? आवलियाए असंखे०भाग-मेत्तउवक्कमणकालेण सगसगरासीए ओवट्टिदाए विसरीराणं पमाणुप्पत्तीदो । विग्गह-गदीए चेव उववज्जमाणा बहुगा ण उजुगदीए, उज्जुवाए गदीए उप्पज्जमाणोपदेसस्स थोवत्तुवलंभादो । के वि आइरिया उजुगदीए उप्पज्जमाणा जीवा बहुआ त्ति भणंति तेसिमहिप्पाएण गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो होदि । एदमत्थपदं सव्व-मग्गणासु परूवेयव्वं ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइय णं भंगो ॥१८०॥

जहा णेरइयाणमप्पाबहुगं परूविदं तहा एत्थ वि परूवेयव्वं । तं जहा— सव्वत्थोवा विसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो । पलिदो० असंखे०भागो गुणगारो त्ति सव्वमग्गणासु के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? संखेज्जावलियाहि सव्वजीवरासिम्मि ओवट्टिदे कम्मइय-रासिपमाणागमणंण्णहाणुववत्तीदो । जदि उप्पज्जमाणजीवाणमसंखेज्जो भागो विग्गहं

क्या है ? अपने अपने अवहारकाल को चार शरीरवालोंकी विष्कम्भसूचीसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७९॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण कालसे अपनी अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीर वालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है । विग्रहगतिसे ही उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं, ऋजुगतिमें नहीं, क्योंकि ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव स्तोक हैं ऐसा उपदेश पाया जाता है । कितने ही आचार्य ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं ऐसा कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायसे गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । यह अर्थपद सब मार्गणाओंमें कहना चाहिए ।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें नारकियोंके समान भङ्ग है ॥१८०॥

जिसप्रकार नारकियोंका अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार यहां भी कहना चाहिए । यथा— दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । सब मार्गणाओंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा भी कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि संख्यात आवलियोंसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर कार्मणराशिका प्रमाण आता है, अन्यथा वह बन नहीं सकता है । यदि उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी असंख्यातवें

१. अ०का० प्रत्योः '–पमाणगमण–' इति पाठः ।

कुणदि तो पलिदो० असंखे०भागेण गुणिदसंखेज्जावलियाओ सव्वजीवरासिस्स भागहारो होज्ज । ण च एवं, तहाणुवलंभादो तम्हा असंखे०भागो चेव उजुगदीए उप्पज्जदि त्ति घेतव्वं ।

मणुसगदीए मणुसा पंचिंदियतिरिक्खाणं भंगो ॥१८१॥

तं जहा—सव्वत्थोवा चदुसरीरा, संखेज्जपमाणत्तादो । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? विसरीराणं संखे०भागो । तस्स को पडिभागो ? चदुसरीरसंखेज्जजीवा । अथवा गुणगारो सेडीए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । पलिदो० असंखे०भागो गुणगारो होदि त्ति[1] पुव्वं व परूवेयव्वं ।

मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥१८२॥

विउव्वमाणाणमाहारसरीरेण परिणमंताणं अइथोवत्तदंसणादो ।

विसरीरा संखेज्जगुणा ॥१८३॥

विउव्वमाणजीवेहितो विग्गहगदीए उप्पज्जमाणजीवाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

भागप्रमाण जीवराशि विग्रह करती है तो पल्यके असंख्यातवें भागसे संख्यात आवलियोंके गुणित करने पर समस्त जीवराशिका भागहार होवे । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि उस प्रकार भागहार नहीं उपलब्ध होता, इसलिए असंख्यातवें भागप्रमाण राशि ही ऋजुगतिसे उत्पन्न होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भङ्ग है ॥१८१॥

यथा–चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि उनका प्रमाण संख्यात है । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? दो शरीरवालोंके संख्यातके भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले संख्यात जीव प्रतिभाग है । अथवा गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा पहलेके समान कहना चाहिए ।

मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥१८२॥

क्योंकि विक्रिया करनेवाले और आहारक शरीररूपसे परिणत हुए मनुष्य अति स्तोक देखे जाते हैं ।

उनसे दो शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ॥१८३॥

क्योंकि विक्रिया करनेवाले जीवोंसे विग्रहगतिसे उत्पन्न होवाले उक्त मनुष्य संख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं ।

१. ता०प्रतौ 'गुणगारो [ण–] होज्जदि त्ति' इति पाठः ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा ॥१८४॥

सुगमं ।

मणुसअपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥१८५॥

तं जहा—सव्वत्थोवा विसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे० भागो ।

देवगदीए देवा सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१८६॥

कुदो ? सगरासी अवलिं० असंखे० भागेण खंडिदेय -[खंड-] पमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१८७॥

को गुण० ? आवलि० असंखे० भागो । कुदो ? संखेज्जवासाउअदेवेसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा त्ति णेयव्वं ॥१८८॥

णवरि जोइसियप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारदेवेसु गुणगारो पलिदो० असंखे०-भागो होदि, तत्थ संखेज्जवासाउआणमभावादो । आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदं

उनसे तीन शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ॥१८४॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्तकोंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ॥१८५॥

यथा—दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

देवगतिकी अपेक्षा दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं ॥१८६॥

क्योंकि अपनी राशिको आवलिके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे तत्प्रमाण दो शरीरवाले देव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले देव असंख्यातगुणे हैं ॥१८७॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमानवासी तकके देवोंमें जानना चाहिए ॥१८८॥

इतनी विशेषता है कि ज्योतिषियोंसे लेकर शतार सहस्रार कल्प तकके देवोंमें गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि वहां पर संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका अभाव

१. ता०प्रतौ 'देवा (वेसु) सव्वत्थोवा' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'सगरासी (सिं) आवलि' इति पाठः ।

त्ति जेण विसरीरा तत्थ संखेज्जा तेण तत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखे०भागो।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१८९॥

सुगमं।

तिसरीरा संखेज्जगुणा ॥१९०॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरएइंदियपज्जत्ता ओघं ॥१९१॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा। विसरीरा अणंतगुणा। तिसरीरा असंखेज्जगुणा त्ति भेदाभावादो।

बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१९२॥

विग्गहगदीए सगसगरासीणमसंखे०भागस्स उप्पत्तिदंसणादो। णवरि णिरंतररासीसु सगसगट्ठिदीए सगसगदव्वे भागे हिदे एगसमयसंचिदविसरीराणं पमाणं होदि।

है। आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें यतः दो शरीरवाले वहां संख्यात हैं अतः वहां भी गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं ॥१८९॥

यह सूत्र सुगम है।

उनसे तीन शरीरवाले संख्यातगुणे हैं ॥१९०॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय-पर्याप्तकोंका भङ्ग ओघके समान है ॥१९१॥

क्योंकि उनमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं, इस दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

बादर एकेन्द्रि अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥१९२॥

क्योंकि विग्रहगतिमें अपनी अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। इतनी विशेषता है कि निरन्तर राशियोंमें अपनी अपनी स्थितिका अपने अपने द्रव्यमें

सांतराणं णिरंतरुवक्कमणकालसहिदंतरेण सगट्ठिदिमोवट्टिय णिरंतरुवक्कमणकालेण गुणिदे सव्वुक्कमणकालो होदि तेण सगसगदव्वे भागे हिदे एगसमयसंचिदविसरीर[1]-जीवपमाणं होदि ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१९३॥

को गुण० ? णिरंतररासीसु संखेज्जावलियाओ । अण्णत्थ आवलि० असंखे०भागो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता मणुसगदिभंगो ॥१९४॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखे०गुणा । तिसरीरा असंखेज्ज-गुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिदे अत्थि भेदो । कुदो ? मणुस्सेसु संखेज्जाणं चदुसरीराण पंचिदिएसु असंखेज्जाणमुवलंभादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता

भाग देनेपर एक समयमें संचित हुए दो शरीरवालोंका प्रमाण होता है। सान्तरराशियोंमें निरन्तर उपक्रमण कालसे सहित अन्तरसे अपनी स्थितिको भाजित कर जो लब्ध आवे उसे निरन्तर उपक्रमण कालसे गुणित करने पर सब उपक्रमणकालका प्रमाण होता है, पुन: उससे अपने अपने द्रव्यके भाजित करने पर एक समयमें सचित हुए दो शरीरवाले जीवोंका प्रमाण होता है।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१९३॥

गुणकार क्या है ? निरन्तर राशियोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है। अन्यत्र आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंमें मनुष्यगतिके समान भङ्ग है ॥१९४॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे है, इस अल्पबहुत्वसे यहां कोई भेद नहीं है। परन्तु पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करने पर भेद है ही, क्योंकि चार शरीरवाले जीव मनुष्योंमें संख्यात और पञ्चेन्द्रियोंमें असंख्यात उपलब्ध होते हैं।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद-जीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा उनके पर्याप्त

१. प्रतिषु '-सचिदसरीर-' इति पाठः ।

सव्वत्थोवा विसरीरा ॥१९५॥

सगसगरासिम्हि संखेज्जावलियमेत्तमज्झिमट्ठिदीए भागे हिदे सगसगविसरीर-पमाणुप्पत्तीदो । तसकाइयअपज्जत्तएसु आवलियाए असंखे०भागेण सगरासिम्हि ओवट्टिदे विसरीराणमुप्पत्तिदंसणादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१९६॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तसअपज्जत्तएसु अण्णत्थ संखेज्जा-वलियाओ ।

तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयपज्जत्ता तस-काइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिंदियपज्जत्तभंगो ॥१९७॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा इच्चेदेहि तत्तो भेदाभावादो । गुणगारेण दव्वपमाणेण च भेदो अत्थि सो एत्थ ण विवक्खिदो । सो च भेदो जाणिय परूवेयव्वो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि--पंचवचिजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥१९८॥

और अपर्याप्त तथा त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥१९५॥

क्योंकि अपनी अपनी राशिमें संख्यात आवलिप्रमाण मध्यम स्थितिका भाग देने पर अपने अपने दो शरीरवालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है। त्रसकायिक अपर्याप्तकोंमें आवलिके असंख्यातवें भागसे अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीरवालोंकी उत्पत्ति देखी जाती है।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१९६॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। अन्यत्र त्रसअपर्याप्तकोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकपर्याप्त, बादर वायुकायिक और बादर वायुकायिकपर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ॥१९७॥

क्योंकि चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है। गुणकार और द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा यद्यपि भेद है परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं है। तथा उस भेदको जानकर कहना चाहिए।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥१९८॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१९९॥

को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो ।

कायजोगी ओघं ॥२००॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥२०१॥

कुदो ? पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा अणंतगुणा ॥२०२॥

को गुण० ? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्स-कायजोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु णत्थि अप्पा-बहुअं ॥२०३॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥१९९॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

काययोगवाले जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥२००॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

औदारिककाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥२०१॥

क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥२०२॥

गुणकार क्या है ? सब जीव राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारक-काययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥२०३॥

क्योंकि इनमे एक ही पद है ।

कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा ॥२०४॥

कुदो ? पदर-लोगपूरणगदसजोगीणं संखेज्जाणं चेव उवलंभादो ।

विसरीरा अणंतगुणा ॥२०५॥

को गुण० ? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिंदियभंगो ॥२०६॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघ ॥२०७॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा[1] । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

अवगदवेद-अकसाईणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥२०८॥

कार्मणकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥२०४॥

क्योंकि प्रतर और लोकपूरण अवस्थाको प्राप्त हुए सयोगिकेवली संख्यात ही उपलब्ध होते हैं।

उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं ॥२०५॥

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदवाले और पुरुषवेदवाले जीवोंमे पञ्चेन्द्रियोंके समान भङ्ग है ॥२०६॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद नहीं है ।

नपुंसकवेदवाले जीवों तथा कषाय मार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ।२०७॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

अपगतवेदी और अकषायी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥२०८॥

१. अ०प्रतौ 'चदुसरीरा अणंतगुणा' इति पाठः ।

कुदो ? एगपदत्तादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणी ओघं[1] ॥२०९॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा इच्चेदेहि विसेसाभावादो ।

विहंगणाणी सव्वत्थोवा[2] चदुसरीरा ॥२१०॥

कुदो ? पलिदो० असंखे०भागेण गुणिदघणंगुलमेत्तजगसेडिपमाणतिरिक्खविभंग-णाणीणमसंखे०भागत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२११॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखे०भागो ।

आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु पंचिंदियपज्जत्ताण भंगो ॥२१२॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलियाए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे-

क्योंकि इनमें एक ही पद है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥२०९॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

विभङ्गज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥२१०॥

क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥२११॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

आभिनिवोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ॥२१२॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले

१. ता०प्रतौ '-सुदअण्णाणीसु ओघं-' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'विहंगणाणीसु सव्वत्थोवा' इति पाठः ।

भागो इच्चेदेसु पदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो, दव्व-गुणगारगयभेदाणं विवक्खाभावादो ।

मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥२१३॥

विउव्वमाणमणपज्जवणाणिसंजदाणं[1] सुट्ठु थोवत्तुवलंभादो ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा[2] ॥२१४॥

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

केवलणाणीसु णत्थि अप्पाबहुगं ॥२१५॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मणपज्जवणाणिभंगो ॥२१६॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा[3] संखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥२१७॥

जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इत्यादि पदोंमें असंख्यातगुणेपनेकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे इनमें कोई भेद नहीं है । तथा द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और गुणकारकी अपेक्षा रहनेवाले भेदकी यहां विवक्षा नहीं है ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥२१३॥

क्योंकि विक्रिया करनेवाले मनःपर्ययज्ञानी संयत जीव बहुत ही स्तोक पाये जाते हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं ॥२१४॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

केवलज्ञानियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥२१५॥

क्योंकि उनमें एक ही पद पाया जाता है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान भङ्ग है ॥२१६॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा मनःपर्ययज्ञानियोंसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंका अल्पबहुत्व नहीं है ॥२१७॥

१. ता०प्रतौ '-माणम [णपज्जव] णाणि-' अ०का०प्रत्योः '-माणमणाणि-' इति पाठः ।
२. ता०प्रतौ 'तिसरीरा [अ] संखेजगुणा' अ०का०प्रत्योः 'तिसरीरा असंखेजगुणा' इति पाठः ।
३. ता०प्रतौ 'चदुसरीरा । वि (ति) सरीरा' अ०का०प्रत्योः 'चदुसरीरा विसरीरा' इति पाठः ।

कुदो ? एगपदत्तादो ।

संजदासजदा विभंगणाणिभंगो ॥२१८॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुणगारो ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो ।

असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं ॥२१९॥

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिया भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं ॥२२०॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । बिसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा । को गुण० ? संखेज्जावलियाओ इच्चेदेण भेदाभावादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहिदंसणी तेउलेस्सिया पम्म-लेस्सिया पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥२२१॥

कुदो ? पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेण च भेदाभावादो । अत्थदो पुण अत्थि

क्योंकि इन मार्गणाओंमें एक ही पद है ।

संयतासंयतोंमें विभङ्गज्ञानियोंके समान भंग है ॥२१८॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार इनमें असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

असंयत और अचक्षुदर्शनवाले जीवोंका भङ्ग ओघके समान है ॥२१९॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले नीललेश्यावाले और कापोतलेश्या-वाले तथा भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य और अभव्य जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥२२०॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात आवलियां गुणकार है । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा यहां कोई भेद नहीं है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले और अवधिदर्शनवाले तथा पीत-लेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भंग है ॥२२१॥

क्योंकि पदोंकी संख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । अर्थकी

१. म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ सूत्रमिदं पृथक् नोपलभ्यते । अ०प्रतौ अस्मिन् सूत्रे 'ओघं' इति पाठः तथा का०प्रतौ 'असंजद' इति पाठो नोपलभ्यते ।

भेदो । तं जहा—चक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुणगारो । आवलि० असंखे०भागो । [1]ओहिदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा[2] असंखेज्ज-गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तिसरीरा[3] असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तेउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्ज-गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । अहवा गुणगारो ण णव्वदे, विसिट्ठुव-एसाभावादो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एवं पम्मलेस्सियाणं ।

केवलदंसणीणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥२२२॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

सुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा विसरीरा ॥२२३॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२२४॥

अपेक्षा तो भेद है ही । यथा – चक्षुदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अवधिदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पीतलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अथवा गुणकारका ज्ञान नहीं है, क्योंकि इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इसी प्रकार पद्मलेश्यावालोंके जानना चाहिए ।

केवलदर्शनवालोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥२२२॥

क्योंकि इनमें एक ही पद है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥२२३॥

क्योंकि इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥२२४॥

१. का०प्रतौ 'ओहिदंसणीसु' इत आरभ्य 'तेउलेस्सिएसु' इति यावत् पाठो नोपलभ्यते । २. ता०प्रतौ 'चदुसरीरा । ति (वि) सरीरा' इति पाठः । ३. ता०प्रतौ 'असंखे०भागो । वि (ति) सरीरा' इति पाठः ।

को गुण० ? पलिदोवमस्स असंखे०भागस्स संखे०भागो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२२५॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी-पंचिंदियपज्जत्तभंगो ॥२२६॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । बिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो त्ति पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेणं[1] च भेदाभावादो ।

खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा बिसरीरा ॥२२७॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२२८॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥२२५॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भंग है ॥२२६॥

क्योंकि चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इसप्रकार पदसंख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥२२७॥

क्योंकि इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥२२८॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

१. अ०का०प्रत्योः 'पदसंखा असंखेज्जगुणत्तणेण' इति पाठः ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२२९॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो।

सम्मामिच्छाइट्ठी संजदासंजदाणं भंगो ॥२३०॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा। तिसरीरा असंखे०गुणा। को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेहि भेदाभावादो।

मिच्छाइट्ठी ओघं ॥२३१॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा। विसरीरा अणंतगुणा। तिसरीरा असंखे०गुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो।

सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥२३२॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा। विसरीरा असंखे०गुणा। को गुण० ? सेढीए असंखे०भागो। तिसरीरा असंखे०गुणा। को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेहि भेदाभावादो।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥२२९॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें संयतासंयतोंके समान भङ्ग है ॥२३०॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इस प्रकार इसकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है।

मिथ्यादृष्टियोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥२३१॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं। उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ॥२३२॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे संज्ञी जीवोंमें कोई भेद नहीं है।

असण्णी ओघं ॥२३३॥

सुगमेदं ।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओरालियकायजोगिभंगो ॥२३४॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ॥२३५॥

सव्वत्थोवा तिसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरिसरीरपरूवणा त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

असञ्ज्ञियोंमें ओघके समान भंग है ॥२३३॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें औदारिककाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३४॥

क्योंकि चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे तीन शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं। इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिककाययोगियोंसे आहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है।

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३५॥

क्योंकि तीन शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं। इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंसे अनाहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है।

विशेषार्थ बाह्य वर्गणाके मुख्य भेद चार हैं--शरीरिशरीरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा। साधारणत: संसारी जीवोंके कुल पाँच शरीर होते हैं। उनका जीवोंके साथ कथन करना कि किस जीवके किस अपेक्षासे कितने शरीर होते हैं इसे शरीरिशरीरप्ररूपणा कहते हैं। यहां इसी अनुयोगद्वारका सत्, संख्या आदि आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विवेचन किया गया है। साधारणत: यहां यही बात बीजरूपमें बतलानी है कि ये पाँच शरीर किस नियमके साथ किसके कितने होते हैं। यह तो सामान्य नियम है कि सब संसारी जीवोंके तैजसशरीर और कार्मणशरीर निरन्तर बना रहता है। इन दो शरीरोंका अयोगिकेवलीके अन्तिम समय तक अभाव नहीं होता। इसका अर्थ यह नहीं कि अनादि काल पहले जीवके साथ जिस तैजस और कार्मणशरीरका सम्बन्ध था उसीका आज भी सम्बन्ध बना हुआ है। अभिप्राय यह है कि बन्धसन्ततिका विच्छेद न होनेसे इन दोनों शरीरोंका संसारमें कभी अभाव नहीं होता। अब शेष रहे तीन शरीर–औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सो ये किसके और कबसे होते हैं इस बातका पहले यहां

पर निर्णय कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। निश्चित नियम यह है कि जीव विग्रहगतिमें अनाहारक होता है। वर्तमान पर्यायका वियोग होकर उत्तर पर्यायके शरीरके ग्रहणके लिए जीवकी गति दो प्रकारकी होती है—एक ऋजुगति और दूसरी विग्रहगति। ऋजुगतिका अर्थ मोड़े रहित गतिसे है और विग्रहगतिका अर्थ मोड़ेवाली गतिसे है। जो जीव वर्तमान पर्यायका त्याग कर ऋजुगतिसे दूसरी पर्यायके शरीरको ग्रहण करनेके लिए गमन करता है वह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि यहां पर शरीरका त्याग होकर उत्तर पर्यायके शरीरके ग्रहणमें कालभेद उपलब्ध नहीं होता। अब रहा मोड़ेवाली गतिका विचार सो उसमें पूर्व पर्यायके त्यागके साथ ही यद्यपि उत्तर पर्यायकी प्राप्ति हो जाती है परन्तु उत्तर पर्यायकी अवस्थितिके लिए शरीरका ग्रहण जब तक जीव मोड़ोंको पार नहीं करता तब तक नहीं होता, इसलिए यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि जीव विग्रहगतिमे कमसे कम दो शरीरवाला होता है। उन दो शरीरोंके नाम तैजसशरीर और कार्मणशरीर हैं और ये ही अनादि सम्बन्धवाले हैं। हम पहले कह आये हैं कि विग्रहगतिमे जीव अनाहारक रहता है। यहां अनाहारकसे तात्पर्य है कि ऐसा जीव औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीन शरीरों और छह पर्याप्तियोंके योग्य पुद्गलोंको नहीं ग्रहण करता। विग्रहगतिमें स्थित जीव एक तो इन तीन शरीरोंके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण नहीं करता, इसलिए उसके इनमेंसे किसी भी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। दूसरे पूर्व पर्यायमें ग्रहण किये गये शरीर का उसी पर्यायके त्यागके साथ त्याग हो जाता है, इसलिए भी उसके इन तीन शरीरोंमेंसे किसी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। अब यह देखना है कि ये तीन शरीर किस जीवके किस क्रमसे उपलब्ध होते हैं। इस सम्बन्धमें साधारण नियम यह है कि तिर्यञ्चों और मनुष्योंके जब औदारिक-शरीर नामकर्मका उदय होता है, तब इन पर्यायोंके मिलने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे इस जीवके औदारिकशरीर पाया जाता है। देवों और नारकियोंके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है, इसलिए इनके भवग्रहण करने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक-शरीर उपलब्ध होता है। तथा प्रमत्तसंयत जीवके आहारक ऋद्धिकी प्राप्ति होनेपर आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे कारण विशेषके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारक शरीर उपलब्ध होता है। इसप्रकार अधिकारी भेदसे यह तो ज्ञात हो जाता है कि किसके कबसे लेकर कितने शरीर होते हैं। यदि तिर्यञ्च और मनुष्य है तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण ये दो शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर उसके औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर ये तीन शरीर अवश्य ही उपलब्ध होंगे। यदि देव और नारकी है तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण ये चार शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होंगे। इस प्रकार अधिकारी भेदसे तीन शरीर किस प्रकार पाये जाते हैं इसका विचार किया। अब चार शरीर किसके किस प्रकार सम्भव हैं इसका विचार करना है। पहले हम यह तो कह ही आये हैं कि किसी प्रमत्त-संयत जीवके योग्य सामग्रीके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारकशरीरकी प्राप्ति सम्भव है। इसका यह अर्थ हुआ कि मनुष्य होनेके नाते उसके औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर तो पाये ही जाते हैं साथ ही उसके चौथा आहारकशरीर भी हो जाता है। यह कैसे होता है इसका खुलासा इस प्रकार है—कि जब किसी प्रमत्तसंयत जीवको तत्त्वविषयक सूक्ष्म शंका होती है और जिस क्षेत्रमे वह है वहाँ उसका परिहार होना सम्भव नहीं होता या जब किसी तीर्थंकरको निष्क्रमण आदि कल्याणककी प्राप्ति होती है और देवादिके आने जानेसे इसकी सूचना मिलने पर वह प्रमत्तसंयत जीव वन्दनाके लिए जाना चाहता है या इसी प्रकारका अन्य कारण मिलने

पर वह प्रमत्तसंयत जीव आहारक ऋद्धिके सद्भावमें आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे औदारिक शरीरसे भिन्न आहारकशरीरको उत्पन्न करता है और वह आहाकशरीर उक्त प्रयोजनकी पूर्ति कर विघटित हो जाता है। जिस समय आहारकशरीर उत्पन्न होकर अपना कार्य करता है उस समय औदारिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं रहता और औदारिककाययोग भी नहीं होता। उतने काल तक औदारिकशरीर बना अवश्य रहता है और पूरी तरहसे जीवका उससे सम्बन्ध विच्छेद भी नहीं होता पर क्रियाका प्रयोजक वह नहीं होता। इस प्रकार ऐसे जीवके औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर होते हैं। चार शरीरोंकी प्राप्तिका दूसरा प्रकार यह है कि पर्याप्त अग्निकायिक और पर्याप्त वायुकायिक जीव तथा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यञ्चऔर मनुष्यऔदारिक-शरीरके रहते हुए भी विक्रिया करते हैं। इनके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय न होकर औदारिक-शरीरकी ही यद्यपि यह विशेषता होती है फिर भी विक्रिया रूप गुणको देखकर इसकी वैक्रियिकशरीर संज्ञा है। साथ ही यह ऐसे ही जीवके होता है जिसके वैक्रियिकशरीर चतुष्ककी सत्ता होती है। श्वेताम्बर कर्मसाहित्यमें तो उस समय वैक्रियिकशरीर चतुष्कका उदय तक माना गया है। इस प्रकार इन जीवोंके औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर बन जाते हैं। पाँच शरीर किसी एक के सम्भव नहीं हैं, क्योंकि वैक्रियिक और आहारकशरीरकी प्राप्ति एक साथ नहीं होती। इस प्रकार गति आदि मार्गणाओंमें किस प्रकार किस मार्गणामें कितने शरीर होते हैं यह घटित कर लेना चाहिए। यहाँ एक विशेष बातका निर्देश करना है वह यह कि केवली जिन केवलिसमुद्घातके समय तीन समय तक अनाहारक होते हैं और अयोगिकेवली भी अनाहारक होते हैं फिर भी उनके औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होते हैं। कारण स्पष्ट है। आठ अनुयोगद्वारोंके अन्तमें सब विशेषताओंका संक्षेपमें ज्ञान करानेके अभिप्रायसे इतना निर्देश किया है।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर शरीरिशरीरप्ररूपणा
नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

सरीरपरूवणा

सरीरपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणियोगद्दाराणि—णामणिरुत्ती पदेसपमाणाणुगमो णिसेयपरूवणा गुणगारो पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति ॥२३६॥

णामणिरुत्ती किमट्ठं वुच्चदे ? पंचण्णं सरीराणं णामाणि गोण्णाणि णोअगोण्णाणि त्ति जाणावणट्ठं। पदेसपमाणाणुगमो किमट्ठं परूविज्जदे ? ण पंचण्णं[1] सरीराणं पदेसपमाणे[2] अणवगए संते तेसिमवगमाणुववत्तीदो। णिसेयपरूवणा किमट्ठं वुच्चदे ? पंचण्णं सरीराणं समयपबद्धाणं पदेसपिंडस्स बंधमागच्छंतस्स कालो सरिसो ण होदि किंतु विसरिसो होदि। एक्केक्ककालविसेसे एत्तिया एत्तिया परमाणू होंति त्ति जाणावणट्ठं च णिसेयपरूवणा कीरदे। जहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वमेत्तियगुणं होदि त्ति जाणावणट्ठं पंचण्णं सरीराणं पदेसमाहप्पजाणावणट्ठं च गुणगारो वुच्चदे। जहण्णु-

शरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वार होते हैं—नामनिरुक्ति, प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकप्ररूपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व ॥२३६॥

नामनिरुक्तिका कथन किसलिए करते हैं ? पाँच शरीरोंके नाम गौण्य हैं नोगौण्य नहीं हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए नामनिरुक्ति अधिकार आया है। प्रदेशप्रमाणानुगमका कथन किसलिए करते हैं ? पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका ज्ञान नहीं होने पर उनका ज्ञान नहीं हो सकता, इसलिए प्रदेशप्रमाणानुगम अधिकार आया है। निषेकप्ररूपणा किसलिए करते हैं ? पाँच शरीरोंके समयप्रबद्धोंके प्रदेशपिण्डका बन्ध होने पर उसका काल सदृश नहीं है किन्तु विसदृश है तथा एक एक काल विशेषमें इतने इतने परमाणु होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए निषेकप्ररूपणा करते हैं। जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य इतना गुणा है इस बातका ज्ञान करानेके लिए और पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके माहात्म्यको जाननेके लिए गुणकार अधिकारका कथन करते हैं।

१. ता०का०प्रत्योः 'परूविज्जदे ? पंचण्णं' इति पाठः। २. ता०का०प्रत्योः 'पदेसपमाणं' इति पाठः।

क्कस्सादिपदपरिक्खट्ठं पदमीमांसा वुच्चदे। पंचण्णं सरीराणं पदेसग्गथोवबहुत्तजाणावणट्ठमप्पाबहुअं वुच्चदे । एदेहि छहि अणियोगद्दारेहि विणा सरीरपरूवणाणुववत्तीदो। एत्थ एदेहि परूवणा कीरदे—

णामणिरुत्तीए उरालमिदि ओरालियं ॥२३७॥

उराल थूलं वट्टं महल्लमिदि[1] एयट्ठो। कुदो उरालत्तं? ओगाहणाए। सेससरीराणं ओगाहणादो एदस्स सरीरस्स ओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियसरीरमुराले त्ति गहिदं। कुदो बहुत्तमवगम्मदे? महामच्छोरालियसरीरस्स पंचजोयणसदविक्खंभेण जोयणसहस्सायामदंसणादो। 'इदि' सद्दो हेदु-विवक्खाणमुववत्तीदो उरालमेव ओरालियमिदि सिद्धं[2]। अथवा सेससरीराणं वग्गणोगाहणादो ओरालियसरीरस्स वग्गणओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियवग्गणाणमुरालमिदि सण्णा। ओरालियवग्गणोगाहणाए बहुत्तं कुदो णव्वदे? चूलियअप्पाबहुआदो। तं जहा—सव्वत्थोवाओ

जघन्यपद और उत्कृष्टपद आदिकी परीक्षा करनेके लिए पदमीमांसा अधिकारका कथन करते हैं। पाँच शरीरोंके प्रदेशोंका अल्पबहुत्व जाननेके लिए अल्पबहुत्व अधिकारका कथन करते हैं। इन छह अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरप्ररूपणा नहीं हो सकती, इसलिए यहाँ इनके द्वारा प्ररूपणा करते हैं—

नामनिरुक्तिकी अपेक्षा उराल है इसलिए औदारिक है ॥२३७॥

उराल, स्थूल, वृत्त और महान् ये एकार्थवाची शब्द हैं।

शंका—यह उराल क्यों है?

समाधान—अवगाहनाकी अपेक्षा उराल है। शेष शरीरोंकी अवगाहनासे इस शरीरकी अवगाहना बहुत है, इसलिए औदारिकशरीर उराल है ऐसा ग्रहण किया है।

शंका—इसकी अवगाहनाके बहुत्वका ज्ञान कैसे होता है?

समाधान—क्योंकि महामत्स्यका औदारिकशरीर पाँचसौ योजन विस्तारवाला और एक हजार योजन आयामवाला देखा जाता है।

सूत्रमें आया हुआ 'इति' शब्द हेतुवाची और विवक्षावाची बन जाता है, इसलिए उराल ही ओरालिय है ऐसी उसकी निरुक्ति सिद्ध होती है। अथवा शेष शरीरोंकी वर्गणाओंकी अवगाहनकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगाहना बहुत है इसलिए औदारिकशरीरकी वर्गणाओं की उराल ऐसी संज्ञा है।

शंका—औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगाहना बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—चूलिकाके अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। यथा—कार्मणशरीरकी द्रव्यवर्गणाएँ

१. म०प्रतिपाठोऽयम्। ता० का०प्रत्योः 'महल्लमिदि' इति पाठः। २. प्रतिषु 'ओरालियं तमद्धा' इति पाठः।

कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए। मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ। भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ। तेयासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेगुणाओ। आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ। वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ। ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ त्ति। एदेहि उरालेहि पोग्गलेहि भवमिदि ओरालियं। अथवा उरालं जेट्ठं पहाणमिदि एयट्ठो। उदारसद्दादो उरालसद्दणिप्फत्तीए कथमोरालियसरीरस्स महल्लत्तं ? णिव्वुइगमणहेदुअट्ठारससीलसहस्सुप्पत्तिणिमित्तभावादो। तम्हि उराले भवमोरालियं। अथवा उरालमेव ओरालियमिदि घेत्तव्वं। ओरालियसरीरमोगाहणाए चेव सेससरीरेहिंतो महल्लं, ण पदेसग्गेण विस्सासुवचयेहि वा त्ति कथं णव्वदे ? सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा। वेउव्वियसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा। को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो। आहारसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा। को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो। तेजासरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। कम्मइयसरीरस्स

अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं। मनोद्रव्यवर्गणाएं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं। भाषाद्रव्यवर्गणाऐं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं। तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाऐं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं। आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं। वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं। औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं।

इन उराल पुद्गलों से हुआ है, इसलिए औदारिक है। अथवा उराल, ज्येष्ठ और प्रधान ये एकार्थवाची शब्द हैं।

शंका--उदार शब्दसे उराल शब्दकी निष्पत्ति होने पर औदारिकशरीरकी महानता कैसे बनती है ?

समाधान--क्योंकि यह निर्वृत्तिगमनका हेतु है और अठारह हजार शीलोंकी उत्पत्तिका निमित्त है, इसलिए इसकी महानता बन जाती है।

उस उरालमें जो होता है वह औदारिक है। अथवा उराल ही औदारिक है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

शंका--औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा ही शेष शरीरोंसे महान् है, प्रदेशाग्र और विस्रसोपचयोंकी अपेक्षासे नहीं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान--औदारिशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरके नाना समयोमें संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उनसे आहारकशरीरके नाना समयों मे संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उनसे तैजसशरीरके नाना समयोमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उनसे कार्मणशरीरके

णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-मणंतभागो। विस्सासुवचयं पडुच्च सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णो विस्सासुव-चओ। तस्सेवुक्कस्सओ असंखे०गुणो। को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ असंखे०गुणो। को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो। आहारसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ असंखेज्जगुणो। को गुण० ? पलिदो० असंखेज्जदि-भागो। तेजासरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेवुक्कस्सओ असंखे०गुणो। को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णओ[1] विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण० ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्क० विस्सासु० उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो। को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो, एदम्हादो अप्पाबहुगादो णव्वदे। सुत्तेण विणा एदं कुदो णव्वदे ? बंधणगुणाविभागपडिच्छेदप्पाबहुअसुत्तसिद्धत्तादो। तं जहा— सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा। वेउव्वियसरीरस्स अविभाग-पडिच्छेदा अणंतगुणा। आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। तेयासरीरस्स

नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। विस्रसोपचयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे आहारकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे तैजसशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उससे उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इस अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

शंका—सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह अल्पबहुत्व बन्धनगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे सिद्ध है। यथा—औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं। उनसे आहारकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद

१. ता०प्रतौ '–सरीरस्स जहण्णओ' इति पाठः।

अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। एदं कारणस्सप्पाबहुअं विस्सासुवचयाणं कथं होदि ? ण, विस्सासुवचयमहिकिच्च परूविदअप्पाबहुअस्स अण्णहाभावविरोहादो। जहण्णादो उक्कस्सस्स असंखेज्जगुणत्तं कुदो सिद्धं ? अण्णहा जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सियाओ अणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण च एदं, उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए हेट्ठा जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए उप्पत्तिप्पसंगादो। जहण्णविस्सासुवचयादो सत्थाणुक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो त्ति सुत्तेण कथं णेदस्स विरोहो ? ण, जीवमुक्कपंचसरीरपरमाणुट्ठिदविस्सासुवचयमहिकिच्च तदप्पाबहुअपउत्तीए। तदो ओरालियसरीरस्स ओगाहणादो चेव थूलत्तं घेत्तव्वं।

विविहइड्ढिगुणजुत्तमिदि[1] वेउव्वियं ॥२३८॥

अणिमा महिमा लहिमा पत्ती पागम्मं ईसित्तं वसित्तं कामरूवित्तमिच्चेवमादियाओ अणेयविहाओ इद्धीओ णाम। एदेहि इद्धिगुणेहि जुत्तमिदि काऊण वेउव्वियं त्ति भणिदं।

अनन्तगुणे हैं। उनसे तैजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं। उनसे कार्मणशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं।

शंका--यह कारणसम्बन्धी अल्पबहुत्व विस्रसोपचयोंका कैसे हो सकता है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि विस्रसोपचयको अधिकृत कर प्ररूपित किये गये अल्पबहुत्वके अन्यथारूप होनेमें विरोध है।

शंका--अपने जघन्यसे अपना उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है यह किस प्रमाणसे सिद्ध है ?

समाधान--यदि ऐसा न माना जावे तो जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाके अनन्त गुणे होनेका प्रसङ्ग आता है। परन्तु यह है नहीं, क्योंकि यह होनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे जघन्य बादर निगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग आता है।

शंका--जघन्य विस्रसोपचयसे स्वस्थानमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है इस सूत्रके साथ इस व्याख्यानका विरोध कैसे नहीं है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि जीवमुक्त पाँच शरीरोंके परमाणुओंपर स्थित हुए विस्रसोपचयको अधिकृत करके उस अल्पबहुत्वकी प्रवृत्ति होती है।

इसलिए औदारिकशरीरका अवगाहनाकी अपेक्षा ही स्थूलपना ग्रहण करना चाहिए।

विविध गुणऋद्धियोंसे युक्त है, इसलिए वैक्रियिक है ॥२३८॥

अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व और कामरूपित्व इत्यादि अनेक प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं। इन ऋद्धिगुणोंसे युक्त है ऐसा समझकर वैक्रियिक है ऐसा कहा है।

१. ता॰प्रतौ 'विविहगुणजुत्तमिदि।' इति पाठः।

णिवुणाणं वा णिण्णाणं वा सुहुमाणं वा आहारदव्वाणं सुहुमदरमिदि[1] आहारयं ॥२३९॥

असंजमबहुलदा आणाकणिट्ठदा सगखेत्ते केवलिविरहो त्ति एदेहि तीहि कारणेहि साहू आहारसरीरं पडिवज्जंति। जल-थल-आगासेसु अक्कमेण सुहुमजीवेहि दुप्परिहरणिज्जेहि आऊरिदेसु असंजमबहुलदा होदि। तप्परिहरणट्ठं हंसांसधवल-मप्पडिहयं आहारवग्गणाक्खंधेहि णिम्मिद हत्थमेत्तुस्सेहं आहारसरीरं साहू पडि-वज्जंति। तेणेदमाहारपडिवज्जणमसंजदबहुलदाणिमित्तमिदि भण्णदि। आणा सिद्धंतो आगमो इदि एयट्ठो। तिस्से कणिट्ठदा सगखेत्ते थोवत्तं आणाकणिट्ठदा णाम। एदं विदियं कारणं। आगमं मोत्तूण अण्णपमाणाणं गोयरमइक्कमिदूण ट्ठिदेसु दव्वपज्जाएसु संदेहे समुप्पण्णे सगसंदेहविणासणट्ठं परखेत्तट्ठियसुदकेवलि-केवलीणं वा पादमूलं गच्छामि त्ति चिंतविदूण आहारसरीरेण परिणमिय गिरि-सरि-सायर--मेरु--कुलसेल-पायालाणं गंतूण विणएण पुच्छिय विणट्ठसंदेहा होदूण पडिणियत्तिदूण आगच्छंति त्ति भणिदं होइ। परखेत्तम्हि महामुणीणं केवलणाणुप्पत्ती परिणिव्वाणगमणं परिणिक्खमणं वा तित्थयराणं तदियं कारणं। विउव्वणरिद्धिविरहिदा आहारलद्धिसंपण्णा साहू ओहिणाणेण सुदणाणेण वा देवागमचिंतेण वा केवलणाणुप्पत्तिमवगंतूण वंदणाभत्तीए

निपुण, स्निग्ध और सूक्ष्म आहारद्रव्योंमें सूक्ष्मतर है, इसलिए आहारक है ॥२३९॥

असंयमबहुलता, आज्ञाकनिष्ठता और अपने क्षेत्रमें केवलिविरह इस प्रकार इन तीन कारणोंसे साधु आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं। जल, स्थल और आकाशके एक साथ दुष्परिहार्य सूक्ष्म जीवोंसे आपूरित होने पर असंयमबहुलता होती है। उसका परिहार करनेके लिए साधु हंस और वस्त्रके समान धवल, अप्रतिहत, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे निर्मित और एक हाथप्रमाण उत्सेधवाले आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं। इसलिए यह आहारकशरीरका प्राप्त करना असंयम-बहुलतानिमित्तक कहा जाता है। आज्ञा, सिद्धान्त और आगम ये एकार्थवाची शब्द हैं। उसकी कनिष्ठता अर्थात् अपने क्षेत्रमें उसका थोड़ा होना आज्ञाकनिष्ठता कहलाती है। यह द्वितीय कारण है। आगमको छोड़कर द्रव्य और पर्यायोंके अन्य प्रमाणोंके विषय न होने पर तथा उनमें सन्देह होनेपर अपने सन्देहको दूर करनेके लिए परक्षेत्रमें स्थित श्रुतकेवली और केवलीके पादमूलमें जाता हूँ ऐसा विचार कर आहारकशरीररूपसे परिणमन करके गिरि, नदी, सागर, मेरुपर्वत, कुलाचल और पातालमें केवली और श्रुतकेवलीके पास जाकर तथा विनयसे पूछकर सन्देहसे रहित होकर लौट आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। परक्षेत्रमें महामुनियोंके केवलज्ञानकी उत्पत्ति और परिनिर्वाणगमन तथा तीर्थङ्करोंके परिनिष्क्रमणकल्याणक यह तीसरा कारण है। विक्रियाऋद्धिसे रहित और आहारकलब्धिसे युक्त साधु अवधिज्ञानसे या श्रुतज्ञानसे या देवोंके आगमनके विचारसे केवलज्ञानकी उत्पत्ति जानकर वन्दनाभक्तिसे जाता हूँ ऐसा विचार कर

१. म०प्रतिपाठोऽयम् प्रतिषु '–दव्वाण वा सुहुमदरमिदि' इति पाठः।

गच्छामि त्ति चिंतिदूण आहारसरीरेण परिणमिय तप्पदेसं गंतूण तेसिं केवलीणमण्णेसिं च जिण-जिणहराणं वंदणं काऊण आगच्छंति त्ति भणिदं होदि। एदाणि तिण्णि वि कारणाणि अस्सिऊण घेप्पमाणआहारसरीरस्स णामणिरुत्ती वुच्चदे। तं जहा—णिउणा अण्हा मउआ त्ति भणिदं होदि। णिण्हा धवला सुअंधा सुट्ठु सुंदरा त्ति भणिदं होदि। अप्पडिहया सुहुमा णाम। आहारदव्वाणं मज्झे णिउणदरं णिण्णदरं खंधं आहारसरीरणिप्पायणट्ठं आहरदि गेण्हदि त्ति आहारयं। णिवुण-णिण्णाणं कथं सुहुमदरत्तं ? ण, पढमावत्थं पेक्खिदूण तरतमपच्चयविसयाणं सुहुमदरत्तं पडि विरोहाभावादो। अथवा आहारकद्रव्याणि प्रमाणानि, तेषां निपुणानां मध्ये अतिनिपुणं निष्णातानामतिनिष्णातं सूक्ष्माणामतिसूक्ष्ममाहरति परिछिन्नत्तीत्याहारकम्। पंचवण्णाणमाहारसरीरपरमाणूणं कथं सुक्किलत्तं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयवण्णं पडुच्च धवलत्तुवलंभादो।

तेयप्पहगुणजुत्तमिदि तेजइयं ॥२४०॥

शरीरस्कंधस्य पद्मरागमणिवर्णस्तेजः, शरीरान्निर्गतरश्मिकला प्रभा, तत्र भवं

आहारकशरीररूपसे परिणमन कर उस प्रदेशमें जाकर उन केवलियोंकी और दूसरे जिनों व जिनालयोंकी वन्दना करके वापिस आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इन तीनों ही कारणोंका अवलम्बन लेकर ग्रहण किये जानेवाले आहारकशरीरकी नामनिरुक्ति कहते हैं। यथा--निपुण अर्थात् अण्हा और मृदु यह उक्त कथनका तात्पर्य है। स्निग्ध अर्थात् धवल, सुगन्ध, सुष्ठु और सुन्दर यह उक्त कथनका तात्पर्य है। अप्रतिहतका नाम सूक्ष्म है। आहारद्रव्योंमेंसे आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए निपुणतर और स्निग्धतर स्कन्धको आहरण करता है अर्थात् ग्रहण करता है, इसलिए आहारक कहलाता है।

शंका—निपुण और स्निग्ध सूक्ष्मतर कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रथम अवस्थाको देखते हुए तर और तम प्रत्ययके विषयभूत पदार्थोंके सूक्ष्मतर होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

अथवा आहारकद्रव्य प्रमाण है। उनमेंसे निपुणोंमें अतिनिपुण, निष्णातोंमें अतिनिष्णात और सूक्ष्मोंमें अतिसूक्ष्मको आहरण करता है अर्थात् जानता है, इसलिए आहारक कहलाता है।

शंका—आहारकशरीरके परमाणु पाँच वर्णवाले हैं। उनमें केवल शुक्लपना कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विस्रसोपचयके वर्णकी अपेक्षा धवलपना उपलब्ध होता है।

तेज और प्रभारूप गुणसे युक्त है इसलिए तैजस है ॥२४०॥

शरीरस्कन्धके पद्मराग मणिके समान वर्णका नाम तेज है। तथा शरीरसे निकली हुई

१. अ॰प्रतौ 'अण्णहा मउआ' इति पाठः। २. म॰प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'सुहुमदरं तरण' इति पाठः।

तैजसं शरीरम् । तेजःप्रभागुणयुक्तमिति यावत् । तं तेजइयसरीरं णिस्सरणप्पयमणिस्सरणप्पयं चेदि दुविहं । तत्थ जं तं णिस्सरणप्पयं तं दुविहं—सुहमसुहं चेदि । संजदस्स उग्गचरित्तस्स दयापुरंगमअणुकंपावूरिदस्स इच्छाए दक्खिणंसादो हंससंखवण्णं णिस्सरिदूण मारीदिरमरवाहिवेयणादुब्भिक्खुवसग्गादिपसमणदुवारेण सव्वजीवाणं संजदस्स य जं सुहमुप्पादयदि तं सुहं णाम । कोधं गदस्स संजदस्स वामंसादो बारहजोयणायामेण णवजोयणविक्खंभेण सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तबाहल्लेण जासवणकुसुमवण्णेण णिस्सरिदूण सगक्खेत्तब्भंतरट्ठियसत्तविणासं काऊण पुणो पविसमाणं तं जं चेव संजदमावूरेदि[1] तमसुहं णाम । जं तमणिस्सरणप्पयं तेजइयसरीरं तं भुत्तण्णपाणप्पाचयं[2] होदूण अच्छदि अंतो ।

सव्वकम्माणं परूहणुप्पादयं सुहदुक्खाणं बीजमिदि कम्मइयं ॥२४१॥

कर्माणि प्ररोहन्ति अस्मिन्निति प्ररोहणं कार्मणशरीरम् । कूष्माण्डफलस्य वृन्तवत्[3] सकलकर्माधारं कार्मणशरीरमिति यावत् । न केवलं सर्वकर्मोत्पत्तेराधार एव किं तु सकलकर्मणामुत्पादकमपि कार्मणशरीरं, तेन विना तदुत्पत्तेरभावात् । तत एव सुख-दुःखानां तद् बीजमपि, तेन विना तदसत्त्वाद् । एतेन नामकर्मावयवस्य कार्मण-

रश्मिकलाका नाम प्रभा है । इसमें जो हुआ है वह तैजसशरीर है । तेज और प्रभा गुणसे युक्त तैजसशरीर है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह तैजसशरीर निःसरणात्मक और अनिःसरणात्मक इस तरह दो प्रकारका है । उसमें जो निःसरणात्मक तैजसशरीर है वह दो प्रकारका है—शुभ और अशुभ । उग्र चारित्रवाले तथा दयापूर्वक अनुकम्पासे आपूरित संयतके इच्छा होनेपर दाहिने कंधेसे हंस और शंखके वर्णवाला शरीर निकलकर मारी, दिरमर, व्याधि, वेदना, दुर्भिक्ष और उपसर्ग आदिके प्रशमनद्वारा सब जीवों और संयतके जो सुख उत्पन्न करता है वह शुभ कहलाता है । तथा क्रोधको प्राप्त हुए संयतके वाम कंधेसे बारह योजन लम्बा, नौ योजन चौड़ा और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण मोटा तथा जपाकुसुमके रंगवाला शरीर निकल कर अपने क्षेत्रके भीतर स्थित हुए जीवोंका विनाश करके पुनः प्रवेश करते हुए जो उसी संयतको व्याप्त करता है वह अशुभ तैजसशरीर है । जो अनिःसरणात्मक तैजसरीर है वह भुक्त अन्न-पानका पाचक होकर भीतर स्थित रहता है ।

सब कर्मोंका प्ररोहण अर्थात् आधार, उत्पादक और सुख-दुःखका बीज है इसलिए कार्मणशरीर है ॥२४१॥

कर्म इसमें उगते हैं इसलिए कार्मणशरीर प्ररोहण कहलाता है । कूष्माण्डफलके वृन्तके समान कार्मणशरीर सब कर्मोंका आधार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । कार्मणशरीर केवल सब कर्मोंकी उत्पत्तिका आधार ही नहीं है । किन्तु सब कर्मोंका उत्पादक भी है, क्योंकि उसके बिना उनकी उत्पत्ति नहीं होती । इसलिए वह सुखों और दुःखोंका भी बीज है, क्योंकि उसके बिना

१. ता०प्रतौ 'संजदं मारेदि' इति पाठः । २. ता०प्रतौ '-सरीर भुत्तण्णपाणपचयं का०प्रतौ '-सरीरं तं भुत्तण्णपाणपचयं' इति पाठः । ३. ता०प्रतौ 'वृत्तपत्' इति पाठः ।

शरीरस्य प्ररूपणा कृता। साम्प्रतमष्टकर्मकलापस्य कार्मणशरीरस्य लक्षणप्रतिपादकत्वेन सूत्रमिदं व्याख्यायते। तद्यथा—भविष्यत्सर्वकर्म्मणां प्ररोहणमुत्पादकं त्रिकालगोचराशेषसुख-दुःखानां बीजं चेति[1] अष्टकर्म्मकलापं कार्मणशरीरम्। कर्म्मणि भवं वा कार्मणं कर्म्मैव वा कार्म्मणमिति कार्म्मणशब्दव्युत्पत्तेः।

एवं णामणिरुत्ति त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

उनका सत्त्व नहीं होता। इस द्वारा नामकर्मके अवयवरूप कार्मणशरीरकी प्ररूपणा की है। अब आठों कर्मोंके कलापरूप कार्मणशरीरके लक्षणके प्रतिपादकपनेकी अपेक्षा इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं। यथा—आगामी सब कर्मोंका प्ररोहण, उत्पादक और त्रिकाल विषयक समस्त सुखदुःखका बीज है इसलिए आठों कर्मोंका समुदाय कार्मणशरीर है, क्योंकि कर्ममें हुआ इसलिए कार्मण है, अथवा कर्म ही कार्मण है इस प्रकार यह कार्मण शब्दकी व्युत्पत्ति है।

विशेषार्थ—शब्दके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थको निरुक्ति द्वारा प्रकट किया जाता है। यहाँ सर्व प्रथम पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति दिखलाई गई है। यथा औदारिक शब्द उदार शब्दसे, वैक्रियिक शब्द विक्रिया शब्दसे, आहारक शब्द आहारसे, तैजस शब्द तेजससे और कार्मण शब्द कर्मसे बना है। उदार, उराल, महत् और स्थूल ये एकार्थवाची शब्द हैं। औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा अन्य शरीरोंसे बड़ा है प्रदेशोंकी अपेक्षा नहीं, इसलिए इसकी औदारिक संज्ञा है। यद्यपि सूक्ष्म एकेन्द्रियका औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा सूक्ष्म देखा जाता है फिर भी सब शरीरोंको ध्यानमें लेकर विचार करने पर सबसे बड़ा यही शरीर सिद्ध होता है, इसलिए इसकी औदारिक संज्ञा है। अणिमा आदि जो आठ प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं वे वैक्रियकशरीरमें पाई जाती हैं। उनके कारण यह शरीर छोटा, बड़ा हलका, भारी आदि विविध प्रकारकी विक्रिया करनेमें समर्थ होता है, इसलिए इस शरीरको वैक्रियिक कहते हैं। जो शरीर वैक्रियिकशरीर नामकर्मके उदयसे देवों और नारकियोंके होता है उसमें भी यह विशेषता पाई जाती है और जो शरीर मनुष्यों और तिर्यञ्चोंके विक्रिया रूप प्रयोगविशेषके कारण होता है उसमें भी यह विशेषता पाई जाती है। आहारकशरीरकी प्राप्ति प्रमत्तसंयतके होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि सभी प्रमत्तसंयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करते हैं। किन्तु इसका इतना ही अर्थ है कि यह शरीर अपने कारण कूटके अनुसार यदि होगा तो प्रमत्तसंयतके ही होगा, अन्यके नहीं। एक तो यह शरीर आहार द्रव्यमेंसे सुन्दर, सुगन्ध और स्निग्ध आदि गुणोंसे युक्त वर्गणाओंसे बनता है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है। दूसरे यह अतिसूक्ष्म आदि गुणयुक्त अर्थको आहरण करनेमें अर्थात् जाननेमें समर्थ है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है। तैजस शरीर दो प्रकारका होता है—निकलनेवाला और नहीं निकलनेवाला। निकलनेवाला तैजसशरीर शुभ और अशुभ दो प्रकारका होता है। यह दोनों प्रकारका तैजसशरीर संयतके होता है। तथा नहीं निकलने वाला तैजसशरीर भुक्त अन्नपान के पाचनमें समर्थ होता है। यह तेज और प्रभा गुणसे युक्त होता है, इसलिए इसे तैजस कहते हैं। नामकर्मकी ९३ प्रकृतियोंमें एक कार्मणशरीर प्रकृति है। उसके उदयसे ज्ञानावरणादि कर्म कार्मण संज्ञाको प्राप्त होते हैं। अथवा ये सब ज्ञानावरणादि कर्म ही हैं, इसलिए इनकी कार्मण संज्ञा है। इस प्रकार औदारिक आदि पाँच शरीर हैं। इनके ये

१. अ०प्रतौ '—दुःखानां जीवं चेति इति पाठः।

पदेसपमाणुगमेण ओरालियसरीरस्स केवडियं पदेसग्गं ॥२४२॥

सेससरीरपडिसेहट्ठो ओरालियसरीरणिद्देसो । संखेज्जा-संखेज्जाणंतसंखाओ तिण्णि णवणवभेदाओ केवडिए त्ति णिद्देसो अवेक्खदे[1] । ट्ठिदि-अणुभागादिपडिसेहफलो पदेसग्गणिद्देसो । सेसं सुगमं ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागा ॥२४३॥

एदमोरालियसरीरस्स जहण्णेण उक्कस्सेण य पदेसग्गपमाणं सुत्तं परूवेदि । विस्सासुवचयेहि सह घेप्पमाणे सव्वजीवेहि अणंतगुणा ओलियपरमाणू होंति त्ति भणिदे ण, ओरालियसरीरणामकम्मोदएण जीवम्मि संबद्धपोग्गलाणं चेव ओरालियसरीरत्तब्भुवगमादो । ण च तत्थतणविस्सासुवचओ ओरालियणामकम्मजणिदो, ओरालियणोकम्मणिद्ध-ल्हुक्खगुणेण तत्थ तेसिं संबधादो । तम्हा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता चेवे[2] ओरालियसरीरपरमाणू होंति त्ति घेत्तव्वं ।

एवं चदुण्हं सरीराणं ॥२४४॥

औदारिक आदि नाम गौण अर्थात् सार्थक नाम हैं । यहाँ इनकी नामनिरुक्ति कहनेका यही अभिप्राय है ।

इस प्रकार नामनिरुक्ति यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा औदारिकशरीरके कितने प्रदेशाग्र हैं ॥२४२॥

शेष शरीरोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'औदारिकशरीर' पदका निर्देश किया है । 'कितना है' पदका निर्देश नौ नौ भेदरूप संख्यात, असंख्यात और अनन्त इन तीन संख्याओंकी अपेक्षा करता है । स्थिति और अनुभाग आदिका निषेध करना प्रदेशाग्र पदके निर्देशका फल है । शेष कथन सुगम है ।

अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २४३ ॥

यह सूत्र औदारिकशरीरके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशप्रमाणका कथन करता है ।

शंका--विस्रसोपचयोंके साथ ग्रहण करनेपर औदारिकशरीरके परमाणु सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते हैं ?

समाधान--नहीं, क्योंकि औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे जीवमें सम्बन्धको प्राप्त हुए पुद्गलोंको ही औदारिकशरीररूपसे स्वीकार किया गया है । किन्तु वहाँ रहनेवाला विस्रसोपचय औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे नहीं उत्पन्न हुआ है, क्योंकि औदारिक नोकर्मके स्निग्ध और रूक्षगुणके कारण वहाँ विस्रसोपचय परमाणुओंका सम्बन्ध हुआ है । इसलिए सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही औदारिकशरीरके परमाणु होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

इसी प्रकार चार शरीरोंके प्रदेशाग्र होते हैं ॥ २४४ ॥

१. प्रतिषु उवेक्खदे इति पाठः । २. अ०प्रतौ '-मेत्तो चेव' इति पाठः ।

जहा ओरालियसरीरस्स परमाणुपमाणं भणिदं तहा सेसचदुण्हं सरीराणं परमाणुपमाणं वत्तव्वं, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणत्तणेण सिद्धेहिंतो अणंतगुण-हीणत्तणेण भेदाभावादो। एवं पदेसपमाणाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

णिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणियोगद्दाणि णादव्वाणि भवंति—समुक्कित्तणा पदेसपमाणाणुगमो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा पदेसविरओ अप्पाबहुए त्ति ॥२४५॥

एदाणि छ चेव अणियोगद्दाराणि एत्थ होंति, अण्णेसिमसंभवादो। एदेसिं छण्हं पि जहाकमेण अणियोगद्दाराणं परूवणा कीरदे—

समुक्कित्तणदाए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि विसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एव जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२४६॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके परमाणुओंका प्रमाण कहा है उसी प्रकार शेष चार शरीरोंके परमाणुओंका प्रमाण कहना चाहिए, क्योंकि अभव्योंसे अनन्तगुणत्व और सिद्धोंसे अनन्तगुणहीनत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके परमाणुओंसे शेष चार शरीरोंके परमाणुओंमें कोई भेद नहीं है। इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

निषेकप्ररूपणाकी अपेक्षा वहाँ ये छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—समुत्कीर्तना, प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, प्रदेशविरच और अल्प-बहुत्व ॥२४५॥

यहाँ ये छह ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि अन्य अनुयोयगद्वार यहाँ सम्भव नहीं हैं। अब क्रमसे इन छहों अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं—

समुत्कीर्तनाकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बाँधे गये हैं उनमेंसे कुछ प्रदेशाग्र जीवमें एक समय तक रहते हैं, कुछ दो समय तक रहते हैं, कुछ तीन समय तक रहते हैं। इस प्रकार क्रमसे उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥२४६॥

एत्थ ताव ओरालियसरीरमस्सिदूण सुत्तत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा— ओरालियसरीरमेदस्स अत्थि त्ति ओरालियसरीरी तेण ओरोलियसरीरिणा । पढमसमए चेव आहारो सरीरपाओग्गपोग्गलगहणं जस्स सो पढमसमयआहारओ तेण पढमसमयआहारएण । पढमसमयओरालियसरीरिणा त्ति भणिदं होदि । तेणेव गहणं किमट्ठं कीरदे ? ओरालियसरीरी चेव ओरालियसरीरस्स पदेसरचणं कुणदि ण अण्णसरीरिणो त्ति जाणावणट्ठं । तम्हि भवे ट्ठिदो त्ति तब्भवत्थो पढमसमओ च तब्भवत्थो च पढमसमयतब्भवत्थो तेण पढमसमयतब्भवत्थेण । अविग्गहगदीए उप्पण्णेणे त्ति भणिदं होदि, अण्णहा पढमसमयतब्भवत्थस्स पढमसमयआहारयत्तविरोहादो । तेण जीवेण ओरालियसरीरत्ताए ओरालियसरीरसरूवेण जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं पढमसमयबद्धपदेसग्गं त्ति भणिदं होदि । तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि, णोकम्मस्स आबाधाभावेण पढमसमए णिसित्तस्स विदियसमए चेव परिसदणुवलंभादो[1] । किमट्ठमेत्थ णत्थि आबाधा ? साभावियादो । किंचि विसमयमच्छदि, विदियट्ठिदीए णिसित्तस्स तदियसमए चेव अकम्मभावुवलंभादो । किंचि तिसमय-

यहाँ सर्वप्रथम औदारिकशरीरका आश्रय लेकर सूत्रके अर्थका कथन करते हैं । यथा— औदारिकशरीर जिसके होता है वह औदारिकशरीरी कहलाता है, उस औदारिकशरीरीके द्वारा । प्रथम समयमें ही आहार अर्थात् शरीरके योग्य पुद्गलोंका ग्रहण जिसके होता है वह प्रथम समयवर्ती आहारक कहलाता है, उस प्रथम समयवर्ती आहारकके द्वारा । प्रथम समयवर्ती औदारिकशरीरवाले जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—सूत्रमें 'तेणेव' पदका ग्रहण किसलिए किया है ?

समाधान—औदारिकशरीरवाला ही औदारिकशरीरकी प्रदेशरचना करता है अन्य शरीरवाले नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'तेणेव' पदका ग्रहण किया है ।

उस भवमें जो स्थित है वह तद्भवस्थ कहलाता है । प्रथम समयवर्ती जो तद्भवस्थ वह प्रथम समय तद्भवस्थ है, उस प्रथम समयवाले तद्भवस्थके द्वारा । अविग्रहगतिसे उत्पन्न हुए जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि ऐसा नहीं मानने पर प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवका प्रथम समयमें आहारक होनेमें विरोध है । उस जीवके द्वारा 'ओरालियशरीरत्ताए' अर्थात् औदारिकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त किया है । अर्थात् प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र बाँधा गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह जीवमें कुछ एक समय तक रहता है, क्योंकि नोकर्मकी आबाधा नहीं होनेसे प्रथम समयमें निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका दूसरे समयमें ही क्षय देखा जाता है ।

शंका—यहाँ आबाधा किस कारणसे नहीं है ?

समाधान—क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

कुछ दो समय तक रहता है, क्योंकि जो द्वितीय स्थितिमें निषिक्त हुआ है उसका तीसरे समयमें ही अकर्मपना देखा जाता है । कुछ तीन समय तक रहता है, क्योंकि तृतीय स्थितिमें

१. आ० प्रतौ परिसदाणुवलंभादो' इति पाठः ।

मच्छदि, तदियट्ठिदीए णिसित्तस्स चउत्थसमए अकम्मपरिणामदंसणादो। एवं जाव उक्कस्सेण किंचि तिण्णि पलिदोवमाणि अच्छदि, तदुवरिमसमए तस्स अकम्मभाव-दंसणादो। एवं वेउव्वियसरीरस्स वि वत्तव्वं। णवरि तत्थ किंचि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सेण अच्छदि त्ति वत्तव्वं। एवमाहारसरीरस्स वि समुक्कित्तणा कायव्वा। णवरि एवं जाव उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमच्छदि त्ति वत्तव्वं। विदियादिसमएसु वि एवं चेव पदेसरचणा कायव्वा।

निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका चतुर्थ समयमें अकर्मरूप परिणाम देखा जाता है। इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे कुछ तीन पल्य काल तक रहता है, क्योंकि उससे अगले समयमें उसका अकर्मभाव देखा जाता है। इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरका भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वहाँ कुछ उत्कृष्ट रूपसे तेतीस सागर काल तक रहता है ऐसा कथन करना चाहिए। इसी प्रकार आहारक-शरीरकी समुत्कीर्तनाका भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे वह अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है ऐसा यहाँ कथन करना चाहिए। द्वितीय आदि समयोंमें भी इसी प्रकार प्रदेश रचना करनी चाहिए।

विशेषार्थ – जिस शरीरके प्रथमादि समयोंमें जितने परमाणु मिलते हैं उनका अपनी अपनी आयुस्थितिके अनुसार बटवारा होकर उनमेंसे जिनकी जितनी स्थिति पड़ती है उतने काल तक वे रहते हैं। उदाहरणार्थ तीन पल्यकी आयुवाले किसी मनुष्यने प्रथम समयमें ही तद्भवस्थ हो कर औदारिकशरीरके परमाणुओंका ग्रहण करके उन्हें तीन पल्यके जितने समय हैं उनमें बाँट दिया तो इनमेंसे जिनकी स्थिति एक समय है वे एक समय तक रह कर निर्जीर्ण हो जाते हैं। जिनकी स्थिति दो समय है वे दो समय तक रह कर निर्जीर्ण हो जाते हैं। इसी प्रकार क्रमसे एक एक समय बढ़ाते हुए तीन पल्यके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए। यह प्रथम समयमें ग्रहण किये गये परमाणुओंकी अपेक्षासे विवेचन किया है। आहारक होनेके दूसरे समयमें जिन परमाणुओंका ग्रहण होता है उनकी निषेक रचना प्रथम समयसे नहीं होती, क्योंकि इनके लिए प्रथम समय गत हो चुका है। इसी प्रकार तृतीयादि समयोंमें ग्रहण किये गये परमाणुओंके विषयमें भी जानना चाहिए। यहाँ दो बातें खासरूपसे समझनेकी हैं। प्रथम तो यह कि नोकर्मकी आबाधा नहीं होती, इसलिए इसकी निषेक रचना उसी समयसे होती है जिस समयमें उसको ग्रहण किया है। और दूसरी बात यह कि नोकर्मकी स्थिति भुज्यमान आयुके अनुसार होती है और इसलिए जिसकी जितनी भवस्थिति होती है या शेष रहती है ग्रहण किये गये नोकर्मकी उतनी ही स्थिति पड़ती है।

विशेष खुलासा इस प्रकार है—जो औदारिक आदि तीन शरीरोंके लिए वर्गणाएँ आती हैं उनमेंसे जिसकी जितनी स्थिति है उसके अनुसार उनकी निषेक रचना होती है। निषेक शब्द नि उपसर्ग पूर्वक सिच् धातुसे बना है जिसका अर्थ सिञ्चन करना है। अर्थात् अपनी अपनी स्थितिके प्रत्येक समयमें वर्गणाओंको देना निषेक रचना है। यहां सर्व प्रथम औदारिक और वैक्रियिक इन दो शरीरोंकी निषेक रचनाके सम्बन्धमें विचार करना है। जो जीव एक पर्यायको छोड़कर दूसरी पर्यायको ग्रहण करता है वह यदि विग्रहगतिमें स्थित होता है तो उसके विग्रह-गतिमें रहते हुए अपनी अपनी पर्यायके अनुसार औदारिक आदि तीन शरीरके योग्य वर्गणाओं का ग्रहण नहीं होता, क्योंकि उसके यथासम्भव औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर नामकर्म-का उदय नहीं होता। किन्तु जब ऐसा जीव यथासम्भव एक, दो या तीन मोड़ोंको पारकर

अवस्थित होता है तब उसके इन नामकर्मोंका उदय होता है और तभी यह जीव इन शरीरोंके योग्य वर्गणाओंको ग्रहण करता है। अर्थात् यदि वह मनुष्य और तिर्यञ्च है तो उसके औदारिकशरीर नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह औदारिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। तथा यदि देव और नारकी है तो उसके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह वैक्रियिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। सूत्रमें प्रथम समय आहारक और प्रथम समय तद्भवस्थ कहनेका यही तात्पर्य है। अब देखना है कि इस प्रकार जो औदारिक और वैक्रियिकशरीरके योग्य वर्गणाओंका प्रथमादि समयोंमें ग्रहण होता है उनकी निषेकरचना किस प्रकार होती है। सूत्रमें कहा है कि प्रथम समयमें जो वर्गणाएँ ग्रहण की हैं उनमेंसे कुछको प्रथम समयमें निषिक्त करता है, कुछको द्वितीय समयमें निषिक्त करता है। इस प्रकार प्रत्येक समयमें निषिक्त करता हुआ अपनी अपनी स्थितिके अन्तिम समय तक निषिक्त करता है और फिर इसके बाद सूत्रमें औदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य और वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर बतलाई है सो इसका इतना ही अभिप्राय है कि मनुष्यों और तिर्यञ्चोंके क्षुल्लकभवग्रहणसे लेकर तीन पल्यके भीतर तथा देव और नारकियोंके दस हजार वर्षसे लेकर तेतीस सागरके भीतर जिसकी जितनी आयुके अनुसार भवस्थिति हो उसके अनुसार उसके शरीरके लिए ग्रहण किये गये परमाणुओंकी निषेकरचना होती है। उदाहरणार्थ कोई मनुष्य सौ वर्षकी आयु लेकर ऋजुगतिसे उत्पन्न हुआ तो उसके प्रथम समयमें औदारिकशरीरकी जिन वर्गणाओंका ग्रहण होगा उनमेंसे कुछ वर्गणाओंकी एक समय स्थिति पड़ेगी, कुछ वर्गणाओं की दो समय स्थिति पड़ेगी और कुछ वर्गणाओंकी तीन समय, कुछकी चार समय आदिसे लेकर सौ वर्ष प्रमाण स्थिति पड़ेगी। कर्मवर्गणाओंके ग्रहण होने पर आबाधा कालको छोड़कर उनकी अपनी स्थितिके अनुसार निषेक रचना होती है उस प्रकार इन दो शरीरोंकी बात नहीं हैं, क्योंकि इनका भोग प्रथम समयसे ही होने लगता है, इसलिए स्वभावतः निषेक रचना भी इसी क्रमसे होती है। यह तो प्रथम समयमें ग्रहण किये गये पुद्गलोंका विचार हुआ। द्वितीयादि समयोंमें जो नोकर्म वर्गणाएँ आती हैं उनकी निषेक रचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए। मात्र वहाँ आयुमें एक समय आदि कम हुआ है इसलिए उनकी निषेक रचना जिस समयमें जितनी स्थिति शेष रहती है उसके अनुसार होती है। अर्थात् उक्त मनुष्य दूसरे समयमें औदारिकशरीरके योग्य जिन वर्गणाओंको ग्रहण करेगा उनकी निषेक रचना एक समय कम सौ वर्षके जितने समय होंगे तत्प्रमाण करेगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए। यह तो औदारिक और वैक्रियिकशरीर के सम्बन्धमें विचार हुआ। आहारकशरीरकी निषेकरचना तो इसी प्रकार होती है। मात्र इसके निषेकोंकी रचना भवस्थिति कालप्रमाण न होकर आहारकशरीरके अवस्थितिकालप्रमाण होती है, क्योंकि आहारकशरीरका ग्रहण प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ जीव नहीं करता। किन्तु इसकी प्राप्ति संयत जीवके होती है, इसलिए जिस समयसे संयत जीव आहारशरीरके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण करता है उस समयसे लेकर आहारकशरीरके समाप्तिकाल तक जो अन्तर्मुहूर्त काल लगता है उतने समयोंमें इस शरीरके योग्य पुद्गलोंकी निषेक रचना करता है। शेष सब व्यवस्था पूर्ववत् जाननी चाहिए। यहाँ इतना विशेष समझना चाहिए कि यद्यपि संयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करते समय नवीन पर्याय धारण नहीं करता फिर भी उसका उतने काल तक औदारिकशरीरसे योगक्रियाका सम्पर्क छूट कर आहारकशरीरसे सम्पर्क स्थापित होता है। उसी प्रकार छह पर्याप्तियोंकी पूर्णता आदि विधि होती है, इसलिए इसके एक तरहसे अन्य पर्यायका ग्रहण ही है। यही देखकर इस शरीरकी निषेक रचना का विधान करते हुए भी प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह विशेषण लगाया है। इस प्रकार

तेयासरीरिणा तेजासरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि विसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि ॥२४७॥

एगजोगमकाऊण किमट्ठं पुधभूदमेदं सुत्तं वुच्चदे ? ण, पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण णिसेगरचणा कीरदे त्ति एत्थ णियमाभावादो। अणादिसंसारे हिंडंतस्स जीवस्स जत्थ कत्थ वि ट्ठाइदूण तेजइयसरीरमेत्तपदेसरचणुवलंभादो। सेसं सुगमं, पुव्वसुत्तत्थेण विसेसाभावादो।

कम्मइयसरीरिणा कम्मइयसरीरत्ताए जं पदेसग्गं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरावलियमच्छदि किंचि विसमउत्तरावलियमच्छदि किंचि तिसमउत्तरावलियमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण कम्मट्ठिदि त्ति ॥२४८॥

एत्थ कम्मट्ठिदि त्ति[1] वुत्ते सत्तरिसागरोवमकोडाकोडी घेत्तव्वा, अट्ठकम्मकलावस्स कम्मइयसरीरत्तब्भुवगमादो। जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरा-

इन औदारिक आदि तीन शरीरोंकी निषेक रचना किस प्रकार होती है इसका विचार किया।

तैजसशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बाँधे जाते हैं उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय तक रहता है, कुछ दो समय तक रहता है और कुछ तीन समय तक रहता है। इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर काल तक रहता है ॥ २४७॥

शंका—एक सूत्र न करके यह सूत्र अलगरूपसे किसलिए कहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि प्रथम समयमें आहार करनेवाला और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जीव निषेक रचना करता है इस प्रकारका यहाँ कोई नियम नहीं है तथा अनादिसे संसारमें घूमते हुए जीवके जहाँ कहीं भी स्थापित करके तैजसशरीरकी प्रदेश रचना उपलब्ध होती है। शेष कथन सुगम है, क्योंकि पूर्वके सूत्रार्थसे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा कार्मणशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र बाँधे जाते हैं उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक आवलि प्रमाण काल तक रहता है, कुछ दो समय अधिक आवलिप्रमाण काल तक रहता है और कुछ तीन समय अधिक आवलि-प्रमाण काल तक रहता है। इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे कर्मस्थिति प्रमाण कालतक रहता है ॥२४८॥

यहाँ पर कर्मस्थिति ऐसा कहने पर सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि आठों कर्मोंके समुदायको कार्मणशरीररूपसे स्वीकार किया है। प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र

१. म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'कम्मट्ठिदि त्ति ॥१८०॥ [कम्मट्ठिदि त्ति–] वुत्ते' अ०का०प्रत्योः 'एत्थ कम्मट्ठिदि त्ति' इति पाठो नास्ति।

वलियमच्छदि, बंधावलियादिक्कंतमोकड्डिदूण समयाहियावलियाए उदए पादिदस्स दुसमयाहियआवलियाए अकम्मभावदंसणादो। एदं अत्थपदं लद्धूण उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं। एवं समुक्कित्तणा त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहार-सरीरत्ताए जं पढमसए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२४९॥

एदं पुच्छासुत्तं अणंतादिसंखमवेक्खदे[2]। केवडिया इदि बहुवयणणिद्देसो पदेसग्गगदबहुत्तावेक्खो।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५०॥

निषिक्त होता है उसमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल तक रहता है, क्योंकि बन्धावलिके बाद द्रव्यका अपकर्षण करके एक समय अधिक आवलिरूप उदय समयमें लाये गये द्रव्यका दो समय अधिक आवलिके अन्तिम समयमें अकर्मपना देखा जाता है। इस अर्थपदको ग्रहण करके आगे सर्वत्र कहना चाहिए।

विशेषार्थ—तैजसशरीर और कार्मणशरीर सन्ततिकी अपेक्षा अनादि सम्बन्धवाले हैं। भवके परिवर्तनके साथ जिस प्रकार औदारिक और वैक्रियिक शरीर बदल जाते हैं उसप्रकार ये नहीं बदलते। विग्रहगतिमें इनकी परम्परा चालू रहती है, इसलिए इन दोनों की निषेक रचना प्रथम समयमें आहरण करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवके द्वारा प्रारम्भ नहीं कराई गई है। किन्तु बन्धकी अपेक्षा कहीं भी प्रथम समय मान कर इन शरीरोंकी निषेक-रचनाका विधान किया है। तैजसशरीरका शेष विचार औदारिक आदि तीन शरीरोंके समान है। मात्र कार्मणशरीरकी निषेकरचना और अवस्थितिकालमें कुछ विशेषता है। तात्पर्य यह है कि कार्मणशरीरकी निषेकरचना आबाधा कालको छोड़ कर होती है। तथा कोई भी निषेक बन्धकालसे लेकर कमसे कम एक समय अधिक एक आवलि प्रमाण काल तक अवश्य ही अवस्थित रहता है शेष विचार अन्यत्रसे जान लेना चाहिए।

इस प्रकार समुत्कीर्तना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ?

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहार करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर रूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बाँधे जाते हैं वे कितने हैं ॥२४९॥

यह पृच्छासूत्र अनन्त आदि संख्याकी अपेक्षा करता है। तथा 'केवडिया' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश प्रदेशाग्रगत बहुत्वकी अपेक्षा करता है।

अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥२५०॥

१. प्रतीषु 'खंधवलादियादि–' इति पाठः। २. प्रतिषु 'मुवेक्खदे' इति पाठः।

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो। सेसं सुगमं।

जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२५१॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५२॥

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२५३॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५४॥

एदाणि सुत्ताणि तिण्णं पि सरीराणं परिवाडीए जोजेयव्वाणि[1]।

एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२५५॥

एवं तिण्णं पि सरीराणं ट्ठिदिं पडि णिसित्तपदेसाणं परिवाडीए पमाणपरूवणा कायव्वा। ओरालियसरीरस्स जावुक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति, वेउव्वियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि त्ति, आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं त्ति।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया॥२५६॥

इसके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया है। शेष कथन सुगम है।

जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५१ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५२ ॥

जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५३ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५४ ॥

इन सूत्रोंकी तीनों ही शरीरोंके विषयमें यथाक्रमसे योजना करनी चाहिए।

इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे तीन पल्य, तेतीस सागर अन्तर्मुहूर्त काल तकके निषेकोंका प्रमाण जानना चाहिए ॥ २५५ ॥

इसप्रकार तीनों ही शरीरोंके स्थितिके प्रति निषिक्त हुए प्रदेशोंकी प्रमाणप्ररूपणा यथाक्रमसे करनी चाहिए। यथा—उत्कृष्टरूपसे औदारिकशरीरके तीन पल्यप्रमाण, वैक्रियिकशरीरके तेतीस सागरप्रमाण और आहारकशरीरके अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल तक निषिक्त हुए प्रदेशोंकी प्रमाण प्ररूपणा करनी चाहिए।

तैजसशरीरवाले और कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कार्मण शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५६ ॥

१. ता०प्रतौ 'जोजेयव्वो (व्वाणि)' इति पाठः।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५७॥
जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२५८॥
अभवसिसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५६॥
जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२६०॥
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२६१॥
एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२६२॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि। णवरि तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मइयसरीरस्स कम्मट्ठिदी घेत्तव्वा। तेजा-कम्मइयसरीराणं पढमसमयाहारपढमसमय-तब्भवत्थविसेसणाभावादो पुधजोगो कदो। एसा ट्ठिदिं पडि णिसित्तपरमाणूणं पंच-सरीराणि अस्सिऊण जायमाणपरूवणा कदा। सा किमेगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा आहो णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण कदा त्ति ? एगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा। जदि एगसमयपबद्धमस्सिदूण[1] कदा तो कम्मइयसरीरस्स आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५७ ॥
जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५८ ॥
अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५६ ॥
जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २६० ॥
अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २६१ ॥

इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर और कर्मस्थिति तकके निषेकोंका प्रमाण जानना चाहिए ॥ २६२ ॥

ये सूत्र सुगम हैं। इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी छयासठ सागरप्रमाण और कार्मण शरीरकी कर्मस्थितिप्रमाण स्थिति लेनी चाहिए। तैजसशरीर और कार्मणशरीरके प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ये दो विशेषण नहीं होनेसे अलगसे सूत्ररचना की है। यह प्रत्येक स्थितिके प्रति निषिक्त होनेवाले परमाणुओंकी पाँच शरीरोंका आश्रय लेकर उत्पन्न होनेवाली प्ररूपणा की है।

शंका—वह क्या एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है या नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर की है ?

समाधान—एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है।

शंका—यदि एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है तो कार्मणशरीरका आबाधाको

१. ता०प्रतौ 'एगसमयमस्सिदूण' इति पाठः।

पदेसग्गं णिसित्तं तं केत्तियमिदि जं भणिदं तं कथं घडदे। ण एस दोसो, आबाधं मोत्तूण णिसेगट्ठिदीसु जा पढमा ट्ठिदी[1] तिस्से तत्थ गहणादो। अथवा णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण एसा परूवणा कायव्वा। ण च ओकड्डुकड्डणाहि एत्थ पदेसाणं विसरिसत्तं, सेचीयमस्सिदूण परूविज्जमाणे विसरिसत्ताभावादो। एवं पदेसपमाणाणुगमो त्ति समत्तमणियोगद्दारं।

अणंतरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय--वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं॥२६३॥

आहारसरीरस्स पढमसमयतब्भवत्थविसेसणं कथं जुज्जदे? ण एस दोसो, ओरालियसरीरं छंडिदूण आहारसरीरेण परिणदस्स अवांतरगमणमत्थि[2] त्ति पढमसमयतब्भवत्थविसेसणुववत्तीदो। तिण्णं सरीराणं सगसगकम्मट्ठिदीणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तं बहुगं होदि उवरि णिसिंचमाणट्ठिदीणं पदेसेहिंतो।

छोड़ कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह कितना है ऐसा जो कहा है वह कैसे घटित होता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि आबाधाको छोड़कर निषेकस्थितियोंमें जो प्रथम स्थिति है उसका वहां ग्रहण किया है।

अथवा नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर यह प्ररूपणा करनी चाहिए। यदि कहा जाय कि अपकर्षण और उत्कर्षणके निमित्तसे यहां परमाणुओंकी विसदृशता हो जायगी सो यह कहना भी ठीक नहीं है क्योंकि सिंचनका आश्रय लेकर कथन करने पर विसदृशताका अभाव है।

इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिक शरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है॥२६३॥

शंका—आहारकशरीरका 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण कैसे बन सकता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि औदारिकशरीरको छोड़ कर आहारकशरीररूपसे परिणत हुए जीवका अवान्तरगमन है, इसलिए 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण बन जाता है।

तीन शरीरोंका अपनी अपनी कर्मस्थितियोंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह आगेकी स्थितियोंमें प्राप्त होनेवाले प्रदेशोंसे बहुत होता है।

१. ता०प्रतौ 'णिसेगट्ठिदीए जा पढमट्ठिदी' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'परिणदस्स अवंतर–' इति पाठः।

जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२६४॥

केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारेण पढमणिसेगं खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तेण। केत्तियमेत्तो एत्थ णिसेगभागहारो ? दोगुणहाणिमेत्तो। गुणहाणिपमाणं केत्तियं ? ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमंतोमुहुत्तं। तेजइय-कम्मइयसरीराणं पुण गुणहाणि-पमाणं पलिदोवमस्स असंखे०भागो।

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।२६५॥

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेयभागहारेहि रूवूणेहि सगसगबिदियणिसेगेसु खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण।

जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२६६।

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेगभागहारेहि दुरूवूणेहि सगसगतदियणिसेगेसु खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण। एवं णिसेयभागहारो तिरूवूणचदुरूवूणादिकमेण णेयव्वो जाव[1] पढमगुणहाणि त्ति। पुणो उवरि णिसेगभागहारो चेव होदि। तत्तो उवरिं[2] रूवूणादिकमेण णेयव्वो।

जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है ॥२६४॥

कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकको भाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होता है उतना हीन है।

शंका—यहाँ निषेकभागहार कितना है ?

समाधान—दो गुणहानिमात्र है।

शंका—गुणहानिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरकी गुणहानिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है। परन्तु तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है ॥२६५॥

कितना हीन है ? एक कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने द्वितीय निषेकके भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है।

जो चतुर्थ समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥२६६॥

कितना हीन है ? दो कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने तृतीय निषेकके भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है। इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्त तक निषेकभागहार तीन कम और चार कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए। पुनः ऊपर निषेकभागहार ही होता है। फिर वहाँ ऊपर एक कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए।

१. का०प्रतौ 'जाव' इत आरभ्य टीकागतपाठो नोपलभ्यते। २. ता०प्रतौ होदि। 'तत्थ उवरि' इति पाठः।

एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२६७॥

एदाओ तिण्णि वि ट्ठिदीओ जहाकमेण तिण्णं णोकम्माणं जोजेयव्वाओ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं ॥२६८॥

जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२६९॥

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२७०॥

एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२७१॥

एत्थ तेजइयसरीरस्स परूवणे कीरमाणे[1] जहा ओरालियसरीरस्स णिसेयपमाण-परूवणा कदा तहा कायव्वा, आबाधाभावं पडि विसेसाभावादो। णवरि एत्थ णिसेगभागहारो पलिदोवमस्स असंखे०भागो। कम्मइयसरीरस्स पुणो सत्तवास-सहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए णिसित्तं तं बहुअं। जं विदियसमए णिसित्तं

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्तके अन्त तक विशेष हीन विशेष हीन प्रदेशाग्र निषिक्त होता है ॥२६७॥

ये तीनों स्थितियां यथाक्रमसे तीन नोकर्मोंके लिए योजित कर लेनी चाहिए।

तैजस शरीर और कार्मण शरीरवाले जीवके द्वारा तैजस शरीर और कार्मण शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है ॥२६८॥

जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥२६९॥

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥२७०॥

इस प्रकार छयासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक विशेष हीन प्रदेशाग्र निषिक्त होता है ॥२७१॥

यहाँ तैजस शरीरकी प्ररूपणा करने पर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी निषेकप्रमाण-प्ररूपणा की है उस प्रकारसे करनी चाहिए, क्योंकि आबाधाके अभावके प्रति औदारिकशरीरसे यहाँ कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि यहाँ पर निषेकभागहार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। परन्तु कार्मणशरीरका सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोड़ कर जो प्रदेशाग्र आबाधाके बाद प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है। जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें

१. ता०प्रतौ 'परूवणा कीरमाणे' इति पाठः।

तं विसेसहीणं । केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारमेत्तेण पढमणिसेगे खंडिदे तत्थ एगखंड-मेत्तेण । एत्थ णिसेगभागहारो केत्तिओ ? दोगुणहाणिमेत्तो । गुणहाणिपमाणं केत्तियं ? पलिदो० असंखे०भागो । जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं एगगोवुच्छ-विसेसमेत्तेण । एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । अट्ठकम्मकलावे कम्मइय-सरीरे संते एगसमयपबद्धं णाणासमयपबद्धे वा अस्सिदूण अणंतरोवणिधा ण सक्कदे वोत्तुं । तं जहा—ण ताव णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण अणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे । कुदो ? जेण कसायपाहुडे एगसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिणिसित्तस्स समयाहियावलिय-प्पहुडि णिरंतरमणुसमयवेदगकालो लब्भदि पलिदो० असंखे०भागमेत्तो । पुणो तदणंतरउवरिमसमयमादिं कादूण तस्समयपबद्धस्स अवेदगकालो होदि । जहण्णेण एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागमेत्तो णिरंतरमवेदगकालो होदि । एवमेग-समयपबद्धस्स वेदग-अवेदगकालाणि गच्छंति जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । जहा कम्मट्ठिदीए एगसमयपबद्धस्स वेदगकालो सांतरो णिरंतरो च होदि तहा सेससव्व समयपबद्धाणं वेदगकालेण सांतरेण णिरंतरेण च होदव्वं, समयपबद्धत्तं पडि भेदा-भावादो । तम्हा कम्मट्ठिदीए णिसित्तसव्वसमयपबद्धाणं पदेसा गोवुच्छागारेण

निषिक्त होता है वह विशेष हीन है । कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकके भाजित करने पर वहां जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है ।

शंका—यहाँ निषेकभागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—दो गुणहानिमात्र उसका प्रमाण है ।

शंका—गुणहानिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागमात्र है ।

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह एक गोपुच्छ विशेषमात्र विशेष हीन है । इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए ।

शंका—आठों कर्मोंके समुदायरूप कार्मणशरीरके होनेपर एक समयप्रबद्ध या नाना समय-प्रबद्धोंका आश्रय लेकर अनन्तरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है । यथा—नाना समयप्रबद्धों का आश्रय लेकर तो अनन्तरोपनिधाका कथन करना इसलिए शक्य नहीं है, क्योंकि यतः कषाय-प्राभृतमें कर्मस्थितिमें निषिक्त हुए एक समयप्रबद्धका एक समय अधिक आवलिसे लेकर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक प्रत्येक समयमें निरन्तर वेदककाल प्राप्त होता है । पुनः तदनन्तर उपरिम समयसे लेकर उस समयप्रबद्धका अवेदक काल होता है । जघन्य रूपसे एक समय तक और उत्कृष्टरूपसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर अवेदक काल होता है । इस प्रकार एक समयप्रबद्धके कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक निरन्तर वेदककाल और अवेदककाल होते हुए जाते हैं । जिस प्रकार कर्मस्थितिमें एक समयप्रबद्धका वेदककाल सान्तर और निरन्तर होता है उसी प्रकार शेष सब समयप्रबद्धोंका वेदककाल सान्तर और निरन्तर होना चाहिए, क्योंकि समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है । इसलिए कर्मस्थितिमें निषिक्त

णिरंतरं णो अच्छंति। तेण संचयमस्सिदूण अणंतरोवणिधाणिए संभवो णत्थि। एगसमय-पबद्धमस्सिदूण वि अणंतरोवणिधाए ण संभवो अत्थि। कुदो? सव्वकम्मपढमणिसेयाण-मेत्यथ[2] संभवाभावादो सव्वकम्मचरमणिसेयाणमेयट्ठिदीए णिवादाभावादो च। तं जहा– कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि उवरि दसवस्ससदाणि गंतूण हस्स-रदि-पुरिसवेद-देवगइ--देवगइपाओग्गाणुपुव्वि--समचउरससंठाण -वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडण--पसत्थविहायगइ---थिर---सुभ- -सुभग--सुस्सर--आदेज्ज--जसगित्ति--उच्चगोदपण्णारसण्हं [दसियाणं] पयडीणं पढमणिसेया[3] होंति। तत्तो उवरि बेवस्ससदाणि गंतूण विदिय-संठाण--विदियसंघडणाणं वारसियाणं पयडीणं पढमणिसया होंति। पुव्विल्लणिसेय-कलावादो संपहियणिसेयकलाओ संखेज्जभागब्भहिओ। १५, १७। तत्तो उवरि बेवस्ससदाणि गंतूण तदिय-संठाणतदियसंघडणवेपयडीणं चोद्दसियाणं पढमणिसेया णिवदंति १६। ताधे असंखेज्जगुणहीणत्तं फिट्टिदूण णिसेयकलावस्स संखे०-भागब्भहियत्तं होदि। तदो वस्ससदमुवरि गंतूण मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-इत्थिवेद-सादावेदणीयपयडीणं पण्णारसियाणं पढमणिसेया होंति २३। ताधे णिसेगो संखेज्जभागब्भहिओ होदि। चउत्थसंठाण-चउत्थसंघडणपयडीणं सोलसियाणं तत्तो उवरि वस्ससदं गंतूण पढमणिसेया होंति २५। ताधे णिसेयकलाओ संखेज्जभाग-

हुए सब समयप्रबद्धोंके प्रदेश गोपुच्छाकाररूपसे निरन्तर नहीं रहते हैं। इसलिए संचयका आश्रय लेकर अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है। तथा एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर भी अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है, क्योंकि सब कर्मोंके प्रथम निषेक यहाँ सम्भव नहीं हैं तथा सब कर्मोंके अन्तिम निषेकोंका एक स्थितिमें निपात नहीं होता। यथा–कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर ऊपर एक हजार वर्ष जाकर हास्य, रति, पुरुषवेद, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, समचतुरस्र संस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशः-कीर्ति और उच्चगोत्र इन पन्द्रह दसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं १५। वहाँसे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर द्वितीय संस्थान और द्वितीय संहनन इन बारसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं १७। पहलेके निषेककलापसे साम्प्रतिक निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर तृतीय संस्थान और तृतीय संहनन इन चोदसिय दो प्रकृतियोंके प्रथम निषेक निपतित होते हैं १९। तब असंख्यात गुणहीनत्व मिटकर निषेककलापका संख्यातवां भाग अधिक होता है। वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, स्त्रीवेद और सातावेदनीय इन पन्द्ररसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं २३। तब निषेक संख्यातवें भाग अधिक होता है। वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर चतुर्थ संस्थान और चतुर्थ संहननके प्रथम निषेक होते हैं २५। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक

१. प्रतिषु 'अणंतरोवणिधाणिसेगं एग–' इति पाठः। २. ता॰प्रतौ 'णिसेयाणमेत्थ' इति पाठः। ३. ता॰प्रतौ 'उच्चागोदसोलसण्हं (दसियाणं) पयडीण पढमणिसेया' आ॰प्रतौ 'उच्चगोद तित्थयर कम्मट्ठिदिणिसेया' मा॰प्रतौ 'उच्चागोदसोलसण्हं पयडीणं पढमणिसेया' इति पाठः।

ब्भहिओ होदि । तत्तो उवरि वेवस्ससदाणि गंतूण पंचमसंठाण-पंचमसंघडण-वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणपयडीणमट्ठारसियाणं पढमणिसेया पदंति ३३ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जभागब्भहिओ होदि । तत्तो वेवस्ससदाणि उवरि गंतूण अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि--एइंदिय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीर--ओरालियसरीरंगोवंग--वेउव्वियसरीर--वेउव्वियसरीरंगोवंग-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण--वण्ण--गंध--रस--फास--अगुरुअलहुअ--उवघाद परघाद-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-आदावुज्जोव-थावर-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर--असुह--दूभग दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति--णिमिण-णीचागोदपयडीणं वीसियाणं पढमणिसेया पदंति ७६ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जेहि भागेहि अब्भहिओ होदि । तत्तो उवरि दसवस्ससदमेत्तमद्धाणं गंतूण पंचणाणावरणीय--णवदंसणावरणीय--असादावेदणीय- पंचंतराय पयडीणं तीसियाणं पढमणिसेया पदंति ९६ । ताधे णिसेयकलाओ संखेज्जभागब्भहियो[1] होदि । तत्तो उवरि दसवस्ससदमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सोलसकसायाणं पढमणिसेया पदंति ११२ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जभागब्भहिओ होदि । तदो उवरिमसंखेज्जभागहीणकमेण तिण्णि वस्ससहस्साणि गंतूण मिच्छत्तस्स पढमणिसेयो पददि ११३ पदिदे वि असंखेज्जभागहाणी चेव, देसघादिकम्मपदेसेहिंतो मिच्छत्त-बारसकसायाणं

होता है । उससे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर पञ्चम संस्थान, पञ्चम संहनन, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन अठारसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं ३३ । तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है । वहाँसे दो सौ वर्ष ऊपर जाकर अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यञ्चगति,तिर्यञ्चगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियजाति पञ्चेन्द्रियजाति. तैजसशरीर, कार्मणशरीर औदारिकशरीर, औदारिक आङ्गोपाङ्ग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक आङ्गोपाङ्ग. हुंडसंस्थान, असम्प्राप्तासृपाटिकासंहनन, वर्ण, गन्ध,रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, आतप, उद्योत, स्थावर, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर. अस्थिर. अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र इन वीसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक पड़ते हैं ७६ । तब निषेककलाप संख्यातवें भाग प्रमाण अधिक होता है । वहाँसे एक हजार वर्ष प्रमाण स्थान आगे जाकर पाँच ज्ञानवरणीय. नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पाँच अन्तराय इन तीसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं ९६ । तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है । वहाँसे ऊपर एक हजार वर्षप्रमाण स्थान जाकर सोलह कषायोंके प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं ११२ । तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है । वहांसे ऊपर असंख्यात भागहीन क्रमसे तीन हजार वर्ष जाकर मिथ्यात्वका प्रथम निषेक प्राप्त होता है ११३ । उसके वहाँ पड़ने पर भी असंख्यातभागहानि ही होती है, क्योंकि देशघातिकर्मोंके प्रदेशोंसे मिथ्यात्व और बारह कषायरूप सर्वघाति कर्मोंके

१. अ०का०प्रत्योः 'संखेज्जगुणब्भहिओ' इति पाठः ।

सव्वघादीणं पदेसस्स अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । ण च देसघादीणमेगगोवुच्छ-विसेसस्स अणंतिमभागो पदिदे णिसेयस्स विसेसाहियत्तं जुज्जदे, विरोहादो । उवरि जत्थ दसियाणं णिसेयरचणा थक्कदि ततो उवरिमअणंतरणिसेओ संखेज्जदिभागहीणो । एवमुवरि जत्थ जत्थ पयडीणं णिसेयरचणा थक्कदि तत्थ तत्थ णिसेयो संखेज्ज-भागहीणो संखेज्जगुणहीणो च होदि त्ति वत्तव्वं । एवं चत्तालीससागरोवमकोडाकोडीओ उवरि गंतूण जावुवरिमअणंतरट्ठिदी तिस्से गोवुच्छो अणंतगुणहीणो होदि । तत्तो उवरि सव्वत्थ असंखेज्जभागहीणो, तेण एगसमयपबद्धमस्सिदूण वि णाणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव पढमपरूविददोससम्भवो, सेचीयादो मिच्छत्तसंचयगोवुच्छाए अणंतरोवणिधाए भण्णमाणाए सव्वत्थ विसेसहीणत्तुव-लंभादो । ण विदियपक्खे उत्तदोसो वि संभवदि, मिच्छत्तमेक्कं चेव घेत्तूण अणंतरोव-णिधाणिरूवणादो । किमट्ठं तं चेवेक्कं घेप्पदे ? अण्णासिं पयडीणं ट्ठिदिं पडि पहाणत्ताणुवलंभादो । अथवा कम्मट्ठिदि त्ति उत्ते अट्ठण्हं[1] कम्माणं पुध पुध ट्ठिदीओ घेतव्वाओ । एवं गहिदे ण पुव्वुत्तदोससंभवो, सव्वकम्माणं सगसगजहण्णणिसेग-ट्ठिदिप्पहुडि जाव सगसगुक्कस्सट्ठिदि त्ति पुध पुध णिसेयरयणाए परूविदत्तादो । एव-मणंतरोवणिधा समत्ता ।

प्रदेश अनन्तगुणे हीन उपलब्ध होते हैं । यदि कहा जाय कि देशघातियोंके एक गोपुच्छविशेषके अनन्तवें भागके पतन होने पर निषेकका विशेष अधिकपना बन जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है । ऊपर जहाँ दसियोंकी निषेकरचना समाप्त होती है उससे उपरिम अनन्तर निषेक संख्यातवें भागप्रमाण हीन होता है । इस प्रकार ऊपर जहाँ जहाँ प्रकृतियोंकी निषेक रचना है वहाँ वहाँ निषेक संख्यातभागहीन और संख्यातगुणहीन होता है ऐसा कहना चाहिए । इस प्रकार चालीस कोड़ाकड़ी सागर ऊपर जाकर जो उपरिम अनन्तर स्थिति है उसका गोपुच्छ अनन्तगुणा हीन होता है । वहाँसे ऊपर सर्वत्र असंख्यातभागहीन है, इसलिए एक समयप्रबद्धका आश्रय करके भी अनन्तरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है ।

समाधान—यहाँ पर परिहारका कथन करते हैं—प्रथम पक्षमें कहे गए दोषोंकी तो सम्भावना है नहीं, क्योंकि सेचीयरूपसे मिथ्यात्वके संचयकी गोपुच्छाके अनन्तरोपनिधारूपसे कथन करने पर सर्वत्र विशेष हीनपना पाया जाता है । द्वितीय पक्षमें कहा गया दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि एक मिथ्यात्वका ही ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाका कथन किया है ।

शंका—उस एकका ही किसलिए ग्रहण करते हैं ?

समाधान—क्योंकि अन्य प्रकृतियोंकी स्थितिके प्रति प्रधानता नहीं उपलब्ध होती है ।

अथवा कर्मस्थिति ऐसा कहने पर आठों कर्मोंकी पृथक् पृथक् स्थितियाँ ग्रहण करनी चाहिए । ऐसा ग्रहण करने पर पूर्वोक्त दोष सम्भव नहीं है, क्योंकि सब कर्मोंकी अपनी अपनी जघन्य निषेकस्थितिसे लेकर अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक अलग अलग निषेक रचनाका

१. ता०प्रतौ 'उत्तअट्ठण्हं' अ०प्रतौ वुत्तं अट्ठण्णं का०प्रतौ 'वुत्तअट्ठण्णं' इति पाठः ।

परंपरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्वियसरीरिणा तेणेव पढमसमय-आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्वियसरीरत्ताए जं पढमसमयपदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ॥२७२॥

एदेसिं दोण्हं सरीराणं जं भवस्स पढमसमए णिसित्तं पदेसग्गं तं पेक्खिदूण

. . .

कथन किया है।

विशेषार्थ—अनन्तरोपनिधामें प्रथम स्थानसे द्वितीय स्थानमें, तथा इसी प्रकार द्वितीय आदि स्थानोंसे तृतीय आदि स्थानोंमें कितनी हानि या वृद्धि होती है इसका विचार किया जाता है। यहां कर्मके प्रसंगसे निषेक रचनाका विचार करना है। नोकर्मोंके समान उसके सम्बन्ध में सामान्य नियम यह तो है ही कि प्रथम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र मिलता है उससे द्वितीयादि स्थितियों में वह उत्तरोत्तर हीन मिलता है। पर कितना हीन मिलता है इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिए ही सूत्रकारने यह व्यवस्था दी है कि प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह बहुत है। उससे दूसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है। उससे तीसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है। इस प्रकार विशेष हीन का यह क्रम कर्मकी अन्तिम स्थिति तक जानना चाहिए। इस पर शंकाकारका यह कहना है कि इस प्रकार जो अनन्तरोपनिधा बतलाई है वह न तो नानासमयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर बन सकती है और न एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर ही बन सकती है। कषायप्राभृतमें जो वेदक और अवेदककाल बतलाया है उसे देखते हुए तो नानासमयप्रबद्धोंकी अपेक्षा उक्त प्रकारसे अनन्तरोपनिधा नहीं बन सकती। यदि एक समयप्रबद्धकी अपेक्षा यह अनन्तरोपनिधा मानी जाय तो यह मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि एक तो मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा प्रत्येक कर्मकी अपनी अपनी स्थितिके अनुसार अलग अलग आबाधा पड़ती है दूसरे एक समयमें आए हुए द्रव्यका बटवारा सर्वघाति और देशघातिरूपसे विभाग होकर भिन्न भिन्न प्रकारसे होता है, इसलिए न तो सब कर्मोंकी निषेकरचना एक स्थानसे प्रारम्भ हो सकती है और न समान क्रमसे विभाग होकर सब कर्मोंको द्रव्य ही मिल सकता है। अतः प्रथम स्थितिके प्रदेशाग्रसे द्वितीय स्थितिका प्रदेशाग्र, द्वितीय स्थितिके प्रदेशाग्रसे तृतीय स्थितिका प्रदेशाग्र विशेष हीन होता है इत्यादि क्रम नहीं बन सकता। यह मूल शंका है। इस शंकाका जो समाधान किया है उसका सार यह है कि यहाँ जो अनन्तरोपनिधा का कथन किया गया है वह एक समयमें आठों कर्मों और उनकी उत्तर प्रकृतियोंके लिए जो द्रव्य मिला है उस सबको मिलाकर कथन नहीं किया गया है किन्तु मिथ्यात्वको या अलग अलग प्रकृतिको ध्यानमें रख कर ही यहां अनन्तरोपनिधाका कथन किया गया है, इसलिए शंकाकारने जो आपत्तियां उठाई हैं उनका परिहार हो जाता है।

इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिक शरीरवाला और वैक्रियिक शरीर-वाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर और वैक्रियिक शरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥२७२॥

इन दोनों शरीरोंका भवके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है उसे देखते हुए

तत्तो अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण णिसित्तं पदेसग्गं दुगुणहीणं होदि । किं पमाणमंतोमुहुत्तं ? णिसेगभागहारस्स अद्धमेत्तं । पुणो दुगुणहीणणिसेगादो उवरि तत्तियं चेव अवट्ठिदमद्धाणं गंतूण जो अण्णो णिसेयो सो तत्तो दुगुणहीणो होदि ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥२७३॥

अप्पिदअप्पिददुगुणहीणणिसेगादो उवरि अवट्ठिदअंतोमुहुत्तमद्धाणं गंतूण ट्ठिदणिसेगो दुगुणहीणो होदि त्ति घेत्तव्वं । अवट्ठिदमद्धाणमिदि कथं णव्वदे ? 'एवं' णिद्देसादो । एवं एदेण[1] कमेण णेयव्वं जाव तिण्णं पलिदोवमाणं तेत्तीसं सागरोवमाणं चरिमट्ठिदि त्ति । एगगुणहाणिअद्धाणपरूवणट्ठं[2] णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तमागदं--

एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥२७४॥

उससे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल ऊपर जाकर वहांकी स्थितिमें निषिक्त हुआ प्रदेशाग्र दुगुणा हीन होता है ।

शंका—यहाँ अन्तर्मुहूर्तका क्या प्रमाण है ।

समाधान—निषेक भागहारके अर्धभागप्रमाण है ।

पुनः द्विगुण हीन निषेकसे ऊपर उतना ही अवस्थित अध्वान जाकर जो अन्य निषेक है वह उससे दुगुणा हीन है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य और तेतीस सागर होने तक दुगुणा हीन होता गया है ॥२७३॥

उत्तरोत्तर विवक्षित दुगुणे हीन निषेकसे ऊपर अवस्थित अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर स्थित हुआ निषेक दुगुणा हीन होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका—सर्वत्र अवस्थित अध्वान है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—'एवं' पदके निर्देशसे जाना जाता है ।

इस प्रकार इस क्रमसे तीन पल्य और तेतीस सागरकी अन्तिम स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । अब एक गुणहानिअध्वानका कथन करनेके लिए और नाना गुणहानि शलाकाओंके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है तथा नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥२७४॥

१. ता०प्रतौ 'णिद्देसादो । एव एदेण' इति पाठः । २. प्रतिषु '-अद्धाणं परूवणट्ठं' इति पाठः ।

गुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तमिदि सुत्तादो चेव णव्वदे, जुत्तिगोचरमइच्छिदूण ट्ठिदत्तादो। णाणागुणहाणिसलागपमाणं पुण सुत्तादो जुत्तीदो च णव्वदे। तं जहा— अंतोमुहुत्तस्स जदि एगगुणहाणिसलागा लब्भदि तो तिण्णं पलिदोवमाणं तेत्तीसं सागरोवमाणं च किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदो० असंखे०भागमेत्ताणि लब्भंति। एदेसिं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवं ॥२७५॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥२७६॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो।

आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ॥२७७॥

ओरालिय-वेउव्वियसरीरेहि सह आहारसरीरस्स परूवणा किण्ण कदा, अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणत्तं पडि भेदाभावादो ? ण, गुणहाणिसलागसंखगदभेद-

गुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है यह बात सूत्रसे ही जानी जाती है क्योंकि वह युक्तिकी विषयताका उल्लंघन कर स्थित है। परन्तु नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण सूत्र और युक्ति दोनोंसे जाना जाता है। यथा—अन्तर्मुहूर्तकी यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो तीन पल्य और तेतीस सागरोंकी कितनी गुणहानिशलाकाएँ प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण लब्ध होते हैं। अब इनके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक है ॥२७५॥

क्योंकि वह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

उससे नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥२७६॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

जो आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा आहारकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥२७७॥

शंका—औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके साथ आहारकशरीरकी प्ररूपणा क्यों नहीं की, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त स्थान जाकर दुगुणा हीन होता है इस अपेक्षासे इनके कथनमें कोई भेद

परूवणट्ठं पुध सुत्तारंभकरणादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जावुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥२७८॥

अवट्ठिदगुणहाणिअद्धाणमिदि जाणावणट्ठं एवं णिद्देसो कदो, अण्णहा तस्स णिप्फलत्तप्पसंगादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि संखेज्जा समया ॥२७९॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पदेसग्गं दुगुणहीणं होदि त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदस्स गुणहाणिअद्धाणपमाणस्स पुणो वि एत्थ परूवणा किमट्ठं कीरदे ? तत्तो णाणागुण-हाणिसलागाणं पमाणमागच्छदि त्ति जाणावणट्ठं कीरदे । तं जहा—अंतोमुहुत्तस्स जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो आहारसरीरेण सह अच्छणकालब्भंतरे केत्तियाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जाओ णाणा-गुणहाणिसलागाओ लब्भंति ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥२८०॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥२८१॥

नहीं है ।

समाधान—नहीं, क्योंकि गुणहानिशलाकाओंके संख्यागत भेदका कथन करनेके लिए अलगसे सूत्रका आरम्भ किया है ।

इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होने तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता गया है ॥२७८॥

गुणहानिअध्वान अवस्थित है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'एवं' पदका निर्देश किया है, अन्यथा उसके निष्फल होनेका प्रसङ्ग आता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर संख्यात समयप्रमाण हैं ॥२७९॥

शंका—'उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर प्रदेशाग्र दुगुणा हीन होता है' इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा गुणहानि अध्वानके प्रमाणका ज्ञान हो जाता है, इसलिए पुन: इसकी प्ररूपणा किसलिए करते हैं ?

समाधान—उससे नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—अन्तर्मुहूर्तकी यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो आहारकशरीरके साथ रहनेके कालके भीतर वे कितनी प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर संख्यात नानागुणहानिशलाकाएँ प्राप्त होती हैं ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥२८०॥

क्योंकि उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥२८१॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं पलिदो० असंखे०भागं गंतूण दुगुणहीणं ॥२८२॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण णिसेगस्स दुगुणहीणत्तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२८३॥

सुगममेदं ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो ॥२८४॥

एत्थ वि पुव्वं व गुणहाणिअद्धाणादो णाणागुणहाणिसलागाओ उप्पादेदव्वाओ ।

गुणकार क्या है ? गुणकारका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ।

तैजसशरीरवाले और कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कार्मण-शरीररूपसे प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥२८२॥

शंका—पल्यके असंख्यातवें भागमाण स्थितिस्थान जाकर निषेक दुगुणा हीन होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि ऐसा होने पर अनवस्थाका प्रसङ्ग आता है ।

इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता हुआ गया है ॥२८३॥

यह सूत्र सुगम है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है और नानप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्यके प्रथमवर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥२८४॥

यहाँ पर भी पहलेके समान एकगुणहानिअध्वानसे नानागुणहानिशलाकाऐं उत्पन्न करनी

अथवा जहा वेयणाए णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाओ ॥२८५॥

पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखे०भागमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जगुणं ॥२८६॥

असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

चाहिए । अथवा जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें नानागुणहानिशलाकाओं और एक गुणहानिकी प्ररूपणा की है उसप्रकार यहा भी करनी चाहिए ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥२८५॥

क्योंकि वे पल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥२८६॥

क्योंकि वे पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

विशेषार्थ—यह तो अनन्तरोपनिधाके प्रसंगसे ही बतला आये हैं कि प्रथम स्थितिमें जो द्रव्य मिलता है उससे द्वितीय स्थितिमें मिलनेवाला द्रव्य विशेष हीन होता है आदि। अब यहाँ परम्परोपनिधामें यह बतलाया गया है कि इस प्रकार आगे आगेकी प्रत्येक स्थितिमें विशेषहीन विशेषहीन होता हुआ वह द्रव्य कितना काल जानेपर आधा, कितना काल जानेपर चतुर्थांश और कितना काल जानेपर अष्टमांश आदि होकर रह जाता है। यहाँ बतलाया है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर अन्तर्मुहूर्त अन्तर्मुहूर्त काल जानेपर उत्तरोत्तर आधा आधा होता जाता है। तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल जानेपर आधा आधा होता जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी अपेक्षा इस प्रकार निषेक रचना होती है जिससे वह प्रथम निषेकमें प्राप्त होनेवाले द्रव्यसे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक आधा रह जाता है। तथा इससे दूसरे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक उससे भी आधा रह जाता है। इस प्रकार इन तीन नोकर्मोंकी क्रमसे जो तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट स्थिति बतलाई है उसमें इस एक द्विगुणहानिके कालका भाग देनेपर उस उस नोकर्मकी अलग अलग द्विगुणहानियोंका प्रमाण आ जाता है। यहाँ मूलमें एक द्विगुणहानिस्थानान्तरसे एक द्विगुणहानि ली गई है और इस एक द्विगुणहानिका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देने पर जहाँ जितना लब्ध आता है वहाँ उतनी द्विगुणहानियाँ बतलाई गई हैं। इन्हींको नानाद्विगुणहानिस्थानान्तर कहते हैं। यतः तीन पल्य और तेतीस सागरमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान प्राप्त होते हैं अतः औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी इतनी द्विगुणहानियाँ बतलाई हैं। तथा अन्तर्मुहूर्तमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर संख्यात समय लब्ध आते हैं अतः आहारकशरीरकी संख्यात द्विगुणहानियाँ बतलाई हैं। तैजस और कार्मणशरीरकी एकद्विगुणहानि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए इसका

पदेसविरए त्ति तत्थ इमो पदेसविरअस्स सोलसवदिओ दंडओ कायव्वो भवदि ॥२८७॥

कर्मपुद्गलप्रदेशो विरच्यते अस्मिन्निति प्रदेशविरचः कर्मस्थितिरिति यावत् । अथवा विरच्यते इति विरचः, प्रदेशश्चासौ विरचश्च प्रदेशविरचः, विरच्यमानकर्मप्रदेशा इति यावत् । तत्थ पढमत्थमस्सिदूण आउट्ठिदीए सोलसवदिओ दंडओ कायव्वो त्ति भणिदं होदि ।

सव्वत्थोवा एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥२८८॥

जहण्णाउअबंधो[1] जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम । भवस्स पढमसमयप्पहुडि जाव जहण्णाउवबंधस्स चरिमसमयो त्ति ताव एसा जहण्णिया णिव्वत्ति त्ति भणिदं होदि । आबाधा एत्थ किण्ण घेप्पदे ? ण, अप्पिदसरीरस्स तत्थ पदेसाभावादो । एइंदिया बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेएण चउव्विहा । तत्थ कस्स जहण्णिया णिव्वत्ती

छयासठ सागर और सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरमें भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान लब्ध आते हैं, इसलिए इनकी इतनी द्विगुणहानियाँ होती हैं। इस सब विधिका कथन परम्परोपनिधामें किया जाता है, क्योंकि इसमें परम्परासे कहाँ कितनी हानि और वृद्धि होती है यह देखा जाता है।

इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

प्रदेशविरचका अधिकार है । उसमें प्रदेशविरचका यह सोलहपदवाला दण्डक करने योग्य है ॥२८७॥

कर्मपुद्गलप्रदेश जिसमें विरचा जाता है अर्थात् स्थापित किया जाता है वह प्रदेशविरच कहलाता है। अभिप्राय यह है कि यहाँ पर प्रदेशविरचसे कर्मस्थिति ली गई है। अथवा विरच पदकी निरुक्ति है—विरच्यते अर्थात् जो विरचा जाता है उसे विरच कहते हैं। तथा प्रदेश जो विरच वह प्रदेशविरच कहलाता है। विरच्यमान कर्मप्रदेश यह उसका अभिप्राय है। इन दोनों अर्थोंमेंसे प्रथम अर्थकी अपेक्षा आयुस्थितिका सोलह पदवाला दण्डक करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

एकेन्द्रिय जीवकी पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥२८८॥

जघन्य आयु बन्धकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति संज्ञा है। भवके प्रथम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धके अन्तिम समय तक यह जघन्य निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यहाँ पर आबाधाका ग्रहण किसलिए नहीं करते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विवक्षित शरीरके वहाँ प्रदेश नहीं हैं।

शंका—एकेन्द्रिय जीव बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे चार

१. अ०प्रतौ 'जहण्णाउअबंधो' इति पाठो नोपलभ्यते ।

घेप्पदि ? सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती घेत्तव्वा । दोण्णमपज्जत्ताणं जहण्ण-णिव्वत्तीओ किण्ण घेप्पंति ? ण, तत्तो उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणं णिरंतरकमेण गमणाभावादो । बादरेइंदियस्स पज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती किण्ण घेप्पदे ? ण, सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्तीदो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण ट्ठिदबादरेइंदियजहण्ण-पज्जत्तणिव्वत्तीए एइंदियजहण्णणिव्वत्तित्तविरोहादो । एसा जहण्णिया णिव्वत्ती किमाउअस्स जहण्णबंधो आहो जहण्णसंतमिदि ? जहण्णबंधो घेत्तव्वो ण जहण्णं संतं । कुदो ? जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तण्णहाणुववत्तीदो ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥२८९॥

तं जहा—सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जो जहण्णाउअबंधो सो सव्वो एगं णिव्वत्तिट्ठाणं । तम्हि चेव समउत्तरं पबद्धे विदियं णिव्वत्तिट्ठाणं । पुणो दुसमउत्तरं पबद्धे तदियं णिव्वत्तिट्ठाणं । एवं तिसमउत्तर-चदुसमउत्तरादिकमेण णिरंतरं णिव्वत्तिट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव बावीसं वस्ससहस्साणि त्ति । एदेहिंतो उवरि ण लब्भंति, एइंदियेसु बावीसवस्ससहस्सेहिंतो अहियआउअबंधाभावादो । समऊणजहण्णणिव्वत्तीए बावीस-वस्ससहस्सेसु अवणिदाए णिव्वत्तिट्ठाणाणं पमाणं होदि । एवं होदि त्ति कादूण

प्रकारके हैं । उनमेंसे किसकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण करते हैं ?

समाधान—सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण की जानी चाहिए ।

शंका—दोनों अपर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्तियाँ क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उनसे ऊपर निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर क्रमसे प्राप्तिका अभाव है ।

शंका—बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य निर्वृत्तिसे उपर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्थित हुई बादर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति होनेमें विरोध है ।

शंका—यह जघन्य निर्वृत्ति क्या आयुकर्मका जघन्य बन्ध है या जघन्य सत्त्व है ?

समाधान—जघन्य बन्ध ग्रहण करना चाहिए जघन्य सत्त्व नहीं, क्योंकि अन्यथा जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥२८९॥

यथा—सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जो जघन्य आयुबन्ध है वह सब एक निर्वृत्तिस्थान है । एक समय अधिक उसीका बन्ध होने पर दूसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । पुनः दो समय अधिकका बन्ध होनेपर तीसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार तीन समय अधिक और चार समय अधिकके क्रमसे निरन्तर निर्वृत्तिस्थान बाईस हजार वर्षके प्राप्त होने तक लब्ध होते हैं । इनसे ऊपर नहीं प्राप्त होते, क्योंकि एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षसे अधिक आयुबन्ध नहीं होता । बाईस हजार वर्षोंमेंसे एक समय कम जघन्य निवृत्तिके घटा देनेपर निर्वृत्तिस्थानों-

अंतोमुहुत्तमेत्तजहण्णणिव्वत्तीए देसूणवावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जाणि रूवाणि लब्भंति । जं लद्धं सो गुणगारो ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥२९०॥

बंधट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं समत्तं मोत्तूण कुदो विसेसाहियत्तं ? ण, भुंजमाणाउअस्स कदलीघादेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणमुवलंभादो । भुंजमाणाउअस्स कयलीघादो अत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, अण्णहा णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्ताणुववत्तीदो । एत्थ कदलीघादम्मि वे उवदेसा, के वि आइरिया जहण्णाउअम्मि आवलियाए असंखे०-भागमेत्ताणि जीवणियट्ठाणाणि लब्भंति त्ति भणंति । तं जहा—पुव्वभणिदसुहुमेइंदियपज्जत्तसव्वजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणस्स कदलीघादो णत्थि । एवं समउत्तरदुसमउत्तरादिणिव्वत्तीणं पि घादो णत्थि । पुणो एदम्हादो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो संखेज्जगुणमाउअं बंधिदूण सुहुमपज्जत्तेसुववण्णस्स अत्थि कदलीघादो । पुणो तं घादयमाणेण सव्वजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणं समऊणं घादेदूण कदं ताधे तमेगं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो तेणेव विधिणा विदियजीवेण घादेदूण दुसमऊणं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणाउए ट्ठविदे

का प्रमाण होता है । इस प्रकार होता है ऐसा समझकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका कुछ कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं ॥२९०॥

शंका—जीवनीय स्थान बन्धस्थानोंके समान न होकर विशेष अधिक कैसे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि भुज्यमान आयुका कदलीघात सम्भव होनेसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीय स्थान उपलब्ध होते हैं ।

शंका—भुज्यमान आयुका कदलीघात होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है, अन्यथा निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

यहाँ कदलीघातके विषयमें दो उपदेश पाये जाते हैं । कितने ही आचार्य जघन्य आयुमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीय स्थान लब्ध होते हैं ऐसा कहते हैं । यथा—पहले कहे गये सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी सबसे जघन्य आयुके निर्वृत्तिस्थानका कदलीघात नहीं होता । इसी प्रकार एक समय अधिक और दो समय अधिक आदि निर्वृत्तियोंका भी घात नहीं होता । पुनः इस जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे संख्यातगुणी आयुका बन्ध करके सूक्ष्म पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवका कदलीघात होता है । पुनः उसका घात करनेवाले जीवने आयुके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानका घात करके उसे एक समय कम किया तब वह एक जीवनीयस्थान होता है । पुनः उसी विधिसे दूसरे जीवके द्वारा घात करके जघन्य निर्वृत्तिस्थानरूप आयुके दो समय कम स्थापित करने

विदियं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो अणेण विहाणेण घादेदूण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे तिसमऊणे कदे तदियं जीवणियट्ठाणं होदि । एवमुवरिमआउअवियप्पे घादिय जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चदुसमऊण-पंचसमऊणादिकमेण ओदारेदव्वं जाव आवलियाए असंखे०भागमेत्तजीवणियट्ठाणाणि जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे लद्धाणि त्ति । एत्थ एत्तियाणि चेव जीवणियट्ठाणाणि लब्भंति णो वड्ढिमाणि, जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणम्मि आवलि-असंखे०भागादो अधिओ घादो णत्थि त्ति गुरूवएसादो । तेण णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागेण विसेसाहियाणि । जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणि चेव, ण णिव्वत्तिट्ठाणाणि, आउअबंधवियप्पाभावादो । उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि, जीवाणं बंधाउअमेत्तकालं जीविदूण अण्णत्थ गमणुवलंभादो[1] ।

के वि आइरिया एवं भणंति—जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणमुवरिमआउअवियप्पेहि वि घादं गच्छदि । केवलं पि घादं गच्छदि । णवरि उवरिमआउवियप्पेहि जहण्ण-णिव्वत्तिट्ठाणं घादिज्जमाणं समऊणदुसमऊणादिकमेण हीयमाणं[2] ताव गच्छदि जाव जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे[3] भागे ओदारिय संखे०भागो सेसो त्ति । जदि पुण केवलं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चेव घादेदि तो तत्थ दुविहो कदलीघादो होदि—जहण्णओ

पर दूसरा जीवनीयस्थान होता है। पुनः इस विधिसे घात कर जघन्य निर्वृत्तिस्थानके तीन समय कम करने पर तीसरा जीवनीयस्थान होता है। इस प्रकार उपरिम आयुविकल्पको घात कर जघन्य निर्वृत्तिस्थानको चार समय और पाँच समय आदिके क्रमसे कम करते हुए जघन्य निर्वृत्तिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीयस्थानोंके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए। यहाँ पर इतने ही जीवनीयस्थान प्राप्त होते हैं अधिक नहीं, क्योंकि जघन्य निर्वृत्ति-स्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागसे अधिक स्थानोंका घात नहीं होता ऐसा गुरुका उपदेश है। इसलिए निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण विशेष अधिक हैं। जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीयस्थान ही हैं निर्वृत्तिस्थान नहीं, क्योंकि वहाँ आयुबन्धके विकल्पोंका अभाव है। ऊपर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान सदृश हैं, क्योंकि जीवोंका बँधी हुई आयुमात्र काल तक जी कर अन्यत्र गमन पाया जाता है।

कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं—जघन्य निर्वृत्तिस्थान उपरिम आयुविकल्पोंके साथ भी घातको प्राप्त होता है और केवल भी घातको प्राप्त होता है। इतनी विशेषता है कि उपरिम आयुविकल्पोंके साथ घातको प्राप्त होता हुआ जघन्य निर्वृत्तिस्थान एक समय और दो समय आदिके क्रमसे कम होता हुआ वह तब तक जाता है जब तक जघन्य निर्वृत्तिस्थानका संख्यात बहुभाग उतर कर संख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है। यदि पुनः केवल जघन्य निर्वृत्तिस्थानको ही घातता है तो वहाँ पर दो प्रकारका कदलीघात होता है—जघन्य और उत्कृष्ट।

१. ता०प्रतौ 'गमणाणुवलंभादो' इति पाठः। २. प्रतिषु 'जियमाणं' इति पाठः। ३. अ०का०प्रत्योः 'असंखेज्जे इति पाठः।

उक्कस्सओ चेदि। सुट्ठु जदि थोवं घादेदि तो जहण्णयणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे भागे जीविदूण सेससंखे० भागस्स संखेज्जे भागे संखेज्जदिभागं वा घादेदि। जदि पुण बहुअं घादेदि तो जहण्णणिवत्तिट्ठाणसंखे० भागं जीविदूण संखेज्जे भागे कदलीघादेण घादेदि। तं जहा—एगो तिरिक्खो मणुसो वा सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं बंधिदूण कालं करिय सुहुमणिगोदपज्जत्तएसुववज्जिय सव्वलहुएण कालेण चदुहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण एगवारेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेसु जीविदद्धपमाणेण कदलीघादेण घादिदूण ट्ठविदेसु तमेगमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। पुणो अण्णो जीवो सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं समउत्तरं बंधिदूणुप्पज्जिय कदलीघादेण पुव्वुत्तजीवणियट्ठाणादो समउत्तरं काऊण अच्छिदो ताधे तं विदियमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। पुणो तदियजीवेण सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं दुसमउत्तरबंधेण पुव्वुत्तसव्वजहण्णघादट्ठाणस्सुवरि कदलीघादेण दुसमउत्तरे जीवणियट्ठाणे कदे तं तदियमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। एवं हेट्ठदो उवरि तिसमउत्तर-चदुसमउत्तरादिकमेण णाणाजीवे अस्सिदूण णेयव्वं जाव समऊणसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं ति। एवं कदे अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जा भागा पविसिदूण जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि भवंति। पुव्वुत्तविसेसादो संपहिय विसेसो असंखेज्जगुणो। कुदो?

यदि अति स्तोकका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहु भाग तक जीवित रह कर शेष संख्यातवें भागके संख्यात बहुभाग या संख्यातवें भागका घात करता है। यदि पुनः बहुतका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यातवे भागप्रमाण काल तक जीवित रह कर संख्यात बहुभागका कदलीघातद्वारा घात करता है। यथा—एक तिर्यञ्च या मनुष्यके सूक्ष्म निगोद पर्याप्तककी सबसे जघन्य आयुका बन्ध करके और मर कर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमे उत्पन्न हो कर सबसे जघन्य कालके द्वारा चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो कर एक बारमें जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका कदलीघातसे घात कर जीवित कालप्रमाण स्थापित करने पर वह एक अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। पुनः अन्य जीव सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानको एक समय अधिक बाँध कर और वहां उत्पन्न होकर कदलीघातके द्वारा पूर्वोक्त जीवनीय स्थानसे इसे एक समय अधिक करके स्थित हुआ तब वह दूसरा अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। पुनः सूक्ष्म निगोद पर्याप्तककी सबसे जघन्य आयुका बन्ध करनेवाले तीसरे जीवके द्वारा पूर्वोक्त सबसे जघन्य घातस्थानके ऊपर कदलीघातके द्वारा दो समय अधिक जीवनीयस्थानके करने पर वह तीसरा अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। इस प्रकार नीचेसे ऊपर तीन समय अधिक और चार समय अधिक आदिके क्रमसे नाना जीवोंका आश्रय लेकर एक समय कम सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक लेजाना चाहिए। ऐसा करने पर अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका प्रवेश कराकर जीवनीयस्थान विशेष अधिक होते हैं। पूर्वोक्त विशेषसे साम्प्रतिक विशेष

जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेसु संखेज्जावलियाणमुवलंभादो । एत्थ पढमवक्खाणं ण भद्दयं, खुद्दाभवग्गहणादो । एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा त्ति सुत्तेण सह विरुद्धत्तादो ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥२९१॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण वा जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि भागेहि वा ऊणसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणमेत्तेण ।

सव्वत्थोवा सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥२९२॥

सम्मुच्छिमपज्जत्ता बादरेइंदियपज्जत्त-बेइंदियपज्जत्त--तेइंदियपज्जत्त--चउरिंदिय-पज्जत्त-असण्णिपंचिंदियपज्जत्त सण्णिपंचिंदियपज्जत्तभेदेण छव्विहा होंति, तत्थ कस्सेदं गहणं ? छण्णं पि गहणं कायव्वं, विरोहाभावादो । एदेसिं अपज्जत्ताणं गहणं ण कायव्वं, पज्जत्तणिद्देसेण ओसारिदत्तादो । किमट्ठमपज्जत्ता ओसारिज्जंति ? तेसिं णिव्वत्तिट्ठाणाणं णिरंतरवड्ढीए अभावादो । तेण सम्मुच्छिमपज्जत्तजहण्णणिव्वत्ति त्ति भणिदे छण्णं सम्मुच्छिमपज्जत्ताणमंतोमुहुत्तमेत्तसव्वजहण्णाउआणं गहणं कायव्वं ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥२९३॥

असंख्यातगुणा है, क्योंकि जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात भागोंमें संख्यात आवलियाँ उपलब्ध होती हैं । यहाँ पर प्रथम व्याख्यान ठीक नहीं है, क्योंकि उसमें क्षुल्लक भवका ग्रहण किया है । तथा एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है इस सूत्रके वह विरुद्ध पड़ता है ।

उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥२९१॥

कितनी अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागसे या जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागसे न्यून जो सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान है उतनी वह अधिक है ।

सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥२९२॥

शंका—सम्मूर्च्छन पर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तके भेदसे छह प्रकारके हैं । उनमेंसे किसका यह ग्रहण किया है ?

समाधान—छहोंका ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करनेमें कोई विरोध नहीं है ।

मात्र इनके अपर्याप्तकोंका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि पर्याप्त पदके निर्देश द्वारा उनको अलग कर दिया है ।

शंका—अपर्याप्तकोंको किसलिए अलग किया है ?

समाधान—क्योंकि उनके निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धिका अभाव है ।

इसलिए सम्मूर्च्छन पर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर छह सम्मूर्च्छन पर्याप्तकोंकी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण सबसे जघन्य आयुका ग्रहण करना चाहिए ।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥२९३॥

अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्सुवरि समउत्तरादिकमेण णिरंतरणिव्वत्तिट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव [एइंदिएसु] बावीसवस्ससहस्साणि, बेइंदिएसु बारसवासाणि तेइंदिएसु एगुणवण्ण रादिंदियाणि चउरिंदिएसु छम्मासा सण्णि-असण्णिपंचिंदिएसु पुव्वकोडि त्ति । तदो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे समऊणे अप्पप्पणो उक्कस्साउअम्मि सोहिदे णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति । पुणो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जावलियमेत्ताए अप्पप्पणो णिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जरूवाणि लब्भंति । जं लद्धं सो गुणगारो ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥२९४॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण वा अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागे हिदे वा[1] । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥२९५॥

केत्तियमेत्तेण ? अप्पप्पणो सव्वजहण्णजीविदमेत्तेण ।

सव्वत्थोवा गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥२९६॥

गब्भोवक्कंतियसव्वजहण्णणिव्वत्तीए अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

अपने अपने सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर निर्वृत्तिस्थान एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षप्रमाण, द्वीन्द्रियोंमें बारह वर्षप्रमाण, त्रीन्द्रियोंमें उनचास रात-दिनप्रमाण, चतुरिन्द्रियोंमें छह महीनाप्रमाण तथा संज्ञी और असंज्ञी पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटि वर्षप्रमाण होनेतक प्राप्त होते हैं । तदनन्तर अपने अपने एक समय कम जघन्य निर्वृत्तिस्थानको अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुमेंसे कम करनेपर निर्वृत्तिस्थान होते हैं । पुनः अपनी अपनी संख्यात आवलिप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका अपने अपने निर्वृत्तिस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥२९४॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । अथवा अपनी अपनी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं । यहाँ कारणका कथन पहलेके समान करना चाहिए ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥२९५॥

कितनी अधिक है ? अपने अपने सबसे जघन्य जीवित रहनेका जो प्रमाण है उतनी अधिक है ।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥२९६॥

क्योंकि गर्भोपक्रान्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

१. ता०प्रतौ 'भागेहि [दे] वा' अ०प्रतौ 'भागे वा' का०प्रतौ 'भागेहि वा' इति पाठः ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥२९७॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो। कुदो ? जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो समउत्तरादिकमेण णिरंतरं जाव तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति णिव्वत्तिट्ठाणाणं वुड्ढि-दंसणादो। पुव्वकोडीए उवरि कथं णिरंतरवड्ढी लब्भदे ? ण, उस्सप्पिणिकालमस्सिदूण भरहएरावदमणुस्सेसु पुव्वकोडीए उवरि समउत्तरादिकमेण णिरंतरं तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति वुड्ढिदंसणादो।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥२९८॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि भागेहि वा। एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥२९९॥

केत्तियमेत्तेण ? कदलीघादजणिदसव्वजहण्णजीवणकालमेत्तेण।

सव्वत्थोवा उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥३००॥

कुदो ? दसवस्ससहस्सपमाणत्तादो।

उससे निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥२९७॥

गुणकारका प्रमाण कितना है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकारका प्रमाण है, क्योंकि जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर तीन पल्य प्रमाण कालतक निर्वृत्तिस्थानोंकी वृद्धि देखी जाती है।

शंका—पूर्वकोटि कालके ऊपर निरन्तर वृद्धि कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि उत्सर्पिणी कालका आश्रय लेकर भरत और ऐरावत क्षेत्रके मनुष्योंमें पूर्वकोटिके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पल्यप्रमाण कालतक निरन्तर वृद्धि देखी जाती है।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥२९८॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं। अथवा जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं। यहाँ पर कारणका कथन जानकर करना चाहिए।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥२९९॥

कितनी अधिक है ? कदलीघातके कारण जो सबसे जघन्य जीवनकाल उत्पन्न होता है उतनी अधिक है।

औपपादिक जन्मवालेकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥३००॥

क्योंकि वह दस हजार वर्षप्रमाण है।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥३०१॥

कुदो ? दसवस्ससहस्साणमुवरि समउत्तरादिकमेण णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि होदूण गच्छंति जावुक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि त्ति । एत्थ जीवणियट्ठाणाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणं च णिरंतरवड्ढी कधं लब्भदे ? ण, दसवस्ससहस्समादिं कादूण समउत्तरादिकमेण बंधेण जाव तेत्तीससागरोवमाणि त्ति वड्ढीए विरोहाभावादो, ओवट्टणाघादेण आउअं घादिय देवेसुप्पज्जमाणे अस्सिदूण णिव्वत्तिट्ठाणाणं जीवणियट्ठाणाणं च णिरंतरवड्ढीए विरोहाभावादो च । णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण, देवणेरइएसु आउअस्स कदलीघादाभावादो । तत्थ कदलीघादो णत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? णिव्वत्ति-जीवणियट्ठाणाणि तुल्लाणि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०-भागो ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३०२॥

उससे निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं ॥३०१॥

क्योंकि दस हजार वर्षके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान समान होकर तेतीस सागरकाल तक जाते हैं ।

शंका—यहाँपर जीवनीयस्थानोंकी और निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि दस हजारवर्षसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे बन्धके द्वारा तेतीस सागर कालतक वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है और अपवर्तनाघातके द्वारा आयुका घात करके देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका आश्रय लेकर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका—निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा जीवनीयस्थान यहाँ विशेष अधिक क्यों नहीं कहे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि देव और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता ।

शंका—देवों और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ।

समाधान—वहाँ निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान तुल्य हैं यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है; इससे जाना जाता है कि देवों और नारकियोंमें कदलीघात नहीं होता ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे उत्कृष्ट निवृत्ति विशेष अधिक है ॥३०२॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणदसवस्ससहस्समेत्तेण ।

एवं सत्थाणेण सोलसवदियमहादंडओ समत्तो ।

एत्थ अप्पाबहुअं ॥३०३॥

संपहि सत्थाणेण सोलसवदियअप्पाबहुअं कादूण परत्थाणेण सोलसवदिय-अप्पाबहुअं भणामि त्ति भणिदं होदि ।

सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥३०४॥

एत्थ खुद्दाभवग्गहणं दुविहं—णिसेयखुद्दाभवग्गहणं घादखुद्दाभवग्गहणं चेदि ।

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है ।

विशेषार्थ—यहाँ पर प्रदेशविरच अधिकारके प्रसंगसे निर्वृत्तिस्थानों और जीवनीयस्थानोंका साङ्गोपाङ्ग विचार किया गया है । एक जीवके जितनी आयुका बन्ध होता है उसकी निर्वृत्तिस्थान संज्ञा है और एक जीव भवग्रहणके प्रथम समयसे लेकर जितने काल तक जीवित रहता है उसकी जीवनीयस्थान संज्ञा है । यह एकान्त नियम नहीं है कि जिस भवकी जितनी आयुका बन्ध होता है वह उस भवके ग्रहणके समय उतनी नियमसे रहती है । यदि आयुबन्धके भवमें उसका अपवर्तन न हो या द्वितीयादि त्रिभागोंमें अधिक आयुका बन्ध न हो तो भवग्रहणके समय उतनी ही रहती है और यदि पूर्वोक्त क्रिया हो लेती है तो वह घट बढ़ भी जाती है । इस प्रकार भवग्रहण करने के बाद यदि कदलीघात न हो तो भवग्रहणके समय जितनी आयु होती है उतने काल तक यह जीव जीवित रहता है, अन्यथा कदलीघात होनेसे जीवन काल अल्प हो जाता है, इसलिए यहाँ निर्वृत्तिस्थानोंका और जीवनीयस्थानोंका अलग अलग विचार करके ये कहाँ जघन्य और उत्कृष्ट किस प्रमाणमें प्राप्त होते हैं तथा इनका परस्परमें अल्पबहुत्व कितना है आदि बातोंका यहाँ सांगोपांग विचार किया गया है । यहाँ एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति और जघन्य जीवनीय-स्थानका स्पष्टीकरण करते हुए दो मतोंका उल्लेख किया है । उनका आशय इतना ही है कि एक मतके अनुसार जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिका जितना काल है उसमेंसे आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण कालका घात हो कर जघन्य जीवनीय स्थान प्राप्त होता है और दूसरे मतके अनुसार यह घात काल संख्यात आवलि प्रमाण तक हो सकता है । किन्तु इतना विशेष जानना चाहिए कि जो जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको लेकर उत्पन्न होता है उसके यह कदलीघात हो कर जघन्य जीवनीय-स्थान नहीं प्राप्त होता किन्तु जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिस्थानसे अधिक आयु लेकर उत्पन्न होनेवाले जीवके ही यह जघन्य जीवनीयस्थान प्राप्त होता है । विशेष स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है ।

इस प्रकार स्वस्थान की अपेक्षा सोलह पदवाला महादण्डक समाप्त हुआ ।

यहाँ अल्पबहुत्व ॥३०३॥

स्वस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन कर अब परस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है ॥३०४॥

यहाँपर क्षुल्लकभवग्रहण दो प्रकारका है—निषेक क्षुल्लकभवग्रहण और घात क्षुल्लक

तत्थ सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंजुत्तो जहण्णाउअबंधो णिसेयखुद्दाभवग्गहणं णाम। णिसेय-खुद्दाभवग्गहणादो आवलि० असंखे०भागेणूणजीवणियकालो णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जे भागे घादिदूण ट्ठविदसंखे०भागो वा घादखुद्दाभवग्गहणं। सव्वजहण्ण-जीवणियकालो घादखुद्दाभवग्गहणं होदि त्ति भणिदं होदि। एत्थ दोसु खुद्दाभवग्गहणेसु कं घेप्पदे? घादखुद्दाभवग्गहणं, जहण्णणिव्वत्तीए खुद्दाभवग्गहणत्ताणुववत्तीदो। भवग्गहणं णाम जीवणियकालो सो च खुद्दओ जहण्णओ कदलीघादम्हि चेव होदि ण बंधे, णिव्वत्तीए जहण्णियाए तत्तो संखेज्जगुणत्तदंसणादो। एदं घादखुद्दाभवग्गहणं सत्तण्णमपज्जत्तजीवसमासाणं सरिसं होदूण संखेज्जावलियमेत्तं। तं कधं णव्वदे? जुत्तीदो। तं जहा—

> तिण्णिसहस्सा सत्तसदाणि तेहत्तरिं च उस्सासा।
> एसो हवदि मुहुत्तो सव्वेसिं चेव मणुयाणं ३७७३ ॥ १९॥

एदे मुहुत्तुस्सासे ट्ठविय पुणो एगुस्सासब्भंतरसंखेज्जावलियाहि गुणिदे एग-मुहुत्तावलियाओ होंति।

> तिण्णि सदा छत्तीसा छावट्ठिसहस्स चेव मरणाणि।
> अंतोमुहुकाले तावदिया चेव खुद्दभवा ॥ २०॥

भवग्रहण। उनमेंसे जो सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसे युक्त जघन्य आयुका बन्ध है वह निषेक क्षुल्लकभवग्रहण है। तथा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कम जो जीवनीय काल है वह अथवा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणके संख्यात बहुभागका घात करके स्थापित किया गया जो संख्यातवाँ भाग है वह घातक्षुल्लकभवग्रहण है। सबसे जघन्य जीवनीय काल-प्रमाण घातक्षुल्लकभवग्रहण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका— यहाँ दो क्षुल्लकभवग्रहणोंमेंसे किसका ग्रहण किया है?

समाधान—घातक्षुल्लकभवग्रहणका ग्रहण किया है, क्योंकि जघन्य निर्वृत्ति क्षुल्लक-भवग्रहणरूप नहीं बन सकती।

भवग्रहणका नाम जीवनीयकाल है और वह क्षुल्लक तथा जघन्य कदलीघातके होने पर ही होता है, बन्धके होने पर नहीं, क्योंकि जघन्य निर्वृत्ति उससे संख्यातगुणी देखी जाती है। यह घातक्षुल्लकभवग्रहण सात अपर्याप्त जीवसमासोंका समान होकर संख्यात आवलि-प्रमाण है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—युक्तिसे। यथा—

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तिहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहूर्त होता है॥ १९॥

एक मुहूर्तके इन उच्छ्वासोंको स्थापित करके पुन: एक उच्छ्वासके भीतर स्थित संख्यात आवलियोंसे गुणित करने पर एक मुहूर्तकी आवलियां होती हैं।

अन्तमुहूर्त कालके भीतर छयासठ हजार तीनसौ छत्तीस मरण और उतने ही क्षुल्लक-भवग्रहण होते हैं॥ २०॥

१. ता०प्रतौ 'एव' इति पाठः।

इदि वयणादो एगमुहुत्तब्भंतरे एत्तियाणि खुद्दाभवग्गहणाणि होंति ६६३३६। एत्तियमेत्तभवग्गहणेसु जदि पुव्वुत्तसंखेज्जावलियाओ लब्भंति तो एगखुद्दाभवग्गहणम्हि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाओ लब्भंति, एइंदियाणं संखेज्जुस्सासेहि एगखुद्दाभवग्गहणस्स णिप्पत्तीदो। तेणेदं सव्वत्थोवं होदि।

एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥३०५॥

एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती। एसा खुद्दाभवग्गहणादो संखेज्जगुणा। कुदो? खुद्दाभवग्गणादो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती संखेज्जगुणा। तस्स चेव सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया णिव्वत्ती तत्तो संखेज्जगुणा त्ति गुरूवदेसादो।

समुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥३०६॥

कुदो? बादरेइंदियपज्जत्तयस्स सव्वजहण्णणिव्वत्तीए गहणादो। का णिव्वत्ती णाम? कदलीघादेण विणा जीवणकालो आउबंधद्धाणंतब्भूदो[1]। जीवणियट्ठाणां पुण णिव्वत्ती ण होदि, तस्स बंधट्ठाणेसु अंतब्भावणियमाभावादो।

इस वचनके अनुसार एक मुहूर्तके भीतर इतने क्षुल्लकभवग्रहण होते हैं—६६३३६। इतने भवग्रहणोंमें यदि पूर्वोक्त संख्यात आवलियां लब्ध आती हैं तो एक क्षुल्लकभवग्रहणमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित कर प्रमाणराशिका भाग देने पर संख्यात आवलियाँ प्राप्त होती हैं, क्योंकि एकेन्द्रियोंके संख्यात उच्छ्वासोंसे एक क्षुल्लकभवग्रहणकी उत्पत्ति होता है, इसलिए यह सबसे स्तोक है।

उससे एकेन्द्रिय जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ३०५ ॥

एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति। यह क्षुल्लकभवग्रहणसे संख्यातगुणी है, क्योंकि क्षुल्लकभवग्रहणसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। उससे उसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यात-गुणी है ऐसा गुरुका उपदेश है।

उससे सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ३०६ ॥

क्योंकि यहाँ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्तिका ग्रहण किया है।

शंका—निर्वृत्ति किसे कहते हैं?

समाधान—कदलीघातके बिना आयुकर्मके बन्धकालके भीतर जो जीवनकाल है उसे निर्वृत्ति कहते हैं।

परन्तु जीवनीयस्थान निर्वृत्ति नहीं होता, क्योंकि उसका बन्धस्थानोंमें अन्तर्भाव होनेका

१. ता०प्रतौ '–बंधद्धाणंब्भूदो' इति पाठः।

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥३०७॥

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णपज्जत्तणिव्वत्ती णाम गब्भजाणं णिव्वाघादेण बद्ध-जहण्णाउअकालमेत्तजीवियं। कुदो एदिस्से संखेज्जगुणत्तं ? सम्मुच्छिमेहिंतो गब्भजाणं पुधभूदजादिदंसणादो।

उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥३०८॥

को गुण० ? संखेज्जा समया। कुदो ? अंतोमुहुत्तेण दसवस्ससहस्सेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो।

एइंदियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥३०९।

को गुण० ? सादिरेयदोरूवाणि। कुदो ? दसवस्ससहस्सेहि अंतोमुहुत्तूणबावीसं-[1]वस्ससहस्सेसु ओवट्टिदेसु दोहि रूवेहि सह किंचूणपंचमभागस्स उवलंभादो।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१०॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण एइंदियजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा।

कोई नियम नहीं है।

उससे गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ३०७ ॥

गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है गर्भज जीवोंका बद्ध जघन्य आयुके काल तक निर्व्याघातरूपसे जीवित रहना।

शंका—यह संख्यातगुणी कैसे है ?

समाधान—क्योंकि सम्मूर्च्छन जीवोंसे गर्भज जीवोंकी पृथक् जाति देखी जाती है।

उससे औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ३०८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त कालसे दस हजार वर्षके भाजित करने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं।

उससे एकेन्द्रिय जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ३०९ ॥

गुणकार क्या है ? साधिक दो अंक गुणकार है, क्योंकि दस हजार वर्षसे अन्तमुहूर्त कम बाईस हजार वर्षके भाजित करने पर दो और कुछ कम पाँचवां भाग उपलब्ध होता है।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ३१० ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं।

१. अ०का०प्रत्यो 'अंतोमुहुत्तेण बावीस–' इति पाठः।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३११॥

केत्तियमेत्तेण ? सव्वुक्कस्सकदलीघादेण घादिदूण एइंदियाणं जहण्णजीविएण समऊणेण ।

समुच्छिमस्स णिवत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥३१२॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? बावीसवस्ससहस्सेहि अंतोमुहुत्तूण- पुव्वकोडीए भागे हिदाए संखेज्जरूवोवलंभादो ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१३॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे० भागेण सम्मुच्छिमजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१४॥

केत्तियमेत्तेण ? सम्मुच्छिमजहण्णजीविएण समऊणेण ।

गब्भोवक्कंतियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥३१५॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो । कुदो ? पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तूणतिण्णि- पलिदोवमेसु ओवट्टिदेसु पलिदो० असंखे० भागुवलंभादो ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ३११ ॥

कितनी अधिक है ? सबसे उत्कृष्ट कदलीघातसे घात कर एकेन्द्रियोंका जो एक समय कम जघन्य जीवित है उतनी अधिक है ।

उससे सम्मूर्च्छन जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ ३१२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि बाईस हजार वर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिके भाजित करने पर संख्यात अङ्क उपलब्ध होते हैं ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ३१३ ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

उससे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ३१४ ॥

कितनी अधिक है ? सम्मूर्च्छन जीवके एक समय कम जघन्य जीवितका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण अधिक है ।

उससे गर्भोपक्रान्त जीवके निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ३१५ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि पूर्वकोटिका अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्यमें भाग देने पर पल्यका असंख्यातवाँ भाग उपलब्ध होता है ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१६॥

के० मेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण सव्वजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१७॥

के० मेत्तेण ? सगजहण्णजीविएण समऊणेण।

उववादिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीयणीयट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि ॥३१८॥

को० गुण० ? संखेज्जा समया। कुदो ? तीहि पलिदोवमेहि समऊणदसवस्स-सहस्सेहि परिहीणतेत्तीससागरोवमेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो।

उक्कसिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१९॥

के० मेत्तेण ? समऊणदसवस्ससहस्समेत्तेण।

एवं परत्थाणेण सोलसवदियदंडओ समत्तो।

तस्सेव पदेसविरइयस्स इमाणि छअणियोगद्दाराणि—जहण्णिया अग्गट्ठिदी अग्गट्ठिदिविसेसो अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं ॥ ३१६ ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सबसे जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक हैं ॥ ३१७ ॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम सबसे जघन्य जीवितका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण अधिक है।

उससे औपपादिक जीवके निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ॥ ३१८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि तीन पल्यका एक समय कम दस हजार वर्षसे हीन तेतीस सागरमें भाग देने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ३१९ ॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है।

इस प्रकार परस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाला दण्डक समाप्त हुआ।

उसी प्रदेशविरचके ये छह अनुयोगद्वार हैं--जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष-

भागाभागाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।३२०॥

एदाणि छच्चेव एत्थ अणियोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी ॥३२१॥

जहण्णणिव्वत्तीए चरिमणिसेओ अग्गं णाम । तस्स ट्ठिदी जहण्णिया अग्गट्ठिदि त्ति घेत्तव्वा । जहण्णणिव्वत्ति त्ति भणिदं होदि ।

अग्गट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो ॥३२२॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? उक्कस्समग्गं णाम तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमणिसेओ । तस्स ट्ठिदी तिण्णि पलिदोवमाणि उक्कस्सअग्गट्ठिदी णाम । तत्थ जहण्णअग्गट्ठिदीए अवणिदाए अग्गट्ठिदिविसेसो । तम्हि जहण्णअग्गट्ठिदीए भागे हिदे पलिदो० असंखे०भागुवलंभादो ।

अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि विसेसाहियाणि ॥३२३॥

अग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि विसेसा० । केत्तियमेत्तो विसेसो त्ति भणिदे एगरूवमेत्तो त्ति जाणावणट्ठं रूवाहियाणि त्ति भणिदं । एगरूवाहियाणि त्ति पदुप्पहि विसेसाहियणिद्देसो ण कायव्वो ? ण एस दोसो, दव्वट्ठियणयाणुग्गहट्ठं

अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागभागानुगम और अल्पबहुत्व ॥ ३२० ॥

यहाँ ये छह ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि अन्य अनुयोगद्वार सम्भव नहीं हैं ।

औदारिकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति सबसे स्तोक है ॥ ३२१ ॥

जघन्य निर्वृत्तिके अन्तिम निषेककी अग्र संज्ञा है । उसकी स्थिति जघन्य अग्रस्थिति है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । जघन्य निर्वृत्ति यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अग्रस्थितिविशेष असंख्यातगुणा है ॥ ३२२ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि उत्कृष्ट अग्र तीन पल्यके अन्तिम निषेककी संज्ञा है । उस अन्तिम निषेककी जो तीन पल्यप्रमाण स्थिति है वह उत्कृष्ट अग्रस्थिति है । उसमेंसे जघन्य अग्रस्थितिके कम कर देने पर जो लब्ध आवे उतना अग्रस्थितिविशेष होता है । उसमें जघन्य अग्रस्थितिका भाग देने पर पल्यका असंख्यातवाँ भाग उपलब्ध होता है ।

उससे अग्रस्थितिस्थान रूपाधिक विशेष अधिक हैं ॥ ३२३ ॥

अग्रस्थितिविशेषसे अग्रस्थितिस्थान विशेष अधिक हैं । विशेषका प्रमाण कितना है ऐसा पूछने पर एक अंकप्रमाण है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए सूत्रमें 'रूवाहियाणि' ऐसा कहा है ।

शंका—एक अंकप्रमाण अधिक हैं ऐसा कहने पर विशेषाधिक पदका निर्देश नहीं करना चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि द्रव्यार्थिकनयका अनुग्रह करनेके लिए

विसेसाहियणिद्देसकरणादो। जदि एवं तो विसेसाहियणिद्देसस्स पुव्वणिवाओ कायव्वो ? ण एस दोसो, जदि वि पच्छा णिद्दिट्ठो तो वि एदस्स परूवणा पुव्वं चेव होदि त्ति उवदेसेण विणा वि अवगम्ममाणत्तादो।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२४॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णअग्गट्ठिदिमेत्तेण।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३२५॥

जहा ओरालियसरीरस्स चदुण्णमणियोगद्दाराणं परूवणा कदा तहा आहारसरीरवज्जाणं सेसतिण्णं परूवणा कायव्वा। णवरि कम्मइयसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी थोवा त्ति उत्ते सुहुमसांपराइयस्स चरिमबंधो घेत्तव्वो। अग्गट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो त्ति वुत्ते पंचिंदियजहण्णियमग्गट्ठिदिं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्तउक्कस्सअग्गट्ठिदीए सोहिय पलिदो० संखे०भागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेसु तत्थ पक्खित्तेसु अग्गट्ठिदिविसेसो होदि। एदम्हि जहण्णअग्गट्ठिदीए भागे हिदे पलिदो० असंखे०भागो आगच्छदि। एसो एत्थ गुणगारो। अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि। उक्कस्सिया विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जेहि पलिदोवमेहि। सेसं सुगमं।

विशेषाधिक पदका निर्देश किया है।

शंका—यदि ऐसा है तो विशेषाधिकपदका पूर्व निपात करना चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यद्यपि विशेषाधिक पदका पश्चात् निर्देश किया तो भी इसकी प्ररूपणा पहले ही होती है यह बात उपदेशके बिना भी जानने योग्य है।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥ ३२४ ॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम जघन्य अग्रस्थितिका जितना प्रमाण है उतनी अधिक है।

इस प्रकार तीन शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥ ३२५ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा चार अनुयोगद्वारोंका कथन किया है उसी प्रकार आहारकशरीरको छोड़ कर शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि कार्मणशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति स्तोक है ऐसा कहने पर सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका अन्तिम समयमें होनेवाला बन्ध लेना चाहिए। अग्रस्थितिविशेष असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर पञ्चेन्द्रियकी जघन्य अग्रस्थितिको सत्तर कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण उत्कृष्ट अग्रस्थितिमेंसे घटा कर उसमें पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिबन्धस्थानोंके मिलाने पर अग्रस्थितिविशेष होता है। इसमें जघन्य अग्रस्थितिका भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है। यह यहाँ पर गुणकार है। अग्रस्थितिस्थान एक अधिक हैं। उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है। कितनी अधिक है ? संख्यात पल्यप्रमाण अधिक है। शेष कथन सुगम है। इतनी विशेषता है

णवरि तेजइयस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी छावट्ठि-सागरोवमाणि। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी दसवस्ससहस्साणि। उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी तेत्तीससागरोवमाणि।

सव्वत्थोवा आहारसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी ॥३२६॥

अंतोमुहुत्तप्पमाणत्तादो।

अग्गट्ठिदिविसेसो संखेज्जगुणो ॥३२७॥

कुदो? जहण्णअग्गट्ठिदीदो उक्कस्सअग्गट्ठिदीए संखेज्जगुणत्तादो।

अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि ॥३२८॥

सुगमं।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२९॥

केत्तियमेत्तेण? अंतोमुहुत्तमेत्तेण।

भागाभागाणुगमेण तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि— जहण्णपदे उक्कस्सपदे अजहण्ण-अणुक्कस्सपदे ॥३३०॥

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणियोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो।

कि तैजसशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। उत्कृष्ट अग्रस्थिति छयासठ सागर-प्रमाण है। वैक्रियिकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति दस हजारवर्षप्रमाण है। उत्कृष्ट अग्रस्थिति तेतीस सागरप्रमाण है।

आहारकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति सबसे स्तोक है ॥ ३२६ ॥

क्योंकि उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है।

उससे अग्रस्थितिविशेष संख्यातगुणा है ॥ ३२७ ॥

क्योंकि जघन्य अग्रस्थितिसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति संख्यातगुणी है।

उससे अग्रस्थितिस्थान रूपाधिक हैं ॥ ३२८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥ ३२९ ॥

कितनी अधिक है? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अधिक है।

भागाभागानुगमकी अपेक्षा वहां ये तीन अनुयोगद्वार हैं—जघन्यपद, उत्कृष्टपद और अजघन्य-अनुत्कृष्टपद ॥ ३३० ॥

इस प्रकार यहाँ पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि अन्य अनुयोगद्वार यहाँ पर सम्भव नहीं हैं।

जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वपदेसग्गस्स केवडियो भागो ॥३३१॥

एदं पुच्छासुत्तं संखेज्जदिभाग असंखे[1]०भाग-अणंतिमभागे अवेक्खदे[2] ।

असंखेज्जदिभागो ॥३३२॥

कुदो ? एगसमयपबद्धे दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदेगखंडपमाणत्तादो । सव्वपदेसग्गस्स त्ति वुत्ते एगसमयपबद्धो चेव घेप्पदि । तिसु पलिदोवमेसु संचिददव्वं ण घेप्पदि त्ति कथं णव्वदे ? अविद्धाइरियवयणादो । एत्थ दिवड्ढगुणहाणिपमाणमंतोमुहुत्तं, ओरालियसरीरम्मि अंतोमुहुत्तं गंतूण पढमणिसेगादो दुगुणहीणणिसेगुवलंभादो । एत्थ किं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए पदिदणिसेयपदेसग्गं घेप्पदि आहो जहण्णणिव्वत्तीए पढमसमए पदिदपदेसग्गमिदि ? एत्थ पढमपक्खो घेत्तव्वो, उक्कस्सणिसेगट्ठिदीए जहण्णट्ठिदिपदेसग्गेण अहियारादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३३॥

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी जघन्य स्थितिका प्रदेशाग्र सब प्रदेशाग्रके कितने भागप्रमाण है ? ॥ ३३१ ॥

यह पृच्छासूत्र संख्यातवे भागप्रमाण है, असंख्यातवें भागप्रमाण है या अनन्तवे भागप्रमाण है इस बातकी अपेक्षा करता है ।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ३३२ ॥

क्योंकि एक समयप्रबद्धमें डेढ़ गुणहानिका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना उसका प्रमाण है । 'सव्वपदेसग्गस्स' ऐसा कहने पर एक समयप्रबद्धका ही ग्रहण होता है ।

शंका—तीन पल्यप्रमाण कालके भीतर संचित हुए द्रव्यका ग्रहण नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

यहाँ पर डेढ़ गुणहानिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि औदारिकशरीरमें अन्तर्मुहूर्त जाकर प्रथम निषेकसे दुगुने हीन निषेक उपलब्ध होते हैं ।

शंका—यहाँ पर क्या तीन पल्योंके प्रथम समयमें प्राप्त हुए निषेकका प्रदेशाग्र ग्रहण करते हैं या जघन्य निर्वृत्तिके प्रथम समयमें प्राप्त हुआ प्रदेशाग्र ग्रहण करते हैं ?

समाधान—यहाँ पर प्रथम पक्षको ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि उत्कृष्ट निषेकस्थितिमें जघन्य स्थितिके प्रदेशाग्रका अधिकार है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥ ३३३ ॥

१. ता०प्रतौ 'सखेजदिभागो (ग) असंखे०' अ०का०प्रत्योः 'संखेजदिभागो असंखे०' इति पाठः ।
२. ता०प्रतौ 'उ (अ) अवेक्खदे' अ०का०प्रत्योः 'उवेक्खदे' इति पाठः ।

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णपडिभागाभागो परूविदो तहा एदेसिं परूवेदव्वो, अंतोमुहुत्तमेत्तदिवड्डगुणहाणीए एगसमयपबद्धं खंडिय तत्थ एगखंडपमाणत्तणेण भेदाभावादो। णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणं दिवड्डगुणहाणिपमाणमसंखेज्जाणि पलिदोवमाणि पढमवग्गमूलाणि। कम्मइयसरीरस्स सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण तदणंतर-उवरिमट्ठिदीए जं पदेसग्गं णिमित्तं तस्स गहणं कायव्वं। पढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे कीरमाणे जहा वेयणाए परूवणा कदा तहा कायव्वा, पंचसु वि सरीरेसु[1] पढमणिसेय-पमाणेण कीरमाणेसु भेदाभावादो।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ॥३३४॥

सुगमं।

असंखेज्जदिभागो ॥३३५॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयप्पहुडि एगसमयपबद्धे जहाकमेण णिसिंचमाणे तिण्णं[2] पलिदोवमाणं चरिमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तमुक्कस्सट्ठिदिपदेसग्गं[3] णाम। तं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणमसंखे० भागो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। तं

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य पदकी अपेक्षा भागाभाग कहा है उसी प्रकार इन शरीरोंका भी कहना चाहिए; क्योंकि अन्तर्मुहूर्तप्रमाण डेढ़ गुणहानिका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर वहाँ एक खण्डप्रमाणपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है। इतनी विशेषता है कि तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी डेढ़ गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यात प्रथमवर्गमूलप्रमाण है। तथा कार्मणशरीरकी सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोड़कर तदनन्तर उपरिम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है उसका ग्रहण करना चाहिए। प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके करने पर जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि पाँचों ही शरीरोंको प्रथम निषेकके प्रमाण रूप करने पर उस कथनसे इसमें कोई भेद नहीं है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब प्रदेशाग्रके कितने भागप्रमाण है ॥ ३३४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ३३५ ॥

तीन पल्योंके प्रथम समयसे लेकर एक समयप्रबद्धके क्रमसे निक्षिप्त होने पर तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उसकी उत्कृष्ट स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है। वह सब स्थितियोंमें प्राप्त प्रदेशाग्रोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात

१. म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'पंचसु सरीरेसु' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'णिसिंचमाणे तिण्णं' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'उक्कस्सपदेसट्ठिदिपदेसग्गं' अ०प्रतौ 'उक्कस्सट्ठिट्ठिदिपदेसग्गं' इति पाठः।

जहा—चरिमणिसेयं ट्ठविय ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्ज-पलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्ताओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा असंखेज्ज-लोगपमाणेण अंतोमुहुत्तमेत्तदिवड्ढगुणहाणिगुणिदेण गुणिदे समयपबद्धदव्वं होदि। तेणेव गुणगारेण णाणासमयपबद्धे भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि। तेण भागहारो असंखेज्जलोगो त्ति सिद्धं।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३६॥

तं जहा—वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणं केवडिओ भागो? असंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। आहार-सरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणं केवडिओ भागो? असंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? अंतोमुहुत्तं। एवं तेजा-कम्मइयसरीराणं। णवरि पडिभागो अंगुलस्स असंखे०भागो।

अजहण्ण-अणुक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ॥३३७॥

सुगमं।

लोक प्रतिभाग है। यथा—अन्तिम निषेकको स्थापित करके औदारिकशरीरकी पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकको दूना करके परस्पर गुणा करनेसे जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न हो उसे अन्तर्मुहूर्त मात्र डेढ़ गुणहानिसे गुणित करने पर समयप्रबद्धका द्रव्य होता है। तथा उसी गुणकारका नाना समयप्रबद्धोंमें भाग देने पर अन्तिम निषेक आता है। इसलिए भागहार असंख्यात लोक प्रमाण है यह सिद्ध होता है।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥ ३३६ ॥

यथा—वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है। आहारशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके कितने भाग-प्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? अन्तर्मुहूर्त प्रतिभाग है। इसी प्रकार तैजसशरीर और कार्मणशरीरके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ पर प्रतिभाग अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

अजघन्य-अनुत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अजघन्य-अनुत्कृष्टस्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रके कितने भागप्रमाण है ॥ ३३७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

असंखेज्जा भागा ॥३३८॥

को पडिभागो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणी पडिभागो। तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुरूवधरिदे गहिदे इच्छिददव्वं होदि त्ति घेत्तव्वं।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३९॥

णवरि अप्पप्पणो गुणहाणिपमाणं जाणिदूण वत्तव्वं।

अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि— जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥३४०॥

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणियोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो। एत्थ एगेगट्ठिदिपदेसग्गं जहण्णं णाम, अप्पहाणीभूदकालएगत्तेण कालविसेसस्सेव गहणादो। एगेगगुणहाणी उक्कस्सपदं णाम, एगसमयं पेक्खिदूण गुणहाणिकालस्स उक्कस्सत्तुवलंभादो। तदुभयं जहण्णुक्कस्सपदं णाम।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥३४१॥

जं तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए णिसित्तं पदेसग्गं तं थोवं।

असंख्यात बहुभाग प्रमाण है ॥ ३३८ ॥

प्रतिभाग क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रतिभाग है। डेढ़ गुणहानिका विरलन करके उस विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको छोड़कर शेष बहुत अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यके ग्रहण करने पर इच्छित द्रव्य होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा भागाभाग जानना चाहिए ॥ ३३९ ॥

इतनी विशेषता है कि अपना अपनी गुणहानिका प्रमाण जान कर कथन करना चाहिए।

अल्पबहुत्वका अधिकार है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—जघन्यपद, उत्कृष्टपद, और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥ ३४० ॥

इस प्रकार यहाँ पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि अन्य अनुयोगद्वार असम्भव हैं। यहाँ पर एक एक स्थितिके प्रदेशाग्रकी जघन्य संज्ञा है, क्योंकि अप्रधानीभूत कालके एकत्वकी अपेक्षा कालविशेषका ही यहाँ ग्रहण किया है। एक एक गुणहानिकी उत्कृष्टपद संज्ञा है, क्योंकि एक समयको देखते हुए गुणहानिके कालमें उत्कृष्टपना पाया जाता है। तथा उन दोनोंकी जघन्य-उत्कृष्टपद संज्ञा है।

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥ ३४१ ॥

जो तीन पल्यप्रमाण स्थितिके अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र है वह स्तोक है।

पढमाए ट्ठिदिए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३४२॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तं पढमट्ठिदिपदेसग्गं णाम। तं चरिमसमए पदेसग्गादो असंखेज्जगुणं। को गुण० ? असंखेज्जा लोगा। तं जहा—अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणीए तिसु पलिदोवमेसु ओवट्टिदेसु लद्धं णाणागुण-हाणिसलागाओ होंति। एदासिं किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिमेदं $\frac{512}{9}$। एदेण चरिम-णिसेगे गुणिदे जेण पढमणिसेगो होदि तेण गुणगारो असंखेज्जा लोगा। असंखेज्जलोग-मेत्तं कुदो णव्वदे ? परियम्मादो। तं जहा—वेरूवे वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवमच्छेदणयपमाणं पावदि। तं सइं वग्गिदं सूचिअंगुलच्छेदणयपमाणं पावदि। ते छेदणया दुगुणिदा पदरंगुल-च्छेदणया होंति। घणंगुलच्छेदणया दुब्भागब्भहिया। उद्धारपल्लमसंखेज्जगुणं। दीव-सागररूवाणि असंखेज्जगुणाणि। रज्जुच्छेदणया विसेसाहिया। सेडिच्छेदणया विसेसाहिया। जगपदरच्छेदणा दुगुणा। घणलोगच्छेदणा दुब्भागब्भहिया। एवं घणलोगच्छेदणयपमाणं भणिदं। तदो णियत्तिदूण सूचिअंगुलच्छेदणया वग्गिज्जमाणा वग्गिज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवम-

उससे प्रथम स्थितिमें निषिक्त प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३४२ ॥

तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है उसकी प्रथम स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है। वह अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्रसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक है। यथा—अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणहानिका तीन पल्योंमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतनी नाना-गुणहानिशलाकाएं होती हैं। इनकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण इतना है $\frac{512}{9}$। इससे अन्तिम निषेकके गुणित करने पर यतः प्रथम निषेकका प्रमाण होता है, अतः गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

शंका—गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मसूत्रसे जाना जाता है। यथा—दोका उत्तरोत्तर वर्ग करने पर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणास्थान ऊपर जाकर पल्यके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है। उसका एक बार वर्ग करने पर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है। उन अर्धच्छेदोंको दूना करने पर प्रतराङ्गुलके अर्धच्छेद होते हैं। उनसे घनाङ्गुलके अर्धच्छेद द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं। उनसे उद्धारपल्यका प्रमाण असंख्यातगुणा है। उससे द्वीपों और सागरोंकी संख्या असंख्यातगुणी है। उससे राजुके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे जगश्रेणिके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे जगप्रतरके अर्धच्छेद दूने हैं। उनसे घनलोकके अर्धच्छेद द्वितीयभागप्रमाण अधिक हैं। इस प्रकार घनलोकके अर्धच्छेदोंका प्रमाण कहा है। यहाँसे लौटकर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका उत्तरोत्तर वर्ग करके पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण

पढमवग्गमूलं पावदि । तं सइं वग्गिदं पलिदोवमं पावदि । संपहि पलिदोवमादो हेट्ठा असंखेज्जाणि वग्गणट्ठाणाणि ओसरिदूण सूचियंगुलच्छेदणयाणमुवरि तस्सेव उवरिम-वग्गादो हेट्ठा घणलोगच्छेदणया होंति त्ति परियम्मे भणिदं । पुणो एदे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे घणलोगो उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । ओरालिय-सरीरस्स पुण णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणं जदि घणलोगच्छेदणयमेत्तं होदि तो ओरालियसरीरण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं घणलोगमेत्तं चेव होदि । अथ जदि जत्तिया जगपदरच्छेदणया घणलोगच्छेदणया च तत्तिया ओरालियसरीरणाणागुणहाणि-सलागाओ होंति तो ओरालियसरीरस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं जगपदरगुणिद-घणलोगमेत्तियं होदि । ण च एदं । कुदो ? घणलोगच्छेदणएहिंतो पलिदोवमपढमवग्ग-मूलादो च ओरालियसरीरणाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एदं कुदो उवलब्भदे ? जुत्तीदो । तं जहा—ओरालियसरीरस्स एगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जावलियमेत्तं होदूण अंतोमुहुत्तं होदि । एदं च कुदो णव्वदे ? वग्गणपरंपरोवणिध-सुत्तादो । पुणो एत्तियमद्धाणं गंतूण जदि एगगुणहाणिसलागा लब्भदि तो तिण्णं पलिदोवमाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए आवलि०

वर्गणास्थान ऊपर जाकर पल्यका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है। उसका एकबार वर्ग करने पर पल्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अब पल्यसे नीचे असंख्यात वर्गणास्थान उतर कर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंके ऊपर तथा उसीके उपरिम वर्गसे नीचे घनलोकके अर्धच्छेद होते हैं ऐसा परिकर्ममें कहा है। पुनः इनका विरलन कर और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करने पर घनलोक उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। परन्तु औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण यदि घनलोकके अर्धच्छेदप्रमाण होता है तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण घनलोकप्रमाण ही होता है। और जितने जगप्रतरके अर्धच्छेद और घनलोकके अर्धच्छेद हैं उतनी यदि औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकाएँ होती हैं तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जगप्रतरसे गुणित घनलोकप्रमाण होता है। परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि घनलोकके अर्धच्छेदों और पल्यके प्रथम वर्गमूलसे औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकाएँ असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—युक्तिसे। यथा—औदारिकशरीरका एकप्रदेशगुणहानिअध्वान संख्यात आवलि होकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—वर्गणापरम्परोपनिधा सूत्रसे जाना जाता है।

पुनः इतना अध्वान जाकर यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो तीन पल्योंका क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर

१. ता०प्रतौ 'हेट्ठा संखेजाणि' इति पाठः ।

असंखे०भागेण पदरावलियं गुणेदूण तेण गुणिदरासिणा उवरि वग्गं गुणेदूण णेयव्वं जाव पलिदोवमविदियवग्गमूले त्ति। जत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवम-पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। एवमेत्तियाओ ओरालियसरीरणाणागुणहाणिसलागाओ होंति। पुणो एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि त्ति णत्थि संदेहो। पुणो एदेण रासिणा ओरालियसरीरचरिमणिसेगे गुणिदे तस्सेव पढमणिसेगो होदि त्ति गेण्हियव्वं।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३४३॥

को गुण० ? संखेज्जावलियमेत्ताओ सादिरेगेगरूवेणूणदिवड्ढगुणहाणीओ। तं जहा—तिसु पलिदोवमेसुप्पज्जिय उप्पण्णपढमसमए ओरालियसरीरणिप्पायणट्ठं गहिदणोकम्मपदेसेहिंतो घेत्तूण तिण्णिपलिदोवमाणं पढमसमए बहुअं पदेसपिंडं णिसिंचदि। विदियसमए विसेसहीणं णिसिंचदि। एवं णिरंतरं विसेसहीणकमेण ताव णिसिंचदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमओ त्ति। पुणो एवं णिसित्तसव्वदव्वे पढमणिसेयपमाणेण कदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति। पुणो एत्थ पढमणिसेगस्स चरिमणिसेगस्स च अवणयणट्ठं सादिरेगमेगरूवमवणेदव्वं। सेसमेत्तियं होदि—$\frac{५७७६}{५१२}$। एदेण पढमणिसेगे गुणिदे तिण्णं पलिदोवमणं पढमणिसेयं चरिमणिसेगं च

आवलिके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलिको गुणित करके उस गुणित राशिसे ऊपर वर्गको गुणित करके पल्यके द्वितीय वर्गमूलके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। जहाँ जितनी संख्या होती है वहाँ उतने पल्यके प्रथम वर्गमूल आते हैं। इस प्रकार इतनी औदारिकशरीरकी नानागुणहानि-शलाकाएं होती हैं। पुनः इनका विरलन करके और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न होती है इसमें सन्देह नहीं है। पुनः इस राशिसे औदारिकशरीरके अन्तिम निषेकके गुणित करने पर उसीका प्रथम निषेक होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा होता है ॥३४३॥

गुणकार क्या है ? संख्यात आवलिप्रमाण जो साधिक एक अंकसे न्यून डेढ़ गुणहानि है उतना गुणकार है। यथा—तीन पल्यकी आयुवालोंमें उत्पन्न हो कर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए ग्रहण किये गये नोकर्मके प्रदेशोंमेंसे लेकर तीन पल्यके प्रथम समयमें बहुत प्रदेशपिण्डको निक्षिप्त करता है। द्वितीय समयमें विशेष हीन प्रदेश-पिण्ड निक्षिप्त करता है। इस प्रकार निरन्तर विशेष हीन क्रमसे तीन पल्यके अन्तिम समय तक तक निक्षिप्त करता है। पुनः इस प्रकार निक्षिप्त किये गये सब द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणरूपसे करने पर डेढ़ गुणहानिप्रमाण प्रथम निषेक होते हैं। पुनः यहाँ पर प्रथम निषेक और अन्तिम निषेकका अपनयन करनेके लिए साधिक एक अंक घटाना चाहिए। शेषका प्रमाण इतना होता है $\frac{५७७६}{५१२}$। इससे प्रथम निषेकके गुणित करने पर तीन पल्यके प्रथम निषेक और अन्तिम

मोत्तूण मज्झिमसव्वदव्वमागच्छदि । तेण अपढम-अचरिमदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तं सिद्धं । मज्झिमदव्वमेदं ५७७९ ।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३४४॥

केत्तिमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८ ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३४५॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२९१ ।

सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३४६॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३४७॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णपदप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि कायव्वा, विसेसाभावादो । णवरि तेजासरीरस्स अण्णोण्णब्भत्थ-रासी असंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणिमेत्तो, पलिदोवमअद्धच्छेदणाहिंतो तेजइयसरीर-णाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो । एदं कुदो णव्वदे ? कम्मइयसरीरस्स

निषेकको छोड़ कर मध्यके निषेकोंका सब द्रव्य आता है। इसलिए अप्रथम-अचरम द्रव्य असंख्यातगुणा है यह सिद्ध होता है। मध्यका द्रव्य इतना है—५७७९।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३४४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९ + ९) ५७८८।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३४५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करके जो शेष रहे उतना है। (५१२-९=५०३; ५७८८ + ५०३=) ६२९१।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३४६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है। (६२९१ + ९ ६३०० ।

इसी प्रकार तीन शरीरोंके प्रदेशाग्रका जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहना चाहिए ॥३४७॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व प्ररूपणा की है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है। इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण असंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंके कालप्रमाण है, क्योंकि पल्यके अर्धच्छेदोंसे तैजस-शरीरकी नानागुणहानिशलाकाएँ असंख्यातगुणी देखी जाती हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

णाणागुणहाणिसलागाहिंतो तेजइयस्स गुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सुत्तवयणादो। कम्मइयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं पलिदो० असंखे० भागो।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥३४८॥

कुदो ? गोवुच्छागारेण सव्वणिसेगाणमवट्ठाणादो उक्कस्सट्ठिदिसंजुत्तपरमाणूणं बहुआणमसंभवादो च।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ॥३४९॥

को गुण० ? संखेज्जा समया अण्णोण्णब्भत्थरासी। किमट्ठमण्णोण्णब्भत्थरासी संखेज्जे ? अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणिअद्धाणेण सयलआहारसरीरट्ठिदिकाले अंतोमुहुत्तमेत्ते भागे हिदे संखेज्जाणं णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणुवलंभादो। एदासिमण्णोण्ण-ब्भत्थरासी वि संखेज्जा चेव होदि, पढमट्ठिदिपदेसग्गस्स संखेज्जगुणत्तण्णहाणुव-वत्तीदो।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३५०॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं। किंचूणदिवड्ढगुणहाणि त्ति जं वुत्तं होदि।

समाधान—कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानि-शलाकाएं असंख्यातगुणी हैं, इस सूत्रवचनसे जाना जाता है।

कार्मणशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥३४८॥

क्योंकि सब निषेक गोपुच्छाके आकाररूपसे अवस्थित हैं और उत्कृष्ट स्थितिसे युक्त परमाणुओंका बहुत होना असंभव है।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३४९॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय प्रमाण अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है।

शंका—अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण संख्यात क्यों है ?

समाधान—गुणहानिका अध्वान अन्तर्मुहूर्त है। उससे अहारक शरीरके समस्त स्थितिकाल अन्तर्मुहूर्तके भाजित करने पर नानागुणहानियोंका प्रमाण संख्यात उपलब्ध होता है। इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण भी संख्यात ही होता है, क्योंकि अन्यथा प्रथम स्थितिका निषेक संख्यातगुणा नहीं बन सकता।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३५०॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है। कुछ कम डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५१॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५२॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५३॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो । एवं पंचण्णं सरीराणं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं ॥३५४॥

कुदो ? चरिमगुणहाणिपदेसग्गादो हेट्ठिमहेट्ठिमगुणहाणीणं पदेसग्गस्स दुगुणदुगुणकमेण १०० २०० ४०० ८०० १६०० ३२०० अवट्ठाणदंसणादो ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३५५॥

को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । रूवूणणाणागुणहाणिसलागाओ ५ विरलिय विगं

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५१॥

कितना अधिक है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५२॥

कितना अधिक है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करने पर जितना शेष रहे उतना अधिक है ।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार पाँच शरीरोंका जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं ॥३५४॥

क्योंकि अन्तिम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे अधस्तन अधस्तन गुणहानियोंका प्रदेशाग्र दूने दूने क्रमसे अवस्थित देखा जाता है । यथा—१००, २००, ४००, ८००, १६००, ३२०० ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३५५॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । एक कम नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और विरलित राशिके प्रत्येक एकको दूनाकर परस्पर गुणा करनेपर

करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी दुरूवूणा त्ति भणिदं होदि ३०। तस्स पमाणमेदं ३०००।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५६॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३१००।

पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५७॥

केत्तिय० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३२००।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५८॥

को विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणविदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२००।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५९॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६३००।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३६०॥

जहा ओरालियसरीरस्स उक्कस्सपदप्पाबहुअं परूविदं तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि परूवेदव्वं। णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणमण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं णादूण भाणिदव्वं।

जो अन्योन्याभ्यस्त राशि उत्पन्न हो उसमेंसे दो कम (३२—२=३०) गुणकार शलाका है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उसका प्रमाण इतना है (१०० × ३०) ३०००।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है (३००० + १००=) ३१०० अप्रथम गुणहानियोंका द्रव्य।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५७॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है (३१०० + १००=) ३२००।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५८॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितियादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है (३१००—१००=३०००; ३२०० + ३०००=) ६२००।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५९॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है (६२०० + १००=) ६३००।

इसी प्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए ॥३६०॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरका उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका भी कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जान कर कहना चाहिए।

सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमगुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं ॥३६१॥

कारणं सुगमं ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।३६२।

को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासीए चदुरूवूणाए अद्धं ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६३॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६४॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६५॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणविदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६६॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो । एवमुक्कस्सपदप्पाबहुअं समत्तं ।

आहारकशरीरके अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥३६१॥

कारण सुगम है ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥३६२॥

गुणकार क्या है ? चार कम अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अर्धभागप्रमाण गुणकार है (६४—४= ६०; ६०÷ २= ३०, १००×३०= ३०००)

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिका द्रव्य कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

इस प्रकार उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥३६७॥

कुदो ? उक्कस्सट्ठिदिसंजुत्तपरमाणुपोग्गलाणं बहुआणमणुवलंभादो ।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३६८॥

को गुण० ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ $\frac{१००}{९}$ । कुदो चरिमगुणहाणिदव्वे चरिमणिसेयपमाणेण कदे किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगाणं तत्थुवलंभादो ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३६९॥

को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । किंचूणदिवड्ढगुणहाणिणा $\frac{१००}{९}$ किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि $\frac{५१२}{९}$ भागे हिदे जं भागलद्धं सो गुणगारो त्ति घेत्तव्वं ५१२ ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३७०॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं । गुणहाणीए तिण्णिचदुब्भागेण सादिरेयऊणदिवड्ढ-

---

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥३६७॥

क्योंकि उत्कृष्ट स्थितियुक्त बहुत परमाणु नहीं उपलब्ध होते ।

उससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३६८॥

गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार है $\frac{१००}{९}$, क्योंकि अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको अन्तिम निषेकके प्रमाणमें करने पर कुछ कम डेढ़ गुणहानि प्रमाण अन्तिम निषेक उपलब्ध होते हैं ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३६९॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। कुछकम डेढ़ गुणहानि $\frac{१००}{९}$ का कुछकम अन्योन्याभ्यस्तराशि $\frac{५१२}{९}$ में भाग देनेपर जो भाग लब्ध आवे वह गुणकार है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । $\frac{५१२}{९} \div \frac{१००}{९} = \frac{५१२}{१००}$, $\frac{१००}{१} \times \frac{५१२}{१००} =)$ ५१२ ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३७० ।

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है । गुणहानिके तीन बटे चार भागसे

गुणहाणि त्ति भणिदं होदि ३००० ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७१॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३१०० ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७२॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो । कुदो ? विदियादिगुणहाणिदव्वाणं दुगुणहीण-दुगुणहीणकमेण अवट्ठाणुवलंभादो ३२०० ।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसाहियं ॥३७३॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पढमचरिमणिसेगेहि ऊणविदियादिगुणहाणि-दव्वमेत्तो ५७७९ ।

अपढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७४॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८ ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७५॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२०० ।

अधिक कुछकम डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ३००० ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७१॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है (३०००+१००=)३१०० ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७२॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है, क्योंकि द्वितीय आदि गुणहानियोंका द्विगुणहीन द्विगुणहीन क्रमसे अवस्थान उपलब्ध होता है (३१००+१००=) ३२०० ।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम और अन्तिम निषेकसे न्यून द्वितीय आदि गुण-हानियोंका जितना द्रव्य है उतना है (६३००–५२१ =) ५७७९ ।

उससे अप्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९ + ९ =) ५७८८ ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम निषेकके द्रव्यमेंसे कम करनेपर जितना शेष रहे उतना है (५१२–१०० = ४१२, ५७८८ + ४१२ =) ६२०० ।

अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७६॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२६१ ।

सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७७॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३७८॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअं परूविदं तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि परूवेदव्वं । णवरि चरिमगुणहाणिदव्वादो तेजइयसरीरस्स पढम-ट्ठिदीए णिसित्तदव्वमसंखेज्जगुणं ति भणिदे एत्थ गुणगारो अंगुलस्स असंखे०भागो होदि, दिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगेहि अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्तचरिमणिसेगेसु ओवट्टि-देसु अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तगुणगारुवलंभादो । एत्थ एत्तियमागच्छदि त्ति कुदो णव्वदे ? एत्थेव उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो णव्वदे । तं जहा—सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि । कम्मइयसरीरस्स णाणापदेस-

उससे अचरम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३७६ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है (१००-९=९१; ६२००+९१=) ६२९१ ।

उससे सब स्थितियों और सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३७७ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (६२९१+९=) ६३०० ।

इसीप्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए ॥ ३७८ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका भी कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे तैजसशरीरकी प्रथम गुणहानिमें निक्षिप्त हुआ द्रव्य असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर यहाँ पर गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है, क्योंकि डेढ़ गुणहानिप्रमाण अन्तिम निषेकोंसे अन्योन्याभ्यस्तराशिप्रमाण अन्तिम निषेकोंके भाजित करने पर अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार उपलब्ध होता है ।

शंका - यहाँ इतना आता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—यहीं पर आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यथा—आहारक-शरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक हैं । उनसे कार्मणशरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर

गुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि। तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखे०गुणाणि। संपहि कम्मइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमच्छेदण-एहिंतो असंखे०भागेणूणाओ त्ति आइरिया भणंति। पुणो एवंविहकम्मइयसरीर-णाणागुणहाणिसलागाहिंतो तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति वग्गणासुत्ते भणिदं। अविरुद्धाइरियाणं उवदेसो पुण पलिदोवमच्छेदणाहिंतो तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो त्ति। एदम्हि गुणगारे जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणं पलिदोवमाण-मण्णोण्णब्भासे कदे तेजइयणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी उप्पज्जदि। पुणो तम्मि अण्णोण्णब्भत्थरासिम्मि दिवड्ढगुणहाणीए ओवट्टिदे लद्धमसंखेज्जाणं पलिदोवमाणमण्णोण्णब्भासो आगच्छदि। तेण गुणगारो अंगुलस्स असंखे०भागो त्ति सिद्धं। कम्मइयसरीरगुणगारो पुण पलिदोवमस्स असंखे०भागो त्ति दट्ठव्वो। एसो गुणगारविही पुव्वं परूविदजहण्णपदे[1] उक्कस्सपदे च वत्तव्वो।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥३७९॥

कुदो? उक्कस्सट्ठिदिपरमाणूणं बहुआणं संभवाभावादो।

असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं। यहाँ पर कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाएँ पल्यके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण कम हैं ऐसा आचार्य कथन करते हैं। पुनः इस प्रकारकी कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकाएं असंख्यातगुणी हैं ऐसा वर्गणासूत्रमें कहा है। परन्तु विरोध रहित आचार्योंका उपदेश है कि पल्यके अर्धच्छेदोंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकाएं असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है। इस गुणकारमें जितनी संख्या है उतने पल्योंका परस्पर गुणा करने पर तैजसशरीरकी नाना-गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि उत्पन्न होती है। पुनः उस अन्योन्याभ्यस्तराशिमें डेढ़ गुणहानिका भाग देने पर असंख्यात पल्योंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है। इस लिए गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है। परन्तु कार्मणशरीरका गुणकार पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण है ऐसा जानना चाहिए। यह गुणकारविधि पहले कहे गये जघन्यपद और उत्कृष्टपदमें भी कहनी चाहिए।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥३७९॥

क्योंकि उत्कृष्ट स्थितिके बहुत परमाणु सम्भव नहीं हैं।

१. ता०प्रतौ 'पुव्वपरूविदजहण्णपदे' अ०प्रतौ 'पुव्वं परूविदं जहण्णपदे' इति पाठः।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ॥३८०॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासि त्ति भणिदं होदि ।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३८१॥

को गुण० ? सगदिवड्ढगुणहाणीए संखेज्जदिभागो ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्ज-गुणं ॥३८२॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । चदुरूवूणअण्णाण्णब्भत्थरासिस्स अद्धमिदि भणिदं होदि ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८३॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८४॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८५॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तेणूणविदियादिगुणहाणिमेत्तो ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥३८०॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कुछकम अन्योन्याभ्यस्त राशिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥३८१॥

गुणकार क्या है ? अपनी डेढ़ गुणहानिके संख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥३८२॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । चार कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका अर्ध-भागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीय आदि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं[1] ॥३८६॥

के० विसेसो ? पढम-चरिमणिसेगेहि ऊणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८७॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८८॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८९॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ।

एवं पदेसविरओ त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

णिसेयअप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि— जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥३९०॥

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे प्रथम और अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८७॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जो प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८८॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषेकके प्रमाणमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब स्थितियों और सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८९॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार प्रदेशविरच अनुयोगद्वार समाप्त हुआ

निषेक अल्पबहुत्वका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं— जघन्यपद, उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥३९०॥

१. अ०प्रतौ 'पदेसग्गं विसेसग्गं विसेसा०' इति पाठः ।

एगगुणहाणिअद्धाणं जहण्णपदं णाम, एगसंखत्तादो। णाणागुणहाणिसलागाओ उक्कस्सपदं णाम, अणेगसंखत्तादो। गुणहाणिअद्धाणं पेक्खिदूण णाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो वा उक्कस्सं णाणागुणहाणिसलागाओ। आहार[1]-कम्मइयगुणगारसलागाहि वियहिचारो, पाधण्णपदमस्सिदूण गुणहाणिसलागाणं उक्कस्सववएसादो। दव्वट्ठियणयावलंवणादो त्ति भणिदं होदि।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं ॥३९१॥

कुदो? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो। होंता वि तिण्णि गुणहाणिट्ठाणंतराणि सरिसाणि। तं कुदो णव्वदे? एगसुत्ते एगवयणेण च णिद्देसादो।

तेयासरीरस्स[2] एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥३९२॥

को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।

कम्मइयसरीरस्स एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥३९३॥

एकगुणहानिअध्वानका नाम जघन्यपद है, क्योंकि उसकी संख्या एक है। नानागुणहानिशलाकाओंका नाम उत्कृष्टपद है, क्योंकि उनकी संख्या बहुत है। अथवा गुणहानि अध्वानको देखते हुए नानागुणहानिशलाकाएं असंख्यातगुणी देखी जाती हैं, इसलिए नानागुणहानिशलाकाओंकी उत्कृष्टपद संज्ञा है। आहारकशरीर और कार्मणशरीरकी गुणकारशलाकाओंके साथ व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि प्राधान्यपदकी अपेक्षा गुणहानिशलाकाओंकी उत्कृष्ट संज्ञा है। द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन लेनेसे यह संज्ञा रखी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है ॥३९१॥

क्योंकि उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है। ऐसा होते हुए भी तीनों गुणहानिस्थानान्तर समान हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—एक सूत्रमें एकवचनका निर्देश होनेसे जाना जाता है।

उससे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ ३९२ ॥

गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। जो पल्यका असंख्यातवां भाग पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है।

उससे कार्मणसरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥३९३॥

१. ता०प्रतौ '–सलागाओ। [अ] णाहार' अ०का०प्रत्योः 'सलागाओ अणाहार' इति पाठः।
२. का०प्रतौ 'तेयासरीरस्स णाणापदेस–' इति पाठः।

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो । एवं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुण-हाणिट्ठाणंतराणि ॥३९४॥

कुदो ? संखेज्जरूवत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥३९५॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो ।

तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥३९६॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? तेजासरीरस्स एगगुणहाणि-अद्धाणादो असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तादो कम्मइयसरीरएगगुणहाणिअद्धाणस्स असंखेज्जगुणत्तादो ।

ओरालियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥३९७॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्ययातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इस प्रकार जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक हैं ॥ ३९४ ॥

क्योंकि उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ ३९५ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ ३९६ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि असंख्यात पल्योंके प्रथम वर्गमूलप्रमाण तैजसशरीरके एकगुणहानि अध्वानसे कार्मणशरीरकी एकगुणहानिका अध्वान असंख्यातगुणा है ।

उनसे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९७॥

१. ता०प्रतौ 'तेजासरीरस्स णाणागुणहाणि–' इति पाठः ।

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि[1] पलिदोवमपढम-वग्गमूलाणि ।

वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-गुणाणि ॥३९८॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? दोण्णं गुणहाणिअद्धाणाणि सरिसाणि होदूण तेहि विहज्जमाणतिपलिदोवमेहिंतो तेत्तीससागरोवमाणं संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।

एवं उक्कस्सपदप्पाबहुअं समत्तं ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेस-गुणहाणिट्ठाणंतराणि ॥३९९॥

कुदो ? संखेज्जरूवत्तादो ।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतर-मसंखेज्जगुणं ॥४००॥

कुदो ? तिण्णि वि गुणहाणिट्ठाणंतराणि सरिसाणि होदूण अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥४०१॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जो कि पल्यका असंख्यातवां भाग पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं ॥ ३९८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि दोनोंके गुणहानिअध्वान समान हैं इसलिए उनसे भाजित किये जानेवाले तीन पल्योंसे तेतीस सागर संख्यातगुणे देखे जाते हैं।

इस प्रकार उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक हैं ॥३९९॥

क्योंकि उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका एकप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४००॥

क्योंकि तीन ही गुणहानिस्थानान्तर सदृश होते हुए प्रत्येकका अध्वान अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०१॥

१. का०प्रतौ 'को गुणगारो असंखेज्जाणि' इति पाठः ।

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥४०२॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

तेयासरीरस्स एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥४०३॥

को गुण० ? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥४०४॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥४०५॥

को गुण० ? असंखेज्जाणि पलिदोवमच्छेदणयपढमवग्गमूलाणि ।

वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-गुणाणि ॥४०६॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०२॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०३॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

उससे कार्मणशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०४॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०५॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात पल्योंके जितने अर्धच्छेद हों उतने प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं॥४०६॥

१. ता०प्रतौ 'तेयासरीरस्स णाणा (एय) पदेस-' अ०का०प्रत्योः 'तेयासरीरस्स णाणापदेस-' इति पाठः ।

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

एवं णिसेयपरूवणा समत्ता ।

गुणगारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि-जहण्ण-पदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥४०७॥

जहण्णदव्वमस्सिदूण जो गुणगारो तं जहण्णपदं णाम । उक्कस्सदव्वमस्सिदूण जो गुणगारो तमुक्कस्सपदं णाम । उभयमस्सिऊण जो गुणगारो तं जहण्णुक्कस्स-पदं णाम ।

जहण्णपदे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥४०८॥

कुदो ? साभावियादो । जहण्णपदप्पाबहुए कीरमाणे सेडीए असंखे०भागो गुणगारो होदि त्ति भणिदं होदि । तं जहा—सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं । तं पुण एगसमयपबद्धमेत्तं सुहुमेइंदियअपज्जत्तएण पढमसमयतब्भवत्थेण जहण्णउववादजोगेण अपज्जत्तिणिव्वत्तणणिमित्तं गहिदणोकम्मपदेसग्गं । वेउव्विय-सरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखे०गुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एदं पि एगसमयपबद्धमेत्तं असण्णिपच्छायददेव-णेरइएसु उप्पण्णेण पढमसमयआहारएण

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई ।

गुणकारका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं—जघन्यपद, उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥४०७॥

जघन्य द्रव्यका आश्रय कर जो गुणकार है वह जघन्यपद कहलाता है । उत्कृष्टपदका आश्रय कर जो गुणकार है वह उत्कृष्टपद कहलाता है और दोनोंका आश्रय कर जो गुणकार है वह जघन्य-उत्कृष्टपद कहलाता है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ४०८ ॥

क्योंकि ऐसा स्वभाव है । जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व करने पर जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यथा—औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । परन्तु वह प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे अपर्याप्तिकी रचना के लिए ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धमात्र होता है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी प्रथम समयमें आहारक हुए तथा प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ऐसे असंज्ञियोंमें से आकर देव और नारकियोंमें

पढमसमयतब्भत्थेण जहण्णउववादजोगेण गहिदणोकम्मपदेसग्गं । आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एदं पि एग-समयपबद्धमेत्तं आहारसरीरमुट्ठावेंतसंजदेण पढमसमयतप्पाओग्गजहण्णपरिणाम-जोगेण गहिदणोकम्मपदेसग्गं ।

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४०६॥

एदेण सुत्तेण तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णदव्वाणं गुणगारो परूविदो । तं जहा—आहारसरीरस्स जहण्णपदेसग्गादो तेजासरीरस्स जहण्णपदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एदं पि अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स[1] एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणयस्स जहण्णजोगिस्स सामित्त-चरिमसमए वट्टमाणस्स होदि । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एदं पि खविदकम्मंसिय-लक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए वट्टमाणअघादिचदुक्कदव्वं घेत्तव्वं ।

एवं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उत्पन्न हुए जीवके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्ध प्रमाण होता है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले संयतके द्वारा प्रथम समयमें तत्प्रायोग्य जघन्य परिणामयोगके द्वारा ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है ।

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ ४०६ ॥

इस सूत्रके द्वारा तैजसशरीर और कार्मणशरीरके जघन्य द्रव्योंका गुणकार कहा गया है । यथा—आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रसे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह प्रदेशाग्र भी एकान्तवृद्धिसे वृद्धिगत जघन्य योगवाले और स्वामित्वके अन्तिम समयमें विद्यमान अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके होता है । उससे कार्मणशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आये हुए अयोगी जीवके अन्तिम समयमें विद्यमान अघातिचतुष्कके द्रव्यरूप ग्रहण करना चाहिए ।

इस प्रकार जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

१. ता०प्रतौ '-जीवपज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥४१०॥

जहण्णउववादजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धादो उक्कस्सपरिणामजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धो तिण्णिपलिदोवमसंचिददिवड्ढगुणहाणिमेत्तउक्कस्सओरालियसमयपबद्धा वा असंखेज्जगुणा । एत्थ गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥४११॥

जहा ओरालियसरीरजहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वं पलिदो० असंखे०भागगुणं तहा सेसचदुण्णं सरीराणं पि सगसगजहण्णसमयपबद्धादो सगसगउक्कस्ससमयपबद्धो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिददिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागगुणा । णवरि एगुक्कस्ससमयपबद्धं पडुच्च जोगगुणगारो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिदसव्वुक्कस्सदव्वं पडुच्च जोगगुणगारेण गुणिददिवड्ढगुणहाणीओ गुणगारो होदि । णवरि कम्मइयसरीरस्स जहण्णदव्वमुक्कस्सदव्वं च दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसमयपबद्धमेत्तं होदि, अणादिबंधेण बंधत्तादो । एत्थ वि जहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वगुणगारो जोगगुणगारमेत्तो । एवमुक्कस्सपदेण सत्थाणप्पाबहुअं समत्तं ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१०॥

जघन्य उपपादयोगसे बन्धको प्राप्त हुए औदारिकशरीरके एक समयप्रबद्धसे उत्कृष्ट परिणामयोगसे बन्धको प्राप्त हुआ औदारिकशरीरका एक समयप्रबद्ध अथवा तीन पल्य कालके भीतर संचित हुए डेढ़ गुणहानि प्रमाण औदारिकशरीरके उत्कृष्ट समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हैं। यहाँ पर गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षासे जानना चाहिए ॥४११॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्य द्रव्यसे उसका उत्कृष्ट द्रव्य पल्यके असंख्यातवें भागगुणा कहा है उसीप्रकार शेष चार शरीरोंके भी अपने अपने जघन्य समयप्रबद्धसे अपना अपना उत्कृष्ट समयप्रबद्ध अथवा गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए डेढ़ गुणहानिप्रमाण समयप्रबद्ध पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणे हैं। इतनी विशेषता है कि एक उत्कृष्ट समयप्रबद्धकी अपेक्षा योगगुणकार ही गुणकार होता है और गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए सर्वोत्कृष्ट द्रव्यकी अपेक्षा योगगुणकारसे गुणित डेढ़ गुणहानियाँ गुणकार होता है। इतनी और विशेषता है कि कार्मणशरीरका जघन्य द्रव्य और उत्कृष्ट द्रव्य डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि उसका अनादिसम्बन्धरूपसे बन्ध उपलब्ध होता है। यहाँ भी जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य लानेके लिए गुणकार योगगुणकारप्रमाण है।

इस प्रकार उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

जहण्णुक्कस्सपदेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥४१२॥

उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥४१३॥

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४१४॥

तस्सेव उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो ॥४१५॥

एदेहि चदुहि वि सुत्तेहि जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअस्स गुणगाराणं परूवणा कदा । तं जहा—सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं, सुहुमेइंदियअपज्जत्त-जहण्णउववादजोगेण आगदएगसमयपबद्धत्तादो । तस्सेव उक्कस्सयं पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? तिपलिदोवमाउमणुस्सचरिम-समयउक्कस्सदव्वग्गहणादो । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । कुदो ? असण्णिपच्छायदेण देवेण णेरइएण वा जहण्णउववादजोगेण संचिदएगसमयपबद्धपमाणत्तादो । कथं जहण्णजोगिस्स दव्वं

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-शरीरका जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१२॥

तथा उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१३॥

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ॥४१४॥

तथा उन्हींका उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१५॥

इन चारों ही सूत्रोंके द्वारा जघन्यपद और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्वके गुणकारोंकी प्ररूपणा की है। यथा—औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है; क्योंकि वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य उपपाद योगके द्वारा ग्रहण किये गए एक समयप्रबद्धप्रमाण है। उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि तीन पल्यकी आयुवाले मनुष्योंके अन्तिम समयमें जो उत्कृष्ट द्रव्य होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है। उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यात-गुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि वह असंज्ञी जीवोंमेंसे आकर उत्पन्न हुए देव या नारकीके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे संचित हुए एक समय-प्रबद्धप्रमाण होता है।

सेडीए असंखे०भागगुणं होज्ज ? ण, जादिविसेसेण वेउव्वियजहण्णसमयपबद्धस्स सेडीए असंखेज्जदिभागगुणत्तं पडि[1] विरोहाभावादो । तस्सेव उक्कस्सदव्व-मसंखेज्जगुणं । को गुण० ? पलिदोवमासंखे०भागो । कुदो ? गुणिदकम्मंसियलक्खणे-णागदआरणच्चुदकप्पवासियदेवस्स चरिमसमयसंचयग्गहणादो । आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखे०गुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । कुदो ? उत्तर-सरीरमुट्ठावेंतपढमसमयसाहुस्स जहण्णजोगेणागदएगसमयपबद्धग्गहणादो । एत्थ वि जादिविसेसेणेव गुणगारो सेडीए असंखे०भागो होदि त्ति घेत्तव्वो । तस्सेव उक्कस्सयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विदूण मूलसरीरं पविसमाणचरिमसमयआहारसाहुस्स उक्कस्ससंचयग्गहणादो । तेजइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमणंतगुणं । को गुण०[2] ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णएगंताणुवड्ढिजोगकालस्स चरिमसमयतेजइयदव्वग्गहणादो । पुव्विल्लाणं गुणगारो सेडीए असंखे०भागो । एदस्स गुणगारो कथमणंतो होज्ज ? साभावियादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को

शंका—जघन्य योगवालेका द्रव्य जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणा कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जातिविशेषके कारण वैक्रियिकशरीरके जघन्य समयप्रबद्धके जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाणगुणे होने में कोई विरोध नहीं है ।

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए आरण-अच्युत कल्पवासी देवके अन्तिम समयमें जो संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले साधुके जघन्य योगसे जो एक समयप्रबद्ध प्राप्त होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । यहाँ पर भी जातिविशेषके ही कारण गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि उत्तरशरीरकी विक्रिया करके मूल शरीरमें प्रवेश करनेवाले अन्तिम समयवर्ती आहारकशरीरी साधुके जो उत्कृष्ट संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगकालके अन्तिम समयमें जो तैजसशरीरका द्रव्य होता है उसका यहां ग्रहण किया है ।

शंका—पहलेके शरीरोंका गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । ऐसी अवस्थामें इस शरीरका गुणकार अनन्त कैसे हो सकता है ?

समाधान—ऐसा स्वभाव है ।

१. अ०प्रतौ 'जहण्णजोगिस्स दव्वं सेडीए असंखे०भागगुणत्तं पडि' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'पदेसग्गमसंखे०गुणं (अणंतगुणं) । को गुण०' इति पाठः ।

गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो। कुदो सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयस्स गुणिदकम्मंसियस्स उक्कस्सतेजादव्वग्गहणादो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमणंतगुणं। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। कुदो ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागदचरिमसमयअजोगिदव्वग्गहणादो। तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखे०गुणं। को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो। गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदसत्तमपुढविचरिमसमयणेरइयदव्वग्गहणादो।

एवं गुणगारो त्ति समत्तमणिओगद्दारं।

पदमीमांसाए तत्थ इमाणि दुवे अणियोगद्दाराणि—जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥४१६॥

जत्थ पंचण्णं सरीराणं जहण्णदव्वपरिक्खा कीरदि सा जहण्णपदमीमांसा। जत्थ उक्कस्सदव्वपरिक्खा कीरदि सा उक्कस्सपदमीमांसा।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४१७॥

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि सातवीं पृथिवीमें अन्तिम समयवर्ती नारकीके गुणितकर्मांशिकविधिसे जो तैजसशरीरका उत्कृष्ट द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है। उससे कार्मणशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए अन्तिम समयवर्ती अयोगिकेवलीके जो द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है। उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आये हुए सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती नारकीका जो द्रव्य है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है।

इस प्रकार गुणकार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

पदमीमांसाका प्रकरण है। उसमें ये दो अनुयोगद्वार होते हैं—जघन्यपद और उत्कृष्टपद ॥४१६॥

जहाँ पाँचों शरीरोंके जघन्य द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह जघन्य पदमीमांसा है और जहाँपर उत्कृष्ट द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह उत्कृष्ट पदमीमांसा है।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिक शरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४१७॥

१. ता०प्रतौ '-कम्मंसियउक्कस्स-' इति पाठः।

किं देवस्स किं णेरइयस्स किं तिरिक्खस्स किं मणुस्सस्स किं पज्जत्तस्स किमपज्जत्तस्स किं सण्णिस्स किमसण्णिस्स किमेइंदियस्स इच्चादिपुच्छाओ एत्थ कायव्वाओ ।

अण्णदरस्स उत्तरकुरु-देवकुरुमणुअस्स तिपलिदोवम-ट्ठिदियस्स ॥४१८॥

इत्थि पुरिसवेदेदि सम्मत्त-मिच्छत्तादिगुणेहि य दव्वविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठ-मण्णदरणिद्देसो कदो। सेसगइपडिसेहट्ठं सेसमणुस्सपडिसेहट्ठं च उत्तरकुरु-देवकुरु-मणुस्सग्गहणं कदं। किमट्ठमण्णेसिं पडिसेहो कदो ? अण्णत्थ बहुसादाभावादो। असादेण ओरालियसरीरपोग्गलस्स बहुअस्स अवचयदंसणादो। उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ सव्वे तिपलिदोवमट्ठिदिया चेव तदो तिपलिदोवमट्ठिदियस्से त्ति विसेसणमजुत्तं ? ण एस दोसो, उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ तिपलिदोवमट्ठिदिया चेवे त्ति तत्थ सेसाउट्ठिदिवियप्प-पडिसेहफलत्तादो। ण च एदं सुत्तं मोत्तूण अण्णं सुत्तमत्थि जेण उत्तरकुरु-देवकुरु-मणुआ तिपलिदोवमट्ठिदिया चेव होंति त्ति णव्वदि तदो सफलमेदं विसेसणं। समयाहिय-दुपलिदोवमे आदिं[1] कादूण जाव समऊणतिण्णिपलिदोवमाणि त्ति ट्ठिदिवियप्पपडिसेहट्ठं

क्या देव है, क्या नारकी है, क्या तिर्यञ्च है या क्या मनुष्य है; क्या पर्याप्त है या क्या अपर्याप्त है; क्या संज्ञी है या क्या असंज्ञी है; तथा क्या एकेन्द्रिय है आदि पृच्छाएं यहाँ पर करनी चाहिए।

जो तीन पल्यकी आयुवाला उत्तरकुरु और देवगुरुका अन्यतर मनुष्य है ॥४१८॥

स्त्रीवेद और पुरुषवेदके कारण तथा सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदि गुणोंके कारण द्रव्य विशेष नहीं होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतरपदका निर्देश किया है। शेष गतियोंका निषेध करनेके लिए तथा शेष मनुष्योंका निषेध करनेके लिए उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंके इस पदका ग्रहण किया है।

शंका—अन्यके उत्कृष्ट स्वामित्वका किसलिए निषेध किया है।

समाधान—क्योंकि अन्यत्र बहुत साताका अभाव है, क्योंकि असातासे औदारिक-शरीरके बहुत पुद्गलका अपचय देखा जाता है।

शंका—उत्तरकुरु और देवकुरुके सब मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते हैं इसलिए 'तीन पल्यकी स्थितिवाले के' यह विशेषण युक्त नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते हैं ऐसा कहनेका फल वहाँपर शेष आयुस्थितिके विकल्पोंका निषेध करना है। और इस सूत्रको छोड़कर अन्य सूत्र नहीं है जिससे यह ज्ञान हो कि उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते है, अतः यह विशेषण सफल है। अथवा एक समय अधिक दो पल्यसे लेकर एक समय कम तीन पल्य तकके स्थितिविकल्पोंका निषेध करनेके लिए

१. ता० प्रतौ '-दुपलिदोवमआदि' इति पाठः।

वा तिपलिदोवमग्गहणं। ण च सव्वट्ठसिद्धिदेवाउअं व णिव्वियप्पं तदाउअं, तप्परूवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंभादो। संपहि तस्स मणुयस्स लक्खणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण जोगेण आहारिदो ॥४१९॥

सरीरपाओग्गपोग्गलपिंडग्गहणमाहारो। तत्थ पढमसमयआहारएण आहारिदो। विदियादिसमयआहारपडिसेहट्ठं पढमसमएण आहारो विसेसिदो। एसो पढमसमयआहारो पढमसमयतब्भवत्थो विदियसमयतब्भवत्थो तदियसमयतब्भवत्थो वि अत्थि, तत्थ विदिय-तदियसमयतब्भवत्थाहाराणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भवत्थविसेसणेण[1] पढमसमयआहारो विसेसिदो। विग्गहगदीए उप्पण्णे को दोसो? ण, दोसमयसंचयदव्वस्स[2] अभावप्पसंगादो। उक्कस्सजोगो जस्स पढमसमयआहारस्स सो उक्कस्सो जोगो तेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो। अणाहारवियप्पपडिसेहट्ठं एवकारणिद्देसो कदो। एवमुप्पण्णपढमसमए आहारविसेसं परूविय संपहि विदियादिसमएसु आहार-

सूत्रमें तीन पल्यकी स्थितिवाले पदका ग्रहण किया है। सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी आयु जिस प्रकार निर्विकल्प होती है उस प्रकार वहाँकी आयु निर्विकल्प नहीं होती, क्योंकि इस प्रकारकी आयुकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र और व्याख्यान नहीं उपलब्ध होता।

अब उस मनुष्यके लक्षणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

उसी मनुष्यने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥४१९॥

शरीरके योग्य पुद्गलपिण्डका ग्रहण करना आहार है। वहाँ प्रथम समयमें आहारक होकर आहार ग्रहण किया। द्वितीय आदि समयोंमें आहारका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समय' पदसे आहारको विशेषित किया है। यह प्रथम समयका आहार प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर, दूसरे समयमें तद्भवस्थ होकर और तीसरे समयमें तद्भवस्थ होकर भी होता है, अतः वहाँ द्वितीय और तृतीय समयमें तद्भवस्थ होकर जो आहार होता है उसका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें तद्भवस्थ' इस विशेषणसे प्रथम समयके आहारको विशेषित किया है।

शंका—विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेमें क्या दोष है?

समाधान—नहीं, क्योंकि दो समयमें संचित हुए द्रव्यके अभावका प्रसंग आता है।

प्रथम समयमें आहारक जिस जीवके जो उत्कृष्ट योग होता है वह उत्कृष्ट योग वहाँपर विवक्षित है। उस उत्कृष्ट योगसे आहार ग्रहण किया। अनाहार विकल्पका निषेध करनेके लिए 'एवकार' पदका निर्देश किया है। इस प्रकार उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आहार विशेषका कथन

१. अ०प्रतौ 'विसेसणं' का०प्रतौ 'विसेसण' इति पाठः। २ म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'दोससंचयदव्वस्स' इति पाठः।

ग्गहणक्कमपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥४२०॥

पढमसमयजोगादो विदियसमयजोगो असंखेज्जगुणो। विदियादो तदियसमयजोगो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव एगंताणुवड्ढिचरिमसमओ त्ति। एत्थ गुणगारपमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ गुणगारो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि। णवरि जहण्णादो उक्कस्सो असंखेज्जगुणो। तत्थ जहण्णवड्ढिपडिसेहट्ठमुक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो त्ति भणिदं। एदेण एयंताणुवड्ढीए आहारणक्कमो परूविदो। किमट्ठं उक्कस्सजोगेणेव आहाराविज्जदि? बहुपोग्गलग्गहणट्ठं।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥४२१॥

छपज्जत्तिसमाणणकालो जहण्णओ उक्कस्सओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो। तत्थ सव्वजहण्णेण अंतोमुहुत्तेण कालेण सव्वाहि य पज्जत्तीहि[1] पज्जत्तयदो त्ति वुत्तं होदि। किमट्ठं अपज्जत्तकालो लहुओ घेप्पदि? पज्जत्तकालपरिणामजोगेहिंतो अपज्जत्तकालएगंताणुवड्ढिजोगेहि असंखेज्जगुणहीणेहि[2] बहुपोग्गलग्गहणाभावादो।

करके अब द्वितीय आदि समयोंमें आहारग्रहणके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥४२०॥

प्रथम समयके योगसे द्वितीय समयका योग असंख्यातगुणा है। दूसरे समयके योगसे तीसरे समयका योग असंख्यातगुणा है। इस प्रकार एकान्तानुवृद्धियोगके अन्तिम समयतक ले जाना चाहिए। यहाँपर गुणकारका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यहाँ पर गुणकार जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। इतनी विशेषता है कि जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है। उनमेंसे जघन्य वृद्धिका प्रतिषेध करनेके लिए उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ यह कहा है। इसद्वारा एकान्तानुवृद्धिसे आहार ग्रहणका क्रम कहा गया है।

शंका—उत्कृष्ट योगसे ही आहार ग्रहण क्यों कराया गया है?

समाधान—बहुत पुद्गलोंके ग्रहण करनेके लिए।

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥४२१॥

छह पर्याप्तियोंके पूरा होनेका काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमेंसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—लघु अपर्याप्त काल किसलिए ग्रहण किया जाता है?

समाधान—क्योंकि पर्याप्तकालीन परिणामयोगोंसे अपर्याप्तकालीन एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन होते हैं अतः उनके द्वारा बहुत पुद्गलोंका ग्रहण नहीं होता, इसलिए अपर्याप्त काल लघु ग्रहण किया है।

१. अ०प्रतौ 'सव्वाहि पजत्तीहि' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'असंखेज्जगुणेहि' इति पाठः।

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥४२२॥

सव्वाओ पज्जत्तीओ समाणिय भासंतस्स जस्स अप्पाओ भासद्धाओ सो उक्कस्सदव्वसामी होदि। भासाकालस्स[1] थोवत्तं किमट्ठमिच्छिज्जदे ? ण, भासावावारेण जणिदपरिस्समेण भासापोग्गलाणमभिघादेण बहुआणं ओरालियपोग्गलाणं परिसदणप्पसंगादो।

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥४२३॥

चिंदाजणिदपरिस्समेण परिगलंतपोग्गलक्खंधपडिसेहट्ठं अप्पाओ मणजोगद्धाओ त्ति भणिदं।

अप्पा छविच्छेदा ॥४२४॥

छवी सरीरं। तस्स णहादीणं[2] किरियाविसेसेहि खंडणं छेदो णाम। ते छेदा तत्थ अप्पा थोवा, बहुआणं किरियाणमंतरे तव्विरोहाभावादो। जेहि सरीरपीडा होदि ते तत्थ अप्पाणि त्ति भावत्थो।

अंतरे ण कदाइ विउव्विदो ॥४२५॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥४२२॥

सब पर्याप्तियोंको समाप्त करके बोलते हुए जिसके भाषाकाल अल्प हैं वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी है।

शंका—भाषाकालका स्तोकपना किसलिए चाहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि भाषाके व्यापारसे जो परिश्रम होता है उससे तथा भाषारूप पुद्गलोंका अभिघात होनेसे बहुत औदारिकशरीरके पुद्गलोंकी निर्जरा होनेका प्रसंग आता है, इसलिए भाषाकालका स्तोकपना चाहते हैं।

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥४२३॥

चिन्ताके कारण जो परिश्रम होता है उससे गलनेवाले पुद्गलस्कन्धोंका निषेध करनेके लिए 'मनोयोगके काल अल्प हैं' यह कहा है।

छविच्छेद अल्प हैं ॥४२४॥

छवि शरीरको कहते हैं। उसके नख आदिका क्रियाविशेषके द्वारा खण्डन करना छेद है। वे छेद वहाँ अल्प अर्थात् स्तोक हैं, क्योंकि बहुत क्रियाओंके बिना उनके होनेमें कोई विरोध नहीं आता। जिनसे शरीरपीड़ा होती है वे वहाँ अल्प हैं यह इसका भावार्थ है।

आयुकालके मध्य कदाचित् विक्रिया नहीं की ॥४२५॥

१. ता० प्रतौ 'भासकालस्स' इति पाठः। २ प्रतिषु तस्सणहादीणं। इति पाठः।

एत्थंतरे तिपलिदोवमाउअमणुपालेमाणो ण कदा विउव्विदो। कुदो? तत्थ परिचत्तोरालियसरीरस्स विउव्वणप्पयमोरालियसरीरं गेण्णंतस्स केवलं तप्परिसदण-प्पसंगादो। ण चेदं विउव्वणसरीरं ओरालियं, विप्पडिसेहादो।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्भस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मच्छिदो[1] ॥४२६॥

जवमज्भं णाम अट्ठसमयपाओग्गजोगट्ठाणाणि। तेहिंतो उवरिमजोगट्ठाणेसु हेट्ठिमजोगट्ठाणेहिंतो असंखेज्जगुणेसु अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो[2]। किमट्ठं? बहुपोग्गल-ग्गहणट्ठं। तत्थ बहुअं कालं किण्ण अच्छदि? ण, अंतोमुहुत्तादो उवरि तत्थ अच्छणस्स संभवाभावादो। एदं कालदेसामासियसुत्तत्थपरूवणट्ठं[3]। एदमुवजोगजवमज्भस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छदि त्ति ण घेत्तव्वं किंतु तिण्णं पलिदोवमाणमब्भंतरे जदा जदा संभवदि तदा तदा जवमज्भस्स उवरि जोगट्ठाणेसु चेव परिणमदि त्ति घेत्तव्वं।

'एत्थंतरे' अर्थात् तीन पल्य प्रमाण आयुका पालन करते हुए कदाचित् विक्रिया नहीं की, क्योंकि औदारिकशरीरका त्याग कर विक्रियारूप औदारिकशरीरको ग्रहण करनेवालेके केवल उसकी निर्जरा होनेका प्रसंग आता है। यह विक्रियारूप शरीर भी औदारिक है ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि विक्रियारूप शरीरके औदारिक होनेका निषेध है।

जीवितव्य कालके स्तोक शेष रहनेपर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥४२६॥

आठ समयप्रायोग्य योगस्थानोंको यवमध्य कहते हैं। उससे अधस्तन योगस्थानोंसे असं-ख्यातगुणे उपरिम योगस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा।

शंका—वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक किसलिए रहा?

समाधान—बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए।

शंका—वहाँ बहुत काल तक क्यों नहीं रहता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि अन्तर्मुहूर्त कालसे अधिक कालतक वहाँ रहना सम्भव नहीं है।

काल देशामर्षक सूत्रके अर्थका कथन करनेके लिए यह वचन है। इससे उपयोगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त कालतक रहता है यह ग्रहण नहीं करना चाहिए। किन्तु तीन पल्यप्रमाण कालके भीतर जब जब सम्भव है तब तब यवमध्यके ऊपरके योगस्थानोंमें ही परिणमन करता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

१. ता० प्रतौ 'जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ (जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्भस्स) उवरिमंतोमुहुत्तत्थ (द्ध) मच्छिदो' अ०का०प्रत्योः 'जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ उवरिमंतोमुहुत्तत्थमच्छि दो' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'अंतोमुहुत्तत्थमच्छिदो' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ '-मुत्तत्थ (त्तमद्ध) परूवणट्ठं' इति पाठः।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ॥४२७॥

जाव चरिमजीवगुणहाणी तत्थ आवलियाए असंखे०भागमस्सिदूण ताव चरिम-जोगेहिंतो तत्थतणजोगाणमसंखेज्जगुणत्तादो। कालजवमज्झादो उवरि अच्छमाणेसु जदि चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे अच्छंताणं बहुदव्वलाहो होदि तो आवलि० असंखे०-भागं मोत्तूण तत्थ बहुकालं किण्ण अच्छाविदो? ण, तत्थ बहुकालमच्छणसंभवा-भावादो। एदं पि कालदेसामासियसुत्तं तेण कालमेत्तं मोत्तूण जवमज्झस्स उवरि-मच्छमाणो जाव संभवदि ताव चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे चेव अच्छदि त्ति भणिदं होदि।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥४२८॥

किमट्ठमेत्थ उक्कस्सजोगं णीदो? जोगवड्ढीदो पदेसबंधवड्ढी बहुगी होदि त्ति जाणावणट्ठं। दो समए मोत्तूण सव्वत्थ भवट्ठिदिम्मि उक्कस्सजोगं किण्ण णीदो?

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥४२७॥

क्योंकि जो अन्तिम जीवगुणहानि है वहाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका आश्रय लेकर अन्तिम योगसे वहाँके योग असंख्यातगुणे होते हैं।

शंका—कालयवमध्यके ऊपर रहनेवाले जीवोंमेंसे यदि अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें रहनेवाले जीवोंको बहुत द्रव्यका लाभ होता है तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालको छोड़कर वहाँ बहुत काल तक क्यों नहीं ठहराया?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहाँ बहुत काल तक रहना सम्भव नहीं है इसलिए वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालसे अधिक काल तक नहीं ठहराया।

यह भी कालदेशामर्षक सूत्र है, इसलिए मात्र कालकी विवक्षा न करके यवमध्यके ऊपर रहता हुआ जब तक सम्भव है तबतक अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें ही रहता है यह उक्त सूत्रके कथनका तात्पर्य है।

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४२८॥

शंका—यहाँ उत्कृष्ट योगको किसलिए प्राप्त कराया है?

समाधान—योगवृद्धिसे प्रदेशबन्धकी वृद्धि बहुत होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहाँ उत्कृष्ट योगको प्राप्त कराया है।

शंका—दो समयको छोड़कर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर उत्कृष्ट योगको क्यों नहीं प्राप्त कराया?

ण, उक्कस्सजोगेणं बिसमय-तिसमय-चदुसमयं मोत्तूण सव्वत्थ भवट्ठिदम्मि बहुकाल-परिणमणसत्तीए अभावादो। एदं भवदेसामासियसुत्तं। तेण एत्थ भवम्मि जाव संभवो अत्थि ताव उक्कस्सजोगं चेव गदो त्ति गेण्हियव्वं। एत्थ संकिलेसावासो किण्ण परूविदो? कालगदसमाणउजुगदीए पइज्जमाणाए कसायवड्ढि-हाणीहि कज्जाभावादो संकिलेसे संते ओलंबणकरणाकरणेण बहुणोकम्मपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो च।

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ॥४२९॥

तिरिक्खो मणुस्सो वा दाणेण दाणाणुमोदेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु उत्तर-कुरुदेवकुरुमणुस्सेसु आउअं बंधिदूण एवमेदेण कमेण कालगदसमाणो[2] उजुगदीए देवकुरु-उत्तरकुरुवेसु उववज्जिय पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सुववाद-जोगेण आहारिदूण तमाहारिदणोकम्मपदेसं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयमादिं कादूण जाव चरिमसमओ त्ति ताव गोवुच्छागारेण णिसिंचिय तदो विदियसमयप्पहुडि उक्कस्सेगंताणुवड्ढिजोगेण वड्ढमाणो अंतोमुहुत्तकालमसंखेज्जगुणाए सेडीए णोकम्मपदेस-माहारिदूण तिण्णं पलिदोवमाणं णिसिंचमाणो सव्वलहुं पज्जत्तीओ समाणिय परिणाम-

समाधान—नहीं, क्योंकि उत्कृष्ट योगके साथ दो समय, तीन समय और चार समयको छोड़कर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर बहुत काल तक परिणमन करनेकी शक्तिका अभाव है।

यह भवदेशामर्षक सूत्र है, इसलिए इस भवमें जब तक सम्भव है तब तक उत्कृष्ट योगको ही प्राप्त हुआ ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए।

शंका—यहां पर संक्लेशावासका कथन क्यों नहीं किया है?

समाधान—क्योंकि मर कर ऋजुगतिके प्राप्त होने पर कषायकी वृद्धि और हानिसे कोई प्रयोजन नहीं है और संक्लेशके सद्भावमें अवलम्बनाकरणके नहीं करनेसे बहुत नोकर्मपुद्गलोंके गलनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए यहां संक्लेशावासका ग्रहण नहीं किया है।

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुए उस जीवके औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र होता है ॥४२९॥

किसी तिर्यञ्च और मनुष्यने दान या दानके अनुमोदनसे तीन पल्यकी स्थितिवाले देवकुरु और उत्तरकुरुके मनुष्योंकी आयुका बन्ध किया। इस प्रकार इस क्रमसे मर कर ऋजुगतिसे देवकुरु और उत्तरकुरुमें उत्पन्न हुआ। पुनः प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट उपपाद योगसे आहार ग्रहण कर उन ग्रहण किये गये नोकर्मप्रदेशोंको तीन पल्यके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकारसे निक्षिप्त किया। फिर द्वितीय समयसे लेकर उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होता हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक असंख्यात-गुणित श्रेणिरूपसे नोकर्मप्रदेशोंको ग्रहण कर तीन पल्यप्रमाण कालमें निक्षिप्त किया। पुनः

१. ता०का०प्रत्योः 'णीदो? उक्कस्सजोगेण' इति पाठः। २. म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'बंधिदूण एदेण कालगदसमाणो' अ०का०प्रत्योः 'बंधिदूण एवमेदेण कालगदसमाणो' इति पाठः।

जोगम्मि णिवदिय सुत्तवुत्तविहाणेण आगंतूण चरिमसमयट्ठिदो उक्कस्सदव्वसामी होदि त्ति भावत्थो। विदिओ तस्से त्ति णिद्देसो ण णिप्फलो, तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जीवस्स जमोरालियसरीरं तस्सुक्कस्सयं पदेसग्गमिदि संबंधे कीरमाणे सहलत्तुवलंभादो।

एत्थ संचयाणुगमो भागहारपमाणाणुगमो समयपबद्धपमाणाणुगमो चेदि एदेहि तीहि अणियोगद्दारेहि उवसंहारो उच्चदे—तत्थ संचयाणुगमस्स परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि तिण्णि अणियोगद्दाराणि। परूवणदाए तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयसंचिददव्वं सामित्तचरिमसमए अत्थि। विदियसमयसंचिददव्वं पि अत्थि। एवं णेयव्वं जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमयसंचिददव्वं ति। परूवणा गदा। तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयसंचिददव्वं केत्तियमत्थि त्ति भणिदे एगसमयपबद्धस्स चरिमगोपुच्छमेत्तमत्थि। जं विदियसमयसंचिददव्वं तं सामित्तसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि। जं तदियसमए संचिददव्वं तं सामित्तसमए चरिम-दुचरिम-तिचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि। एवं गंतूण कम्मट्ठिदिचरिमसमयसंचिददव्वमेगसमयपबद्धमेत्तमत्थि। पमाणं गदं। अप्पाबहुअं पदेसविरयअप्पाबहुए परूविदं ति णेह वुच्चदे।

भागहारपमाणाणुगमे भण्णमाणे पढमसमए संचिदस्स भागहारो वुच्चदे—एगसमयपबद्धमसंखेज्जेहि लोगेहि खंडिदूण तत्थ एगखंडमेत्तं पढमसमयसंचिददव्वं होदि।

अतिशीघ्र पर्याप्तियोंको समाप्त करके और परिणामयोगको प्राप्त होकर सूत्रमें कही गई विधिसे आकर जो अन्तिम समयमें स्थित होता है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। सूत्रमें द्वितीय 'तस्स' पदका निर्देश निष्फल नहीं है, क्योंकि उस चरम समयवर्ती तद्भवस्थ जीवके जो औदारिकशरीर होता है उसके उत्कृष्ट प्रदेशाग्र होता है ऐसा सम्बन्ध करने पर उसकी सफलता उपलब्ध होती है।

यहाँ पर सञ्चयानुगम, भागहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्धप्रमाणानुगम इन तीन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर उपसंहारका कथन करते हैं। उनमेंसे संचयानुगमके प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं। प्ररूपणाका कथन करने पर तीन पल्यप्रमाण कालके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य स्वामित्वके अन्तिम समयमें है। द्वितीय समयमें संचित हुआ द्रव्य भी है। इस प्रकार तीन पल्यके अन्तिम समयमें संचित हुए द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। प्ररूपणा समाप्त हुई। तीन पल्यके प्रथम समयमें संचित द्रव्य कितना है ऐसा पूछने पर एक गोपुच्छके अन्तिम गोपुच्छप्रमाण है। जो दूसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छप्रमाण है। जो तीसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम, द्विचरम और त्रिचरम गोपुच्छप्रमाण है। इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें संचित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धप्रमाण है। प्रमाण समाप्त हुआ। अल्पबहुत्वका कथन प्रदेशविरच अल्पबहुत्वके समय कर आये हैं, इसलिए यहाँ नहीं करते।

भागहारप्रमाणानुगमका कथन करने पर प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यका भागहार कहते हैं – एक समयप्रबद्धमें असंख्यात लोकका भाग देकर वहाँ जो एक भागप्रमाण द्रव्य

असंखेज्जलोगाणमद्धेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं विदियसमय-संचिददव्वं होदि। पढमभागहारस्स तिभागेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे तदिय-समयसंचिददव्वं होदि। एवं गंतूण कम्मट्ठिचरिमसमए जं बद्धं कम्मं तस्स एगरूवं भागहारो होदि। तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए संचिददव्वं चरिमणिसेगमेत्तं होदु णाम विदियसमयसंचिददव्वं पुण चरिम-दुचरिमणिसेयमेत्तं ण होदि, तिण्णं पलिदोवमाण-मुवरि णिसेयरचणाभावादो। एवमुवरिमसमयपबद्धसंचिददव्वेसु वि एगादिएगुत्तर-कमेण णिसेगा ण संचिणंति त्ति परूवेदव्वं? एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा—तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए बद्धं णोकम्मं तं तेसिं चेव तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयमादिं कादूण जाव चरिमसमओ त्ति ताव गोवुच्छागारेण णिसिंचदि। जं विदियसमए बद्धं णोकम्मपदेसं तं विदियसमयप्पहुडिगोवुच्छागारेण णिसिंचमाणो ताव गच्छदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरिमसमओ त्ति। पुणो कम्मट्ठिदिचरिमसमए अप्पिदसमय-पबद्धस्स चरिमगोवुच्छं च णिसिंचदि, उवरि आउट्ठिदीए अभावादो। तदियसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं तदियसमयप्पहुडि णिसिंचमाणो ताव गच्छदि जाव दुचरिम-समओ त्ति। तदो चरिमसमए अप्पिदसमयपबद्धस्स चरिम-दुचरिम-तिचरिमगोवुच्छाओ णिसिंचदि। पुणो एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरिमसमए जं बद्धं णोकम्म-

प्राप्त हो वह प्रथम समयमें संचित द्रव्य है। असंख्यात लोकके कुछ कम अर्धभागका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर वहाँ जो एक भागप्रमाण द्रव्य प्राप्त हो वह द्वितीय समयमें संचित द्रव्य है। प्रथम भागहारके कुछ कम तृतीय भागका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर तीसरे समयमें संचित द्रव्य होता है। इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें जो बद्ध कर्म है उसका एक अंक भागहार होता है।

शंका—तीन पल्योंके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य अन्तिम निषेकप्रमाण होओ, किन्तु द्वितीय समयमें संचित द्रव्य चरम और द्विचरम निषेकप्रमाण नहीं होता, क्योंकि तीन पल्योंके ऊपर निषेकरचनाका अभाव है। इसी प्रकार उपरिम समयप्रबद्धोंमें संचित हुए द्रव्योंमें भी एकादि एक अधिक क्रमसे निषेकोंका संचय नहीं बन सकता ऐसा यहाँ कथन करना चाहिए?

समाधान—यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं। यथा—तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो बद्ध नोकर्म है उसे उन्हीं तीन पल्योंके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकार रूपसे निक्षिप्त करता है। जो दूसरे समयमें बद्ध नोकर्मप्रदेशाग्र है उसे दूसरे समयसे लेकर गोपुच्छाकार रूपसे निक्षिप्त करता हुआ तब तक जाता है जब तक तीन पल्योंका द्विचरम समय है। पुनः नोकर्मस्थितिके अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके अन्तिम गोपुच्छको निक्षिप्त करता है, क्योंकि ऊपर आयुस्थितिका अभाव है। तीसरे समयमें बद्ध जो नोकर्मप्रदेशाग्र है उसे तीसरे समयसे लेकर निक्षिप्त करता हुआ तब तक जाता है जब तक द्विचरम समय प्राप्त होता है। अनन्तर अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके चरम, द्विचरम और त्रिचरम गोपुच्छोंको निक्षिप्त करता है। पुनः इस प्रकार जाकर तीन पल्योंके द्विचरम समयमें जो बद्ध

पदेसग्गं तस्स पढमगोवुच्छं दुचरिमसमए णिसिंचदूण पुणो सेससव्वं दव्वं चरिमसमए णिसिंचदि। पुणो तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए जं बद्धं कम्मं तं सव्वं पुंजं कादूण चरिमसमए चेव णिसिंचदि। तेण कारणेण पुव्वुत्तभागहारपरूवणा जुज्जदे।

अण्णे के वि आइरिया एवं भणंति। जहा—गलिदसेसम्मि आउअम्मि सव्वे समयपबद्धा समयाविरोहेण णिसिज्जंति त्ति। तं जहा—तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं बद्धं कम्मं तं तम्हि चेव पढमसमए बहुगं णिसिंचदि। तत्तो उवरि विसेसहीणं णिसिंचदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। पुणो जं चरिमसमए णिसित्तं पदेसग्गं तस्स भागहारो असंखेज्जा लोगा होंति। जं तिण्णं पलिदोवमाणं विदिएसमए पबद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं विदियसमए बहुगं णिसिंचदि। तत्तो उवरि विसेसहीणं णिसिंचदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। संपहि जं चरिमसमए णिसित्तपदेसग्गं तस्स भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिमणिसेगस्स असंखे०भागेणब्भहियदुचरिमणिसेगस्स चरिमसमए उवलंभादो। तदियसमए जं संचिददव्वं तस्स वि भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिम-दुचरिमगोवुच्छाणमसंखे०भागेणब्भहियतिचरिमगोवुच्छमेत्तसंचयदंसणादो। एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरिमसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसग्गं तस्स अद्धं सादिरेयं दुचरिमसमए णिसिंचिदूण पुणो चरिमसमए अद्धं किंचूणं णिसिंचदि। पुणो जं चरिमसमए

नोकर्मप्रदेशाग्र है उसके प्रथम गोपुच्छको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः शेष द्रव्यको अन्तिम समयमें निक्षिप्त करता है। पुनः तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म है उसका पूरा पुंज बना कर उसे अन्तिम समयमें ही निक्षिप्त करता है। इसलिए पूर्वोक्त भागहारका कथन बन जाता है।

अन्य कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं। यथा—गल कर जो आयु शेष रही है उसके भीतर सब समयप्रबद्धोंको शास्त्र परिपाटीके अनुसार निक्षिप्त करते हैं। यथा—तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो बद्ध कर्म है उसके बहुभागको उसी प्रथम समयमें निक्षिप्त करता है। उससे आगेके समयोंमें नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है। पुनः जो प्रदेशाग्र अन्तिम समयमें निक्षिप्त हुआ है उसका भागहार असंख्यात लोकप्रमाण है। जो तीन पल्योंके दूसरे समयमें नोकर्मप्रदेशाग्र बँधा है उसमेंसे दूसरे समयमें बहुभाग निक्षिप्त करता है। उससे आगे नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है। अब जो अन्तिम समयमें निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि अन्तिम निषेकके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक द्विचरम निषेक अन्तिम समयमें पाया जाता है। तृतीय समयमें जो संचित द्रव्य है उसका भी भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि चरम और द्विचरम गोपुच्छोंके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक त्रिचरम गोपुच्छमात्रका संचय वहाँ देखा जाता है। इस प्रकार जाकर तीन पल्योंके द्विचरम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसके साधिक अर्धभागको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः अन्तिम समयमें कुछ कम

णिसित्तपदेसग्गं तस्स सादिरेयदोरूवाणि भागहारो होदि। जं चरिमसमए पबद्धं णोकम्मपदेसग्गं तस्स एगरूवं भागहारो होदि। एवं दोहि पयारेहि भागहार-परूवणा कदा।

संपहि पढमिल्लणिसेगोवदेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणाणुगमो वुच्चदे। तं जहा—चरिमसमए संचिदपदेसग्गमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, तत्थ वयाभावादो। दुचरिमसमए संचिदपदेसग्गं किंचूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढमणिसेगाभावादो। तिचरिमसमयसंचिदपदेसग्गं किंचूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढम-विदियणिसेगाभावादो। एवं गंतूण पढमसमयसंचिददव्वमेगसमयपबद्धस्स असंखे०भागो होदि, चरिमणिसेय-पमाणत्तादो। जेणेवं तेण सव्वमेदं दव्वं दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धपमाणं होदि। अंतोमुहुत्तमेत्तसमयपबद्धा होंति त्ति भावत्थो।

संपहि णिसेगस्स विदियमुवदेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणाणुगमं कस्सामो। तं जहा—तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए संचिदपदेसग्गं तमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, वयाभावादो। जं दुचरिमसमयसंचिददव्वं तमेगसमयपबद्धस्स किंचूणद्धं होदि, गलिदसादिरेयत्तादो। जं तिचरिमसमयसंचिददव्वं तं समयपबद्धस्स किंचूणति-भागमेत्तं होदि, गलिदसादिरेयवेत्तिभागत्तादो। एवं पलिदोवमेण जाणिदूण णेयव्वं

अर्धभागको निक्षिप्त करता है। पुन: अन्तिम समयमें जो निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका साधिक दो अंक भागहार होता है। तथा अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसका एक अंक भागहार होता है। इस तरह दो प्रकारसे भागहार प्ररूपणा की।

अब पहलेके निषेकोपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं। यथा—अन्तिम समयमें सञ्चित हुआ प्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि उसके व्ययका अभाव है। द्विचरम समयमें सञ्चित हुआ प्रदेशाग्र कुछकम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि अन्तमें इसके प्रथम निषेकका अभाव है। त्रिचरम समयमें सञ्चित हुआ प्रदेशाग्र कुछकम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि अन्तमें इसके प्रथम और द्वितीय निषेकका अभाव है। इस प्रकार जाकर प्रथम समयमें सञ्चित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है, क्योंकि अन्तमें उसका अन्तिम निषेकमात्र उपलब्ध होता है। यत: इस प्रकार है अत: यह सब द्रव्य डेढ़गुणहानिमात्र समयप्रबद्धप्रमाण होता है। अन्तर्मुहूर्तके जितने समय हैं उतने समयप्रबद्ध होते हैं यह उक्त कथनका भावार्थ है।

अब निषेकके द्वितीय उपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं। यथा—तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो प्रदेशाग्र सञ्चित हुआ है वह एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि उसके व्ययका अभाव है। जो द्विचरम समयमें सञ्चित हुआ द्रव्य है वह एक समयप्रबद्धका कुछकम अर्धभागप्रमाण होता है, क्योंकि इसका साधिक अर्धभाग गल चुका है। जो तृतीय समयमें सञ्चित द्रव्य है वह समयप्रबद्धका कुछ कम तृतीय भागमात्र होता है, क्योंकि इसके तीन भागोंमेंसे साधिक दो भाग गल चुके हैं। इस प्रकार पल्योपमके द्वारा जान

जाव तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयो त्ति। एत्थ संदिट्ठी—

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२

एत्थ एगगुणहाणिअद्धाणमेत्तमोदरिदूण बद्धपदेसग्गसंचयस्स भागहारो गुणहाणिमेत्तो गुणहाणिअद्धाणं पुण एत्थ संखेज्जावलियाओ तेणेदम्हि समकरणं कादूण मेलाविदे असंखेज्जा समयपबद्धा होंति। तं जहा—ताव चरिमेगगुणहाणिसंचयमस्सिदूण असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुप्पत्तिं भणिस्सामो—चरिमगुणहाणिपढमसमयसंचयस्स भागहारो एगगुणहाणी। तस्स पमाणमेदं १/३२। उवरिमसमयसंचिददव्वं जदि वि विसेसाहियं तो वि जाव चरिमगुणहाणीए अद्धमुवरि गच्छदि ताव समयं पडि संचिददव्वं चरिमगुणहाणिपढमसमयसंचएण सरिसं ति गहिदे एत्थंतरे जादसव्वसंचयसमूहो एगसमयपबद्धस्स अद्धं होदि। पुणो तदो उवरि एगगुणहाणीए चदुब्भागमेत्तअद्धाणस्स सव्वसंचयसमूहो वि एगसमयसमूहो त्ति एगसमयपबद्धस्स अद्धं होदि। एवमेगगुणहाणिअट्ठमभाग-सोलसभाग-बत्तीसभाग--चउसट्ठिभागादिउवरिम-

कर तीन पल्योंके प्रथम समय तक ले जाना चाहिए। यहाँ संदृष्टि—१, १/२, १/३, १/४, १/५, १/६, १/७, १/८, १/९, १/१०, १/११, १/१२, १/१३, १/१४, १/१५, १/१६, १/१७, १/१८, १/१९, १/२०, १/२१, १/२२, १/२३, १/२४, १/२५, १/२६, १/२७, १/२८, १/२९, १/३०, १/३१, १/३२। यहाँ पर एक गुणहानिअध्वानमात्र उतरकर बँधे हुए प्रदेशाग्रके संचयका भागहार गुणहानिप्रमाण होता है। परन्तु यहाँ पर गुणहानिअध्वान संख्यात आवलिप्रमाण है। इसलिए इसका समीकरण करके मिलाने पर असंख्यात समयप्रबद्ध होते हैं। यथा—पहले अन्तिम एक गुणहानिके सचयका अवलम्बन लेकर असंख्यात समयप्रबद्धोंकी उत्पत्तिका कथन करेंगे—अन्तिम गुणहानिके प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यका भागहार एक गुणहानि है। उसका प्रमाण यह है १/३२। उपरिम समयमें संचित हुआ द्रव्य यद्यपि विशेष अधिक होता है तो भी जब तक अन्तिम गुणहानिका अर्धभागप्रमाण ऊपर जाता है तब तक प्रत्येक समयमें संचित हुआ द्रव्य अन्तिम गुणहानिके प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यके समान है, इसलिए उसका ग्रहण करने पर इतने कालके मध्यमें जो सम्पूर्ण संचय होता है वह एक समयप्रबद्धका अर्धभागप्रमाण होता है। पुनः उसके ऊपर एक गुणहानिके चतुर्थ भागमात्र अध्वानका सब संचय समूह भी तथा एक समयका समूह भी एक समयप्रबद्धका अर्धभागप्रमाण होता है। इस प्रकार एक गुणहानिके आठवें भाग, सोलहवें भाग,

अद्धाणेसु एगेगसमयपबद्धस्स अद्धमद्धमुप्पज्जदि त्ति णादव्वं। एवमुप्पण्णसमयपबद्धस्स अद्धाणि संखेज्जावलियच्छेदणयमेत्ताणि होंति। ते च छेदणया असंखेज्जा, जहण्णपरीत्तासंखेज्जस्स अद्धच्छेदणएहि जहण्णपरीत्तासंखेज्जे गुणिदे आवलियच्छेदणयसलागुप्पत्तीदो। तम्हा असंखेज्जसमयपबद्धमेत्तो ओरालियसरीरपदेसग्गसंचओ होदि त्ति घेत्तव्वं। एवं दो वि उवदेसे अस्सिदूण असंखेज्जसमयपबद्धमेत्तपदेसग्गं होदि त्ति सिद्धं। णवरि पुव्विल्लउवदेसेण लद्धसमयपबद्धेहिंतो पच्छिल्लउवदेसेण लद्धसमयपबद्धा असंखेज्जगुणहीणा। एत्थ विदियउवदेसो ण घडदे, सामित्तसुत्तेण सह विरुद्धत्तादो। तं जहा—जदि विदियवियप्पो घेप्पदि तो जत्थ उदये दो समयपबद्धा गलंति तत्तो हेट्ठा चेव उक्कस्ससामित्तेण होदव्वं ण चरिमसमए, आयादो वयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। ण च एवं, सुत्तविरुद्धस्स वक्खाणत्तविरोहादो।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥४३०॥

एदम्हादो ओकड्डणवसेण एगपरमाणुम्हि फिट्टे अणुक्कस्सट्ठाणमुप्पज्जदि। एवं दो-तिण्णि-चत्तारिआदिकमेण ऊणं कादूण अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव एगविगलपक्खेवो परिहीणो त्ति। तदो एगजोगपक्खेवेण परिहीणजोगट्ठाणेण बंधाविय सरिसं कायव्वं। एवं जाणिदूण ओदारिय अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादे-

बत्तीसवें भाग और चौसठवें भाग आदि उपरिम अध्वानोंके जाने पर एक समयप्रबद्धका आधा आधा उत्पन्न होता है ऐसा यहां जानना चाहिए। इस प्रकार उत्पन्न हुए समयप्रबद्धके अर्धभाग संख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदप्रमाण होते हैं। और वे अर्धच्छेद असंख्यात हैं; क्योंकि जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतासंख्यातके गुणित करने पर एक आवलिके अर्धच्छेदोंकी शलाकाऐं उत्पन्न होती हैं। इसलिए औदारिकशरीरके प्रदेशाग्रका संचय असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार दोनों ही उपदेशोंका आश्रय लेकर असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण प्रदेशाग्र होता है यह सिद्ध हुआ। इतनी विशेषता है कि पहलेके उपदेशके अनुसार जो समयप्रबद्ध लब्ध आते हैं उनसे पिछले उपदेशके अनुसार लब्ध हुए समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं। इनमेंसे यहां पर द्वितीय उपदेश घटित नहीं होता, क्योंकि उसका स्वामित्व सूत्रके साथ विरोध आता है। यथा—यदि द्वितीय विकल्पको ग्रहण करते हैं तो जहां पर उदयमें दो समयप्रबद्ध गलते हैं उससे पूर्व ही उत्कृष्ट स्वामित्व होना चाहिए, अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व नहीं होना चाहिए, क्योंकि वहां द्वितीय उपदेशके अनुसार आयसे व्यय असंख्यातगुणा उपलब्ध होता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि जो सूत्रविरुद्ध हो उसके व्याख्यान होनेमें विरोध आता है।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है ॥४३०॥

पहले जो उत्कृष्ट प्रदेशाग्र कह आये हैं उसमेंसे अपकर्षण वश एक परमाणुके नष्ट होने पर अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार दो, तीन और चार आदि कम करके एक विकल प्रक्षेपके हीन होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए। अनन्तर एक योगप्रक्षेपसे हीन योगस्थानके द्वारा बन्ध कराकर सदृश करना चाहिए। इस प्रकार जानकर उतारते हुए जघन्य

दव्वाणि जाव जहण्णट्ठाणे त्ति ।

उक्कस्सपदेण वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४३१॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवस्स बावीससागरोवमट्ठिदियस्स ॥४३२॥

सम्मत्त-मिच्छत्तादीहि दव्वविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरस्स णिद्देसो कदो । हेट्ठिम-उवरिमदेवाणं णेरइयाणं च पडिसेहट्ठं आरणच्चुदकप्पवासियदेवणिद्देसो कदो । सव्वट्ठसिद्धिदेवेसु दीहाउएसु उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, णवगेवज्जादिउवरिमदेवेसु उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमणुवलंभादो । उक्कस्सजोगपरावत्तणवारा तत्थ पउरा ण लब्भंति त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । उवरि ओगाहणा दहरा त्ति तत्थ ण सामित्तं दिज्जदि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, जोगवसेण आगच्छमाणकम्मणोकम्मपोग्गलाणमोगाहणादो संखाविसेसाणुप्पत्तीदो । हेट्ठिमदेवेसु उक्कस्ससामित्तं

स्थानके प्राप्त होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४३१॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो बाईस सागरकी स्थितिवाला आरण और अच्युत कल्पवासी अन्यतर देव है ॥४३२॥

सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदिके निमित्तसे द्रव्य विशेष नहीं होता इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । अधस्तन और उपरिम देवोंका तथा नारकियोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'आरण और अच्युत कल्पवासी देव' पदका निर्देश किया है ।

शंका – दीर्घ आयुवाले सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया ?

समाधान – नहीं, क्योंकि नौ ग्रैवेयक आदि ऊपरके देवोंमे उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते ।

शंका – वहाँ उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

ऊपर अवगाहना ह्रस्व है, इसलिए वहाँ पर स्वामित्व नहीं देना चाहिए यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि योगके वशसे आनेवाले कर्म और नोकर्म पुद्गलोंकी अवगाहनाके कारण संख्याविशेष नहीं उत्पन्न होती ।

शंका – नीचेके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ दीहाउआभावादो। सत्तमपुढविणेरइएसु दीहाउएसु उक्कस्स-जोगेसु किण्ण दिज्जदे ? ण, तेसु संकिलेसबहुलेसु बहुणोकम्मणिज्जरदंसणादो। एक्कारससागरोवमसंचयादो संकिलेसेण गलमाणदव्वं बहुअमिदि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो। आरण-अच्चुददेवेसु सेसाउट्ठिदिपडिसेहट्ठं बावीससागरोवमट्ठिदिणिद्देसो कदो।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्स-जोगेण आहारिदो ॥४३३॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥४३४॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥४३५॥

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥४३६॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥४३७॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि।

णत्थि छविच्छेदा ॥४३८॥

समाधान—नहीं, क्योंकि वहाँ पर लम्बी आयुका अभाव है।

शंका—सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयु लम्बी होती है और उत्कृष्ट योग भी है, इसलिए वहाँ उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वे संक्लेशबहुल होते हैं, इसलिए उनमें बहुत नोकर्मोंकी निर्जरा देखी जाती है।

शंका—ग्यारह सागरके भीतर होनेवाले संचयसे संक्लेशवश गलनेवाला द्रव्य बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है।

आरण और अच्युत कल्पके देवोंमें शेष आयुका प्रतिषेध करनेके लिए 'बाईस सागरकी स्थितिवाले' पदका निर्देश किया है।

उसी देवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥४३३॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥४३४॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥४३५॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥४३६॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥४३७॥

ये सूत्र सुगम हैं।

उसके छविच्छेद नहीं होते ॥४३८॥

वेउव्वियसरीरस्स छेदभेदादीणमभावादो ।

अप्पदरं विउव्विदो ॥४३९॥

कुदो बहुविउव्वणाए बहुआणं परमाणुपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो ।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मच्छिदो ॥४४०॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ॥४४१॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥४४२॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्स-पदेसग्गं ॥४४३॥

एदेसि सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरम्मि परूवणा कदा तहा कायव्वा, विसेसाभावादो ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥४४४॥

एदं पि सुगमं ।

क्योंकि वैक्रियिकशरीरके छेदके भेद आदिक नहीं पाये जाते ।

उसने अल्पतर विक्रिया की ॥४३९॥

क्यों कि बहुत विक्रिया करनेसे बहुत परमाणुपुद्गलोंके गलन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है ।

जीवितव्यके स्तोक शेष रहने पर वह योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥४४०॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥४४१॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४४२॥

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुआ वह जीव वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४४३॥

इन सूत्रोंकी जिस प्रकार औदारिकशरीरके प्रसंगसे प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि कोई विशेषता नहीं है ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है ॥४४४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्कस्सपदेण आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४४५॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरसरीरं विउव्वियस्स ॥४४६॥

ओगाहणादीहि दव्वभेदो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरणिद्देसो कदो । पमादेण तत्थ आहारसरीरस्स उदओ णत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तगहणं कदं । असंजदपडिसेहट्ठं संजदग्गहणं कदं ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्स-जोगेण आहारिदो ॥४४७॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥४४८॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥४४९॥

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥४५०॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥४५१॥

णत्थि छविच्छेदा ॥४५२॥

थोवावसेसे णियत्तिदव्वए त्ति जोगजवमज्झट्ठाणाए मितद्ध-

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४४५॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाला जो अन्यतर प्रमत्तसंयत जीव है ॥४४६॥

अवगाहना आदिकी अपेक्षा द्रव्यभेद नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । प्रमादके होने पर वहाँ आहारकशरीरका उदय नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'प्रमत्त' पदका ग्रहण किया है । असंयतका प्रतिषेध करनेके लिए 'संयत' पदका ग्रहण किया है ।

उसी जीवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगद्वारा आहारको ग्रहण किया ॥४४७॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥४४८॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥४४९॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥४५०॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥४५१॥

छविच्छेद नहीं हैं ॥४५२॥

निवृत्त होनेके कालके थोड़ा शेष रह जाने पर योगयवमध्यस्थानके

मच्छिदो ॥४५३॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ॥४५४॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सं जोगं गदो ॥४५५॥

तस्स चरिमसमयणियत्तमाणस्स तस्स आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ॥४५६॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि। णवरि एसो पमत्तसंजदो आहारसरीरमुट्ठावेंतो अपज्जत्तकाले अपज्जत्तजोगं पडिवज्जदि त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा उक्कस्सियाए वड्ढीए आहारमिस्सद्धाए वड्ढणाणुववत्तीदो। किं च णिसेगरचणाए कीरमाणाए अवट्ठिद-सरूवेणेव णिसेगरचणा होदि ण गलिदसेसा। कथमेदं णव्वदे? आहारसरीरपरिसदण-कालस्स अंतोमुहुत्तपमाणपरूवणादो। ण च कालभेदेण विणा एक्कम्मि चेव समए णिमित्ताणमेगसमएण विणा अंतोमुहुत्तेण गलणं संभवदि, विरोहादो। सेसं सुगमं। एवं तिरिक्ख-मणुस्सेसु वेउव्वियसरीरस्स वि णिसेयरचणा वत्तव्वा, अण्णहा तत्थ परिसदणकालस्स अंतोमुहुत्तपमाणत्तविरोहादो।

ऊपर परमित काल तक रहा ॥४५३॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥४५४॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४५५॥

निवृत्त होनेवाला वह जीव अन्तिम समयमें आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४५६॥

ये सूत्र सुगम हैं। इतनी विशेषता है कि यह प्रमत्तसंयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करता हुआ अपर्याप्त कालमें अपर्याप्त योगको प्राप्त होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा उत्कृष्ट वृद्धिद्वारा आहारमिश्रकालके भीतर वृद्धि नहीं बन सकती। दूसरे निषेक रचना करने पर अवस्थितरूपसे ही निषेकरचना होती है, गलितशेष निषेकरचना नहीं होती।

शंका--यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान--क्योंकि आहारकशरीरकी निर्जरा होनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण कहा है।

यदि कहा जाय कि कालभेदके विना एक ही समयमें निक्षिप्त हुए प्रदेशोंका एक समयके बिना अन्तर्मुहूर्तमें गलना सम्भव है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है। शेष कथन सुगम है। इसी प्रकार तिर्यञ्चों और मनुष्योंमें वैक्रियिकशरीरकी भी निषेकरचना कहनी चाहिए, अन्यथा वहाँ पर क्षीण होनेका काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होनेमें विरोध आता है।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥४५७॥

सुगमं ।

उक्कस्सपदेण तेजासरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४५८॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स ॥४५९॥

ओगाहणादीहि पदेसग्गस्स विसेसाभावपदुप्पायणट्ठमण्णदरणिद्देसो कदो ।

जो जीवो पुव्वकोडाउओ अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि ॥४६०॥

जो जीवो पुव्वकोडउओ सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि सो तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमाणं पढमसमयपबद्धमेत्तचरिमसमओ त्ति ताव गोवुच्छागारेण णिसेगरचणं करेदि । जो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधंतो[1] ट्ठिदो

विशेषार्थ—यहाँ पर आहारकशरीरकी निषेक रचना गलित शेष न बतलाकर अवस्थितस्वरूप बतलाई है । इसका यह अभिप्राय है कि आहारकशरीरके उत्पन्न होनेके समयसे लेकर उसके समाप्त होने तकका जितना काल है, प्रत्येक समयमें निषेकरचना उतने समयप्रमाण होती है । मान लीजिए आहारकशरीरका अवस्थान काल आठ है तो प्रथम समयमें ग्रहण किये गये समयप्रबद्धके आठ निषेक होंगे । दूसरे समयमें ग्रहण किये गये समयप्रबद्धके भी आठ ही निषेक होंगे । एकसमय गल गया है, इसलिए आठ समयोंमेंसे एकसमय कम निषेकरचना नहीं होगी । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए । मनुष्य और तिर्यञ्च जो वैक्रियिकशरीर उत्पन्न करते हैं उसकी निषेकरचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है ॥४५७॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४५८॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो अन्यतर जीव है ॥४५९॥

अवगाहना आदिके द्वारा प्रदेशाग्रमें कोई विशेषता नहीं उत्पन्न होती इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अन्यतर' पदका निर्देश किया है ।

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव नीचे सातवीं पृथ्वीके नारकियोंके आयुकर्मका बन्ध करता है ॥४६०॥

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव सातवीं पृथ्वीके नारकियोंमें आयुकर्मका बन्ध करता है वह तैजसशरीरके छयासठसागरप्रमाण स्थितिके प्रथम समयप्रबद्धसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकाररूपसे निषेकरचना करता है । जो सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध

१. प्रतिषु 'बंधदि तो' इति पाठः ।

सो चेव तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि त्ति ण घेत्तव्वं किंतु जो पुव्वकोडाउओ जीवो पज्जत्तयदो उक्कस्सजोगो उवरि पुव्वकोडितिभागावसेसे सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअबंधक्खमो सो तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि त्ति वत्तव्वं, अण्णहा पुव्वकोडाउओ चेव बंधदि त्ति णियमस्स फलाभावादो। किमट्ठं पुव्वकोडाउओ चेव बंधाविज्जदि ? तत्थ उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमुवलंभादो। तं पि कुदो णव्वदे ? अंतोमुहुत्तं मोत्तूण विदियपुव्वकोडिणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो। जदि एवं तो पुव्वकोडिआउएसु चेव भमाडिय तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्ससंचओ किण्ण कीरदे ? ण, बहुवारं कालं कादूणुप्पज्जमाणस्स अपज्जत्तजोगेहि थोवदव्वसंचयप्पसंगादो। णेरइएसु दोहि पुव्वकोडीहि देसूणाहि ऊणतेत्तीससागरोवमाउअं बंधावेदव्वं, अण्णहा णेरइयचरिमसमए छावट्ठिसागरोवमाणं परिसमत्तिविरोहादो।

कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो ॥४६१॥

करता हुआ स्थित है वही तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए, किन्तु जो पूर्वकोटिकी आयुवाला पर्याप्त और उत्कृष्ट योगवाला जीव आगे पूर्वकोटिके त्रिभाग शेष रहनेपर सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध करनेमें समर्थ है वह तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। अन्यथा पूर्वकोटिकी आयुवाला बाँधता है इस प्रकारके नियम करनेका कोई फल नहीं रहता।

शंका—पूर्वकोटिकी आयुवाले जीवके ही तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध क्यों कराया है ?

समाधान—क्योंकि वहाँपर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे उपलब्ध होते हैं।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अन्यथा अन्तर्मुहूर्तको छोड़कर उससे भिन्न पूर्वकोटि पदका निर्देश नहीं बन सकता, इससे ज्ञात होता है कि उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे वहीं पर उपलब्ध होते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें ही भ्रमण कराकर तैजसशरीर नोकर्मका उत्कृष्ट संचय क्यों नहीं प्राप्त करते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि बहुत बार मरकर उत्पन्न होनेवाले जीवके अपर्याप्त योगोंके द्वारा स्तोक द्रव्यके संचयका प्रसंग प्राप्त होता है।

नारकियोंकी आयुका बन्ध कराते समय कुछ कम दो पूर्वकोटि कम तेतीस सागरप्रमाण आयुकर्मका बन्ध कराना चाहिए, अन्यथा नारकीके अन्तिम समयमें छयासठ सागरकी परिसमाप्ति होनेमें विरोध आता है।

वह क्रमसे मरा और नीचे सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न हुआ ॥४६१॥

कदलीघादेण विणा जीविदूण मुदो त्ति जाणावणट्ठं कमेण कालगदो[1] त्ति भणिदं। सत्तमाए पुढवीए अधो चेव होदि ण अण्णत्थे त्ति जाणावणट्ठं अधो णिद्देसो कदो। जत्थ आउअं बंधदि तत्थेव णियमेण उप्पज्जदि त्ति जाणावणट्ठं बिदियसत्तमपुढविग्गहणं कदं। सत्तमपुढवीए चेव किमट्ठं उप्पाइदो? ण, तत्थ संकिलेसेण बहुदव्वस्स उक्कड्डणुवलंभादो अण्णत्थ एवंविहसंकिलेसाभावादो। आउअपमाणणिद्देसो किण्ण कदो? तदाउअस्स देसूणत्तपदुप्पायणट्ठं।

तदो उवट्टिदसमाणो पुणरवि पुव्वकोडाउएसुववण्णो ॥४६२॥

पुणो पुव्वकोडीए किमट्ठमुप्पाइदो। ण, तत्थ उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमुवलंभादो। तं पि कुदो णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो।

तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो[2] कालगदसमाणो पुणरवि अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो ॥४६३॥

कदलीघादेण ओवट्टणाघादेण च विणा जीविदूण मुदो त्ति जाणावणट्ठं तेणेव

कदलीघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'कमेण कालगदो' पदका कथन किया है। सातवीं पृथिवी नीचे ही होती है अन्यत्र नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अधः' पदका निर्देश किया है। जहां की आयुका बन्ध करता है वहां ही नियमसे उत्पन्न होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए दूसरी बार सप्तम पृथिवी पदका ग्रहण किया है।

शंका—सातवीं पृथिवीमें ही क्यों उत्पन्न कराया है?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहां पर संक्लेशके कारण बहुत द्रव्यका उत्कर्षण उपलब्ध होता है। तथा अन्यत्र इस प्रकारका संक्लेश नहीं पाया जाता।

शंका—आयुके प्रमाणका निर्देश किसलिए नहीं किया?

समाधान—उसकी आयु कुछ कम होती है इस बातका कथन करनेके लिए आयुके प्रमाणका निर्देश नहीं किया है।

वहांसे निकलकर फिर भी पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ ॥४६२॥

शंका—पुनः पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें किसलिए उत्पन्न कराया है?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहां पर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे पाये जाते हैं।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है।

उसी क्रमसे आयुका पालन करके मरा और पुनः नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ ॥४६३॥

कदलीघात और अपवर्तनाघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके

१. ता०प्रतौ 'जाणावणट्ठं कालगदो' इति पाठः। २. का०प्रतौ 'तदो कालगदसमाणो' इत आरभ्य 'बिदियपुढवि–' इतः पूर्वं पाठो नास्ति।

कमेण आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं। विदियपुव्वकोडिचरिमसमए तेत्तीससागरोवमाणि समाणिय णेरइएसु तेत्तीसं सागरोवमट्ठिदिएसु उववण्णो त्ति भणिदं होदि[1]। संपहि तिसु वि अपज्जत्तद्धासु आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ॥४६४॥

एदेहि तीहि वि सुत्तेहि उववादजोगमाहप्पं जाणाविदं। विग्गहगदीए किण्ण उप्पाइदो? पज्जत्तकालवड्ढावणट्ठं ण उप्पाइदो।

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥४६५॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥४६६॥

तत्थ य भवट्ठिदिं तेत्तीससागरोवमाणि आउअमणुपालइत्ता ॥४६७॥

उक्कस्सदव्वं करेदि त्ति भणिदं होदि। सेसं सुगमं। दोसु पुव्वकोडीसु दोसु णिरयाउएसु च आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

लिए 'उसी क्रमसे आयुका पालन कर' यह पद कहा है। दूसरी पूर्वकोटिके अन्तिम समयमें तेतीस सागर समाप्त करके तेतीस सागरकी आयुवाले नारकियोमें उत्पन्न हुआ यह उक्त कथन का तात्पर्य है। अब तीनों अपर्याप्त कालोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवने उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥४६४॥

इन तीनों ही सूत्रोंके द्वारा उपपाद योगके माहात्म्यका ज्ञान कराया गया है।

शंका—विग्रहगतिमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया है?

समाधान—पर्याप्तका काल बढ़ानेके लिए नहीं उत्पन्न कराया है।

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥४६५॥

सबसे अल्प अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥४६६॥

वहां तेतीस सागर आयुप्रमाण भवस्थितिका पालन कर ॥४६७॥

वह उत्कृष्ट द्रव्यको करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। शेष कथन सुगम है। अब दो पूर्वकोटियोंमें और दो नारक आयुओंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

१. ता०प्रतौ 'आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं होदि' इति पाठः।

बहुसो बहुसो उक्कस्सियाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥४६८॥

एत्थ उक्कस्से त्ति उत्ते आदेसुक्कस्स-ओघुक्कस्साणं दोण्णं पि गहणं कायव्वं। किमट्ठमुक्कस्सजोगेसु हिंडाविज्जदि ? बहुपोग्गलग्गहणट्ठं।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि ॥४६९॥

संचिदपोग्गलाणमुक्कड्डणट्ठं। ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपोग्गलाणमुक्कड्डणा णत्थि। कधमेदं णव्वदे। तत्थ एदस्स सुत्तस्स अणुवदेसादो। पुणरवि आदेसुक्कस्सजोगविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एवं संसरिदूण थोवावसेसे जाविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो ॥४७०॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदो ॥४७१॥

दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्ससंकिलेसं गदो ॥४७२॥

बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है ॥४६८॥

यहां पर उत्कृष्ट ऐसा कहने पर आदेश उत्कृष्ट और ओघ उत्कृष्ट दोनों ही का ग्रहण करना चाहिए।

शंका—उत्कृष्ट योगवालोंमें किसलिए घुमाते हैं ?

समाधान—बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए।

बहुत बहुत बार विपुल संक्लेश परिणामवाला होता है ॥४६९॥

संचित हुए पुद्गलोंका उत्कर्ष करनेके लिए यह सूत्र आया है। औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके पुद्गलोंका उत्कर्ष नहीं होता।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि उन शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करते समय इस सूत्रका उपदेश नहीं दिया है।

अब फिर भी आदेश उत्कृष्ट योगविशेषका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

इस प्रकार परिभ्रमण करके जीवितव्यके स्तोक शेष रहने पर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक ठहरा ॥४७०॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥४७१॥

द्विचरम और त्रिचरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ ॥४७२॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥४७३॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स तेजइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ॥४७४॥

संपहि एत्थ उवसंहारे भण्णमाणे संचयाणुगमो भागहारपमाणाणुगमो समयपबद्धपमाणाणुगमो चेदि एदाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि होंति । एदेहि तिहि अणियोगद्दारेहि उवसंहारो उच्चदे । तं जहा—कम्मट्ठिदिपढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोकम्मपदेसग्गं तं सामित्तचरिमसमए[2] चरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि । जं कम्मट्ठिदिविदियसमए पबद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं सामित्तचरिमसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि । एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एवं संचयाणुगमो गदो । छावट्ठिसागरोवमाणं[3] पढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोकम्मपदेसग्गं तम्मि अंगुलस्स असंखे० भागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं कम्मट्ठिदिचरिमसमए अत्थि । तेजइयसरीरकम्मट्ठिदिअंतरणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तदिवड्ढगुणहाणीसु गुणिदासु भागहारो उप्पज्जदि त्ति भणिदं

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४७३॥

चरम समयवर्ती तद्भवस्थ वह जीव तैजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४७४॥

अब यहां पर उपसंहारका कथन करने पर संचयानुगम, भागाहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्धप्रमाणानुगम ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं। इन तीन अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर उपसंहारका कथन करते हैं। यथा—कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो तैजसशरीर नोकर्मप्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है, स्वामित्वके अन्तिम समयमें वह अन्तिम गोपुच्छमात्र शेष रहता है। जो कर्मस्थितिके द्वितीय समयमे नोकर्मप्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है वह स्वामित्वके अन्तिम समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छमात्र शेष रहता है। इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए। इस प्रकार संचयानुगमका कथन समाप्त हुआ। छयासठ सागरके प्रथम समयमें जो तैजसशरीर नोकर्मप्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है उसमें अङ्गुलके असंख्यातवें भाग का भाग देने पर एक खण्डमात्र कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें शेष रहता है। तैजसशरीर नोकर्मस्थिति अन्तर नानागुणहानि शलाकाओंका विरलन कर और विरलन राशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करने पर असंख्यात पल्य उत्पन्न होते हैं। पुनः इस अन्योन्याभ्यस्त राशिसे असंख्यात पल्योंके प्रथमवर्गमूलप्रमाण डेढ़ गुणहानियोंके गुणित करने पर भागहार

१. ता०प्रतौ 'तस्स पत्तेय (तेजइय) सरीरस्स' अ०का०प्रत्योः 'तस्स पत्तेयसरीरस्स' इति पाठः।
२. प्रतिषु 'सामित्त चरिमसमए' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ '-सागरोवमाणि (णं) इति पाठः।

होदि । एवं भागहारो जाणिदूण परूवेयव्वो जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एवं भागहारपरूवणा गदा । तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमसंचिदसव्वदव्वे समयपबद्धपमाणेण कदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा होंति । एवमुक्कस्सपदेस-परूवणा समत्ता ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥४७५॥

एत्थ ओकड्डुणं बंधं च अस्सिदूण अणंताणमणुक्कस्सट्ठाणाणं[1] परूवणा कायव्वा ।

उक्कस्सपदेण कम्मइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४७६॥

सुगमं ।

जो जीवो बादरपुढविजीवेसु वेहि सागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो ॥४७७॥

जहा वेदणाए वेदणीयं तहा णेयव्वं ॥४७८॥

जहा वेयणदव्वविहाणेण सामित्तपरूवणा कदा तहा एत्थ वि णिरवसेसा कायव्वा, विसेसाभावादो[2] । एवं पंचण्णं सरीराणं उक्कस्सं सामित्तं समत्तं ।

उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक भागहारका जानकर कथन करना चाहिए । इस प्रकार भागहारप्ररूपणा समाप्त हुई । तैजसशरीरके छ्यासठ सागरके भीतर संचित हुए सब द्रव्यका समयप्रबद्धके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानि मात्र समयप्रबद्ध होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशप्ररूपणा समाप्त हुई ।

उससे तद्व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है ॥४७५॥

यहाँ पर उत्कर्षण और बन्धका आश्रय लेकर अनन्त अनुत्कृष्ट स्थानोंका कथन करना चाहिए ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४७६॥

यह सूत्र सुगम है ।

जो जीव बादर पृथिवी जीवोंमें दो हजार सागर कम कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहा है वह कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४७७॥

यहाँ शेष वेदनामें वेदनीयका जिस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व कहा है उस प्रकार जानना चाहिए ॥४७८॥

जिस प्रकार वेदनद्रव्यविधानकी अपेक्षा स्वामित्वका कथन किया है उस प्रकार यहां पर समग्र कथन करना चाहिए, क्योंकि उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार पाँच शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन समाप्त हुआ ।

१. ता०प्रतौ 'मणुक्कस्सट्ठाण (ट्ठाणाणं) इति पाठः । २. अ०प्रतौ 'णिरवसेसा विसेसाभावादो' इति पाठः ।

जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४७९॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स ॥४८०॥

ओगाहणादीहि पदेसग्गस्स संखाकयभेदो णत्थि त्ति अण्णदरग्गहणं कदं। बादरणिगोदादिजीवपडिसेहट्ठं सुहुमणिगोदजीवणिद्देसो कदो। पज्जत्तपडिसेहट्ठं अपज्जत्त-ग्गहणं कदं। किमट्ठं सुहुमणिगोदअपज्जत्तेसु चेव जहण्णसामित्तं दिज्जदे? ण, सुहुमणिगोदअपज्जत्तजहण्णउववादजोगादो इदरेसिं जहण्णउववादजोगाणमसंखेज्जगुणत्तु-वलंभादो। तस्सेव सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स विसेसपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स ओरालियसरीरस्स जहण्णं पदेसग्गं ॥४८१॥

विदियादिसमयआहारयपडिसेहट्ठं पढमसमयआहारयस्स त्ति वुत्तं। किमट्ठं तप्पडिसेहो कीरदे? एयंताणुवड्ढिआदिजोगेहि आगच्छमाणबहुपोग्गलपडिसेहट्ठं।

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४७९॥

यह सूत्र सुगम है।

जो अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है ॥४८०॥

अवगाहना आदिकी अपेक्षा प्रदेशाग्रका संख्याकृत भेद नहीं है, इसलिए 'अन्यतर' पदका ग्रहण किया है। बादर निगोद आदि जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'सूक्ष्म निगोद जीव' पदका निर्देश किया है। पर्याप्तकोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'अपर्याप्त' पदका ग्रहण किया है।

शंका—सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें ही जघन्य स्वामित्व किसलिए दिया जाता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके जघन्य उपपाद योगसे दूसरे जीवोंके जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं। अब उसी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके विशेषणोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगसे युक्त वह जीव औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४८१॥

द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका निषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें आहारक हुआ' पद कहा है।

शंका—द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किसलिए करते हैं?

समाधान—एकान्तानुवृद्धि आदि योगोंके द्वारा आनेवाले बहुत पुद्गलोंका निषेध करनेके

विदिय--तदिय--चउत्थसमयतब्भवत्थपढमसमयआहारयाणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भवत्थस्से त्ति भणिदं। किमट्ठं विग्गहगदीए पडिसेहो कीरदे? ण विग्गहगदीए आगदाणं सव्वजहण्णउववादजोगासंभवादो। तं कुदो णव्वदे? पढमसमयतब्भवत्थस्से त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो। उववादजोगा असंखेज्जवियप्पा अत्थि तेसिं पडिसेहट्ठं जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥४८२॥

एदम्हादो वदिरित्तजहण्णदव्वं तमजहण्णं ति घेत्तव्वं।

जहण्णपदेण वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४८३॥

सुगमं।

अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णिपच्छायदस्स ॥४८४॥

असण्णिपच्छायदणिद्देसो किमट्ठं कीरदे? असण्णीहिंतो आगदस्सेव जहण्णुववादजोगो होदि ण अण्णस्से त्ति कीरदे।

लिए द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किया है।

द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ समयमें तद्भवस्थ हो कर प्रथम समयवर्ती आहारक होता है उसका निषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ' पद कहा है।

शंका—विग्रहगतिका प्रतिषेध किसलिए करते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके सबसे जघन्य उपपादयोगका होना असम्भव है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह सूत्र वचन अन्यथा बन नहीं सकता है। इससे जाना जाता है कि विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके जघन्य उपपादयोग नहीं होता।

उपपादयोगके असंख्यात विकल्प हैं उनका प्रतिषेध करनेके लिए 'जघन्य योगवालेके' यह वचन कहा है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र होता है ॥४८२॥

इससे व्यतिरिक्त जो जघन्य द्रव्य है वह अजघन्य है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

जघन्य पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४८३॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ जो अन्यतर देव और नारकी जीव है ॥४८४॥

शंका—'असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ' पदका निर्देश किसलिए करते हैं?

समाधान—असंज्ञियोंमेंसे आये हुए जीवके ही जघन्य उपपादयोग होता है अन्यके नहीं इसलिए उक्त पदका निर्देश करते हैं।

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥४८५॥

एत्थ जधा ओरालियसरीरस्स परूवणा कदा तथा कायव्वा। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जहण्णउववादजोगेण आगदएयसमयपबद्धत्तणेण भेदाभावादो।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥४८६॥

सुगमं।

जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४८७॥

सुगमं।

अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ॥४८८॥

सुगमं।

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥४८९॥

कथमाहारसरीरग्गहणस्स भवसण्णा ? न, पूर्वशरीरपरित्यागद्वारेणोत्तरशरीरोपादानस्य भवव्यपदेशात्। जदि आहारसरीरग्गहणं भवो होदि तो तत्थ अपज्जत्त-

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगवाला वह जीव वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४८५॥

यहाँ पर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिए, क्योंकि औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरमें जघन्य उपपादयोगसे आये हुए एक समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है। ॥४८६॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वमी कौन है ॥४८७॥

यह सूत्र सुगम है।

उत्तर विक्रियाकरनेवाला जो अन्यतर प्रमत्तसंयत जीव है ॥४८८॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगवाला वह जीव आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४८९॥

शंका—आहारकशरीरग्रहणकी भव संज्ञा कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहाँ पूर्वशरीरका त्याग होकर उत्तर शरीरका ग्रहण होता है, इसलिए इसकी भव संज्ञा है।

कालेण वि होदव्वं ? होदु णाम, आहारमिस्सकायजोगद्धाए तस्स अपज्जत्तभावब्भुवगमादो। जदि एवं तो भवस्स पढमसमए उववादजोगेण होदव्वं ? सच्चमेदं, इच्छिज्जमाणत्तादो। जदि एवं तो पमत्तसंजदस्स दो जीवसमासा पावेंति ? होदु एदं पिं, विरोहाभावादो। ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्मि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अपज्जत्तजीवसमासपडिसेहादो। सेसं सुगमं।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥४६०॥

एदं पि सुगमं।

जहण्णपदेण तेजासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४६१॥

सुगमं।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणयस्स जहण्णजोगिस्स तस्स तेयासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥४६२॥

शंका—यदि आहारकशरीरका ग्रहण भव है तो वहाँ पर अपर्याप्त काल भी होना चाहिए।

समाधान—होओ, क्योंकि आहारकमिश्रकाययोगके कालके भीतर उसका अपर्याप्तभाव स्वीकार किया गया है।

शंका—यदि ऐसा है तो भवके प्रथम समयमें उपपादयोग होना चाहिए ?

समाधान—यह कहना सत्य है, क्यों कि यह बात हमें इष्ट है।

शंका—यदि ऐसा है तो प्रमत्तसंयत जीवके दो जीवसमास प्राप्त होते हैं ?

समाधान—ऐसा भी होओ, क्योंकि इसमें कोई विरोध नहीं है। ऐसा मानने पर जीवस्थानसूत्रके साथ विरोध नहीं आता, क्योंकि वहाँ पर औदारिक शरीरके पर्याप्त होने पर ही संयम होता है, औदारिकशरीरके अपर्याप्त रहते हुए नहीं होता ऐसा मनमें विचार कर अपर्याप्त जीवसमासका निषेध किया है। शेष कथन सुगम है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥४६०॥

यह सूत्र भी सुगम है।

जघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४६१॥

यह सूत्र सुगम है।

एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाला और जघन्य योगसे युक्त जो अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है वह तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४६२॥

१. ता० प्रतौ 'एवं पि' इति पाठः।

जहा इदरेसिं सरीराणं जहण्णुववादजोगम्मि चेव एगसमयपबद्धं घेत्तूण जहण्ण-सामित्तं दिण्णं तहा तेयासरीरस्स किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ पुव्वसंचिदसमयपबद्धाणं संभवेण तेजासरीरस्स जहण्णभावाणुववत्तीदो । उवरि जहण्णएयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणस्स पदेसवड्ढी चेव होदि तदो एयंताणुवड्ढिअद्धाए अब्भंतरे[1] कथं जहण्णसामित्तं दिज्जदे ? ण एस दोसो, एयंताणुवड्ढिजोगेण आगच्छमाणपदेसग्गादो परिणामजोगेणागदसमय-पबद्धाणं गलमाणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । जदि एवं तो सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तं मोत्तूण अण्णेसिमेयंताणुवुड्ढीए जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण अण्णेसिं जहण्ण-एयंताणुवड्ढिजोगेहि सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगाणमसंखेज्जगुण-हीणत्तुवलंभादो । किं च सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु तेजइयसरीरणोकम्मउक्कस्सट्ठिदी छावट्ठिसागरोवममेत्ता, सुहुमेइंदिएसु पुण अंतोमुहुत्तमेत्ता, अणंतगुणहीणकसायत्तादो । पंचिंदियसमयपबद्धेहिंतो सुहुमेइंदियसमयपबद्धा असंखेज्जगुणहीणा, असंखेज्जगुणहीण-जोगत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु[2] पंचिंदियसमयपबद्धे गालिय तत्थ संचिदसमयपबद्धे परिणामजोगेणागदे अंतोमुहुत्तमेत्ते सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएयंताणुवड्ढिजोगकालम्मि

शंका—जिस प्रकार इतर शरीरोंका जघन्य उपपादयोगमें ही एक समयप्रबद्धको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व दिया है उस प्रकार तैजसशरीरका क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहाँ पर पूर्वसंचित समयप्रबद्ध सम्भव होने से तैजसशरीरका जघन्यपना नहीं बन सकता ।

शंका—ऊपर जघन्य एकान्तानुवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाले जीवके प्रदेशवृद्धि ही होती है, इसलिए एकान्तानुवृद्धिके कालके भीतर जघन्य स्वामित्व कैसे दिया जा सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि एकान्तानुवृद्धि योगके द्वारा आनेवाले प्रदेशाग्रसे परिणामयोगसे आये हुए समयप्रबद्धोंके गलनेवाले प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं ।

शंका—यदि ऐसा है तो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकको छोड़कर अन्य जीवोंके एकान्तानुवृद्धिके द्वारा जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अन्य जीवोंके जघन्य एकान्तानुवृद्धि योगसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन उपलब्ध होते हैं । दूसरे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति छ्यासठ सागरप्रमाण होती है परन्तु सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि उनके अनन्तगुणी हीन कषाय पाई जाती है । तथा पञ्चेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्धसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं, क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रियोके असंख्यातगुणा हीन योग पाया जाता है, इसलिए सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पञ्चेन्द्रियसम्बन्धी समयप्रबद्धोंको गलाकर वहाँ परिणामयोगसे आये हुए अन्तर्मुहूर्तप्रमाण संचित हुए समयप्रबद्धोंको सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके एकान्तानुवृद्धि योगकालके भीतर गलाकर एकान्तानुवृद्धियोगसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण समय-

१. ता०का०प्रत्योः '–अद्धाणं अब्भंतरे' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'अणंतगुणहीणकसायत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु' इति पाठः ।

गालिय अंतोमुहुत्तपमाणमेयंताणुवड्ढिजोगसमयपबद्धेसु गहिदेसु तेजासरीरस्स जहण्णदव्वं होदि त्ति वत्तव्वं । णिल्लेवणट्ठाणाणं पमाणमुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखे०भागो त्ति भणिदं तेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभागमेत्तसमयपबद्धाणं संचएण सामित्तचरिमसमए होदव्वमिदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति कम्मस्स परूविदत्तादो । ण च कम्म-णोकम्माणमेयत्तं, कारण-कज्जाणमेयत्तविरोहादो । तेजासरीरणोकम्मस्स जहण्णट्ठिदी एइंदियजीवसमासेसु सुहुमणिगोदअपज्जत्तएयंताणुवड्ढिकालादो थोवे त्ति कुदो णव्वदे ? अण्णदरस्से त्ति वयणादो । अण्णहा खविदकम्मंसियलक्खणेण सुहुमणिगोदेसु हिंडिदूण आगदो त्ति भणेज्ज ? ण च एवं, तदो णव्वदे जहण्णट्ठिदी एयंताणुवड्ढिकालादो थोवे त्ति ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥४६३॥

सुगमं ।

जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४६४॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखे-

प्रबद्धोंके ग्रहण करने पर तैजसशरीरका जघन्य द्रव्य होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए ।

शंका—निर्लेपनस्थानोंका उत्कृष्ट प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहा है, इसलिए स्वामित्वके अन्तिम समयमें कर्मस्थितिके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोंका संचय होना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं यह कर्मकी अपेक्षा कथन किया है । और कर्म तथा नोकर्म एक नहीं है, क्योंकि कारण और कार्यको एक होनेमें विरोध आता है ।

शंका—एकेन्द्रिय जीवसमासोंमें तैजसशरीर नोकर्मकी जघन्य स्थिति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके एकान्तानुवृद्धिकालसे स्तोक है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—'अन्यतरके' इस वचनसे जाना जाता है । अन्यथा क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे सूक्ष्म निगोद जीवोंमें घूमकर आया हुआ जीव ऐसा कहते । परन्तु ऐसा नहीं कहा है । इससे जाना जाता है कि जघन्य स्थिति एकान्तानुवृद्धिके कालसे स्तोक है ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥४६३॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४६४॥

यह सूत्र सुगम है ।

अन्यतर जो जीव सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पल्यका असंख्यातवां भाग कम

ज्जदिभागेण ऊणयं कम्मट्ठिदिमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति चरिमसमयभव-सिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स कम्मइयसरीरस्सं जहण्णयं पदेसग्गं ॥४९५॥

जहा वेयणाए जहण्णदव्वविहाणे परूविदं तहा परूवेयव्वं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥४९६॥

सुगमं ।

एवं पदमीमांसा समत्ता ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसग्गं ॥४९७॥

कुदो ? साभावियादो ।

वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥४९८॥

को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एसो चेव गुणगारो होदि त्ति कुदो णव्वदे ? पुव्वं परूविदगुणगाराणियोगद्दारादो ।

कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहा । इस प्रकार जैसे वेदना अनुयोगद्वारमें वेदनीयकर्मकी अपेक्षा कहा है वैसे जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जीवितव्यके स्तोक प्रमाणमें शेष रहने पर अन्तिम समयवर्ती भवसिद्ध हुआ वह अन्तिम समयवर्ती भवसिद्ध जीव कार्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥४९५॥

जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें जघन्य द्रव्यविधान प्ररूपणाके समय कहा है उस प्रकार कथन करना चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥४९६॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार पदमीमांसा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥४९७॥

क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

उससे वैक्रियिकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥४९८॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।
शंका—यह ही गुणकार होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?
समाधान—पूर्वमें कहे गये गुणकार अनुयोगद्वारसे जाना जाता है ।

१. ता०प्रतौ 'जादो तस्स कम्मइयसरीरस्स' इति पाठः ।

आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥४९९॥

को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो ।

तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥५००॥

को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥५०१॥

को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरपरूवणा समत्ता होदि ।

सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणियोगद्दाराणि-अविभागपलिच्छेदपरूवणा वग्गणपरूवणा फद्दयपरूवणा अंतरपरूपणा सरीरपरूवणा अप्पाबहुए त्ति ॥५०२॥

को विस्सासुवचओ णाम । पंचण्णं सरीराणं परमाणुपोग्गलाणं जे णिद्धादिगुणेहि तेसु पंचसरीरपोग्गलेसु लग्गा पोग्गला तेसिं विस्सासुवचओ त्ति सण्णा । तेसिं विस्सासुवचयाणं संबंधस्स जो कारणं पंचसरीरपरमाणुपोग्गलगओ णिद्धादिगुणो तस्स वि विस्सासुवचओ त्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो । एदेहि छहि अणियोग-

उससे आहारकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥४९९॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे तैजसशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥५००॥

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे कार्मणशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥५०१॥

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर शरीरप्ररूपणा समाप्त होती है ।

शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वार होते हैं— अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा और अल्पबहुत्व ॥५०२॥

शंका—विस्रसोपचय किसकी संज्ञा है ?

समाधान—पाँच शरीरोंके परमाणुपुद्गलोंके मध्य जो पुद्गल स्निग्ध आदि गुणोंके कारण उन पाँच शरीरोंके पुद्गलोंमें लगे हुए हैं उनकी विस्रसोपचय संज्ञा है । उन विस्रसोपचयोंके सम्बन्धका पाँच शरीरोंके परमाणु पुद्गलगत स्निग्ध आदि गुणरूप जो कारण है उसकी भी विस्रसोपचय संज्ञा है, क्योंकि यहां कार्यमें कारणका उपचार किया है ।

द्दारेहि बंधणगुणस्स परूवणा कीरदे । कारणे अवगदे तक्कारणाणुसारिस्स कज्जस्स वि अवगयादो ।

अविभागपडिच्छेदपरूवणदाए एक्केक्कम्मि ओरालियपदेसे केवडिया अविभागपडिच्छेदा ॥५०३॥

किं संखेज्जा किमसंखेज्जा किमणंता त्ति एदेण पुच्छा कदा ।

अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ॥५०४॥

को अविभागपडिच्छेदो णाम ? एगपरमाणुम्हि जा जहण्णिया वड्ढी[2] सो अविभागपडिच्छेदो णाम । तेण पमाणेण परमाणूणं जहण्णगुणे उक्कस्सगुणे वा छिज्जमाणे अणंताविभागपलिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता होंति ।

एवडिया अविभागपडिच्छेदा ॥५०५॥

जेत्तिया अविभागपडिच्छेदा एक्कक्कम्हि परमाणुम्हि विस्सासुवचयपरमाणू एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एगबंधणबद्धा तत्तिया चेव, कज्जस्स कारणाणुसारित्त-

अब इन छह अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर बन्धनगुणका कथन करते हैं, क्योंकि कारणका ज्ञान हो जाने पर उस कारणके अनुकूल कार्यका भी ज्ञान हो जाता है।

अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक औदारिक प्रदेशमें कितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥५०३॥

क्या संख्यात होते हैं, क्या असंख्यात होते हैं या क्या अनन्त होते हैं इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गई है।

अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते है ॥५०४॥

शंका—अविभागप्रतिच्छेद किसे कहते हैं ?

समाधान—एक परमाणुमें जो जघन्य वृद्धि होती है उसे अविभागप्रतिच्छेद कहते हैं।

उस प्रमाणसे परमाणुओंके जघन्य गुण अथवा उत्कृष्ट गुणका छेद करनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं।

इतने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥५०५॥

एक एक परमाणुमें जितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, एक एक परमाणुमें एक बन्धनबद्ध विस्रसोपचय परमाणु भी उतने ही होते हैं, क्योंकि कार्य कारणके अनुसार देखा जाता है।

१. अ०का०प्रत्योः '–पदेसा केवडिया' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'जो जहण्णिया वड्ढी' अ०का०प्रत्योः 'जा जहण्णियसड्ढी' इति पाठः ।

दंसणादो। एत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तं पडि सरिसत्तं, ण संखाए। कुदो? जहण्ण-अणुभागेण लग्गथोवविस्सासुवचयणिप्फण्णजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो[1] जहण्णाणु-भागादो अणंतगुणाणुभागेणागदविस्सासुवचयणिप्फण्णउक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। कथं विस्सासुवचयाणमविभागपडिच्छेदसण्णा? कज्जे कारणुव-यारादो। अविभागपडिच्छेदकज्जविस्सासुवयाणं पि तव्ववएससिद्धीए।

वग्गणपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ॥५०६॥

जहण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणाए अजहण्ण-अणुक्कस्सवग्गणाए अविभाग-पडिच्छेदाणं पमाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयाणमुवलंभादो।

एवमणंताओ वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-मणंतभागो[3] ॥५०७॥

एत्तियाओ वग्गणाओ घेत्तूण एगमोरालियसरीरट्ठाणं होदि। एवमसंखेज्जलोग-मेत्तसव्वट्ठाणाणं पत्तेयं पत्तेयं अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तवग्गणाओ होंति त्ति परूवेदव्वं। असंखेज्जलोगमेत्तसव्वजीवरासीसु अट्ठंकं पडि गुणगारसरूवेण

यहाँ पर सब जीवोंसे अनन्तगुणत्वकी अपेक्षा समानता है, संख्याकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि जघन्य अनुभागके कारण लगे हुए स्तोक विस्रसोपचयोंसे निष्पन्न जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणाकी अपेक्षा जघन्य अनुभागसे अनन्तगुणे अनुभागके कारण आये हुए विस्रसोपचयोंसे निष्पन्न उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग आता है।

शंका—विस्रसोपचयोंकी अविभागप्रतिच्छेद संज्ञा कैसे है?

समाधान—कार्यमें कारणका उपचार करनेसे अविभागप्रिच्छेदोंके कार्यरूप विस्रसोपचयोंकी वह संज्ञा सिद्ध होती है।

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा सब जीवोंसे अनन्तगुणे ऐसे अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है ॥५०६॥

यह जघन्य वर्गणा, उत्कृष्ट वर्गणा और अजघन्य अनुत्कृष्ट वर्गणाका प्रमाण है, क्योंकि सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु उपलब्ध होते हैं।

इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त वर्गणाएँ होती हैं ॥५०७॥

इतनी वर्गणाओंका आश्रय लेकर एक औदारिकशरीरस्थान होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण सब स्थानोंकी अलग अलग अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाएँ होती हैं ऐसा कथन करना चाहिए। अष्टांकके प्रति असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवराशियों

१ का०प्रतौ 'लग्गं थोवं' इति पाठः। २. अ०प्रतौ '-णिप्फण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'सिद्धाणमणंतभागा' इति पाठः।

पविट्ठासु वि वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव होंति, जहण्णवग्गणअविभागपडिच्छेदेहिंतो तत्थ जहण्णएगेगवग्गणाए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदुवलंभादो ।

फद्दयपरूवणदाए अणंताओ वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो तमेगं फद्दयं भवदि ॥५०८॥

एत्तियाहि चेव वग्गणाहि एगं फद्दयं होदि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । किं फद्दयं णाम ? जत्थ कमवड्ढी कमहाणी च दिस्सदि तं फद्दयं । को कमो ? पढमवग्गणादो विदियवग्गणा जत्तिएण वड्ढिदा तत्तियमेत्तेणेव अणंतरुवरिमवग्गणाए जा वड्ढी सो कमो णाम । जत्थ एसो कमो अत्थि तमेगं फद्दयं । एदम्हि कमे फिट्टे फद्दयंतरं होदि । एवं सव्वफद्दयाणं पि पत्तेयं पत्तेयं वत्तव्वं ।

एवमणंताणि फद्दयाणि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥५०९॥

एवडियाणि फद्दयाणि घेत्तूण एगेगमोरालियसरीरट्ठाणं होदि । एत्थ अणंत-

के गुणकाररूपसे प्रविष्ट होने पर भी वर्गणाएं अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही होती हैं, क्योंकि जघन्य वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे वहाँ पर जघन्य एक एक वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद सब जीवोंसे अनन्तगुणे उपलब्ध होते हैं ।

स्पर्धकप्ररूपणाकी अपेक्षा अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण जो अनन्त वर्गणाएं हैं वे मिलकर एक स्पर्धक होता है ॥५०८॥

शंका – इतनी ही वर्गणाएं मिलकर एक स्पर्धक होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका – स्पर्धक किसे कहते हैं ?

समाधान—जहाँ पर क्रमवृद्धि और क्रमहानि दिखाई देती है उसे स्पर्धक कहते हैं ।

शंका—क्रम क्या है ?

समाधान—प्रथम वर्गणासे द्वितीय वर्गणा जितने अविभागप्रतिच्छेदोंसे वृद्धिको प्राप्त हुई है उतने ही अविभागप्रतिच्छेदोंसे जो अनन्तर उपरिम वर्गणामें वृद्धि है वह क्रम है। जहाँ पर यह क्रम है वह एक स्पर्धक है । इस क्रमके बिगड़ने पर दूसरा स्पर्धक प्रारम्भ होता है । इस प्रकार सब स्पर्धकोंका अलग अलग कथन करना चाहिए ।

इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त स्पर्धक होते हैं ॥५०९॥

इतने स्पर्धकोंको मिला कर एक एक औदारिकशरीरस्थान होता है । यहाँ पर अनन्त-

१. ता०का०प्रत्योः 'अणंतगुण-सिद्धाण–' इति पाठः ।

भागवड्ढि--असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि--संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि- अणंत-गुणवड्ढीओ घेत्तूण एगं छट्ठाणं होदि। एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं। तेसिं परूवणाए कीरमाणाए जहा भावविहाणे परूविदं तहा परूवेदव्वं।

अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फड्डयस्स केवडियमंतरं ॥५१०॥

सुगमं।

सव्वजीवेहि अणंतगुणा। एवडियमंतरं ॥५११॥

एगेण दोहि[1] तीहि संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा अविभागपडिच्छेदेहि फड्डयंतरं ण णिप्पज्जदि किंतु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदेहि चेव फड्डयंतरं णिप्पज्जदि त्ति घेत्तव्वं। ट्ठाणंतरपरूवणा एत्थ किण्ण कदा? ण, फड्डयंतरे अवगदे ट्ठाणंतरस्स वि अवगमादो।

सरीरपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सरीरबंधणगुण-पण्णच्छेदणणिप्पण्णा ॥५१२॥

सरीरं सहावो सीलमिदि एयट्ठो। तस्स परूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा होंति त्ति पुव्वमविभागपडिच्छेदपरूवणाए परूविदं। ते कत्तो णिप्पण्णा त्ति पुच्छिदे

भागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि ये मिला कर एक षट्स्थान होता है। ऐसे असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। उनका कथन करने पर जिस प्रकार भावविधानमें कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए।

अन्तरप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर है ॥५१०॥

यह सूत्र सुगम है।

सब जीवोंसे अनन्तगुणा अन्तर है। इतना अन्तर है ॥५११॥

एक, दो, तीन, संख्यात और असंख्यात अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर स्पर्धकोंका अन्तर नहीं उत्पन्न होता है किन्तु सब जीवोंसे अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर ही स्पर्धकोंका अन्तर उत्पन्न होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका—यहाँ पर स्थानोंके अन्तरका कथन क्यों नहीं किया?

समाधान—नहीं, क्योंकि स्पर्धकोंके अन्तरका ज्ञान होने पर स्थानोंके अन्तरका भी ज्ञान हो जाता है।

शरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न हुए अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥५१२॥

शरीर, शील और स्वभाव ये एकार्थवाची शब्द हैं। उसकी प्ररूपणा करने पर अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ऐसा पहले अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाके समय

१. प्रतिषु 'एगेगदोहि' इति पाठः।

सरीरबंधणगुणपण्णच्छेदणणिप्पण्णा । अणंताणंतपोग्गलसमवाओ सरीरं । तेसिं पोग्गलाणं जेण गुणेण परोप्परं बंधो होदि सो बंधणगुणो णाम । तस्स गुणस्स पण्णच्छेदणेण बुद्धिच्छेदणेण णिप्पण्णा पुव्वुत्ता अविभागपडिच्छेदा होंति, गुणेसु अण्णच्छेदाणमसंभवादो । पण्णच्छेदणे त्ति वयणेण सेसणवण्णं छेदणाणं पडिसेहो कदो । ताओ सेसणवण्णाओ छेदणाओ त्ति वुत्ते तासिं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

छेदणा पुण दसविहा ॥५१३॥

छिद्यते पृथक्क्रियतेऽनेनेति छेदना । सा च दशविधा भवति संक्षेपेण । तासिं परूवणट्ठमुत्तरगाहासुत्तं भणदि—

णाम ट्ठवणा दवियं सरीरबंधणगुणप्पदेसा य ।
वल्लरि अणुत्तडेसु य उप्पइया पण्णभावे य ॥५१४॥

तत्थ सचित्त-अचित्तदव्वाणि अण्णेहिंतो पुध काऊण सण्णा जाणावेदि त्ति णामच्छेदणा । ट्ठवणा दुविहा सब्भावासब्भावट्ठवणभेदेण । सा वि छेदणा होदि, ताए अण्णेसिं दव्वाणं सरूवावगमादो । दवियं णाम उप्पाद-ट्ठिदि-भंगलक्खणं । तं पि छेदणा होदि, दव्वादो दव्वंतरस्स परिच्छेददंसणादो । ण च एसो असिद्धो, कुडवादो

कह आये हैं । वे किससे निष्पन्न होते हैं ऐसा पूछने पर वे शरीरबन्धके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न होते हैं यह कहा है । अनन्तानन्त पुद्गलोंके समवायका नाम शरीर है । उन पुद्गलोंका जिस गुणके कारण परस्पर बन्ध होता है उसका नाम बन्धनगुण है । उस गुणका प्रज्ञासे छेद करनेके कारण अर्थात् बुद्धिसे छेद करनेके कारण निष्पन्न हुए पूर्वोक्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, क्योंकि गुणोंमें अन्य किसी द्वारा छेदोंका होना सम्भव नहीं है । 'प्रज्ञाच्छेदन' इस वचन द्वारा शेष नौ प्रकारके छेदोंका निषेध किया है । वे नौ प्रकारके छेद कौनसे हैं ऐसा पूछने पर उनका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

परन्तु छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१३ ॥

छिद्यते अर्थात् जिसके द्वारा पृथक् किया जाता है उसकी छेदना संज्ञा है । वह संक्षेपमें दस प्रकारकी होती है । उसका कथन करनेके लिए आगेका गाथासूत्र कहते हैं—

नामछेदना, स्थापनाछेदना, द्रव्यछेदना, शरीरबन्धनगुणछेदना, प्रदेशछेदना, वल्लरिछेदना, अणुछेदना, तटछेदना, उत्पातछेदना और प्रज्ञाभावछेदना इसप्रकार छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१४ ॥

उनमेंसे सचित्त और अचित्त द्रव्योंको अन्य द्रव्योंसे पृथक् करके जो संज्ञाका ज्ञान कराती है वह नामछेदना है । स्थापना दो प्रकारकी है— सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना वह भी छेदना है, क्योंकि उस द्वारा अन्य द्रव्योंके स्वरूपका ज्ञान होता है । जो उत्पाद, स्थिति और व्ययलक्षणवाला है वह द्रव्य कहलाता है । वह भी छेदना है, क्योंकि द्रव्यसे दूसरे द्रव्यका ज्ञान होता हुआ

धण्णाणं तुलादो तगरादीणं दंडादो जोयणादीणं परिच्छेदुवलंभादो। पंचण्णं सरीराणं बंधणगुणो वि छेदणा णाम, पण्णाए छिज्जमाणत्तादो अविभागपडिच्छेदपमाणेण छिज्जमाणत्तादो वा। पदेसो वि छेदणा होदि, उड्ढाहोमज्झादिपदेसेहि सव्वदव्वाणं छेददंसणादो। कुडारादीहि अडइरुक्खादिखंडणं वल्लरिच्छेदो णाम। परमाणुगद-एगादिदव्वसंखाए[1] अण्णेसिं दव्वाणं संखावगमो अणुच्छेदो णाम। अथवा पोग्गला-गासादीणं णिव्विभागच्छेदो अणुच्छेदो णाम। दोहि वि तडेहिं[2] णदीपमाणपरिच्छेदो अथवा दव्वाणं सयमेव छेदो तडच्छेदो णाम। ण च पदेसच्छेदे[3] एसो पददि, तस्स बुद्धिकज्जत्तादो[4]। ण वल्लरिच्छेदे पददि, तस्स पउरुसेयत्तादो। णाणुच्छेदे पददि, परमाणु-पज्जंतच्छेदाभावादो। रत्तीए इंदाउह-धूमकेउआदीणमुप्पत्ती पडिमारोहो भूमिकंप-रुहिर-वरिसादओ च उप्पाइया छेदणा णाम, एतैरुत्पातैः राष्ट्रभङ्ग-नृपपातादितर्कणात्। मदि--सुद--ओहि--मणपज्जव--केवलणाणेहि छद्दव्वावगमो पण्णभावच्छेदणा णाम। एदासु दससु छेदणासु णव छेदणाओ अवणिय सरीरबंधणगुणच्छेदणाए गहणं कदं, अण्णच्छेदणेहि एत्थ कज्जाभावादो। ओरालियसरीरस्सेव अविभागपडिच्छेदादि-

देखा जाता है। यह असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि कुडव से धान्योंका, तुलासे तगर आदिका और दण्डसे योजन आदिका परिज्ञान होता हुआ उपलब्ध होता है। पाँच शरीरोंका बन्धनगुण भी छेदना है, क्योंकि उसका प्रज्ञाद्वारा छेद किया जाता है। या अविभागप्रतिच्छेदके प्रमाणसे उसका छेद किया जाता है। प्रदेश भी छेदना होती है, क्योंकि ऊर्ध्वप्रदेश, अधःप्रदेश और मध्यप्रदेश आदि प्रदेशोंके द्वारा सब द्रव्योंका छेद देखा जाता है। कुठार आदिके द्वारा जङ्गलके वृक्ष आदिका खण्ड करना वल्लरिछेदना कहलाती है। परमाणुगत एक आदि द्रव्योंकी संख्या-द्वारा अन्य द्रव्योंकी संख्याका ज्ञान होना अणुच्छेदना कहलाती है। अथवा पुद्गल और आकाश आदिके निर्विभाग छेदका नाम अणुच्छेदना है। दोनो ही तटोंके द्वारा नदीके परिमाणका परिच्छेद करना अथवा द्रव्योंका स्वयं ही छेद होना तटच्छेदना है। इसका प्रदेशछेदमें अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि वह बुद्धिका कार्य है। वल्लरिच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्यों कि वह पौरुषेय होता है। अणुच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि इसका परमाणु पर्यन्त छेद नहीं होता। रात्रिमें इन्द्रधनुष और धूमकेतु आदिकी उत्पत्ति तथा प्रतिमारोध, भूमिकम्प और रुधिरकी वर्षा आदि उत्पातछेदना है, क्योंकि इन उत्पातोंके द्वारा राष्ट्रभङ्ग और राजाका पतन आदिका अनुमान किया जाता है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवल-ज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंका ज्ञान होना प्रज्ञाभावछेदना है। यहाँ इन दस छेदनाओंमें से नौ छेद-नाओंको छोड़कर शरीरबन्धनगुणछेदनाका ग्रहण किया है; क्योंकि अन्य छेदनाओंसे यहां कोई प्रयोजन नहीं है।

शंका—यहां पर औदारिकशरीरके ही अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन किया है, शेष

१. ता॰प्रतौ 'परमाणुगम (द) एगादिदव्वसंखाए' अ॰का॰प्रत्योः 'परमाणुगमएगादिदव्वसंखाए' इति पाठः। २. ता॰प्रतौ 'वि त्तदी (तडे) हि' अ॰का॰प्रत्योः वि त्तदीहि' इति पाठः। ३. अ॰प्रतौ 'पदेसे छेदे' इति पाठः। ४. अ॰का॰प्रत्योः 'बुद्धिकयत्तादो' इति पाठः।

परूवणा कदा सेससरीराणं किण्ण कदा ? ण, एक्कस्स परूवणदाए कदाए तत्तो चेव सेसाणं सरूवावगमादो[1]। उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो च णव्वदे जहा सेसाणं पि सरीराणं एसेव परूवणा होदि त्ति। तेसिमविभागपडिच्छेदाणमभावे उवरिमअप्पाबहुआणुववत्तीए[2]।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा ॥५१५॥

ओरालियसरीरस्स अणंतपरमाणूणं अविभागपडिच्छेदसमूहो थोवो होदि। कुदो ? साभावियादो।

वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥५१६॥

को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥५१७॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

तेयासरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥५१८॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एकका कथन करने पर उसीसे शेषके स्वरूपका ज्ञान हो जाता है। तथा आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे भी जानते हैं कि शेष शरीरोंकी भी यही प्ररूपणा है। यदि उनके अविभागप्रतिच्छेद न हों तो आगे कहा जानेवाला अल्पबहुत्व नहीं बन सकता है।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं ॥ ५१५ ॥

औदारिकशरीरके अनन्त परमाणुओंके अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह स्तोक है, क्योंकि ऐसा स्वभाव है।

उनसे वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१६ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

उनसे आहारकशरीरके अविभाग प्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१७ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

उनसे तैजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१८ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

---

१. ता०प्रतौ 'सरूवागमादो' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-णुववत्ती [ए-]' अ०का०प्रत्योः '-णुववत्ती' इति पाठः।

कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥५१९॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एवं छहि अणियोगद्दारेहि बंधणगुणस्सेव परूवणा कदा । तत्थतणविस्सासुवचयाणं किण्ण परूवणा कीरदे ? ण, तक्कारण-परूवणाए कदाए तेसिं पि परूवणा कदा चेव होदि त्ति तेसिं पुध परूवणा ण कीरदे । तम्हा तेसिं विस्सासुवचयाणं पि एदं चेव अप्पाबहुअं परूवेदव्वं । ण च अविभाग-पडिच्छेदमेत्तविस्सासुवचएहि होदव्वं चेवे त्ति णियमो अत्थि, नावश्यं कारणानि कार्यवन्ति भवन्तीति न्यायात् । एवं सरीरविस्सासुवचयपरूवणा समत्ता ।

विस्सासुवचयपरूवणदाए एक्केक्कम्हि जीवपदेसे केवडिया विस्सासुवचया उवचिदा ॥५२०॥

एसा विस्सासुवचयपरूवणा पुणरुत्ता, सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए चेव विस्सा-सुवचयाणं परूविदत्तादो । तदो एसा ण परूवेदव्वा त्ति ? ण एस दोसो, सरीरभूद-पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए परूवणा कदा । संपहि एदीए विस्सासुवचयपरूवणाए जीवेण मुक्काणं पंचण्णं सरीराणं पोग्गलाण-

---

उनसे कार्मणशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१९ ॥

गुणाकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

शंका—इस प्रकार छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर बन्धनगुणकी ही प्ररूपणा की है । वहां रहनेवाले विस्रसोपचयोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं करते ?

समाधान–नहीं, क्योंकि उनके कारणकी प्ररूपणा करने पर उनकी भी प्ररूपणा की गई के समान होती है, इसलिए उनकी अलगसे प्ररूपणा नहीं करते हैं। इसलिए उन विस्रसोपचयोंकी अपेक्षा भी यही अल्पबहुत्व कहना चाहिए । और विस्रसोपचय अविभागप्रतिच्छेदप्रमाण होने ही चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि कारण नियमसे कार्यवाले नहीं होते हैं ऐसा न्याय है ।

इस प्रकार शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त हुई ।

विस्रसोपचयप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक जीवप्रदेश पर कितने विस्रसोपचय उपचित हैं ॥५२०॥

शंका—यह विस्रसोपचयप्ररूपणा पुनरुक्त है, क्योंकि शरीरविस्रसोपचय प्ररूपणाके समय ही विस्रसोपचयोंका कथन कर आये हैं, इसलिए इसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि शरीरभूत पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयका शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणाके समय कथन किया है। अब इस विस्रसोपचयप्ररूपणाके द्वारा जिन्होंने औदयिक भावको नहीं छोड़ा है और जो समस्त लोकाकाशके प्रदेशोंको व्याप्त कर

मच्चत्तओदइयभावाणं सव्वलोगागासपदेसमाऊरिय ट्ठियाणं विस्सासुवचयपरूवणा कीरदे, तदो पउणरुत्तियाभावादो परूवेदव्वा त्ति सिद्धं । एक्केक्कम्हि जीवपदेसे इदि उत्ते एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि त्ति घेतव्वं । कधं परमाणुस्स जीवपदेससण्णा ? आधेये आधारोवयारादो । ण च जीवादो अवेदाणमाधाराधेयभावो णत्थि, भूदपुव्वगदिणाएण तदुवलंभादो । जीव-पोग्गलाणमण्णोण्णाणुगयत्ते परमाणुस्स वि जीवपदेसववएसाविरोहादो वा । सेसं सुगमं ।

अणंता विस्सासुवचया उवचिदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ।५२१।

पंचण्णं सरीराणं एक्केक्को परमाणू जीवमुक्को वि संतो सव्वजीवे अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचएहि उवचिदो होदि । तेण कारणेण एदे धुवक्खंधसांतरणिरंतरवग्गणासु सरिसधणिया होदूण णिवदंति ।

ते च सव्वलोगागदेहि बद्धा ।५२२।।

किमट्ठमिदं सुत्तं वुच्चदे ?

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं ।
बंधइ जहुत्तहेऊ सादियमह अणादियं चेदि ।। २१ ।।

इदि वयणादो जम्हि पदेसे जो जीवो ट्ठिदो तत्थ ट्ठिदा चेव पोग्गला मिच्छत्तादि-

---

स्थित हैं ऐसे जीवके द्वारा छोड़े गये पाँच शरीरोंकी विस्रसोपचयप्ररूपणा करते हैं, इसलिए पुनरुक्त दोषका अभाव होनेसे उसका कथन करना चाहिए यह सिद्ध होता है।

एक एक जीवप्रदेश पर ऐसा कहने पर एक एक परमाणुपर ऐसा ग्रहण करना चाहिए

शंका—परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा कैसे है ?

समाधान—आधेयमें आधारका उपचार करनेसे परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा है। यदि कहा जाय कि जो जीवके द्वारा नहीं वेदे जा रहे हैं उनमें आधार-आधेयभाव नहीं बन सकता, सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि भूतपूर्व गतिन्यायके अनुसार आधार-आधेयभावकी उपलब्धि हो जाती है। अथवा जीव और पुद्गलोंके परस्परमें अनुगत होने पर परमाणुकी भी जीवप्रदेश संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शेष कथन सुगम है।

अनन्त विस्रसोपचय उपचित हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं ।।५२१।।

पाँच शरीरोंका एक एक परमाणु जीवसे मुक्त होकर भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयोंसे उपचित होता है, इसलिए ये ध्रुवस्कन्धसान्तरनिरन्तर वर्गणाओंमें समान धनवाले हो कर अन्तर्भावको प्राप्त होते हैं।

वे सब लोकमेंसे आकर बद्ध हुए हैं ।।५२२।

शंका—यह सूत्र किसलिए कहते हैं ?

समाधान—अपने अपने कहे गये हेतुके अनुसार कर्मके योग्य सादि अनादि और सब जीव प्रदेशोंके साथ एक क्षेत्रावगाहीपनेको प्राप्त हुआ पुद्गल बँधता है ।।२१।।

इस वचनके अनुसार जिस प्रदेश पर जो जीव स्थित है वहां स्थित जो पुद्गल हैं वे

पच्चएहि जहा पंचसरूवेण परिणमंति तहा विस्सासुवचया वि किं तत्थ ट्ठिदा चेव बंधमागच्छंति आहो णागच्छंति त्ति पुच्छिदे तण्णिण्णयत्थमिदं सुत्तमागयं । ते पंचसरीरक्खंधा सव्वलोगागदेहि विस्सासुवचएहि बद्धा होंति । सव्वलोगागासपदेसट्ठिया पोग्गला समीरणादिवसेण गदिपरिणामेण वा आगंतूण तेहि सह बंधमागच्छंति त्ति भणिदं होदि । अहवा एदस्स सुत्तस्स अण्णहा अवयारो कीरदे । तं जहा—ते पंचसरीरपोग्गला जीवमुक्का होदूण कत्थ अच्छंति त्ति वुत्ते तप्पदेसपरूवणट्ठमिदं सुत्तमागदं । सव्वलोगगदा णाम सव्वागासपदेसा, तेहि विरहिदआगासाभावादो । तेहि सव्वागासपदेसेहि ते बद्धा सह गदा होंति । पंचसरीरपोग्गला जीवमुक्कसमए चेव सव्वागासमावूरिदूण अच्छंति त्ति भणिदं होदि । संपहि तत्थ तेसिमवट्ठाणसरूवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं—

तेसिं चउव्विहाहाणी—दव्वाणी खेत्ताहाणी कालहाणी भावहाणी चेदि ॥५२३॥

तेसिं जीवादो विप्फट्टिय सव्वलोगं गदाणं चउव्विहाए हाणीए परूवणं कस्सामो, अण्णहा तव्विसयणिण्णयाणुववत्तीदो ।

मिथ्यात्व आदि कारणोंसे जिस प्रकार पाँच रूपसे परिणमन करते हैं उसी प्रकार वहाँ पर स्थित हुए ही विस्रसोपचय भी क्या बन्धको प्राप्त होते हैं या बन्धको नहीं प्राप्त होते हैं, इस प्रकार इस बातका निर्णय करनेके लिए यह सूत्र आया है ।

वे पाँचों शरीरोंके स्कन्ध समस्त लोकमेंसे आये हुए विस्रसोपचयोंके द्वारा बद्ध होते हैं । सब लोकाकाशके प्रदेशों पर स्थित हुए पुद्गल समीरण आदिके वशसे या गतिरूप परिणामके कारण आकर उनके साथ सम्बन्धको प्राप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अथवा इस सूत्रका अन्य प्रकारसे अवतार करते हैं । यथा—वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होकर कहाँ पर रहते हैं ऐसा पूछने पर उनके रहनेके प्रदेशका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । 'सव्वलोगागदा' इस पदका अर्थ सब लोकाकाशके प्रदेश हैं, क्योंकि उनसे रहित आकाशका अभाव है । आकाशके उन सब प्रदेशोंके साथ वे बद्ध हैं अर्थात् उनके साथ रहते हैं । पाँचों शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होनेके समयमें ही समस्त आकाशको व्याप्त कर रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब वहाँ उनके अवस्थानके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है—

उनकी चार प्रकारकी हानि होती है—द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि ॥५२३॥

जीवसे अलग हो कर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंका चार प्रकारकी हानिद्वारा कथन करते हैं, अन्यथा उस विषयका निर्णय नहीं हो सकता ।

दव्वहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५२४॥

जे ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा जीवादो विफट्टसमए चेव अण्णेहि परमाणूहि असंजुत्ता संता सव्वलोगमावूरिय द्विदा तेसिं गहिदसलागाओ बहुगाओ। बहुत्तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो। ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, विरोहादो। जीवादो पुधभूदाणं पंचसरीरपोग्गलाणमेसा परूवणा त्ति कुदो णव्वदे ? एयपदेसियवग्गणाए दव्वा बहुआ त्ति सुत्तादो। ण च पंचसरीरेसु जीवसहिदेसु एयपदेसियवग्गणाए दव्वमत्थि, अगहणाए गहणभावविरोहादो। अविरोहे वा अभेदो होज्ज, अणंताणंतपरमाणुसमुदयसमागमेण विणा ओरालियसरीरभावविरोहादो। ते च परमाणू अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कं उवचिदा, तत्थ अणंताणं बंधणगुणाविभागपलिच्छेदाणं संभवादो। ण च परमाणुम्हि ओदइयभावे[1] संते अणंताणंताणं बंधणगुणाविभागपलिच्छेदाणमभावो होदि, विरोहादो[2]।

द्रव्यहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी एकप्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे बहुत हैं जो कि अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५२४॥

जो औदारिकशरीरके नोकर्मप्रदेश जीवसे अलग होनेके समयमें ही अन्य परमाणुओंसे असंयुक्त होकर सब लोकको व्याप्त कर स्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकाएँ बहुत हैं।

शंका—इनका बहुत्व किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है। और एक प्रमाण अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है।

शंका—जीवसे पृथक् हुए पाँच शरीरोंके पुद्गलोंकी यह प्ररूपणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है।

समाधान—एकप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य बहुत हैं इस सूत्रसे जाना जाता है। और जीव सहित पाँच शरीरोंमें एकप्रदेशी वर्गणाका द्रव्य नहीं है, क्योंकि अग्रहण योग्य वर्गणाके ग्रहणभावके होनेमें विरोध आता है। यदि अविरोध माना जाता है तो अभेद हो जायगा, क्योंकि अनन्तानन्त परमाणुसमुदयसमागमके बिना उनके औदारिकशरीररूप होनेमें विरोध आता है।

वे परमाणु अलग अलग अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि उनमें बन्धनगुणके अनन्त अविभागप्रतिच्छेद सम्भव हैं। और परमाणुमें औदयिकभावके रहते हुए बन्धनगुणके अनन्तानन्त अविभागप्रतिच्छेदोंका अभाव नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होनेका विरोध है।

१. ता०प्रतौ 'ओदइए [हि] भावे' इति पाठः। २. का०प्रतौ 'बंधणगुणाविभागपडिच्छेदाणमभावो होदि विरोहादो' इति पाठः।

जे दुपदेसियवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५२५॥

जे ओरालियसरीरपदेसा जीवादो विफट्टसमए चेव दो दो अण्णोण्णबंधगया तेसिं ट्ठविदसलागाओ पुव्वसलागाहिंतो विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ? हेट्ठिमसलागाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणेण सिद्धाणमणंतभागेण खंडिदूण तत्थ एयखंडमेत्तेण । एसो वि दोण्हं परमाणूणं समुदयसमागमो अणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कमुवचिदो ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय--णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५२६॥

एत्थ तिपदेसिय-चउप्पदेसादिसु पादेक्कवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो[1] । अणंत-विस्सासुवचएहि उवचिदतिपदेसियवग्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । तत्तो अणंत-विस्सासुवचएहि उवचिदचदुप्पदेसियवग्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । एवं णेयव्वं

जो द्विप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं जो अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५२५॥

जो औदारिकशरीरके प्रदेश जीवसे अलग होते समय ही परस्परमें दो दो होकर बन्धको प्राप्त हैं उनकी स्थापित की गई शलाकाएं पूर्वकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं। कितनी हीन हैं ? अधस्तन शलाकाओंको अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाणसे भाजित कर वहां जो एक भाग लब्ध आता है उतनी हीन हैं। यह दो दो परमाणुओंका समुदयसमागम भी अलग अलग अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित है ।

इसी प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्त-प्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेषहीन हैं जो प्रत्येक अनंत विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५२६॥

यहां पर त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदिमें प्रत्येक वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता। अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित त्रिप्रदेशी वर्गणाशलाकाएं विशेष हीन हैं। उनसे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित चतुःप्रदेशी वर्गणाशलाकाएं विशेष हीन हैं। इस प्रकार अनन्त

१. ता०का०प्रत्योः सुत्तट्ठाणुववत्तीदो' इति पाठः ।

जाव अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदअणंताणंतपदेसियवग्गणाए दव्वे त्ति । सव्वत्थ एत्थ भागहारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । सो किमवट्ठिदो अणवट्ठिदो त्ति ण णव्वदे, गुरूवदेसाभावादो ।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं पंचविहा हाणी— अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी ॥५२७॥

एवमणंतभागहाणीए चेव[1] अणंताणि ट्ठाणाणि गंतूण तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पेसु गदेसु जो विही[2] तप्परूवणट्ठमेदं सुत्तमागदं । तत्थ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पे सेसे सलागाणं पंच हाणीओ होंति । तत्थ एक्केक्किस्से हाणीए अद्धाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । तं कुदो णव्वदे ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण पंच हाणीओ होंति त्ति वयणादो । अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं णिरुद्धट्ठाणादो गंतूण सलागाणं असंखेज्जभागहाणी होदि । तदो प्पहुडि असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं णिरंतरं गंतूण संखेज्जभागहाणी

विस्रसोपचयोंसे उपचित अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होने तक जानना चाहिए। यहा पर सर्वत्र भागहार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। वह क्या अवस्थित है या अनवस्थित है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि इस विषयमें गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता।

उसके बाद अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी पाँच प्रकार की हानि होती है—अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥५२७॥

इस प्रकार अनन्तभागहानिके द्वारा ही अनन्त स्थान जाकर उसके बाद अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके जाने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है। वहां अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके शेष रहने पर शलाकाओंकी पाँच हानियाँ होती है। उनमेंसे एक एक हानिका अध्वान अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर पाँच हानियाँ होती हैं इस वचनसे जाना जाता है।

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है। वहाँसे लेकर असंख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके

१. अ०प्रतौ '–भागहाणी चेव' इति पाठः। २ अ०का०प्रत्योः 'दव्ववियप्पेसु जो विही' इति पाठः।

होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण सलागाणं संखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जगुणहाणीए णिरंतरमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि असंखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति उवरि ण गच्छदि, दव्ववियप्पाभावादो त्ति भणिदं होदि । एदेसिं पि भागहाराणं पमाणमेत्तियमिदि ण णव्वदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागाणं चदुण्णं पि सरिसत्तमसरिसत्तं च ण णव्वदे, विसुट्ठुवएसाभावादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥५२८॥

जहा ओरालियसरीरस्स पंचविहा हाणी परूविदा तहा एदेसिं पि चदुण्णं[1] सरीराणं जीवादो विफट्टपोग्गलाणं पंचविहा हाणी परूवेयव्वा, विसेसाभावादो ।

खेत्तहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते बहुगा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५२९॥

जे जीवादो अवेदा ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा एगो वा दो वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा एगबंधणबद्धा होदूण एगागासपदेसे अच्छंति तेसिं ट्ठविद-

असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान निरन्तररूपसे जाकर संख्यातभागहानि होती है । वहाँसे लेकर संख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी संख्यातगुणहानि होती है । वहाँसे लेकर संख्यातगुणहानिद्वारा निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यातगुणहानि होती है । वहाँसे लेकर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने तक असंख्यातगुणहानि होती है । इससे आगे असंख्यात गुणहानि नहीं होती है, क्योंकि आगे द्रव्यविकल्पोंका अभाव है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इन भागहारोंका भी प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है । तथा चारों अंगुलके असंख्यातवें भागोंका भी प्रमाण सदृश है या असदृश है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥५२८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी पाँच प्रकारकी हानि कही है उसी प्रकार इन चार शरीरोंके भी जीवसे अलग हुए पुद्गलोंकी पाँच प्रकारकी हानि कहनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

क्षेत्रहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक प्रदेश क्षेत्रावगाही वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित है ॥५२९॥

जो जीवसे अबद्ध औदारिकशरीरनोकर्मप्रदेश है वे एक, दो, संख्यात, असंख्यात और अनन्त एकबन्धप्रबद्ध होकर एक एक आकाशप्रदेशमें स्थित हैं । उनकी स्थापित की गई

१. अ०प्रतौ० 'एदेसिं चदुण्णं' इति पाठः ।

सलागाओ। ते च पादेक्कमणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। एगपदेसियस्स पोग्गलस्स होदु णाम एगागासपदेसे अवट्ठाणं, कथं दुपदेसिय- तिपदेसिय-संखेज्जासंखेज्ज--अणंत-पदेसियक्खंधाणं तत्थावट्ठाणं ? ण, तत्थ अणंतोगाहणगुणस्स संभवादो। तं पि कुदो णव्वदे जीव-पोग्गलाणमाणंतियत्तण्णहाणुववत्तीदो।

जे दुपदेसियक्खेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५३०॥

जे जीवादो अवेदा संता ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधा दुपदेसियखेत्तमोगाहिदूण ट्ठिदा तेसिं गहिदसलागाओ पुव्विल्लसलागाहिंतो विसेसहीणाओ। केत्तियमेत्तेण ? अणंतरहेट्ठिमसलागाणमसंखेज्जदिभागेण। को पडिभागो। तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवपडिभागो। एदे वि अणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कमुवचिदा।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-पदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५३१॥

शलाकाएँ बहुत हैं। और वे प्रत्येक अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं।

शंका—एकप्रदेशी पुद्गलका एक आकाशप्रदेशमें अवस्थान होओ परन्तु द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कन्धोंका वहाँ अवस्थान कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहाँ अनन्तको अवगाहन करनेका गुण सम्भव है।

शंका—यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि एक आकाशप्रदेशमें अनन्तके अवगाहन करनेका गुण न हो तो जीवों और पुद्गलोंकी संख्या अनन्त नहीं बन सकती है।

जो द्विप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३०॥

जो जीवसे अवेद होते हुए औदारिकशरीरके नोकर्मस्कन्ध द्विप्रदेशी क्षेत्रका अवगाहन कर अवस्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकाएँ पहलेकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं। कितनी हीन हैं ? अनन्तर अधस्तन शलाकाओंके असंख्यातवें भागप्रमाण हीन हैं। प्रतिभाग क्या है ? तत्प्रायोग्य असंख्यात अङ्क प्रतिभाग है। ये प्रत्येक भी अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी और असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३१॥

एत्थ तियादिसु पादेक्कं पदेसियक्खेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो। तं जहा—तिपदेसियक्खेत्तो-गाढवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा असंखेज्जदिभागेण अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। चदुपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा असंखे०भागहीणा[1] अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा त्ति। एत्थ सव्वत्थ णिरंतरमसंखेज्जभागहाणी चेव ट्ठविदसलागाणं होदि त्ति घेत्तव्वं। एवं णिरंतरकमेण असंखेज्जभागहाणीए आगदसव्वद्धाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? आहार-तेजा-कम्मइयसरीरउक्कस्सवग्गणाणं पि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताए चेव ओगाहणाए उवलंभादो। खेत्तवियप्पाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागावसेसे असंखेज्जदि-भागहाणिस्स असंखेज्जदिभागे जो विही तप्परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी—असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज-गुणहाणी ॥५३२॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे—तदो तप्पाओग्गणिरुद्धट्ठाणादो असंखेज्जभागहाणीए

यहाँ पर प्रत्येक तीन आदि प्रदेशरूप क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए। यथा—त्रिप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं। विशेषका प्रमाण असंख्यातवाँ भाग है। ये अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। चतुःप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। इस प्रकार असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाहन करके स्थित हुए वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए। यहाँ पर सर्वत्र स्थापित की गई शलाकाओंकी निरन्तर असंख्यात भागहानि ही होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार निरन्तर क्रमसे असंख्यातभागहानिरूपसे आया हुआ सर्व अध्वान अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी उत्कृष्ट वर्गणाओंकी भी अवगाहना अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्ध होती है। अब क्षेत्र विकल्पोंके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहने पर असंख्यातभागहानिके असंख्यातवें भागमें जो विधि होती है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी हानि होती है—असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥५३२॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—उससे अर्थात् तत्प्रायोग्य निरुद्ध क्षेत्रसे असंख्यात-

१ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'असंखे-गुणहीणा' इति पाठः।

णिरंतरमंगुलस्स असंखे०भागं गंतूण सलागाणं संखेज्जभागहाणी होदि। तदो संखेज्ज-भागहाणीए उवरि णिरंतरमंगुलस्स असंखे०भागं गंतूण पुणो संखे०गुणहाणी[2] होदि। तदो संखेज्जगुणहाणीए उवरि णिरंतरमंगुलस्स असंखे०भागं गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि। तदो उवरि णिरंतरमसंखेज्जगुणहाणी अंगुलस्स[3] असंखे०भागं गच्छदि जाव खेत्त-वियप्पाणं पज्जवसाणे त्ति।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥५३३॥

जहा ओरालियसरीरस्स चउव्विहा खेत्तहाणी परूविदा तहा सेसचदुण्णं सरीराणं पि परूवेयव्वं, विसेसाभावादो।

कालहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे[4] एगसमयट्ठिदि-वग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा॥५३४॥

जे जीवादो अवेदा ओरालियणोकम्मपरमाणू एयसमयमोदइयभावेण अच्छिय विदियसमए पारिणामियभावं गच्छंति तेसिं ट्ठविदसलागाओ बहुगाओ ते च अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा, बंधणगुणस्स तत्थ अणंताविभागपडिच्छेदाणं संभवादो।

भागहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर संख्यातभागहानि होती है। फिर आगे संख्यातभागहानिके निरन्तर रूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर संख्यातगुणहानि होती है। फिर आगे संख्यातगुणहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर असंख्यातगुणहानि होती है। फिर आगे निरन्तररूपसे असंख्यातगुणहानि अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान होकर क्षेत्रविकल्पोंके समाप्त होनेतक जाती है।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी क्षेत्रहानि कहनी चाहिए ॥५३३॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी चार प्रकारकी क्षेत्रहानि कही है उसी प्रकार शेष चार शरीरोंकी भी कहनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

कालहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक समय स्थितिवाले वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३४॥

जो जीवसे अवेद औदारिकशरीरनोकर्मपरमाणु एक समय तक औदयिक भावरूपसे रह कर दूसरे समयमें पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं उनकी स्थापित की गई शलाकाएं बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि उनमें बन्धनगुणके अनन्त अविभाग-प्रतिच्छेद सम्भव हैं।

१. आ०प्रतौ '–हाणीए णिरंतर–' इति पाठः। २. म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'गंतूण संखे०-गुणहाणी' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ '–गुणहाणी [ए] असंखे०' अ०का०प्रत्योः 'गुणहाणीए असंखे०' इति पाठः। ४. अ०प्रतौ 'जो' इति पाठः।

जे दुसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सा-सुवचएहि उवचिदा ॥५३५॥

ते ओदइयभावेण दुसमयमच्छिदूण पारिणामियभावं गच्छंति ओरालियपोग्गला अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा तेसिं मेलाविदसलागाओ असंखेज्जभागहीणाओ। एत्थ भागहारो एत्तिओ त्ति ण णव्वदे।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्जसमय-ट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५३६॥

एत्थ तियादिसु सव्वत्थ समयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो। तं जहा—तिसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा दुसमयट्ठिदिदव्ववग्गणसलागाहिंतो असंखे०भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। चदुसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा तिसमयट्ठिदिदव्ववग्गणसलागाहि[1] असंखे०-भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। एवं णिरंतरं असंखे०भागहाणी वत्तव्वा जाव असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तट्ठाणाणि सेसाणि त्ति।

जो दो समय स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३५॥

जो औदयिकभावके साथ दो समय तक रहकर पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं वे औदारिक पुद्गल अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। उनकी मिलाकर इकट्ठी की गई शलाकाएँ असंख्यातभागहीन हैं। यहाँ पर भागहारका प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है।

इस प्रकार तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात और असंख्यात समय तक स्थित रहनेवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और प्रत्येक अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३६॥

यहाँ पर सर्वत्र तीन आदि समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए। यथा—तीन समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य दो समयकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाओंकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। चार समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य तीन समयकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन है और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंके शेष रहने तक निरन्तररूपसे असंख्यातभागहानि कहनी चाहिए।

१. ता०प्रतौ० 'दव्वा [तिसमयट्ठिदिदव्ववग्गण-] सलागाहि' अ०का०प्रत्योः 'दव्वा सलागाहि' इति पाठः।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी—असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज-गुणहाणी ॥५३७॥

असंखेज्जभागहाणिअद्धाणस्स असंखे०भागे अंगुलस्स असंखे०भागे सेसे जो विही तस्स परूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं। अप्पिदट्ठाणादो असंखे०भागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी[1] होदि। तदो संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि। पुणो संखेज्ज-गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि। तदो असंखे०गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण असंखे०गुणहाणी समप्पदि, उवरि दव्वाभावादो। अंगुलस्स असंखे०भागं गंतूण चउव्विहा हाणी होदि त्ति सुत्तादो च णव्वदे जहा जीवादो अवेदाणं चेव पोग्गलाणमेसा परूवणा त्ति, जीवसहिदाणं ओरालियसरीरादीणमंगुलस्स असंखे०भागमेत्तकालट्ठिदीए अभावादो।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥५३८॥

जहा ओरालियसरीरस्स परूवणा कदा तहा चदुण्णं सरीराणं परूवणा

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी हानि होती है—असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥५३७॥

असंख्यातभागहानि अध्वानके असंख्यातवें भागके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है। विवक्षित स्थानसे असंख्यात-भागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यातभागहानि होती है। पुनः संख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यातगुणहानि होती है। पुनः संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर असंख्यातगुणहानि होती है। पुनः असंख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जानेपर असंख्यातगुणहानि समाप्त होती है, क्योंकि इससे आगे द्रव्यका अभाव है। अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार प्रकारकी हानि होती है इस सूत्रसे जाना जाता है कि जीवसे अवेदरूप पुद्गलोंकी ही यह प्ररूपणा है, क्योंकि जीवसहित औदारिकशरीर आदिकी स्थिति अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक नहीं पायी जाती।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥५३८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा

---

१. ता०प्रतौ 'संखेज्जगुण (भाग) हाणी' इति पाठः।

कायव्वा, विसेसाभावादो ।

भावहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे[1] एयगुणजुत्त-वग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा[2] ॥५३९॥

एयगुणजुत्तवग्गणाए अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदाए दव्वा सलागाहि बहुआ। एत्थ सलागाहि त्ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो[3] । एयगुणं ति किं घेप्पदि ? जहण्णगुणस्स गहणं । सो च जहण्णगुणो अणंतेहि अविभागपडिच्छेदेहि णिप्पण्णो । तं कधं णव्वदे ? सो अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदो त्ति[4] सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । ण च एक्कम्हि अविभागपडिच्छेदे संते एगविस्सासुवचयं मोत्तूण अणंताणं विस्सासुवचयाणं तत्थ संभवो अत्थि, तेसिं संबंधस्स णिप्पच्चयत्तप्पसंगादो । ण च तस्स विस्सासुवचएहि बंधो वि अत्थि, जहण्णवज्जे त्ति सुत्तेण सह विरोहादो ।

जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५४०॥

करनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

भावहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५३९॥

अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी अपेक्षा बहुत हैं । यहाँ पर 'सलागाहि' पदका अध्याहार करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता है।

शंका—एक गुणसे क्या ग्रहण किया जाता है ?

समाधान—जघन्य गुण ग्रहण किया जाता है ।

वह जघन्य गुण अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

शंका – यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—वह अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह अनन्त अविभाग प्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

यदि कहा जाय कि एक अविभागप्रतिच्छेदके रहते हुए वहाँ केवल एक विस्रसोपचय न होकर अनन्त विस्रसोपचय सम्भव हैं सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसी अवस्थामें उनका सम्बन्ध बिना कारणके होता है ऐसा प्रसंग प्राप्त होता है । यदि कहा जाय कि उसका विस्रसोपचयोंके साथ बन्ध भी होता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि 'जघन्य गुणवालेके साथ बन्ध नहीं होता' इस सूत्रके साथ विरोध आता है ।

जो दो गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५४०॥

१. ता०प्रतौ 'जो' इति पाठः । २. अ०प्रतौ 'अचिदा' का०प्रतौ 'अवचिदा' इति पाठः । ३. प्रतिषु 'सुत्तट्ठाणुववत्तीदो' इति पाठः । ४. अ०का०प्रत्योः 'अचिदो त्ति' इति पाठः ।

जदि अणंतेहि अविभागपडिच्छेदेहि सहिदजहण्णगुणे एगगुणसद्दो वट्टदे तो दोसु[1] जहण्णगुणेसु दुगुणसद्देण पयट्टियव्वं, अण्णहा दुसद्दपउत्तीए अणुवलंभादो ? ण एस दोसो, जहण्णगुणस्सुवरि एगाविभागपडिच्छेदे वड्डिदे दुगुणभावदंसणादो। कथमेक्कस्सेव अविभागपडिच्छेदस्स विदियगुणत्तं ? ण, तेत्तियमेत्तस्सेव गुणंतरस्स दव्वंतरे वड्डिदंसणादो। गुणस्स[2] विदियो अवत्थाविसेसो विदियगुणो णाम। तदियो अवस्थाविसेसो तदियगुणो णाम। तेण जहण्णगुणेण सह दुगुण-तिगुणत्तमेत्थ जुज्जदे, अण्णहा दुगुणगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा त्ति सुत्तं होज्ज। ण च एवं, अणुवलंभादो। एवंविहदुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा सलागाहि पुव्वसलागाहिंतो अणंतभागहीणा। जहा पारिणामियभावेण ट्ठिदपरमाणुपोग्गलाणमेगपरमाणुसंबंधणिमित्तवग्गणगुणो संभवदि तहा एदेसिमोरालियसरीरपोग्गलाणं जीवादो अवेदाणं किण्ण संभवदि ? ण, मिच्छत्तादिपच्चएहि बज्झमाणसमए चेव सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणत्तेण वड्डिदबंधण-गुणाणमोरालियादिपरमाणूणं जीवमुक्काणं पि अचत्तओदइयभावाणमणंतबंधणगुण-स्सुवलंभादो।

शंका—यदि अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त जघन्य गुणमें 'एक गुण' शब्द प्रवृत्त रहता है तो दो जघन्य गुणोंमे 'दो गुण' शब्दकी प्रवृत्ति होनी चाहिए, अन्यथा 'दो' शब्दकी प्रवृत्ति नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर दो गुणभाव देखा जाता है।

शंका—एक ही अविभागप्रतिच्छेदकी द्वितीय गुण संज्ञा कैसे है ?

समाधान - क्योंकि मात्र उतने ही गुणान्तरकी द्रव्यान्तरमें वृद्धि देखी जाती है।

गुणके द्वितीय अवस्थाविशेषकी द्वितीय गुण संज्ञा है और तृतीय अवस्था विशेषकी तृतीय गुण संज्ञा है इस लिए जघन्य गुणके साथ द्विगुणपना और त्रिगुणपना यहाँ बन जाता है। अन्यथा 'द्विगुणगुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य' ऐसा सूत्र प्राप्त होगा। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि इस प्रकारका सूत्र उपलब्ध नहीं होता। इस प्रकार दोगुण युक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी दृष्टिसे पूर्वकी शलाकाओंसे अनन्तभागहीन हैं।

शंका—जिस प्रकार परिणामिकभावरूपसे स्थित हुए परमाणु पुद्गलोंमें एक परमाणुके सम्बन्धका निमित्तभूत वर्गणागुण सम्भव है उसप्रकार जीवसे अभेदरूप इन औदारिकशरीर पुद्गलोंमें क्यों सम्भव नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि मिथ्यात्व आदि कारणोंसे बन्ध होते समय ही जिनमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे बन्धनगुण वृद्धिको प्राप्त हुए हैं तथा जीवसे पृथक् होकर भी जिन्होंने औदायिकभावका त्याग नहीं किया है ऐसे औदारिक परमाणुओंमें अनन्त बन्धनगुण उपलब्ध होते हैं।

१. अ०का०प्रत्योः 'ते दोसु' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'वड्डिदंसण गुणस्स' इति पाठः।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंत-अणंताणंतगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५४१॥

तिगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ते विसेसहीणा त्ति एत्थ संबंधो पुव्वं व कायव्वो। एवं पादेक्कं भणिऊण णेयव्वं जाव सेचीयादो सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तभावट्ठाणाणि सेसाणि त्ति। किंतु एत्थ सव्वत्थ अणंतभागहाणी चेव।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं छव्विहा हाणी-

विशेषार्थ—यहां पर औदारिक शरीरकी एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्यसे दो गुणयुक्त वर्गणाका द्रव्य विशेषहीन बतलाया है। इस पर यह शंका की गई है कि जब कि एक गुणयुक्त वर्गणाका अर्थ एक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गणा न होकर अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त जघन्य वर्गणा है ऐसी अवस्थामें इससे एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदवाली वर्गणाके द्रव्यको दो गुणयुक्त कैसे कह सकते हैं, क्योंकि यहां पर दूने अविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि नहीं हुई है। वीरसेन स्वामीने इस शंकाका जो समाधान किया है उसका आशय यह है कि यहां पर जघन्य गुणको एक मान लिया है और उसपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर उसे दो गुणयुक्त कहा है, क्योंकि जघन्य गुणयुक्त द्रव्यसे भिन्न द्रव्यमें उतनी ही वृद्धि देखी जाती है। आगे तीन गुणयुक्त द्रव्यमें भी इसी प्रकार एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि जाननी चाहिए। यह पूछने पर कि यह अर्थ कैसे फलित किया गया है। वीरसेनस्वामी ने यह उत्तर दिया है कि सूत्रमें 'दुगुणजुत्त' पदको देखकर यह अर्थ फलित किया है। यदि सूत्रकारको जघन्य गुणसे दूना अर्थ इष्ट होता तो वे 'दुगुणजुत्त' पदके स्थानमें 'दुगुणगुणजुत्त' ऐसे पदका प्रयोग करते। पर उन्होंने जब ऐसे पदका प्रयोग न करके 'दुगुणजुत्त' पदका ही प्रयोग किया है। इससे ज्ञात होता है कि उन्हें जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि इष्ट है और उसे ही वे दुगुणजुत्त अर्थात् दो गुणयुक्त शब्द द्वारा व्यक्त कर रहे हैं। और यह मानना ठीक नहीं है कि यहां पर जघन्य गुणसे एक परमाणुमें सम्भव जघन्य गुण ले लिया जाय, क्योंकि मिथ्यात्व आदि कारणोंसे ये औदारिक शरीर की वर्गणाएं जीवके साथ बन्धको प्राप्त हुई हैं, इसलिए जीवसे अलग होनेपर भी इनमें एक परमाणुका गुण सम्भव नहीं हो सकता।

इसी प्रकार तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात, असंख्यात, अनन्त और अनन्तानन्त गुणयुक्त वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५४१॥

तीन गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं और वे विशेष हीन हैं इस प्रकार यहाँ पर पहलेके समान सम्बन्ध करना चाहिए। इसप्रकार सेचीयकी अपेक्षा सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान शेष रहने तक प्रत्येक स्थानका कथन करके ले जाना चाहिए। किन्तु यहाँ सर्वत्र अनन्तभागहानि ही होती है।

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी छह प्रकारकी

अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्ज-गुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी ॥५४२॥

अप्पिदट्ठाणादो अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण सलागाणमसंखेज्जभागहाणी होदि। तदो असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०-भागमेत्तमद्धाणं उवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी होदि। तदो संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि। तदो संखेज्ज-गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि। तदो असंखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण अणंतगुणहाणी होदि। पुणो अणंतगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण ट्ठाणाणि समप्पंति।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥५४३॥

जहा ओरालियसरीरस्स परूविदं तहा सेससरीराणं पि परूवेयव्वं, विसेसा भावादो। संपहि जीवादो अवेदाणं पंचसरीरपोग्गलाणं विस्सासुवचयस्स माहप्प--परूवणट्ठं उवरिममप्पाबहुअं भणदि—

ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सा-

हानि होती है—अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यात-गुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि ॥५४२॥

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है। फिर वहाँसे आगे असंख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातभागहानि होती है। पुनः वहाँसे आगे संख्यात-भागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातगुणहानि होती है। पुनः वहाँसे आगे संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यात-गुणहानि होती है। पुनः वहाँसे आगे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर अनन्तगुण-हानि होती है। पुनः अनन्तगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान आगे जाकर स्थान समाप्त होते हैं।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा प्ररूपणा करनी चाहिए ॥५४३॥

जिसप्रकार औदारिक शरीरका कथन किया है उसी प्रकार शेष शरीरोंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि उससे यहाँ पर कोई विशेषता नहीं है।

अब जीवसे अवेदरूप पाँच शरीरपुद्गलोंके विस्रसोपचयके माहात्म्यका कथन करनेके लिए आगेका अल्पबहुत्व कहते हैं—

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक

सुवचओ थोवो ॥५४४॥

ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदं ति वुत्ते जीवादो अवेदो एगो ओरालियपरमाणू घेत्तव्वो, तस्स विस्सासुवचओ थोवो अप्पे त्ति भणिदं होदि।

तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४५॥

तस्सेव एगोरालियपरमाणुस्स उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो, एगपरमाणु-जहण्णबंधणगुणादो तत्थेव उक्कस्सबंधणगुणस्स अणंतगुणत्तदंसणादो। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४६॥

ओरालियसरीरपरमाणूणं जीवादो पुधभूदाणं सव्वुक्कस्सो समुदयसमागमो ओरालियसरीरुक्कस्सं णाम। तस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४७॥

है ॥५४४॥

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्यपद ऐसा कहनेपर जीवसे अवेदरूप एक औदारिक परमाणु ग्रहण करना चाहिए। उसका विस्रसोपचय स्तोक अर्थात् अल्प है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४५॥

उसी एक औदारिक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है, क्योंकि एक परमाणुके जघन्य बन्धनगुणसे वहीं पर उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा देखा जाता है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोचय अनन्तगुणा है ॥५४६॥

जीवसे पृथग्भूत औदारिकशरीर परमाणुओंका सबसे उत्कृष्ट समुदयसमागम उत्कृष्ट औदारिकशरीर कहलाता है। उसका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४७॥

कुदो ? उक्कस्सदव्वजहण्णबंधणगुणादो तस्सेव उक्कस्सबंधणगुणस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरस्स ॥५४८॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णचदुहि पदेहि अप्पाबहुअं परूविदं तहा एदेसिं चदुण्णं पि सरीराणं परूवेयव्वं। एदेण सत्थाणप्पाबहुअपरूवणा कदा होदि। संपहि परत्थाणप्पाबहुअपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४९॥

पुव्वसुत्तादो वेउव्वियसरीरस्से त्ति अणुवट्टदे। तेणेवं पदसंबंधो कायव्वो। तं जहा—ओरालियउक्कस्सपदेसग्गउक्कस्सविस्सासुवचयादो वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। जहण्णे त्ति उत्ते जीवादो पुधभूदेगवेउव्वियपरमाणू घेत्तव्वो। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। कुदो ? साभावियादो।

तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५५०॥

क्योंकि उत्कृष्ट द्रव्यके जघन्य बन्धनगुणसे उसीका उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा उपलब्ध होता है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

इसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी अपेक्षा जानना चाहिए ॥५४८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे भेदको प्राप्त हुए चार पदोंके द्वारा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार इन चार शरीरोंका भी कहना चाहिए। इसके द्वारा स्वस्थान अल्पबहुत्वप्ररूपणा की गई है। अब परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४९॥

पूर्वके सूत्रसे 'वैक्रियिकशरीर' पदकी अनुवृत्ति होती है। इसलिए इस प्रकार सम्बन्ध करना चाहिए। यथा—औदारिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रके उत्कृष्ट विस्रसोपचयकी अपेक्षा जघन्य वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। जघन्य ऐसा कहनेपर जीवसे अलग हुए वैक्रियिकशरीरका एक परमाणु लेना चाहिए। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि ऐसा स्वभाव है।

उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५५०॥

तस्सेव वेउव्वियएगपरमाणुस्स उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५५१॥

वेउव्वियपरमाणूणं जीवादो पुधभूदाणमुक्कस्सो समुदायसमागमो उक्कस्सं णाम। तस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ एगपरमाणुउक्कस्सविस्सासुवचयादो अणंतगुणो । एत्थ गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५५२॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो ? साभावियादो । एदेसिं सुत्ताणमावत्तिं कादूण उवरिमसरीराणमप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा—वेउव्वियसरीरउक्कस्सविस्सासुवचयादो आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तेजासरीरस्स[1] जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे

उसी वैक्रियिकशरीरके एक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

उसी उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५५१॥

जीवसे अलग हुए वैक्रियकशरीरके परमाणुओंके समुदयसमागमको उत्कृष्ट कहते हैं। उसका जघन्य विस्रसोपचय एक परमाणुके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे अनन्तगुणा है। यहाँ पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५५२॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि ऐसा होना स्वाभाविक है। अब इन सूत्रोंका आवृत्ति करके आगेके शरीरोंका अल्पबहुत्व कहते हैं। यथा—वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे जघन्य आहारकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। जघन्य तैजसशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी

१. अ०का०प्रत्योः 'जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तेजासरीरस्स' इति पाठः ।

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स[1] उक्कस्सपदे उक्कस्सओ[2] विस्सासुवचओ अणंतगुणो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। सव्वत्थ गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एदमप्पाबहुगं बाहिरवग्गणाए पुधभूदं ति काऊण के वि आइरिया जीवसंबद्धपंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्सुवरि परूवेंति तण्ण घडदे, जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो च। तम्हा सव्वत्थोवो ओरालियस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो?

जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। जघन्य कार्मणशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। सर्वत्र गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। यह अल्पबहुत्व बाह्य वर्गणासे पृथग्भूत है ऐसा मानकर कितने ही आचार्य जीवसम्बद्ध पांच शरीरोंके विस्रसोपचयके ऊपर कथन करते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि ऐसा मानने पर जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है तथा उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। इसलिए जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक होकर भी अनन्तगुणा है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। वैक्रियिकशरीरके

१ अ०का० प्रत्योः 'जहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। उक्कस्सयस्स' इति पाठः। २ अ० प्रतौ 'उक्कस्सयस्स उक्कस्सओ' इति पाठः।

सेढीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्क० जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजासरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुव-चओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । तस्सेव[1] उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि

जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवे भागप्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ? गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ?

१. अ०का०प्रत्योः 'अणंतगुणो तस्सेव' इति पाठः ।

अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति। *जीवसहियाणं पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स एदेण* अप्पाबहुएण होदव्वं, अण्णहा सचित्त-अचित्तवग्गणाणं गुणगारेण सह विरोहादो। जीवसहियाणं विस्सासुवचयस्स जहा अप्पाबहुअं परूविदं तहा जीवादो पुधभूदाणं विस्सासुवचयस्स किण्ण वुच्चदे? ण, जीवादो पुधभावेण णट्ठपुव्विल्लबंधणगुणाणं जहण्णस्स उक्कस्ससामित्तेण सरीरोगाहणमावण्णाणं[1] समयपबद्धप्पाबहुअं मोत्तूण अण्णस्स अप्पाबहुअस्स असंभवादो। ण च जुत्तीए सुत्तं बाहिज्जदि, सयल-बाहादीदस्स वयणस्स सुत्तववएसादो। संपहि विस्सासुवचयस्स जीवपडिबद्धस्स जहण्णस्स उक्कस्ससामित्तपरूवणट्ठं तेसिं थोवबहुत्तपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि—

बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णओ विस्सासुव-

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। जीवसहित पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयका यह अल्पबहुत्व होना चाहिए, अन्यथा सचित्त अचित्त वर्गणाओंके गुणकारके साथ विरोध आता है।

शंका—जीवसहित शरीरोंके विस्रसोपचयका जिस प्रकार अल्पबहुत्व कहा है उस प्रकार जीवसे पृथग्भूत शरीरोंके विस्रसोपचयका अल्पबहुत्व क्यों नहीं कहते?

समाधान—नहीं, क्योंकि जीवसे पृथक् होनेके कारण जिनका पहलेका बन्धन गुण नष्ट हो गया है और जो जघन्य तथा उत्कृष्ट स्वामित्वकी अपेक्षा शरीरोंकी अवगाहनाको प्राप्त हैं उनके समयप्रबद्ध सम्बन्धी अल्पबहुत्वको छोड़कर अन्य अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है। और युक्तिके द्वारा सूत्र बाधित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि समस्त बाधाओंसे रहित वचन की सूत्र संज्ञा है।

अब जीव प्रतिबद्ध जघन्य विस्रसोपचयके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करनेके लिए और उनके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके

१. अ०का०प्रत्योः 'सरीरोगाहणागमावण्णाण' इति पाठः।

चओ थोवो ॥५५३॥

चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति एत्थ पदसंबंधो कायव्वो। एदेण जहण्णबादरणिगोद-वग्गणसामित्तपरूवणदुवारेण जहण्णविस्सासुवचयस्स सामी परूविदो। चरिमसमय-छदुमत्थाणं गहणं किमट्ठं कीरदे ? ण, तत्थ गुणसेडिमरणेण मदावसिट्ठाणमावलियाए असंखे०भागमेत्तपुलवियाणं गहणट्ठं तक्करणादो। असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मपदेसाणं तत्थतणविस्सासुवचयाणं च गलणट्ठं पि चरिमसमयछदुमत्थग्गहणं कीरदे। सव्व-जहण्णियाए सरीरोगाहणाए त्ति वुत्ते अद्भुट्ठरयणिपमाणोगाहणाए गहणं कायव्वं। किमट्ठं तग्गहणं कीरदे ? थोवविस्सासुवचयगहणट्ठं। रस-रुहिर-मांस-मेदट्ठि-मज्ज-सुक्काणि विस्सासुवचओ णाम। ते च थोवा जहण्णोगाहणाए चेव होंति ण महंतीए, तेसिं बहुत्तेण विणा ओगाहणाए बहुत्तविरोहादो। तत्थोवत्तं पि बादरणिगोदाणं थोवत्तविहाणट्ठं। तम्हा अद्भुट्ठरयणियमाणुस्सेहो विविहोववासेहि ज्झडिदणिस्सेस-रोमाहियमंसो ज्झाणावूरणेण थोवीकयबादरणिगोदपुलविकलावो चरिमसमयखीण-कसाओ जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए जहण्णविस्सासुवचयाणं सामी होदि त्ति सिद्धं।

जघन्य बादरनिगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक है ॥५५३॥

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है इस प्रकार यहाँ पर पदसम्बन्ध करना चाहिए। इसके आश्रयसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणाद्वारा जघन्य विस्रसोपचयका स्वामी कहा है।

शंका—अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि वहाँ पर गुणश्रेणि मरणसे मरनेके बाद बची हुई आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके ग्रहण करनेके लिए तथा असंख्यात गुणित श्रेणिरूपसे कर्मप्रदेशोंकी और तत्रस्थ विस्रसोपचयोंकी निर्जरा करनेके लिए अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण करते हैं।

सबसे जघन्य शरीरकी अवगाहनामें ऐसा कहने पर साढ़े तीन हाथप्रमाण अवगाहनाका ग्रहण करना चाहिए।

शंका—उसका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान—स्तोक विस्रसोपचयका ग्रहण करनेके लिए।

रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र इनकी विस्रसोपचय संज्ञा है। वे जघन्य अवगाहनामें स्तोक ही होते हैं, बड़ी अवगाहनामें नहीं, क्योंकि उनका बहुत्व हुए बिना अव-गाहनाका बहुत्व होनेमें विरोध है। वह स्तोकपना भी बादरनिगोदके स्तोकपनेका विधान करनेके लिए वहाँ ग्रहण किया है। इसलिए मनुष्यके मानसे जिसका साढ़े तीन रत्निप्रमाण उत्सेध है, नाना प्रकारके उपवासों द्वारा जिसने समस्त रोम और अधिक मांसको गला डाला है और ध्यानसमाधि द्वारा जिसने बादरनिगोद पुलविकलापको स्तोक कर दिया है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके जघन्य विस्रसोपचयोंका स्वामी होता

एवं बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो अप्पो त्ति भणिदं होदि। एदं सुत्तं बाहिरवग्गणाए ण होदि, जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए सामित्तपदुप्पायणादो ? ण, विस्सासुवचयसामित्तं मोत्तूण बादरणिगोदवग्गणाए पहाणत्ताभावादो।

सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए छण्णं जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं सपिंडिदाणं संताणं सव्वुक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५५४॥

एदेण सुत्तेण सुहुमणिगोदउक्कस्सवग्गणाए सामित्तपरूवणदुवारेण उक्कस्सविस्सासुवचयस्स सामित्तं परूविदं। तं जहा—सव्वुक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स महामच्छस्स उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा होदि। कुदो ? छण्णं जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं सपिंडिदाणं संताणं तत्थुवलंभादो। छण्णं जीवणिकायाणं सरीरसमवाओ एयबंधणं णाम। तेण एयबंधणेण बद्धाणं सपिंडिदाणमवबद्धाणं च जीवाणं गहणं कायव्वं। संपहि पुणो एवंविहसुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए उक्कस्सओ विस्सासुवचओ होदि। कुदो ? तत्थतणाणंतजीवतिसरीराणंतपरमाणुपोग्गलाणं बंधणगुणेण संबद्धणोकम्मपोग्गलाणं बहुत्तुवलंभादो। सो च

है यह सिद्ध हुआ। इस प्रकार जघन्य बादर निगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक अर्थात् अल्प होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यह सूत्र बाह्य वर्गणाके विषयमें नहीं है, क्योंकि इस द्वारा जघन्य बादर निगोदवर्गणाका स्वामी कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विस्रसोपचयके स्वामीको छोड़कर बादर निगोद वर्गणाकी प्रधानता नहीं है।

एक बन्धनबद्ध और पिण्ड अवस्थाको प्राप्त हुए जीवोंकी सर्वोत्कृष्ट शरीर अवगाहनामें विद्यमान जीवकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणाका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५५४॥

इस सूत्र द्वारा सूक्ष्म निगोद उत्कृष्ट वर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा द्वारा उत्कृष्ट विस्रसोपचयका स्वामित्व कहा है। यथा—सबसे उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहनामें विद्यमान महामत्स्यकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा होती है, क्योंकि वहाँ पर एक बन्धनबद्ध और पिण्डीभूत छह जीवनिकाय उपलब्ध होते हैं। छह जीवनिकायोंके शरीरसमवायकी एकबन्धन संज्ञा है। इसलिए एक बन्धनरूपसे बँधे हुए और पिण्डीभूत होकर सम्बद्ध हुए जीवोंका ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार इस तरहकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें उत्कृष्ट विस्रसोपचय होता है, क्योंकि वहाँके अनन्त जीवोंके तीन शरीरके अनन्त परमाणु पुद्गलोंके बन्धनगुणके कारण सम्बन्धको प्राप्त हुए

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ बादरणिगोदजहण्णविस्सासुवचयादो अणंतगुणो । बादरणिगोदवग्गणाए आवलियाए असंखे० भागमेत्तपुलवियासु अणंतजीवा अत्थि । सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए वि अणंता जीवा अत्थि किंतु बादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा असंखेज्जगुणा होंता वि विस्सासुवचएण अणंतगुणा । तिण्णं सचित्तवग्गणाणं मज्झे जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणा असंखेज्जगुणा त्ति जं भणिदं तेण सह एदं सुत्तं किण्ण विरुज्झदे ? ण विरुज्झदे, जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणा अणंतगुणे त्ति एत्थ णिद्देसाभावादो । किंतु जहण्णबादरणिगोदवग्गणसामियस्स जहण्णविस्सासुवचयादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए आधारभूदमहामच्छट्ठिदअणंतजीवाणं विस्सासुवचयकलाओ अणंतगुणो त्ति भणिदं । ण च तत्थ ट्ठियसव्वे जीवा सुहुमणिगोदवग्गणा होंति, बादराणं अण्णोण्णेण असंबद्धसुहुमणिगोदवग्गणाणं च उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणत्तविरोहादो ।

एदेसिं चेव परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि—जीवपमाणाणुगमो पदेसपमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।५५५।

एदेसिं विस्सासुवचयाणं अणंतगुणत्तसाहणट्ठं इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि एत्थ हवंति ।

बहुत नोकर्म परमाणु पुद्गल उपलब्ध होते हैं। वह उत्कृष्ट विस्रसोपचय बादर निगोद जघन्य विस्रसोपचयसे अनन्तगुणा है। बादर निगोद वर्गणाकी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंमें अनन्त जीव होते हैं तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें भी अनन्त जीव होते हैं। किन्तु बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके देहमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते हुए भी विस्रसोपचयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं।

शंका—तीन सचित्त वर्गणाओंके मध्यमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है यह जो कहा है उसके साथ यह सूत्र विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता ?

समाधान—विरोधको नहीं प्राप्त होता, क्योंकि जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा अनन्तगुणी है इस प्रकारका यहाँ पर निर्देश नहीं पाया जाता। किन्तु जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामीके जघन्य विस्रसोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आधारभूत महामत्स्यमें स्थित अनन्त जीवोंका विस्रसोपचयकलाप अनन्तगुणा है ऐसा कहा है। परन्तु वहाँ पर स्थित सब जीव सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं हैं, क्योंकि बादरोंके और परस्परमें सम्बन्धको नहीं प्राप्त हुए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनेमें विरोध आता है।

इनकी ही प्ररूपणा करने पर वहाँ ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं—जीवप्रमाणानुगम, प्रदेशप्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ॥५५५॥

इन विस्रसोपचयोंके अनन्तगुणत्वकी सिद्धि करनेके लिए यहाँ ये तीन अनुयोगद्वार

जीवपमाणाणुगमेण पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा ॥५५६॥

असंखेज्जलोगमेत्ता त्ति भणिदं होदि।

आउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥५५७॥

तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥५५८॥

वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥५५९॥

एदे चत्तारि वि जीवणिकाया असंखेज्जलोगमेत्ता।

वणप्फदिकाइया जीवा अणंता ॥५६०॥

तसकाइया जीवा असंखेज्जा ॥५६१॥

जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता। एवं जीवपमाणाणुगमो समत्तो।

पदेसपमाणाणुगमेण पुढविकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥५६२॥

पुढविकाइयजीवे पुव्वपरूविदे एगेगघणलोगेण गुणिदे जीवपदेसपमाणुप्पत्तीदो। जीवपमाणादो चेव विस्सासुवचयाणं पमाणे अवगदे संते जीवपदेसाणं पमाणं किमट्ठ'

होते हैं।

जीवप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीव असंख्यात हैं ॥५५६॥

असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जलकायिक जीव असंख्यात हैं ॥५५७॥

अग्निकायिक जीव असंख्यात हैं ॥५५८॥

वायुकायिक जीव असंख्यात हैं ॥५५९॥

ये चारों ही जीवनिकाय असंख्यात लोकप्रमाण हैं।

वनस्पतिकायिक जीव अनन्त हैं ॥५६०॥

त्रसकायिक जीव असंख्यात हैं ॥५६१॥

त्रसकायिक जीव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

इस प्रकार जीवप्रमाणानुगम समाप्त हुआ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥५६२॥

पहले कहे गये पृथिवीकायिक जीवोंको एक घनलोकसे गुणित करनेपर पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण उत्पन्न होता है

शंका - जीवोंके प्रमाणसे ही विस्रसोपचयोंके प्रमाणका ज्ञान हो जानेपर यहाँ पर जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण किस लिए कहा है ?

१. अ०का०प्रत्योः 'पुढविकाइयपदेसा' इति पाठः।

एत्थ वुच्चदे ? ण, एक्केक्कम्हि जीवपदेसे अणंतओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू अत्थि, एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि अणंताणंता विस्सासुवचया च अत्थि, एक्केक्कम्हि जीवे एगेगघणलोगमेत्ता चेव जीवपदेसा अत्थि त्ति जाणावणट्ठं च जीवपदेसपमाणपरूवणा कीरदे। एक्केक्कम्हि जीवपदेसे एगपरमाणुणा विणा कथमणंता परमाणू सम्मांति[1] ? ण, कम्मपरमाणूणमाणंतियं फिट्टियूण तेसिमसंखेज्जपमाणत्तप्पसंगादो। ण च एवं, सव्व-सुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो। तम्हा जुत्तीए विणा सुत्तबलेणेव एक्केक्कम्हि जीवपदेसे अणंताणंतपरमाणूणमत्थित्तपरूवणट्ठं पदेसपमाणाणुगमो आगदो।

आउकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥५६३॥

तेउकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥५६४॥

वाउकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥५६५॥

वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता ॥५६६॥

तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥५६७॥

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि। एवं पदेसपमाणाणुगमो समत्तो।

समाधान—नहीं, क्योंकि एक एक जीवप्रदेशमें अनन्त औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु हैं तथा एक एक परमाणुपर अनन्तानन्त विस्रसोपचय हैं इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके लिए तथा एक एक जीवके एक एक घनलोकप्रमाण ही जीवप्रदेश हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहाँ पर जीवके प्रदेशोंके प्रमाणका कथन किया है।

शंका—एक एक जीवप्रदेश पर एक परमाणुके बिना अनन्त परमाणु कैसे समाते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ऐसा मानने पर कर्मपरमाणुओंकी अनन्तता नष्ट होकर उनके असंख्यातप्रमाण प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि ऐसा मानने पर सब सूत्रोंके साथ विरोध होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। इसलिए युक्तिके बिना सूत्रके बलसे ही एक एक जीवप्रदेश पर अनन्तानन्त परमाणुओंके अस्तित्वका कथन करनेके लिए प्रदेशप्रमाणा-नुगम आया है।

अप्कायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥५६३॥

अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥५६४॥

वायुकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥५६५॥

वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्त हैं ॥५६६॥

त्रसकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥५६७॥

ये सूत्र सुगम हैं। इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम समाप्त हुआ।

१. ता०प्रतौ 'सम्मंति' इति पाठः।

अप्पाबहुअं दुविहं—जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ॥५६८॥

एवमप्पाबहुअं एत्थ दुविहं चेव होदि। जीवअप्पाबहुगादो चेव पदेसअप्पाबहुअं णज्जदि तेण तण्ण वत्तव्वं ति ? ण, सव्वेसिं जीवाणं जीवपदेसा सरिसा चेव होंति त्ति जाणावणट्ठं तप्परूवणादो। गुरूवदेसादो चेव तण्णादमिदि तप्परूवणा ण णिरत्थिया, सुत्तेण विणा गुरूवएसस्स अप्पवुत्तीए।

जीवअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयजीवा ॥५६९॥

जगपदरस्स असंखेज्जदिभागत्तादो।

तेउकाइयजीवा असंखेज्जगुणा ॥५७०॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा।

पुढविकाइयजीवा[1] विसेसाहिया ॥५७१॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा, तेउकाइयजीवाणमसंखेज्जदिभागो। को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—जीवअल्पबहुत्व और प्रदेशअल्पबहुत्व ॥५६८॥

इस प्रकार अल्पबहुत्व यहाँ पर दो प्रकारका ही होता है।

शंका—जीवअल्पबहुत्वसे ही प्रदेशअल्पबहुत्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सब जीवोंके जीवप्रदेश समान ही होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसका कथन किया है। गुरुके उपदेशसे ही उसका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उसका कथन करना निरर्थक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि सूत्रके बिना गुरुके उपदेशकी प्रवृत्ति नहीं होती।

जीवअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीव सबसे स्तोक हैं ॥५६९॥

क्योंकि वे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

उनसे तैजस्कायिक जीव असंख्यातगुणे हैं ॥५७०॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है।

उनसे पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥५७१॥

विशेषका प्रमाण कितना है ! तैजस्कायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण जो असंख्यात लोक हैं उतना विशेषका प्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है। इसी प्रकार सर्वत्र कथन करना चाहिए।

१. अ०प्रतौ 'पुढविकाइया जीवा इति पाठः।

आउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।।५७२।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा ।

वाउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।।५७३।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा ।

वणप्फदिकाइयजीवा[2] अणंतगुणा ।।५७४।।

को गुणगारो ? सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयपदेसा ।।५७५।।

घणलोगगुणिदतत्थतणतसजीवपमाणत्तादो ।

तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा ।।५७६।।

पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया ।।५७७।।

आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।।५७८।।

वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।।५७९।।

वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा ।।५८०।।

उनसे अप्कायिक जीव विशेष अधिक हैं ।।५७२।।

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वायुकायिक जीव विशेष अधिक हैं ।।५७३।।

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वनस्पतिकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ।।५७४।।

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार जीवअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीवोंके प्रदेश सबसे स्तोक हैं ।।५७५।।

यहाँ त्रस जीवोंके प्रमाणको घनलोकसे गुणित करनेपर उनके प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उनसे अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं ।।५७६।।

उनसे पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं ।।५७७।।

उनसे अप्कायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं ।।५७८।।

उनसे वायुकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं ।।५७९।।

उनसे वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्तगुणे हैं ।।५८०।।

१. अ०प्रतौ 'वाउक्काइया' इति पाठः । २. अ०का०प्रत्योः 'वणप्फदिकाइया' इति पाठः ।

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । जेणेदं महामच्छसरीरे अणंता जीवा अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा अत्थि तेण विस्सासुवचएण एत्थ तत्तो अणंतगुणेण होदव्वमिदि जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा[1] असंखेज्जगुणा चेव, बादरणिगोदवग्गणाए एगणिगोदसरीरे वि सव्वजीवरासीए असंखेज्जदिभागमेत्तजीवोवलंभादो। ण च तत्थ तिस्से अणंतिमभागमेत्त-जीवा होंति, बादरणिगोदजहण्णवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणत्तप्प-संगादो । ण च एवं, पुव्वुत्तगुणगारेण सह विरोहादो । जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए जहण्णविस्सासुवचयादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सविस्सासुवचओ वि असंखेज्ज-गुणो चेव, अण्णहा जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए अणंत-गुणत्तप्पसंगादो । ण च महामच्छउक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो होदि, जहण्णबादर-णिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । तम्हा एदेण[2] जीवेण अप्पाबहुएण महामच्छदेहउक्कस्सविस्सासुवचयस्स अणंतगुणत्तं ण साहिज्जदि त्ति सिद्धं । एत्थ परिहारो उच्चदे । तं जहा—एसो महामच्छाहारो पोग्गलकलावो पत्तेयसरीरबादर-सुहुमणिगोदवग्गणसमूहमेत्तो ण होदि किंतु तस्स पुट्ठीए संभूदउब्भिय-

ये सूत्र सुगम हैं ।

शंका—चूँकि यह बात है कि महामत्स्यके शरीरमें अनन्त जीव अनन्तानन्त विस्रसोपचयों से उपचित होते हैं तो भी जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं, इसलिए विस्रसोपचयको यहाँपर उनसे अनन्तगुणा होना चाहिए, अतः जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके शरीरमें स्थित जीव असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि बादरनिगोदवर्गणाके एक निगोदशरीरमें भी सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं। वहाँ उसके अनन्तवें भागप्रमाण जीव होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि ऐसा मानने पर पूर्वोक्त गुणकारके साथ विरोध आता है । जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जघन्य विस्रसोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका उत्कृष्ट विस्रसोपचय भी असंख्यातगुणा ही है, अन्यथा जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । परन्तु महामत्स्यका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा नहीं है, क्योंकि जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए इस जीव अल्पबहुत्वसे महामत्स्यके देहका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा हीन सिद्ध किया जा सकता है यह बात सिद्ध होती है ?

समाधान—यहाँ इस शंकाका परिहार करते हैं । यथा—यह महामत्स्यका आहाररूप जो पुद्गलकलाप है वह प्रत्येकशरीर, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका समुदायमात्र नहीं होता है किन्तु उसकी पीठपर आकर जमी हुई जो मिट्टीका प्रचय है वह और उसके कारण

१. ता०प्रतौ 'उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा' इति पाठः ।
२. ता०का०प्रत्योः 'अणंतगुणो होदि । तम्हा एदेण' इति पाठः ।

कलावो तत्तो सम्मुच्छिदपत्थर-सज्जज्जुण--णिंब-कयंबंब--जंबु--जंबीर-हरि-हरिणादओ च विस्ससोवचयंतब्भूदा दट्ठव्वा । ण च तत्थ मट्टियादीणमुप्पत्ती असिद्धा, सइलोदए पदिदपण्णाणं पि सिलाभावेण परिणामदंसणादो सुत्तिवुडपदिदोदबिंदूणं मुत्ताहलागारेण परिणामुवलंभादो । ण च तत्थ सम्मुच्छिमपंचिंदियजीवाणमुप्पत्ती असिद्धा, पाउस-पारंभवासजलधरणिसंबंधेण भेगुंदर-मच्छ-कच्छवादीणमुप्पत्तिदंसणादो । ण च एदेसिं विस्सासुवचयत्तमसिद्धं, कम्मोदयमंतरेणुवचिदाणं विस्सासुवचयत्तं पडि विरोहाभावादो। ण च एदेसिं महामच्छत्तमसिद्धं, माणुसजढरुप्पण्णगंडुवालाणं पि माणुसववएसुवलंभादो । सव्वेसिमेदेसिं गहणादो सिद्धं उक्कस्सविस्सासुवचयस्स अणंतगुणत्तं । अथवा ओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलाणं बंधणगुणेण जे एयबंधणबद्धा पोग्गला विस्सासुवचय-सण्णिया तेसिं सचित्तवग्गणाणं अंतब्भावो होदि, जीवेण सह तेसिमण्णोण्णाणुगयत्त-दंसणादो । जे पुण तेसिं सचित्तवग्गणसण्णिदपोग्गलाणं बंधणगुणेण तत्थ समवेदा पोग्गला जे च सीसवालदंता इव तज्जोणिभावेणुप्पण्णा च जीवेण अणणुगयभावादो अलद्धसचित्तवग्गणववएसा ते एत्थ विस्सासुवचया घेतव्वा । ण च णिज्जीवविस्सासुव-चयाणं अत्थित्तमसिद्धं, रुहिर--वस--सुक्क--रस -सेंभ--पित्त--मुत्त -खरिस--मत्थुलिंगादीणं जीववज्जियाणं विस्सासुवचयाणमुवलंभादो । ण च दंतहड्डवाला इव सव्वे विस्सासुव-

उत्पन्न हुए पत्थर, सर्ज नामके वृक्षविशेष, अर्जुन, नीम, कदम्ब, आम, जामुन, जम्बीर, सिंह और हरिण आदिक ये सब विस्रसोपचयमें अन्तर्भूत जानने चाहिए । वहाँ मिट्टी आदिकी उत्पत्ति असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि शैलके पानीमें गिरे हुए पत्तोंका शिलारूपसे परिणमन देखा जाता है तथा शुक्तिपुटमें गिरे हुए जलबिन्दुओंका मुक्ताफलरूपसे परिणमन उपलब्ध होता है । वहाँ पञ्चेन्द्रिय सम्मूर्च्छन जीवोंकी उत्पत्ति असिद्ध है यह बात भी नहीं है, क्योंकि वर्षाकालके प्रारम्भमें वर्षाके जल और पृथिवीके सम्बन्धसे मेंढक, चूहा, मछली और कछुआ आदिकी उत्पत्ति देखी जाती है। इनका विस्रसोपचयपना असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि कर्मोदयके बिना उपचित हुए पुद्गलोंके विस्रसोपचय होनेमें कोई विरोध नहीं आता है । इनका महामत्स्य होना असिद्ध है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि मनुष्यके जठरमें उत्पन्न हुई कृमिविशेषकी भी मनुष्य संज्ञा उपलब्ध होती है । इन सबके ग्रहण करनेसे उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है यह बात सिद्ध होती है । अथवा औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलोंके बन्धनगुणके कारण जो एक बन्धनबद्ध विस्रसोपचय संज्ञावाले पुद्गल हैं उनका सचित्त-वर्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि उनका जीवके साथ परस्परमें अनुगतपना देखा जाता है । परन्तु उन सचित्तवर्गणा संज्ञावाले पुद्गलोंके बन्धन गुणके कारण जो पुद्गल वहाँ समवेत होते हैं और जो सीसपालमें दाँतोंके समान उनके योनिरूपसे उत्पन्न हुए हैं वे जीवसे अनुगत नहीं होनेके कारण सचित्तवर्गणा संज्ञाको नहीं प्राप्त होते, इसलिए उन्हें यहाँ विस्रसोपचयरूपसे ग्रहण करना चाहिए । निर्जीव विस्रसोपचयोंका अस्तित्व असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि जीवरहित रुधिर, वसा, शुक्र, रस, कफ, पित्त, मूत्र, खरिस और मस्तकमेंसे निकलने-वाले चिकने द्रवरूप विस्रसोपचय उपलब्ध होते हैं। दाँतोंकी हड्डियोंके समान सभी विस्रसोपचय

चया णिज्जीवा[1] पच्चक्खा चेव, अणुभावेण अणंताणं विस्सासुवचयाणं आगमचक्खुगोयराणमुवलंभादो। एदे विस्सासुवचया महामच्छदेहभूदछज्जीवणिकायविसया अणंतगुणा त्ति घेत्तव्वा। किंफला एसा परूवणा? दुविहविस्सासुवचयपदुप्पायणफला।

एवं विस्सासुवचयपरूवणाए समत्ताए बाहिरिया वग्गणा समत्ता होदि।

चूलिया

एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम ॥५८१॥

पुव्वं सूचिदअत्थाणं विसेसपरूवणादो। संपहि 'जत्थेय मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं। वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदिस्से गाहाए पुव्वं परूविदाए[2] पच्छिमद्धस्स अत्थविसेसणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा। एयसमएण[3] अणंताणंतसाहारणजीवेण घेत्तूण एगसरीरं भवदि असंखेज्जलोगमेत्तसरीराणि घेत्तूण एगो णिगोदो होदि ॥५८२॥

प्रत्यक्षसे निर्जीव ही होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि अनुभावके कारण आगमचक्षुके विषयभूत अनन्त विस्रसोपचय उपलब्ध होते हैं। महामत्स्यके देहमें उत्पन्न हुए छह जीवनिकायोंको विषय करनेवाले ये विस्रसोपचय अनन्तगुणे होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका—इस प्ररूपणाका क्या फल है?

समाधान—दो प्रकारके विस्रसोपचयोंका कथन करना इसका फल है।

इस प्रकार विस्रसोपचयप्ररूपणाके समाप्त होनेपर बाह्य वर्गणा समाप्त होती है।

चूलिका

इससे आगेका ग्रन्थ चूलिका है ॥५८१॥

क्योंकि इसमें पहले सूचित किये गये अर्थोंका विशेषरूपसे कथन किया है। अब 'जहां एक जीव मरता है वहां अनन्त जीवोंका मरण होता है और जहां एक जीव उत्पन्न होता है वह अनन्त जीवोंका उत्पाद होता है।' पहले कही गई इस गाथा के उत्तरार्धके अर्थमें विशेषता दिखलाने के लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

प्रथम समयमें जो निगोद उत्पन्न होता है उसके साथ अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं। यहाँ एक समयमें अनन्तानन्त साधारण जीवोंको ग्रहण कर एक शरीर होता है। तथा असंख्यात लोकप्रमाण शरीरों को ग्रहण कर एक निगोद होता है ॥५८२॥

१. अ०प्रतौ 'णिजीवा' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'पुव्वपरूवणदाए' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'वक्कमंति जहा एयसमएण' इति पाठः।

णिगोदो पुलविया त्ति एयट्ठो। तस्संतो अच्छंति जाणि सरीराणि सरीराण- मंतो जे वसंति अणंताणंता जीवा तेसिं सव्वेसिं पि णिगोदा त्ति सण्णा, आधेये आधारोवयारादो। जो णिगोदो त्ति भणिदे णिगोदजीवो एगो घेत्तव्वो। पुलवियाणं सरीराणं वा गहणं ण होदि, तेसिमाणंतियाभावादो। पढमदाए उप्पत्तीए पढमभावेण वक्कममाणो उपज्जियमाणो जो णिगोदो तेण सह अणंता जीवा वक्कमंति। एगसमएण जम्हि समए अणंता जीवा उप्पज्जंति तम्हि चेव समए सरीरस्स पुलवियाए च उप्पत्ती होदि, तेहि विणा तेसिमुप्पत्तिविरोहादो। कत्थ वि पुलवियाए पुव्वं पि उप्पत्ती होदि, अणेगसरीराधारत्तादो। एसा परूवणा किमेगसरीरमाहारं काऊण परूविज्जदि आहो एगपुलवियमाहारं काऊण परूविज्जदि त्ति? उभयमवि आहारं काऊण परूवणा कीरदे। एदं कुदो णव्वदे? अंतोमुहुत्तमस्सिदूण उप्पत्तिकाल- परूवणादो। ण च खंधेसु कमाकमेहि उप्पज्जमाणाणेगपुलविएसु अंतोमुहुत्तालंबणं जुत्तं, गलोइ-थूहल्लयादीणं बादरणिगोदक्खंधाणं पुलविमयाणं अणेगकालावट्ठाण- दंसणादो।

विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ॥५८३॥

निगोद और पुलवि ये एकार्थवाची शब्द हैं। उनके भीतर जो शरीर रहते हैं और शरीरोंके भीतर जो अनन्तानन्त जीव रहते हैं उन सभी की आधार में आधेयका उपचार होनेसे निगोद संज्ञा है। सूत्र में 'जो णिगोदो' ऐसा कहने पर एक निगोद जीव लेना चाहिए। इससे पुलवियों और शरीरोंका ग्रहण नहीं होता, है क्यों कि वे अनन्त नहीं हैं 'पढमदाए' अर्थात् उत्पत्ति की प्रथम अवस्थारूपसे उत्पन्न होनेवाला जो निगोद जीव है उसके साथ अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं। 'एगसमएण' अर्थात् जिस समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं उसी समयमें शरीर की और पुलविकी उत्पत्ति होती है, क्योंकि इनके विना अनन्त जीवों की उत्पत्ति होनेमें विरोध है। कहीं पर पुलविकी पहले भी उत्पत्ति होती है, क्योंकि वह अनेक शरीरोंका आधार है।

शंका—यह प्ररूपणा क्या एक शरीरको आधार करके की जा रही है या एक पुलविको आधार करके की जा रही है?

समाधान—दोनोंको ही आधार करके यह प्ररूपणा की जा रही है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान—अन्तर्मुहूर्त का आश्रय लेकर चूँकि उत्पत्तिकालकी प्ररूपणा की गई है इससे जाना जाता है कि दोनोंको आधार बनाकर यह प्ररूपणा की जा रही है। और स्कन्धोमें क्रम और अक्रम से उत्पन्न होनेवाली अनेक पुलवियोंमें अन्तर्मुहूर्तका अवलम्बन करना युक्त नहीं है, क्योंकि गिलोय, थूवर और आदा आदि बादर निगोद स्कन्धोंमें पुलवियोंका अनेक काल तक अवस्थान देखा जाता है।

दूसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥५८३॥

१ अ०प्रतौ 'णिगोद त्ति' इति पाठः।

तम्हि चेव सरीरे पढमसमयउप्पण्णजीवेहिंतो विदियसमए उप्पज्जमाणजीवा असंखेज्जगुणहीणा । को भागहारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ॥५८४॥

तत्थेव सरीरे विदियसमए वक्कंतजीवेहिंतो तदियसमए उप्पज्जंतजीवा असंखेज्जगुणहीणा । भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥५८५॥

एत्थतणआवलियाए असंखेज्जदिभागस्स पमाणमावलियपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । एदेण सुत्तेण पढमकंदयपरूवणा कदा ।

तदो एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए अंतरं काऊण णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥५८६॥

एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो अंतरं काऊणे त्ति पदसंबंधो कायव्वो । आवलियाए असंखेज्जदिभागसद्दो अंतरकाले[1]

उसी शरीरमें प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंसे दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । भागहार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार है ।

तीसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥५८४॥

उसी शरीरमें दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे तीसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । सर्वत्र भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥५८५॥

यहाँ पर आवलिके असंख्यातवें भागका प्रमाण आवलिके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवाँ भाग है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इस सूत्रके द्वारा प्रथम काण्डककी प्ररूपणा की ।

उसके बाद एक, दो और तीन समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर निगोद जीव उत्पन्न होते है ॥५८६॥

एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर करके ऐसा यहाँ पदसम्बन्ध करना चाहिए ।

१. ता० प्रतौ 'अंतरकालो (ले)' इति पाठः ।

वक्कमणकाले च संबंधिज्जदि त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो। अंतरमेगसमओ वि दो समया वि होंति उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एवं सव्वंतराणं पमाण-परूवणा कायव्वा, एदिस्से अंतरपरूवणाए देसामासियत्तादो। एवमंतरं[2] काऊण अणंतर-समए असंखेज्जगुणहीणा जीवा उप्पज्जंति। एवमेग-दोसमयमादिं काऊण ताव णिरंतरं उप्पज्जंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति। एदं विदियकंदयमुव-लक्खणं काऊण सेसकंदयाणं पि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं परूवणा कायव्वा। णवरि पढमकंदयपमाणं जहण्णं उक्कस्सं पि आवलियाए असंखेज्जदिभागो। सेसवक्कमणकंदयाणमंतरकंदयाणं[4] च पमाणं जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो। अंतराणि एगादिसमइयाणि होंतु णाम, तत्थ एगो वा दो वा तिण्णि वा त्ति अंतरपमाणपरूवणुवलंभादो। ण वक्कमणकंदयमेगसमइयं, तत्थ तदणुव-लंभादो त्ति ? ण, अंतरम्हि वुत्तएगादिसमयाणं वक्कमणसुत्तस्स अवयवभावेण पवुत्ति-दंसणादो। एवमेदेण सुत्तेण वक्कंतजीवाणं तक्कालंतराणं च परूवणा कदा।

शंका—'आवलिके असंख्यातवें भाग' शब्दका अन्तरकाल और उत्पत्तिकाल दोनोंसे सम्बन्ध है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है।

अन्तर एक समय भी होता है, दो समय भी होता है और उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। इस प्रकार सब अन्तरोंके प्रमाणका कथन करना चाहिए, क्योंकि यह अन्तरप्ररूपणा देशामर्षक है। इस प्रकार अन्तर करके अनन्तर समयमें असंख्यातगुणा हीन जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार एक और दो समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर उत्पन्न होते हैं। इस दूसरे काण्डकको उपलक्षण करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष काण्डकोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि जघन्य और उत्कृष्ट प्रथम काण्डकका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। शेष उपक्रमणकाण्डकों और अन्तरकाण्डकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

शंका—अन्तर एक आदि समयवाले होवें, क्योंकि उस विषयमें एक, दो और तीन इस प्रकार अन्तरके प्रमाणकी प्ररूपणा उपलब्ध होती है, उपक्रमण काण्डक एक समयवाला नहीं हो सकता, क्योंकि इसके विषयमें इस प्रकारकी कोई प्ररूपणा नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अन्तरके विषयमें कहे गये एक आदि समयोंकी उत्पत्तिसूत्रके अवयवरूपसे प्रवृत्ति देखी जाती है।

इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी और उनके कालके अन्तरोंकी प्ररूपणा की है।

१. ता०प्रतौ 'सव्वंतराणि (णं) परूवणा' अ०का०प्रत्योः सव्वंतराणि पमाणपरूवणा' इति पाठः। २. अ०का०प्रत्योः 'एदमंतरं' इति पाठः। ३ ता०प्रतौ 'एवं विदिय–' इति पाठः। ४. अ०का०प्रत्योः '–कंदयाणमंतरं कंदयाणं' इति पाठः।

संपहि एदेण सूचिदपमाणसेडीओ भणिस्सामो—पढमसमए वक्कमंति जीवा केवडिया ? अणंता। विदियसमए वक्कमंति जीवा केवडिया ? अणंता। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो त्ति। तदो एक्कं वा दो वा समयं आदिं कादूण अंतरं होदि जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो त्ति। तदो उवरिमसमए अणंता जीवा वक्कमंति। एवमेगसमयमादिं कादूण वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो त्ति। एवं सांतर-णिरंतरकमेण वक्कमणजीवाणं[1] पमाणं वत्तव्वं जाव वक्कमणकालं[2]चरिमसमओ त्ति। वक्कमण-कालपमाणं पुण अंतोमुहुत्तं, तत्तो उवरि उप्पत्तिसंभवाभावादो। पमाणपरूवणा गदा।

सेडिपरूवणा दुविहा—अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि। तत्थ अणंतरोवणिधा एक्किस्से पुलवियाए एगसरीरे वा पढमसमए वक्कमंति जीवा बहुआ। विदियसमए वक्कमंति जे जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा[3]। तदियसमए जे वक्कमंति जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा। एवं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपढमकंदयचरिमसमओ त्ति। तदो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमंतरं होदि। तदो विदियकंदयआदिसमए वक्कमंति जीवा[4] पढमकंदयचरिमसमए वक्कमिदजीवेहिंतो[5] असंखेज्जगुणहीणा। एवं णिरंतरं णेयव्वं जाव विदियकंदयचरिमसमओ त्ति। एवमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-

अब इसके द्वारा सूचित होनेवाली प्रमाणश्रेणियोंका कथन करेंगे—प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं ? अनन्त हैं। दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं ? अनन्त हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ले जाना चाहिए। उसके बाद एक या दो समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक अन्तर होता है। उसके बाद अगले समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार एक समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार सान्तर-निरन्तर क्रमसे उत्कृष्ट कालके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण कहना चाहिए। तथा उपक्रमणकालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि उसके आगे उत्पत्ति सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है—अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमेंसे अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा एक पुलविमें या एक शरीरमें प्रथम समयमें बहुत जीव उत्पन्न होते हैं। दूसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुणे हीन होते हैं। तीसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुणे हीन होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रथम काण्डकके अन्तिम समय तक जानना चाहिए। उसके बाद आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर होता है। उसके बाद दूसरे काण्डकके प्रथम समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुणे हीन होते हैं। इस प्रकार दूसरे काण्डकके अन्तिम समयतक निरन्तर क्रमसे लेजाना चाहिए। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

१. अ०का०प्रत्योः 'वक्कमण जीवाण' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'जावुक्कस्सकाल—' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'जीवा असंखेजगुणहीणा' इति पाठः। ४. ता०प्रतौ 'वक्कमति (त) जीवा' इति पाठः। ५. ता०प्रतौ 'वक्कमदि (मत) जीवेहिंतो' अ०का०प्रत्योः 'वक्कमिदिजीवेहिंतो' इति पाठः।

वक्कमणकंदयाणमणंतरोवणिधा वत्तव्वा । भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तो वक्कमंतजीवपमाणुप्पायणे होदि । परंपरोवणिधा णत्थि[1] । कुदो ? समयं पडि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवाणं वक्कमणुवलंभादो ।

अप्पाबहुअं दुविहं—अद्धाअप्पाबहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ॥५८७॥

एवमप्पाबहुअं दुविहं चेव होदि, तदियादीणमसंभवादो ।

अद्धाअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवो सांतरसमए वक्कमण-कालो ॥५८८॥

को सांतरसमए वक्कमणकालो[2] णाम । पढमवक्कमणकंदयकालं[3] मोत्तूण विदियादि-वक्कमणकंदयाणं सयलकालकलावो ।

णिरंतरसमए वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥५८९॥

को णिरंतरसमए वक्कमणकालो ? पढमवक्कमणकंदयद्धाणं, तत्थंतराभावादो । को गुण० ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उपक्रमण काण्डकोंकी अनन्तरोनिधा कहनी चाहिए । सर्वत्र उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण उत्पन्न करनेके लिए भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । परम्परोनिधा नहीं है, क्योंकि प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे जीवोंकी उत्पत्ति उपलब्ध होती है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—अद्धाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्व ॥५८७॥

इस प्रकार अल्पबहुत्व दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि तृतीय आदिका अभाव है ।

अद्धाअल्पबहुत्वकी अपेक्षा सान्तर समयमें उपक्रमणकाल सबसे स्तोक है ।५८८।

शंका—सान्तर समयमें उपक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान—प्रथम उपक्रमण काण्डकके कालको छोड़कर द्वितीय आदि उपक्रमणकाण्डकोंके समस्त कालकलापको सान्तर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं ।

निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा है ॥५८९॥

शंका—निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान—प्रथम उपक्रमण काण्डकके कालको निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं, क्योंकि वहां पर अन्तरका अभाव है ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

१. अ०का०प्रत्योः 'अत्थि' इति पाठः । २. अ०का०प्रत्योः 'सांतरसमयवक्कमणकालो' इति पाठः । ३. प्रतिपु 'बक्कमणकालो णाम ? पढमवक्कमणकालो णाम । पढमवक्कमण-' इति पाठः ।

सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥५९०॥

केत्तियमेत्तेण ? विदियादिवक्कमणकंदयकालमेत्तेण । एदेण सुत्तेण सूचिद-विसेसप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।

सव्वत्थोवो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो ॥५९१॥

उक्कस्ससांतरउवक्कमणकालम्मि जहण्णसांतरउवक्कमणकाले सोहिदे जो सुद्धसेसो सो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो होदि ।

णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥५९२॥

पढमतणवक्कमणकंदयं णिरंतरसमयवक्कमणकालो[1] णाम । सो जहण्णो वि अत्थि उक्कस्सो वि । जहण्णकाले उक्कस्सकालादो[2] सोहिदे णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसो होदि । सो पुव्विल्लविसेसादो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥५९३॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण । विदियादिवक्कमणकंदयाण-मुक्कस्सकालम्मि समुदिदम्मि तेसिं चेव जहण्णकालसमूहे सोहिदे सुद्धसेसो वक्कमण-

सान्तरनिरन्तर समयमें उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥५९०॥

कितना अधिक है ? द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंका जितना काल है उतना अधिक है ? अब इस सूत्र द्वारा सूचित होनेवाले विशेष अल्पबहुत्वको बतलाते हैं—

सान्तर समयमें उपक्रमण कालविशेष सबसे स्तोक है ॥५९१॥

उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमण कालमेंसे जघन्य सान्तर उपक्रमण कालको कम कर देने पर जो शेष रहता है उसे सान्तर समय सम्बन्धी उपक्रमण कालविशेष कहते हैं । वह स्तोक है ।

निरन्तर समय में उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है ॥५९२॥

प्रथमतन उपक्रमणकाण्डकका नाम निरन्तर समय उपक्रमण काल है । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य कालके कम करने पर निरन्तर समय उपक्रमणकाल विशेष होता है । वह पहलेके विशेषसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सान्तर-निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है ॥५९३॥

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है । द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके समुदित उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य काल समूहके कम कर देने

१. अ०का०प्रत्योः 'णिरतरवक्कमण—' इति पाठः । २. अ०का०प्रत्योः 'जहण्णेत्र उक्कस्सकालादो' इति पाठः ।

कालविसेसो णाम । तत्तियमेत्तेण अहियमिदि भणिदं होदि ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणसव्वजहण्ण कालो ॥५६४॥

विदियादिवक्कमणकंदयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं सव्वजहण्णकाल-कलावो सांतरवक्कमणजहण्णकालो णाम । सो थोवो ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥५६५॥

विदियादिवक्कमणकंदयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं उक्कस्सकाल-कलावो उक्कस्सगो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

जहण्णपदेण जहण्णगो णिरंतरवक्कमणकालो असंखेज्ज-गुणो ॥५६६॥

पढमवक्कमणकंदयकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जो जहण्णओ णिरंतरवक्कमणकालो सो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पर जो शेष रहता है वह उपक्रमण कालविशेष है । उतना अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर उपक्रमण सबसे जघन्य काल सबसे स्तोक है ।५६४।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके सबसे जघन्य कालकलापकी सान्तर उपक्रमण जघन्य काल संज्ञा है । वह स्तोक है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट सान्तर समय उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ।५६५।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके उत्कृष्ट कालकलापकी उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमण काल संज्ञा है । वह विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य निरन्तर उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है ॥५६६॥

प्रथम उपक्रमण काण्डक काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उसमें जो जघन्य निरन्त उपक्रमण काल है वह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

१. ता०प्रतौ 'सांतर [समय] वक्कमण-' इति पाठः ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ णिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥५९७॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

जहण्णपदेण[1] सांतरणिरंतरवक्कमणसव्वजहण्णकालो विसेसाहिओ ॥५९८॥

केत्तियमेत्तेण ? णिरंतरवक्कमणकालविसेसेण परिहीणजहण्णसांतरवक्कमणकालमेत्तेण । सो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो विसेसो होदि ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥५९९॥

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसमेत्तेण ।

सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणकालविसेसो ॥६००॥

विदियकंदयप्पहुडि जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवक्कमणकंदयाणं कालकलावो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णे[2] उक्कस्सादो सोहिदे सुद्धसेसो सांतरवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है ॥५९७॥

कितना अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण सबसे जघन्य काल विशेष अधिक है ॥५९८॥

कितना अधिक है ? जघन्य सान्तर उपक्रमण कालसे हीन निरन्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है। और वह विशेष आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥५९९॥

कितना अधिक है । उत्कृष्ट उपक्रमणकालमेंसे जघन्य उपक्रमणकालके कम करने पर जो शेष रहे उतना अधिक है ।

सान्तर उपक्रमणकालविशेष सबसे स्तोक है ॥६००॥

द्वितीय काण्डकसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण काण्डकोंके कालकलापको सान्तर उपक्रमण काल कहते हैं । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । वहाँ उत्कृष्ट में से जघन्यको कम करने पर जो शेष रहे वह सान्तर उपक्रमण कालविशेष कहलाता है । वह स्तोक है ।

१. अ०का०प्रत्योः 'जहण्णपदेण' इति पाठो नास्ति । २. अ०प्रतौ 'जहण्णेण' इति पाठः ।

णिरंतरवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥६०१॥

पढमवक्कमणकंदयजहण्णकाले तस्सेव उक्कस्सकालम्मि सोहिदे सेसो णिरंतर-वक्कमणकालविसेसो णाम। सो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखे-ज्जदिभागो।

सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥६०२॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण।

जहण्णपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥६०३॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०४॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण।

जहण्णपदेण णिरंतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥६०५॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

उक्कस्सपदेण[1] णिरंतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०६॥

केत्तियमेत्तेण ? णिरंतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण।

निरन्तर उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है ॥६०१॥

प्रथम उपक्रमण काण्डकके जघन्य कालको उसीके उत्कृष्ट कालमेंसे घटा देने पर जो शेष रहे वह निरन्तर उपक्रमण काल विशेष कहलाता है। वह असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

सान्तर–निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है ॥६०२॥

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर समय उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा है ॥६०३॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है ॥६०४॥

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

जघन्य पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है ॥६०५॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है ॥६०६॥

कितना अधिक है ? निरन्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

१. अ०प्रतौ 'उक्कस्सपदे' इति पाठः।

जहण्णपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०७॥

सुगमं ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०८॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सयं वक्कमणंतरमसंखेज्जगुणं ॥६०६॥

एगपुलवियाए सरीरे वा उप्पज्जमाणजीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तंतरकंडएसु जमुक्कस्सं वक्कमणंतरं तमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥६१०॥

को अवक्कमणकालो ? अंतरं । आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तजहण्णंतर-कंदएसु[1] उक्कस्संतरकंदएहिंतो सोहिदेसु सुद्धसेसमवक्कमणंतरविसेसो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागगुणं ति भणिदं होदि ।

पबंधणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥६११॥

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है ॥६०७॥

वह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है ॥६०८॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्ट उपक्रमण अंतर असंख्यातगुणा है ॥६०६॥

एक पुलवि या एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके जो आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण अन्तरकाण्डक होते हैं उनमें जो उत्कृष्ट उत्पन्न होनेका अन्तर है वह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है ॥६१०॥

शंका—अप्रक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान—अन्तरको अप्रक्रमणकाल कहते हैं ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जघन्य अन्तर काण्डकोंको उत्कृष्ट अन्तर काण्डकोंमेंसे घटा देनेपर शेष अप्रक्रमण अन्तर विशेष होता है । वह आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है

प्रबन्धनकालविशेष विशेष अधिक है ॥६११॥

१. अ०प्रतौ 'असंखे०भागमेत्तकालाण जहण्णंतरकंदएसु' इति पाठः ।

वक्कमणावक्कमणकालाणं समासो पबंधणकालो णाम। सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि। तत्थ जहण्णे उक्कस्सादो सोहिदे पबंधणकालविसेसो होदि। सो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसमेत्तेण। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण त्ति भणिदं होदि।

जहण्णपदेण जहण्णओ अवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥६१२॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

जहण्णपदेण जहण्णओ पबंधणकालो विसेसाहिओ ॥६१३॥

केत्तियमेत्तेण? जहण्णवक्कमणकालमेत्तेण।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ अवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६१४॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? जहण्णुवक्कमणकालेणूणअवक्कमणकालविसेसमेत्तो।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ पबंधणकालो[1] विसेसाहिओ ॥६१५॥

केत्तियमेत्तेण? उक्कस्सवक्कमणकालमेत्तेण।

एवं कालअप्पाबहुअं समत्तं।

प्रक्रमण और अप्रक्रमण कालोंका समुदाय प्रबन्धनकाल है। वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। वहाँ उत्कृष्टमें से जघन्यको कमकर देनेपर प्रबन्धनकालविशेष होता है। वह विशेष अधिक है। कितना अधिक है? उत्कृष्ट प्रक्रमण कालमेंसे जघन्य प्रक्रमणकालको घटा देनेपर जो शेष रहे उतना अधिक है। वह आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य अप्रक्रमण काल असंख्यातगुणा है ॥६१२॥

गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ॥६१३॥

कितना अधिक है? जघन्य प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट अप्रक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥६१४॥

विशेषका प्रमाण कितना है? जघन्य उपक्रमणकालसे न्यून अप्रक्रमणकाल विशेषका जितना प्रमाण है उतना विशेषका प्रमाण है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ॥६१५॥

कितना अधिक है? उत्कृष्ट प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

इस प्रकार काल अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

१. ता० प्रतौ 'उक्कस्सपबंधणकालो' इति पाठः।

जीवअप्पाबहुए त्ति ।।६१६।।

जं जीवअप्पाबहुअं भणिदं तमेगकंदयं णाणाकंदयाणि च अस्सिऊण वत्तइस्सामो। तत्थ ताव एगकंदयमस्सिऊण वुच्चदे –

सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ।।६१७।।

पढमकंदयस्स चरिमसमए जे उप्पज्जमाणा जीवा ते अणंता होदूण थोवा होंति, असंखेज्जगुणहीणकमेण पढमसमयप्पहुडि णिरंतरमुप्पत्तीदो।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।६१८।

पढमकंदयस्स पढम-चरिमसमएसु उप्पण्णजीवे मोत्तूण सेसमज्झिमसमएसु वक्कमिदजीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवा होंति। ते असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।।६१९।।

केत्तियमेत्तेण? पढमकंदयस्स चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण।

पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।।६२०।।

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।।६२१।।

जीव अल्पबहुत्वका प्रकरण है ।।६१६।।

जो जीव अल्पबहुत्व कहा है उसे एककाण्डक और नाना काण्डकोंका आश्रय लेकर बतलावेंगे। उनमेंसे पहले एक काण्डकका आश्रय लेकर कहते हैं—

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोड़े हैं ।।६१७।।

प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें जो उत्पन्न हुए जीव हैं वे अनन्त होकर भी स्तोक हैं, क्योंकि प्रथम समयसे लेकर वे निरन्तर असंख्यातगुणे हीन क्रमसे उत्पन्न होते हैं।

अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।।६१८।।

प्रथम काण्डकके प्रथम समय और अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंको छोड़ कर शेष बीचके समयोंमें उत्पन्न हुए जीव अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीव होते हैं। वे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ।।६१९।।

कितने अधिक हैं? प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ।।६२०।।

गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ।।६२१।।

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥६२२॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण । एवं पढमकंदयजीवअप्पाबहुअं परूविदं । जहा पढमकंदयस्स एदं जीवप्पाबहुअं परूविदं तहा सेससव्वकंदयाणं पि परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । संपहि णाणाकंदयजीवअप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा—

सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ॥६२३॥

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसांतरवक्कमणकंदयाणं चरिमकंदयचरिमसमए वक्कमिदजीवा थोवा ।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥६२४॥

पढमकंदयपढमसमए चरिमकंदयचरिमसमए वक्कमिदजीवे मोत्तूण सेसआवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकंदयाणं जीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कंता णाम । ते असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥६२५॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥६२२॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । इस प्रकार प्रथम काण्डकसम्बन्धी जीव अल्पबहुत्वका कथन किया । जिस प्रकार प्रथमकाण्डकका यह जीव अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार शेष सब काण्डकोंके जीव अल्पबहुत्वोंका भी कथन करना चाहिए । अब नाना काण्डकसम्बन्धी जीव अल्पबहुत्वको बतलावेंगे । यथा—

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोड़े हैं ॥६२३॥

सान्तर उपक्रमणकाण्डक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उनके अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीव थोड़े हैं ।

अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥६२४॥

प्रथम काण्डकके प्रथम समयमें और अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंको छोड़कर शेष आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काण्डकोंके जीव अप्रथम-अचरम-समयोंमें उत्पन्न होनेवाले कहलाते हैं । वे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥६२५॥

१. अ०प्रतौ 'जीवा' इति स्थाने 'जीवा विसेसाहिया' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण ? चरिमकंदयचरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

पढमसमए[1] वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥६२६॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥६२७॥

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमिदजीवा विसेसाहिया ॥६२८॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

सव्वो बादरणिगोदो पज्जत्तो वा वामिस्सो वा ॥६२९॥

खंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण एदं सुत्तं परूविदं ण सरीरे, एगम्मि सरीरे पज्जत्तापज्जत्तजीवाणमवट्ठाणविरोहादो। किमट्ठमिदं सुत्तमागदं ? खंधंडरावासपुलवियासु किं बादर-सुहुमणिगोदजीवा सुद्धा पज्जत्ता चेव होंति आहो अपज्जत्ता चेव किं वामिस्सा त्ति पुच्छिदे एवं होंति त्ति जाणावणट्ठं इदं सुत्तमागदं । सव्वो बादरणिगोदो

कितने अधिक हैं ? अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥६२६॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥६२७॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न हुए जीव विशेष अधिक हैं ॥६२८॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

इस प्रकार जीव अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सब बादर निगोद पर्याप्त हैं या मिश्ररूप हैं ॥६२९॥

स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर यह सूत्र कहा गया है, शरीरोंका आश्रय लेकर नहीं कहा गया है, क्योंकि एक शरीरमें पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका अवस्थान होनेमें विरोध है ।

शंका—यह सूत्र किसलिए आया है ?

समाधान—स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोमें क्या बादर और सूक्ष्म निगोद जीव केवल पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या क्या मिश्र होते हैं ऐसा पूछनेपर इस प्रकार होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह सूत्र आया है ।

१. अ०प्रतौ 'पढमए' इति पाठः ।

पज्जत्तो वा होदि। कुदो ? बादरणिगोदपज्जत्तेहि सह खंधंडरावासपुलवियासु उप्पण्ण-बादरणिगोदअणंतापज्जत्तएसु अंतोमुहुत्तेण कालेण णिस्सेसं मुदेसु सुद्धाणं बादर-णिगोदपज्जत्ताणं चेव तत्थावट्ठाणदंसणादो। किमट्ठमपज्जत्ताणं पुव्वं चेव सव्वेसिं मरणं होदि। पज्जत्ताउआदो अपज्जत्ताउअस्स थोवत्तुवलंभादो अपुव्वाणं बादर-णिगोदाणं उप्पत्तीए विणट्ठजोगत्तादो च। एत्तो हेट्ठा पुण बादरणिगोदो वामिस्सो होदि, खंधंडरावासपुलवियासु बादरणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं अणंताणं[1] सहावट्ठाण-दंसणादो।

सुहुमणिगोदवग्गणाए पुण णियमा वामिस्सो[2] ॥६३०॥

सुहुमणिगोदवग्गणाए पज्जत्तापज्जत्ता च जेण सव्वकालं संभवंति तेण सा णियमा पज्जत्तापज्जत्तजीवेहि वामिस्सा होदि। किमट्ठं सव्वकालं संभवंति ? सुहुम-णिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं वक्कमणपदेस-कालणियमाभावादो। एत्थ पदेसे एत्तियं चेव कालमुप्पत्ती परदो ण उप्पज्जंति त्ति जेण णियमो णत्थि[3] तेण सा सव्वकाले वामिस्सा त्ति भणिदं होदि। 'वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं' एदस्स गाहापच्छि-

सब बादर निगोद जीव पर्याप्त होते हैं, क्योंकि बादर निगोद पर्याप्तकोंके साथ स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें उत्पन्न हुए अनन्त बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर सबके मर जानेपर वहाँ केवल बादर निगोद पर्याप्तकोंका ही अवस्थान देखा जाता है।

शंका—सब अपर्याप्तकोंका पहले ही मरण क्यों होता है ?

समाधान—क्योंकि पर्याप्तकोंकी आयुसे अपर्याप्तकोंकी आयु स्तोक उपलब्ध होती है और अपूर्व बादर निगोदोंकी उत्पत्तिके कारणभूत योगका नाश हो जाता है।

परन्तु इससे पूर्व बादर निगोद व्यामिश्र होता है, क्योंकि स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें अनन्त बादर निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका एक साथ अवस्थान देखा जाता है।

परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें नियमसे मिश्ररूप है ॥६३०॥

यतः सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वदा सम्भव हैं, इसलिए वह नियमसे पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंसे मिश्ररूप होती है।

शंका—उसमें सर्वकाल किसलिए सम्भव हैं ?

समाधान—क्योंकि सूक्ष्म निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंकी उत्पत्तिके प्रदेश और कालका कोई नियम नहीं है। इस प्रदेशमें इतने ही कालतक उत्पत्ति होती है आगे उत्पत्ति नहीं होती इस प्रकारका चूंकि नियम नहीं है इसलिए वह सूक्ष्मनिगोदवर्गणा सर्वदा मिश्ररूप होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

इस प्रकार वक्कमदि 'जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं' गाथाके इस पश्चिमार्धके अर्थका कथन

१. ता०प्रतौ '-पज्जत्तापज्जत्ताण [पज्जत्ताणं] अणंताणं' अ०का०प्रत्योः 'पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्ताणं' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'वामिस्सा' इति पाठः। ३. अ०का०प्रत्योः 'अत्थि' इति पाठः।

मद्धस्स अत्थपरूवणा समत्ता । 'जत्थेय मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं' एदस्स गाहापढमद्धस्स अत्थपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जो णिगोदो जहण्णएण वक्कमणकालेण वक्कमंतो जहण्णएण पबंधणकालेण पबद्धो तेसिं बादरणिगोदाणं तथा पबद्धाणं मरण-क्कमेण णिग्गमो होदि ॥६३१॥

बादरणिगोदाणं वक्कमणकालो उप्पत्तिकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जो णिगोदो जहण्णेण उप्पत्तिकालेण उप्पज्जमाणो तस्स पबंधणकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णएण पबंधणकालेण जो पबद्धो । जो णिगोदो जहण्णेण वक्कमणकालेण वक्कममाणो जहण्णेण पबंधणकालेण पबद्धो तस्स मरणक्कमं परूवेमि त्ति भणिदं होदि । अणंताणं णिगोदाणं कथमेग-वयणेण णिद्देसो ? ण, सरीरदुवारेण तेसिमेयत्तमत्थि त्ति एगवयणेण णिद्देसा-विरोहादो । को पबंधणकालो णाम ? प्रबध्नन्ति एकत्वं गच्छन्ति अस्मिन्निति प्रबन्धनः । प्रबन्धनश्चासौ कालश्च प्रबन्धनकालः । तेण पबंधणकालेण पबद्धाणं बादर-णिगोदाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि । केरिसाणं बादरणिगोदाणं त्ति भणिदे 'तहा

किया । अब इसी गाथाके 'जत्थेय मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं' इस पूर्वार्धके अर्थका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा बन्धको प्राप्त हुआ है उन बादर निगोदोंका उस प्रकारसे बन्ध होने पर मरणके क्रमानुसार निर्गम होता है ॥६३१॥

बादर निगोदोंका प्रक्रमणकाल अर्थात् उत्पत्तिकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । वहां जो निगोद जघन्य उत्पत्ति कालके द्वारा उत्पन्न होता है उसका प्रबन्धनकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उनमेंसे जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा जो बन्धको प्राप्त हुआ । अर्थात् जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धन कालके द्वारा बन्धको प्राप्त होता है उसके मरणके क्रमका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका– अनन्त निगोदोंका एक वचनके द्वारा निर्देश कैसे किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि शरीर द्वारा उनका एकत्व है, इसलिए एक वचन द्वारा निर्देश करनेमें विरोध नहीं है ।

शंका—प्रबन्धनकाल किसे कहते हैं ?

समाधान—बँधते हैं अर्थात् एकत्वको प्राप्त होते हैं जिसमें उसे प्रबन्धन कहते हैं । तथा प्रबन्धनरूप जो काल वह प्रबन्धनकाल कहलाता है ।

उस प्रबन्धनकालके द्वारा प्रबद्ध हुए बादर निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है । किस प्रकारके बादर निगोदोंका ऐसा पूछनेपर कहा है—'तहा पबद्धाणं' अर्थात् उस पहले कहेगये

पवद्धाणं' तेण पुव्वभणिदपयारेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए पवद्धाणं समुप्पण्णाण-मुप्पत्तिकमेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिग्गमो णत्थि किंतु मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति भणिदं होदि। कत्तो तेसिं णिग्गमो ? एगसरीरादो। जहण्णसंचयकालेण संचिदाणं अण्णोण्णाणुगयभावेण जहण्णकालमवट्ठिदाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि। उप्पत्तिक्कमेण ण होदि त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एत्थ जहण्णवक्कमणकालेण संचिदाणं जहण्णपबंधणकालेण पबद्धाणं चेव मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति णियमाभावादो। किंतु जहण्णवक्कमण-जहण्णपबंधणकालवयणं देसामासियं तेण सव्वुवक्कमणकालेसु संचिदाणं सव्वपबंधणकालेसु पबद्धाणं उप्पत्तिकमेण णिग्गमो ण होदि'। किंतु मरणक्कमेण होदि त्ति पत्तेयं पत्तेयं परूवणा कायव्वा। एक्कम्हि सरीरे उप्पज्जमाण-बादरणिगोदा किमक्कमेण उप्पज्जंति आहो कमेण। जदि अक्कमेण उप्पज्जंति तो अक्कमेणेव मरणेण वि होदव्वं, एक्कम्हि मरंते संते अण्णेसिं मरणाभावे साहारणत्त-विरोहादो। अह जई कमेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए उप्पज्जंति तो मरणं पि जवमज्झागारेण ण होदि, साहारणत्तस्स विणासप्पसंगादो त्ति। एत्थ परिहारो

प्रकारके अनुसार असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे बँधे हुए और उत्पन्न हुए निगोदोंका उत्पत्तिके क्रमसे अर्थात् असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे निर्गम नहीं होता किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका – किससे उनका निर्गम होता है ?

समाधान—एक शरीरसे।

शंका—जघन्य संचयकाल द्वारा संचयको प्राप्त हुए और परस्पर अनुगतरूपसे जघन्य कालतक अवस्थित हुए जीवोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है, उत्पत्तिके क्रमसे नहीं होता है यह किसलिए कहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहाँपर जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा संचित हुए और जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका ही मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकारका नियम नहीं है। किन्तु जघन्य उत्पत्तिकाल और जघन्य प्रबन्धनकाल वचन देशामर्षक है। इससे सब उत्पत्ति कालोंमें संचित हुए और सब प्रबन्धन कालोंमें बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गम नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकार अलग अलग प्ररूपणा करनी चाहिए।

शंका—एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले बादर निगोद जीव क्या अक्रमसे उत्पन्न होते हैं या क्रमसे ? यदि अक्रमसे उत्पन्न होते हैं तो अक्रमसे ही मरण होना चाहिए, क्योंकि एकके मरनेपर दूसरों का मरण न होनेपर उनके साधारण होनेमें विरोध आता है। और यदि क्रमसे असंख्यात-गुणी हीन श्रेणिरूपसे उत्पन्न होते हैं तो मरण भी यवमध्यके आकाररूपसे नहीं हो सकता है, क्योंकि साधारणपनेके विनाशका प्रसंग आता है ?

१. मप्रतिपाठोऽयम्। अ०प्रतौ 'णिग्गमो [ण] होदि' अ०का०प्रत्योः 'णिग्गमो होदि' इति पाठः।
२. मप्रतिपाठोऽयम्। प्रतीषु 'अह जइ' इति पाठः।

वुच्चदे - असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए कमेण वि उप्पज्जंति अक्कमेण वि अणंता जीवा एगसमए उप्पज्जंति । ण च साहारणत्तं फिट्टदि ।

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं ॥ २२ ॥

एदीए गाहाए भणिदलक्खणाणमभावे साहारणत्तविणासादो । तदो एगसरीरुप्पण्णाणं मरणकमेण णिग्गमो होदि त्ति एदं पि ण विरुज्झदे । ण च एगसरीरुप्पण्णा सव्वे समाणाउआ चेव होंति त्ति णियमो अत्थि जेण अक्कमेण तेसिं मरणं होज्ज । तम्हा एगसरीरट्ठिदाणं पि मरणजवमज्झं समिलाजवमज्झं च होदि त्ति घेत्तव्वं । संपहि सो मरणकमो दुविहो जवमज्झकमेण अजवमज्झकमेण चेदि । तत्थ जवमज्झकमेण मरणविहाणमुवरि भणिस्सदि । अजवमज्झकमेण जो णिग्गमो तप्परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणेण मदाणं सव्वचिरेण कालेण णिल्लेविज्जमाणाणं तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ॥६३२॥

मरणगुणसेडी जहण्णा वि अत्थि उक्कस्सा वि अत्थि । तत्थ जहण्णगुणसेडि-

समाधान—यहां इस शंका का परिहार करते हैं—असंख्यातगुणी हीन श्रेणिके क्रमसे भी उत्पन्न होते हैं और अक्रमसे भी अनन्त जीव एक समयमें उत्पन्न होते हैं। और साधारणपना भी नष्ट नहीं होता है, क्योंकि—

साधारण आहार और साधारण श्वास-उच्छ्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ २२ ॥

इस प्रकार इस गाथा द्वारा कहे गये लक्षणोंके अभावमें ही साधारणपनेका विनाश होता है। इसलिए एक शरीरमें उत्पन्न हुए निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकार यह कथन भी विरोधको नहीं प्राप्त होता। और एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब समान आयुवाले ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, जिससे अक्रमसे उनका मरण होवे, इसलिए एक शरीरमें स्थित हुए निगोदोंका मरण यवमध्य और शमिलायवमध्य है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। वह मरण दो प्रकारका है—यवमध्यके क्रमसे और अयवमध्यके क्रमसे। उनमेंसे यवमध्यके क्रमसे मरणविधिका कथन आगे करेंगे। अयवमध्यके क्रमसे जो निर्गम है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा मरणसे मरे हुए तथा सबसे दीर्घ काल द्वारा निर्लेप्यमान होनेवाले उन जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥६३२॥

मरणगुणश्रेणि जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमेंसे जघन्य गुणश्रेणिमरणका

मरणणिवारणट्ठं सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणं तेण मरणेण मदाणं ति भणिदं। णिल्लेवणकालो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि। तत्थ जहण्णणिल्लेवणकाल-णिवारणट्ठं सव्वचिरेण कालेण णिल्लेविज्जमाणाणं ति भणिदं। तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागो णिगोदाणं ति भणिदे खीणकसायचरिम-समए मदावसिट्ठाणं जीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं पुलवियाणं पमाणं होदि त्ति भणिदं होदि। खीणकसायचरिमसमए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोद-सरीराणि होंति। तत्थ एक्केक्कम्हि सरीरे मदावसिट्ठजीवा अणंता भवंति। तेसि-माधारभूदपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति। एदेण जहण्ण-बादरणिगोदवग्गणापमाणपरूवणा कदा।

एत्थ चत्तारि अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति—परूवणा पमाणं सेडी अप्पाबहुअं चेदि। एदहि चदुहि अणियोगद्दारेहि खीणकसायकालब्भंतरे वज्झमाणं-थूहल्लयादिसु वा मरंतजीवाणं परूवणा कीरदे। तं जहा—अत्थि खीणकसायपढमसमए मदजीवा। विदियसमए मदजीवा वि अत्थि। तदियसमए मरंतजीवा वि अत्थि। एवं णेयव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। एवं परूवणा गदा।

खीणकसायपढमसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। विदियसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। तदियसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। एवं णेयव्वं जाव खीण-

निवारण करनेके लिए सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा जो मरण है उस मरणसे मरे हुए जीवोंका ऐसा कहा है। निर्लेपनकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमें से जघन्य निर्लेपनकालका निवारण करनेके लिए सबसे दीर्घ कालके द्वारा निर्लेप्यमान हुए जीवोंका ऐसा कहा है। 'तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखे०भागो णिगोदाणं' ऐसा कहने पर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें मरनेके बाद बचे हुए जीवोंमें निगोद अर्थात् पुलवियोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। क्षीणकषायके अन्तिम समयमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। वहां एक एक शरीरमें मरनेके बाद बचे हुए जीव अनन्त होते हैं। तथा उनकी आधारभूत पुलवियां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं। इस द्वारा जघन्य बादर निगोद वर्गणाके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है।

यहां चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व। इन चार अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर क्षीणकषायकालके भीतर मरनेवाले अथवा थूवर और आर्द्रक आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव हैं। दूसरे समयमें मरे हुए जीव हैं और तीसरे समयमें मरनेवाले जीव हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। दूसरे समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। तीसरे समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। इस प्रकार

१. अ०का०प्रत्योः 'दज्झमाण—' इति पाठः।

कसायचरिमसमश्रो त्ति । एवं पमाणाणुगमो समत्तो ।

सेडिपरूवणा दुविहा—अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा—खीणकसायपढमसमए मरंता जीवा थोवा । विदियसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । तदियसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलियपुधत्तं ति । विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण होदि । तदणंतरउवरिमसमयप्पहुडि संखेज्जदिभागब्भहिया जाव विसेसाहियमरणचरिमसमओ त्ति । विसेसो पुण संखेज्जरूवपडिभागेण । तदो खीणकसायकालस्स असंखेज्जदिभागे आवलियाए असंखेज्जदिभागे सेसे गुणसेडिमरणं होदि । तदो विसेसाहियमरणचरिमसमए मदजीवेहिंतो गुणसेडिमरणपढमसमए मरंता जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । विदियसमए मरंता जीवा असंखेज्जगुणा । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । के वि आइरिया जीवे मोत्तूण पुलवियाणमुवरि इमं परूवणं कुणंति तेसिं गुणगारपमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति ण होदि । कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेसु जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तेसु वि अण्णोण्णगुणिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाणमुप्पत्तीदो । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

क्षीणकषायके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार प्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है--अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमेंसे पहले अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । यथा—क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक हैं । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । तीसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिपृथक्त्वप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । परन्तु विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेसे प्राप्त होता है । आवलिपृथक्त्वके बाद अगले समयसे लेकर विशेष अधिकके क्रमसे मरनेवाले जीवोंके अन्तिम समयतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें संख्यातवें भाग अधिक संख्यातवें भाग अधिक जीव मरते हैं । यहाँ विशेषका प्रमाण संख्यातका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना है । अनन्तर क्षीणकषायके कालके असंख्यातवें भागप्रमाण अर्थात् आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहनेपर गुणश्रेणिमरण होता है । अत: विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें मरे हुए जीवोंसे गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । कितने ही आचार्य जीवोंको छोड़कर पुलवियोंका अवलम्बन लेकर यह प्ररूपणा करते हैं । उनके मतमें गुणकारका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण भी नहीं होता है, क्योंकि जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भागोंके परस्पर गुणा करनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी उत्पत्ति होती है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

खीणकसायपढमसमए मदजीवेहिंतो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि। एवमेत्तियमेत्तियमवट्ठिदमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी जाव असंखेज्जदिभागब्भहियमरणचरिमसमओ त्ति। तत्तो उवरि संखेज्जसमयमेत्तमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि जाव संखेज्जदिभागब्भहियमरणचरिमसमओ त्ति। तेण परं णिरंतरकमेण असंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। एत्थ तिण्णि अणियोगद्दाराणि—परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि। परूवणदाए एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाणागुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ च अत्थि। पमाणं—असंखेज्जभागब्भहियमरणम्मि एगजीवदुगुणवड्ढिट्ठाणंतरमावलियाए असंखेज्जदिभागो। संखेज्जभागब्भहियमरणम्मि एगजीवदुगुणवड्ढिअद्धाणं संखेज्जसमयमेत्तं होदि। णाणागुणहाणिसलागपमाणमावलियाए संखेज्जदिभागो। अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवं एगजीवदुगुणवड्ढिट्ठाणंतरं। णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। एवं परम्परोवणिधा समत्ता।

अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवा खीणकसायपढमसमए मदजीवा। अपढम-अचरिमसमएसु मदजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? खीणकसायपढम-चरिमसमएसु मदजीवे मोत्तूण तत्थ सेसासेसमदजीवग्गहणादो। अचरिमसमए मदजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? पढमसमए मदजीवमेत्तेण। चरिमसमए मदजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है। इस प्रकार इतने इतने अवस्थित स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह दूनी वृद्धिका क्रम असंख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक जानना चाहिये। उसके आगे संख्यात समय प्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह क्रम संख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समय तक जानना चाहिए। उसके आगे निरन्तरक्रमसे क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे होते हैं। यहां तीन अनुयोगद्वार हैं—प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। प्ररूपणा की अपेक्षा एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिस्थानान्तर शलाकाएं हैं। प्रमाण—असंख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। संख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिअध्वान संख्यात समयप्रमाण है। नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अल्पबहुत्व—एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर सबसे स्तोक है। नानागुणहानिशलाकाएं असंख्यातगुणी हैं। इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व—क्षीणकषायके प्रथम समयमें मृत जीव सबसे थोड़े हैं। अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीव असंख्यतगुणे हैं। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि क्षीणकषायके प्रथम और अन्तिम समयमें मरे हुए जीवोंको छोड़कर वहाँ शेष समस्त मृत जीवोंको ग्रहण किया है। अचरम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं। अन्तिम समयमें मृत जीव

अपढमसमए मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु मदजीव-मेत्तेण । सव्वेसु समएसु मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पढमसमए मदजीव-मेत्तेण । एवं अप्पाबहुअं समत्तं ।

संपहि खीणकसायकाले जहण्णाउअमेत्ते सेसे बादरणिगोदा ण उप्पज्जंति खीणकसायसरीरे । कुदो ? जीवणियकालाभावादो । एदस्स अत्थस्स जाणावणट्ठं आउआणमप्पाबहुअं भणदि—

एत्थ अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥६३३॥

कुदो ? एइंदियस्स बंधणिसेयखुद्दाभवग्गहणं घादिय उप्पाइदसव्वजहण्ण-जीवणियकालग्गहणादो । खीणकसायकाले एत्तियमेत्ते सेसे बादर-सुहुमणिगोदजीवा णियमा ण उप्पज्जंति त्ति घेत्तव्वं ।

एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥६३४॥

कुदो ? बादर-सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं घादेण विणा जहण्णजीवणियकाल-ग्गहणादो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥६३५॥

असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अप्रथम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । सब समयोंमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब क्षीणकषायके कालमें जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते है, क्योंकि जीवनीय कालका अभाव है । इस प्रकार इस अर्थका ज्ञान करानेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व कहते हैं—

यहाँ अल्पबहुत्व—क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है ॥६३३॥

क्योंकि एकेन्द्रियके बन्धको प्राप्त हुए निषेकरूप क्षुल्लकभवग्रहणका घात करके उत्पन्न कराये गए सबसे जघन्य जीवनीयकालका यहाँ ग्रहण किया है । क्षीणकषायके कालमें इतने कालके शेष रहनेपर बादर निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव नियमसे नहीं उत्पन्न होते हैं यह यहाँपर ग्रहण करना चाहिए ।

एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥६३४॥

क्योंकि बादर और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके घात हुए बिना प्राप्त हुए जघन्य जीवनीय कालका ग्रहण किया है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

वही उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥६३५॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो[1]। जहण्णाउआदो उक्कस्साउअं असंखेज्जगुणमिदि[2] के वि आइरिया भणंति तमेदेण सह किण्ण विरुज्झदे ? ण, वक्खाणेण सुत्तस्स बाधाभावादो। जवमज्झमरणचरिमसमए मोत्तूण गुणसेडिमरण-चरिमसमए चेव जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति जाणावणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तो णिगोदाणं ॥६३६॥

खीणकसायचरिमसयए जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि। तत्थ णिगोदाणं पमाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागो। के णिगोदा णाम ? पुलवियाओ। एदेण पल्लंगुल--जगसेडि--पदरादीणमसंखेज्जदिभागो पडिसिद्धो। सुत्तेण विणा जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा खीणकसायचरिमसमए चेव होदि त्ति कुदो णव्वदे ? सुत्ताविरुद्धा-इरियवयणादो। जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए पमाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है।

शंका—जघन्य आयुसे उत्कृष्ट आयु असंख्यातगुणी है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। उसका इसके साथ विरोध कैसे नहीं होता ?

समाधान—नहीं, क्योंकि व्याख्यानसे सूत्रमें बाधा नहीं आती।

अब यवमध्यमरणके अन्तिम समयको छोड़कर गुणश्रेणिमरणके अन्तिम समयमें ही जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जघन्य बादर निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र होता है ॥६३६॥

क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है। वहाँ निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है।

शंका—निगोद कौन है ?

समाधान—पुलवियाँ।

इस वचनके द्वारा पल्य, अङ्गुल, जगश्रेणि और जगप्रतर आदिके असंख्यातवें भागका प्रतिषेध हो जाता है।

शंका—सूत्रके बिना जघन्य बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ही होती है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—सूत्राविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

अब जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१. अ०प्रतौ 'असंखे०भागो भागमेत्तो' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'उक्कस्साउअ संखेजगुणमिदि' इति पाठः।

सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तो णिगोदाणं ॥६३७॥

एसा जहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा जले थले आगासे वा होदि, दव्व-खेत्त-काल-भावणियमाभावादो। एदिस्से वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ अणंताणंतजीवावूरिदअसंखेज्जलोगमेत्तसरीराओ होंति। संपहि सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणाए पमाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तो णिगोदाणं ॥६३८॥

जा उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा तत्थ पुलवियाणं पमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो चेव। एदेण पल्लस्स असंखेज्जदिभागादिसंखापडिसेहो कदो। एसा पुण सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणा महामच्छसरीरे चेव होंति ण अण्णत्थ, उवदेसाभावादो। संपहि बादरणिगोदुक्कस्सवग्गणाए पमाणपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ॥६३९॥

जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥६३७॥

यह जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणा जलमें, स्थलमें और आकाशमें होती है, इसके लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावका कोई नियम नहीं है। इसकी भी अनन्तानन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात लोकप्रमाण शरीरवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं। अब उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥६३८॥

जो उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा है उसमें पुलवियोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही है। इस वचन द्वारा पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण आदि संख्याका प्रतिषेध किया है। परन्तु यह उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा महामत्स्यके शरीरमें ही होती है, अन्यत्र नहीं होती, क्योंकि अन्यत्र होती है ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता। अब उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥६३९॥

मूलय-थूहल्लयादिसु सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीओ अणंतजीवावूरिद-असंखेज्जलोगसरीराओ घेत्तूण बादरणिगोदुक्कस्सवग्गणा होदि । णिगोदवग्गणाणं कारणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एदेसिं चेव सव्वणिगोदाणं[1] मूलमहाखंधट्ठाणाणि ॥६४०॥

सव्वणिगोदाणमिदि वुत्ते सव्वबादरणिगोदाणमिदि घेत्तव्वं । सुहुमणिगोदा किण्ण गहिदा ? ण, एत्थेव ते उप्पज्जंति अण्णत्थ ण उप्पज्जंति त्ति णियमाभावादो । महाक्खंधस्स ट्ठाणाणि त्ति भणिदे महाखंधस्स अवयवा त्ति घेत्तव्वं, ट्ठाणसद्दस्स सरूवपज्जायस्स दंसणादो । तेण महाक्खंधावयवा सव्वणिगोदाणमुप्पणा मूलं कारण-मिदि भणिदं होदि । ण च मूलसद्दो कारणत्थे अप्पसिद्धो, 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' इत्यत्र मूलशब्दस्य कारणपर्यायस्योपलम्भात् । महाक्खंधस्स ट्ठाणाणं परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

अट्ठ पुढवीओ टंकाणि कूडाणि भवणाणि विमाणाणि विमा-णिंदियाणि विमाणपत्थडाणि णिरयाणि णिरइंदियाणि णिरय-

मूली, थूवर और आर्द्रक आदिमें अनन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात लोकप्रमाण शरीरवाली जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं । अब निगोद वर्गणाओंके कारणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

इन्हीं सब निगोदोंका मूल महास्कन्धस्थान हैं ॥६४०॥

सब निगोदोंका ऐसा कहनेपर सब बादर निगोदोंका ऐसा कहना चाहिए ।

शंका—सूक्ष्म निगोदोंका ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि यहाँ ही वे उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र उत्पन्न नहीं होते ऐसा कोई नियम नहीं है ।

महास्कन्धके स्थान ऐसा कहनेपर महास्कन्धके अवयव ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्थान शब्द स्वरूप पर्यायवाची देखा जाता है । इसलिए महास्कन्धके अवयव सब निगोदोंकी उत्पत्ति-में मूल अर्थात् कारण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । मूल शब्द कारणरूप अर्थमें अप्रसिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' अर्थात् स्त्रियाँ अनर्थोंका मूल हैं इस वचनमें मूल शब्द कारणवाची उपलब्ध होता है । अब महास्कन्धके स्थानोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

आठ पृथिवियाँ, टङ्क, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक, विमानप्रस्तर, नरक,

---

१. ता०प्रतौ 'चेव [सव्व-] णिगोदाण' अ०का०प्रत्योः 'चेव णिगोदाणं' इति पाठः ।

पत्थडाणि गच्छाणि गुम्माणि वल्लीणि लदाणि तणवणप्फदि-आदीणि ॥६४१॥

घम्मादिसत्तणिरयपुढवीओ ईसप्पभारपुढवीए सह अट्ठ पुढवीओ महाखंधस्स ट्ठाणाणि होंति। सिलामयपव्वएसु उक्किण्णवावी-कूव-तलाय-जिणघरादीणि टंकाणि णाम। मेरु-कुलसेल-विंझ-सज्झादिपव्वया कूडाणि णाम। वलहि-कूडविवज्जिया सुर-णरावासा भवणाणि णाम। वलहि-कूडसमण्णिदा पासादा विमाणाणि णाम। उडु-आदीणि विमणाणिंदियाणि णाम। सग्गलोअसेडिबद्ध-पइण्णया विमाणपत्थडाणि णाम। णिरयसेडिबद्धाणि णिरयाणि णाम। सेडिबद्धाणं मज्झिमणिरयावासा णिरइंदयाणि णाम। तत्थतणपइण्णया णिरयपत्थडाणि णाम। गच्छ-गुम्म-तणवणप्फदि-लदा-वल्लीणमत्थो जाणिय वत्तव्वो। एदाणि महाक्खंधट्ठाणाणि। एदेण महाक्खंधस्स इंदियगेज्झाणमवयवाणं परूवणा कदा। जे पुण इंदियाणमगेज्झा सुहुमा महाखंधा-वयवा एदेहि समवेदा ते वि आगमचक्खूहि दट्ठव्वा। सचित्तवग्गणाओ एवं जहण्णाओ एवं च उक्कस्साओ। महाखंधवग्गणाए जहण्णुक्कस्सभावा एवं होंति त्ति जाणावणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

नरकेन्द्रक, नरकप्रस्तर, गच्छ, गुल्म, वल्ली, लता, और तृणवनस्पति आदि महास्कन्धस्थान हैं ॥६४१॥

ईषत्प्राग्भार पृथिवीके साथ घर्मा आदि सात नरक पृथिवियाँ मिलकर आठ पृथिवियाँ महास्कन्धके स्थान हैं। शिलामय पर्वतोंमें उकीरे गए वापी, कुआ, तालाब और जिनघर आदि टङ्क कहलाते हैं। मेरुपर्वत, कुलपर्वत, विन्ध्यपर्वत और सह्यपर्वत आदि कूट कहलाते हैं। वलभि और कूटसे रहित देवों और मनुष्योंके आवास भवन कहलाते हैं। वलभि और कूटसे युक्त प्रासाद विमान कहलाते हैं। उडु आदिक विमान इन्द्रक कहलाते हैं। स्वर्गलोकके श्रेणिबद्ध और प्रकीर्णक विमान विमानप्रस्तर कहलाते हैं। नरकके श्रेणिबद्ध नरक कहलाते हैं। श्रेणिबद्धोंके मध्यमें जो नरकावास हैं वे नरकेन्द्रक कहलाते हैं। तथा वहाँ के प्रकीर्णक नरकप्रस्तर कहलाते हैं। गच्छ, गुल्म, तृण वनस्पति, लता और बल्लीका अर्थ जानकर कहना चाहिए। ये महास्कन्धस्थान हैं। इस सूत्र द्वारा महास्कन्धके इन्द्रियग्राह्य अवयवोंका कथन किया है। परन्तु जो इन्द्रिय अग्राह्य सूक्ष्म महास्कन्धके अवयव हैं जो कि निगोदोंसे समवेत हैं वे भी आगमचक्षुओंसे जानने चाहिए। सचित्तवर्गणाएँ इस प्रकार जघन्य और इस प्रकार उत्कृष्ट होती हैं। महास्कन्धवर्गणामें जघन्य और उत्कृष्टभाव इस प्रकार होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

---

१. अ०का०प्रत्योः 'गुणाणि' इति पाठः। १. अ०का०प्रत्योः 'घम्मादिसव्वणिरय-' इति पाठः।

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहण्णपदे तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्कस्सपदे ॥६४२॥

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहण्णभावो होदि तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्कस्सभावो होदि । कुदो ? बादरतसपज्जत्ताणं कर-चरण-सरीराणं छेदण-भेदणादिवावारेण महाक्खंधावयवाणं भेदप्पसंगादो ।

जदा बादरतसपज्जत्ताणं जहण्णपदे तदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणमुक्कस्सपदे ॥६४३॥

कुदो ? तसबादरजीवेसु थोवेसु संतेसु कर-चरणादिवावारेण महाक्खंधस्स घादाभावादो । संपहि मरणजवमज्झ-समिलाजवमज्झादीणं परूवणट्ठं एसा संदिट्ठी जहाकमेण ट्ठवेदव्वा—
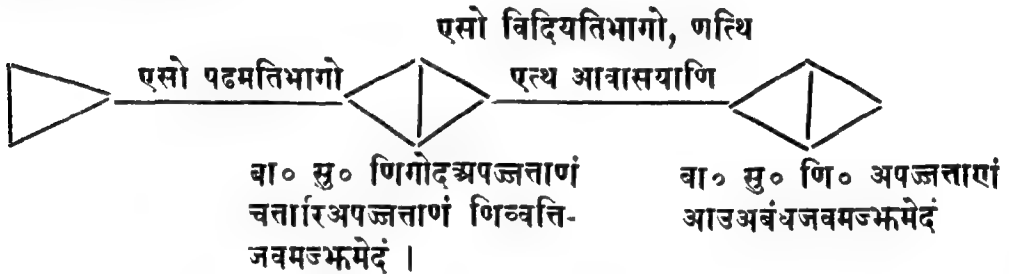
जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रस पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट पद होता है ॥६४२॥

जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्यभाव होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट भाव होता है, क्योंकि बादर त्रसपर्याप्तकोंके हाथ, पैर, और शरीरोंके छेदन, भेदन आदि व्यापारद्वारा महास्कन्धके अवयवोंका भेद प्राप्त होता है ।

जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्धोंका उत्कृष्ट पद होता है ॥६४३॥

क्योंकि त्रसबादर जीवोंके स्तोक होनेपर हाथ और पैर आदिके व्यापार द्वारा महास्कन्धका घात नहीं होता । अब मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए यह संदृष्टि क्रमसे स्थापित करनी चाहिए--
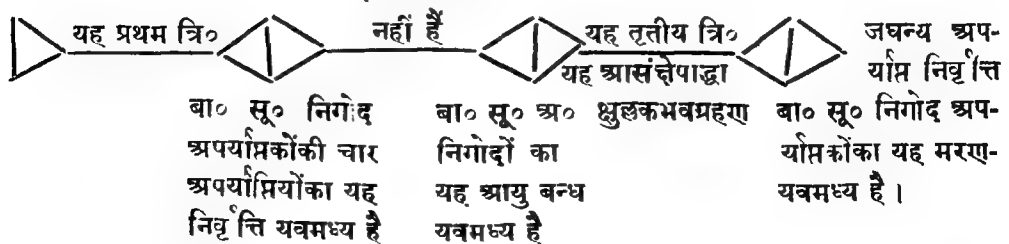
१. अ०प्रतौ 'जहा' इति पाठः । २. अ०प्रतौ 'तहा' इति पाठः ।

बाद० सु० णि० अपज्जत्ताणं
मरणजवमज्झमेदं ।

००००००००००	००००००००००००
सु० णि० अपज्जत्ताणं उक्कस्सणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि	बादरणिगोदअपज्जत्ताणं उक्कस्स-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि

बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सरीर-णिव्वत्तिजवमज्झमेदं ।

बा० सु० णिगोदपज्जत्ताणं आउअबंधजवमज्झमेदं ।

बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं
मरणजवमज्झमेदं ।

००००००००००	००००००००००००
ये सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं	ये बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं

यह द्वितीय त्रिभाग
यहाँ आवश्यक
नहीं है

यह प्रथम त्रि० — रक्तवर्ण — रक्तवर्ण — यह तृ० त्रि० — रक्तवर्ण

बा० सू० निगोद पर्याप्तकों का यह शरीर निर्वृत्ति यवमध्य है ।

बा० सू० निगोद पर्याप्तकोंका यह आयु यव-मध्य है ।

बा० सू० निगोद पर्याप्तकोंका यह मरण यवमध्य है ।

(१) एदमंतरं— आहारसरीरणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि 00000000	अंतरं	आहारसरीरिंदिय-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि 00000000	अंतरं	आहारसरीरआणापाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि 00000000

अंतरं	आहारसरीरभासाणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि 00000000	अंतरं	आहारसरीरमणणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि 000000000	आहारसरीरणिल्लेवण-ट्ठाणाणि एदाणि 000000000

(२) एदमंतरं—

000000000 वेउव्वियसरीरणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	00000000000 वेउव्वियसरीरइंदियणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	000000000 वेउव्वियसरीरआणापाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि

यह अन्तर ये आहारशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं— 00000000	अन्तर	ये आहारशरीरेन्द्रिय निर्वृत्ति स्थान है— 00000000	अन्तर	ये आहारशरीरश्वासोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं— 00000000

अन्तर	ये आहारशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं— 00000000	अन्तर	ये आहारशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं— 00000000	ये आहारशरीर निर्लेपनस्थान हैं 000000000

२ यह अन्तर है।

00000000 ये वैक्रियिकशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	0000000000 ये वैक्रियिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	000000000 ये वैक्रियिकशरीरश्वासोछ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं

अंतरं	oooooooooo वेउव्वियसरीरभासा- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	ooooooo वेउव्वियमणणिव्वत्ति- ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	oooooooooooo वेउव्वियसरीरणिल्लें- वणट्ठाणाणि एदाणि

(३) एदमंतरं—

oooooooooo ओरालियसरीरणिव्वत्ति- ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	oooooooooooo ओरालियसरीरइंदिय- णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	oooooooooooo ओरालियसरीरआणावाण- णिव्वत्तिट्ठाणाणिएदाणि

अंतरं	ooooooooooo ओरालियसरीरभामा- णिव्वत्तिट्ठाणाणिएदाणि	अंतरं	ooooooo ओरालियसरीरमण- णिव्वत्तिट्ठाणाणिएदाणि	अंतरं	ooooooooooooooo ओरालियसरीरणिल्ले- वणट्ठाणाणि एदाणि

अन्तर	oooooooooo ये वैक्रियिकशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	ooooooo ये वैक्रियिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	oooooooooooo ये वैक्रियिकशरीर निर्लेपनस्थान हैं

३ यह अन्तर है।

oooooooooo ये औदारिकशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	oooooooooooo ये औदारिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	oooooooooooo ये औदारिकशरीरोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं

अन्तर	ooooooooooo ये औदारिकशरीर भाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	ooooooo ये औदारिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	oooooooooooooo ये औदारिकशरीर निर्लेपनस्थान हैं

००००००००००००००० सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं	००००००००००००००० बादरणिगोदपज्जत्ताणं	०००००००००००००० पत्तेयसरीरपज्जत्ताणं

०००००००००००० एइंदियपज्जत्ताणं उक्कस्स- वावीससहस्साणि	०००००००००००० सम्मुच्छिमपज्जत्ताण- मुक्कस्सपुव्वकोडी	२१२१२१२१२१ ०००००

०००००००००० गब्भोवक्कंतियाणमुक्कस्स- तिण्णिपलिदोवमाणि	००००००००००००००००००००००००००००००० ▷ उववादियाणमुक्कस्सतिण्णिसागरोवमाणि

एवं बादर-सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं तेसिं पज्जत्ताणं च चत्तारि संदिट्ठीओ ट्ठविय 'जत्थेय मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं। वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदीए गाहाए सूचिदणिव्वत्तिजवमज्झ-मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झाणं तिण्णं सरीराणं पज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणादीणं परूवणट्ठं च उत्तरगंथो आगदो—

००००००००००००००० सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी	००००००००००००००००० बादरनिगोद पर्याप्तकोंके	००००००००००००००० प्रत्येक शरीरपर्याप्तकोंके

००००००००००००० एकेन्द्रियपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष	०००००००००००० सम्मूर्च्छन पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट पूर्वकोटि	२१२१२१२१२१ ०००००	०००००००००० गर्भजोंकी उत्कृष्ट तीन पल्य

०००००००००००००००००००००००००००००००० ▷   औपपादिकोंकी उत्कृष्ट   तेतीस सागर

इस प्रकार बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त तथा उनके पर्याप्तकोंकी चार संदृष्टियाँ स्थापित कर 'जहाँ एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है और जहाँ एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है।' इस गाथा द्वारा सूचित हुए निर्वृत्तियवमध्य, मरणयवमध्य और आयुबन्ध यवमध्योंका तथा तीन शरीरोंके पर्याप्तिनिर्वृत्ति स्थानादिकोंका कथन करनेके लिए आगेका ग्रन्थ आया है—

एत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कायव्वो भवदि ॥६४३॥

सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं। तं तिधा विहत्तं—हेट्ठिल्लए तिभाए सव्वजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती। मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि। उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं समिलामज्झे त्ति वुच्चदि ॥६४४॥

जं सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं तं तिविहत्तं कायव्वं। किमट्ठं तिधा विहज्जदे? तत्थ तिसु भागेसु आवासयपरूवणट्ठं। सव्वजहण्णखुद्दाभवग्गहणं ति वुत्ते घादखुद्दाभवग्गहणं घेत्तव्वं, अण्णत्थ आउअस्स खुद्दभावाणुववत्तीदो। हेट्ठिल्लए तिभागे सव्वजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति भणिदे जम्हि बादर-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तेहि आहार-सरीरिंदिय-आणपाणचत्तारिअपज्जत्तीओ णिव्वत्तिज्जंति जवमज्झसरूवेण सो पढमतिभागो णाम। उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण जेण सुहुम-बादरणिगोदअपज्जत्ताणं आहार सरीरिंदिय-आणपाणपज्जत्तीओ समाणिज्जंति जवसरूवेण ट्ठिदजीवेहि तेण हेट्ठिल्लए तिभागे सव्वजीवाणं जहण्णिया

यहाँसे आगे सब जीवोंमें महादण्डक करना चाहिए ॥६४३॥

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है। वह तीन प्रकारका है—अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्तनिर्वृत्ति होती है, मध्यम त्रिभागमें आवश्यक नहीं होते और उपरिम त्रिभागमें आयुबन्ध यवमध्य होता है। उसे शमिलायवमध्य कहा जाता है ॥६४४॥

जो सबसे स्तोक क्षुल्लकभवग्रहण है उसके तीन भेद करने चाहिए।

शंका—उसके तीन भेद किसलिए करते हैं?

समाधान—उसके तीनों भेदोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए उसके तीन भेद करते हैं।

सबसे जघन्य क्षुल्लकभवग्रहण ऐसा कहनेपर घातक्षुल्लकभवग्रहण लेना चाहिए, क्योंकि अन्यत्र आयुका क्षुल्लकपना नहीं बन सकता है। अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर जिसमें बादर निगोद अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास इन चार अपर्याप्तियोंको यवमध्यरूपसे रचते हैं वह प्रथम त्रिभाग है।

शंका—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम त्रिभागके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त और बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंकी आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियाँ यतः यवमध्यरूपसे स्थित जीवोंके द्वारा समाप्त की जाती हैं अतः

अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति ण घडदे ? ण एस दोसो, विसयसत्तमिमस्सिदूण सुत्तपवुत्तीदो। पढमतिभागविसए जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि त्ति जं भणिदं होदि। ण च विसयसत्तमी असिद्धा,

औपश्लेपिकवैषयिकाभिव्यापक इत्यपि।
आधारस्त्रिविधः प्रोक्तः कटाकाशतिलेषु च ॥ २३ ॥

इति वचनात्। अथवा पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागो वि पढमतिभागो णाम, 'ग्रामो दग्धः पटो दग्धः' इत्येवमादिषु समुदायेषु प्रवृत्तानां शब्दानामवयवेष्वपि वृत्तिदर्शनात्। मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि त्ति भणिदे पढमतिभागस्स संखेज्जा भागा विदियतिभागो सयलो च एसो मज्झिल्लतिभागो णाम। कथमेदस्स किंचूणदोतिभागस्स[1] मज्झिल्लतिभागववएसो ? ण एस दोसो, तिण्णं खंडाणं समविवक्खाभावादो। एत्थ एवंविहे तिभागे मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिजवमज्झावासयाणि णत्थि त्ति भणिदं होदि। उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं ति वुत्ते तदियतिभागे सुहुम-बादरअपज्जत्ताणमाउअबंधो होदि। सो चेव जवमज्झं होदि। कुदो ? जीवेहि जवमज्झागारेण अवट्ठाणादो। जवस्स मज्झिमपदेसो जवमज्झं ति एत्थ ण घेत्तव्वं

अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह कथन घटित नहीं होता ?

समाधान यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि विषयरूप सप्तमीका आश्रय लेकर सूत्रकी प्रवृत्ति हुई है। प्रथम त्रिभागको विषय करके जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और विषय सप्तमी असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि—

कट, आकाश और तिलमें औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक इस प्रकार आधार तीन प्रकारका कहा है ॥२३॥

ऐसा वचन है। अथवा प्रथम त्रिभागका संख्यातवाँ भाग भी प्रथम त्रिभाग कहलाता है। यथा—ग्राम जला, वस्त्र जला इत्यादि प्रयोगोंके करने पर समुदायमें प्रवृत्त हुए शब्दोंकी वृत्ति अवयवोंमें भी देखी जाती है। मध्यके त्रिभागमें आवश्यक नहीं है ऐसा कहनेपर प्रथम त्रिभागका संख्यात बहुभाग और पूरा द्वितीय त्रिभाग यह सब मध्यका त्रिभाग कहलाता है।

शंका—कुछ कम दो त्रिभागकी मध्यका त्रिभाग संज्ञा कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि तीनों खण्ड समान होते हैं ऐसी विवक्षा नहीं है।

यहां इस प्रकारके त्रिभागमें मरणयवमध्य, आयुबन्धयवमध्य और निर्वृत्तियवमध्य ये आवश्यक नहीं हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उपरिम त्रिभागमें आयुबन्ध यवमध्य है ऐसा कहने पर उसका आशय है कि तीसरे त्रिभागमें सूक्ष्म अपर्याप्त और बादर अपर्याप्तका आयुबन्ध होता है और वही यवमध्य होता है, क्योंकि जीव यवमध्यके आकारसे अवस्थित हैं। यहां पर यवमध्य पदसे यवका मध्यम प्रदेश ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए किन्तु यवका मध्य अर्थात्

१. अ०प्रतौ 'किंचूणत्तिभागस्स' इति पाठः।

किंतु जवस्स मज्झमब्भंतरमंतो त्ति घेत्तव्वं। अथवा समिलामज्झे त्ति वुच्चदि, जुवखीली समिला णाम। दोण्णं समिलाणं मज्झं समिलामज्झं तेण समाणत्तादो समिलामज्झं। एवं सव्वेसिं जवमज्झाणं जवमज्झं समिलामज्झे त्ति दोण्णामाणि होंति। तदिय-तिभागपढमसमयप्पहुडि जाव असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति ताव उवरिमतिभागस्स संखेज्जा भागा जेण आउअबंधजवमज्झस्स विसओ तेण उवरिल्लए तिभाए आउअबंध-जवमज्झमिदि ण घडदे ? न, 'एकदेशविकृतमनन्यवदत्' इति न्यायात्तदियतिभागस्स संखेज्जाणं भागाणं पि किंचूणाणं तदियतिभागववएसेण सह विरोहाभावादो। एसा परूवणा सरीरखंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण ण परूवेयव्वा, तत्थ णियमाणुव-लंभादो। किंतु जहण्णमाउअमस्सिदूण णिव्वत्तिसमिलाजवमज्झाणि परूवेयव्वाणि। मरणजवमज्झं पुण णाणाउअविसयं चेव, समाणाउआणं कमेण मरणाणुववत्तीदो।

तस्सुवरिमसंखेपद्धा ॥६४५॥

जहण्णओ आउअबंधकालो जहण्णविस्समणकालपुरस्सरो असंखेपद्धा णाम। सो जवमज्झचरिमसमयप्पहुडि ताव होदि जाव जहण्णाउअबंधकालचरिमसमओ त्ति। एसा वि असंखेपद्धा तदियतिभागम्मि चेव होदि, अज्जवि उवरि खुद्दाभवग्गहणस्स संभवादो।

भीतरी भाग ऐसा ग्रहण करना चाहिए। अथवा शमिलामध्य ऐसा कहते हैं। युगकीलीका नाम शमिला है और दो शमिलाओंके मध्यका नाम शमिलामध्य है। उसके समान होनेसे उसे शमिला-मध्य कहते हैं। इस प्रकार सब यवमध्योंके यवमध्य और शमिलामध्य ये दो नाम हैं।

शंका—तीसरे त्रिभागके प्रथम समयसे लेकर आसंक्षेपाद्धाके प्रथम समय तक उपरिम त्रिभागका संख्यात बहुभाग यतः आयुबन्धयवमध्यका विषय है अतः उपरिम त्रिभागमें आयुबन्ध-यवमध्य घटित नहीं होता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि एकदेश विकृत वस्तु अनन्यके समान अर्थात् उसीके समान होती है इस न्यायके अनुसार तृतीय त्रिभागके कुछ कम संख्यात बहुभागोंकी तृतीय त्रिभाग संज्ञा रखनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

यह प्ररूपणा शरीरके स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वहां कोई नियम नहीं उपलब्ध होता। किन्तु जघन्य आयुका आश्रय लेकर निर्वृत्ति शमिला यवमध्योंकी प्ररूपणा करनी चाहिए। परन्तु मरणयवमध्य नाना आयुओंको ही विषय करता है, क्योंकि समान आयुवालोंका क्रमसे मरण नहीं बन सकता है।

उसके ऊपर आसंक्षेपाद्धा है ॥६४५॥

जघन्य विश्रमणकाल पूर्वक जघन्य आयुबन्धकाल आसंक्षेपाद्धा कहा जाता है। वह यवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समय तक होता है। यह आसंक्षेपाद्धा तृतीय त्रिभागमें ही होता है, क्योंकि अभी भी ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण सम्भव है।

१. प्रतिषु 'तस्सुवरिमसंखेयद्धा' इति पाठः।

असंखेपद्धस्सुवरि[1] खुद्दाभवग्गहणं ॥६४६॥

आउअबंधे सते जो उवरि विस्समणकालो सव्वजहण्णो तस्स खुद्दाभवग्गहणं[2] ति सण्णा। सो तत्तो उवरि होदि। कथमेदस्स खुद्दाभवग्गहणववएसो? 'समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते' इति न्यायेन तस्य तदविरोधात्। एदं पि खुद्दाभवग्गहणं तदियतिभागे चेव, एदेण विणा तदियतिभागस्स संपुण्णत्ताणुववत्तीदो। अथवा असंखेपद्धस्सुवरि खुद्दाभवग्गहणं ति वुत्ते जहण्णाउअबंधकालचरिमसमयादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण हेट्ठिल्लभागेण सह घादखुद्दाभवग्गहणं होदि त्ति घेत्तव्वं।

खुद्दाभवग्गहणस्सुवरि जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ॥६४७॥

घादखुद्दाभवग्गहणस्सुवरि तत्तो संखेज्जगुणं अद्धाणं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णं जं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तस्स जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति सण्णा। एत्थ वि पुव्वं व दोहि पयारेहि वक्खाणं कायव्वं।

जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥६४८॥

आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लकभवग्रहण है ॥६४६॥

आयुबन्धके होने पर जो सबसे जघन्य विश्रमणकाल है उसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा है। वह आयुबन्धकालके ऊपर होता है।

शंका - इसकी क्षुल्लक भवग्रहण संज्ञा कैसे है?

समाधान - समुदायोंमें प्रवृत्त हुए शब्द उनके अवयवोंमें भी प्रवृत्ति करते हैं इस न्यायके अनुसार इसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

यह क्षुल्लकभवग्रहण भी तृतीय त्रिभागमें ही होता है, क्योंकि इसके विना तृतीय त्रिभाग सम्पूर्ण नहीं होता। अथवा आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण है ऐसा कहने पर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जा कर नीचेके भागके साथ घात क्षुल्लकभवग्रहण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

क्षुल्लकभवग्रहणके ऊपर जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥६४७॥

घात क्षुल्लक भवग्रहणके ऊपर उससे संख्यातगुणा अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके बन्धसे जो जघन्य निषेक क्षुल्लक भवग्रहण होता है उसकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति संज्ञा है। यहां पर भी पहलेके समान दो प्रकारसे व्याख्यान करना चाहिए।

जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिके ऊपर उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती है ॥६४८॥

१. प्रतिषु 'असंखेयस्सुवरि' इति पाठः। २. अ०प्रतौ 'तस्सखुद्दा' इति पाठः।

णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्सुवरि समउत्तरादिक्कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि । सा च अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया, पढमसमयप्पहुडि सव्वकालग्गहणादो । घादखुद्दाभवग्गहणचरिमसमयप्पहुडि जाव णिसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति ताव णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जेसु भागेसु मरणजवमज्झं होदि, तमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो, जवमज्झमिदि अणुवट्टदे तेणेवं संबंधो[1] कायव्वो जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती जवमज्झं होदि त्ति । तेण जवमज्झस्स एत्थ अत्थित्तं परूविदं चेव । हेट्ठिल्लए विभागजहण्णियाए अपज्जत्तणिप्पत्ती जवमज्झं होदि त्ति, एवमदिक्कंते सुत्ते वि संबंधो कायव्वो, जवमज्झस्स मज्झदीवयत्तेण अवट्ठाणुवलंभादो । एसा सव्वा पि परूवणा बादरणिगोदाणं । संपहि सुहुमणिगोदाणं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

तं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ॥६४९॥

तम्हि चेव बादरणिगोदणिव्वत्तिजवमज्झस्स गब्भे बादरजवमज्झस्स पढमचरिमसमए आवलि० असंखे०भागेण अपावेदूण सुहुमणिगोदजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि ।

निषेकक्षुल्लकभवग्रहणके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है । वह अपर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि यहां पर प्रथम समयसे लेकर समस्त कालका ग्रहण किया है ।

शंका—घात क्षुल्लक भवग्रहणके प्रथम समयसे लेकर निषेक क्षुल्लक भवग्रहणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उसमें निषेक क्षुल्लक भवग्रहणके संख्यात बहुभागोंमें मरणयवमध्य होता है उसका यहां पर कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यवमध्य पदकी अनुवृत्ति होती है, इसलिए इस प्रकार सम्बन्ध कर लेना चाहिए कि जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति यवमध्य होता है । इसलिए यवमध्यका यहाँ पर अस्तित्व कहा ही है । अधस्तन भागमें जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति यवमध्य होता है । इसी प्रकार पिछले सूत्रमें भी सम्बन्ध करना चाहिए, क्योंकि यवमध्यका मध्यदीपकरूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

यह सब प्ररूपणा बादर निगोदोंकी है । अब सूक्ष्म निगोदोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

वही सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति है ॥६४९॥

उसी बादर निगोद निर्वृत्ति यवमध्यके भीतर बादर यवमध्यके प्रथम और अन्तिम समयको आवलिके असंख्यातवें भागद्वारा न प्राप्त कर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

१. ता०प्रतौ '–मिदि वुत्ते अणुवट्टदे तेणेव संबंधो' इति पाठः ।

उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥६५०॥

सुगमं ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होंति ॥६५१॥

पढमदाए पढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदजीवाणं उक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती तत्थ इमाणि उवरि भण्णमाणआवासयाणि होंति, ण अण्णत्थ, असंभवादो । एदाणि पढमदाए वत्तव्वाणि, एदेहिंतो सेसावासयाणं सिद्धीए ।

तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्तयाणं[1] णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६५२॥

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण जवमज्झस्स पढमसमयो होदि त्ति वत्तव्वं । कुदो ? पढमसमयप्पहुडि उवरि ताव संखेज्जावलियाओ त्ति तत्थ णिल्लेवणट्ठाणाणमभावादो[2] । तत्थ ताणि णत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? अपज्जत्तणिव्वत्तणकालो जहण्णओ वि संखेज्जावलियमेत्तो चेव होदि त्ति गुरूवएसादो । जवमज्झमिदि किरियाविसेसणं, तेण जहा जवमज्झं होदि तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं

उपरिम उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ॥६५०॥

यह सूत्र सुगम है ।

वहाँ प्रथम समयसे लेकर ये आवश्यक होते हैं ॥६५१॥

पढमदाए अर्थात् प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति तक वहाँ ये आगे कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं अन्यत्र नहीं होते, क्योंकि अन्यत्र उनका होना असम्भव है । ये प्रथम समयसे कहने चाहिए, क्योंकि इनसे शेष आवश्यकोंकी सिद्धि होती है ।

तदनन्तर यवमध्यके व्यतीत होनेपर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥६५२॥

तदो ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर यवमध्यका प्रथम समय होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए, क्योंकि प्रथम समयसे लेकर ऊपर संख्यात आवलि काल तक वहाँ निर्लेपनस्थानोंका अभाव है ।

शंका—वहाँ वे नहीं हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि अपर्याप्त निर्वृत्तिकाल जघन्य भी संख्यात आवलिप्रमाण ही है ऐसा गुरुका उपदेश है । इससे जाना जाता है कि प्रथम समयसे लेकर संख्यात आवलिप्रमाण काल होने तक निर्लेपनस्थान नहीं होते ।

यवमध्य यह क्रियाविशेषण है, इसलिए जिस प्रकार यवमध्य होता है उस प्रकार जाकर

१. ता०प्रतौ '-णिगोदअपजत्तयाणं' इति पाठः । २. अ०प्रतौ '-ट्ठाणाणि समभावादो' इति पाठः ।

णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति भाणिदव्वं । किं णिल्लेवणं णाम ? आहार-सरीरिंदिय-आणपाणअपज्जत्तीणं णिव्वत्ती णिल्लेवणं णाम । जदि अपज्जत्ती ण तिस्से णिव्वत्ती अत्थि, विप्पडिसेहादो ? ण, अपज्जत्तीए वि अपज्जत्तिसरूवेण णिप्पत्तिं पडि विरोहाभावादो । ताणि च णिल्लेवणट्ठाणाणि जवमज्झं गदाणि आवलि० असंखे०-भागमेत्ताणि होंति । एदं कुदो[1] णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा—उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण चदुण्णमपज्जत्तीणं सिग्घं णिव्वत्तया सुहुमणिगोदअपज्जत्तया थोवा । ण च चत्तारि अपज्जत्तीओ वि जुगवं ण णिल्लेविज्जंति[2], आहार--सरीरिंदिय--आणपाणपज्जत्तीणं कमेण[3] णिप्पण्णाणमक्कमेण पच्छा णिल्लेवणुवलंभादो । णिप्पत्ति-णिल्लेवणाणं भेदमुवरिं भणिस्सामो । तदो समउत्तराए ट्ठिदीए णिव्वत्तिया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलि० असंखे०-भागमेत्तमद्धाणं गदं ति । पुणो तत्थ जवमज्झं होदि । जवमज्झस्सुवरिमसमए चत्तारि

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान होते हैं ऐसा कहलाना चाहिए।

शंका—निर्लेपन किसे कहते हैं ?

समाधान—आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास अपर्याप्तियोंकी निवृत्तिको निर्लेपन कहते हैं।

शंका—यदि अपर्याप्ति है तो उसकी निवृत्ति नहीं होती, क्योंकि अपर्याप्तिकी निवृत्ति होनेका निषेध है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अपर्याप्तिकी भी अपर्याप्तिरूपसे निष्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है।

वे निर्लेपनस्थान यवमध्यको प्राप्त हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं।

शंका—इस प्रकार किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—इसी सूत्रसे जाना जाता है। और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि ऐसा मानने पर अनवस्थाका प्रसंग आता है।

यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपकी प्ररूपणा करते हैं। यथा—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर चार अपर्याप्तियोंके शीघ्र निर्वर्तक सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव थोड़े हैं। चार अपर्याप्तियाँ एक साथ निर्लेपनभावको नहीं प्राप्त होतीं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि क्रमसे निष्पन्न हुई आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंका बादमें अक्रमसे निलपन भाव देखा जाता है। निष्पत्ति और निर्लेपनमें जो भेद है उसे आगे कहेंगे। उससे एक समय अधिक स्थितिको निर्वर्तक जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं। पुनः वहाँ पर यवमध्य होता है। यवमध्यके उपरिम समयमें चार

१. ता०प्रतौ 'एवं कुदो' इति पाठः। २. ता०प्रतौ णिल्लेविज्जदि' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ '-पज्जत्तीणि (ण) कमेण' का०प्रतौ '-पज्जत्तीणि कमेण' इति पाठः।

अपज्जत्तिणिल्लेवणा जीवा विसेसहीणा। एवं[1] विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण चत्तारिअपज्जत्तिणिल्लेवया जीवा समप्पंति। उप्पण्णसमयप्पहुडि आहारवग्गणादो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंत-भागमेत्तं पदेसपिंडं घेत्तूण आहार-सरीरिंदिय-आणपाणपज्जत्तीओ जुगवदेव पारंभिय तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारअपज्जत्तिं समाणिय तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सरीरअपज्जत्तिं समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पासिंदियअपज्जत्तिं समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आणपाणअपज्जत्तिं समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण चत्तारि वि अपज्जत्तीओ जुगवं णिल्लेवेदि त्ति भणिदं होदि। एवं सव्वणिल्लेवणट्ठाणाणं अत्थपरूवणा पुध पुध कायव्वा। एत्थ गुणहाणिअद्धाणस्स णाणागुणहाणिसलागाणं च पमाणमावलि० असंखे०भागो। एत्थ एगा वि गुणहाणी णत्थि त्ति के वि भणंति। एत्थ जवमज्झहेट्ठिम-अद्धाणादो उवरिमअद्धाणं सरिसमिदि के वि आइरिया भणंति। के वि विसेसाहिय-मिदि भणंति। के वि संखेज्जगुणं, के वि असंखे०गुणं ति। तेणेत्थ अम्हाणं ण णिच्छओ अत्थि। तदो जाणिऊण वत्तव्वं।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं[2] णिल्ले-

अपर्याप्तियोंके निर्लेपन करनेवाले जीव विशेष हीन हैं। इस प्रकार विशेष हीन विशेष हीन होते हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार अपर्याप्तियोंका निर्लेपन करनेवाले जीव समाप्त होते हैं। उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर आहारवर्गणामेंसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंको एकसाथ प्रारम्भ करके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहार अपर्याप्तिको समाप्त कर फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर शरीर अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्पर्शनेन्द्रिय अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर आनापान अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर चारों ही अपर्याप्तियोंको एकसाथ निर्लेपित करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार सब निर्लेपनस्थानोंकी अर्थप्ररूपणा अलग अलग करनी चाहिए। यहाँ पर गुणहानिअध्वान और नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यहाँ पर एक भी गुणहानि नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। तथा यहाँ पर यवमध्यका उपरिम अध्वान अधस्तन अध्वानके समान है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। तथा कितने ही आचार्य विशेष अधिक है ऐसा कहते हैं। तथा कितने ही संख्यातगुणा और कितने ही असंख्यातगुणा कहते हैं, इस लिए इस विषयमें हमारा कोई निश्चय नहीं है, इसलिए जानकर कथन करना चाहिए।

अनन्तर यवमध्य जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें

---

१. ता०प्रतौ 'विसेसाहिया। एवं' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-णिगोदअपज्जत्तयाण' इति पाठः।

वणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६५३॥

तदो इदि णिद्देसो किमट्ठं कदो ? उप्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेण आढप्पंति[1] त्ति जाणावणट्ठं कदो। उप्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेणाढाविय उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं वुत्तविहाणेण कमेण समाणिय तेसिं णिल्लेविज्जमाणट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि। तेसु ट्ठाणेसु ट्ठिदजीवा जवमज्झागारेण होंति त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदं। सेसं जहा सुहुमणिगोद-अपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणाणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कयव्वा। णवरि सुहुमणिगोद-जवमज्झस्स पढमणिल्लेवणट्ठाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखे०भागमेत्ताणि णिल्लेवण-ट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्तपढमणिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोद-अपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झादो बादरणिगोदअपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झं पुव्वं चेव आरंभदि त्ति भणिदं होदि। सुहुमणिगोदजवमज्झस्स चरिमणिल्लेवणट्ठाणादो आवलियाए असंखे०भागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तस्स चरिमणिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झादो आवलि० असंखे०भाग-मेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तजवमज्झं होदि। एदं[2] सुत्तेण

भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥६५३॥

शंका—तदो यह निर्देश किसलिए किया है ?

समाधान—उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् प्रारम्भ करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए तदो यह निर्देश किया है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् आरम्भ करके ऊपर अन्त-र्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उक्त विधिसे क्रमसे समाप्त करके उनके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण और उन स्थानोंमें स्थित जीव यवमध्यके आकारसे होते हैं इस बातका इस सूत्र द्वारा ज्ञान कराया गया है। शेष जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थानोंका कथन किया है उस प्रकार यहां भी करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद यवमध्यके प्रथम निर्लेपनस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन-स्थान उतरकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका प्रथम निर्लेपनस्थान होता है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकके निर्लेपनस्थान यवमध्यसे बादर निगोद अपर्याप्तकका निर्लेपनस्थान यवमध्य पहले ही आरम्भ होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके अन्तिम निर्लेपनस्थानसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तका अन्तिम निर्लेपन-स्थान होता है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके यवमध्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन-स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका यवमध्य होता है।

---

१. ता०प्रतौ 'आढवंति' इति पाठः। २. ता०का०प्रत्योः '—चरिमणिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोद-अपज्जत्तजवमज्झादो, एदं इति पाठः।

विणा कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । तदो सुहुमणिगोदजवादो तम्मज्झादो च उवरि जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि होंति त्ति सुत्तट्ठत्तादो वा एसो विसेसोवगम्मदे । हेट्ठिमभागस्स आवलि० असंखे०भागमेत्तमेदेणेव देसामासियसुत्तेणावगंतव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-बंधजवमज्झं ॥६५४॥

तदो जवमज्झं गंतूणे त्ति अभणिय तदो अंतोमु० गंतूण आउअबंधजवमज्झमिदि किमट्ठं भणिदं ? जहा आहारादिपज्जत्तीणं उप्पण्णपढमसमए चेव पारंभो होदि तहा आउअबंधस्स पारंभो ण होदि किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि सगजहण्णजीवियस्स वेतिभागे गंतूण तिभागावसेसे आउअबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठं भणिदं। एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा—तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया जीवा जदि वि अणंता तो वि उवरिमजीवे पेक्खिदूण थोवा । विदियसमए आउअबंधया जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण आउअं बंधति जवमज्झे त्ति। तदो अणंतरउवरिमसमए विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं

शंका – सूत्रके बिना यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अथवा सूक्ष्म निगोदके यवसे और उसके मध्यसे ऊपर यवमध्य जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीव के निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं इसप्रकार यह विशेष सूत्रके अर्थका परामर्श करनेसे जाना जाता है। अधस्तन भागका जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है वह इसी देशामर्षक सूत्रसे जानना चाहिए।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवों का आयुबन्ध यवमध्य होता है ॥६५४॥

शंका -उसके बाद यवमध्य जाकर ऐसा न कहकर उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा किसलिए कहा है ?

समाधान—जिस प्रकार आहार आदि पर्याप्तियोंका उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही प्रारम्भ होता है उस प्रकार आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अपने जघन्य जीवित रहनेके दो त्रिभाग जाकर एक त्रिभाग शेष रहने पर आयुबन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहा है।

यहां पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा—तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव यद्यपि अनन्त हैं तो भी आगेके जीवोंको देखते हुए थोड़े हैं। दूसरे समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव आयुका बन्ध करते हैं। उसके बाद अनन्तर उपरिम समयोंमें विशेष हीन विशेष हीन जीव आयुका बन्ध करते हैं। इस प्रकार यह क्रम सूक्ष्म निगोद

असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति । एत्थ जवमज्झस्स हेट्ठा आवलि० असंखे०भागो उवरि अंतोमुहुत्तं एगगुणहाणिअद्धाणं णाणागुणहाणिसलागाओ च आवलियाए असंखे०-भागमेत्ताओ त्ति के वि आइरिया भणंति । के वि पुण एत्थ एगं पि दुगुणवड्ढिपमाणं णत्थि त्ति भणंति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-बंधजवमज्झं ॥६५५॥

एत्थ जधा सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्झस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा । णवरि सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स जहण्णट्ठाणादो हेट्ठा आवलि० असंखे०भागमेत्तट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं पढमं आउअबंधट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स चरिमट्ठाणादो उवरि आवलियाए असंखे०-भागट्ठाणाणि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं जवमज्झस्स चरिमट्ठाणं होदि । एवं जवमज्झदेसस्स वि वत्तव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं ॥६५६॥

तदो अंतोमुहुत्तमिदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव खुद्दाभवग्गहणचरिम-

अपर्याप्तकोंके आसंक्षेपद्धाके प्रथम समयके प्राप्त होने तक चालू रहता है । यहां पर एकगुण-हानिका अध्वान यवमध्यके नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है और ऊपर अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है । तथा नानागुणहानिशलाकाएं आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु कितने ही आचार्य यहां पर एक भी द्विगुणवृद्धिका प्रमाण नहीं है ऐसा कहते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुबन्ध यवमध्य होता है ॥६५५॥

यहां पर जिस प्रकार सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवोंके आयुबन्धयवमध्यका कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके यवमध्यके जघन्य स्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान सरककर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका प्रथम आयुबन्धस्थान होता है । तथा सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके अन्तिम स्थानसे ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका अन्तिम स्थान होता है । इसी प्रकार यवमध्यदेशका भी कथन करना चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयव-मध्य होता है ॥६५६॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर क्षुल्लकभव -

समओ त्ति ताव एत्तियमद्धाणं गंतूण मरणजवमज्झस्स पारंभो होदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे। तं जहा—खुद्दाभवग्गहणचरिमसमए मरंता जीवा अणंता वि होदूण उवरिमेहिंतो थोवा। तदणंतरउवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव जवमज्झे त्ति। तेण परं विसेसहीणा होदूण मरंति जाव णिसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति। एत्थ मरणजवमज्झस्स हेट्ठिमउवरिम-अद्धाणं सव्वं णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जा भागा। किंतु हेट्ठा आवलि० असंखे०-भागो उवरि अंतोमुहुत्तं। एत्थ वि गुणहाणिअद्धाण-णाणागुणहाणिसलागासु आइरियाणं पुव्वं व विप्पडिवत्ती परूवेयव्वा। एदेसिं तिण्णं जवमज्झाणं मज्झंतरे एगा वि दुगुणवड्ढी णत्थि त्ति एसो अत्थो जुत्तिमंतो। कुदो? सुत्तम्मि णाणागुणहाणि-सलागाणमेगगुणहाणिअद्धाणस्स च पमाणपरूवणाभावादो। ण च संतमत्थं सुत्तं वक्खाणाणि वा ण परूवेंति, विरोहादो[1]।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं ॥६५७॥

जहा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झस्स परूवणा कदा तहा

ग्रहणके अन्तिम समय तक इतना स्थान जाकर मरणयवमध्य का प्रारम्भ होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा—क्षुल्लकभवग्रहणके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होकर भी आगेके जीवोंसे स्तोक होते हैं। उससे अनन्तर उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक होते हैं। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक मरनेवाले जीव प्रति समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक होते हैं। उसके बाद निषेक क्षुल्लकभवग्रहणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं। यहाँ पर मरण यवमध्यका अधस्तन और उपरिम सब अध्वान निषेक क्षुल्लक भवग्रहणका संख्यात बहुभागप्रमाण होता है। किन्तु अधस्तन अध्वान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है और उपरमि अध्वान अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। यहाँ पर गुणहानिअध्वान और नानागुणहानिशलाकाओं-के विषयमें आचार्योंमें विवाद है सो इसका कथन पहलेके समान करना चाहिए। इन तीनों ही यवमध्योंके बीचमें एक भी द्विगुणवृद्धि नहीं है यह अर्थ युक्तिको लिए हुए है, क्योंकि सूत्रमें नानागुणहानिशलाकाओंके और एक गुणहानिअध्वानके प्रमाणका कथन नहीं किया है। और सूत्र व व्याख्यान सद्रूप अर्थका व्याख्यान नहीं करते हैं ऐसा नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है ॥६५७॥

जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके मरणयवमध्यका कथन किया है उस प्रकार

१. ता०प्रतौ 'परूवेंति त्ति, विरोहादो' इति पाठः।

बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं[1] पि मरणजवमज्झस्स परूवणा कायव्वा। णवरि बादरणिगोदअपज्जत्ताणं मरणजवमज्झे पारंभिय आवलि० असंखे०भागमेत्तद्धाणे गदे संते पच्छा सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स पारंभो होदि। सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झे समत्ते संते पच्छा उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं मरणजवमज्झं समप्पदि। के वि अंतोमुहुत्तमिदि भणंति। एवं दोण्णं जवाणं मज्झे देसपरूवणा जाणिदूण कायव्वा। जहण्णाउअम्मि संचयं गदसुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु कालं कादूण णिट्ठिदेसु जहण्णाउअम्मि संचयं गदबादरणिगोदअपज्जत्ता पच्छा कालं काऊण समप्पंति त्ति भणिदं होदि।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि ॥६५८॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणे त्ति वुत्ते मरणजवमज्झचरिमसमयादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति ण घेत्तव्वं। किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण मरणजवमज्झचरिमसमयप्पहुडि णिव्वत्तिट्ठाणाणि उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि होंति त्ति घेत्तव्वं। कुदो? सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तआउअस्स णिसेयट्ठिदिवियप्पाणं णिव्वत्तिट्ठाणत्तब्भुवगमादो[2]। तं जहा—सुहुमणिगोदजीव-

बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके भी मरणयवमध्यका कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अपर्याप्तकोंके मरणयवमध्यको प्रारम्भ करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर बादमें सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका प्रारम्भ होता है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके समाप्त होनेपर बादमें ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका मरण यवमध्य समाप्त होता है। यहाँ कितने ही आचार्य अन्तर्मुहूर्त काल कहते हैं। इस प्रकार दोनों यवोंके मध्यमें देशप्ररूपणा जानकर करनी चाहिए। जघन्य आयुके भीतर संचित हुए सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके मरकर समाप्त होनेके बाद जघन्य आयुके भीतर संचित हुए बादर निगोद अपर्याप्त जीव मरकर समाप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते है ॥६५८॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए। किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर निर्वृत्तिस्थान ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकी आयुके जो निषेकस्थितिविकल्प हैं उन्हें निर्वृत्तिस्थानरूपसे स्वीकार किया है।

१. अ०का०प्रत्योः '-णिगोदअपजत्ताणं' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'णिव्वत्तिट्ठाणत्तु वगमादो' इति पाठः।

अपज्जत्तयस्स सव्वजहण्णं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तमेगं णिव्वत्तिट्ठाणं। पुणो जं समउत्तरं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तं विदियणिव्वत्तिट्ठाणं। जं दुसमउत्तरं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तं तदियणिव्वत्तिट्ठाणं। एवं समउत्तरादिकमेण[1] आवलि० असंखे०भागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि णिरंतरमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं सव्वुक्कस्सआउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति सिद्धं।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं[2] णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६५६॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणे त्ति वुत्ते एत्थ[3] वि उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव मरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति ताव एदमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणं गंतूण मरणजवमज्झचरिमसमयप्पहुडि उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं। णवरि एदाणि बादरणिगोदअपज्जत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि सुहुमणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्तमद्धाणं[4] गंतूण ट्ठिदाणि त्ति घेत्तव्वं। कुदो एदं णव्वदे ? तत्तो पच्छा एदस्स सुत्तस्स णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो।

यथा—सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवका सबसे जघन्य जो निषेक क्षुल्लकभवग्रहण है वह एक निर्वृत्तिस्थान है। पुनः जो एक समय अधिक क्षुल्लकभवग्रहण है वह दूसरा निर्वृत्तिस्थान है। जो दो समय अधिक निषेक क्षुल्लक भवग्रहण है वह तीसरा निर्वृत्तिस्थान है। इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान निरन्तर ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका सर्वोत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है यह सिद्ध हुआ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥६५६॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर यहाँ पर भी उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयतक यह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर ऊपर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके ये निर्वृत्तिस्थान सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर स्थित हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि उसके बाद इस सूत्रका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

१. ता०का०प्रत्योः 'एवं तिसमउत्तरादिकमेण' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'बादरणिगोदअपज्जत्तयाणं' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'गंतूणे त्ति एत्थ' इति पाठः। ४. का०प्रतौ 'मेत्तद्धाणं' इति पाठः।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं ॥६६०॥

बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सणिव्वत्तिमेत्तमद्धाणं उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि उवरि गंतूण सव्वबादरसुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं णिव्वत्तीए अंतरं होदि। बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो उवरि सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं णत्थि त्ति भणिदं होदि। कथमेदं णव्वदे ? 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' इदि वयणादो। जदि पंचिंदियअपज्जत्तादीणमुक्कस्साउअं बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो अहियं होज्ज तो 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' ति वयणं णिरत्थयं जाएज्ज। ण च एवं सुत्तस्स णिरत्थयं, विरोहादो[1]। एदेण णव्वदे जहा सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं सरिसं ति। एदस्स अंतरस्स पमाणमंतोमुहुत्तं कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो। एत्तियमेत्तमंतरिदूण उवरि ओरालियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति घेत्तव्वं। एगो बादरणिगोदअपज्जत्तएसु दीहाउएसु जीवो उववण्णो। अण्णेगो जीवो तम्हि चेव समए सुहुमणिगोदपज्जत्तएसु सव्वजहण्णाउएसु उववण्णो। पुणो एसो सुहुमणिगोदपज्जत्तो जाव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि ताव पुव्वं चेव बादरणिगोदअपज्जत्तो अंतोमुहुत्तमत्थि त्ति कालं कादूण भवांतरं गच्छदि त्ति भणिदं होदि।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है ॥६६०॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिप्रमाण स्थान ऊपर जाकर सब बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है। बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे ऊपर सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाता है ?

समाधान—सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है इस वचनसे जाना जाता है।

यदि पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त आदिकी उत्कृष्ट आयु बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे अधिक होवे तो सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है यह वचन निरर्थक हो जाता। परन्तु इस प्रकार सूत्र निरर्थक नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है। इससे जाना जाता है कि सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु समान होती है।

शंका—इस अन्तरका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है।

इतना अन्तर देकर ऊपर औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए। दीर्घ आयुवाले बादर निगोद अपर्याप्तकोंमें एक जीव उत्पन्न हुआ। तथा अन्य एक जीव उसी समय सबसे जघन्य आयुवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः यह सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव जबतक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त नहीं होता है उसके पूर्व तक ही बादर निगोद अपर्याप्त सम्बन्धी अन्तर्मुहूर्त है इसलिए वह मरकर भवान्तरमें चला जाता है

१. का॰प्रतौ 'णिरत्थयविरोहादो' इति पाठः।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि भवंति ॥६६१॥

इमाणि उवरिं भणिस्समाणाणि पढमदाए पढमं चेव आवासयाणि होंति। केसिमेदाणि पढमं चेव आवासयाणि? पज्जत्तजीवाणं। ण च अपज्जत्ताणं सरीरादीणं पज्जत्तिट्ठाणाणिं[1] संभवंति, अपज्जत्तणामकम्मोदयपरतंत्ताणं पज्जत्तभावविरोहादो।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६६२॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउअमेत्तं पुणो अण्णेगमंतोमुहुत्तमेत्तं च उवरि गंतूण ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि चेव होंति वड्ढिमाणि ऊणाणि वा ण होंति त्ति भणिदं होदि। सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम किं वुत्तं होदि? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तिणिव्वत्ती[2] सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम। आहारपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण परूविदाणि? ण, तेसिं सरीरपज्जत्तीए अंतब्भावेण पुधपरूवणाकरणादो। तेसिं तिण्णं सरीराणं

यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

वहां सर्व प्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥६६१॥

ये ऊपर कहे जानेवाले आवश्यक पढमदाए अर्थात् पहले ही होते हैं।

शंका—किनके ये सर्व प्रथम आवश्यक होते हैं?

समाधान—पर्याप्त जीवोंके होते है। यह कहना ठीक नहीं है कि अपर्याप्त जीवोंके शरीर आदिके पर्याप्त स्थान सम्भव हैं, क्योंकि व अपर्याप्त नामकर्मके उदयके अधीन होते हैं, इसलिए उनके पर्याप्तभावके होनेमें विरोध है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥६६२॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट आयुप्रमाण तथा अन्य एक अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं। न वृद्धिको लिए हुए होते हैं न कम ही होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका—शरीरनिर्वृत्तिस्थान इसका क्या तात्पर्य है?

समाधान—शरीरपर्याप्तिकी पर्याप्तिकी निर्वृत्तिका नाम शरीरनिर्वृत्तिस्थान है।

शंका—आहारपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थान क्यों नहीं कहे?

समाधान—नहीं, क्योंकि उनका शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव होजानेके कारण उनका अलगसे कथन नहीं किया है।

१. ता०प्रतौ 'पज्जत्तट्ठाणाणि' इति पाठः। २. ता०का०प्रत्योः 'पज्जत्ती णिव्वत्ती' इति पाठः।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि सरिसाणि ण होंति त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ॥६६३॥

जहाकमेण णिद्दिट्ठपरिवाडीए विसेसाहियाणि। तं जहा—एको जीवो तिरिक्खेसु[1] मणुस्सेसु वा उववण्णो। पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगो जीवो देवेसु णेरइएसु वा उववण्णो[2]। पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगेण पमत्तसंजदेण आहारसरीरमुट्ठावेदुमाढत्तं। तदो एदे तिण्णि जणा एगसमए चेव आहारसरीरवग्गणादो पदेसपिंडं घेत्तूण सगसगछपज्जत्तीओ पढमसमयप्पहुडि णिव्वत्तंति[3]। एवं णिव्वत्तयमाणाणं[4] जहण्णणिव्वत्तिकालो वि अत्थि उक्कस्सणिव्वत्तिकालो वि अत्थि। तत्थाहारसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअद्धा[5] थोवा। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअद्धा विसेसाहिया। ओरालियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअद्धा[6] विसेसाहिया। तेण कारणेण आहारसरीरस्स सरीरपज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं पुव्वं चेव होदि। पुणो एदम्हादो समउत्तरं पि आहारसरीरणिव्वत्तिट्ठाणमत्थि। एदम्हादो वि समउत्तरं पि आहारणिव्वत्तिट्ठाणं अत्थि।

उन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान शरीररूप नहीं होते इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके यथाक्रमसे विशेष अधिक हैं ॥६६३॥

यथाक्रमसे अर्थात् निर्दिष्ट की गई परिपाटीके अनुसार विशेष अधिक हैं। यथा—एक जीव तिर्यञ्चोंमें या मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। पुनः उसी समय अन्य एक जीव देवों या नारकियोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः उसी समय अन्य एक जीवने आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए प्रारम्भ किया। अतः ये तीनों जीव एक समयमें ही आहारशरीरवर्गणामेंसे प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर अपनी अपनी छह पर्याप्तियोंकी प्रथम समयसे लेकर रचना करते हैं। इस प्रकार रचना करनेवाले जीवोंका जघन्य निर्वृत्तिकाल भी होता है और उत्कृष्ट निर्वृत्तिकाल भी होता है। उनमेंसे आहारकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल स्तोक होता है। उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है। उससे औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है। इस कारणसे आहारकशरीरकी शरीरपर्याप्तिका जघन्य निर्वृत्तिस्थान पहले ही होता है। पुनः इससे एक समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है। इससे दो समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है। इस प्रकार तीन समय अधिक

१. का०प्रतौ 'जीवा तिरिक्खेसु' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'णेरइएसु उववण्णो' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ 'णिव्वत्तं ति' इति पाठः। ४. ता० प्रतौ 'णिव्वत्तपमाणाणं' इति पाठः। ५. ता०प्रतौ 'जहण्णणिव्वत्ती अद्धा' इति पाठः। ६. ता०प्रतौ 'जहण्णणिव्वत्ती अद्धा' इति पाठः।

एवं तिसमउत्तरादिकमेण आवलियअसंखे०भागमेत्तआहारसरीरणिव्वत्तिट्ठाणेसु उप्पण्णेसु तत्थ वेउव्वियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तत्तो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे०मेत्तमद्धाणं सह गच्छंति। तदो उवरिमसमए ओरालियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। एत्तो प्पहुडि तिण्णं पि सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेसु समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु सह गदेसु आहारसरीरस्स सरीरपज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणमुक्कस्सं थक्कदि। पुणो जम्हि आहारसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं तत्तो उवरिं समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं[1] थक्कदि। पुणो जम्हि वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं। तत्तो प्पहुडि उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०-भागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। एवमेदेण कमेणुप्पण्णतिसरीरसव्वतिट्ठाणाणि पत्तेयमावलि० असंखे०भागमेत्ताणि होदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि होंति। एदेण सुत्तेण कहिदत्थस्स णिण्णयट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि—

एत्थ अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिव्वत्ति-ट्ठाणाणि ॥६६४॥

आदिके क्रमसे आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके उत्पन्न होनेपर वहां वैक्रियिकशरीर पर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके आगे वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान तक साथ जाते हैं। उससे उपरिम समयमें औदारिकशरीर-पर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उससे आगे तीनों ही शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक एक साथ जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट शरीरपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। पुनः जिस स्थानमें आहारक-शरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट स्थान श्रान्त होता है। पुनः जिस स्थानमें वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे लेकर आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए तीनों शरीरोंके सब निर्वृत्तिस्थान प्रत्येक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी क्रमसे विशेष अधिक होते हैं। अब इस सूत्रद्वारा कहे गये अर्थका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

इनके विषयमें अल्पबहुत्व—औदारिक शरीरके निर्वृत्तिस्थान सबसे स्तोक

१. ता०प्रतौ 'उक्कस्सट्ठाणं' इति पाठः।

कुदो ? वेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणमंतो पविसिय ओरालियसरीरजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणसमुप्पत्तीदो ओरालियसरीरस्स उवरिमणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो ओरालियणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठिमवेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणाणं विसेसाहियत्तदंसणादो ।

वेउव्वियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६६५॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । कारणं पुव्वमेव परूविदं ।

आहारसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६६६॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । आहारसरीरउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरिमवेउव्वियणिव्वत्तिट्ठाणेहि सुद्धहेट्ठिमआहारणिव्वत्तिट्ठाणेहि वा विसेसाहियाणि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६६७॥

ओरालियसरीरस्स उक्कस्ससरीरणिव्वत्तिट्ठाणादो अंतोमुहुत्तमेत्तअद्धाणं गंतूण सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो होदूण जाव अंतोमुहुत्तं ण गदो ताव सव्वो जीवो इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि त्ति भणिदं होदि ।

होते हैं ॥६६४॥

क्योंकि वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंके भीतर प्रविष्ट होकर औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिस्थान उत्पन्न होता है । तथा औदारिकशरीरके उपरिम निर्वृत्तिस्थानोंसे औदारिकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा अधस्तन वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक देखे जाते हैं ।

वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६६५॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । कारणका कथन पहले ही किया है ।

आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६६६॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । आहारकशरीरके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानकी अपेक्षा तथा उपरिम वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंसे केवल अधस्तन आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६६७॥

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट शरीरनिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होकर जबतक अन्तर्मुहूर्त नहीं गया है तबतक सब जीवराशि इन्द्रियपर्याप्तिसे पर्याप्त नहीं होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

१. का०प्रतौ '–ट्ठाणाणमावलि०' इति पाठः ।

ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणं जहाकमं विसेसा-हियाणि ॥६६८॥

तं जहा—ओरालियसरीरउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमेत्त-मद्धाणं गंतूण आहारसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आहार-सरीरिंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। एत्तो प्पहुडि वेउव्विय--आहारसरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण उवरि गंतूण तदो ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदिय-णिव्वत्तिट्ठाणं होदि। पुणो ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्तरादि-कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु इंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु उवरि गदेसु आहार-सरीरस्स सव्वुक्कस्समिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। पुणो तदणंतरउवरिमसमयप्पहुडि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालियसरीर-वेउव्वियसरीराण-मिंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सव्वुक्कस्समिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालिय-सरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु सव्वुक्कस्समोरालियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तेणेदाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि त्ति सिद्धं। एदस्सेव

ये इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥६६८॥

यथा—औदारिकशरीरके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान जाकर आहारकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है। उससे एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आहारकशरीर सम्बन्धी इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है। उससे आगे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान होने तक एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान जाकर उसके आगे औदारिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है। पुनः औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर जानेपर आहारकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। पुनः उसके आगे उपरिम समयसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके आगे औदारिकशरीर इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होने पर औदारिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इसलिए इन्हें परस्पर देखते हुए ये यथाक्रमसे विशेष अधिक

सुत्तस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एत्थ अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥६६९॥

कुदो ? साहावियादो । ण च सहावो परपज्जणियोगारुहो, अव्ववत्थावत्तीदो ।

वेउव्वियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६७०॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । ओरालियउवरिमइंदियणिव्वत्तिट्ठाणेहि ऊणवेउव्वियहेट्ठिमइंदियणिव्वत्तिट्ठाणेहि विसेसाहियाणि । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

आहारसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६७१॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि ॥६७२॥

ओरालियसरीरस्स उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणं गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमाणावाणणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०-

हैं यह सिद्ध हुआ । अब इसी सूत्रका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

यहाँ अल्पबहुत्व—औदारिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान सबसे थोड़े हैं ॥६६९॥

क्योंकि ऐसा होना स्वाभाविक है । और स्वभाव दूसरेके प्रश्नके योग्य नहीं होता, क्योंकि ऐसा होने पर अव्यवस्थाकी आपत्ति आती है ।

वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७०॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके अधस्तन इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंमेंसे औदारिकशरीरके उपरिम इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंको कम कर देने पर जितने शेष रहते हैं उतने अधिक होते हैं । यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए ।

आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७१॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आनापान, भाषा और मननिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६७२॥

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें

भागमेत्ताणि होंति। तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणणिव्वत्तिट्ठाणादो[1] अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमावलि० असंखे- भागमेत्ताणि भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति। तदो अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमावलि० असंखे०भागमेत्ताणि मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणि जहाकमं विसेसाहियाणि ॥६७३॥

ओरालियसरीरस्स सव्वुक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिवत्तिट्ठाणं[2] होदि। तदो समउत्तरादि- कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु आहारसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्ति- ट्ठाणेसु उवरि गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिवत्ति- ट्ठाणं होदि। तत्तो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालिय- सरीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरिमोरालिय- वेउव्विय-आहारसरीराणं तिण्हं पि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे०भाग-

भागप्रमाण होते हैं। फिर औदारिकशरीरके उत्कृष्ट आनापाननिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृत्तिस्थान होते हैं। फिर अन्तर्मुहूर्त मात्र अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकसरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मननिर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए।

ये निर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक होते हैं ॥६७३॥

औदारिकशरीरके सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारक- शरीरकी आनापानपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उससे आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानों के जानेपर औदारिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीनोंके ही एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्ति-

१. का०प्रतौ 'उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो इति पाठः। २. का०प्रतौ 'सव्वजहण्णं णिव्वत्तिट्ठाणं' इति पाठः।

मेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्सआणापाणपज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समउत्तरादिक्कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि समउत्तरादिक्कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु ओरालियसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तेणेदाणि ट्ठाणाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि।

तदो एदेसिमुक्कस्सट्ठाणेहिंतो उवरिमंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स भासापज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि समउत्तरादिक्कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स भासापज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तरादिक्कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णं भासाणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु गदेसु आहारसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समउत्तरादिक्कमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए

स्थानोंके जानेपर उसके बाद आहारकशरीरकी उत्कृष्ट आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापान पर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी आनापान पर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निवृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर उसके बाद औदारिकशरीरका उत्कृष्ट आनापान पर्याप्तिका निवृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इसलिए ये स्थान क्रमसे विशेष अधिक हैं।

अनन्तर इनके उत्कृष्ट स्थानोसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी जघन्य भाषापर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है। इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका सबसे जघन्य भाषानिर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर आहारकशरीरकी उत्कृष्ट भाषापर्याप्तिका निवृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर वैक्रियिकशरीरकी

णिव्वत्तिट्ठाणेसु उवरि गदेसु वेउव्वियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तेणेदाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि।

पुणो ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरउक्कस्सभासापज्जत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स मणपज्जत्तीए सव्वजहण्णं णिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि। तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सं मणणिव्वत्तिट्ठाणं[1] थक्कदि। एदाणि वि जहाकमेण सत्थाणे

भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर औदारिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इसलिए ये क्रमसे विशेष अधिक हैं।

पुनः औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट भाषापर्याप्ति निर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके मनःनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्ति निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर औदारिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर आहारकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। ये

१ ता० प्रतौ 'सरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणं' इति पाठः।

विसेसाहियाणि ।

एत्थ अप्पाबहुअं–सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥६७४॥

कारणं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६७५॥

ओरालियसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स आणापाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स मण-णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । सव्वत्थ विसेसपमाणमावलि० असंखेज्जदिभागो ।

आहारसरीरस्स आणापाण–भासा–मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६७६॥

वेउव्वियसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो आहारसरीरस्स आणापाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि[1] विसेसाहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो आहार-

भी स्वस्थानमें क्रमसे विशेष अधिक हैं ।

यहां अल्पबहुत्व—औदारिकशरीरके आनापान, भाषा और मननिर्वृत्तिस्थान सबसे स्तोक हैं ॥६७४॥

कारण सुगम है ।

वैक्रियिकशरीरके आनापान, भाषा और मननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७५॥

औदारिकशरीरके आनापान निर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । तथा औदारिकशरीरके मननिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके मननिर्वृत्ति-स्थान विशेष अधिक हैं । सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७६॥

वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान

१ ता० प्रतौ 'आणापाणभासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि' इति पाठः ।

सरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। वेउव्वियसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो आहारसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि। सव्वत्थ विसेसपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो। सरीरिंदियपज्जत्तीणं पुध परूवणं किमट्ठं कदं ? एदं सत्थाणअप्पाबहुअं चेव परत्थाणप्पाबहुअं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं। सव्वेसिमेगवारेण णिद्देसे कीरमाणे पुण ओरालियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि वेउव्वियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण विसेसाहियाणि त्ति आसंका उप्पज्जेज्ज। तण्णिराकरणट्ठं पुणो णिद्देसो कदो। ओरालियसरीरस्स पुण सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि अण्णोण्णेण सरिसाणि। कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो। एवं सव्वसरीरपज्जत्तीणं पि सत्थाणे सरिसत्तं भाणियव्वं।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६७७॥

तिण्णं सरीराणमुक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होंति। किं णिल्लेवण-

विशेष अधिक हैं। वैक्रियिकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं। सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

शंका—शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्तिकी अलगसे प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान—यहां पर स्वस्थान अल्पबहुत्व ही है, परस्थान अल्पबहुत्व नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उनकी अलगसे प्ररूपणा की है। सबका एकबार निर्देश करने पर पुनः औदारिकशरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर वैक्रियिकशरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान क्यों विशेष अधिक नहीं हैं ऐसी आशंका उत्पन्न हो सकती थी अतः उसका निराकरण करनेके लिए फिरसे निर्देश किया है।

परन्तु औदारिकशरीरके शरीर इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान परस्परमें समान हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है।

इसीप्रकार सब शरीरोंकी पर्याप्तियोंकी भी स्वस्थानमें समानता कहलानी चाहिए।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६७७॥

तीन शरीरोंके उत्कृष्ट मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं।

ट्ठाणं णाम ? जत्थ छप्पज्जत्तिणिमित्तं पोग्गलाणमागमो थक्कदि तण्णिल्लेवणट्ठाणं णाम। छसु पज्जत्तीसु णिप्पण्णासु पुणो जो घेप्पदि पोग्गलपिंडो सो सरीरस्स चेव होदि ण पज्जत्तीणं, णिप्पण्णाणं णिप्पत्तिविरोहादो त्ति। एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा—आगदपोग्गलेसु अंतोमुहुत्तेण सत्तधादुसरूवेण परिणदेसु सरीरपज्जत्ती णाम। ण च तम्हि काले[1] सरीरणिप्पत्ती अत्थि[2], चम्म-रोम-णह-कालेज्ज-फुप्फुसादीणं णिप्पत्तीए तदो अभावादो। सच्छेसु[3] पोग्गलेसु मिलिदेसु तब्बलेण बज्झत्थगहणसत्तीए समुप्पत्ती[4] इंदियपज्जत्ती णाम। ण च तम्हि काले बज्झिंदियाणं[5] णिप्पत्ती अत्थि, बज्झिंदिएसु अद्धणिप्पण्णेसु चेव सगसगविसयग्गहणसत्तीए समुप्पत्तीदो। ण च अंतोमुहुत्तकालेणेव अच्छिमंद-चक्खु[6]गोलियादीणं णिप्पत्ती अत्थि, मोरंडयरसेसु तहाणुवलंभादो। एवं सेसपज्जत्तीओ वि सगसगदव्वेसु अद्धणिप्पण्णेसु चेव णिप्पज्जंति त्ति वत्तव्वं। तासिं दव्वपज्जत्तीणमद्धणिप्पण्णाणं णिप्पत्तिणिमित्तं पोग्गलपिंडो पज्जत्तयदस्स[7] वि आगच्छदि। एवमागच्छमाणे जत्थ पंचण्णं पज्जत्तीणं दव्वुवयरणाणं[8]मक्कमेण णिप्पत्ती होदि तण्णिल्लेवणट्ठाणं णाम। जेण छप्पज्जत्तिमयं सरीरं तेण णिल्लेविदे संते पच्छा आगच्छमाणपोग्गलक्खंधो वि छण्णं पज्जत्तीणं चेव आगच्छदि त्ति णिल्लेवण-

शंका—निर्लेपनस्थान किसे कहते हैं? जहां पर छह पर्याप्तियोंके लिए पुद्गलोंका आना रुक जाता है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं। इसलिए छह पर्याप्तियोंके निष्पन्न होने पर पुनः जो पुद्गलपिण्ड ग्रहण किया जाता है वह शरीरका ही होता है पर्याप्तियोंका नहीं होता, क्योंकि निष्पन्नोंकी निष्पत्ति माननेमें विरोध आता है?

समाधान—यहां पर इस शंकाका समाधान करते हैं। यथा—आये हुए पुद्गलोंके अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सात धातुरूपसे परिणत होने पर शरीरपर्याप्ति कहलाती है। उस कालमें शरीरकी निष्पत्ति नहीं है, क्योंकि उससे चर्म, रोम, नख, कलेजा और फुप्फुस आदिकी निष्पत्ति नहीं होती। स्वच्छ पुद्गलोंके मिलने पर उनके बलसे बाह्य अर्थके ग्रहण करनेकी शक्तिका उत्पन्न होना इन्द्रियपर्याप्ति कहलाती है। उस कालमें बाह्य इन्द्रियोंकी निष्पत्ति नहीं होती है, क्योंकि इन्द्रियोंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही अपने अपने विषयको ग्रहण करनेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है। और अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा ही अक्षिपुट और चक्षुगोलक आदिकी निष्पत्ति हो नहीं सकती, क्योंकि मोर जो अण्डे देती है उनके रसों में उस प्रकारकी उपलब्धि नहीं होती। इसी प्रकार शेष पर्याप्तियां भी अपने अपने द्रव्योंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही निष्पन्न हो जाती हैं ऐसा कहना चाहिए। उन अर्धनिष्पन्न द्रव्यपर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए पर्याप्त जीवके भी पुद्गलपिण्ड आता है। इस प्रकार पुद्गल पिण्डके आने पर जहां पर पांच पर्याप्तियोंके द्रव्य उपकरणोंकी युगत् निष्पत्ति होती है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं। यतः शरीर छह पर्याप्तिमय है अतः निर्लेपित होने पर बादमें आनेवाला पुद्गलस्कन्ध भी छह पर्याप्तियोंके लिये ही आता है, इसलिए वहाँ

१. ता०प्रतौ 'णाम, तम्हि काले' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'अ (ण) त्थि' इति पाठः। ३. का०प्रतौ 'सव्वेसु' इति पाठः। ४ ता० प्रतौ 'समुप्पज्जंती' इति पाठः। ५ का० प्रतौ 'वज्जिंदियाणं' इति पाठः। ६ म० प्रतिपाठोऽयम्। ता० प्रतौ 'अत्थि चक्खु–' का०प्रतौ 'अत्थिकुडचक्खु–' इति पाठः। ७ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रत्योः 'पजयदस्स' इति पाठः। ८ का० प्रतौ 'दव्वयरणाण–' इति पाठः।

ट्ठाणाभावो ण वोत्तुं सक्किज्जदे, पुव्वमागदपोग्गलक्खंधेहि व पच्छा गहिदपोग्गलक्खंधेहि दव्वपज्जत्तीणं संठाणंतरस्स अवयवंतरस्स वा अणुवलंभेण तेसिं तत्थ वावाराभावादो। तेण कारणेण णिल्लेविदे संते जं पोग्गलग्गहणं तं सरीरट्ठं पुव्विल्लं पज्जत्तिणिमित्तमिदि[1] वुत्ते परमत्थदो पुण सव्वं पोग्गलग्गहणं सरीरट्ठं चेव, सरीरवदिरित्तपज्जत्तीणमभावादो।

ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणं जहाकमेण विसेसाहियाणि ॥६७८॥

ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणमुक्कस्समणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स जहण्णं णिल्लेवणट्ठाणं होदि। तदो समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु आहारसरीरणिल्लेवणट्ठाणेसु उवरि गदेसु वेउव्वियसरीरस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं होदि। तदो वेउव्विय--आहारसरीराणं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं दिस्सदि। तदो समउत्तरादिकमेण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु गदेसु आहारसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि। तदो समउत्तरादिकमेण उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं

निर्लेपनस्थानोंका अभाव कहना शक्य नहीं है, क्योंकि पहले आए हुए पुद्गलस्कन्धोंके समान बादमें ग्रहण किये गये पुद्गलस्कन्धोंद्वारा द्रव्यपर्याप्तियोंके संस्थानान्तरकी या अवयवान्तरकी उपलब्धि नहीं होनेसे उनका उनके निर्माणमें व्यापार नहीं होता। इस कारण निर्लेपित होने पर जो पुद्गलोंका ग्रहण होता है वह शरीरके लिए होता है या पूर्व पर्याप्तियोंके लिए होता है ऐसा पूछने पर उसका उत्तर यह है कि परमार्थसे सब पुद्गलोंका ग्रहण शरीरके लिए ही होता है, क्योंकि शरीरको छोड़कर पर्याप्तियोंका अभाव है।

वे निर्लेपनस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥६७८॥

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके आगे अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है। उसके बाद आहारकशरीरसम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर वैक्रियिकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है। उसके बाद वैक्रियिक और आहारक शरीरसम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर औदारिकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान दिखलाई देता है। उसके बाद तीनों शरीरोंके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है। उसके बाद औदारिकशरीर

१ का० प्रतौ 'पज्जत्तणिमित्तमिदि' इति पाठः

णिल्लेवणट्ठाणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि[1]। तदो समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु णिल्लेवणट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि। तेण जहाकमं विसेसाहियाणि।

एत्थ अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि ॥६७९॥

कारणं सुगमं।

वेउव्वियसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६८०॥

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण।

आहारसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६८१॥

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण। एवं गंथमस्सिदूण पढमसंदिट्ठी परूवेयव्वा। संपहि बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ते अस्सिदूण मरणजवमज्झादीणं परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होंति ॥६८२॥

और वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है। उसके बाद एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है। इसलिए ये यथाक्रम विशेष अधिक हैं।

यहाँ पर अल्पबहुत्व—औदारिकशरीरके निर्लेपनस्थान सबसे स्तोक हैं ॥६७९॥

कारणका कथन सुगम है।

वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥६८०॥

कितने अधिक हैं? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं।

आहारकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥६८१॥

कितनेमात्र अधिक हैं? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं। इस प्रकार ग्रन्थका आश्रय लेकर प्रथम संदृष्टिका कथन करना चाहिए। अब बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आश्रय लेकर मरणयवमध्य आदिका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

वहाँ सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥६८२॥

१. का०प्रतौ '-णिल्लेवणं थक्कदि' इति पाठः।

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं[1] पढमदाए पढमं चेव एदाणि भण्णमाणावासयाणि होंति, सेसाणि पच्छा होंति त्ति भणिदं होदि ।

तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६८३॥

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सव्वजहण्णाउअं तिण्णि भागे कादूण तत्थ पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागे जाणि आवासयाणि भणिस्सामो । तदो जवमज्झं गंतूणे त्ति भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पज्जत्तीणं पारंभं कादूण तदो अंतोमुहुत्तमुवरि जहा जवमज्झं तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होंति । का णिव्वत्ती णाम ? चदुण्णं पज्जत्तीणं णिल्लेवणं णिव्वत्ती । णिव्वत्ति त्ति भणिदे एत्थ जवमज्झकमो वुच्चदे । तं जहा—चत्तारि पज्जत्तीओ सव्वलहुएण कालेण णिव्वत्तया जीवा थोवा । तदुवरिमसमए णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदणिल्लेवणट्ठाणजीवजवमज्झं ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव चदुण्णं पज्जत्तीणमुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं ति । जवमज्झस्स हेट्ठिम-उवरिमाणि चदुण्णं पज्जत्तीणं

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके पढमदाए अर्थात् प्रथम ही ये कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं । शेष आवश्यक बादमें होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसके बाद यवमध्य जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६८३॥

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंकी सबसे जघन्य आयुके तीन भाग करके वहाँ प्रथम त्रिभागके संख्यातवें भागमें जो आवश्यक होते हैं उन्हें कहेंगे । उसके बाद यवमध्य जाकर ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर पर्याप्तियोंका प्रारम्भ करके उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऊपर जिस प्रकार यवमध्य है उस प्रकार जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

शंका—निर्वृत्ति किसे कहते हैं ।

समाधान—चार पर्याप्तियोंके निर्लेपन को निर्वृत्ति कहते हैं ।

निर्वृत्ति ऐसा कहने पर यहाँ यवमध्यके क्रमका कथन करते हैं । यथा—चार पर्याप्तियोंके सबसे अल्प कालके द्वारा निर्वर्त्तक जीव सबसे थोड़े हैं । उसके उपरिम समय में निर्वर्त्तक जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद निर्लेपनस्थान जीव यवमध्यके प्राप्त होने तक जीव विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उसके बाद चार पर्याप्तियोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके

१. ता॰प्रतौ 'बादरसुहुमणिगोदपजत्ताणं' अयं पाठः सूत्रत्वेन निर्दिष्टः ।

णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। एत्थ एगा वि गुणहाणी णत्थि। कुदो? सुत्ते गुणहाणिपमाणपरूवणाभावादो।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६८४॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदसव्वजहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण बादरणिगोदपज्जत्तजीवा चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया थोवा। तदुवरिमसमए णिव्वत्तया विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि त्ति। ताधे सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णणिल्लेवणट्ठाणेण बादरणिगोदपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणं सरिसं होदि। तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजवमज्झं त्ति। तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया। एवं विसेसाहिय--विसेसाहियकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं जवमज्झं होदि। तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोद-

प्राप्त होनेतक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं। चार पर्याप्तियोंके यवमध्यके अधस्तन और उपरिम निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। यहाँ पर एक भी गुणहानि नहीं है, क्योंकि सूत्रमें गुणहानिके प्रमाणका कथन नहीं किया है।

उसके बाद यवमध्य जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६८४॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोदोंके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सरककर चार पर्याप्तियोंके निर्वर्त्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें निर्वर्त्तक जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान जाने तक निर्वर्त्तक जीव विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। तब जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके सबसे जघन्य निर्लेपनके साथ बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका निर्लेपनस्थान समान होता है। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वर्त्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वर्त्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार विशेष अधिक विशेष अधिकके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका यवमध्य होता है। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर विशेष हीन क्रमसे

पज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणे त्ति। तदुवरि विसेसहीणकमेण आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तमद्धाणं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं होदि। होंतं पि पढमतिभागस्स चरिमसमयादो हेट्ठा अंतोमुहुत्तमोसरिदूण भवदि। संपहि बादरणिगोद-पज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणादो उवरिमेसु पढमतिभागस्स संखेज्जेसु भागेसु विदिय-तिभागे सयले च णत्थि आवासयाणि, तत्थ आउअबंधाभावादो।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणमाउअबंध-जवमज्झं ॥६८५॥

उप्पण्णपढमसमए आउअबंधस्स पारंभो ण होदि, णिच्छएण सगजहण्णाउअ-वेतिभागे[1] गंतूण चेव आउवबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठमंतोमुहुत्तग्गहणं कदं। एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे। तं जहा—उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमविदियतिभागे बोलेदूण तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवा थोवा। तदुवरिम-समए आउअबंधया जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण ताव गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताण-माउअबंधजवमज्झट्ठाणमुप्पण्णं ति। तेण परं विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं चरिमआउअबंधट्ठाणं ति।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान होता है। ऐसा होता हुआ भी प्रथम त्रिभागके अन्तिम समयसे पीछे अन्तर्मुहूर्त सरक कर होता है। अब बादर निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानसे प्रथम त्रिभागके उपरिम संख्यात बहुभागोंमें और सम्पूर्ण द्वितीय त्रिभागमें आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि वहाँ आयुका बन्ध नहीं होता।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है ॥६८५॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता है। निश्चयसे अपनी जघन्य आयुके दो त्रिभाग जाकर ही आयुका बन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अन्तर्मुहूर्त' पदका ग्रहण किया है। यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा—उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम और द्वितीय त्रिभागको बिताकर तीसरे त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके आयुबन्धयवमध्यस्थानके उत्पन्न होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उसके बाद अन्तर्मुहूर्त अध्वान ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके अन्तिम आयुबन्धस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं।

१. का॰प्रतौ '-वेत्तिभागे' इति पाठः।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं आउअ-बंधजवमज्झं ॥६८६॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिसगजहण्णाउअस्स वेतिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदिय-तिभागपढमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा आउअबंधया थोवा होंता वि सुहुमणिगोद-पज्जत्ततदियतिभागपढमसमयादो अंतोमुहुत्तं हेट्ठा ओसरिदूण एदमाउअबंधट्ठाणं होदि। किं कारणं ? जेण बादरणिगोदो घादेण थोवमाउअं ठवेदि त्ति। तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता आउअबंधया जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधतदियतिभागपढमसमयो त्ति। तदुवरि विसेसाहिया जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति। तदुवरि विसेसाहिया जाव बादरपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति। तदुवरि विसेसहीणा जाव सुहुमचरिमआउअबंधट्ठाणे त्ति। तदुवरि विसेसहीणा बादरउक्कस्साउअबंधणिल्लेवणट्ठाणे त्ति। तदुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण असंखेपद्धा[1] होदि। असंखेपद्धा उवरि[2] अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-सुहुमणिगोद-पज्जत्ताणं घादजणिदं सव्वजहण्णजीवणियट्ठाणं होदि।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरण-

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है ॥६८६॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर सबसे जघन्य आयुके दो तीन भागप्रमाण अध्वान जाकर तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव सबमें थोड़े हैं। ऐसा होते हुए भी सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके तृतीय त्रिभागके प्रथम समयसे अन्तर्मुहूर्त पीछे सरक कर यह आयुबन्धस्थान होता है। कारण क्या है ? क्योंकि बादर निगोद जीव घात द्वारा स्तोक आयुको शेष रखता है। उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके आयुबन्धके तीसरे त्रिभागके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर बादर पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तके अन्तिम आयुबन्ध स्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर बादर निगोद पर्याप्तके उत्कृष्ट आयुबन्ध निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आसंक्षेपाद्धा होता है। आसंक्षेपाद्धासे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्तकों व सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंका घातसे उत्पन्न हुआ सबसे जघन्य जीवनीय स्थान होता है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तक जीवोंका मरण यवमध्य

१. प्रत्योः 'असंखेयद्धा' इति पाठः। २. प्रत्योः 'असंखेयद्धा उवरि' इति पाठः।

जवमज्झं ॥६८७॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं सव्वजहण्णघादखुद्दाभवग्गहणमेत्तमुवरि गंतूण सव्वजहण्णजीवणियकालचरिमसमए मरंता सुहुमपज्जत्ता जीवा थोवा। तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमणिगोदमरणजवमज्झं ति। तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवेण बद्धजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणे त्ति।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ॥६८८॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि घादेदूण ट्ठविदसव्वजहण्णजीवणियकालमेत्तमुवरि[1] गंतूण तस्स चरिमसमए मरंता बादरणिगोदपज्जत्ता जीवा थोवा। तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव[2] सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झपढमसमओ त्ति। तेण परं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमपज्जत्तमरणजवमज्झं ति। तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण मरंति जाव[3] बादरपज्जत्तमरणजवमज्झं ति। तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा

होता है ॥६८७॥

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर सब से जघन्य घात क्षुल्लकभवग्रहणका अन्तर्मुहूर्त जाकर सबसे जघन्य जीवनीय कालके अन्तिम समयमें मरनेवाले सूक्ष्म पर्याप्त जीव स्तोक हैं। उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद मरण यवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोदपर्याप्त जीव द्वारा बद्ध जघन्य आयुनिर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है ॥६८८॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर घात करके स्थापित किये गये सबसे जघन्य जीवनीय कालमात्र ऊपर जाकर उसके अन्तिम समयमें मरनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं। उससे आगे सूक्ष्म पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं। उसके बाद बादर पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन

१. ता०प्रतौ '–जीवणि [का] य काल–' का०प्रतौ '–जीवणिकायकाल–' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'होदूण जाव' इति पाठः। ३. ता०प्रतौ विसे० विसे० जाव' इति पाठः।

होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति । तेण परं विसेसहीणा जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६८९॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि । तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं । एदम्हादो समउत्तरआउअं विदिय-णिल्लेवणट्ठाणं । एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवण-ट्ठाणाणि लब्भंति । तत्थेव सुहुमणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६९०॥

उप्पपण्णपढमसयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि। तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं। समउत्तरपबद्धे विदियं णिल्लेवणट्ठाणं। एवं विसमउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं उक्कस्साउअणिल्लेवणट्ठाणं होदि । तत्थेव बादरणिगोदपज्जत्ताण-मुक्कस्साउअं होदि त्ति घेत्तव्वं ।

जीव मरते हैं । उसके बाद सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जीव जाते हैं । उसके बाद बादर निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जीव जाते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहुर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६८९॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । इससे एक समय अधिक आयु दूसरा निर्लेपनस्थान है । इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रममें आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण निर्लेपनस्थान प्राप्त होते हैं । वहीं पर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६९०॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । एक समय अधिक आयुका बन्ध होने पर दूसरा निर्लेपनस्थान होता है । इस प्रकार दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट आयु निर्लेपनस्थान होता है । तथा वहीं पर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ऐसा यहां पर ग्रहण करना चाहिए ।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६६१॥

तम्हि चेवे त्ति णिद्देसो किमट्ठं कीरदे ? बादरणिगोदाणमाधारभूदपत्तेयसरीर पज्जत्तजीवग्गहणट्ठं । कुदो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमुक्कस्सआउअस्स वि पमाणमंतोमुहुत्तमेत्तं चेवे त्ति गुरूवदेसादो । उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि बंधेण सव्वजहण्णाउअमेत्तमद्धाणं गंतूण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स एयमाउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तआउअणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बंधेण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स बादरणिगोदपदिट्ठिदस्स उक्कस्साउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एदेसिं णिल्लेवणट्ठाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमागयं —

एत्थ अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि ॥६६२॥

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागपमाणत्तादो ।

बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६६३॥

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥६६१॥

शंका—'तम्हि चेव' ऐसा निर्देश किसलिए करते हैं ?

समाधान—बादर निगोदोंके आधारभूत प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके ग्रहण करनेके लिए उक्त निर्देश किया है, क्योंकि बादर निगोद प्रतिष्ठितोंकी उत्कृष्ट आयुका प्रमाण भी अन्तर्मुहूर्त ही है ऐसा गुरुका उपदेश है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बन्धसे प्राप्त सबसे जघन्य आयुमात्र अध्वान जाकर प्रत्येकशरीर पर्याप्तका एक आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है। इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आयुनिर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बन्धसे बादर निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर पर्याप्तका उत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है। इन निर्लेपनस्थानोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगे सूत्र आया है—

यहां पर अल्पबहुत्व—सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान सबसे थोड़े हैं ॥६६२॥

क्योंकि वे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥६६३॥

१. ता०प्रतौ सूत्रमिदं सूत्रत्वेनोल्लिखितम् ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तायाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६६४॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि हवंति ॥६६५॥

एवमेइंदियाणमावासयाणि भणिऊण संपहि एइंदियाणं पंचिंदियाणं च आवासयपरूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं—

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तायाणं समिलाजवमज्झं ॥६६६॥

अणादियसिद्धांतपदमस्सिदूण आउअबंधजवमज्झस्स समिलाजवमज्झं ति सण्णा ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तायाणं समिला जवमज्झं ॥६६७॥

एत्थ वि पुव्वं व आउअबंधजवमज्झस्स गहणं कायव्वं । एदस्स सुत्तस्स

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंसे अधिक हैं ।

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥६६४॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंसे अधिक हैं ।

वहां सर्व प्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥६६५॥

इस प्रकार एकेन्द्रियके आवश्यकोंका कथन करके अब एकेन्द्रियों और पञ्चेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है—

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता है ॥६६६॥

अनादि सिद्धान्तपदका आश्रय लेकर आयुबन्धयवमध्यकी शमिलायवमध्य यह संज्ञा है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता है ॥६६७॥

यहाँ पर भी पहले के समान आयुबन्धयवमध्यका ग्रहण करना चाहिए।

शंका—इस सूत्रका बादमें आरम्भ किसलिए किया है ?

पच्छारंभो किमट्ठं कदो ? पुविल्लजवमज्झादो उवरिं गंतूण एदं जवमज्झं समत्तं त्ति जाणावणट्ठं कदो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥६९८॥

एवं भणिदे बंधेण सुहुमणिगोदपज्जत्तयस्स जहण्णाउअं घेत्तव्वं, अण्णस्स असंभवादो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥६९९॥

एवं भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचिंदियसम्मुच्छिमस्स बंधेण जहण्णाउअं घेत्तव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७००॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स पज्जत्तयस्स[1] जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । सम्मुच्छिमजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीदो

समाधान—पहलेके यवमध्यके ऊपर जाकर यह यवमध्य समाप्त होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए बादमें इस सूत्रका आरम्भ किया है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है ॥६९८॥

ऐसा कहने पर बन्धसे प्राप्त सूक्ष्म निगोद पर्याप्त की जघन्य आयु लेनी चाहिए, क्योंकि अन्यकी आयु लेना असम्भव है ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर सम्मूर्च्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है ॥६९९॥

ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अध्वान ऊपर जाकर पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिमकी बन्धसे प्राप्त जघन्य आयु लेनी चाहिए ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है ॥७००॥

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान ऊपर जाकर बन्धसे गर्भोपक्रान्त पर्याप्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । सम्मूर्च्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्तिसे

१. का०प्रतौ सूत्रानन्तरं 'एवं भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचिंदियसम्मुच्छिमस्स बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स जत्तयस्स' इति पाठः ।

एसा उवरि होदि त्ति भणिदं होदि ।

तदो दसवाससहस्साणि गंतूण ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७०१॥

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयादो त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा दसवाससहस्साणुववत्तीदो । ओववादिया त्ति वुत्ते देव-णेरइयाणं गहणं कायव्वं ।

तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७०२॥

एइंदियस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि । पुणो एदिस्से उवरिमसमउत्तरादिकमेण सुहुम-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि सम्मुच्छिम-गब्भोवक्कंतिय-ओववादियसव्वजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीओ च बोलेऊण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयस्स बावीसवाससहस्समेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि ।

तदो पुव्वकोडिं गंतूण समुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७०३॥

यह आगे चलकर होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

फिर दस हजार वर्ष जाकर औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥७०१॥

'तदो' ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर यह अर्थ लेना चाहिए, अन्यथा दस हजार वर्ष नहीं बन सकते हैं । 'ओववादिया' ऐसा कहने पर देवों और नारकियोंका ग्रहण करना चाहिए ।

फिर बाईस हजार वर्ष जाकर एकेन्द्रिय जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥७०२॥

एकेन्द्रियकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंको तथा सम्मूर्च्छिम, गर्भोपक्रान्त और औपपादिकोंके सबसे जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तियोंको बिताकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तककी बन्धकी अपेक्षा बाईस हजार वर्षप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर पूर्वकोटि जाकर सम्मूर्च्छिम जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥७०३॥

सम्मुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि । पुणो तिस्से उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण बावीसवस्ससहस्साणि बोलेदूण सम्मुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स पुव्वकोडिमेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि ।

तदो तिण्णि पलिदोवमाणि गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७०४॥

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया । पुणो तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण पुव्वकोडिं बोलेदूण तिण्णिपलिदोवममेत्ता गब्भोवक्कंतियस्स बंधेण उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि ।

तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥७०५॥

ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती दसवाससहस्समेत्ता । तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण तिण्णि पलिदोवमाणि बोलेदूण ओवादियाणं तेत्तीससागरोवममेत्ती उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । एसा सव्वा वि परूवणा ण परूवेयव्वा,

सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक, दो समय अधिक आदिके क्रमसे बाईस हजार वर्ष बिताकर आगे सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा पूर्वकोटिप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तीन पल्य जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥७०४॥

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटिप्रमाण बिताकर गर्भोपक्रान्त जीवकी बन्धकी अपेक्षा तीन पल्यप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तेतीस सागर जाकर औपपादिक जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥७०५॥

औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति दस हजार वर्षप्रमाण है । उसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पल्य बिता कर औपपादिक जीवोंकी तेतीस सागरप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

शंका—यह सब प्ररूपणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि सोलहपदिक महादण्डकमें जघन्य

सोलसवदिए महादंडए जहण्णट्ठिदि--उक्कस्सट्ठिदि[1]विसेसेसु परूविज्जमाणेसु परूविदत्तादो। ण एस दोसो, बादर-सुहुमणिगोदाणं जहण्णाउअप्पहुडि[2] जाव तेसिं उक्कस्साउए त्ति ताव तत्थेव मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिट्ठाण-जवमज्झाणि होंति। अण्णस्स ण होंति त्ति परूविदे तेसिमण्णेसिमाउअवियप्पाणं संभालणट्ठमिदरेसिमाउआणं पमाणपरूवणाकरणादो। एवं 'जत्थेय मरइ जीवो' एदस्स गाहाए अत्थपरूवणा समत्ता।

पुव्वं तेवीसवग्गणाओ परूविदाओ। तत्थ इमाओ गहणपाओग्गाओ इमाओ च अगहणपाओग्गाओ त्ति परूवणा कदा। संपहि इमाओ पंचण्हं सरीराणं गेज्झाओ इमाओ च अगेज्झाओ त्ति जाणावेंतो भूदबलिभडारओ उत्तरसुत्तकलावं परूवेदि—

तस्सेव बंधणिज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणियोगद्दाराणि णायव्वाणि भवंति—वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा पदेसट्ठदा अप्पाबहुए त्ति ॥७०६॥

एदाणि चत्तारि चेव एत्थ अणियोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो।

स्थिति और उत्कृष्ट स्थितिविशेषका कथन करने पर कथन हो ही जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि बादर निगोद और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य आयुसे लेकर उनकी उत्कृष्ट आयुके प्राप्त होने तक वहीं पर मरणयवमध्य, आयुबन्ध-यवमध्य और निर्वृत्तिस्थानयवमध्य होते हैं अन्यके नहीं होते हैं ऐसा कथन करने पर उन अन्य जीवोंके आयुविकल्पों की सम्हाल करनेके लिए इतर जीवोंकी आयुके प्रमाणका कथन किया है।

इस प्रकार 'जत्थेय मरइ जीवो' इस गाथाकी अर्थप्ररूपणा समाप्त हुई।

पहले तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका कथन कर आये हैं। उनमें ये ग्रहणप्रायोग्य हैं और ये अग्रहणप्रायोग्य हैं यह प्ररूपणा की ही है। अब ये पाँच शरीरोंके ग्रहण योग्य हैं और ये ग्रहण योग्य नहीं हैं ऐसा जानते हुए भूतबलि भट्टारक उत्तरसूत्रकलापका कथन करते हैं—

उसी बन्धनीयके वहाँ ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं—वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व ॥७०६॥

यहां पर ये चार ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि अन्य अनुयोगद्वार यहां पर सम्भव नहीं हैं।

१. ता०प्रतौ 'जहण्णट्ठिदि-[उक्कस्सट्ठिदि] उक्कस्सट्ठिदि-' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-णिगोदाणं [जहण्णं] जहण्णाउअप्पहुडि' का०प्रतौ 'णिगोदाणं जहण्णं जहण्णाउअप्पहुडि' इति पाठः।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयदेसिया परमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम ॥७०७॥

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥७०८॥

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥

तासिमणंताणंतपदेसिय[1]परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहारसरीरदव्ववग्गणा णाम ॥७१०॥

आहारसरीरदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ।७११।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेजादव्ववग्गणा णाम ॥७१२॥

तेजादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७१३॥

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम ॥७१४॥

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७१५॥

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥७०७॥

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥७०८॥

इसप्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी नवप्रदेशी दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ॥७०९॥

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर आहारशरीरद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१०॥

आहारशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७११॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१२॥

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१३॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषाद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१४॥

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१५॥

१. ता०प्रतौ 'तासिमणंतपदेसिय-' इति पाठः ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥७१६॥

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७१७॥

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥७१८॥

एवमुवरिमसुत्ताणं पि सव्वेसिमुच्चारणा कायव्वा। पुणो एदेसिमत्थे भण्णमाणे जहा अब्भंतरवग्गणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं। एदेहि सव्वेहि म्मि सुत्तेहि[1] पुव्वुत्त-वग्गणाणं चेव संभालणं कदं। कुदो? पुव्वं परूविदत्थस्सेव परूवणादो।

एवं वग्गणपरूवणा गदा।

वग्गणणिपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ[2] ॥७१९॥

पंचण्णं सरीराणं जा गेज्झा सा गहणपाओग्गा णाम। जा पुण तासिमगेज्झा [सा] अगहणपाओग्गा णाम। तासिं दोण्णं मज्झे कत्थ इमा पददि त्ति पुच्छा कदा। एयपदेसियवग्गणा एक्का चेव, तत्थ कधं गहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयण-

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१६॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१७॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१८॥

इसी प्रकार आगेके सभी सूत्रोंकी भी उच्चारणा करनी चाहिये। पुनः इनके अर्थका कथन करते समय जिस प्रकार आभ्यन्तरवर्गणामें कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिये। इन सब सूत्रोंके द्वारा पूर्वोक्त वर्गणाओंकी ही सम्हाल की गई है, क्योंकि इन द्वारा पहले कहे गये अर्थका ही कथन किया गया है।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहण प्रायोग्य हैं या ग्रहणप्रायोग्यन हीं हैं ॥७१९॥

पाँच शरीरोंके जो ग्रहणयोग्य है वह ग्रहणप्रायोग्य कहलाती है। परन्तु जो उनके ग्रहण-योग्य नहीं है वह अग्रहणप्रायोग्य कहलाती है। उन दोनोंके मध्य इसका समावेश किसमें होता है इस प्रकारकी पृच्छा इस सूत्रमें की गई है।

शंका—एकप्रदेशी वर्गणा एक ही है। वहां 'गहणपाओग्गाओ' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश नहीं बन सकता है?

१. ता०प्रतौ 'सव्वेहि सुत्तेहि' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'किमगहणपाओग्गाओ' इत्यग्रे 'णाम' इत्यधिकः पाठः।

णिद्देसो जुज्जदे[1] ? ण, जादिदुवारेण एयत्तमावण्णाए वत्तिभेदेण[2] जणिदबहुत्तं पडि बहुवयणणिद्देसुववत्तीदो ।

अगहणपाओग्गाओ इमाओ एयपदेसियसव्वपरमाणुपोग्गल-दव्ववग्गणाओ ॥७२०॥

पंचण्णं सरीराणं गहणपाओग्गाओ ण होंति हत्थिहत्थस्स सरिसओ व्व । कुदो ? साभावियादो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहण-पाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ॥७२१॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

अगहणपाओग्गाओ ॥७२२॥

एदं पि सुगमं ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ

समाधान—नहीं, क्योंकि यद्यपि जातिकी अपेक्षा वह एक है फिर भी व्यक्तिभेदसे वह बहुत्वको प्राप्त है, इसलिए बहुवचन निर्देश बन जाता है ।

ये एकप्रदेशी सब परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाएँ अग्रहणप्रायोग्य हैं ॥७२०॥

जिस प्रकार हाथीके हाथसे सरसों ग्रहण योग्य नहीं होता है उसी प्रकार ये पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं होती हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२१॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२२॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी परमाणु-

---

१. ता०प्रतौ 'तत्थ गहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयणणिद्देसो [ण-] जुज्जदे' इति पाठः ।
२. ता०प्रतौ 'एयत्तमावण्णाए वं (वे) तिभेदेण' इति पाठः ।

किमगहणपाओग्गाओ ॥७२३॥

सुगममेदं ।

अगहणपाओग्गाओ ॥७२४॥

एदं पि सुगमं ।

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहण-पाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ॥७२५॥

सुगमं ।

काओ चि गहणपाओग्गाओ काओ चि अगहण[1]-पाओग्गाओ ॥७२६॥

आहारवग्गणाए जहण्णवग्गणप्पहुडि जाव महारखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ अणंताणंतपदेसियवग्गणाओ त्ति एत्थ सुत्ते घेत्तव्वाओ। तत्थ आहार-तेज-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ गहणपाओग्गाओ अवसेसाओ अगहणपाओग्गाओ त्ति घेत्तव्वं ।

तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमा-हारदव्ववग्गणा णाम ॥७२७॥

पुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२३॥

यह सूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२५॥

यह सूत्र सुगम है ।

कोई ग्रहणप्रायोग्य होती हैं और कोई अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२६॥

आहारवर्गणाकी जघन्य वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ये सब अनन्तानन्त-प्रदेशी वर्गणाएँ हैं इस प्रकार यहाँ सूत्रमें ग्रहण करना चाहिए। उनमेंसे आहारवर्गणा, तैजस-वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ये ग्रहणप्रायोग्य हैं, अवशेष अग्रहणप्रायोग्य हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७२७॥

---

१. का०प्रतौ 'काओ वे गहणपाओग्गाओ काओ वे अगहण-' इति पाठः ।

उवरि त्ति वुत्ते मज्झे इदि घेत्तव्वं, अण्णहा उवरित्तासंभवादो। अथवा हेट्ठिम-अणंताणंतपदेसियवग्गणाणमुवरि आहारवग्गणा होंति त्ति घेत्तव्वं। एदेण सुत्तेण आहारवग्गणा एदेण सरूवेण परिणमदि त्ति जाणावेंतेण तद्ववट्ठाणपदेसपरूवणा कदा।

आहारदव्ववग्गणा णाम का ॥७२८॥

केण लक्खणेण जाणिज्जदि, किं वा तत्तो णिप्पज्जमाणमिदि एदेण[1] सुत्तेण पुच्छा कदा।

आहारदव्ववग्गणा तिण्णं सरीराणं गहणं पवत्तदि ॥७२९॥

जिस्से परमाणुपोग्गलक्खंधे घेत्तूण तिण्णं सरीराणं गहणं णिप्पत्ती पवत्तदि[2] होदि सा आहारदव्ववग्गणा णाम। तिण्णं सरीराणं णामणिद्देसट्ठं गहणसरूव-परूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जाणि दव्वाणि घेत्तूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए परिणामेदूण[3] परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम ॥७३०॥

ऊपर ऐसा कहने पर मध्यमें ऐसा ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा ऊपरपना नहीं बन सकता है। अथवा अधस्तन अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाओंके ऊपर आहारवर्गणा होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस सूत्रद्वारा आहारवर्गणा इस रूपसे परिणमन करती है ऐसा जानते हुए उसके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

आहारद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७२८॥

वह किस लक्षणसे जानी जाती है, अथवा उससे क्या निष्पन्न होता है इस प्रकार इस सूत्रद्वारा पृच्छा की गई है।

आहारद्रव्यवर्गणा तीन शरीरोंके ग्रहणके लिए प्रवृत्त होती है ॥७२९॥

जिसके परमाणुपुद्गलस्कन्धको ग्रहणकर तीन शरीरोंका ग्रहण अर्थात् निष्पत्ति होती है वह आहारद्रव्यवर्गणा है। अब तीन शरीरोंके नामोंका निर्देश करनेके लिए और ग्रहणके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७३०॥

१. ता०प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइजित (णिप्पज्जमाणमिदि) एदेण' का०प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइजंते एदेण' इति पाठः। २. ता०प्रतौ 'गहणं णिव्वत्ती पवत्तदि' का०प्रतौ 'गहणणिप्फत्ती पवत्तदि' इति पाठः। ३. का०प्रतौ 'परिणमिदूण' इति पाठः।

आहारसरीरवग्गणाए अंतो काओ चि वग्गणाओ ओरालियसरीरपाओग्गाओ काओ चि वेउव्वियसरीरपाओग्गाओ काओ चि आहारसरीरपाओग्गाओ। एवमाहार-सरीरवग्गणा तिविहा होदि। एदिस्से तिविहत्तं कुदो णव्वदे ? उवरिभण्णमाण-ओगाहणप्पाबहुगादो कज्जभेदण्णहाणुववत्तीदो वा। जाणि ओरालिय-वेउव्विय-आहार-सरीराणं पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण पाविऊण ओरालिय--वेउव्विय--आहार-सरीरत्ताए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं सरूवेण ताणि परिणामेदूण परिणमाविय जेहि सह परिणमंति बंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम। जदि एदेसिं तिण्णं सरीराणं वग्गणाओ ओगाहणभेदेण संखाभेदेण च भिण्णाओ तो आहारदव्ववग्गणा एक्का चेवे त्ति किमट्ठं उच्चदे ? ण, अगहणवग्गणाहि अंतराभावं पडुच्च तासिमेगत्तुवएसादो। ण च संखाभेदो असिद्धो, उवरिभण्णमाणअप्पाबहुएणेव तस्स सिद्धीदो।

आहारदव्ववग्गणाएमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७३१॥

एदेण अगहणवग्गणावट्ठाणपदेसो परूविदो।

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥७३२॥

आहारशरीरवर्गणाके भीतर कुछ वर्गणाएँ औदारिकशरीरके योग्य हैं, कुछ वर्गणाएँ वैक्रियिकशरीरके योग्य हैं और कुछ वर्गणाएँ आहारकशरीरके योग्य हैं। इस प्रकार आहार-शरीरवर्गणा तीन प्रकार की है।

शंका—यह तीन प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—आगे कहे जानेवाले अवगाहना अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। अथवा अन्यथा कार्यभेद नहीं बन सकता है इससे जाना जाता है कि वह तीन प्रकारकी है।

जो औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरके योग्य द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर अर्थात् प्राप्तकर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे अर्थात् औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आकारसे उन्हें परिणमाकर जिनके साथ जीव परिणमन करते हैं अर्थात् बन्धको प्राप्त होते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

शंका—यदि इन तीन शरीरोंकी वर्गणाएँ अवगाहनाके भेदसे और संख्याके भेदसे अलग अलग हैं तो आहारद्रव्यवर्गणा एक ही है ऐसा किसलिए कहते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अग्रहणवर्गणाओंके द्वारा अन्तरके अभावकी अपेक्षा इन वर्गणाओंके एकत्वका उपदेश दिया गया है। और संख्याभेद असिद्ध नहीं है, क्योंकि आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे ही उसकी सिद्धि होती है।

आहारद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है ॥७३१॥

इस सूत्रद्वारा अग्रहणद्रव्यवर्गणाके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७३२॥

किंलक्खणेणे त्ति भणिदं होदि ।

अगहणदव्ववग्गणा आहारदव्वमधिच्छिदा तेयादव्ववग्गणं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७३३॥

आहारदव्वमधिच्छिदा एदेण[1] तिण्णं सरीराणमप्पाओग्गत्तं आहारदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणादो वि अगहणजहणवग्गणाए रूवाहियत्तं परूविदं । तेयादव्ववग्गणं ण पावदि एदेण तेजा-भास-मण-कम्माणमप्पाओग्गत्तं तेजाजहण्णवग्गणादो एदिस्से उक्कस्सवग्गणाए रूवूणत्तं च परूविदं[3] । ताणं दव्वाणमंतरे एदासिं दोण्णं वग्गणाणं विचाले अगहणदव्ववग्गणा णाम । एदेण ट्ठिदपदेसपरूवणा कदा ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्ववग्गणा णाम ॥७३४॥

एदेण सुत्तेण तेयादव्ववग्गणाए पमाणं परूविदं ।

तेयादव्ववग्गणा णाम का ॥७३५॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

क्या लक्षणवाली है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा आहारद्रव्यसे प्रारम्भ होकर तैजसद्रव्यवर्गणाको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७३३॥

'आहारदव्वमधिच्छिदा' इस वचन द्वारा अग्रहणवर्गणा तीन शरीरोंके अयोग्य है और आहारद्रव्यवर्गणाकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणासे भी जघन्य अग्रहण वर्गणा एक प्रदेश अधिक है यह कहा गया है । 'तेयादव्ववग्गणं ण पावदि' इस वचन द्वारा यह तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाके अयोग्य और जघन्य तैजसवर्गणा से यह उत्कृष्ट वर्गणा एक प्रदेश न्यून है यह कहा गया है । 'ताणं दव्वाणं अंतरे' अर्थात् इन दोनों वर्गणाओंके बीच में अग्रहणद्रव्यवर्गणा है । इस द्वारा उसके स्थित होनेके प्रदेशका कथन किया गया है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा है ॥७३४॥

इस सूत्र द्वारा तैजसद्रव्यवर्गणाका प्रमाण कहा गया है ।

तैजसद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७३५॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

---

१. ता०प्रतौ '-मच्छिदा' इति पाठः । २. ता०प्रतौ '-मधिच्छिदा [ए]' एदेण इति पाठः । ३. ता०प्रतौ 'अपरूविदं' इति पाठः ।

तेयादव्ववग्गणा तेयासरीरस्स गहणं पवत्तदि ॥७३६॥

तेजासरीरस्स तेयासरीरट्ठं गहणं जत्तो पवत्तदि[1] सा तेजावग्गणा त्ति भण्णदि। एदस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

जाणि दव्वाणि घेत्तूण तेयासरीरत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजादव्ववग्गणा णाम ॥७३७॥

जाणि दव्वाणि घेत्तूण पाविदूण तेजासरीरत्ताए तेजासरीरसरूवेण परिणामेदूण मिच्छादिपच्चएहि परिणमाविय परिणमंति संबंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजादव्ववग्गणा णाम।

तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७३८॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥७३९॥

अगहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमविच्छिदा भासादव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७४०॥

सुगममेदं सुत्ततियं।

तैजसद्रव्यवर्गणासे तैजसशरीरका ग्रहण होता है ॥७३६॥

'तेजासरीरस्स' अर्थात् तैजसशरीरके लिए ग्रहण जिससे होता है वह तैजसवर्गणा कही जाती है। अब इसका निर्णय करने के लिए आगे का सूत्र कहते हैं।

जिन द्रव्योंको ग्रहणकर तैजसशरीररूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी तैजसद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७३७॥

जिन द्रव्योंको ग्रहण कर अर्थात् प्राप्त कर तैजसशरीररूपसे 'परिणामेदूण' अर्थात् मिथ्यात्व आदि कारणोंसे परिणमा कर जीव 'परिणमंति' अर्थात् सम्बन्धको प्राप्त होते हैं वे द्रव्य तैजसद्रव्यवर्गणा कहलाते हैं।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७३८॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७३९॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा तैजसद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर भाषाद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४०॥

ये तीन सूत्र सुगम हैं।

---

१. का०प्रतौ 'पवत्तीदि' इति पाठः।

अग्गहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम ॥७४१॥

भासादव्ववग्गणा णाम का ॥७४२॥

सुगमेदं सुत्तदुअं ।

भासादव्ववग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं पवत्तदि ॥७४३॥

जा वग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं होदूण पवत्तदि सा भासादव्ववग्गणा होदि । एदस्स णिण्णयत्थमुत्तरसुत्तं भणदि—

सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोसभासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणामेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि भासा-दव्ववग्गणा णाम ॥७४४॥

भासादव्ववग्गणा सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेदेण चउव्विहा । एदं चउव्विहत्तं कुदो[1] णव्वदे ? चउव्विह[2]भासाकज्जण्णहाणुववत्तीदो । चउव्विहभासाणं पाओग्गाणि जाणि

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४१॥

भाषाद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७४२॥

ये दो सूत्र सुगम हैं ।

भाषाद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण हो कर प्रवृत्त होती है ॥७४३॥

जो वर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है वह भाषाद्रव्यवर्गणा है । अब इसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषाके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमा कर जीव उन्हें निकालते हैं उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४४॥

भाषाद्रव्यवर्गणा सत्य, मोष, सत्यमोष और असत्यमोषके भेदसे चार प्रकारकी है ।

शंका—यह चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—उसका चार प्रकारका भाषारूप कार्य अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह चार प्रकारकी है ।

चार प्रकारकी भाषाके योग्य जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर तालु आदिके व्यापार द्वारा

१. ता०प्रतौ 'चउव्विहा । तं चउव्विहा कुदो' इति पाठः । २. ता०प्रतौ 'णव्वदे तच्चउव्विह'- इति पाठः ।

दव्वाणि ताणि घेत्तूण सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभासाणं सरूवेण तालुवादिवावारेण परिणमाविय जीवा मुहादो णिस्सारेंति ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम।

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७४५॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥७४६॥

अगहणदव्ववग्गणा भासादव्वमधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे[1] अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७४७॥

सुगममेदं सुत्ततियं।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥७४८॥

मणदव्ववग्गणा णाम का ॥७४९॥

मणदव्ववग्गणा चउव्विहस्स[2] मणस्स गहणं पवत्तदि ॥७५०॥

एदाणि वि सुगमाणि।

सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोसमणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमाकर जीव मुखसे निकालते हैं, अतएव उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४५॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७४६॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा भाषाद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर मनोद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः उन द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४७॥

ये तीन सूत्र सुगम हैं।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७४८॥

मनोद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७४९॥

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारके मनरूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती हैं ॥७५०॥

ये सूत्र भी सुगम हैं।

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर

१. ता॰प्रतौ 'ताणि (णं) दव्वाणमंतरे' का॰प्रतौ 'ताणि दव्वाणमंतरे' इति पाठः। २. का॰प्रतौ '-वग्गणाए चउविहस्स' इति पाठः।

दव्वाणि घेत्तूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्च-मोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मण-दव्ववग्गणा णाम ॥७५१॥

मणदव्ववग्गणा चउव्विहा—सच्चमणपाओग्गा मोसमणपाओग्गा सच्चमोसमण-पाओग्गा असच्चमोसमणपाओग्गा चेदि । मणदव्ववग्गणाए चउव्विहत्तं कुदो णव्वदे ? मणदव्वग्गणादो णिप्पज्जमाणदव्वमणस्स चउव्विहभावण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७५२॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥७५३॥

अगहणदव्ववग्गणा [मण] दव्वमविच्छिदा[1] कम्मइयदव्वं ण पावदि ताणं द वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७५४॥

एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५५॥

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनरूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७५१॥

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है—सत्यमनप्रायोग्य, मोषमनप्रायोग्य, सत्यमोषमनप्रायोग्य और असत्यमोषमनप्रायोग्य ।

शंका—मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान – मनोद्रव्यवर्गणासे उत्पन्न होनेवाला द्रव्यमन चार प्रकारका अन्यथा बन नहीं सकता है इससे जाना जाता है कि मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी होती है।

शेष कथन सुगम है।

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७५२॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७५३॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा मनोद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर कार्मणद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७५४॥

ये सूत्र भी सुगम हैं।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७५५॥

१. का०प्रतौ '–मधिच्छिदा' इति पाठः ।

कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ॥७५६॥

कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तादि ॥७५७॥

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि । एदेसिं सुत्ताणं णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण णाणावरणीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेयणीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥७५८॥

णाणावरणीयस्स जाणि पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि चेव मिच्छत्तादिपच्चएहि पंचणाणावरणीयसरूवेण परिणमंति ण अण्णेसिं सरूवेण । कुदो ? अप्पाओग्गत्तादो । एवं सव्वेसिं कम्माणं वत्तव्वं, अण्णहा णाणावरणीयस्स जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण मिच्छादिपच्चएहि णाणावरणीयत्ताए परिणामेदूण जीवा परिणमंति त्ति सुत्ताणुववत्तीदो । जदि एवं तो कम्मइयवग्गणाओ अट्ठ त्ति किण्ण परूविदाओ ? ण, अंतराभावेण तधोवदेसाभावादो । एदाओ अट्ठ वि वग्गणाओ किं पुध पुध अच्छंति आहो

कार्मणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥७५६॥

कार्मणद्रव्यवर्गणा आठ प्रकारके कर्मका ग्रहणकर प्रवृत्त होती है ॥७५७॥

ये सूत्र सुगम हैं । अब इन सूत्रोंका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहणकर ज्ञानावरणरूपसे, दर्शनावरणरूपसे, वेदनीयरूपसे, मोहनीयरूपसे, आयुरूपसे, नामरूपसे, गोत्ररूपसे और अन्तरायरूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं, अतः उन द्रव्योंकी कार्मणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७५८॥

ज्ञानावरणीयके योग्य जो द्रव्य हैं वे ही मिथ्यात्व आदि प्रत्ययोंके कारण पाँच ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमन करते हैं, अन्यरूपसे वे परिणमन नहीं करते, क्यों कि वे अन्यके अयोग्य होते हैं । इसी प्रकार सब कर्मोंके विषयमें कहना चाहिए, अन्यथा ज्ञानावरणीयके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर मिथ्यात्व आदि प्रत्ययवश ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं यह सूत्र नहीं बन सकता है ।

शंका—यदि ऐसा है तो कार्मणवर्गणाएँ आठ हैं ऐसा कथन क्यों नहीं किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अन्तरका अभाव होनेसे उस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता ।

करंबियाओ त्ति ? पुध पुध ण अच्छंति किंतु करंबियाओ । कुदो एदं णव्वदे ? 'आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ' एदीए गाहाए णव्वदे । सेसं जाणिदूण वत्तव्वं ।

एवं वग्गणणिरूवणा समत्ता ।

पदेसट्ठा—ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठा अणंताणंत-पदेसियाओ ॥७५९॥

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाणं पदेसपरिमाणं पुव्वं चेव आहारवग्गणणिरूवणाए परूविदं । तमेत्थ किमट्ठं वुच्चदे ? ओरालियवग्गणापदेसे अस्सिदूण वण्णादिपरूवणं करेमि त्ति जाणावणट्ठं वुच्चदे ।

पंचवण्णाओ ॥७६०॥

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ सुक्किल--रुहिर--किण्ण--णील--पीदवण्णसंजुत्ताओ होंति । कथं एकम्हि परमाणुम्हि पंचण्णं वण्णाणं संभवो ? ण एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एक्केको चेव वण्णपज्जाओ, किंतु ओरालियसरीरवग्गणाए जेण काओचि सुक्किल-वण्णाओ काओचि रुहिरवण्णाओ काओचि किण्णवण्णाओ काओचि णीलवण्णाओ

शंका—ये आठ ही वर्गणाऐं क्या पृथक् पृथक् रहती हैं या मिश्रित हो कर रहती हैं।

समाधान—पृथक् पृथक् नहीं रहती हैं किन्तु मिश्रत हो कर रहती हैं।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान 'आयु कर्म का भाग स्तोक है। नाम कर्म और गोत्र कर्म का भाग उससे अधिक है। इस गाथा से जाना जाता है।

शेष का कथन जानकर करना चाहिये।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा समाप्त हुई।

प्रदेशार्थता—औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त-प्रदेशवाली होती हैं ॥७५९॥

शंका—औदारिकशरीरकी द्रव्यवर्गणाओंके प्रदेशोंका परिणाम पहले ही आहारवर्गणा-निरूपणामें किया है, उसे यहां किसलिए कहते हैं ?

समाधान—औदारिकवर्गणाके प्रदेशोंका आश्रय लेकर वर्ण आदिका कथन करते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहते हैं।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७६०॥

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं शुक्ल, लाल, कृष्ण, नील और पीतवर्णसे संयुक्त होती हैं।

शंका—एक परमाणुमें पाँच वर्ण कैसे होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि एक एक परमाणुमें एक एक ही वर्णपर्याय होती है। किन्तु औदारिकशरीरवर्गणाकी चूंकि कुछ वर्गणाऐं शुक्लवर्णवाली होती हैं, कुछ लालवर्णवाली होती हैं,

काओचि पीदवण्णाओ काओचि करंबियवण्णाओ, तेणेदाणं पंचवण्णत्तं जुज्जदे। जदि एवं तो ओरालियसरीरवग्गणाए एक्कतीसवण्णभेदा पावेंति ? ण, पंचवण्णेहि एयंतेण पुधभूदसंजोगाभावादो।

पंचरसाओ ॥७६१॥

ओरालियसरीरवग्गणासु तित्त--कडुअ--कसायंबिल-महुरभेदेण पंच रसा होंति। एदे पंच वि रसा एक्केक्कपरमाणुम्हि जुगवं ण होंति, किंतु कमेण होंति। वग्गणासु पुण अक्कमेण कमेण वि होंति, अणंताणंतपरमाणूणं समुदयसमागमेण समुप्पण्णवग्गणासु पंचवण्णाणं व पंचरसाणमक्कमेण वुत्तीए विरोहाभावादो। एत्थ वि एक्कतीसं रसभेदा परूवेदव्वा।

दुगंधाओ ॥७६२॥

सुरहिगंधो दुरहिगंधो त्ति बे चेव गंधभंगा संखेवेण। विसेसदो पुण सुरहिगंधो दुरहिगंधो वि अणेयविहो, जाइ-केयइ-णेमालियादिफुल्लेसु अणेयगंधुवलंभादो। एदेहि दोहि गंधेहि ओरालियपरमाणू कमेण संजुत्ता होंति, वग्गणाओ पुण अक्कमकमेहि

कुछ कृष्णवर्णवाली होती है, कुछ नीलवर्णवाली होती हैं, कुछ पीतवर्णवाली होती हैं और कुछ मिश्रवर्णवाली होती हैं, इसलिए इनके पाँच वर्ण बन जाते हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो औदारिकशरीरवर्गणाके इकतीस वर्णके भेद प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पाँच वर्णोंसे संयोगी भेद सर्वथा पृथग्भूत नहीं होते।

पाँच रसवाली होती हैं ॥७६१॥

औदारिकशरीर वर्गणाओंमें तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल और मधुरके भेदसे पाँच रस होते हैं। ये पाँचों रस एक एक परमाणुमें एक साथ नहीं होते हैं किन्तु क्रमसे होते हैं। परन्तु वर्गणाओंमें अक्रमसे होते हैं और क्रमसे भी होते हैं, क्योंकि अनन्तानन्त परमाणुओंके समुदय-समागमसे उत्पन्न हुई वर्गणाओंमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रसोंकी अक्रमसे वृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यहाँ पर भी इकतीस रसके भेद कहने चाहिए।

विशेषार्थ--रसके मूल भेद पाँच हैं, इसलिए प्रत्येक भेद पाँच हुए। इन पाँचोंके द्विसंयोगी भेद दस होते हैं, त्रिसंयोगी भेद भी दस होते हैं, चतुःसंयोगी भेद पाँच होते हैं और पाँचसंयोगी भेद एक होता है। इसप्रकार कुल भेद इकतीस होते हैं। पाँच वर्णोंके इकतीस भेद इसी प्रकार ले आने चाहिए।

दो गन्धवाली होती हैं ॥७६२॥

सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध इस प्रकार संक्षेपसे गन्धके भंग दो ही हैं। विशेषकी अपेक्षा तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्धि अनेक प्रकार का होता है, क्योंकि जाति, केतकी और नेमाली आदि फूलोंमें अनेक प्रकारकी गन्ध उपलब्ध होती है। इन दो प्रकार की गन्धोंसे औदारिक परमाणु क्रमसे संयुक्त होते हैं। परन्तु वर्गणाएं क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं, क्योंकि

संजुज्जंति, सावयवेसु तदविरोहादो।

अट्ठफासाओ ॥७६३॥

कक्कड-मउअ-णिद्ध-ल्हुक्ख-गुरु-लहु-सीदुण्णभेदेण अट्ठ मूलफासा होंति। संजोगेण पुण दुसदपंचवण्णफासभेदा। ते एत्थ ण गहिदा, संगहे असंगहस्स अभावादो। एदेहि अट्ठपासेहि ओरालियवग्गणाओ अक्कमक्कमेहि संजुत्ताओ होंति।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥७६४॥

पंचवण्णाओ ॥७६५॥

पंचरसाओ ॥७६६॥

दुगंधाओ ॥७६७॥

अट्ठफासाओ ॥७६८॥

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरस्स पंचसुत्तपरूवणा कदा तहा कायव्वा।

सावयव पदार्थोंमें ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७६३॥

कर्कश, मृदु, स्निग्ध, रूक्ष, गुरु, लघु, शीत और उष्णके भेदसे मूल स्पर्श आठ होते हैं। परन्तु संयोगसे दो सौ पचवन स्पर्शके भेद होते हैं। उनका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि संग्रहमें प्रत्येक का अभाव है। इन आठ स्पर्शोंसे औदारिकशरीरवर्गणाऐं क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं।

वैक्रियिक शरीर द्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७६४॥

वे पाँचवर्ण वाली होती हैं ॥७६५॥

पाँच रसवाली होती हैं ॥७६६॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥७६७॥

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७६८॥

जिस प्रकार औदारिकके पाँच सूत्रोंका कथन किया है उसी प्रकार इन पाँच सूत्रों का कथन करना चाहिये।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥७६९॥

सुगमं ।

पंचवण्णाओ ॥७७०॥

जदि एदाओ पंचवण्णाओ, आहारसरीरं धवलं चेवे त्ति कधं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयस्स धवलत्तं दट्ठूण तदुवदेसादो ।

पंचरसाओ ॥७७१॥

एत्थ असुहरसाणं संभवे संते आहारसरीरस्स महुरत्तं कधं जुज्जदे ? ण, अप्पसत्थरसाणं वग्गणाणं अव्वत्तरसभावेण तत्थ महुररसुवदेसादो ।

दुगंधाओ ॥७७२॥

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुअंधत्तं पुव्वं व परूवेयव्वं[1] ।

अट्ठपासाओ ॥७७३॥

आहारकशरीरवर्गणाएं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७६९॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७७०॥

शंका—यदि ये पाँच वर्णवाली होती हैं तो आहार शरीर धवल ही होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि विस्रसोपचयकी धवलताको देखकर वह उपदेश दिया है ।

पाँच रसवाली होती हैं ॥७७१॥

शंका—यहाँ अशुभ रस की सम्भावना होने पर आहारकशरीर मधुर होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि अप्रशस्त रसवाली वर्गणाओंका अव्यक्त रस होनेसे वहाँ मधुर रसका उपदेश दिया गया है ।

दो गन्धवाली होती हैं ॥७७२॥

यहाँ पर भी आहारकशरीरका सुगन्धपना पहलेके समान कहना चाहिये ।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७७३॥

१. मप्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'सुअंधत्तं परूवेयव्वं' का०प्रतौ 'सुअत्तं परूवेयव्वं' इति पाठः ।

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुहपासो पुव्वं व परूवेयव्वो। अथवा असुहरस-गंध-पासवग्गणाओ आहारसरीरागारेण परिणमंतीओ सुहरस-गंध-पासेहि परिणमंति त्ति वत्तव्वं[1]।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥७७४॥

पंचवण्णाओ ॥७७५॥

पंचरसाओ ॥७७६॥

दोगंधाओ ॥७७७॥

सुगममेदं सुत्तचउक्कं।

चदुपासाओ ॥७७८॥

णिद्ध-ल्हुक्खाणमेक्कदरो सीदुण्हाणमेक्कदरो कक्खड-मउआणमेक्कदरो गरुअ-लहुआणमेक्कदरो पासो[2]। एदम्मि खंधे पडिवक्खपासो ण होदि त्ति कुदो णव्वदे? चत्तारि पासा त्ति णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो।

यहां पर भी आहारकशरीरका शुभ स्पर्श पहले के समान कहना चाहिए। अथवा अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणाएं आहारकशरीररूपसे परिणमन करती हुई शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्शरूपसे परिणमन करती हैं ऐसा यहां पर कहना चाहिए।

तैजसशरीरकी द्रव्यवर्गणाएं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७७४॥

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७७५॥

पाँच रसवाली होती हैं ॥७७६॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥७७७॥

ये चार सूत्र सुगम हैं।

चार स्पर्शवाली होती हैं ॥७७८॥

स्निग्ध और रूक्षमेंसे कोई एक, शीत और उष्णमेंसे कोई एक, कर्कश और मृदुमेंसे कोई एक तथा गुरु और लघुमेंसे कोई एक स्पर्श होता है।

शंका—इस स्कन्धमें प्रतिपक्ष स्पर्श नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधन—सूत्रमें चार स्पर्शोंका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

१. ता०प्रतौ 'वत्तव्वं' इति स्थाने 'घेत्तव्वं' इति पाठः। २. ता०प्रतौ '-मेक्कदरो पासो' इति यावत् सूत्रत्वेन निबद्धं।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥७७९॥

पंचवण्णाओ ॥७८०॥

पंचरसाओ ॥७८१॥

दुगंधाओ ॥७८२॥

चदुपासाओ ॥७८३॥

एदेसिं पंचण्णं सुत्ताणमत्थो जहा तेजासरीरस्स पंचण्णं सुत्ताणं परूविदो तहा परूवेयव्वो ।

एवं पदेसट्ठदा समत्ता ।

अप्पाबहुगं दुविहं—पदेसअप्पाबहुअं चेव ओगाहणअप्पा-बहुअं चेव ॥७८४॥

पुव्वं बाहिरवग्गणाए पंचसरीरागारेण परिणदपोग्गलाणमप्पाबहुगं परूविदं । संपहि पंचण्णं सरीराणं वग्गणाणं[1] पदेसस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठं पदेसअप्पाबहुगमागदं ।

भाषाद्रव्यवर्गणाएँ, मनोद्रव्यवर्गणाएँ और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएँ प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७७९॥

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७८०॥

पाँच रसवाली होती हैं ॥७८१॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥७८२॥

चार स्पर्शवाली होती हैं ॥७८३॥

तैजसशरीरके पाँच सूत्रोंका अर्थ जिस प्रकार कहा है उस प्रकार इन पाँच सूत्रोंका अर्थ कहना चाहिये ।

इस प्रकार प्रदेशार्थता समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है—प्रदेशअल्पबहुत्व और अवगाहनाअल्पबहुत्व ॥७८४॥

पहले बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीररूपसे परिणत हुए पुद्गलोंका अल्पबहुत्व कहा है । अब पाँच शरीरोंकी वर्गणाओंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए

१. ता०प्रतौ 'सरीराणं च वग्गणाणं' इति पाठः ।

पंचसरीरपाओग्गवग्गणाणं पि थोवबहुत्तमब्भंतरवग्गणाए परूविदं ति एत्थ पदेस-अप्पाबहुए ण कज्जमिदि वोत्तुं ण जुत्तं, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्ग-वग्गणाणं थोवबहुत्तस्स तत्थ परूवणाभावादो। पंचण्णं सरीराणमोगाहणप्पाबहुअं वेयणखेत्तविहाणे परूविदं त्ति एत्थ ण परूविज्जदे। किंतु पंचण्णं सरीराणं पाओग्ग-वग्गणाणमोगाहणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोगाहणअप्पाबहुअमागयं।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए ॥७८५॥

एदमप्पाबहुअं जोगेणागच्छमाणएगसमयपबद्धवग्गणाणं परूविदं सव्ववग्गणाणं। कुदो एदं णव्वदे? आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गेण पदेसग्गेण च तेजासरीरवग्गणादो अणंतगुणाए तत्तो अणंतगुणहीणत्तविरोहादो। तेण एगेण जोगेण आगच्छमाण-ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसग्गेण वग्गणग्गेण च[1] थोवाओ त्ति भणिदं। आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गे असंखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागा आहारवग्गणाए वग्गणग्गं होदि, सेसे असंखेज्जे खंडे कदे बहुभागा वेउव्वियसरीरपाओग्गवग्गणग्गं होदि। सेसेगभागो ओरालियपाओग्गवग्गणग्गं होदि। तेण थोववग्गणाहिंतो थोवाओ

प्रदेश अल्पबहुत्व आया है। पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंका भी अल्पबहुत्व आभ्यन्तर वर्गणा अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए यहाँ पर प्रदेश अल्पबहुत्वसे कोई प्रयोजन नहीं है ऐसा कहना योग्य नहीं है, क्योंकि औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणाओंके अल्पबहुत्वका वहां पर कथन नहीं किया है। पाँच शरीरों की अवगाहनाका अल्पबहुत्व वेदनाक्षेत्रविधान अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए उसका यहाँ पर कथन नहीं करते हैं किन्तु पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंकी अवगाहनाओंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवगाहना अल्पबहुत्व यहाँपर आया है।

प्रदेशअल्पबहुत्व—औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं ॥७८५॥

यह अल्पबहुत्व योगसे आनेवाले एक समयप्रबद्धकी वर्गणाओंका कहा है सब वर्गणाओंका नहीं।

शंका—यह किस प्रमाण से जाना जाता है?

समाधान—वर्गणाग्र और प्रदेशाग्रकी अपेक्षा तैजसशरीरवर्गणासे आहारवर्गणा अनन्तगुणी होती है। उससे अनन्तगुणी हीन होने में विरोध आता है। इसलिए एक योग से आनेवाली औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशाग्र और वर्गणाकी अपेक्षा स्तोक हैं यह कहा है।

आहारवर्गणाके वर्गणाग्रके असंख्यात खण्ड करने पर वहाँ बहुभाग प्रमाण आहारक शरीर प्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। शेष के असंख्यात खण्ड करने पर बहुभागप्रमाण वैक्रियिक-शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। तथा शेष एक भागप्रमाण औदारिकशरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र

१. ता० प्रतौ 'वग्गणेण च' इति पाठः।

चेव आगच्छंति त्ति ओरालियसरीरवग्गणाणं थोवत्तं भणिदं त्ति के वि भणंति। एसो अत्थो ण भल्लयो, तेजासरीरवग्गणादिसु एदस्स अत्थस्स पवुत्तीए अदंसणादो। तेण पुव्विल्लत्थो चेव घेत्तव्वो।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।७८६।

जेण जोगेण ओरालियसरीरट्ठमाहारवग्गणादो ओरालिय०वग्गणाओ एगसमए-णागमणपाओग्गाओ ताहिंतो तत्तो तम्हि चेव समए अण्णस्स जीवस्स तेणेव जोगेण वेउव्वियसरीरट्ठमागमणपाओग्गाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो ? सभावियादो। को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।।७८७।।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण आहारवग्गणादो आहारसरीरदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो[1] ? साभावियादो। को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ।।७८८।।

होता है, इसलिए स्तोक वर्गणाओंमेंसे स्तोक ही आते हैं, इसलिए औदारिकशरीरवर्गणाऐं स्तोक कही हैं ऐसा कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु यह अर्थ भला नहीं है, क्योंकि तैजसशरीर वर्गणा आदिमें इस अर्थकी प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, इसलिए पहलेका अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।।७८६।।

जिस योगसे औदारिकशरीरके लिए आहारवर्गणाओंमेंसे औदारिकशरीरवर्गणाऐं एक समयमें आगमनप्रायोग्य होती हैं उन्हीं वर्गणाओंमेंसे उसी समय में अन्य जीवके उसी योगसे वैक्रियिकशरीरके लिए आगमनयोग्य वर्गणाऐं असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।।७८७।।

उसी समयमें उसी योगसे आहारवर्गणामेंसे आनेवाली आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाऐं असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाऐं प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ।।७८८।।

१. ता० प्रतौ 'असंखे०गुणाओ ? [मणदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ] । कुदो इति पाठः। तथा का० प्रतौ कृतसंशोधनमवलोक्य म० प्रतावपि असंखेज्जगुणाओ मणदव्वनग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। कुदो' इति पाठः प्रतिभाति।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण तेजासरीरदव्ववग्गणादो तेजासरीरद्वमागच्छमाण-वग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। कुदो? साभावियादो। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंत-गुणाओ ॥७८९॥

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण भासावग्गणादो भासापज्जाएण परिणममाण-वग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण मणदव्ववग्गणादो दव्वमणट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ। तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण कम्मइयदव्ववग्गणादो अट्ठण्णं कम्माणमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंत-गुणाओ। सव्वत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

एवं पदेसअप्पाबहुअं समत्तं।

ओग्गाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्व-वग्गणाओ ओगाहणाए ॥७९०॥

कुदो? एगम्हि घणंगुले अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगकम्मइय-

उसी समयमें उसी योगके द्वारा तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंमेंसे तैजसशरीरके लिए आनेवाली वर्गणाऐं प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है।

भाषाद्रव्यवर्गणाएं मनोद्रव्यवर्गणाएं और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएं प्रदेशार्थता की अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८९॥

उसी समयमें उसी योगसे भाषावर्गणाओंमेंसे भाषारूप पर्यायसे परिणमन करनेवाली वर्गणाएं प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। उसी समयमें उसी योगसे मनोद्रव्यवर्गणाओं-मेंसे द्रव्यमनके लिए आनेवाली वर्गणाएं प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। उसी समयमें उसी योगसे कार्मणद्रव्यवर्गणाओंमेंसे आठों कर्मोंके लिए आनेवाली वर्गणाऐं प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं। सर्वत्र गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता है।

इस प्रकार प्रदेश अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अवगाहनाअल्पबहुत्व—कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाएं अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं ॥७९०॥

क्योंकि एक घनाङ्गुलमें अङ्गुलके असंख्यातवें भागका भाग देने पर एक कार्मणवर्गणाकी

वग्गणाए ओगाहणुप्पत्तीदो ।

मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥७६१॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । घणंगुलभागहारादो असंखेज्ज-गुणहीणा कथमणंतगुणहीणवग्गणाणमोगाहणा असंखेज्जगुणा होज्ज ? ण एस दोसो, घणागारेण द्विदलोहगोलियाए ओगाहणादो थोवपदेसस्स फेणपुंजस्स ओगाहणाए बहुत्तुवलंभादो । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥७६२॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥७६३॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो एसो णव्वदे ? अविरुद्धा-इरियवयणादो ।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ[4] ॥७६४॥

अवगाहना उत्पन्न होती है ।

मनोद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७६१॥

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका—अनन्तगुणी हीन वर्गणाओंकी घनाङ्गुलके भागहारसे असंख्यातगुणी हीन अवगाहना असंख्यातगुणी कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि घनाकाररूपसे स्थित लोहके गोलाकी अवगाहनासे स्तोक प्रदेशवाले फेनपुंजकी अवगाहना बहुत उपलब्ध होती है ।

यह अर्थपद ऊपर सर्वत्र कहना चाहिए ।

भाषाद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७६२॥

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७६३॥

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७६४॥

१. ता०प्रतौ '–वग्गणाए (ओ) ओगाहणाए' का०प्रतौ '–वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः । २. ता०प्रतौ '–वग्गणाए (ओ) ओगाहणाओ (ए) असंखेज–' इति पाठः । ३. का०प्रतौ '–वग्गणाए ओगाहणाए' इति पाठः । ४. ता०प्रतौ 'ओगाहणाओ (ए) असंखेजगुणाओ' इति पाठः ।

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥७९५॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥७९६॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

एवमोगाहणप्पाबहुए समत्ते बंधणिज्जं[1] समत्तं होदि ।

जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं—पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि ॥७९७॥

एदेसिं चदुण्णं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पवंचेण लिहिदं ति अम्मेहि एत्थ ण लिहिदं। तदो सयले महाबंधे एत्थ परूविदे बंधविहाणं समप्पदि ।

एवं बंधणअणियोगद्दारं समत्तं ।

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९५॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणाएँ अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९६॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार अवगाहना अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर
बन्धनीय अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

जो बन्धविधान है वह चार प्रकारका है—प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध ॥७९७॥

इन चारों बन्धोका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें विस्तारके साथ लिखा है, इसलिए हमने यहाँ पर नहीं लिखा है। इसलिए सकल महाबन्धके यहाँ पर कथन करने पर बन्धविधान समाप्त होता है ।

इस प्रकार बन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१. का॰प्रतौ '-णप्पाबहुएसु वुत्ते बंधणिज्जं' इति पाठ ।

१ बंधणअणियोगद्दारसुत्ताणि

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।	११
१६	जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो—उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव।	१२
१७	जो सो ओवसमियो अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।	१४
१८	जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमादिया खइया भावा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।	१५
१९	जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—खओवसमियं एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं बीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं चउरिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं सुदअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा खओवसमियं आभिणिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुदणाणि त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मणपज्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमियं भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीरियलद्धि त्ति वा खओवसमियं से आयारधरे त्ति वा खओवसमियं सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओवसमियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्झेणधरे त्ति वा खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अणुत्तरोववादियदसधरे त्ति वा खओवसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं विवागसुत्तधरे त्ति वा खओवसमियं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	लेस्सिया तेउ पम्म-सुक्कलेस्सिया ओघं।	२६१
१६२	भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं।	२४७
१६३	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी ओघं।	२४८
१६४	सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो।	२४८
१६५	सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी ओघं।	२४८
१६६	आहाराणुवादेण आहारा मणजोगिभंगो।	२४८
१६७	अणाहारा कम्मइयभंगो।	२४८
१६८	अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य।	३०१
१६९	ओघेण सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३०१
१७०	असरीरा अणंतगुणा।	३०२
१७१	विसरीरा अणंतगुणा।	३०२
१७२	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०२
१७३	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा विसरीरा	३०२
१७४	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०२
१७५	एवं जाव सत्तसु पुढवीसु।	३०३
१७६	तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं।	३०३
१७७	पंचिंदियतिरिक्ख–पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त–पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३०३
१७८	विसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०३
१७९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०४
१८०	पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइयाणं भंगो।	३०४
१८१	मणुसगदीए मणुसा पंचिंदियतिरिक्खाणं भंगो।	३०५
१८२	मणुसपज्जत्त मणुसिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३०५
१८३	विसरीरा संखेज्जगुणा।	३०५
१८४	तिसरीरा संखेज्जगुणा।	३०६
१८५	मणुसअपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो।	३०६
१८६	देवगदीए देवा सव्वत्थोवा विसरीरा	३०६
१८७	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०६
१८८	एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा त्ति णेयव्वं।	३०६
१८९	सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्वत्थोवा विसरीरा।	३०७
१९०	तिसरीरा संखेज्जगुणा।	३०७
१९१	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरएइंदियपज्जत्ता ओघं।	३०७
१९२	बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा	३०७
१९३	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३०८
१९४	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता मणुसगदिभंगो।	३०८
१९५	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइयबादरवाउकाइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा।	३८९
१९६	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३९०
१९७	तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिंदियपज्जत्तभंगो।	१९७
१९८	जोगाणुवादेण पंचमणजोगि–पंचवचिजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३९८
१९९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१०
२००	कायजोगी ओघं।	३१०

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२०१	ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३१०
२०२	तिसरीरा अणंतगुणा।	३१०
२०३	ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्विय-कायजोगि-वेउव्वियमिस्सकाय-जोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्स-कायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुअं।	३१०
२०४	कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा।	३११
२०५	विसरीरा अणंतगुणा।	३११
२०६	वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिदियभंगो।	३११
२०७	णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं।	३११
२०८	अवगदवेद-अकसाईण णत्थि अप्पा-बहुगं।	३११
२०९	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद-अण्णाणी ओघं।	३१२
२१०	विहंगणाणी सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३१२
२११	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१२
२१२	आभिणि सुद-ओहिणाणीसु पंचि-दियपज्जत्ताणं भंगो।	३१२
२१३	मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३१३
२१४	तिसरीरा सखेज्जगुणा।	३१३
२१५	केवलणाणीसु णत्थि अप्पाबहुगं।	३१३
२१६	संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मणपज्ज-वणाणिभंगो।	३१३
२१७	परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइय-सुद्धसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धि-संजदाणं णत्थि अप्पाबहुगं।	३१३
२१८	संजदासजदा विभंगणाणिभंगो।	३१४
२१९	असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं।	३१४
२२०	लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउ-लेस्सिया भवियाणुवादेण भव-सिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं।	३१४
२२१	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहि-दंसणी तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो।	३१४
२२२	केवलदंसणीणं णत्थि अप्पाबहुगं।	३१५
२२३	सुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा विसरीरा।	३१५
२२४	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१५
२२५	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१६
२२६	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी वेदग-सम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी पंचिं-दियपज्जत्तभंगो।	३१६
२२७	खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा विसरीरा।	३१६
२२८	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१६
२२९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा।	३१७
२३०	सम्मामिच्छाइट्ठी संजदासंजदाणं भंगो।	३१७
२३१	मिच्छाइट्ठी ओघं।	३१७
२३२	सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिंदिय-पज्जत्ताणं भंगो।	३१७
२३३	असण्णी ओघं।	३१८
२३४	आहाराणुवादेण आहारएसु ओरा-लियकायजोगिभंगो।	३१८
२३५	अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो।	३१८
२३६	सरीरपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणियोगद्दाराणि-णामणिरुत्ती-पदेसपमाणाणुगमो णिसेयपरूवणा गुणगारो पदमीमांसा अप्पा-बहुए त्ति।	३२१
२३७	णामणिरुत्तीए उरालमिदि ओरालियं।	३२२
२३८	विविहइड्ढिगुणजुत्तमिदि वेउव्वियं।	३२५
२३९	णिवुणाणं वा णिण्णाणं वा सुहु-माणं वा आहारदव्वाणं सुहुमदर-मिदि आहारयं।	३२६
२४०	तेयप्पहगुणजुत्तमिदि तेजइयं।	३२७
२४१	सव्वकम्माणं परूहणुप्पादयं सुह-	

सू० सं०	सुत्ताणि	पृ० सं०
	ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ।	३७२
३३८	असंखेज्जा भागा ।	३७३
३३९	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३७३
३४०	अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि—जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	३७३
३४१	जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ।	३७३
३४२	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३७४
३४३	अपढम—अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३७६
३४४	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७७
३४५	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७७
३४६	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं	३७७
३४७	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३७७
३४८	जहण्णपदेण सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ।	३७८
३४९	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं	३७८
३५०	अपढम—अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३७८
३५१	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७९
३५२	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७९
३५३	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं	३७९
३५४	उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं ।	३७९
३५५	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३७९
३५६	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५७	पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५८	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५९	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३६०	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३८०
३६१	सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमगुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्ग ।	३८१
३६२	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।	३८१
३६३	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहिय ।	३८१
३६४	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्ग विसेसाहियं ।	३८१
३६५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६६	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६७	जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ।	३८२
३६८	चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३८२
३६९	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३८२
३७०	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३८२
३७१	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७२	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७३	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७४	अपढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
४८४	अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णि-पच्छायदस्स ।	४२४
४८५	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय-तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५
४८६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२५
४८७	जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२५
४८८	अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ।	४ ५
४८९	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय-तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५
४९०	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२६
४९१	जहण्णपदेण तेजासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२६
४९२	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअप-ज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाण-यस्स जहण्णजोगिस्स तस्स तेया-सरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२६
४९३	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२८
४९४	जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२८
४९५	अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोद-जीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण ऊणयं कम्मट्ठिदिमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीवि-दव्वए त्ति चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धि-यस्स तस्स कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२८
४९६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२९
४९७	अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरा-लियसरीरस्स पदेसग्गं ।	४२९
४९८	वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं ।	४२९
४९९	आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं ।	४३०
५००	तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ।	४३०
५०१	कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं।	४३०
५०२	सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणियोगद्दाराणि—अविभागपलिच्छेदपरूवणा वग्गण-परूवणा फड्डयपरूवणा अंतर-परूवणा सरीरपरूवणा अप्पा-बहुए त्ति ।	४३०
५०३	अविभागपडिच्छेदपरूवणदाए एक्केक्कम्मि ओरालियपदेसे केवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
५०४	अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्व-जीवेहि अणंतगुणा ।	४३१
५०५	एवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
५०६	वग्गणपरूवणदाए अणंता अविभाग-पडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ।	४३२
५०७	एवमणंताओ वग्गणाओ अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-मणंतभागो ।	४३२
५०८	फड्डयपरूवणदाए अणंताओ वग्ग-णाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागो तमेगं फड्डयं भवदि ।	४३३
५०९	एवमणंताणि फड्डयाणि अभवसिद्धि-एहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंत-भागो ।	४३३
५१०	अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फड्डयस्स केवडियमंतरं	४३४
५११	सव्वजीवेहि अणंतगुणा । एवडिय-मंतरं ।	४३४
५१२	सरीरपरूवणदाए अणंता अविभाग-पडिच्छेदा सरीरबंधणगुणपण्ण-च्छेदणणिप्पण्णा ।	४३४
५१३	छेदणा पुण दसविहा ।	४३५

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी।	४४९
५३८	एवं चदुण्णं सरीराणं।	४४९
५३९	भावहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा।	४५०
५४०	जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा।	४५०
५४१	एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंत-अणंताणंतगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा।	४५२
५४२	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं छव्विहा हाणी-अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी।	४५२
५४३	एवं चदुण्णं सरीराणं।	४५३
५४४	ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो।	४५३
५४५	तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५४
५४६	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५४
५४७	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो	४५४
५४८	एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरस्स।	४५५
५४९	जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५५

सूत्र सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५५०	तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५५
५५१	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५६
५५२	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५९
५५३	बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो।	४६०
५५४	सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए छण्णं जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं सपिंडिदाणं संताणं सव्वुक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४६१
५५५	एदेम्हि चेव परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणियोगद्दाराणि-जीवपमाणाणुगमो पदेसपमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति।	४६२
५५६	जीवपमाणाणुगमेण पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा।	४६३
५५७	आउक्काइया जीवा असंखेज्जा।	४६३
५५८	तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा।	४६३
५५९	वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा।	४६३
५६०	वणप्फदिकाइया जीवा अणंता।	४६३
५६१	तसकाइया जीवा असंखेज्जा।	४६३
५६२	पदेसपमाणाणुगमेण पुढविकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा	४६३
५६३	आउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा।	४६४
५६४	तेउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा।	४६४
५६५	वाउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा।	४६४
५६६	वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता।	४६४
५६७	तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा।	४६४

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५६८	अप्पाबहुअं दुविहं—जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ।	४६५
५६९	जीवअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयजीवा ।	४६५
५७०	तेउक्काइयजीवा असंखेज्जगुणा ।	४६५
५७१	पुढविकाइयजीवा विसेसाहिया ।	४६५
५७२	आउकाइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७३	वाउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७४	वणप्फदिकाइयजीवा अणंतगुणा ।	४६६
५७५	पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयपदेसा ।	४६६
५७६	तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा	४६६
५७७	पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७८	आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७९	वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५८०	वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा ।	४६६
	चूलिया	
५८१	एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम ।	४६६
५८२	जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा । एयसमएण अणंताणंतसाहारणजीवेण घेत्तूण एगसरीरं भवदि असंखेज्जलोगमेत्तसरीराणि घेत्तूण एगो णिगोदो होदि ।	४६९
५८३	विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७०
५८४	तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७१
५८५	एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।	४७१
५८६	तदो एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए अंतरं काऊण णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।	४७१
५८७	अप्पाबहुअं दुविहं — अद्धाअप्पाबहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ।	४७४
५८८	अद्धाअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवो सांतरसमए वक्कमणकालो ।	४७४
५८९	णिरंतरसमए वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७४
५९०	सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७५
५९१	सव्वत्थोवा सांतरसमयवक्कमणकालविसेसा ।	४७५
५९२	णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसा असंखेज्जगुणो ।	४७५
५९३	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७५
५९४	जहण्णपदेण सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणसव्वजहण्णकालो ।	४७६
५९५	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ।	४७६
५९६	जहण्णपदेण जहण्णगो णिरंतरवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७६
५९७	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ णिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७७
५९८	जहण्णपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणसव्वजहण्णकालो विसेसाहिओ	४७७
५९९	उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७७
६००	सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणकालविसेसो ।	४७७
६०१	णिरंतरवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०२	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७८
६०३	जहण्णपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०४	उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७८
६०५	जहण्णपदेण णिरंतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०६	उक्कस्सपदेण णिरंतरसमयवक्क-	

---

२ अवतरण-गाथा-सूची

१८	सत्ता सव्वपयत्था	२३४	पञ्चास्तिकाय गा० ८
१९	सरवासे दु पदंते	६०	मूलाचा० ५, १३१
२०	साहारण आहारो	४८७	गो० जीवकाण्ड गा० १९१
२१	सांतरणिरंतरेदर-	११७	
२२	सेडिअसंखेज्जदिमो	११८	
२३	स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव	९०	

३ विशेष-वाक्य-संग्रह

१	एत्थ सव्वे 'वा' सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा।	२०
२	प्रत्येकमात्मप्रदेशा कर्मावयवैरनन्तकैर्बद्धाः इति वचनात्।	१६६
३	यत एवकारकरणं ततोऽन्यत्रावधारणमिति वचनात्।	२२५
४	'दु' सद्दस्स अवहारणट्ठस संबंधादो।	२३१
५	'इदि' सद्दो हेदुविवक्खाणमुववत्तीदो उरालमेव ओरालियमिदि सिद्धं।	३२२
६	'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' इत्यत्र	४९४

४ न्यायोक्तियाँ

१	यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात्।	१३
२	नावश्यं कारणानि कार्यवन्ति भवन्तीति न्यायात्।	४३८
३	एकदेशविकृतमनन्यवदिति न्यायात्।	५०३
३	समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते इति न्यायात्।	५०४

५ ग्रन्थोल्लेख

कम्माणियोगद्दार

१	जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मेति तहा णेयव्वं।	४६
२	कम्मबधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणियोगद्दारे परूविदा तहा परूवेदव्वा।	४६

खुद्दाबंध

१	एदेसिं भग्गणट्ठाणाणं जहा खुद्दाबंधे परूवणा कदा तहा कायव्वा।	४७
२	एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणियोगद्दारं णेयव्वं।	४७
३	एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणियोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा, अम्हेहि पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा।	४७

चूलियासुत्त

१	खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं त्ति उवरि भण्णमाणचूलियासुत्तादो।	८५
२	ओरालियवग्गणोगाहणाए बहुत्तं कुदो णव्वदे ? चूलियअप्पाबहुआदो।	३२२

जीवट्ठाणसुत्त

१	असंखेज्जा लोगा त्ति जीवट्ठाणसुत्ते परूविदत्तादो।	२१४
२	ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्हि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अपज्जत्तजीवसमासपडिसेहादो।	४२६

तच्चत्थ (तत्त्वार्थसूत्र)

तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं। १३

परियम्म

१	परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो।	५४

बाहिरवग्गणा

भावविहाण

महाकम्मपयडिपाहुड

महाबंध

वग्गणासुत्त

वेयणदव्वविहाण

वेयणा

सुत्तपोत्थिय

६ ऐतिहासिक-नामसूची

७ पारिभाषिक शब्द-सूची